फूलों में सजी युवा लड़कियों की छाया में
खोए हुए समय की खोज में - खंड II
मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
एक खिलते हुए उपवन के भीतर
अतीत की यादें - खंड II

अनुवादक: चार्ल्स केनेथ स्कॉट मोनक्रिफ़
चैटो एंड विंडस, लंदन, 1924

Table of Contents

अनुवादक का समर्पण
भाग I
मैडम स्वान घर पर
जगह के नाम
स्थान
भाग II
जगह के नाम
वह स्थान (जारी)

समुद्र का दृश्य, लड़कियों की आकृति वाली पट्टी के साथ

अनुवादक का समर्पण

के.एस.एस. को
ताकि कवचधारी पुरुष पैदा हो सकें; सांपों के दांतों से खेत बोया जाता है; बारिश आकार देती है, हवाएं झुकाती हैं, सूरज अनाज को सुनहरा कर देता है; बहुत जल्दी पक जाता है, बहुत जल्दी काट लिया जाता है।
मैं कांपते हुए सिरों को देखता हूँ, चेहरों को निहारता हूँ, उन मित्रों की फुसफुसाती साँसों को पकड़ता हूँ जो मृत्यु के ठंडे, बंद भंडारों में लंबे समय से एकत्रित हैं।
जिनके नाम गंभीर लय में मेरे धीमे, विस्मृत पृष्ठ पर गूंजते हैं। उनकी मित्रता प्रसिद्धि, धन या सम्मानित वृद्धावस्था से कहीं अधिक उत्तम थी।
और—जब तक तुम और मैं जीवित रहेंगे—यह ऋतुओं की कहानी हमारे साथ बनी रहेगी, जो अमर अतीत में उन पुरुषों को संजोते हैं जिन्हें हम कभी नहीं भूल सकते।
सी. के. एस. एम. बैड किसिंगन, 31 जुलाई, 1923।

भाग I

मैडम स्वान घर पर

जब पहली बार एम. डी नॉरपोइस को रात्रिभोज पर आमंत्रित करने का प्रश्न उठा, तो मेरी माताजी ने प्रोफेसर कॉटार्ड के घर से बाहर होने पर खेद व्यक्त किया और कहा कि उन्होंने स्वयं स्वान से मिलना-जुलना लगभग बंद कर दिया था, क्योंकि इनमें से कोई भी व्यक्ति पुराने राजदूत का मनोरंजन करने में सहायक हो सकता था। इस पर मेरे पिता ने उत्तर दिया कि कॉटार्ड जैसा प्रतिष्ठित अतिथि, विज्ञान का इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति, रात्रिभोज की मेज पर कभी भी अनुचित नहीं हो सकता, परन्तु स्वान, अपने आडंबर और हर किसी का नाम जोर-जोर से पुकारने की आदत के कारण, एक घोर असभ्य व्यक्ति था, जिसे मार्क्विस डी नॉरपोइस अपने ही शब्दों में कहें तो, एक 'बदमाश' व्यक्ति कहकर खारिज कर देंगे। अब, मेरे पिता के इस दृष्टिकोण को कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो सकती है, क्योंकि हममें से कुछ लोग निस्संदेह कॉटार्ड को एक साधारण व्यक्ति के रूप में और स्वान को उनके सभी सामाजिक संबंधों में विनम्रता और विवेक को अत्यंत परिष्कृत रूप में याद करते हैं। लेकिन उनके मामले में, जो हुआ वह यह था कि मूल 'युवा स्वान' और जॉकी क्लब के स्वान के साथ-साथ हमारे पुराने मित्र ने एक नया व्यक्तित्व भी जोड़ लिया था (जो उनका अंतिम व्यक्तित्व नहीं था), ओडेट के पति का व्यक्तित्व। उस महिला की विनम्र महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप, अपने भीतर की सहज प्रवृत्ति, इच्छाशक्ति और परिश्रम को अपनाते हुए, उन्होंने अपने पुराने व्यक्तित्व से कहीं नीचे, अपने लिए एक नया पद सृजित किया, जो उस साथी के लिए अधिक उपयुक्त था जिसे उन्हें साझा करना था। इसमें उन्होंने स्वयं को एक अलग ही व्यक्ति के रूप में प्रकट किया। चूंकि (हालांकि वह अपने दोस्तों के घरों में अकेले ही

जाया करते रहे, जिन पर वह ओडेट को तब तक थोपना नहीं चाहते थे जब तक कि उन्होंने स्पष्ट रूप से उनसे मिलवाने का अनुरोध न किया हो) यह एक नया जीवन था जिसे उन्होंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर नए लोगों के बीच जीना शुरू किया था, इसलिए यह पूरी तरह से समझ में आता है कि इन नए दोस्तों के महत्व और उनसे मिलने वाले आनंद और आत्मसम्मान का आकलन करने के लिए, उन्होंने तुलना के मानक के रूप में उस शानदार समाज का उपयोग नहीं किया जिसमें वह स्वयं अपनी शादी से पहले रहे थे, बल्कि ओडेट के पहले के परिवेश का उपयोग किया। फिर भी, यह जानते हुए भी कि अब वह पुराने जमाने के अधिकारियों और उनकी फीकी पड़ चुकी पत्नियों, यानी मंत्रियों के भोज-गृहों की शान-अंधेरी महँगी महिलाओं के साथ मेलजोल रखना चाहता था, यह सुनकर आश्चर्य होता था कि जो व्यक्ति पुराने दिनों में, और आज भी, ट्विकेनहैम या मार्लबोरो हाउस के निमंत्रण का जिक्र करने से बड़ी शालीनता से बचता था, वह अब अनावश्यक जोर देकर यह घोषणा कर रहा था कि किसी सहायक अवर सचिव की पत्नी ने श्रीमती स्वान के निमंत्रण का जवाब दिया था। शायद यहाँ यह आपत्ति उठाई जा सकती है कि वास्तव में इसका तात्पर्य यह था कि फैशनेबल स्वान की सादगी केवल घमंड की पराकाष्ठा थी, और यह कि कुछ अन्य इस्राएलियों की तरह, मेरे माता-पिता के पुराने मित्र ने अपने वंश के सभी चरणों को दर्शाने का प्रयास किया था, सबसे भद्दे और घटिया घमंड से लेकर उच्च कोटि के शिष्टाचार तक। लेकिन मुख्य कारण—और जो पूरी मानवता पर लागू होता है—यह था कि हमारे सद्गुण स्वयं स्वतंत्र और परिवर्तनशील गुण नहीं हैं जिन पर हमारा स्थायी नियंत्रण और निपटान की शक्ति हो; वे हमारे मन में उन कार्यों से इतने घनिष्ठ रूप से जुड़ जाते हैं जिनके साथ हम उनका अभ्यास करना अपना कर्तव्य मानते हैं, कि यदि हमें अचानक

किसी भिन्न प्रकार का कार्य करने के लिए कहा जाए, तो यह हमें आश्चर्यचकित कर देता है, और हम एक क्षण के लिए भी यह कल्पना नहीं कर सकते कि इसमें उन्हीं सद्गुणों का उपयोग शामिल हो सकता है। स्वान, अपने नए सामाजिक परिवेश के प्रति अपनी गहन चेतना और जिस गर्व के साथ उन्होंने उनका उल्लेख किया, उसमें उन महान कलाकारों की तरह थे—स्वभाव से विनम्र या उदार—जो अपने करियर के अंत में यदि खाना पकाने या बागवानी करने लगते हैं, तो अपने व्यंजनों या अपने बगीचे की प्रशंसा पाकर बच्चों जैसी संतुष्टि प्रदर्शित करते हैं, और उस आलोचना को नहीं सुनते जो उन्होंने अपनी वास्तविक उपलब्धियों पर लागू होने पर सुनी थी; या फिर वे लोग जो एक कैनवास दान करने के बाद, डोमिनोज़ में कुछ फ्रैंक हारने पर अपनी झुंझलाहट नहीं छिपा पाते।

प्रोफेसर कॉटार्ड की बात करें तो, हम उनसे फिर मिलेंगे और कहानी के बहुत बाद के हिस्से में, 'मालकिन' श्रीमती वर्दुरिन के साथ, उनके देहाती घर ला रास्पेलियर में, आराम से उनका अध्ययन कर सकेंगे। फिलहाल, निम्नलिखित टिप्पणियाँ ही पर्याप्त होंगी; सबसे पहले, स्वान के मामले में यह बदलाव वाकई आश्चर्यजनक हो सकता है, क्योंकि यह हो चुका था और फिर भी मुझे इसका ज़रा भी संदेह नहीं हुआ जब मैं गिल्बर्ट के पिता को शैंप्स-एलिसी में देखा करता था, जहाँ, इसके अलावा, उन्होंने मुझसे कभी बात नहीं की, इसलिए यह संभव नहीं था कि उन्होंने अपने राजनीतिक संबंधों का कोई प्रदर्शन किया हो। यह सच है कि, अगर उन्होंने ऐसा किया भी होता, तो शायद मैं उनकी घमंड को तुरंत नहीं पहचान पाता, क्योंकि किसी व्यक्ति के बारे में लंबे समय से बनी धारणा अक्सर हमारी आँखों और कानों को बंद कर देती है; मेरी माँ ने पूरे तीन साल तक उस मरहम पर ध्यान नहीं दिया जिससे उनकी एक भतीजी अपने होंठों को रंगती थी, मानो वह किसी साफ तरल में पूरी तरह से और

अदृश्य रूप से घुल गया हो; एक दिन, कुछ ज़्यादा ही रंग लग जाने से, या शायद किसी और वजह से, अति-संतृप्ति की घटना घटित हुई; अब तक अनदेखा रहा सारा रंग जम गया, और मेरी माँ ने रंगों के इस अचानक विस्फोट को देखकर, अपने खास कॉम्ब्रे अंदाज़ में कहा कि यह एक घोर घोटाला है, और लगभग अपनी भतीजी से संबंध तोड़ लिए। इसके विपरीत, कॉटार्ड के मामले में, वह युग जिसमें हमने उन्हें स्वान को वर्दुरिन परिवार से पहली बार मिलवाते देखा था, अब अतीत में दफ़न हो चुका था; जबकि सम्मान, पद और उपाधियाँ वर्षों के बीतने के साथ आती हैं; इसके अलावा, एक व्यक्ति अनपढ़ हो सकता है, मूर्खतापूर्ण चुटकुले सुना सकता है, फिर भी उसमें एक विशेष प्रतिभा हो सकती है, जिसे सामान्य शिक्षा से बदला नहीं जा सकता—जैसे कि एक महान रणनीतिकार या चिकित्सक की प्रतिभा। इसलिए, कॉटार्ड को उनके पेशे के बाकी लोग केवल एक गुमनाम चिकित्सक के रूप में नहीं देखते थे, जिसने समय के साथ यूरोपीय ख्याति प्राप्त की थी। युवा डॉक्टरों में सबसे बुद्धिमान डॉक्टर—एक-दो साल के लिए ही सही—यह दावा करते थे कि अगर वे कभी बीमार पड़ गए तो कॉटार्ड ही एकमात्र ऐसे प्रमुख डॉक्टर हैं जिन पर वे अपना जीवन सौंप सकते हैं। निस्संदेह, सामाजिक रूप से वे कुछ ऐसे लोगों से मिलना पसंद करते थे जो अधिक पढ़े-लिखे और कलात्मक थे, जिनके साथ वे नीत्शे और वैगनर पर चर्चा कर सकते थे। जब श्रीमती कॉटार्ड के घर संगीत कार्यक्रम होता था, उन शामों में जब वह अपने पति के सहयोगियों और छात्रों का मनोरंजन करती थीं—इस उम्मीद में कि शायद एक दिन वह संकाय के डीन बन जाएं—तो वह सुनने के बजाय दूसरे कमरे में ताश खेलना पसंद करते थे। फिर भी, हर कोई उनकी उस तत्परता, अंतर्दृष्टि और अचूक आत्मविश्वास की प्रशंसा करता था जिससे वे एक नज़र में ही बीमारी का निदान कर लेते थे। तीसरा, मेरे पिता जैसे

व्यक्ति पर प्रोफ़ेसर कॉटार्ड की सामान्य छाप पर विचार करते समय, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि जीवन के उत्तरार्ध में व्यक्ति का जो चरित्र प्रदर्शित होता है, वह हमेशा उसका मूल चरित्र नहीं होता, भले ही वह अक्सर विकसित या क्षीण, संकुचित या विस्तारित हो; कभी-कभी यह बिल्कुल विपरीत होता है, जैसे कोई वस्त्र उल्टा हो गया हो। वर्दुरिन परिवार को छोड़कर, जो उन पर मुग्ध थे, कॉटार्ड के संकोची स्वभाव, उनकी अत्यधिक झिझक और विनम्रता ने उनके युवावस्था में उन पर अंतहीन ताने और उपहास का कारण बना था। भला किस दयालु मित्र ने उन्हें इस ठंडे स्वभाव की सलाह दी होगी? उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा के महत्व ने इसे अपनाना और भी आसान बना दिया। वर्दुरिन परिवार को छोड़कर, जहाँ वे सहज रूप से फिर से अपने असली रूप में आ जाते थे, वे जहाँ भी जाते, एक अप्रिय शीतलता अपना लेते, यथासंभव चुप रहते, बोलने पर बाध्य होने पर कठोर रुख अपनाते और सबसे चुभने वाली बातें कहने से नहीं चूकते। उन्हें अपने मरीजों के सामने इस नए रवैये का अभ्यास करने का पूरा मौका मिला था। जो मरीज उन्हें पहली बार देख रहे थे, वे तुलना करने की स्थिति में नहीं थे और यह जानकर बेहद आश्चर्यचकित होते कि वे स्वभाव से बिल्कुल भी असभ्य नहीं थे। पूर्ण भावहीनता ही उनका लक्ष्य था और यहां तक कि अस्पताल के वार्डों में जाते समय भी, जब वे ऐसे चुटकुले सुनाते थे जिनसे गृह चिकित्सक से लेकर कनिष्ठ छात्र तक सभी हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते थे, तो वे हमेशा अपने चेहरे की एक भी मांसपेशी हिलाए बिना ऐसा करते थे, जबकि अब तो दाढ़ी-मूंछ मुंडवा लेने के कारण उनका चेहरा भी पहचान में नहीं आता था।

लेकिन पाठक यह जानना चाहते होंगे कि मार्क्विस डी नॉरपोइस कौन थे? दरअसल, युद्ध से पहले वे पूर्णाधिकार प्राप्त मंत्री थे और वास्तव में 16 मई को राजदूत थे; इसके बावजूद, और आम लोगों के आश्चर्य के बीच,

उन्हें तब से कई बार असाधारण मिशनों पर फ्रांस का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था - यहाँ तक कि मिस्र में सार्वजनिक ऋण नियंत्रक के रूप में भी, जहाँ एक कुशल वित्त अधिकारी के रूप में अपनी असाधारण क्षमता के कारण उन्होंने महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं - उन कट्टरपंथी मंत्रिमंडलों द्वारा जिनके अधीन मध्यम वर्ग का कोई प्रतिक्रियावादी व्यक्ति सेवा करने से इनकार कर देता, और जिनकी दृष्टि में एम. डी नॉरपोइस को, उनके अतीत, उनके संबंधों और उनके विचारों को देखते हुए, संभवतः संदेह के घेरे में होना चाहिए था। लेकिन इन दूरदर्शी मंत्रियों को ऐसा लगता था कि इस तरह की नियुक्ति करके वे यह दिखा रहे हैं कि फ्रांस के सर्वोच्च हित दांव पर लगे होने पर उनकी सोच कितनी व्यापक है, वे आम राजनेताओं से ऊपर उठ रहे हैं, जर्नल डेस डिबेट्स से ही 'राजनेता' की उपाधि के पात्र बन रहे हैं, और एक कुलीन नाम के महत्व और अप्रत्याशित नियुक्ति से उत्पन्न होने वाली नाटकीय रुचि का सीधा लाभ उठा रहे हैं। और वे यह भी जानते थे कि वे एम. डी नॉरपोइस से अपील करके इन लाभों को प्राप्त कर सकते हैं, बिना उनकी ओर से किसी भी प्रकार की राजनीतिक निष्ठा की कमी के डर के, एक ऐसी कमी जिसके खिलाफ उनकी कुलीन पृष्ठभूमि न केवल उन्हें सतर्क नहीं करती थी बल्कि एक ठोस गारंटी प्रदान करती थी। और इस गणना में गणतंत्र सरकार गलत नहीं थी। सबसे पहले तो, एक खास तरह का कुलीन व्यक्ति, जिसे बचपन से ही अपने नाम को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंग माना जाता है और जिसे कोई दुर्घटना उससे छीन नहीं सकती (एक ऐसी संपत्ति जिसका मूल्य उसके समकक्ष या उससे भी ऊंचे दर्जे के लोग सटीक रूप से आंक सकते हैं), जानता है कि उसे उन प्रयासों की आवश्यकता नहीं है (क्योंकि उनसे उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता) जिनमें मध्यम वर्ग के कई सार्वजनिक व्यक्ति बिना किसी खास

परिणाम के अपना समय व्यतीत करते हैं—केवल 'सही' राय व्यक्त करना, केवल 'अच्छे' लोगों से मिलना-जुलना। दूसरी ओर, अपने से अधिक महत्वपूर्ण राजपरिवारों या राजकक्षों की दृष्टि में अपना महत्व बढ़ाने के लिए उत्सुक, वह जानता है कि वह ऐसा अपने नाम को वह सम्मान देकर कर सकता है जिसकी उसे अब तक कमी रही है, जो उसे अन्य नामों पर वरीयता दिलाएगा जो उसके समकक्ष हैं: जैसे राजनीतिक शक्ति, साहित्यिक या कलात्मक प्रतिष्ठा, या विशाल धन-संपत्ति। और इसलिए, वह उन अप्रभावी ग्रामीण जमींदारों की संगति से बचकर जो बचत करता है, जिनके पीछे सभी पेशेवर परिवार बेतहाशा भागते हैं, लेकिन जिनके साथ उसकी घनिष्ठता, यदि वह इसे स्वीकार करे, तो एक राजकुमार को भी कोई आपत्ति नहीं होगी, वह उन राजनेताओं पर खर्च करेगा जो (चाहे वे फ्रीमेसन हों या इससे भी बदतर) उसे कूटनीति में आगे बढ़ा सकते हैं या चुनाव में उसका समर्थन कर सकते हैं, और उन कलाकारों या वैज्ञानिकों पर जिनका संरक्षण उसे उन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में मदद कर सकता है जिनमें वे उत्कृष्ट हैं, वास्तव में, हर उस व्यक्ति पर जो उसे एक नई पहचान दिला सकता है या एक समृद्ध विवाह को सफल बना सकता है।

लेकिन एम. डी नॉरपोइस के चरित्र में यह प्रमुख विशेषता थी कि कूटनीति के अपने लंबे करियर के दौरान, वे उस नकारात्मक, व्यवस्थित, रूढ़िवादी भावना से ओतप्रोत हो गए थे, जिसे 'सरकारी' कहा जाता है, जो सभी सरकारों में आम है और हर सरकार के अधीन, विशेष रूप से उसके विदेश कार्यालय को प्रेरित करती है। उन्होंने अपने करियर के दौरान विपक्ष की कार्यप्रणाली के प्रति घृणा, भय और तिरस्कार की भावना विकसित कर ली थी, जो कमोबेश क्रांतिकारी और किसी भी स्थिति में पूरी तरह से गलत होती है। कुछ निरक्षरों को छोड़कर—चाहे वे उच्च वर्ग के हों या

निम्न वर्ग के, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता—जिनमें गुणवत्ता का कोई अंतर नहीं दिखता, जो चीज लोगों को एक-दूसरे की ओर आकर्षित करती है, वह समान दृष्टिकोण नहीं बल्कि आत्मा की समानता है। लेगुवे जैसे शिक्षाविद, और इसलिए क्लासिक्स के समर्थक, मैक्सिम ड्यूकैम्प या मेज़ियर द्वारा विक्टर ह्यूगो की प्रशंसा की सराहना क्लाउडेल द्वारा बोइल्यू की प्रशंसा की तुलना में कहीं अधिक उत्साह से करेंगे। एक साझा राष्ट्रवाद बैरेस को उनके मतदाताओं का प्रिय बनाने के लिए पर्याप्त है, जो शायद ही उनके और एम. जॉर्जेस बेरी के बीच कोई अंतर कर पाते हैं, लेकिन यह उन्हें उनके साथी शिक्षाविदों का प्रिय नहीं बनाता है, जो राजनीति पर समान दृष्टिकोण रखते हुए भी, एक अलग प्रकार की मानसिकता के साथ, एम. रिबोट और एम. डेसचनेल जैसे खुले विरोधियों को भी उनसे बेहतर मानते हैं, जिनके साथ, बदले में, सबसे वफादार राजतंत्रवादी खुद को मॉरस या लियोन डौडेट की तुलना में अधिक निकटता से संबद्ध महसूस करते हैं, हालांकि ये भी एक गौरवशाली पुनर्स्थापना की आशा में जी रहे हैं। शब्दों के प्रयोग में कंजूस, न केवल विवेक और संयम के पेशेवर संकोच के कारण, बल्कि इसलिए भी कि शब्दों का स्वयं अधिक मूल्य होता है, वे उन लोगों के लिए परिभाषा की अधिक सूक्ष्मता प्रस्तुत करते हैं जिनके दो देशों को आपसी समझ तक लाने के लिए एक दशक से अधिक समय तक चले प्रयास, भाषण या प्रोटोकॉल में एक ही विशेषण में सिमट जाते हैं, जो देखने में तो रंगहीन लगता है, लेकिन उनके लिए अर्थों के संसार से परिपूर्ण होता है। आयोग में, जहाँ वे मेरे पिता के बगल में बैठे थे, श्री डी नॉरपोइस को बहुत कठोर माना जाता था। बाकी सभी ने इस बात पर मेरे पिता को बधाई दी कि कैसे पुराने राजदूत ने उनके सामने इतना नरम रुख अपनाया। मेरे पिता स्वयं सबसे अधिक आश्चर्यचकित थे। स्वभाव से मिलनसार न होने के

कारण, उनकी संगति उनके करीबी लोगों के दायरे से बाहर कम ही पसंद की जाती थी, इस सीमा को वे विनम्रता और खुलेपन से स्वीकार करते थे। उन्हें एहसास हुआ कि ये प्रस्ताव, एक राजनयिक के नज़रिए से, उस दृष्टिकोण का परिणाम थे जिसे हर कोई अपने मित्र चुनते समय अपनाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, किसी व्यक्ति के बौद्धिक गुण, शिष्टाचार और स्नेह, उसके बारे में उतनी प्रभावी सिफारिश नहीं रह जाते, जब वह किसी को ऊबा हुआ या परेशान करता हो, जितनी कि किसी ऐसे व्यक्ति की सीधी-सादी और हंसमुख स्वभाव, जिसे अधिकांश लोग तुच्छ या मूर्ख समझते हों। "डी नॉरपोइस ने मुझे फिर से रात के खाने पर बुलाया है; यह बिल्कुल असाधारण है; आयोग में हर कोई हैरान है, क्योंकि उनका हममें से किसी के साथ कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं है। मुझे यकीन है कि वह मुझे सत्तर के दशक के युद्ध के बारे में फिर से कुछ रोमांचक बताने वाले हैं।" मेरे पिता जानते थे कि एम. डी नॉरपोइस ने सम्राट को प्रशिया की बढ़ती ताकत और युद्धप्रिय इरादों के बारे में चेतावनी दी थी, शायद चेतावनी देने वाले वह अकेले ही थे, और बिस्मार्क उनकी बुद्धिमत्ता को बहुत महत्व देते थे। अभी कुछ ही दिन पहले, ओपेरा में राजा थियोडोसियस के सम्मान में आयोजित भव्य प्रस्तुति के दौरान, सभी अखबारों ने उस लंबी बातचीत पर ध्यान आकर्षित किया था जो राजा ने एम. डी नॉरपोइस से की थी। "मुझे उनसे पूछना होगा कि राजा की यात्रा का कोई वास्तविक महत्व था या नहीं," मेरे पिता ने आगे कहा, क्योंकि उन्हें विदेश नीति में गहरी दिलचस्पी थी। "मैं जानता हूँ कि बूढ़े नॉरपोइस आमतौर पर बहुत कम बोलते हैं, लेकिन जब वे मेरे साथ होते हैं तो वे बड़े ही मनमोहक ढंग से खुल कर बात करते हैं।"

मेरी माँ के लिए, शायद राजदूत का व्यक्तित्व वैसा नहीं था जैसा उन्हें सबसे ज़्यादा आकर्षित करता था। मैं यह भी कहना चाहूँगा कि उनकी

बातचीत में एक विशेष पेशे, वर्ग और काल से जुड़ी पुरानी बोलचाल की भाषा का इतना व्यापक वर्णन था—एक ऐसा काल जो उस पेशे और वर्ग के लिए पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ था—कि मुझे कभी-कभी अफ़सोस होता है कि मैंने उनकी कही हुई बातों का कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं रखा। इस तरह मैं भी उसी प्रक्रिया से और उतने ही कम खर्च में पुराने ज़माने की शिष्टता का प्रभाव प्राप्त कर लेता, जितना कि पैलेस-रॉयल के उस अभिनेता ने किया था, जिसने यह पूछे जाने पर कि उसे अपनी अद्भुत टोपियाँ कहाँ से मिलती हैं, उत्तर दिया था, "मुझे मेरी टोपियाँ नहीं मिलतीं। मैं उन्हें संभाल कर रखता हूँ।" संक्षेप में, मुझे लगता है कि मेरी माँ एम. डी नॉरपोइस को थोड़ा 'पुराने ज़माने का' समझती थीं, जो शिष्टाचार के लिहाज़ से उनकी नज़र में कोई दोष नहीं था, लेकिन उन्हें भाषा शैली के मामले में कम आकर्षित करता था—यहाँ, विचारों के मामले में नहीं, क्योंकि एम. डी नॉरपोइस के विचार अत्यंत आधुनिक थे—बल्कि मुहावरों के मामले में। हालाँकि, उन्हें लगता था कि जब वे उस राजनयिक की प्रशंसा करती थीं, जिसने उनके प्रति इतना विशेष लगाव दिखाया था, तो वे अपने पति की सूक्ष्म प्रशंसा कर रही थीं। एम. डी नॉरपोइस के बारे में मेरे पिता के मन में पहले से मौजूद अच्छी राय को पुष्ट करके, और इस प्रकार उन्हें स्वयं के बारे में भी अच्छी राय बनाने के लिए प्रेरित करके, वे जानती थीं कि वे अपने एक पत्नी के कर्तव्य का निर्वाह कर रही हैं, जो उनके जीवन को सुखद और आरामदायक बनाना था, ठीक वैसे ही जैसे वे यह सुनिश्चित करती थीं कि उनका भोजन पूरी तरह से पका हुआ हो और चुपचाप परोसा जाए। और चूंकि वे मेरे पिता को धोखा देने में असमर्थ थीं, इसलिए उन्होंने स्वयं को उस पुराने राजदूत की प्रशंसा करने के लिए बाध्य किया, ताकि वे ईमानदारी से उनकी प्रशंसा कर सकें। संयोगवश, वह स्वाभाविक रूप से उनकी दयालुता,

उनके कुछ हद तक पुराने शिष्ट व्यवहार (इतना औपचारिक कि जब वे सड़क पर सीधे खड़े होकर चलते थे और मेरी माँ को गाड़ी चलाते हुए देखते थे, तो टोपी उतारने से पहले ही वे अपनी जलाई हुई सिगार फेंक देते थे) की सराहना करती थीं; उनकी बातचीत, जो इतनी सावधानीपूर्वक और सधी हुई होती थी कि वे यथासंभव कम ही अपना जिक्र करते थे और हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि सामने वाले व्यक्ति को क्या रुचिकर लगेगा; पत्रों का उत्तर देने में उनकी तत्परता, जो इतनी आश्चर्यजनक थी कि जब भी मेरे पिता, एम. डी नॉरपोइस को पत्र भेजने के तुरंत बाद, किसी लिफाफे पर उनकी लिखावट देखते थे, तो उनका पहला विचार हमेशा इस बात की झुंझलाहट का होता था कि दुर्भाग्य से डाक में उनके पत्र आपस में टकरा गए होंगे; जिससे, ऐसा माना जा सकता था, उन्हें दिन-रात किसी भी समय असाधारण रूप से पत्र पहुंचाने और प्राप्त करने का विशेष और विलासितापूर्ण विशेषाधिकार प्राप्त था। मेरी माँ उनकी व्यस्तता के बावजूद उनकी अत्यंत कर्तव्यनिष्ठा, और अत्यधिक मांग के बावजूद उनके मिलनसार स्वभाव पर आश्चर्यचकित थीं। उन्हें यह एहसास कभी नहीं हुआ कि ऐसे लोगों के मामले में 'यद्यपि' हमेशा एक अनकहा 'क्योंकि' होता है, और (जिस प्रकार वृद्ध पुरुष अपनी उम्र के हिसाब से अद्भुत होते हैं, राजा असाधारण रूप से सरल होते हैं, और ग्रामीण रिश्तेदार आश्चर्यजनक रूप से जानकार होते हैं) यह आदतों की वही प्रणाली थी जिसने एम. डी नॉरपोइस को इतने सारे कर्तव्यों को निभाने, पत्रों का उत्तर देने में इतना व्यवस्थित होने, हर जगह जाने और हमारे पास आने पर इतना मित्रवत होने में सक्षम बनाया था। इसके अलावा, उन्होंने वही गलती की जो हर कोई करता है जो अत्यधिक विनम्र होता है; उन्होंने अपने से संबंधित हर चीज को दूसरों के कर्तव्यों और प्रतिबद्धताओं से नीचे और परिणामस्वरूप उनकी सीमा से बाहर रखा। वह

पत्र जिसे मेरे पिता के मित्र ने हमें समय पर लिखकर हमें इतना प्रशंसनीय समझा, जबकि दिन भर में उन्हें अनगिनत पत्र लिखने होते होंगे, उन्होंने उसे उन अनगिनत पत्रों में से अलग कर दिया, जबकि वास्तव में वह पत्र उन्हीं पत्रों का एक हिस्सा था; इसी तरह, उन्होंने यह नहीं सोचा था कि हमारे साथ भोजन करना एम. डी नॉरपोइस के लिए उनके सामाजिक जीवन की अनगिनत गतिविधियों में से एक मात्र था; उन्होंने कभी अनुमान नहीं लगाया कि राजदूत ने बहुत पहले ही भोजन करने को अपने राजनयिक कर्तव्यों में से एक के रूप में देखने और मेज पर एक सहज आकर्षण प्रदर्शित करने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित कर लिया था, जिसे हमारे साथ भोजन करने आने पर उनसे विशेष रूप से त्यागने की अपेक्षा करना अतिशयोक्ति होगी।

जिस शाम को एम. डी नॉरपोइस पहली बार हमारी मेज पर आए, उस साल जब मैं अभी भी चैंप्स-एलिसी में खेलने जाता था, वह शाम मेरी स्मृति में हमेशा के लिए बस गई है क्योंकि उसी दिन दोपहर को मैं आखिरकार फ्रेड्रे में एक मैटिनी शो में बर्मा को सुनने गया था, और इसलिए भी क्योंकि एम. डी नॉरपोइस से बात करते हुए मुझे अचानक, और एक नए और अलग तरीके से, यह एहसास हुआ कि गिल्बर्ट स्वान और उनके माता-पिता से संबंधित सभी बातों ने मुझमें जो भावनाएँ जगाईं, वे उसी परिवार द्वारा किसी और में जगाई जा सकने वाली किसी भी भावना से कितनी अलग थीं।

नए साल की छुट्टियों के आने से मैं जिस उदासी में डूब गया था, उसे देखकर ही मेरी माँ ने एक दिन मेरा ध्यान भटकाने की उम्मीद में कहा, "अगर तुम अब भी बर्मा को सुनने के लिए इतने उत्सुक हो, तो मुझे लगता है कि तुम्हारे पिताजी शायद तुम्हें जाने की अनुमति दे देंगे; तुम्हारी दादी तुम्हें ले जा सकती हैं।"

लेकिन एम. डी नॉरपोइस ने उनसे कहा था कि उन्हें मुझे बर्मा का संगीत सुनने देना चाहिए, और यह एक ऐसा अनुभव था जिसे एक नौजवान जीवन भर याद रखेगा। मेरे पिता, जो अब तक मेरे जाने और समय बर्बाद करने के सख्त खिलाफ थे, साथ ही मेरे दोबारा बीमार पड़ने के जोखिम के भी, जिसे वे मेरी दादी को 'व्यर्थ की बातें' कहकर चौंका देते थे, अब दोपहर बिताने के इस तरीके को एक उज्ज्वल करियर में सफलता के अनमोल नुस्खों में से एक मानने लगे थे। मेरी दादी, जिन्होंने मेरे लिए बर्मा का संगीत सुनने से मिलने वाले लाभ को त्यागकर मेरे स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा बलिदान दिया था, यह देखकर आश्चर्यचकित रह गईं कि एम. डी नॉरपोइस के एक मात्र शब्द से ही मेरे स्वास्थ्य का कोई महत्व नहीं रह गया। मेरे लिए निर्धारित ताजी हवा और सुबह जल्दी उठने के सख्त नियम में अपनी तर्कवादी आत्मा की अटूट आशाओं को टिकाए हुए, अब वह मेरे द्वारा अपने नियमों के इस उल्लंघन को एक विपत्ति के रूप में देखती हुई दुखी थी, और निराशा भरे स्वर में मेरे पिता से बोली, "तुम कितनी आसानी से बहक जाते हो!" जिस पर मेरे पिता ने क्रोधित होकर उत्तर दिया, "क्या! तो अब तुम ही हो जो उसे जाने नहीं देना चाहतीं। यह तो हद से ज़्यादा है, जबकि तुम दिन-रात हमें यही कहती रहती हो कि यह उसके लिए कितना अच्छा होगा।"

एम. डी नॉरपोइस ने मेरे पिता की योजनाओं में एक ऐसे मामले में भी बदलाव किया जो मेरे लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। मेरे पिता हमेशा से चाहते थे कि मैं एक राजनयिक बनूँ, और मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि, भले ही मुझे कुछ वर्षों तक पहले मंत्रालय में रहना पड़े, बाद में मुझे राजदूत बनाकर ऐसी राजधानियों में भेजे जाने का जोखिम उठाना पड़े जहाँ कोई गिलबर्ट न रहती हो। मैं तो अपने उस साहित्यिक करियर में लौटना पसंद करता जो मैंने अपने लिए तय किया था और जिसे मैंने वर्षों

पहले गुएरमांटेस मार्ग पर भटकते हुए छोड़ दिया था। लेकिन मेरे पिता ने साहित्य को अपना जीवन समर्पित करने का लगातार विरोध किया, जिसे वे कूटनीति से कहीं अधिक हीन मानते थे, और इसे करियर का दर्जा देने से भी इनकार करते थे, जब तक कि एम. डी नॉरपोइस ने, जिन्हें राजनयिक एजेंटों की नई पीढ़ियों से कोई खास लगाव नहीं था, उन्हें आश्वस्त नहीं किया कि लेखन के माध्यम से उतना ही ध्यान आकर्षित करना, उतना ही सम्मान प्राप्त करना, उतना ही प्रभाव डालना और साथ ही दूतावासों की तुलना में अधिक स्वतंत्रता बनाए रखना संभव है।

“वाह वाह! मुझे तो यकीन ही नहीं हुआ था। बूढ़े नॉरपोइस को तुम्हारे लेखन के विचार से ज़रा भी आपत्ति नहीं है,” मेरे पिता ने बताया। और चूंकि उनका खुद भी कुछ प्रभाव था, इसलिए उन्हें लगता था कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो ‘सुलझाया’ न जा सके, ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका ‘प्रभावशाली’ लोगों से बातचीत में कोई सुखद समाधान न मिल सके। “मैं उन्हें किसी दिन आयोग से वापस खाने पर लाऊंगा। तुम्हें उनसे थोड़ी बात करनी चाहिए और उन्हें बताना चाहिए कि वे तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं। कुछ अच्छा लिखो जो तुम उन्हें दिखा सको; वे ड्यूक्स-मोंडेस के संपादक के घनिष्ठ मित्र हैं; वे तुम्हें वहाँ नौकरी दिलवा देंगे; वे सब कुछ व्यवस्थित कर देंगे, वे चालाक बूढ़े लोमड़ी; और कसम से, उन्हें लगता है कि आजकल कूटनीति——!”

गिलबर्ट से अलग न होने की संभावना से मुझे जो खुशी मिली, उससे मेरी इच्छा तो जागी, लेकिन मैं एम. डी नॉरपोइस को दिखाने लायक कुछ अच्छा लिखने में सक्षम नहीं थी। कुछ पन्नों को बड़ी मेहनत से लिखने के बाद, थकान के कारण कलम मेरे हाथों से छूट गई; इस विचार से मैं क्रोध से रो पड़ी कि मुझमें कभी कोई प्रतिभा नहीं होगी, मैं 'प्रतिभाशाली' नहीं हूँ, कि मैं एम. डी नॉरपोइस की आने वाली यात्रा से मिलने वाले उस

अवसर का भी लाभ नहीं उठा सकती जो मुझे अपना शेष जीवन पेरिस में बिताने का मौका देगा। यह याद कि मुझे अकेले बर्मा का संगीत सुनने के लिए ले जाया जाएगा, मेरे दुख को कुछ हद तक कम कर पाई। लेकिन जिस प्रकार मैं तूफ़ान को केवल उन तटों पर देखना चाहती थी जहाँ वे सबसे अधिक उग्र होते हैं, उसी प्रकार मैं उस महान अभिनेत्री को केवल उन्हीं क्लासिक भूमिकाओं में सुनना चाहती थी जिनके बारे में स्वान ने मुझे बताया था कि उनमें वह उदात्तता को छूती हैं। जब हम किसी अनमोल खोज की आशा में प्रकृति या कलाकृतियों से कुछ विशेष प्रभाव ग्रहण करना चाहते हैं, तो हमें इस बात पर संदेह होता है कि कहीं हमारी आत्मा इन प्रभावों के बजाय अन्य निम्नतर प्रभावों को ग्रहण न कर ले, जो सौंदर्य के मूल्य के बारे में हमारी गलत धारणा को जन्म दे सकते हैं। एंड्रोमाक में बर्मा, लेस कैप्रिसेस डी मैरिएन में, फ्रेड्रे में, उन प्रसिद्ध दृश्यों में से एक था जिन्हें देखने की मेरी कल्पना ने लंबे समय से इच्छा की थी। मुझे वही आनंद मिलेगा जो उस दिन मिला था जब मैं एक गोंडोला में बैठकर फ्रारी के टिटियन या सैन जियोर्जियो डेई शियावोनी के कार्पैसियो की कृतियों के चरणों तक गया था, यदि मैं कभी बर्मा को इन पंक्तियों को दोहराते हुए सुन सकूँ, जो इस प्रकार शुरू होती हैं...

वे कहते हैं कि जल्दी चले जाने से आप हमसे दूर हो जाते हैं।

भगवान,--"

मैं उन्हें छपे हुए पन्नों पर छपी उनकी सरल, श्वेत-श्याम प्रतियों से परिचित था; लेकिन यह सोचकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा—जैसे किसी लंबे समय से सोची गई यात्रा के साकार होने पर धड़कता है—कि मैं अंततः उन्हें सुनहरी आवाज़ के वातावरण और धूप में नहाए और जीवंत होते हुए देख पाऊँगा। वेनिस में कार्पैसिओ, फ्रेड्रे में बर्मा, चित्रकला या नाट्य कला की ऐसी उत्कृष्ट कृतियाँ जिनका आकर्षण और गरिमा मुझे इतना जीवंत,

इतना अविभाज्य बना देती थीं कि यदि मुझे कार्पेंसिओ को लूव्र की किसी गैलरी में या बर्मा को किसी ऐसे नाटक में देखने के लिए ले जाया जाता जिसके बारे में मैंने कभी सुना भी न होता, तो भी मुझे अपने सामने, हजारों सपनों की अनूठी और अकल्पनीय कृति को खुली आँखों से पाकर वैसा ही आनंदमय विस्मय नहीं होता। फिर, जब मैं प्रतीक्षा कर रहा था, बर्मा के अभिनय से बड़प्पन और दुखद शोक के कुछ पहलुओं के प्रकटीकरण की उम्मीद कर रहा था, तो मुझे ऐसा लगा कि उसके अभिनय में जो भी महानता, जो भी सच्चाई हो सकती है, वह और भी बढ़ जाएगी यदि अभिनेत्री इसे वास्तविक मूल्य के काम पर लागू करे, बजाय इसके कि जो अंततः एक साधारण और भद्दी सतह पर सच्चाई और सुंदरता का एक पैटर्न सजाने जैसा होगा।

अंततः, यदि मैं किसी नए नाटक में बर्मा को सुनने जाता, तो मेरे लिए उनकी कला, उनके उच्चारण का आकलन करना आसान नहीं होता, क्योंकि मैं अपरिचित पाठ और उनके स्वर-लहरों और हाव-भाव से उसमें जोड़े गए भावों के बीच अंतर नहीं कर पाता, एक ऐसा भाव जो मुझे नाटक में समाहित प्रतीत होता; जबकि पुराने नाटक, वे क्लासिक नाटक जो मुझे कंठस्थ थे, मेरे सामने विशाल और खाली दीवारों की तरह प्रस्तुत होते, मानो मेरे निरीक्षण के लिए आरक्षित और तैयार हों, जिन पर मैं बिना किसी प्रतिबंध के उन युक्तियों की सराहना कर पाता जिनसे बर्मा उन्हें भित्तिचित्रों की तरह, अपनी प्रेरणा के सदा ताजे खजानों से सजाती थीं। दुर्भाग्य से, कुछ वर्षों से, जब से उन्होंने बड़े थिएटरों से संन्यास लेकर उन बड़े थिएटरों में अपना भाग्य आजमाया है जहाँ वे 'स्टार' थीं, उन्होंने क्लासिक भूमिकाओं में अभिनय करना बंद कर दिया है; और मैंने होर्डिंग्स को व्यर्थ ही देखा; उनमें केवल नवीनतम नाटकों का ही विज्ञापन होता था, जो विशेष रूप से उनके लिए उस समय के लोकप्रिय लेखकों द्वारा लिखे

गए थे। एक सुबह जब मैं नव वर्ष की छुट्टियों के सप्ताह के दोपहर के कार्यक्रमों की जानकारी के लिए विज्ञापन कॉलम में खोज रहा था, तब मैंने पहली बार देखा—किसी मामूली से शुरुआती कार्यक्रम के बाद, जिसका शीर्षक मेरे लिए अस्पष्ट था क्योंकि उसमें एक ऐसी घटना का सारा विवरण छिपा था जिसके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी—फेद्रे के दो नाटक, जिनमें श्रीमती बर्मा मुख्य भूमिका में थीं, और उसके बाद की दोपहरों में, ले डेमी-मोंडे और लेस कैप्रिसेस डे मैरिएन, जिनके नाम, फेद्रे की तरह ही, मेरे लिए पारदर्शी थे, प्रकाश से भरे हुए थे, क्योंकि वे रचनाएँ मेरे लिए इतनी परिचित थीं, कला की मुस्कान से गहराई तक प्रकाशित थीं। मुझे लगा कि इन नाटकों ने श्रीमती बर्मा को एक नई गरिमा प्रदान की है, जब मैंने इन कार्यक्रमों के कार्यक्रम के बाद अखबारों में पढ़ा कि उन्होंने ही अपनी कुछ प्रारंभिक रचनाओं के माध्यम से एक बार फिर जनता के सामने आने का फैसला किया है। वह इस बात से भली-भांति परिचित थीं कि कुछ मंच भूमिकाओं में एक ऐसी रुचि होती है जो उनके पहले प्रदर्शन की नवीनता या पुनरुद्धार की सफलता के बाद भी बनी रहती है; स्वयं द्वारा अभिनीत इन भूमिकाओं को वह संग्रहालय की उन कलाकृतियों के समान मानती थीं जिन्हें उस पीढ़ी के समक्ष रखना शिक्षाप्रद हो सकता है जिसने उन्हें बहुत पहले उन भूमिकाओं में देखा था, या उस पीढ़ी के समक्ष जिसने उन्हें अभी तक उन भूमिकाओं में नहीं देखा था। इस प्रकार, शाम को समय बिताने के उद्देश्य से प्रस्तुत किए गए नाटकों की एक पंक्ति के बीच में, इस फ्रेड्रे नामक नाटक का प्रचार करते हुए, जिसका शीर्षक बाकी सभी से न तो लंबा था और न ही अलग प्रकार से लिखा गया था, उन्होंने कुछ अवर्णनीय जोड़ दिया, मानो कोई मेज़बान, आप सभी को रात्रिभोज में जाने से पहले अपने अन्य अतिथियों से परिचित कराते हुए, अतिथियों के नामों की उस श्रृंखला के बीच अनायास

ही, बिना किसी स्वर परिवर्तन के, यह कह दे:—"श्री अनातोले फ्रांस।"

मेरा इलाज कर रहे डॉक्टर—वही डॉक्टर जिसने मुझे यात्रा करने से मना किया था—ने मेरे माता-पिता को सलाह दी कि मुझे थिएटर न जाने दें; उनका कहना था कि मैं बाद में फिर से बीमार पड़ जाऊँगा, शायद कई हफ़्तों तक, और अंततः मुझे इस अनुभव से आनंद से ज़्यादा पीड़ा ही मिलेगी। अगर मैंने ऐसे तमाशे से केवल आनंद की ही उम्मीद की होती, जिसकी भरपाई बाद में होने वाली पीड़ा से हो जाती, तो शायद यही डर मुझे रोक पाता। लेकिन इस प्रदर्शन से—ठीक वैसे ही जैसे बालबेक की यात्रा से, वेनिस की उस यात्रा से, जिसके लिए मैं इतनी बेसब्री से तरस रहा था—मेरी अपेक्षा आनंद से बिलकुल अलग थी; एक ऐसी दुनिया से संबंधित सच्चाइयों की एक श्रृंखला, जो मेरी दुनिया से कहीं अधिक वास्तविक थी, और जिसे एक बार प्राप्त कर लेने के बाद, मेरे निरर्थक जीवन की किसी भी तुच्छ घटना—भले ही वह शारीरिक पीड़ा का कारण हो—से मुझसे कभी नहीं छीना जा सकता था। सर्वोत्तम स्थिति में, प्रदर्शन के दौरान मुझे जो आनंद मिलने वाला था, वह मुझे इन सच्चाइयों की अनुभूति का शायद अपरिहार्य रूप प्रतीत हुआ; और मुझे बस यही आशा थी कि मेरे लिए जिस बीमारी की भविष्यवाणी की गई थी, वह नाटक समाप्त होने तक शुरू न हो, ताकि मेरा आनंद किसी भी तरह से कम न हो या खराब न हो। मैंने अपने माता-पिता से विनती की, जो डॉक्टर से मिलने के बाद मुझे फ्रेड्रे जाने देने के लिए तैयार नहीं थे। मैं दिन भर अपने मन में वही बात दोहराता रहा, जो इस प्रकार शुरू होती है,

वे कहते हैं कि जल्दी चले जाने से आप हमसे दूर हो जाते हैं,—"

मैं उसमें निहित हर स्वर-लहर को तलाश रहा था, ताकि मैं इस बात पर अपने आश्चर्य को बेहतर ढंग से माप सकूँ कि बर्मा ने उन पंक्तियों का उच्चारण किस प्रकार किया होगा। परम पवित्र स्थान की तरह, वह उस

घूंघट के नीचे छिपी हुई थी जो उसे मेरी दृष्टि से छिपाए हुए था, जिसके पीछे मैं उसे हर क्षण एक नया रूप देता था, उस शब्द के अनुसार जो बर्गोट के शब्दों में से—जो गिल्बर्ट ने मेरे लिए उस पुस्तिका में पाया था —मेरे मन में चल रहा होता था; "प्लास्टिक कुलीनता," "ईसाई संयम" या "जैनसेनिस्ट पीलापन," "ट्रोज़ेन और क्लीव्स की राजकुमारी" या "माइसीनियन नाटक," "डेल्फ़िक प्रतीक," "सौर मिथक"; वह दिव्य सौंदर्य, जिसे बर्मा के अभिनय द्वारा मुझे दिन-रात, एक सदा प्रकाशित वेदी पर प्रकट किया जाना था, मेरे मन के पवित्र स्थान में विराजमान था, मेरा मन जिसके लिए स्वयं मन नहीं बल्कि मेरे कठोर, चंचल माता-पिता को यह तय करना था कि क्या वह उस प्रकट देवी के पूर्ण स्वरूप को उसी स्थान पर, जहाँ अब उनका अदृश्य रूप था, सदा के लिए स्थापित करेगा या नहीं। और उस अकल्पनीय छवि पर अपनी निगाहें गड़ाए, मैं सुबह से रात तक अपने परिवार द्वारा मेरे रास्ते में खड़ी की गई बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता रहा। लेकिन जब अंततः वे बाधाएँ दूर हो गईं, जब मेरी माँ ने—यद्यपि यह सुबह का कार्यक्रम वास्तव में उस आयोग की बैठक के साथ मेल खाने वाला था, जिससे मेरे पिता ने एम. डी नॉरपोइस को रात के खाने पर घर लाने का वादा किया था—मुझसे कहा, "ठीक है, हम नहीं चाहते कि तुम दुखी हो;—अगर तुम्हें लगता है कि तुम्हें इसमें इतना आनंद आएगा, तो तुम्हें जाना ही होगा; बस इतना ही।" जब रंगमंच जाने का वह दिन, जो अब तक वर्जित और असंभव था, अब केवल मुझ पर ही निर्भर था, तब पहली बार, इस इच्छा से मुक्त होकर कि यह असंभव न रहे, मैंने स्वयं से पूछा कि क्या यह वांछनीय है, क्या मेरे माता-पिता के निषेध के अलावा कोई अन्य कारण नहीं है जो मुझे अपना इरादा छोड़ने के लिए मजबूर कर दे। पहली बात तो यह थी कि जहाँ मैं उनकी क्रूरता के कारण उनसे घृणा करता था, वहीं उनकी सहमति ने उन्हें मेरे लिए इतना प्रिय

बना दिया था कि उन्हें पीड़ा पहुँचाने का विचार भी मुझे ऐसी पीड़ा से भर देता था जिससे जीवन का उद्देश्य सत्य की खोज नहीं बल्कि प्रेम और दया की खोज के रूप में प्रकट होता था, और जीवन अच्छा या बुरा केवल तभी प्रतीत होता था जब मेरे माता-पिता खुश या दुखी होते थे। "अगर आपको तकलीफ हो तो मैं नहीं जाना चाहती," मैंने अपनी माँ से कहा। इसके विपरीत, मेरी माँ ने मेरे मन से इस डर को पूरी तरह से दूर करने की कोशिश की कि कहीं उन्हें मेरे जाने का पछतावा न हो, क्योंकि उनके अनुसार, इससे फ्रेड्रे से मिलने वाला मेरा आनंद खराब हो जाएगा, और मेरे आनंद के इसी विचार ने मेरे पिता और उन्हें अपना पहले का निर्णय बदलने के लिए प्रेरित किया था। लेकिन फिर, प्रदर्शन में आनंद खोजने की यह बाध्यता मुझे बहुत बोझिल लग रही थी। इसके अलावा, अगर मैं बीमार होकर घर लौटी, तो क्या मैं छुट्टियों के खत्म होने और गिलबर्ट के वापस आने के तुरंत बाद चैंप्स-एलिसी जाने के लिए समय पर ठीक हो पाऊँगी? इन सभी तर्कों के विरुद्ध, मैंने यह तय करने के लिए कि मुझे कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए, बर्मा की पूर्णता के विचार को, जो अपने पर्दे के पीछे अदृश्य था, अपने सामने रखा। मैंने तराजू के एक पलड़े में "माँ को दुखी करना," "शैंप्स-एलिसी पर न जा पाने का जोखिम उठाना," और दूसरे में "जैनसेनवादी पीलापन," "सूर्य मिथक" जैसे शब्दों को डाला, यहाँ तक कि शब्द मेरे मन में धुंधले और अस्पष्ट हो गए, मुझसे कुछ कहना बंद कर दिया, अपनी सारी शक्ति खो दी; और धीरे-धीरे मेरी हिचकिचाहट इतनी पीड़ादायक हो गई कि अगर मैंने अब रंगमंच जाने का फैसला किया होता, तो केवल इसलिए कि मैं उन्हें समाप्त कर सकूँ और उनसे हमेशा के लिए छुटकारा पा सकूँ। यह मेरे कष्टों को एक समय सीमा देने जैसा होता, और अब बौद्धिक आशीर्वाद की उम्मीद में नहीं, पूर्णता के आकर्षण के आगे झुककर नहीं, मैं खुद को अब ज्ञानी देवी के पास नहीं,

बल्कि उस कठोर, निर्दयी, निराकार और अनाम देवत्व के पास ले जाने देता, जिसे गुप्त रूप से पर्दे के पीछे उनके स्थान पर स्थापित किया गया था। लेकिन अचानक सब कुछ बदल गया। बर्मा का शो देखने जाने की मेरी इच्छा को एक नई प्रेरणा मिली, जिससे मैं बेसब्री और खुशी के साथ दोपहर के शो का इंतजार करने लगा; नाटक के टिकटों वाले स्तंभ के सामने अपनी दैनिक जगह लेने के लिए जाने पर, जो हाल ही में एक संत की तरह कष्टदायक हो गई थी, मैंने वहाँ अभी भी नम और झुर्रीदार, फ्रेड्रे का पूरा बिल देखा, जिसे अभी-अभी पहली बार चिपकाया गया था (और मुझे स्वीकार करना होगा कि बाकी कलाकारों ने मुझे ऐसा कोई अतिरिक्त आकर्षण नहीं दिया जिससे मैं निर्णय ले सकूँ)। लेकिन इसने मेरे असमंजस के एक बिंदु को एक ठोस रूप दे दिया, और चूंकि बिल पर तारीख उस दिन की नहीं थी जिस दिन मैंने इसे पढ़ा था, बल्कि उस दिन की थी जिस दिन प्रदर्शन होना था, और ठीक उसी समय की थी जब पर्दा उठना था, इसलिए यह लगभग आसन्न, साकार होने की राह पर था। यह सोचकर मैं खुशी से उछल पड़ा कि उस दिन, और ठीक उसी समय, मैं अपनी जगह पर बैठा रहूंगा, बर्मा की आवाज सुनने के लिए तैयार। और इस डर से कि कहीं मेरे माता-पिता मेरी दादी और मेरे लिए दो अच्छी सीटें सुरक्षित करने के लिए समय पर न पहुंच पाएं, मैं घर की ओर भागा, उन जादुई शब्दों से प्रेरित होकर जिन्होंने अब मेरे मन में "जैनसेनवादी पीलापन" और "सूर्य मिथक" का स्थान ले लिया था; - "टोपी पहने महिलाओं को स्टॉल में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। दरवाजे दो बजे बंद कर दिए जाएंगे।"

अफसोस! वह पहला शो बेहद निराशाजनक साबित हुआ। मेरे पिता ने आयोग के कार्यालय जाते समय मेरी दादी और मुझे थिएटर छोड़ने की पेशकश की। घर से निकलने से पहले उन्होंने मेरी माँ से कहा: "देख लेना

कि आज रात हमारे लिए अच्छा खाना हो; याद है ना, मैं डी नॉरपोइस को अपने साथ वापस ला रहा हूँ।" मेरी माँ भूली नहीं थीं। और उस पूरे दिन और रात भर, फ्रांस्वा, रसोई की कला में खुद को समर्पित करने के अवसर से प्रसन्न थीं—जिसमें वह वास्तव में माहिर थीं, और साथ ही एक नए मेहमान को खाना खिलाने की संभावना से प्रेरित थीं, इस चेतना से कि उन्हें केवल अपने ज्ञात तरीकों से जेली में गोमांस का व्यंजन तैयार करना होगा—रचनात्मकता के उमंग में जी रही थीं; क्योंकि वह अपने काम में इस्तेमाल होने वाली सामग्रियों की आंतरिक गुणवत्ता को अत्यधिक महत्व देती थी, इसलिए वह खुद हॉल्स गई थी ताकि बेहतरीन रम्प-स्टेक, बीफ़ की पिंडली और बछड़े के पैर ला सके, ठीक वैसे ही जैसे माइकल एंजेलो ने जूलियस द्वितीय के स्मारक के लिए सबसे उत्तम संगमरमर के ब्लॉक चुनने में कैरारा के पहाड़ों में आठ महीने बिताए थे। फ्रांस्वा ने इन यात्राओं में इतनी लगन लगाई कि उसकी लाल गालों को देखकर माँ को डर लगने लगा कि कहीं हमारी बूढ़ी नौकरानी पिएत्रासांता की खदानों में मेडिसी के मकबरों के मूर्तिकार की तरह अधिक काम करके बीमार न पड़ जाए। और रातों-रात फ्रांस्वा ने बेकरी के ओवन में पकाने के लिए ब्रेडक्रम्ब्स से ढककर, लकड़ी के बुरादे में पैक किए हुए गुलाबी संगमरमर के ब्लॉक की तरह, जिसे वह "नेव-यॉर्क हैम" कहती थी, भिजवा दिया। भाषा को शब्दों की असलियत से कम समृद्ध मानते हुए और अपने कानों को कम भरोसेमंद समझते हुए, जब उन्होंने पहली बार किसी को यॉर्क हैम का ज़िक्र करते सुना, तो उन्होंने सोचा होगा—यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि शब्दकोश में एक साथ "यॉर्क" और "न्यू यॉर्क" दोनों शब्द हों—कि उन्होंने कुछ गलत सुना है और हैम का असली नाम वही है जो उन्हें पहले से परिचित था। और इसलिए, तब से, यॉर्क शब्द उनके कानों में, या विज्ञापन में पढ़ते समय उनकी आँखों के

सामने, "न्यू" प्रत्यय के साथ जुड़ जाता था, जिसे वे "नेव"' उच्चारित करती थीं। और वे पूरी आस्था के साथ अपनी रसोई की नौकरानी से कहती थीं: "जाओ और ओलिडा के यहाँ से मेरे लिए एक हैम ले आओ। मैडम ने मुझे खास तौर पर नेव'-यॉर्क लाने को कहा है।" उस खास दिन, अगर फ्रांस्वा रचनात्मक प्रतिभा के प्रबल विश्वास से भरी हुई थीं, तो मैं सत्य की खोज करने वाले की क्रूर चिंता में डूबी हुई थी। निःसंदेह, जब तक मैंने बर्मा को बोलते नहीं सुना था, तब तक मुझे कुछ आनंद का अनुभव हो रहा था। मुझे यह आनंद रंगमंच के सामने स्थित उस छोटे से चौक में महसूस हो रहा था, जहाँ दो घंटे बाद, जलते हुए गैस-लैंपों की रोशनी में शाहबलूत के पेड़ों की नंगी शाखाएँ धातु की चमक से जगमगा उठेंगी और उनकी संरचना का हर विवरण स्पष्ट दिखाई देगा; टिकट काउंटर पर मौजूद कर्मचारियों के सामने, जिनका चयन, उनकी पदोन्नति, उनका सारा भाग्य उस महान कलाकार पर निर्भर था—क्योंकि रंगमंच में केवल उन्हीं के पास शक्ति थी, जहाँ क्षणभंगुर प्रबंधक एक के बाद एक अस्पष्ट क्रम में आते रहते थे—जिन्होंने हमारी ओर देखे बिना ही हमारे टिकट ले लिए, क्योंकि वे इस चिंता में इतने लीन थे कि कहीं श्रीमती बर्मा के निर्देश नए कर्मचारियों तक ठीक से न पहुँच गए हों, कहीं यह स्पष्ट रूप से, हर जगह न समझ लिया गया हो कि उनके लिए किराए पर तालियाँ कभी नहीं बजनी चाहिए, जब तक वह मंच पर न हों तब तक सभी खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए, और जैसे ही वह दिखाई दें, हर दरवाजा कसकर बंद कर देना चाहिए; कि धूल को जमने देने के लिए गर्म पानी का एक कटोरा उसके पास कहीं छिपाकर रखा जाना चाहिए; और, वैसे भी, किसी भी क्षण, लहराते बालों वाले घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली उसकी गाड़ी थिएटर के बाहर रुक जाएगी, वह फर से ढकी हुई उससे उतरेगी, और सभी के अभिवादन को चिढ़कर स्वीकार करते हुए, अपने

एक परिचारक को यह पता लगाने के लिए भेजेगी कि क्या उसके दोस्तों के लिए कोई स्टेज बॉक्स आरक्षित किया गया है, 'सामने' का तापमान क्या है, अन्य बॉक्सों में कौन हैं, और क्या कार्यक्रम विक्रेता सजे-धजे दिख रहे हैं; थिएटर और दर्शक उसके लिए एक पल से अधिक कुछ नहीं थे, एक बाहरी आवरण जिसे वह ओढ़ती थी, और माध्यम, एक कमोबेश 'अच्छा' कंडक्टर जिसके माध्यम से उसकी प्रतिभा को गुजरना पड़ता था। मैं भी थिएटर में खुश था; क्योंकि मैंने यह खोज लिया था कि - मेरी बचपन की कल्पना में लंबे समय से बसी तस्वीर के विपरीत - सबके लिए केवल एक ही मंच था, मैंने सोचा था कि अन्य दर्शकों की उपस्थिति के कारण मैं इसे ठीक से नहीं देख पाऊंगा, जैसा कि भीड़ के बीच में होने पर होता है; अब मुझे यह बात समझ में आई कि इसके विपरीत, एक ऐसी व्यवस्था के कारण जो एक तरह से सभी दर्शकों का प्रतीक है, हर कोई खुद को रंगमंच का केंद्र महसूस करता है; जिससे मुझे यह बात समझ में आई कि जब फ्रांस्वा को एक बार ऊपरी गैलरी से कोई मेलोड्रामा देखने भेजा गया था, तो लौटने पर उसने हमें बताया था कि उसकी सीट सबसे अच्छी थी, और मंच से दूर होने के बजाय वह पर्दे की रहस्यमय और जीवंत निकटता से सचमुच भयभीत हो गई थी। मेरी खुशी तब और बढ़ गई जब मैंने उस झुके हुए पर्दे के पीछे से ऐसी अस्पष्ट खटखटाहटें सुनीं, जैसी मुर्गी के निकलने से पहले अंडे के छिलके के पीछे से सुनाई देती हैं, ये आवाज़ें तेज़ी से तेज़ होती गईं और अचानक, उस दुनिया से आ रही थीं जो हमारी आँखों से परे थी, फिर भी अपनी आँखों से हमें परख रही थी, और निस्संदेह हमसे तीन लगातार हथौड़ों के प्रहारों के रूप में संबोधित कर रही थी, जो मंगल ग्रह से आने वाले किसी भी संकेत की तरह मार्मिक थे। और—एक बार जब यह पर्दा उठा,—जब मंच पर एक लेखन-मेज और एक चिमनी, जो किसी भी तरह से असामान्य नहीं थीं, ने संकेत

दिया कि जो लोग प्रवेश करने वाले थे, वे अभिनेता नहीं थे जो पाठ करने आए थे, जैसा कि मैंने उन्हें एक बार देखा था और एक शाम की पार्टी में सुना था, बल्कि वास्तविक लोग थे, जो घर पर अपना जीवन जी रहे थे, जिन पर मैं इस प्रकार बिना उनकी नज़र में आए जासूसी करने में सक्षम था—मेरी खुशी अभी भी बनी रही; यह एक क्षणिक बेचैनी से टूट गई; जैसे ही मैं नाटक शुरू होने से पहले तैयार होकर अपने कान लगाए बैठा था, मंच के किनारे से दो आदमी थिएटर में दाखिल हुए, जो एक-दूसरे से बहुत गुस्से में रहे होंगे, क्योंकि वे इतनी जोर से बात कर रहे थे कि सभागार में, जहाँ कम से कम एक हजार लोग थे, हम हर शब्द सुन सकते थे, जबकि एक छोटे से कैफे में किसी को वेटर को बुलाकर पूछना पड़ता है कि दो आदमी, जो झगड़ते हुए प्रतीत होते हैं, क्या कह रहे हैं; लेकिन उस क्षण, जब मैं यह देखकर अचंभित था कि दर्शक बिना किसी विरोध के उन्हें सुन रहे थे, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, जिसके बीच-बीच में हल्की हंसी सुनाई दी, तब मुझे समझ आया कि ये उद्दंड लोग अभिनेता थे और 'पर्दा उठाने वाला' नामक छोटा सा नाटक अब शुरू हो चुका था। इसके बाद इतना लंबा अंतराल हुआ कि अपनी-अपनी जगहों पर लौट चुके दर्शक अधीर हो गए और पैर पटकने लगे। मैं इससे भयभीत हो गया; क्योंकि ठीक वैसे ही जैसे किसी आपराधिक मुकदमे की रिपोर्ट में, जब मैं पढ़ता था कि कोई नेक दिल इंसान अपने स्वार्थ के विरुद्ध जाकर किसी निर्दोष कैदी के पक्ष में गवाही देने आ रहा है, तो मुझे हमेशा डर रहता था कि वे उसके प्रति पर्याप्त दयालु नहीं होंगे, पर्याप्त कृतज्ञता नहीं दिखाएंगे, उसे भरपूर मुआवजा नहीं देंगे, और वह निराश होकर अन्याय का साथ देगा; अब प्रतिभा को सद्गुण के समान मानते हुए, मुझे डर था कि कहीं बर्मा, इतने असभ्य दर्शकों के बुरे व्यवहार से नाराज़ होकर—जिनमें मैं चाहती थी कि वह कुछ मशहूर हस्तियों को संतुष्टि के साथ पहचाने,

जिनके निर्णयों को वह महत्व देती—अपनी नाराज़गी और तिरस्कार को बुरे व्यवहार से ज़ाहिर न कर दे। और मैंने अपने चारों ओर उन बेकाबू लोगों को निहारते हुए देखा जो अपने असंवेदनशील क्रोध में उस दुर्लभ और नाज़ुक छाप को चकनाचूर करने वाले थे जिसे मैं पाने आया था। मेरे आनंद के अंतिम क्षण फ्रेड्रे के शुरुआती दृश्यों के दौरान थे। नायिका स्वयं दूसरे अंक के इन पहले दृश्यों में दिखाई नहीं देती; फिर भी, जैसे ही पर्दा उठा, और इस बार लाल मखमल का एक और पर्दा बीच से हट गया (एक ऐसा पर्दा जिसका उपयोग उन सभी नाटकों में मंच की गहराई को आधा करने के लिए किया जाता था जिनमें 'स्टार' दिखाई देती थी), पीछे से एक अभिनेत्री आई जिसका चेहरा और आवाज़, जैसा कि मुझे बताया गया था, बर्मा की थी। इसलिए कलाकारों में बदलाव हुआ होगा; थीसियस की पत्नी की भूमिका के लिए मैंने जो भी मेहनत की थी, वह सब व्यर्थ हो गई। लेकिन अब एक दूसरी अभिनेत्री ने पहली अभिनेत्री की जगह ले ली। तब मुझे लगा होगा कि मैं पहली अभिनेत्री को बर्मा समझकर गलत था, क्योंकि दूसरी अभिनेत्री तो उससे कहीं अधिक मिलती-जुलती थी, और उसकी उच्चारण शैली तो बर्मा से कहीं अधिक मिलती-जुलती थी। इसके अलावा, दोनों ने अपने-अपने किरदारों को गरिमापूर्ण हाव-भाव से और भी निखार दिया—जिन्हें मैं स्पष्ट रूप से देख सकता था और पाठ के संदर्भ में उनकी सराहना कर सकता था, जब वे अपने वस्त्रों की सुंदर तहों को उठाती और गिराती थीं—और साथ ही स्वर में कुशल परिवर्तन भी करती थीं, कभी भावुक, कभी व्यंग्यात्मक, जिससे मुझे उन पंक्तियों का महत्व समझ में आया जिन्हें मैंने घर पर बिना ध्यान दिए ही पढ़ा था। लेकिन अचानक, उसके एकांत को ढकने वाले लाल पर्दे की दरार में, मानो एक फ्रेम में, एक महिला प्रकट हुई, और उसी क्षण मुझे वह भय जकड़ लिया, जो बर्मा के भय से कहीं अधिक कष्टदायक था, कि कहीं

कोई खिड़की खोलकर उसे परेशान न कर दे, या कार्यक्रम की सरसराहट से उसकी किसी पंक्ति को दबा न दे, या दूसरों की सराहना करके और उसकी पर्याप्त सराहना न करके उसे नाराज न कर दे;—अपने ही अंदाज़ में, बर्मा से भी कहीं अधिक पूर्ण रूप से, उस क्षण से रंगमंच, दर्शक, नाटक और अपने शरीर को केवल एक ध्वनि माध्यम के रूप में महत्वहीन मानते हुए, सिवाय उस हद तक जिस हद तक वह उस आवाज़ के उतार-चढ़ाव के अनुकूल था,—मुझे एहसास हुआ कि जिन दो अभिनेत्रियों की मैं कुछ मिनटों से प्रशंसा कर रहा था, वे उस महिला से जरा भी मिलती-जुलती नहीं थीं जिसे मैं सुनने आया था। लेकिन उसी क्षण मेरा सारा आनंद समाप्त हो गया; मैंने बर्मा की आँखों, कानों और मन को समझने की बहुत कोशिश की, ताकि उसके द्वारा मुझे उसकी प्रशंसा करने के जो भी कारण बताए जाएँ, उनमें से एक भी अंश मुझसे छूट न जाए, फिर भी मैं एक भी कारण नहीं समझ पाया। यहाँ तक कि मैं उसके साथियों की तरह उसकी वाणी और वादन में भी बुद्धिमत्तापूर्ण स्वर-लहरें और सुंदर हाव-भाव नहीं देख पाया। मैंने उसे ऐसे सुना जैसे मैं फ्रेड्रे पढ़ रहा हूँ, या जैसे स्वयं फ्रेड्रा ने उसी क्षण वे शब्द कहे हों जो मैं सुन रहा था, और ऐसा प्रतीत ही नहीं हुआ कि बर्मा की प्रतिभा ने उनमें कुछ भी जोड़ा हो। काश, मैं उन्हें पूरी तरह से समझ पाता, उनमें जो सुंदरता थी उसे खोजने का प्रयास कर पाता, कलाकार की आवाज के हर स्वर-लहर, उसके चेहरे के हर भाव को कुछ क्षण के लिए अपनी इंद्रियों के समक्ष स्थिर कर पाता; कम से कम मैंने कोशिश तो की, अपनी मानसिक चपलता के बल पर, एक भी वाक्य आने से पहले ही अपना ध्यान उसे पकड़ने के लिए तैयार और केंद्रित करके, हर शब्द, हर हावभाव के कीमती समय का एक भी अंश तैयारियों में बर्बाद न करते हुए, और अपनी गहन अवलोकन क्षमता के कारण, उनमें इतनी गहराई तक उतरने में कामयाब रहा मानो मेरे पास

उन्हें अकेले में समझने के लिए पूरे घंटे हों। लेकिन उनका समय कितना कम था! एक ध्वनि मेरे कान तक पहुँचती ही थी कि दूसरी ध्वनि उसकी जगह ले लेती थी। एक दृश्य में, जहाँ बर्मा एक पल के लिए स्थिर खड़ी रहती है, उसका हाथ एक ऐसे चेहरे के स्तर तक उठा हुआ है जो किसी रंगमंच की तकनीक से हरे रंग की रोशनी में नहाया हुआ है, और पीछे एक कपड़ा है जिसे समुद्र को दर्शाने के लिए चित्रित किया गया है, पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा; लेकिन तब तक अभिनेत्री हिल चुकी थी, और वह दृश्य जिसे मैं देखना चाहता था, अब अस्तित्व में नहीं था। मैंने अपनी दादी को बताया कि मुझे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है; उन्होंने मुझे अपना चश्मा दे दिया। लेकिन, जब कोई किसी चीज की वास्तविकता में विश्वास करता है, तो उसे कृत्रिम साधनों से दृश्यमान बनाना, उसे अपने करीब महसूस करने जैसा नहीं होता। अब मुझे लगा कि मैं बर्मा को नहीं, बल्कि आवर्धक लेंस में उसकी छवि को देख रहा था। मैंने चश्मा नीचे रख दिया, लेकिन शायद दूरी के कारण धुंधली हो चुकी उसकी छवि भी उतनी सटीक नहीं थी; दोनों बर्मा में से असली कौन थी? हिप्पोलिटे से उसके भाषण की बात करें तो, मैंने उस पर बहुत भरोसा किया था, क्योंकि उसके साथियों द्वारा कम सुंदर हिस्सों में हर पल मुझे दिए जा रहे चतुर अर्थ को देखते हुए, वह निश्चित रूप से इसे उन स्वरों से कहीं अधिक आश्चर्यजनक ढंग से प्रस्तुत करेगी, जिनकी मैंने नाटक को घर पर पढ़ते समय कल्पना की थी; लेकिन वह उन ऊंचाइयों तक नहीं पहुंची जहां 'नोन' या 'एरिसी' स्वाभाविक रूप से पहुंच सकती थीं, उसने उस पूरे अंश को एक समान लय में ढाल दिया जिसमें इतने तीखे विरोधाभास आपस में मिले हुए थे कि दुखद अभिनेत्रियों में सबसे कम बुद्धिमान, यहां तक कि अकादमी की छात्राएं भी, उनके प्रभाव को नजरअंदाज नहीं कर सकती थीं; इसके अलावा, उसने भाषण इतनी तेजी से दिया कि जब वह आखिरी

पंक्ति पर पहुंची, तभी मुझे इस बात का एहसास हुआ कि उसने जानबूझकर पूरे भाषण में एकरसता थोपी थी।

फिर, अंत में, दर्शकों की जोशीली तालियों से प्रेरित होकर, मेरे मन में प्रशंसा का भाव जागा। मैंने भी तालियों में अपना हाथ मिलाया, ताकि यह गूंज और देर तक बनी रहे और बरमा अपनी कृतज्ञता में उस स्तर तक पहुंच जाए, और मुझे यकीन हो जाए कि मैंने उसे उसके किसी महान दिन में सुना है। वैसे, एक दिलचस्प बात यह थी कि जिस क्षण जनता के उत्साह का यह तूफान उमड़ा, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, वही क्षण था जिसमें बरमा ने अपने सबसे अनमोल खजानों में से एक को प्रकट किया। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ अलौकिक वास्तविकताएं अपने चारों ओर एक ऐसी चमक बिखेरती हैं जिसके प्रति दर्शक संवेदनशील होते हैं। इसलिए जब कोई बड़ी घटना घटित होती है, जब किसी दूरस्थ सीमा पर कोई सेना खतरे में होती है, पराजित होती है या विजयी होती है, तो हमें जो अस्पष्ट और विरोधाभासी रिपोर्टें मिलती हैं, जिनसे एक शिक्षित व्यक्ति को बहुत कम जानकारी मिल पाती है, वे भीड़ में एक ऐसी भावना को जन्म देती हैं जिससे वह व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाता है, और जिसमें, एक बार जब विशेषज्ञ आलोचना उसे वास्तविक सैन्य स्थिति से अवगत करा देती है, तो वह उस 'आभा' की लोकप्रिय धारणा को पहचान लेता है जो महत्वपूर्ण घटनाओं को घेरे रहती है, और जो सैकड़ों मील दूर से दिखाई दे सकती है। किसी जीत की खबर या तो युद्ध समाप्त होने के बाद मिलती है, या तुरंत ही, हॉल पोर्टर के प्रफुल्लित उल्लास से। किसी को बर्मा के अभिनय में प्रतिभा का स्पर्श उसके प्रदर्शन को सुनने के एक सप्ताह बाद, किसी समीक्षा की आलोचना में, या फिर मौके पर ही, दर्शकों की जोरदार तालियों से पता चलता है। लेकिन भीड़ द्वारा यह तत्काल पहचान सैकड़ों अन्य, पूरी तरह से गलत, पहचानों के साथ मिली

हुई थी; तालियाँ अक्सर गलत समय पर बजती थीं, इसके अलावा यह पहले बज चुकी तालियों के प्रभाव से यांत्रिक रूप से उत्पन्न होती थीं, ठीक वैसे ही जैसे तूफान में, एक बार समुद्र में पर्याप्त हलचल मच जाए तो हवा शांत होने के बाद भी वह उफान मारता रहता है। कोई बात नहीं; मैं जितनी ज़्यादा तालियाँ बजाता, मुझे लगता कि बर्मा का अभिनय उतना ही बेहतर होता जा रहा है। मेरे पास बैठी एक साधारण सी महिला ने कहा, "मैं कहती हूँ, वह सचमुच अपना पूरा ज़ोर लगाती है; जिस तरह से वह इधर-उधर भागती है, ऐसा लगता है जैसे वह खुद को चोट पहुँचा लेगी। मैं इसे अभिनय कहती हूँ, है ना?" बर्मा की श्रेष्ठता के इन कारणों को पाकर मैं खुश था, हालाँकि मुझे थोड़ा संदेह भी था कि ये कारण उसकी श्रेष्ठता को उसी तरह नहीं समझाते जैसे जियोकोंडा या बेनवेनुटो के पर्सियस के किसी किसान के "वाह, क्या बढ़िया काम है! सब सोना है, देखो! बढ़िया है ना?" जैसे शब्दों को नहीं समझाते। मैंने इस लोकप्रिय उत्साह की शराब को ललक से पी लिया। जब आखिरी बार पर्दा गिरा, तो मुझे वही निराशा महसूस हुई कि जिस आनंद की मुझे इतनी चाह थी, वह नहीं मिल पाया। लेकिन साथ ही, मुझे इसे और लंबा खींचने की ज़रूरत भी महसूस हुई, हमेशा के लिए विदा न होने की, जब मैंने रंगमंच के इस विचित्र जीवन को छोड़ा, जो कुछ घंटों के लिए मेरा अपना था। अगर मैं अपने घर वापस न लौटती, तो ऐसा लगता जैसे मैं निर्वासन में जा रही हूँ। घर लौटने पर मुझे बर्मा के प्रशंसक, एम. डी नॉरपोइस से बर्मा के बारे में और अधिक जानने की उम्मीद न होती, जिनके कारण मुझे फ्रेड्रे जाने की अनुमति मिली थी। मेरे पिता ने मुझे रात के खाने से पहले उनसे मिलवाया, और इसके लिए मुझे अपने अध्ययन कक्ष में बुलाया। जैसे ही मैं अंदर गई, राजदूत उठे, अपना हाथ बढ़ाया, अपने लंबे कद को झुकाया और अपनी नीली आँखों से मेरे चेहरे को ध्यान से देखा। जब वे विदेशों में

फ्रांस का प्रतिनिधित्व करते थे, उस समय उनके सामने पेश किए जाने वाले विदेशी आगंतुक कमोबेश (यहां तक कि प्रसिद्ध गायक भी) प्रतिष्ठित व्यक्ति होते थे, जिनके बारे में वे उनसे मिलते ही बता देते थे कि बाद में जब वे पेरिस या सेंट पीटर्सबर्ग में उनके नाम सुनेंगे, तो वे कह सकेंगे कि उन्हें म्यूनिख या सोफिया में उनके साथ बिताई गई शाम पूरी तरह याद है। उन्होंने अपनी मिलनसारिता से उन्हें यह जताने की आदत बना ली थी कि उन्हें उनसे मिलकर कितनी खुशी हो रही है; इसके अलावा, उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि यूरोपीय राजधानियों के जीवन में, वहां से गुजरने वाले सभी दिलचस्प व्यक्तित्वों और स्थानीय लोगों के रीति-रिवाजों के संपर्क में रहने से, पूरे यूरोप के बौद्धिक आंदोलन की किताबों से कहीं अधिक गहरी समझ प्राप्त होती है। इसलिए वे प्रत्येक नवागंतुक पर अपनी तीक्ष्ण अवलोकन शक्ति का प्रयोग करते थे, ताकि वे तुरंत यह तय कर सकें कि उन्हें किस प्रकार के व्यक्ति से निपटना है। सरकार ने कुछ समय से उन्हें विदेश में कोई पद नहीं सौंपा था, फिर भी, जैसे ही किसी से उनका परिचय कराया जाता, उनकी आँखें, मानो उन्हें अपने स्वामी के सेवानिवृत्ति की सूचना न मिली हो, अपनी सार्थक अवलोकन प्रक्रिया शुरू कर देतीं, और अपने पूरे हावभाव से वे यह जताने का प्रयास करते कि अजनबी का नाम उनके लिए अपरिचित नहीं है। इस प्रकार, जब वे मुझसे विनम्रतापूर्वक और अपने विशाल अनुभव के प्रति सजग व्यक्ति के सम्मान के साथ बात करते, तो वे मुझे भी एक बुद्धिमत्तापूर्ण जिज्ञासा से परखते रहते, मानो मैं कोई अनोखी प्रथा, कोई ऐतिहासिक और शिक्षाप्रद इमारत या उनके मार्ग का कोई 'तारा' हूँ। इस प्रकार, मेरे प्रति अपने व्यवहार से उन्होंने एक साथ ही ऋषि गुरु की महान परोपकारिता और युवा अनाचारसिस की उत्सुक जिज्ञासा का प्रमाण दिया।

उन्होंने मुझे रेव्यू डेस ड्यूक्स-मोंडेस में कोई अवसर नहीं दिया, बल्कि

मुझसे मेरे कामों और पढ़ने के बारे में कई सवाल पूछे; मेरी रुचियों के बारे में पूछा, जिनके बारे में मैंने पहली बार इस तरह सुना जैसे कि उनका पालन करना बिल्कुल तर्कसंगत हो, जबकि अब तक मैंने हमेशा उन्हें दबाना अपना कर्तव्य समझा था। चूंकि वे मुझे साहित्य की ओर आकर्षित करती थीं, इसलिए उन्होंने मुझे उस रास्ते से नहीं रोका; इसके विपरीत, उन्होंने इसके बारे में आदरपूर्वक बात की, मानो किसी आदरणीय व्यक्ति के बारे में, जिनके चुनिंदा समूह को रोम या ड्रेसडेन में खुशी से याद किया जाता है, और केवल इस बात का अफसोस होता है कि जीवन के अनेक कर्तव्यों के कारण उनसे मिलना बहुत कम संभव हो पाता है। वे लगभग हंसमुख मुस्कान के साथ, उन सुखद पलों को देखकर मुझसे ईर्ष्या करते प्रतीत हुए, जो मैं, उनसे अधिक भाग्यशाली और स्वतंत्र होकर, ऐसी प्रेमिका के साथ बिता सकता था। लेकिन उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों ने मुझे साहित्य के बारे में उस छवि से बिल्कुल अलग दिखाया जो मैंने कॉम्ब्रे में बनाई थी, और मुझे एहसास हुआ कि अपना इरादा छोड़ने में मैं दोहरी तरह से सही थी। अब तक, मैं केवल यही मानती थी कि मुझमें लिखने की 'प्रतिभा' नहीं है; अब एम. डी नॉरपोइस ने मुझसे वह महत्वाकांक्षा भी छीन ली। मैं उनसे अपने सपनों को व्यक्त करना चाहती थी; भावनाओं से कांपते हुए, मैं इस बात से बुरी तरह डरी हुई थी कि मेरे सारे शब्द मेरे अंदर की भावनाओं, उन भावनाओं जिन्हें मैंने अभी तक व्यक्त करने का प्रयास नहीं किया था, का सबसे सच्चा प्रतिरूप नहीं होंगे; यानी मेरे शब्दों का कोई स्पष्ट अर्थ नहीं होगा। शायद पेशेवर आदत के कारण, शायद उस शांति के कारण जो हर महत्वपूर्ण व्यक्ति में पाई जाती है, जिसकी सलाह अक्सर ली जाती है, और जो यह जानते हुए कि बातचीत पर उसका नियंत्रण बना रहेगा, दूसरे पक्ष को परेशान होने, संघर्ष करने, अपना समय लेने देता है; शायद अपने सिर की गरिमा पर ज़ोर देने

के लिए (स्वयं के अनुसार, अपनी लहराती मूंछों के बावजूद, वह यूनानी थे), एम. डी नॉरपोइस, जब भी उन्हें कुछ समझाया जा रहा होता, तो अपने चेहरे पर ऐसा भावहीनता बनाए रखते, मानो आप किसी संग्रहालय में रखी किसी प्राचीन और निर्जीव मूर्ति से बात कर रहे हों। फिर अचानक, किसी नीलामीकर्ता के हथौड़े या डेल्फ़िक भविष्यवाणी की तरह, राजदूत की आवाज़, जब वह आपको जवाब देते, तो और भी प्रभावशाली होती, क्योंकि उनके चेहरे पर ऐसा कुछ भी नहीं होता जिससे आप अंदाज़ा लगा सकें कि आपने उन पर कैसा प्रभाव डाला है या वे क्या राय व्यक्त करने वाले हैं।

“बिल्कुल सही,” उसने अचानक बोलना शुरू किया, मानो मामला अब सुना और तय हो चुका हो, और मुझे उन स्थिर आँखों के नीचे बढ़ती हुई बेबसी में तड़पने का मौका देने के बाद, जो एक पल के लिए भी मेरे चेहरे से नहीं हटीं। “मेरे एक दोस्त के बेटे का मामला है, जो कुछ बदलावों के साथ, तुम्हारे मामले से बहुत मिलता-जुलता है।” हमारी इस समान प्रवृत्ति के बारे में बात करते हुए उसने वही आश्वस्त करने वाला लहजा अपनाया, मानो यह प्रवृत्ति साहित्य की नहीं बल्कि गठिया की हो, और वह मुझे आश्वस्त करना चाहता हो कि यह ज़रूरी नहीं कि जानलेवा साबित हो। "उन्होंने भी क्वाई डी'ओर्से को छोड़ने का फैसला किया है, हालांकि उनके पिता ने उनके लिए वहां का रास्ता प्रशस्त कर दिया था, और लोगों की बातों की परवाह किए बिना, वे लेखन में रम गए हैं। और निश्चित रूप से, उन्हें इसका कोई पछतावा नहीं है। उन्होंने दो साल पहले - बेशक, वे आपसे काफी बड़े हैं, आप समझ रहे हैं - विक्टोरिया न्यान्ज़ा के पश्चिमी तट पर अनंत के भाव से संबंधित एक पुस्तक प्रकाशित की थी, और इस साल उन्होंने एक छोटी सी रचना प्रकाशित की है, जो दूसरी जितनी महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन बहुत ही जीवंत ढंग से, शायद कुछ जगहों पर

बहुत ही तीखे ढंग से लिखी गई है, बल्गेरियाई सेना में रिपीटिंग राइफल पर; और इन रचनाओं ने उन्हें एक अलग ही श्रेणी में स्थापित कर दिया है। वे पहले ही काफी आगे बढ़ चुके हैं, और वे बीच में रुकने वाले व्यक्ति नहीं हैं; मुझे पता है कि (बेशक, उनके चुनाव में खड़े होने के किसी संकेत के बिना) नैतिक विज्ञान अकादमी में बातचीत के दौरान उनका नाम कई बार लिया गया है, और वह भी बिल्कुल नकारात्मक रूप से नहीं। इसलिए, अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वे शिखर पर पहुंच गए हैं।" प्रसिद्धि के बावजूद, उन्होंने अपनी अथक मेहनत से एक बहुत ही शानदार मुकाम हासिल किया है, और सफलता—जो हमेशा केवल आंदोलनकारियों, उपद्रवियों और उन लोगों को नहीं मिलती जो ऐसी मुसीबतें खड़ी करते हैं जो आमतौर पर उनकी सहनशीलता से कहीं अधिक होती हैं—ने उनके प्रयासों को सफल बनाया है।

कुछ ही वर्षों में मुझे एक शिक्षाविद बनते देख मेरे पिता को वैसी ही संतुष्टि प्राप्त हो रही थी, जैसी संतुष्टि को एम. डी नॉरपोइस ने उस क्षणिक संकोच के बाद मुझे अपना कार्ड देते हुए कहा: "क्यों न तुम स्वयं जाकर उनसे मिल लो? उन्हें बताना कि मैंने तुम्हें भेजा है। शायद वे तुम्हें कुछ अच्छी सलाह दे सकें।" उनके इस कथन ने मुझे उतनी ही चिंता में डाल दिया, मानो उन्होंने मुझसे कहा हो कि अगली सुबह मुझे एक समुद्री जहाज पर केबिन बॉय के रूप में सवार होकर दुनिया का चक्कर लगाना है।

मेरी चाची लियोनी ने मुझे, कई अन्य चीजों और अपने अधिकांश फर्नीचर के साथ, अपनी लगभग सारी अनसुलझी संपत्ति वसीयत में दी थी, जिसके बारे में यह तय करना मुश्किल था कि क्या किया जाए। इस प्रकार उनकी मृत्यु के बाद मेरे प्रति उनका स्नेह प्रकट हुआ, जिसका मुझे उनके जीवनकाल में शायद ही कभी अंदाजा था। मेरे पिता, जो मेरे बालिग

होने तक इस संपत्ति के न्यासी थे, ने अब कई निवेशों के संबंध में एम. डी नॉरपोइस से परामर्श लिया। उन्होंने कम ब्याज दर वाले कुछ शेयरों की सिफारिश की, जिन्हें वे विशेष रूप से सुरक्षित मानते थे, खासकर अंग्रेजी कंसोल और रूसी चार प्रतिशत वाले शेयर। एम. डी नॉरपोइस ने कहा, "इन जैसी बिल्कुल प्रथम श्रेणी की प्रतिभूतियों के साथ, भले ही इनसे आपकी आय बहुत अधिक न हो, आप निश्चिंत रह सकते हैं कि आपकी पूंजी कभी नहीं डूबेगी।" तब मेरे पिता ने उन्हें संक्षेप में बताया कि उन्होंने और क्या-क्या खरीदा था। एम. डी नॉरपोइस ने बधाई की हल्की सी मुस्कान दी; सभी पूंजीपतियों की तरह, वह धन को एक प्रशंसनीय वस्तु मानता था, लेकिन दूसरों की संपत्ति की प्रशंसा केवल आधी-अधूरी सहानुभूति दिखाकर करना अधिक उचित समझता था; दूसरी ओर, चूंकि वह स्वयं अत्यंत धनी था, इसलिए वह अपने मित्रों की कम आय को भी पर्याप्त महत्व देकर और अपनी श्रेष्ठता के प्रति सुखद और संतोषजनक दृढ़ता प्रदर्शित करके अपने अच्छे विवेक का प्रदर्शन करता था। उसने मेरे पिता को उनके निवेशों की सूची की "संरचना" पर निःसंकोच बधाई देकर इसकी भरपाई की, जिसे उन्होंने "इतने निश्चित, इतने सूक्ष्म और इतने उत्तम स्वाद" से चुना था। उसकी बातों को सुनकर ऐसा लगता था मानो वह निवेशों के सापेक्ष मूल्यों और यहां तक कि स्वयं निवेशों को भी किसी प्रकार का सौंदर्यबोध प्रदान करता हो। एक अपेक्षाकृत नई और अभी तक कम जानी-मानी पत्रिका के बारे में, जिसका ज़िक्र मेरे पिता ने किया था, एम. डी नॉरपोइस ने, उन लोगों की तरह जिन्होंने हमेशा उन किताबों को पढ़ा है जिनके बारे में, आप कल्पना कीजिए, केवल आपने ही सुना होगा, तुरंत कहा, "अहा, हाँ, मैं कुछ समय तक इसे अखबारों में देखकर अपना मनोरंजन करता था; यह काफी दिलचस्प थी," एक नियमित पाठक की पुरानी यादों वाली मुस्कान के साथ, जिसने अपनी पत्रिका में मासिक

किश्तों में नवीनतम उपन्यास पहले ही पढ़ लिया हो। "इस नए अंक के लिए आवेदन करना बिल्कुल भी बुरा विचार नहीं होगा। यह वाकई आकर्षक है; वे इसे बहुत ही लुभावने डिस्काउंट पर दे रहे हैं।" लेकिन जब वे कुछ पुराने निवेशों पर आए, तो मेरे पिता, जिन्हें उनके सटीक नाम याद नहीं थे, क्योंकि उन्हें एक ही तरह के अन्य निवेशों के साथ आसानी से भ्रमित किया जा सकता था, ने एक दराज खोला और राजदूत को प्रतिभूतियाँ दिखाईं। उन्हें देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया। वे गिरजाघर के शिखरों और प्रतीकात्मक आकृतियों से सजी थीं, ठीक वैसे ही जैसे पुराने, रोमांटिक संस्करण जिन्हें मैंने बचपन में पढ़ा था। एक ही कालखंड की सभी कृतियों में कुछ न कुछ समानता होती है; जो कलाकार अपनी पीढ़ी की कविता को चित्रित करते हैं, वही कलाकार बड़े वित्तीय संस्थानों में कार्यरत होते हैं। और मुझे नोट्रे-डेम डी पेरिस के मासिक प्रकाशनों और गेरार्ड डी नर्वल की विभिन्न पुस्तकों की इतनी याद किसी और चीज़ से नहीं आती, जितनी कि आयताकार और फूलों से सजे बॉर्डर में, लेटे हुए नदी-देवताओं द्वारा समर्थित, जल कंपनी में "निजी हिस्सेदारी" की।

मेरे पिता को मेरी बुद्धिमत्ता के प्रति जो तिरस्कार था, वह मेरे प्रति उनके स्वाभाविक स्नेह से इतना कम हो जाता था कि व्यवहार में, मैं जो भी करता, वे उसे अंधाधुंध समर्थन देते थे। इसलिए, उन्होंने मुझे वह छोटी सी 'गद्य कविता' लाने को कहने में कोई संकोच नहीं किया, जिसे मैंने कई साल पहले कॉम्ब्रे में सैर से लौटते समय रचा था। मैंने उसे उस उमंग में लिखा था, जिसके बारे में मुझे पूरा विश्वास था कि जो भी उसे पढ़ेगा, वह उससे प्रभावित हो जाएगा। लेकिन वह कविता एम. डी नॉरपोइस को मोहित नहीं कर पाई, क्योंकि उन्होंने बिना कुछ कहे उसे मुझे वापस कर दिया।

मेरी माँ, जो मेरे पिता के सभी कामों का बहुत सम्मान करती थीं, अब

दबी आवाज़ में अंदर आईं और पूछा कि क्या खाना परोसा जा सकता है। उन्हें डर था कि कहीं वे उस बातचीत में दखल न दें जिसमें उनका खुद कोई हिस्सा नहीं हो सकता था। और सच में, मेरे पिता लगातार मार्क्विस को कुछ उपयोगी सुझाव याद दिला रहे थे, जिन्हें उन्होंने आयोग की अगली बैठक में देने का फैसला किया था; वे उसी खास लहजे में बोल रहे थे जो हमेशा किसी अजनबी माहौल में दो सहकर्मियों द्वारा अपनाया जाता है—इस मामले में वे दो ऐसे खास लोग होते हैं जैसे एक ही कॉलेज के दो युवा—जिनकी पेशेवर दिनचर्या ने उन्हें यादों का एक ऐसा साझा भंडार दिया होता है जिस तक वहाँ मौजूद अन्य लोगों की पहुँच नहीं होती, और जिसे वे सबके सामने बताने को तैयार नहीं होते।

लेकिन एम. डी नॉरपोइस ने अपने चेहरे की मांसपेशियों पर जो पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया था, उसकी बदौलत वे बिना कुछ सुने ही सब कुछ सुन रहे थे। अंततः मेरे पिता बेचैन हो गए। एक लंबी भूमिका के बाद उन्होंने साहसपूर्वक कहा, "मैंने आयोग से सलाह लेने के बारे में सोचा था..." फिर उस महान गुणी संगीतकार के चेहरे से, जो ऑर्केस्ट्रा में किसी वादक की तरह अपनी बारी आने तक निष्क्रिय बैठे थे, एक समान स्वर में, तीखे स्वर में, और मानो मेरे पिता द्वारा शुरू किए गए वाक्य की पूर्ति मात्र हों (लेकिन किसी अन्य स्वर के लिए), ये शब्द निकले: "जिसके लिए आप निश्चित रूप से बैठक बुलाने में संकोच नहीं करेंगे; विशेषकर इसलिए कि आप सभी उपस्थित सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, और किसी भी दिन कोई परिवर्तन हो सकता है।" यह अपने आप में कोई बहुत उल्लेखनीय अंत नहीं था। लेकिन इससे पहले की स्थिरता ने इसे क्रिस्टल जैसी स्पष्टता के साथ, उन वाक्यांशों की लगभग दुर्भावनापूर्ण अप्रत्याशितता के साथ अलग कर दिया, जिसमें पियानो, जो तब तक मौन था, एक निश्चित क्षण में, उस वायलिनसेलो को "अपने हाथ में ले

लेता है जिसे कोई मोजार्ट के कॉन्सर्टो में अभी सुन रहा था"।

"तो, क्या आपको दोपहर का शो पसंद आया?" मेरे पिता ने मुझसे पूछा, जब हम भोजन कक्ष की ओर बढ़ रहे थे; उनका इरादा मुझे 'दिखावा' करने का था, और इस विचार से कि मेरा उत्साह एम. डी नॉरपोइस को मेरे बारे में अच्छी राय देगा। "वह अभी-अभी बर्मा का शो सुनकर आए हैं। आपको याद है, हम उस दिन इसके बारे में बात कर रहे थे," उन्होंने राजनयिक की ओर मुड़ते हुए उसी बीते हुए समय की याद दिलाने वाले, तकनीकी, रहस्यमय संकेत भरे लहजे में कहा, मानो वह आयोग की किसी बैठक का जिक्र कर रहे हों।

"तुम तो ज़रूर मंत्रमुग्ध हो गए होगे, खासकर अगर तुमने उन्हें पहले कभी नहीं सुना था। तुम्हारे पिता को इस छोटी सी यात्रा के तुम्हारे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर की चिंता सता रही थी, क्योंकि मुझे बताया गया है कि तुम्हारा स्वास्थ्य कुछ खास अच्छा नहीं है, तुम बिल्कुल भी तंदुरुस्त नहीं हो। लेकिन मैंने जल्द ही उनकी चिंता दूर कर दी। आजकल के थिएटर बीस साल पहले जैसे नहीं रहे। अब तुम्हें कमोबेश आरामदायक सीटें मिल जाती हैं, और थोड़ी बहुत हवा भी आती है, हालाँकि जर्मनी या इंग्लैंड तक पहुँचने में अभी बहुत लंबा रास्ता तय करना है, जो इस मामले में और कई अन्य मामलों में भी हमसे बहुत आगे हैं। मैंने मैडम बर्मा को फ्रेड्रे में कभी नहीं देखा, लेकिन मैंने हमेशा सुना है कि वह उस भूमिका में बहुत अच्छी हैं। तुम उनसे ज़रूर मुग्ध हो गए होगे?"

एम. डी नॉरपोइस, जो मुझसे हज़ार गुना ज़्यादा बुद्धिमान थे, उस छिपे हुए सत्य को ज़रूर जानते होंगे जिसे मैं बर्मा के अभिनय से नहीं निकाल पाया था; वे जानते थे और मुझे बताएँगे भी। उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए मैं उनसे विनती करूँगा कि वे मुझे बताएँ कि वह सत्य क्या है; और वे मुझे बताएँगे, और इस प्रकार अभिनेत्री को देखने और सुनने की मेरी तड़प को

जायज़ ठहराएँगे। मेरे पास बस एक पल था, मुझे उसका पूरा उपयोग करना था और अपनी जिरह को मुख्य बिंदुओं पर केंद्रित करना था। लेकिन वे बिंदु क्या थे? एम. डी नॉरपोइस को प्रभावित करने का कोई इरादा नहीं था, बस उनसे उस सत्य को जानना था जिसे मुझे अभी खोजना था। मैंने अपना सारा ध्यान अपने उलझे हुए भावों पर केंद्रित किया, और अपने शब्दों के बदले बने-बनाए वाक्यों का प्रयोग करने की कोशिश नहीं की। मैं वहाँ हकलाता रहा, और अंत में, इस उम्मीद में कि वे बर्मा में जो कुछ प्रशंसनीय था उसे बताएँगे, मैंने स्वीकार किया कि मैं निराश हुआ था।

"ये क्या है?" मेरे पिता चिढ़कर चिल्लाए, उन्हें इस बात का बहुत दुख था कि मेरी इस बात को स्वीकार करने से एम. डी नॉरपोइस पर बुरा असर पड़ेगा। "तुम्हारा मतलब क्या है; तुम्हें मज़ा नहीं आया? अरे, तुम्हारी दादी तो हमें बता रही थीं कि तुम वहाँ बर्मा के हर शब्द को टकटकी लगाकर देख रहे थे, तुम्हारी आँखें फटी रह गई थीं; थिएटर में तुम्हारे अलावा बाकी सब लोग बिल्कुल ऊबे हुए लग रहे थे।"

"ओह, हाँ, मैं पूरी लगन से सुन रहा था, यह जानने की कोशिश कर रहा था कि आखिर उसमें ऐसी क्या खास बात थी। बेशक, वह बेहद अच्छी है, और बस यही सब..."

"अगर वह 'बेहद अच्छी' है, तो आपको और क्या चाहिए?"

"श्रीमती बर्मा की सफलता में निस्संदेह योगदान देने वाली चीजों में से एक है," एम. डी नॉरपोइस ने मेरी माँ की ओर बड़े ही विनम्रतापूर्वक मुड़ते हुए, ताकि वह बातचीत से बाहर न रह जाएँ, और घर की मालकिन के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वाह करते हुए, अपनी बात जारी रखी, "किताबों के चयन में उनका उत्तम विवेक; इस प्रकार उन्हें हमेशा सफलता

का आश्वासन मिलता है, और वह भी सही तरह की सफलता। वह शायद ही कभी किसी मामूली भूमिका में नज़र आती हैं। देखिए उन्होंने फ्रेड्रे की भूमिका में खुद को कितना ढाल लिया है। और फिर, वह अपने परिधानों और अभिनय के चयन में भी उसी उत्तम विवेक का परिचय देती हैं। इंग्लैंड और अमेरिका में उनके लगातार और लाभदायक दौरों के बावजूद, अश्लीलता—मैं जॉन बुल की अश्लीलता नहीं कहूँगा; यह कम से कम विक्टोरियन युग के इंग्लैंड के लिए अन्याय होगा—लेकिन अंकल सैम की अश्लीलता ने उन्हें प्रभावित नहीं किया है। न भड़कीले रंग, न बकवास। और फिर वह प्रशंसनीय आवाज़, जो उनके लिए इतनी सहायक रही है, जिसके साथ वह इतनी मनमोहक ढंग से गाती हैं—मैं लगभग इसे संगीत वाद्य यंत्र कहना भी मन करेगा!

पर्दा गिरने के बाद से ही बर्मा के अभिनय में मेरी रुचि बढ़ती ही जा रही थी, क्योंकि अब यह वास्तविकता की सीमाओं में सिमटी नहीं थी; लेकिन मुझे इसके पीछे के कारण जानने की ज़रूरत महसूस हुई; इसके अलावा, जब बर्मा मंच पर थीं, तब भी उनकी हर प्रस्तुति, एक जीवंत संपूर्णता के रूप में, मेरी आँखों और कानों के सामने उसी तीव्रता से टिकी हुई थी; उसमें कुछ भी अलग या विशिष्ट नहीं था; इसलिए, अभिनेत्री की सादगी और अच्छे स्वाद की प्रशंसा में एक तर्कसंगत कारण की खोज ने उसका स्वागत किया, इसने अपनी सम्मोहन शक्ति से उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया, उन्हें इस तरह जकड़ लिया जैसे एक शराबी का आशावाद अपने पड़ोसी के कार्यों को जकड़ लेता है, जिनमें से प्रत्येक में उसे भावनाओं को व्यक्त करने का बहाना मिल जाता है। "वह सही है!" मैंने खुद से कहा। "कितनी मनमोहक आवाज़, कितनी बेरुखी, कितने सरल परिधान, फ्रेड्रे को चुनने में कितनी बुद्धिमत्ता। नहीं; मैं निराश नहीं हुआ!"

गाजर से मसालेदार ठंडा गोमांस, हमारी रसोई के माइकल एंजेलो द्वारा

विशाल जेली क्रिस्टल पर इस तरह सजाया गया था, मानो पारदर्शी क्वार्ट्ज के ब्लॉक हों।

"मैडम, आपके पास एक बेहतरीन रसोइया है," एम. डी नॉरपोइस ने कहा, "और यह कोई छोटी बात नहीं है। मैंने खुद विदेश में रहते हुए घर-गृहस्थी में एक खास शैली बनाए रखी है, इसलिए मैं जानता हूँ कि एक कुशल रसोइया मिलना कितना मुश्किल होता है। लेकिन आपने हमारे सामने एक शानदार दावत पेश की है!"

और वास्तव में, फ्रांस्वा, इतने विशिष्ट अतिथि के लिए एक सफल रात्रिभोज आयोजित करने की अपनी महत्वाकांक्षा के उत्साह में, जिसकी तैयारी में उनकी क्षमताओं के अनुरूप कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, ने खुद को इतनी परेशानी में डाल दिया था जितनी वह अब अकेले में नहीं लेती थी, और उसने अपने अतुलनीय कॉम्ब्रे तौर-तरीके को फिर से अपना लिया था।

"ऐसी चीज़ आपको किसी भी आम रेस्टोरेंट में नहीं मिलेगी, मतलब सबसे अच्छे रेस्टोरेंट में भी नहीं; मसालेदार बीफ़ जिसमें जेली का स्वाद चिपचिपा न हो और बीफ़ में गाजर का स्वाद समाया हो; यह लाजवाब है! मुझे फिर से आने दीजिए," उन्होंने आगे कहा और जेली की और इच्छा जताते हुए इशारा किया। "मुझे यह देखने में दिलचस्पी होगी कि आपका वेटेल इससे बिल्कुल अलग तरह का व्यंजन कैसे बनाता है; उदाहरण के लिए, मैं देखना चाहूंगा कि वह बोउफ स्ट्रोगानॉफ कैसे बनाता है।"

एम. डी नॉरपोइस ने भोज की रौनक बढ़ाने के लिए हमें कई कहानियाँ सुनाईं, जो वे अपने सहकर्मियों को अक्सर सुनाया करते थे। कभी वे किसी राजनेता, किसी पुराने अपराधी, के हास्यास्पद वाक्य सुनाते, जिनके वाक्य हमेशा लंबे और बेतुके होते थे, तो कभी किसी राजनयिक

के व्यंग्यात्मक और प्रभावशाली सूक्तिपूर्ण कथन। सच कहूँ तो, उनके लिए इन दो प्रकार के वाक्यों को अलग करने का मानदंड साहित्य के लिए मेरे मानदंड से बिलकुल अलग था। मुझे उनकी बारीकियाँ समझ नहीं आईं; जिन शब्दों को वे उपहास के साथ दोहराते थे, वे मुझे उन शब्दों से बहुत अलग नहीं लगते थे जिन्हें वे उल्लेखनीय मानते थे। वे उन लोगों में से थे जो, अगर हम मेरी पसंदीदा किताबों पर चर्चा कर रहे होते, तो कहते: "तो आप समझते हैं, है ना? मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं नहीं समझता, मुझे इसकी जानकारी नहीं है।" लेकिन मैं उनके रवैये से सहमत हो सकता था, क्योंकि मैं उनके कथन या भाषण में छिपी चतुराई या मूर्खता, वाक्पटुता या आडंबर को नहीं समझ पाता था, और किसी एक कथन या भाषण के खराब और दूसरे के अच्छे होने का कोई स्पष्ट कारण न होने के कारण वह साहित्य मुझे अन्य किसी भी साहित्य से अधिक रहस्यमय और अस्पष्ट लगता था। मैं केवल इतना समझ पाता था कि राजनीति में, हर किसी की सोच को दोहराना किसी कमतर नहीं बल्कि श्रेष्ठ बुद्धि का चिन्ह होता है। जब एम. डी नॉरपोइस अखबारों में प्रचलित कुछ अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते थे और उन्हें जोर देकर बोलते थे, तो ऐसा लगता था मानो उनके प्रयोग मात्र से ही वे आधिकारिक घोषणा बन गई हों, और ऐसी घोषणा जो टिप्पणियों की एक श्रृंखला को जन्म देती थी।

मेरी माँ को अनानास और ट्रफल सलाद की बहुत उम्मीद थी। लेकिन राजदूत ने एक प्रशिक्षित पर्यवेक्षक की तरह कुछ पल के लिए उस सलाद को बारीकी से देखा और फिर एक राजनयिक की तरह बड़ी सावधानी से खा लिया, और हमें यह नहीं बताया कि उन्हें वह कैसा लगा। मेरी माँ ने उनसे थोड़ा और लेने की ज़िद की, जो उन्होंने लिया भी, लेकिन जिस प्रशंसा की उन्हें उम्मीद थी, उसके बदले उन्होंने केवल इतना कहा: "मैं

आपकी आज्ञा मानता हूँ, महोदया, क्योंकि मैं देख सकता हूँ कि यह आपकी ओर से एक स्पष्ट आदेश है!"

"हमने अखबारों में पढ़ा कि आपकी राजा थियोडोसियस से लंबी बातचीत हुई," मेरे पिता ने कहा।

जी हाँ; राजा, जिन्हें चेहरों को याद रखने की अद्भुत क्षमता है, ने बड़ी कृपा से मुझे दरबार में देखते ही याद कर लिया कि मुझे बवेरिया के दरबार में उनसे कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उस समय जब उन्होंने अपने पूर्वी सिंहासन के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचा था—जिसके लिए, जैसा कि आप जानते हैं, उन्हें एक यूरोपीय सम्मेलन द्वारा आमंत्रित किया गया था, और वास्तव में निमंत्रण स्वीकार करने के बारे में उन्हें गंभीर संदेह थे, क्योंकि वे उस विशेष संप्रभुता को अपने वंश के योग्य नहीं मानते थे, जो कि पूरे यूरोप में सबसे श्रेष्ठ वंश था। एक सहायक मुझे महाराज को प्रणाम करने के लिए कहने आया, जिसका पालन करने के लिए मैं स्वाभाविक रूप से तत्पर रहा।

"और मुझे उम्मीद है कि आप उनकी यात्रा के परिणामों से संतुष्ट हैं?"

"अद्भुत! यह आशंका होना स्वाभाविक था कि एक युवा सम्राट इस बेहद नाजुक मोड़ पर, विशेष रूप से एक ऐसे मामले को, जिसमें सूझबूझ की आवश्यकता होती है, कैसे संभालेगा। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे राजा की राजनीतिक सूझबूझ पर पूरा भरोसा था। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उन्होंने मेरी उम्मीदों से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया। एलिसी पैलेस में उन्होंने जो भाषण दिया, जो मुझे एक अत्यंत विश्वसनीय सूत्र से मिली जानकारी के अनुसार, शुरू से अंत तक स्वयं उनके द्वारा रचा गया था, वह हर तरफ से मिली रुचि का पूर्णतः पात्र था। यह सचमुच उत्कृष्ट था; मैं मानता हूँ कि थोड़ा साहसिक था, लेकिन उस साहस के साथ जो

अंततः घटना से पूरी तरह से सिद्ध हुआ। पारंपरिक कूटनीति अपने तरीके से बहुत अच्छी है, लेकिन व्यवहार में इसने उनके देश और हमारे देश को एक ऐसे बंद वातावरण में रखा है जिसमें साँस लेना भी असंभव हो गया है। बहुत खूब! ताजी हवा आने देने का एक तरीका है, जाहिर है कि यह उन तरीकों में से एक नहीं है जिनकी आधिकारिक तौर पर सिफारिश की जा सकती है, लेकिन एक ऐसा तरीका जिसे राजा ने अपनाया है।" थियोडोसियस शायद कुछ अलग करने की अनुमति दे सकते थे—और वह था सारी हदें पार करना। और उन्होंने ऐसा ही किया, सहज प्रसन्नता के साथ जिससे हर कोई प्रसन्न हुआ, और शब्दों के चयन में ऐसी कुशलता के साथ जिससे उनकी माता की ओर से उनके विद्वान राजकुमारों के वंश का तुरंत पता चल जाता था। इसमें कोई संदेह नहीं कि जब उन्होंने अपने देश और फ्रांस के बीच के 'संबंधों' की बात की, तो यह अभिव्यक्ति, हालांकि चांसलरियों की शब्दावली में शायद ही कभी मिलती हो, अत्यंत सुखद थी। "आप देखते हैं कि साहित्यिक योग्यता कूटनीति में, यहां तक कि सिंहासन पर भी, कोई बाधा नहीं है," उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा। "हितों की समानता लंबे समय से स्पष्ट थी, मैं पूरी तरह स्वीकार करता हूं, और दोनों शक्तियों के संबंध उत्कृष्ट थे। फिर भी, इसे शब्दों में व्यक्त करना आवश्यक था। वह शब्द जिसका हम सभी इंतजार कर रहे थे, अद्भुत कुशलता से चुना गया था; आपने इसका प्रभाव देखा है। मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने खुले तौर पर इसकी सराहना की।"

"आपके मित्र एम. डी. वोगौबर्ट इतने वर्षों की तैयारी के बाद प्रसन्न होंगे।"

"खासकर इसलिए कि महामहिम, जो वास्तव में कुछ मायनों में काफी जिद्दी हैं, ने इसे उन्हें अचानक चौंका देने का पूरा ध्यान रखा था। और संयोगवश, यह सभी संबंधित लोगों के लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक था, यहाँ तक कि विदेश मंत्री के लिए भी, जिन्हें - मैंने सुना है - यह

बिल्कुल भी पसंद नहीं आया। ऐसा लगता है कि किसी ने उनसे इस बारे में बात की और उन्होंने काफी तीखे शब्दों में और इतनी ऊंची आवाज में जवाब दिया कि उनके दोनों ओर के लोगों ने भी सुन लिया: 'मुझसे न तो सलाह ली गई और न ही मुझे सूचित किया गया!'" इससे साफ संकेत मिलता है कि उन्होंने इसके परिणामों की कोई जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इस घटना ने काफी चर्चा को जन्म दिया है, और मैं इस बात से इनकार नहीं करूंगा," उन्होंने शरारती मुस्कान के साथ आगे कहा, "कि मेरे कुछ सहकर्मी, जिनके लिए सर्वोच्च नियम जड़ता का है, अपनी सामान्य शांति से हिल गए होंगे। जहाँ तक वोगुबर्ट की बात है, आप जानते हैं कि उस देश को फ्रांस के साथ घनिष्ठ संबंध में लाने की उनकी नीति के लिए उन पर कड़ा हमला किया गया है, जो उनके लिए सामान्य से कहीं अधिक कष्टदायक रहा होगा, क्योंकि वे बहुत संवेदनशील और नाजुक स्वभाव के हैं। मैं इसकी पूरी तरह से गवाही दे सकता हूँ, क्योंकि यद्यपि वे मुझसे काफी कनिष्ठ हैं, फिर भी मेरा उनसे कई बार संपर्क रहा है, हम लंबे समय से मित्र हैं और मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। इसके अलावा, उन्हें कौन नहीं जानता? उनका हृदय क्रिस्टल का है। वास्तव में, यही एक दोष उनमें पाया जा सकता है; एक राजनयिक के हृदय का इतना पारदर्शी होना आवश्यक नहीं है। फिर भी, इससे उन्हें रोम भेजने की बात करने से नहीं रोका जा सकता, जो कि यह उनके लिए एक शानदार पदोन्नति होगी, लेकिन पचाना आसान नहीं होगा। हम दोनों के बीच, मुझे लगता है कि वोगुबर्ट, जो महत्वाकांक्षा से पूरी तरह रहित हैं, बहुत प्रसन्न होंगे और किसी भी कीमत पर इस पद को छोड़ना नहीं चाहेंगे। क्या पता, वे वहाँ कमाल कर दें; वे कंसल्टा के चुने हुए उम्मीदवार हैं, और मेरी राय में, उनकी कलात्मक रुचियों को देखते हुए, वे फार्नेस पैलेस और कैराची गैलरी के माहौल में बहुत उपयुक्त हैं।

कम से कम आप यही सोचेंगे कि कोई उनसे नफरत नहीं कर सकता; लेकिन राजा थियोडोसियस के चारों ओर एक पूरा गिरोह इकट्ठा है, जिस पर विल्हेमस्ट्रासे का लगभग पूरा नियंत्रण है, जिसके सदस्य उनकी प्रेरणा को पूरी निष्ठा से ग्रहण करते हैं, और इन लोगों ने उन्हें मात देने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी है। वोगुबर्ट को न केवल इन गुप्त षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा है, बल्कि उन्हें भाड़े के पर्चे बांटने वालों के एक गिरोह के अपमान को भी सहना पड़ा है, जो बाद में, हर सरकारी सहायता प्राप्त पत्रकार की तरह, घोर कायर साबित हुए। सबसे पहले तो वही पीछे हटने को तैयार था, लेकिन इस बीच उसने हमारे प्रतिनिधि पर बेतुके से बेबुनियाद आरोप लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, जो कि गैर-जिम्मेदार मूर्खों की बुद्धि से भी परे थे। "एक महीने से भी अधिक समय से वोगौबर्ट के दुश्मन उसके चारों ओर नाच रहे थे, उसकी जान के लिए चिल्ला रहे थे," एम. डी नॉरपोइस ने इस शब्द पर तीखे स्वर में कहा। "लेकिन पहले से चेतावनी मिलने पर तैयारी हो जाती है; जहाँ तक उनके अपमान की बात है, उसने उन्हें अपने पैर से लात मारकर ठुकरा दिया!" वह और भी दृढ़ निश्चय के साथ और आँखों में इतनी तीखी चमक के साथ आगे बढ़ा कि एक पल के लिए हम अपना खाना भूल गए। "एक उत्तम अरबी कहावत के शब्दों में, 'कुत्ते भौंकें; कारवां चलता रहता है!'"

इस कथन को कहने के बाद एम. डी. नॉरपोइस कुछ देर रुके और हमारे चेहरों को निहारने लगे, यह देखने के लिए कि इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ा है। इसका प्रभाव बहुत गहरा था, क्योंकि यह कहावत हम सब पहले से ही जानते थे। उस वर्ष, 'वास्तव में महत्वपूर्ण' लोगों के बीच, इसने "जो हवा बोता है, वह बवंडर काटता है" की जगह ले ली थी, जिसे आराम की सख्त जरूरत थी, क्योंकि उसमें "प्रशिया के राजा के लिए काम करना" जैसी शाश्वत ताजगी नहीं थी। इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों की संस्कृति

त्रिपक्षीय और त्रिवार्षिक न सही, वैकल्पिक थी। बेशक, एम. डी. नॉरपोइस द्वारा रेव्यू में अपने लेखों को सजाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले ऐसे उद्धरणों का उपयोग, उनके ठोस और सुविज्ञ दिखने के लिए किसी भी तरह से आवश्यक नहीं था। उद्धरणों से मिलने वाली सजावट के बिना भी, यह पर्याप्त था कि एम. डी नॉरपोइस किसी विशेष बिंदु पर लिखें (जैसा कि वे हमेशा लिखते थे): "सेंट जेम्स का दरबार खतरे को भांपने वाला अंतिम नहीं था," या "सिंगर्स ब्रिज पर भावनाएं उग्र थीं, जो चिंतित निगाहों से दोहरी राजशाही की स्वार्थी लेकिन कुशल नीति का अनुसरण कर रहा था," या "मोंटेसिटोरियो से खतरे की चीख सुनाई दी," या फिर, "वह शाश्वत दोहरा व्यवहार जो बॉलप्लात्ज़ की विशेषता है।" इन अभिव्यक्तियों से आम पाठक ने तुरंत ही उस कुशल राजनयिक को पहचान लिया और उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया। लेकिन जिस बात ने लोगों को यह कहने पर मजबूर किया कि वे इससे कहीं अधिक थे, कि वे एक श्रेष्ठ संस्कृति से संपन्न थे, वह थी उद्धरणों का उनका सावधानीपूर्वक उपयोग, जिसका उस समय तक सबसे सटीक उदाहरण था: "मुझे एक अच्छी नीति दो और मैं तुम्हें अच्छा वित्त दूंगा," बैरन लुई के पसंदीदा शब्दों में: क्योंकि हमने अभी तक सुदूर पूर्व से यह कहावत नहीं अपनाई थी: "जीत उसी पक्ष की होती है जो दूसरे पक्ष से पंद्रह मिनट अधिक समय तक टिके रह सके, जैसा कि जापानी कहते हैं।" उनकी अपार साहित्यिक प्रतिभा और षड्यंत्र रचने की उनकी असाधारण क्षमता, जिसे उन्होंने उदासीनता के मुखौटे के पीछे छिपा रखा था, ने एम. डी नॉरपोइस को एकेडेमी डेस साइंसेज मोरालेस में निर्वाचित होने में मदद की। और कुछ लोग तो यह भी सोचते थे कि फ्रांसीसी अकादमी में उनका स्थान अनुचित होगा, उस प्रसिद्ध दिन जब उन्होंने यह संकेत देने की इच्छा व्यक्त की थी कि केवल रूसी गठबंधन को मजबूत करके ही हम ग्रेट

ब्रिटेन के साथ समझौता करने की उम्मीद कर सकते हैं, और उन्होंने यह लिखने में संकोच नहीं किया था: "क्वाई डी'ओर्से में यह स्पष्ट रूप से समझा जाए, इसे आगे से भूगोल की सभी पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाया जाए, जो इस संबंध में अपूर्ण प्रतीत होती हैं, स्नातक प्रमाणपत्र हर उस उम्मीदवार से निर्दयतापूर्वक रोक दिया जाए जिसने यह कहना नहीं सीखा है, 'यदि सभी रास्ते रोम की ओर जाते हैं, तो भी पेरिस से लंदन का रास्ता अनिवार्य रूप से सेंट पीटर्सबर्ग से होकर गुजरता है।'"

संक्षेप में, एम. डी नॉरपोइस ने मेरे पिता को संबोधित करते हुए कहा, "वाउगौबर्ट ने इस घटना से काफी प्रसिद्धि हासिल की है, जो उनकी कल्पना से परे है। आप समझ रहे हैं, उन्हें एक सही ढंग से तैयार किया गया भाषण चाहिए था (जो हाल के वर्षों के तूफानी माहौल के बाद अच्छा ही होता), इससे ज्यादा कुछ नहीं। कई लोगों ने, जिन्हें वहां उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, मुझे बताया है कि केवल भाषण को पढ़कर उसके प्रभाव का अंदाजा लगाना असंभव है—जब राजा ने, जो सार्वजनिक भाषण कला के उस्ताद हैं और उस अंश में अर्थ के हर सूक्ष्म पहलू को रेखांकित करते हैं, उसे अद्भुत स्पष्टता के साथ बोला। इस संदर्भ में, मैंने एक छोटा सा किस्सा सुना, जो एक बार फिर उस सहज, बचकाने आकर्षण को उजागर करता है जिससे राजा थियोडोसियस ने इतने सारे दिलों को जीता है। मुझे यकीन है कि जैसे ही उन्होंने 'संबंध' शब्द का उच्चारण किया, जो निश्चित रूप से भाषण का सबसे चौंकाने वाला नयापन था, और एक ऐसा शब्द जो..." जैसा कि आप देखेंगे, यह आने वाले वर्षों तक राजकोषों में चर्चा का विषय रहेगा। हमारे राजदूत की प्रसन्नता का अनुमान लगाते हुए, जिन्हें उस शब्द में अपने सभी प्रयासों, अपने सपनों पर मुहर, मुकुट, और संक्षेप में, अपने मार्शल की छड़ी मिलने वाली थी, महामहिम ने वोगौबर्ट की ओर आधा मोड़ लिया और ओटिंगेन

परिवार की विशिष्ट दृष्टि से उन्हें देखते हुए, बड़ी चतुराई से चुने गए शब्द 'संबंध' का उच्चारण किया, जो एक अनमोल खजाना था। उन्होंने इसे इस स्वर में कहा जिससे सभी श्रोताओं को स्पष्ट हो गया कि इसका प्रयोग सुनियोजित और परिस्थितियों की पूरी जानकारी के साथ किया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि वोगौबर्ट को अपनी भावनाओं पर काबू पाने में कुछ कठिनाई हुई, और मुझे स्वीकार करना होगा कि कुछ हद तक मैं इसे समझ सकता हूँ। वास्तव में, एक विश्वसनीय व्यक्ति ने मुझे गोपनीय रूप से बताया है कि राजा भोजन के बाद वोगौबर्ट के पास आए, जब महामहिम एक अनौपचारिक दरबार लगा रहे थे, और उन्हें यह कहते हुए सुना गया, 'अच्छा, क्या आप अपने काम से संतुष्ट हैं?' मेरे प्रिय मार्क्विस, शिष्य?

“लेकिन एक बात तो निश्चित है,” एम. डी नॉरपोइस ने निष्कर्ष निकाला; और वह यह है कि इस तरह के भाषण ने दोनों देशों को एक साथ लाने, उनकी ‘समानताओं’ को जोड़ने की दिशा में बीस वर्षों से चल रही बातचीत को उलट दिया है, जैसा कि थियोडोसियस द्वितीय ने अपने सुंदर शब्दों में कहा था। यह महज एक शब्द है, लेकिन देखिए इसे कितनी सफलता मिली है, कैसे पूरा यूरोपीय प्रेस इसे दोहरा रहा है, इसने कितनी रुचि जगाई है, इसने कितना नया स्वर दिया है। इसके अलावा, यह युवा सम्राट के स्वभाव में स्पष्ट रूप से झलकता है। मैं यह तो नहीं कहूंगा कि उन्हें हर दिन ऐसा ही कोई अनमोल रत्न मिल जाता है। लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता है कि अपने तैयार भाषणों में, या उससे भी बेहतर, अपनी बातचीत के सहज प्रवाह में, वे किसी तीखे शब्द का प्रयोग करके अपने चरित्र को प्रकट न करें—मैं तो कहने ही वाला था कि ‘वे अपने हस्ताक्षर नहीं करते’। इस मामले में मुझ पर पक्षपात का कोई संदेह नहीं है, क्योंकि मैं शब्दावली में किसी भी प्रकार के नवाचार का कड़ा विरोध करता हूं।

दस में से नौ बार वे सबसे खतरनाक होते हैं।"

"हां, मैं अभी कुछ दिन पहले ही सोच रहा था कि जर्मन सम्राट का टेलीग्राम शायद आपको पसंद न आए," मेरे पिता ने कहा।

एम. डी नॉरपोइस ने आसमान की ओर देखते हुए मानो कहा हो, "अरे, वह आदमी!" फिर उन्होंने जवाब दिया, "सबसे पहले तो, यह कृतघ्नता का कार्य है। यह एक अपराध से भी बढ़कर है; यह एक भूल है, और इतनी बड़ी गलती है कि मैं इसे केवल पिरामिडनुमा कह सकता हूँ! वास्तव में, जब तक कोई उसकी गतिविधियों पर रोक नहीं लगाता, बिस्मार्क से छुटकारा पाने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे बिस्मार्क की पूरी नीति को नकारने में सक्षम है; जिसके बाद यह अंधेरे में छलांग लगाने जैसा होगा।"

"मेरे पति ने मुझे बताया है, महोदय, कि आप शायद उन्हें किसी गर्मी में स्पेन ले जाएंगे; यह उनके लिए अच्छा होगा; मुझे बहुत खुशी है।"

"जी हां, यह विचार मुझे बहुत आकर्षित करता है; मुझे यात्रा की योजना बनाने में बहुत आनंद आता है। मैं आपके साथ वहां जाना चाहूंगी, मेरे प्रिय मित्र। लेकिन आपका क्या, महोदया? क्या आपने अभी तक तय किया है कि आप अपनी छुट्टियां कैसे बिताएंगी?"

"मैं शायद अपने बेटे के साथ बालबेक जाऊँगा, लेकिन मुझे पक्का नहीं पता।"

"ओह, वैसे तो बालबेक बहुत ही मनमोहक जगह है, मैं कुछ साल पहले वहाँ गया था। वहाँ कुछ बहुत ही सुंदर छोटे-छोटे विला बन रहे हैं; मुझे लगता है आपको वो जगह पसंद आएगी। लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपने बालबेक को क्यों चुना?"

"मेरा बेटा उस इलाके के कुछ चर्चों, खासकर बालबेक चर्च, को देखने के लिए बहुत उत्सुक है। मुझे थोड़ा डर था कि वहां की थका देने वाली यात्रा

और वहां ठहरने की असुविधा उसके लिए असहनीय हो सकती है। लेकिन मैंने सुना है कि वहां एक शानदार होटल खुला है, जहां उसे सभी आवश्यक सुविधाएं मिलेंगी।"

"बिल्कुल! मुझे इसे नोट कर लेना चाहिए, क्योंकि एक खास व्यक्ति है जो आरामदायक होटल को ठुकराने वाली नहीं है।"

"बालबेक का गिरजाघर बहुत सुंदर है, महोदय, है ना?" मैंने यह जानकर अपना दुख दबाते हुए पूछा कि बालबेक के आकर्षणों में से एक उसके सुंदर छोटे विला भी हैं।

"नहीं, यह बुरा नहीं है; लेकिन इसकी तुलना एक पल के लिए भी रीम्स और चार्ट्रेस के गिरजाघरों जैसे पत्थर के ऐसे उत्कृष्ट रत्नों से नहीं की जा सकती, या मेरी राय में उन सभी में मोती माने जाने वाले पेरिस में स्थित सेंट-चैपल से नहीं की जा सकती।"

"लेकिन, निश्चित रूप से, बालबेक चर्च आंशिक रूप से रोमनस्क शैली का है, है ना?"

"जी हां, यह रोमनस्क शैली में बना है, यानी बेहद ठंडा और निर्जीव, इसमें बाद के गोथिक निर्माताओं की सुंदरता और कल्पनाशीलता का कोई अंश नहीं है, जिन्होंने पत्थरों को ऐसे तराशा था मानो वे लेस हों। अगर आप उस इलाके में हों तो बालबेक चर्च देखने लायक है; यह वाकई अनोखा है; बारिश के दिन, जब आपके पास करने को कुछ और न हो, तो आप अंदर देख सकते हैं; आपको टूरविले की कब्र दिखाई देगी।"

मेरे पिता ने पूछा, "बताओ, क्या तुम कल रात विदेश मंत्रालय के रात्रिभोज में थे?" मैंने जवाब दिया, "मैं नहीं जा सका।"

“नहीं,” एम. डी नॉरपोइस मुस्कुराए, “मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने इसे एक बिल्कुल अलग तरह की पार्टी के लिए त्याग दिया था। मैं

एक महिला के साथ भोजन कर रहा था, जिनका नाम शायद आपने सुना होगा, सुंदर श्रीमती स्वान।" मेरी माँ ने अपनी जल्दबाजी को रोका, क्योंकि मेरे पिता की तुलना में उनकी समझ अधिक तीव्र थी, इसलिए वे उनके बारे में उन चीजों को लेकर चिंतित हो जाती थीं जो उन्हें कुछ ही क्षण बाद परेशान करना शुरू करती थीं। उनके साथ होने वाली कोई भी अप्रिय घटना सबसे पहले उन्हें ही पता चलती थी, ठीक वैसे ही जैसे फ्रांस से आने वाली बुरी खबरें हमेशा हमारे बीच आने से पहले ही बाहर फैल जाती हैं। लेकिन उन्हें यह जानने की उत्सुकता थी कि स्वान परिवार किस तरह के लोगों का मनोरंजन करता है, इसलिए उन्होंने एम. डी नॉरपोइस से पूछा कि वे वहाँ किससे मिले थे।

"अरे, मेरी प्रिय महिला, यह एक ऐसा घर है जो (जैसा कि मुझे लगा) विशेष रूप से सज्जनों को आकर्षित करता है। कल रात वहाँ कई विवाहित पुरुष थे, लेकिन उनकी पत्नियाँ संयोगवश अस्वस्थ थीं, इसलिए वे उनके साथ नहीं आई थीं," राजदूत ने हास्य से भरी तीखी टिप्पणी करते हुए हममें से प्रत्येक पर एक ऐसी निगाह डाली, जिसकी कोमलता और विवेक देखने में तो सौम्य लग रहे थे, लेकिन वास्तव में वे उसकी दुर्भावना को और भी तीव्र कर रहे थे।

“सच कहूँ तो,” उन्होंने आगे कहा, “मुझे यह भी कहना होगा कि औरतें घर आती हैं, लेकिन वे औरतें—मैं क्या कहूँ—रिपब्लिकन जगत से ज़्यादा स्वान के (उन्होंने इसे “स्वान” उच्चारित किया) समूह से नहीं। फिर भी, कुछ कहा नहीं जा सकता। शायद किसी दिन यह एक राजनीतिक या साहित्यिक सभा स्थल बन जाए। खैर, वे जैसी हैं वैसी ही खुश दिखती हैं। वास्तव में, मुझे लगता है कि स्वान अपनी खुशी का कुछ ज़्यादा ही खुलेआम प्रदर्शन करते हैं। उन्होंने हमें उन सभी लोगों के नाम बताए जिन्होंने उन्हें और उनकी पत्नी को अगले सप्ताह के लिए बाहर जाने का

न्योता दिया था, ऐसे लोग जिनके साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गर्व करने का कोई खास कारण नहीं था, और उन्होंने जिस तरह से संकोच, शिष्टाचार और लगभग बेरुखी दिखाई, उसे देखकर मैं इतने सभ्य व्यक्ति में आश्चर्यचकित रह गया। वे बार-बार दोहराते रहे, 'हमारे पास एक भी शाम खाली नहीं है!'" मानो यह कोई गर्व करने वाली बात हो, बिल्कुल नवधनी की तरह, जबकि वह निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। स्वान के हमेशा से ही बहुत सारे मित्र रहे हैं, पुरुष और महिलाएं दोनों, और बिना अति-अभिमान दिखाए, बिना किसी भी तरह की अविवेकी इच्छा के, मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि उनमें से सभी नहीं, बल्कि उनमें से अधिकांश भी नहीं, लेकिन कम से कम एक, जो कि उच्च कोटि की महिला है, शायद मैडम स्वान के साथ संबंध स्थापित करने के विचार से पूरी तरह विमुख नहीं होती, और ऐसे में यह मानना सुरक्षित है कि समाज के कई लोग उसका अनुसरण करते। लेकिन ऐसा लगता है कि स्वान की ओर से इस दिशा में कोई कदम उठाने का संकेत नहीं मिला है।

"मैं यह क्या देख रहा हूँ? एक नेसेलरोड पुडिंग! वाह! मैं कसम खाता हूँ, इस तरह की शानदार दावत के बाद मुझे कार्ल्सबैड में एक कोर्स की ज़रूरत पड़ेगी।"

"शायद स्वान को लगा होगा कि बहुत अधिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा। यह विवाह—यह तो निश्चित है—अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया गया था। उनकी पत्नी के धनवान होने की कुछ बातें हुई हैं, लेकिन यह सब बकवास है। खैर, इस पूरे मामले को नापसंद किया गया है। और फिर, स्वान की एक चाची हैं जो बेहद अमीर हैं और सामाजिक रूप से एक प्रशंसनीय स्थिति में हैं, जिनका विवाह एक ऐसे व्यक्ति से हुआ है जो आर्थिक रूप से एक शक्तिशाली व्यक्ति हैं। उन्होंने न केवल श्रीमती स्वान से मिलने से इनकार कर दिया है, बल्कि उन्होंने अपने दोस्तों और

परिचितों को भी ऐसा करने के लिए मजबूर करने का अभियान शुरू कर दिया है। मेरा यह कहने का मतलब नहीं है कि पेरिस के अच्छे सामाजिक परिवेश में रहने वाले किसी भी व्यक्ति ने श्रीमती स्वान के प्रति कोई वास्तविक असभ्यता दिखाई है... नहीं! बिल्कुल नहीं! उनके पति के चुनौती स्वीकार करने के योग्य व्यक्ति होने की बात तो अलग है। खैर, इसमें एक अजीब बात यह है कि स्वान, जो इतने सारे और इतने विशिष्ट लोगों को जानते हैं, एक ऐसे समाज को इतना महत्व देते हैं जिसके बारे में बस इतना ही कहा जा सकता है कि वह बेहद मिश्रित है। मैं स्वयं, जो पुराने दिनों में उन्हें जानने के नाते, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इतने सभ्य, इतने आलीशान घरों में रहने वाले व्यक्ति को डाक मंत्री के मुख्य सचिव का उनके यहाँ आने के लिए हार्दिक धन्यवाद करते और उनसे यह पूछते हुए देखकर मुझे हंसी से ज्यादा आश्चर्य हुआ कि क्या श्रीमती स्वान उनकी पत्नी से मिलने की अनुमति ले सकती हैं। उन्हें जरूर कुछ-कुछ निर्वासन जैसा महसूस हो रहा होगा, है ना? जाहिर है, यह बिल्कुल अलग दुनिया है। फिर भी, मुझे नहीं लगता कि स्वान दुखी हैं। यह सच है कि शादी से कुछ साल पहले तक वह उन्हें शर्मनाक तरीके से ब्लैकमेल करने की कोशिश करती रहती थीं; जब भी स्वान उनकी किसी बात को मानने से इनकार करते, वह बच्चे को अपने साथ ले जाती थीं। बेचारे स्वान, जो इतने सीधे-सादे होने के बावजूद तेज दिमाग के हैं, हर बार बच्चे के गायब होने को एक संयोग मानते थे और सच्चाई का सामना करने से इनकार कर देते थे। इसके अलावा, वह इतना हंगामा करती थीं कि हर कोई यही मानता था कि जिस दिन उनका मकसद पूरा हो जाएगा और उनकी शादी हो जाएगी, उस दिन से उन्हें कोई रोक नहीं पाएगा और उनका जीवन एक धरती पर नरक। इसके बजाय, ठीक विपरीत हुआ है। लोग स्वान के अपनी पत्नी के बारे में बोलने के तरीके पर हंसने लगे हैं; यह एक मज़ाक

बन गया है। बेशक, कोई शायद ही उम्मीद कर सकता है कि, सचेत रूप से, कमोबेश एक (आपको मोलियर की पंक्ति याद होगी) वह जाकर इसे हर जगह घोषित कर देगा; फिर भी, जब वह घोषणा करता है कि वह एक उत्कृष्ट पत्नी है, तो उसमें अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। और फिर भी यह उतना सच नहीं है जितना लोग सोचते हैं। अपने तरीके से—जो शायद सभी पतियों को पसंद नहीं आएगा, लेकिन फिर, सच कहूं तो, मुझे यह मानना मुश्किल लगता है कि स्वान, जो उसे इतने लंबे समय से जानता है और बिल्कुल भी मूर्ख नहीं है, यह नहीं जानता था कि क्या उम्मीद करनी चाहिए—इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह उसके लिए एक निश्चित सम्मान रखती है। मैं यह नहीं कहता कि वह चंचल नहीं है, और स्वान को इसके लिए उस पर कोई दोष नहीं है, अगर कोई उन उदार ज़ुबानों पर विश्वास करे जो, जैसा कि आप मान सकते हैं, वह लगातार पूंछ हिलाती रहती है। लेकिन वह उसके द्वारा उसके लिए किए गए कार्यों के लिए स्पष्ट रूप से आभारी है, और इसके विपरीत हर जगह व्यक्त की गई आशंकाओं के बावजूद, उसका स्वभाव मानो देवदूत जैसा हो गया है।

यह बदलाव शायद उतना असाधारण नहीं था जितना एम. डी नॉरपोइस ने बताया था। ओडेट को विश्वास नहीं था कि स्वान कभी उससे शादी करने के लिए राजी होगा; हर बार जब वह यह संकेत देती कि शहर के किसी व्यक्ति ने अपनी प्रेमिका से शादी कर ली है, तो वह एकदम शांत हो जाता था, या ज़्यादा से ज़्यादा, अगर वह सीधे उससे पूछती: "क्या आपको नहीं लगता कि यह बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया काम है जो उसने उस औरत के लिए किया जिसने अपनी पूरी जवानी उसके लिए कुर्बान कर दी?" तो वह रूखेपन से जवाब देता: "लेकिन मैं यह नहीं कहता कि इसमें कुछ गलत है। हर कोई वही करता है जो उसे सही लगता है।" वह लगभग इस बात पर यकीन करने ही वाली थी कि (जैसा कि वह गुस्से में

धमकी दिया करता था) वह उसे पूरी तरह से छोड़ देगा, क्योंकि उसने कुछ समय पहले ही एक महिला मूर्तिकार को यह कहते सुना था कि "पुरुष जो कुछ भी करते हैं, उस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए, वे बड़े ही जाहिल होते हैं।" इस निराशावादी कहावत की गहराई से प्रभावित होकर उसने इसे अपना लिया था और हर संभव मौके पर इसे इस तरह दोहराती थी जैसे कह रही हो: "आखिरकार, यह किसी भी तरह से असंभव नहीं है; यह तो बस मेरी किस्मत ही होगी।" इस बीच, वह आशावादी कहावत, जिसने अब तक ओडेट को जीवन में मार्गदर्शन दिया था, पूरी तरह से खोखली हो चुकी थी: "जब पुरुष तुमसे प्यार करते हैं, तो तुम उनके साथ कुछ भी कर सकती हो, वे बड़े ही बेवकूफ होते हैं!" यह सिद्धांत उसके चेहरे पर उसी तरह की पलकों के कंपन से झलकता था जैसे वह कहती हो: "डरो मत; वह कुछ नहीं तोड़ेगा।" प्रतीक्षा करते हुए, ओडेट इस विचार से व्याकुल थी कि उसकी एक सहेली, जिसकी शादी एक ऐसे व्यक्ति से हुई थी जो उसके साथ उतने समय तक नहीं रहा जितना ओडेट खुद स्वान के साथ रही थी, और जिससे उसकी कोई संतान नहीं थी, और जो अब एक प्रतिष्ठित पद पर थी, एलिसी पैलेस के समारोहों में आमंत्रित की जाती थी, स्वान के व्यवहार के बारे में क्या सोचती होगी। एम. डी नॉरपोइस से अधिक समझदार सलाहकार निस्संदेह यह बता सकते थे कि शर्म और अपमान की इसी भावना ने ओडेट को कड़वा बना दिया था, कि उसके द्वारा प्रदर्शित शैतानी लक्षण उसका कोई अनिवार्य हिस्सा नहीं थे, कोई असाध्य बुराई नहीं थे, और इस प्रकार आसानी से उस बात की भविष्यवाणी कर सकते थे जो वास्तव में घटित हुई, अर्थात् जीवन का एक नया नियम, वैवाहिक जीवन, लगभग जादुई गति से इन दर्दनाक घटनाओं का अंत कर देगा, जो दैनिक रूप से घटित होती थीं लेकिन किसी भी अर्थ में स्वाभाविक नहीं थीं। लगभग हर कोई इस विवाह से

आश्चर्यचकित था, और यह अपने आप में आश्चर्यजनक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत कम लोग उस घटना की विशुद्ध व्यक्तिपरक प्रकृति को समझते हैं जिसे हम प्रेम कहते हैं, या यह कैसे एक नए, तीसरे, पूरक व्यक्ति का निर्माण करता है, जो उस व्यक्ति से भिन्न होता है जिसे दुनिया उसी नाम से जानती है, एक ऐसा व्यक्ति जिसके अधिकांश घटक तत्व स्वयं, यानी प्रेमी से प्राप्त होते हैं। और इसलिए बहुत कम लोग ही उस विशाल आकार को स्वाभाविक मान सकते हैं जो हमारी दृष्टि में एक प्राणी ग्रहण कर लेता है जो उस प्राणी से भिन्न होता है जिसे वे देखते हैं। फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ तक ओडेट का संबंध है, लोगों को इस तथ्य पर ध्यान देना चाहिए था कि यदि वास्तव में वह स्वान की मानसिकता को पूरी तरह से नहीं समझ पाई थी, तो कम से कम वह उनके चित्रों के शीर्षकों और उनके अध्ययनों के सभी विवरणों से परिचित थी, यहाँ तक कि वर्मीर का नाम उसके लिए उतना ही परिचित था जितना कि उसकी अपनी दर्जी का; जबकि जहाँ तक स्वान का संबंध है, वह उनके चरित्र के उन लक्षणों को भली-भांति जानती थी जिनसे शेष दुनिया अनभिज्ञ रहती है या केवल उनका उपहास करती है, और केवल एक प्रेमिका या बहन ही उस रहस्योद्घाटनकारी, पोषित छवि को प्राप्त कर सकती है; और हम ऐसी विलक्षणताओं से इतने दृढ़ता से जुड़े होते हैं, यहाँ तक कि उनसे भी जिन्हें हम सुधारना चाहते हैं, कि समय के साथ जब एक स्त्री हमारे जैसी या हमारे रिश्तेदारों जैसी स्नेहपूर्ण, उपहासपूर्ण आत्मीयता प्राप्त कर लेती है, तो लंबे समय से चले आ रहे प्रेम संबंधों में पारिवारिक स्नेह की मिठास और मजबूती आ जाती है। किसी दूसरे प्राणी के साथ हमारा बंधन तब और भी मजबूत हो जाता है जब वह प्राणी हमारी किसी अपूर्णता का आकलन करते समय हमारे समान दृष्टिकोण अपनाता है। और इन विशेष गुणों के अलावा, कुछ अन्य गुण भी थे जो

उनकी बुद्धि और चरित्र दोनों से संबंधित थे, जिन्हें ओडेट आसानी से पहचान सकीं क्योंकि उनकी जड़ें उनके चरित्र में थीं। उन्होंने शिकायत की कि जब स्वान लेखक बने, जब उन्होंने अपने निबंध प्रकाशित किए, तो उनमें ये विशेषताएँ नहीं पाई गईं, जैसे कि उनके पत्रों या बातचीत में, जहाँ वे प्रचुर मात्रा में थीं। उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे इन विशेषताओं को अधिक प्रमुख स्थान दें। वह चाहती तो थी, क्योंकि ये वही गुण थे जो वह स्वयं उसमें पसंद करती थी, लेकिन चूंकि वह इन्हें इसलिए पसंद करती थी क्योंकि ये उसके व्यक्तित्व की सबसे विशिष्ट विशेषताएं थीं, इसलिए शायद उसकी यह इच्छा गलत नहीं थी कि ये गुण उसकी रचनाओं में भी मिलें। शायद उसने यह भी सोचा होगा कि यदि उसके काम में और अधिक जीवंतता हो, जिससे अंततः उसे सफलता मिले, तो वह भी वह चीज़ बना पाएगी जिसे वर्दुरिन परिवार में उसे दुनिया में सबसे अधिक महत्व देना सिखाया गया था—एक सैलून।

जिन लोगों को इस तरह का विवाह हास्यास्पद लगता था, जो खुद से पूछते थे, "जब मैं मैडम डी मोंटमोरेंसी से शादी करूँगा तो एम. डी गुएरमांटेस क्या सोचेंगे, ब्रेओटे क्या कहेंगे?", उन लोगों में, जो इस तरह के सामाजिक आदर्श को संजोते थे, बीस साल पहले स्वान खुद भी शामिल थे, वही स्वान जिसने जॉकी क्लब में चुने जाने के लिए अथक परिश्रम किया था, और उस समय एक शानदार शादी करने की योजना बना रहा था, जिससे उसकी स्थिति मजबूत हो जाती और वह पेरिस के सबसे प्रमुख व्यक्तियों में से एक बन जाता। लेकिन, इस तरह के विवाह से संबंधित जो कल्पनाएँ मन में उठती हैं, अन्य सभी कल्पनाओं की तरह, यदि वे फीकी न पड़ जाएँ और पूरी तरह से खो न जाएँ, तो उन्हें बाहरी सहारे की आवश्यकता होती है। आपकी सबसे तीव्र इच्छा उस व्यक्ति को अपमानित करने की होती है जिसने आपका अपमान किया है। लेकिन

अगर आप उससे फिर कभी नहीं मिलते, क्योंकि वह कहीं और चला गया है, तो आपका दुश्मन आपके लिए जरा भी महत्वपूर्ण नहीं रह जाएगा। यदि कोई व्यक्ति बीस वर्षों तक उन सभी लोगों को भूल चुका है जिनके कारण वह जॉकी क्लब या इंस्टीट्यूट का सदस्य बनना चाहता था, तो उन संस्थाओं में से किसी एक का सदस्य बनने की संभावना उसे लुभाना बंद कर देगी। अब सेवानिवृत्ति, बीमारी या धार्मिक परिवर्तन की तरह ही, किसी स्त्री के साथ लंबे समय तक संबंध पुरानी कल्पनाओं की जगह नई कल्पनाएँ जगा देते हैं। स्वान ने ओडेट से विवाह करते समय अपनी सामाजिक महत्वाकांक्षाओं का त्याग नहीं किया, क्योंकि ओडेट ने आध्यात्मिक अर्थों में उन्हें इन महत्वाकांक्षाओं से बहुत पहले ही अलग कर दिया था। इसके अलावा, यदि वह इतने अलग न होते, तो उनका विवाह और भी प्रशंसनीय होता। यही कारण है कि इनमें एक निजी सुख के लिए कमोबेश लाभप्रद स्थिति का त्याग करना शामिल होता है, इसलिए सामान्यतः 'असंभव' विवाह सबसे सुखी होते हैं। (पैसे के लिए किए गए विवाहों को 'असंभव' विवाहों में शामिल करना उचित नहीं है, क्योंकि ऐसे किसी जोड़े का कोई उदाहरण दर्ज नहीं है, जिसमें पत्नी या पति ने स्वयं को बेचा हो और उन्हें किसी न किसी रूप में समाज में स्वीकार न किया गया हो, भले ही परंपरा के आधार पर, और अनेक उदाहरणों के बल पर, ताकि दो परस्पर विरोधी मापदंड न हों।) शायद, दूसरी ओर, स्वान के स्वभाव का कलात्मक पक्ष, यदि विकृत नहीं, तो किसी भी स्थिति में, स्वयं से ही संबंध बनाने में, जैसे कि मेंडेलियन मान्यताओं और पौराणिक कथाओं में वर्णित विभिन्न प्रजातियों के मिलन में, किसी भिन्न जाति की प्राणी, जैसे कि महारथी या वेश्या, शाही गठबंधन करने में या अपने से नीची जाति की महिला से विवाह करने में कुछ हद तक आनंद प्राप्त करता। पूरी दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति था जिसकी राय वह ओडेट

के साथ अपने संभावित विवाह के बारे में सोचते समय ध्यान में रखता था; और वह थी, और यह किसी अभिमानपूर्ण उद्देश्य से नहीं था, डचेस डी गुएरमांटेस। इसके विपरीत, ओडेट को इन लोगों से कोई खास मतलब नहीं था; वह केवल उन लोगों के बारे में सोचती थी जिनका पद उससे ठीक ऊपर था, न कि किसी अस्पष्ट उच्च पद के बारे में। लेकिन जब स्वान दिवास्वप्नों में ओडेट को अपनी पत्नी के रूप में देखता, तो वह हमेशा उस पल की कल्पना करता जिसमें वह उसे—उसे और विशेष रूप से उसकी बेटी को—राजकुमारी डेस लाउम्स (जो अपने ससुर की मृत्यु के बाद जल्द ही डचेस डे गुएरमांटेस बनने वाली थीं) से मिलवाने ले जाता। उसे उन्हें कहीं और मिलवाने की कोई इच्छा नहीं थी, लेकिन उसका हृदय पिघल जाता जब वह उनके वास्तविक शब्दों को मन में दोहराते हुए उन सभी बातों की कल्पना करता जो डचेस उसके बारे में ओडेट से और ओडेट डचेस से कहेंगी, वह स्नेह जो वह गिल्बर्ट के लिए दिखाएगी, उसे लाड़-प्यार करेगी, और उसे अपनी बेटी पर गर्व महसूस कराएगी। उसने अपने मन में इस परिचय के दृश्य को इतनी सटीकता से रचा, जैसे लोग लॉटरी जीतने पर उसे खर्च करने के बारे में सोचते हैं। जिस प्रकार किसी संकल्प के साथ बनने वाली मानसिक छवि उसका प्रेरक होती है, उसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि स्वान ने ओडेट से विवाह इसलिए किया ताकि वह उसे और गिलबर्ट को, किसी और की उपस्थिति के बिना, और यदि आवश्यक हो तो किसी और को इसके बारे में पता चले बिना, डचेस डी गुएरमांटेस के सामने प्रस्तुत कर सके। हम देखेंगे कि उसकी पत्नी और पुत्री के लिए उसकी यही एकमात्र सामाजिक महत्वाकांक्षा थी, जिसकी पूर्ति पर इतना पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया कि स्वान की मृत्यु इस विश्वास के साथ हुई कि डचेस को उनके बारे में कभी पता नहीं चलेगा। हम यह भी देखेंगे कि इसके विपरीत, स्वान की मृत्यु के

बाद डचेस डी गुएरमांटेस ने ओडेट और गिलबर्ट से मेलजोल रखा। और निःसंदेह, उनके लिए यह अधिक बुद्धिमानी होती—यह देखते हुए कि वे इतनी छोटी सी बात को इतना महत्व दे रहे थे—कि वे इस संबंध में भविष्य की बहुत निराशावादी तस्वीर न बनाते, बल्कि इस आशा से स्वयं को सांत्वना देते कि महिलाओं की मुलाकात शायद तब हो जब वे इसका आनंद लेने के लिए मौजूद न हों। कारण-कार्य की श्रमसाध्य प्रक्रिया, जो देर-सवेर हर संभव प्रभाव उत्पन्न करती है, जिसमें (परिणामस्वरूप) वे प्रभाव भी शामिल हैं जिन्हें लगभग असंभव माना जाता था, कभी-कभी स्वाभाविक रूप से धीमी होती है, और हमारी अधीरता (जो इसे तेज करने की कोशिश में बाधा डालती है) और हमारे अस्तित्व के कारण और भी धीमी हो जाती है, और तभी फलित होती है जब हम इसकी इच्छा करना छोड़ देते हैं—संभवतः, जीना छोड़ देते हैं। क्या स्वान को अपने स्वयं के अनुभव से इस बात का अहसास नहीं था? क्या उनके जीवन में, मानो उनकी मृत्यु के बाद जो होने वाला था, उसकी एक पूर्वसूचना पहले से ही मौजूद नहीं थी? ओडेट के साथ इस विवाह में उन्हें मरणोपरांत सुख प्राप्त हुआ था, जिससे उन्होंने दिल से प्यार किया था—भले ही वह पहली नजर में उन्हें पसंद न आई हो—जिससे उन्होंने तब विवाह किया जब उनका उससे प्रेम समाप्त हो चुका था, जब स्वान के भीतर वह प्राणी जो जीने के लिए इतना तरसता था, ओडेट के साथ अपना पूरा जीवन बिताने से इतना निराश हो चुका था, जब वह प्राणी विलुप्त हो चुका था?

इसके बाद मैंने कॉम्टे डी पेरिस के बारे में बात करना शुरू किया, यह पूछने के लिए कि क्या वह स्वान के मित्रों में से एक नहीं थे, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं बातचीत उनसे भटक न जाए। "जी हाँ!" एम. डी नॉरपोइस ने मेरी ओर मुड़ते हुए और अपनी नीली निगाहों से मुझ पर टिकते हुए उत्तर दिया, जिनमें मानो उनकी कार्यकुशलता और आत्मसात

करने की क्षमता अपने मूल तत्व के रूप में तैर रही थी। और "सच कहूँ तो," उन्होंने मेरे पिता को संबोधित करते हुए एक बार फिर कहा, "मुझे नहीं लगता कि मैं राजकुमार के प्रति अपने उस सम्मान की सीमा का उल्लंघन कर रहा हूँ जो मैंने हमेशा व्यक्त किया है (हालाँकि, जैसा कि आप समझ रहे हैं, उनके साथ मेरा कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं है, जिससे मेरी अनौपचारिक स्थिति खतरे में पड़ सकती है), अगर मैं आपको एक छोटी सी घटना के बारे में बताऊँ जो महत्वहीन नहीं है; लगभग चार साल पहले, मध्य यूरोप के एक देश के एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर, राजकुमार की नज़र संयोगवश श्रीमती स्वान पर पड़ी। स्वाभाविक रूप से, उनके करीबी लोगों में से किसी ने भी उनसे यह पूछने का साहस नहीं किया कि वे उनके बारे में क्या सोचते हैं। यह उचित नहीं होता। लेकिन जब बातचीत में संयोगवश उनका नाम आया, तो कुछ संकेतों से—जो सूक्ष्म थे, लेकिन बिल्कुल स्पष्ट थे—राजकुमार ने यह स्पष्ट करने की इच्छा दिखाई कि उनके बारे में उनकी राय, संक्षेप में, बिल्कुल भी प्रतिकूल नहीं थी।"

"लेकिन क्या यह संभव ही नहीं था कि उसे कॉम्टे डी पेरिस के सामने पेश किया गया हो?" मेरे पिता ने पूछा।

“खैर, हमें नहीं पता; राजकुमारों के बारे में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता,” एम. डी नॉरपोइस ने उत्तर दिया। “सबसे ऊंचे ओहदे वाले, जो अपने हक को हासिल करना बखूबी जानते हैं, अक्सर जनमत के फैसलों से सबसे आखिर में प्रभावित होते हैं, यहां तक कि उन फैसलों से भी जिनके लिए सबसे ज्यादा औचित्य होता है, खासकर जब बात किसी के प्रति व्यक्तिगत लगाव को पुरस्कृत करने की हो। अब यह निश्चित है कि कॉम्टे डी पेरिस ने हमेशा स्वान की भक्ति को अत्यंत उदारतापूर्वक स्वीकार किया है, जो इन सब के बावजूद एक चरित्रवान व्यक्ति हैं।”

"और आपका क्या विचार है, महाराज? हमें जरूर बताइए!" मेरी माँ ने

विनम्रता के साथ-साथ जिज्ञासावश भी पूछा।

उस अनुभवी पारखी की सारी ऊर्जा उसके भाषण की सामान्य संयमित शैली को तोड़ते हुए फूट पड़ी और उसने उत्तर दिया: "बिल्कुल उत्कृष्ट!"

और यह जानते हुए कि किसी महिला द्वारा किसी पर पड़े गहरे प्रभाव को स्वीकार करना, बशर्ते कि इसे चंचल लहजे में कहा जाए, बातचीत की एक विशेष श्रेणी में आता है जिसकी बहुत सराहना की जाती है, वह कुछ सेकंड के लिए हल्की हंसी हंस पड़ा, जिससे बूढ़े राजनयिक की नीली आंखें नम हो गईं और उनकी नाक के नथुने, जिनमें छोटी-छोटी लाल नसें थीं, कांपने लगे। "वह सचमुच मनमोहक है!"

"क्या इस रात्रिभोज में बर्गोट नाम का कोई लेखक मौजूद था, महोदय?" मैंने संकोच से पूछा, और अभी भी बातचीत को स्वान्स के विषय पर ही केंद्रित रखने की कोशिश कर रहा था।

“जी हाँ, बर्गोट वहाँ थे,” एम. डी नॉरपोइस ने विनम्रतापूर्वक मेरी ओर सिर झुकाते हुए उत्तर दिया, मानो मेरे पिता को प्रसन्न करने की इच्छा से वे उनसे जुड़ी हर बात को बहुत महत्व देते हों, यहाँ तक कि मेरी उम्र के एक लड़के के सवालों को भी, जिसे अपने जैसे लोगों से इस तरह का शिष्टाचार देखने की आदत नहीं थी। “क्या आप उन्हें जानते हैं?” उन्होंने अपनी उस तीखी नज़र से मुझे घूरते हुए पूछा, जिसकी तीक्ष्णता की बिस्मार्क ने भी प्रशंसा की थी।

"मेरा बेटा उन्हें नहीं जानता, लेकिन वह उनके काम की बहुत प्रशंसा करता है," मेरी मां ने समझाया।

"हे भगवान!" एम. डी नॉरपोइस ने विस्मयबोध व्यक्त किया, जिससे मेरे मन में अपनी बुद्धि को लेकर ऐसे गंभीर संदेह उत्पन्न हो गए जो आमतौर पर मुझे विचलित नहीं करते थे, जब मैंने देखा कि जिसे मैं स्वयं से हजारों

गुना अधिक महत्व देता था, जिसे मैं दुनिया की सबसे उत्कृष्ट वस्तु मानता था, वह उनके लिए प्रशंसा के पैमाने पर सबसे निचले पायदान पर थी। मैं आपके बेटे के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हूँ। बर्गोट को मैं बांसुरी वादक कहता हूँ: यह मानना पड़ेगा कि वह इसे बहुत ही मधुरता से बजाते हैं, हालाँकि बहुत अधिक बनावटीपन और आडंबर के साथ। लेकिन अंततः, यह बस इतना ही है, और यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। उनके कमजोर लेखन में कहीं भी ऐसी कोई रचना नहीं मिलती जिसे निर्माण कहा जा सके। कोई क्रिया नहीं—या बहुत कम—लेकिन सबसे बढ़कर कोई विस्तार नहीं। उनकी पुस्तकें आधारहीन हैं, या यूँ कहें कि उनका कोई आधार ही नहीं है। वर्तमान समय में, जब जीवन की बढ़ती जटिलता पढ़ने के लिए मुश्किल से एक पल भी छोड़ती है, जब यूरोप के मानचित्र में आमूल-चूल परिवर्तन हो चुके हैं, और संभवतः इससे भी अधिक बड़े परिवर्तनों की कगार पर है, जब हर तरफ से इतनी नई और खतरनाक समस्याएँ उभर रही हैं, तो आप मुझे यह सुझाव देने की अनुमति देंगे कि एक लेखक से यह अपेक्षा करना उचित है कि वह एक उत्कृष्ट बुद्धिजीवी से कुछ अधिक हो, जो हमें शुद्ध रूप के गुणों पर निरर्थक और जटिल चर्चाओं के बीच यह भुला दे कि हम किसी भी क्षण बर्बरों की दोहरी लहर से घिर जाने का खतरा मंडरा रहा है, एक वो जो बाहर से आ रहे हैं और दूसरे जो हमारी सीमाओं के भीतर से। मैं जानता हूँ कि यह उस पवित्र सिद्धांत के विरुद्ध एक घोर निंदा है जिसे ये सज्जन 'कला कला के लिए' कहते हैं, लेकिन इतिहास के इस दौर में शब्दों को सामंजस्यपूर्ण ढंग से प्रयोग करने से कहीं अधिक आवश्यक कार्य हैं। ऐसा नहीं है कि बर्गोट की शैली कभी-कभी आकर्षक नहीं होती। मुझे उसमें कोई कमी नहीं दिखती, लेकिन समग्र रूप से देखा जाए तो यह बहुत ही दिखावटी, बहुत ही सतही और शक्तिहीन है। अब मैं बर्गोट के प्रति आपके अत्यधिक सम्मान को

ध्यान में रखते हुए, उन कुछ पंक्तियों को आसानी से समझ सकता हूँ जो आपने मुझे अभी दिखाईं, जिन्हें अनदेखा करना आपके लिए अनुचित होता, क्योंकि आपने स्वयं मुझे बड़ी सरलता से बताया था कि वे केवल एक बचकानी लिखावट थीं। (मैंने सचमुच ऐसा कहा था, लेकिन मैंने ऐसा कुछ सोचा नहीं था।) "हर पाप की क्षमा होती है, और विशेषकर जवानी के पापों की। आख़िरकार, तुम्हारे साथ-साथ दूसरों के भी ऐसे पाप हैं, और तुम अकेले नहीं हो जिसने अपने समय में खुद को कवि समझा हो। लेकिन तुमने जो मुझे दिखाया है, उसमें बर्गोट का बुरा प्रभाव साफ़ दिखता है। तुम्हें आश्चर्य नहीं होगा जब मैं कहूँ कि उसमें उनके अच्छे गुण बिल्कुल नहीं थे, क्योंकि वे एक ऐसी शैली को संभालने की कला में माहिर हैं - जो संयोगवश काफ़ी सतही है - जिसकी बुनियादी बातें भी तुम अपनी उम्र में नहीं सीख पाए हो। लेकिन वही दोष फिर से आ गया है, शब्दों को सुंदर ढंग से पिरोना और फिर उनके अर्थ पर ध्यान देना। यह तो उल्टी बात है, यहाँ तक कि बर्गोट की रचनाओं में भी। रूप की वे सारी चीनी पहेलियाँ, वे सारी सूक्ष्म बारीकियाँ मुझे बिल्कुल व्यर्थ लगती हैं। कुछ आतिशबाजी छोड़ दी जाए तो... किसी लेखक द्वारा खूबसूरती से रची गई रचना को देखते ही प्रतिभा का गौरव प्राप्त हो जाता है। प्रतिभा की रचनाएँ इतनी आम नहीं होतीं! बर्गोट के नाम एक भी ऐसी उपन्यास नहीं है जो अपने विचार में उत्कृष्ट हो, ऐसी कोई भी किताब नहीं जिसे पुस्तकालय के किसी खास कोने में रखा जाए। मुझे उनकी पूरी रचना में ऐसी एक भी रचना नहीं मिली। लेकिन इससे यह तथ्य नकारा नहीं जा सकता कि उनके मामले में रचना लेखक से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। आह! एक ऐसा व्यक्ति है जो उस बुद्धिमान व्यक्ति की बात को सही साबित करता है जिसने कहा था कि किसी लेखक को उसकी किताबों के बिना नहीं जानना चाहिए। ऐसे व्यक्ति की कल्पना करना असंभव है जो उनसे

कम मेल खाता हो—अधिक आडंबरपूर्ण, अधिक आडंबरपूर्ण, मानव समाज के लिए कम उपयुक्त। कभी-कभी अशिष्ट, कभी-कभी किताबों की तरह बातें करता है, और वह भी अपनी किताबों की तरह नहीं, बल्कि एक उबाऊ किताब की तरह, जबकि उनकी किताबें, न्यायसंगत कहें तो, वैसी नहीं हैं—यही है आपका बर्गोट। उसका दिमाग बेहद उलझा हुआ है, बिल्कुल वैसा ही जैसा हमारे पूर्वजों का था। उसे एक सनकी कहा जाता है, और वह अपने बोलने के तरीके से अपनी बातों को और भी अप्रिय बना देता है। मुझे अभी याद नहीं आ रहा कि लोमेनी ने बताया था या सैंट-बेउवे ने, कि विग्नी ने भी इसी तरह की सनक से लोगों को दूर भगाया था। लेकिन बर्गोट ने हमें कभी भी 'सिंक-मार्स' या 'कैशेट रूज' जैसी रचनाएँ नहीं दीं, जिनके कुछ पन्ने नियमित संकलन के अंश हैं।

एम. डी नॉरपोइस ने मेरे द्वारा प्रस्तुत अंश के संबंध में जो कहा था, उससे मैं स्तब्ध रह गया था। साथ ही, मुझे निबंध लिखने या गंभीर चिंतन करने के प्रयासों में आने वाली कठिनाइयों की याद आ गई। इससे मुझे एक बार फिर अपनी बौद्धिक अक्षमता का एहसास हुआ और यह समझ आया कि मेरा जन्म साहित्यिक जीवन के लिए नहीं हुआ है। निःसंदेह, कॉम्ब्रे में पुराने दिनों में कुछ साधारण रचनाएँ या बर्गोट के कुछ पृष्ठ मुझे चिंतन की ऐसी अवस्था में ले जाते थे, जो मुझे अत्यंत मूल्यवान प्रतीत होती थी। लेकिन यही अवस्था मेरी गद्य कविता में प्रतिबिंबित हुई थी; इसमें कोई संदेह नहीं कि एम. डी नॉरपोइस ने मेरी उस भ्रांति को तुरंत समझ लिया था और जान लिया था कि मैंने जिसे सुंदर समझा था, वह एक भ्रम मात्र था, जबकि राजदूत उस भ्रम में नहीं पड़े थे। उन्होंने मुझे यह भी दिखाया कि जब मेरा मूल्यांकन बाहरी दृष्टिकोण से, निष्पक्ष रूप से, सर्वोत्तम बुद्धि वाले विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, तो मेरा स्थान कितना महत्वहीन होता है। मैं मानो अवाक और भावहीन हो गया; और मेरा मन, एक ऐसे तरल

पदार्थ की तरह जिसका कोई आयाम नहीं होता सिवाय उस पात्र के जिसमें उसे रखा जाता है, ठीक वैसे ही जैसे क्षण भर पहले प्रतिभा की विशाल क्षमता को भरने के लिए विस्तारित हुआ था, अब संकुचित होकर पूरी तरह से उस सीमित साधारणता में समाहित हो गया था जिसमें एम. डी नॉरपोइस ने अचानक उसे बंद कर दिया था।

"हमारी पहली मुलाकात—मैं बर्गोट और अपनी बात कर रहा हूँ—" उन्होंने मेरे पिता की ओर मुड़ते हुए अपनी बात जारी रखी, "काँटों से भरी थी (वैसे, कहने का दूसरा तरीका यही है कि उसमें काँटों की कमी नहीं थी)। बर्गोट—कुछ साल पहले—वियना आए थे जब मैं वहाँ राजदूत था; राजकुमारी मेटर्निच ने उनका मुझसे परिचय कराया, वे आए और अपना नाम लिखवाया, और दूतावास में बुलाए जाने की उम्मीद करने लगे। अब, फ्रांस के प्रतिनिधि के रूप में एक विदेशी देश में होने के नाते, जिसे उन्होंने अपने लेखन से कुछ हद तक (सटीक रूप से कहें तो, बहुत कम हद तक) सम्मान दिलाया है, मैं उनके निजी जीवन के बारे में अपनी प्रतिकूल राय को एक तरफ रखने के लिए तैयार था। लेकिन वे अकेले यात्रा नहीं कर रहे थे, और उन्होंने स्पष्ट रूप से बता दिया था कि उन्हें अपने साथी के बिना आमंत्रित नहीं किया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि मैं अधिकांश पुरुषों से अधिक रूढ़िवादी नहीं हूँ, और अविवाहित होने के नाते, शायद मैं दूतावास के दरवाजे थोड़ा अधिक खोल सका, जितना कि अगर मैं विवाहित होता और एक बच्चे का पिता होता। परिवार। फिर भी, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि पतन की ऐसी कई गहराइयाँ हैं जहाँ तक पहुँचने में मुझे संकोच होगा, जबकि ये और भी घृणित हो जाती हैं उस लहजे से, जो नैतिक नहीं, बल्कि—चलिए खुलकर कहें तो उपदेशात्मक—बर्गोट की किताबों में मिलता है, जहाँ हमें निरंतर और, हम सबके बीच, कुछ हद तक थकाऊ विश्लेषण, कष्टदायक संशय, विकृत पश्चाताप, और वह भी

छोटी-छोटी गलतियों, सबसे तुच्छ शरारतों के लिए (जैसा कि हम अपने अनुभव से जानते हैं), जबकि वह अपने निजी जीवन में पूरी तरह से विवेकहीनता और अत्यधिक निंदकता का प्रदर्शन करता है। संक्षेप में, मैंने जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया, राजकुमारी ने फिर से जिम्मेदारी संभाली, लेकिन असफल रहीं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि मैं उस सज्जन के सामने पवित्रता की छवि में आता हूँ, और मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने स्वान की उस दयालुता की कितनी सराहना की, जिसने उन्हें और मुझे एक ही शाम को आमंत्रित किया था। जब तक कि निश्चित रूप से यह निमंत्रण उन्होंने ही न मांगा हो। कभी मत बताना, क्योंकि वास्तव में वह सामान्य नहीं है। दरअसल, यही उसका एकमात्र बहाना है।"

"और क्या श्रीमती स्वान की बेटी भी रात्रिभोज में मौजूद थीं?" मैंने एम. डी नॉरपोइस से यह सवाल पूछा, इस अवसर का लाभ उठाते हुए कि जब हम सभी ड्राइंग रूम की ओर बढ़ रहे थे, तो मैं अपनी भावनाओं को मेज पर बैठकर छिपाने की तुलना में कहीं अधिक आसानी से छिपा सकता था, जहाँ मैं लैंप की तेज रोशनी में जकड़ा हुआ था।

एम. डी नॉरपोइस कुछ पल के लिए याद करने की कोशिश करते हुए बोले: "जी हाँ, आपका मतलब चौदह या पंद्रह साल की किसी युवती से है? जी हाँ, बिल्कुल, मुझे अब याद आ रहा है कि रात के खाने से पहले उसका परिचय मुझे हमारे एम्फिट्रियन की बेटी के रूप में कराया गया था। मैं आपको बता दूँ कि मैंने उसे ज़्यादा देर नहीं देखा; वह जल्दी सो गई थी। या फिर वह किसी दोस्त से मिलने गई थी—मुझे याद नहीं। लेकिन मैं देख सकता हूँ कि आप स्वान परिवार से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं।"

"मैं चैंप्स-एलिसी में मैडम स्वान के साथ खेलता हूं, और वह बहुत ही मनमोहक हैं।"

"ओह! तो बात ये है? लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, मुझे वो बहुत प्यारी लगी। हालांकि, मुझे ये स्वीकार करना पड़ेगा कि मुझे नहीं लगता कि वो कभी अपनी माँ जैसी बन पाएगी, अगर मैं ये बात बिना आपको ठेस पहुँचाए कह सकूँ तो।"

"मुझे मैडम स्वान का चेहरा ज्यादा पसंद है, लेकिन मैं उनकी मां की भी बहुत प्रशंसा करता हूं; मैं केवल उन्हें वहां से गुजरते देखने की उम्मीद में ही जंगल में टहलने जाता हूं।"

"अरे! लेकिन मुझे उन्हें यह बताना ही होगा; वे बहुत प्रसन्न होंगे।"

जब वह ये शब्द बोल रहे थे, और उनके बोलने के कुछ सेकंड बाद तक, एम. डी नॉरपोइस उसी स्थिति में थे जैसे कोई और व्यक्ति, जो मुझे स्वान को एक बुद्धिमान व्यक्ति, उसके परिवार को सम्मानित स्टॉकब्रोकर और उसके घर को एक शानदार घर बताते हुए सुनकर यह कल्पना करता है कि मैं उतनी ही आसानी से किसी अन्य समान रूप से बुद्धिमान व्यक्ति, समान रूप से सम्मानित अन्य स्टॉकब्रोकरों और समान रूप से शानदार किसी अन्य घर के बारे में भी ऐसी ही बातें कहूँगा; यह वह क्षण था जब एक समझदार व्यक्ति किसी पागल से बात करते समय यह नहीं समझ पाता कि उसका साथी पागल है। एम. डी नॉरपोइस जानते थे कि सुंदर महिलाओं को देखने से मिलने वाले आनंद में कुछ भी असामान्य नहीं था, यह एक सामाजिक रिवाज था कि जब कोई आपसे किसी सुंदर महिला के बारे में उत्साह से बात करे, तो यह दिखावा किया जाए कि वह उससे प्यार करता है और अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाने का वादा किया जाए। लेकिन यह कहकर कि वह मेरे बारे में गिल्बर्ट और उसकी माँ से बात करेगा (जिससे मुझे, किसी ओलंपियन देवता की तरह, जो हवा के झोंके जैसी तरलता धारण कर लेता है, या यूँ कहें कि उस बूढ़े व्यक्ति के रूप में, जिसका रूप मिनर्वा ने उधार लिया है, श्रीमती स्वान के ड्राइंग रूम

में अदृश्य रूप से प्रवेश करने, उनका ध्यान आकर्षित करने, उनके विचारों में जगह बनाने, मेरी प्रशंसा के लिए उनकी कृतज्ञता जगाने, उनके सामने एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के मित्र के रूप में प्रकट होने, भविष्य में उनके द्वारा आमंत्रित किए जाने और उनके परिवार के अंतरंग जीवन में प्रवेश करने के योग्य प्रतीत होने का अवसर मिलेगा), यह महत्वपूर्ण व्यक्ति, जो श्रीमती स्वान पर अपने व्यापक प्रभाव का मेरे हित में उपयोग करने वाला था, ने अचानक मेरे भीतर एक ऐसा प्रबल स्नेह जगा दिया कि मुझे उनके कोमल, सफेद और सिकुड़े हुए हाथों को चूमने से रोकना मुश्किल हो गया, जो ऐसे लग रहे थे मानो बहुत देर तक पानी में पड़े रहे हों। मैंने उस आवेगपूर्ण गति की एक रूपरेखा भी हवा में खींची, लेकिन मुझे लगा कि यह केवल मैंने ही देखा था। क्योंकि हममें से किसी के लिए भी यह सटीक रूप से अनुमान लगाना कठिन है कि उसके शब्द या हावभाव दूसरों को किस हद तक प्रभावित करते हैं। कुछ हद तक अपनी महत्ता को बढ़ा-चढ़ाकर बताने के डर से, और कुछ हद तक इसलिए कि हम दूसरों के जीवन में बनने वाली धारणाओं के दायरे को बहुत अधिक बढ़ा देते हैं, हम सोचते हैं कि हमारे भाषण और हावभाव की सहायक वस्तुएँ शायद ही दूसरों की चेतना में प्रवेश करती हैं, और बातचीत करने वालों की स्मृति में तो और भी कम समय तक रहती हैं। हम शायद इसी तरह की प्रेरणा से प्रेरित होकर अपराधी अपने पहले से दिए गए बयान के शब्दों को थोड़ा-बहुत बदल देते हैं, यह सोचकर कि नया रूप किसी भी मौजूदा रूप से मेल नहीं खाएगा। लेकिन यह भी संभव है कि मानव जाति के सहस्राब्दी अस्तित्व के संदर्भ में भी, पत्रकार का वह दर्शन, जिसके अनुसार सब कुछ विस्मृति में जाने के लिए नियत है, उस विपरीत दर्शन की तुलना में कम सत्य हो जो हर चीज के संरक्षण की भविष्यवाणी करता है। उसी अखबार में, जिसमें "पेरिस कॉलम" का नैतिकतावादी किसी घटना, किसी

कलाकृति, और उससे भी अधिक ज़ोरदार ढंग से उस गायिका के बारे में कहता है जिसने अपने "लोकप्रिय समय" का आनंद लिया है: "दस साल बाद इसे कौन याद रखेगा?" क्या पृष्ठ के पीछे अकादमी डेस इंस्क्रिप्शन की रिपोर्ट एक ऐसे तथ्य का बार-बार उल्लेख नहीं करती, जो अपने आप में कम महत्व का है, एक साधारण सी कविता का, जो फ़राओ के युग की है और अब अपने संपूर्ण रूप में फिर से ज्ञात है? क्या यह शायद हमारे इस धरती पर संक्षिप्त जीवन में भी ऐसा ही नहीं है? फिर भी, कुछ वर्षों बाद, एक ऐसे घर में जहाँ एम. डी नॉरपोइस, जो वहाँ भी आते-जाते रहते थे, मुझे सबसे ठोस सहारा प्रतीत होते थे, क्योंकि वे मेरे पिता के मित्र थे, उदार थे, हम सभी का भला चाहते थे, और इसके अलावा, अपने पेशे और परवरिश के कारण विवेकशील थे, जब राजदूत के जाने के बाद, मुझे बताया गया कि उन्होंने बहुत पहले की एक शाम का जिक्र किया था जब उन्होंने वह क्षण देखा था जब मैं उनके हाथों को चूमने ही वाली थी, तो न केवल मेरे बाल जड़ तक लाल हो गए बल्कि मैं यह जानकर स्तब्ध रह गई कि एम. डी नॉरपोइस के मेरे बारे में बोलने का तरीका ही नहीं बल्कि उनकी स्मृति के घटक भी मेरी मान्यताओं से कितने अलग थे: इस गपशप ने मुझे अनुपस्थिति और उपस्थिति, स्मरण और विस्मरण के उन अनगिनत अनुपातों के बारे में बताया जो मानवीय बुद्धि का निर्माण करते हैं; और मैं उतना ही आश्चर्यचकित हुआ जितना उस दिन हुआ था जब मैंने पहली बार मास्पेरो की एक किताब में पढ़ा था कि हमारे पास उन खिलाड़ियों की एक सटीक सूची है जिन्हें असुर्बनिपाल ईसा मसीह के जन्म से एक हजार साल पहले अपने शिकार पर आमंत्रित किया करता था।

"ओह, महोदय," मैंने एम. डी नॉरपोइस को आश्वस्त किया, जब उन्होंने मुझसे कहा कि वे गिल्बर्ट और उनकी माँ को बता देंगे कि मैं उनकी कितनी प्रशंसा करता हूँ, "यदि आप ऐसा करेंगे, यदि आप श्रीमती स्वान

से मेरे बारे में बात करेंगे, तो मेरी पूरी ज़िंदगी भी मेरी कृतज्ञता साबित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी, और वह पूरी ज़िंदगी आपकी सेवा में समर्पित होगी। लेकिन मैं आपको यह बताना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि मैं श्रीमती स्वान को नहीं जानता, और न ही उनसे मेरा कभी परिचय कराया गया है।"

मैंने ये आखिरी शब्द अंतरात्मा की झिझक से जोड़े थे, ताकि ऐसा न लगे कि मैं किसी ऐसे परिचित का बखान कर रहा हूँ जो वास्तव में मेरा नहीं था। लेकिन जब मैं ये शब्द बोल रहा था, तभी मुझे लगा कि ये शब्द अनावश्यक हो गए हैं, क्योंकि मेरे धन्यवाद भाषण की शुरुआत से ही, जिसमें एक ठंडी सी उमंग थी, मैंने राजदूत के चेहरे पर झिझक और असंतोष के भाव देखे, और उनकी आँखों में वो ऊर्ध्वाधर, संकीर्ण, तिरछी नज़र (जैसे किसी ठोस वस्तु के परिप्रेक्ष्य चित्र में उसकी एक सतह की पीछे हटती हुई रेखा) दिखाई दी, वो नज़र जो कोई उस अदृश्य श्रोता को संबोधित करता है जो उस क्षण अपने भीतर होता है जब कोई ऐसी बात कह रहा होता है जिसे उसका दूसरा श्रोता, यानी जिसे वह संबोधित कर रहा है—इस मामले में मैं स्वयं—सुनने के लिए नहीं बना है। मुझे पल भर में अहसास हुआ कि मेरे ये शब्द, जो मेरे भीतर उमड़ रही कृतज्ञता की लहर के आगे भले ही कमजोर लग रहे थे, मुझे ऐसा लग रहा था कि एम. डी नॉरपोइस को छू लेंगे और उनके उस हस्तक्षेप के फैसले की पुष्टि कर देंगे जिससे उन्हें बहुत कम परेशानी होती और मुझे बहुत खुशी मिलती, शायद (मुझे नुकसान पहुँचाने की चाह रखने वाले लोगों द्वारा शैतानी द्वेष से चुने जा सकने वाले सभी शब्दों में से) एकमात्र ऐसे शब्द थे जो उन्हें अपना इरादा छोड़ने पर मजबूर कर सकते थे। दरअसल, जब उन्होंने मुझे बोलते सुना, ठीक उसी क्षण जब कोई अजनबी, जिसके साथ हम राहगीरों के बारे में अपने विचार, जो हमें लगता है कि उसके विचारों से

मिलते-जुलते हैं, बड़े सुखद ढंग से साझा कर रहे होते हैं और जिन्हें हम अशिष्ट मानते हैं, अचानक अपने और हमारे बीच की विकृत खाई को प्रकट कर देता है, लापरवाही से अपनी जेब पर हाथ फेरते हुए कहता है: "कितनी अफ़सोस की बात है, मेरे पास यहाँ रिवॉल्वर नहीं है; मैं उन सबको मार गिराता!" एम. डी नॉरपोइस, जो जानते थे कि श्रीमती स्वान से सिफारिश पाना और उनके घर जाना कितना आसान और सस्ता था, और यह भी कि मेरे लिए, इसके विपरीत, ऐसे एहसान बहुत महंगे थे और इसलिए निस्संदेह बहुत मुश्किल थे, उन्होंने सोचा कि मेरी यह इच्छा, जो देखने में सामान्य लग रही थी, किसी और विचार, किसी संदिग्ध इरादे या किसी पूर्व-मौजूद गलती को छुपा रही होगी, जिसके कारण श्रीमती स्वान को नाराज़ करने के डर से अब तक कोई भी मेरी ओर से उन्हें संदेश पहुंचाने की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं हुआ था। और मैं समझ गया था कि यह एक ऐसा कर्तव्य था जिसे वह कभी पूरा नहीं करेंगे, ताकि वह आने वाले वर्षों तक श्रीमती स्वान से प्रतिदिन मिलते रहें, बिना मेरा नाम लिए। उन्होंने वास्तव में कुछ दिनों बाद उनसे मेरी आवश्यक जानकारी मांगी और मेरे पिता को वह जानकारी मुझ तक पहुंचाने का आदेश दिया। लेकिन उन्होंने यह बताना अपना कर्तव्य नहीं समझा कि वह किसके कहने पर यह जानकारी मांग रहे हैं। इसलिए उसे कभी पता नहीं चलेगा कि मैं एम. डी नॉरपोइस को जानता था और उसके घर आने की इतनी बेसब्री से उम्मीद कर रहा था; और शायद यह उतना बड़ा दुर्भाग्य नहीं था जितना मैंने सोचा था। क्योंकि इन दोनों में से दूसरी बात का पता चलने से पहली बात की प्रभावशीलता में शायद ही कोई खास फर्क पड़ता, जो वैसे भी अनिश्चित थी। ओडेट के मन में अपने जीवन और अपने घर का ख्याल आने से कोई रहस्यमयी हलचल नहीं हुई; जो व्यक्ति उसे जानता था, जो उससे मिलने आया था, वह उसे मेरे जैसा काल्पनिक प्राणी नहीं लगा, जो

स्वान की खिड़कियों पर पत्थर फेंक देता अगर मैं उस पर लिख पाता कि मैं एम. डी नॉरपोइस को जानता हूँ; मुझे पूरा यकीन था कि ऐसा संदेश, भले ही इतने क्रूर तरीके से दिया गया हो, घर की मालकिन की नजरों में मेरी प्रतिष्ठा को कहीं बढ़ा देता, बजाय इसके कि वह मेरे खिलाफ पूर्वाग्रह पैदा करे। लेकिन भले ही मैं यह समझने में सक्षम होता कि एम. डी नॉरपोइस द्वारा पूरा न किया गया मिशन व्यर्थ ही रहता, बल्कि इससे स्वान्स के बीच मेरी साख को भी नुकसान पहुँच सकता था, फिर भी अगर वह अपनी सहमति दे देते, तो भी मुझमें राजदूत को इससे मुक्त करने और इस सुख को त्यागने का साहस नहीं होता—चाहे इसके परिणाम कितने भी घातक क्यों न हों—कि मेरा नाम और मेरी पहचान एक पल के लिए गिलबर्ट के सामने, उसके अनजान जीवन और घर में आ गई।

एम. डी नॉरपोइस के जाने के बाद मेरे पिता ने शाम के अखबार पर एक नज़र डाली; मैंने एक बार फिर बर्मा का सपना देखा। उसे सुनने में मुझे जो आनंद मिला था, उसे पूरा करना ज़रूरी था, खासकर इसलिए क्योंकि वह मेरी उम्मीदों से बहुत कम था; और इसलिए उसने तुरंत उन सभी गुणों को आत्मसात कर लिया जो उसे पोषण दे सकते थे, उदाहरण के लिए वे गुण जिन्हें एम. डी नॉरपोइस ने बर्मा में स्वीकार किया था, और जिन्हें मेरे मन ने एक ही बार में सोख लिया था, जैसे सूखी घास पर पानी डालने पर वह सूख जाती है। फिर मेरे पिता ने मुझे अखबार पकड़ाते हुए एक पैराग्राफ की ओर इशारा किया जो लगभग इस प्रकार था:—

आज दोपहर उत्साही दर्शकों के सामने प्रस्तुत फ्रेड्रे के प्रदर्शन में समाज और कला जगत के प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ-साथ प्रमुख आलोचक भी उपस्थित थे। नायिका की भूमिका निभाने वाली श्रीमती बर्मा के लिए यह प्रदर्शन उनके असाधारण करियर में अब तक की सबसे शानदार

सफलताओं में से एक था। हम इस प्रदर्शन पर आगामी अंक में विस्तार से चर्चा करेंगे, जो वास्तव में रंगमंच के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है; फिलहाल हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि सर्वमान्य विशेषज्ञ इस बात पर एकमत हैं कि इस प्रस्तुति ने फ्रेड्रे की भूमिका को एक नया आयाम दिया है, जो रैसीन की सबसे उत्कृष्ट और चर्चित रचनाओं में से एक है, और यह नाट्य कला की सबसे शुद्ध और उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है जिसे हमारी पीढ़ी को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

तुरंत ही मेरे मन में "नाटकीय कला की सबसे शुद्ध और उत्कृष्ट अभिव्यक्ति" का यह नया विचार आया। यह विचार रंगमंच में मुझे प्राप्त अपूर्ण आनंद से जुड़ गया, उसमें कुछ कमी को पूरा किया, और उनके संयोजन ने कुछ ऐसा उदात्त बना दिया कि मैं मन ही मन चिल्ला उठा: "क्या महान कलाकार है!" निस्संदेह यह तर्क दिया जा सकता है कि मैं पूरी तरह से ईमानदार नहीं था। लेकिन आइए हम उन असंख्य लेखकों को याद रखें जो अपने द्वारा लिखे गए पृष्ठ से असंतुष्ट होकर, यदि वे शैतोब्रियां की प्रतिभा की प्रशंसा में कुछ पढ़ते हैं, या किसी महान कलाकार की भावना को जगाते हैं, जिसके बराबर वे बनना चाहते हैं, उदाहरण के लिए, बीथोवेन की किसी धुन को गुनगुनाते हुए, जिसकी उदासी की तुलना वे अपने गद्य में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे भाव से करते हैं, तो वे प्रतिभा के उस विचार से इतने भर जाते हैं कि वे उसे अपनी रचनाओं में जोड़ देते हैं; जब वे उन पर फिर से विचार करते हैं, तो उन्हें वह प्रकाश नहीं दिखाई देता जिसमें वे पहले दिखाई दिए थे, और अपने काम के मूल्य में विश्वास का जोखिम उठाते हुए, खुद से कहते हैं: "आखिरकार!" इस बात को ध्यान में रखे बिना कि, उनकी अंतिम संतुष्टि को निर्धारित करने वाले समग्र में, उन्होंने शैतोब्रियां के अद्भुत पृष्ठों की स्मृति को शामिल कर लिया है, जिन्हें वे अपने में आत्मसात कर लेते हैं, लेकिन वास्तव में, वे

उनके लेखक नहीं हैं; आइए हम उन असंख्य पुरुषों को याद रखें जो केवल प्रेमिका के विश्वासघात के आधार पर उसके प्यार में विश्वास करते हैं; वे सभी लोग भी, जो मृत्यु के बाद एक अकल्पनीय अस्तित्व की आशा से प्रेरित होते हैं, जब वे दुखी पतियों की तरह अपनी खोई हुई पत्नियों को याद करते हैं, जिनसे उनका प्रेम कभी समाप्त नहीं हुआ, या कलाकारों की तरह मृत्यु के बाद मिलने वाली प्रसिद्धि की आशा से प्रेरित होते हैं; या फिर पूर्ण विनाश की आशा से प्रेरित होते हैं, जो उन्हें तब सांत्वना देती है जब उनके विचार उन कुकर्मों की ओर मुड़ते हैं जिनका प्रायश्चित उन्हें मृत्यु के बाद करना होगा; आइए हम उन यात्रियों को भी याद रखें जो यात्रा की समग्र सुंदरता से मंत्रमुग्ध होकर घर लौटते हैं, जबकि दिन-प्रतिदिन उन्हें यात्रा की केवल उबाऊ घटनाओं का ही अनुभव होता है; और फिर आइए हम यह विचार करें कि क्या हमारे मन के एकांत में हमारे विचारों द्वारा संचालित सामूहिक जीवन में, हमें सबसे अधिक प्रसन्न करने वाला कोई एक विचार ऐसा है जिसने पहले एक परजीवी की तरह किसी परजीवी से संपर्क करके, अपने भीतर मौजूद शक्ति का अधिकांश भाग प्राप्त नहीं किया है।

मेरी माँ इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं थीं कि मेरे पिता ने मेरे लिए 'करियर' के बारे में सोचना बंद कर दिया था। मुझे लगता है कि, सबसे पहले इस बात से चिंतित कि जीवन का एक निश्चित नियम मेरे नर्वस सिस्टम की विलक्षणता को नियंत्रित करे, उन्हें इस बात का उतना दुख नहीं था कि मैं कूटनीति छोड़ रहा हूँ, जितना कि साहित्य के प्रति मेरे समर्पण का। लेकिन "उसे छोड़ दो!" मेरे पिता ने विरोध किया; "जरूरी बात यह है कि इंसान को अपने काम में आनंद मिलना चाहिए। वह अब बच्चा नहीं है। वह अब अच्छी तरह जानता है कि उसे क्या पसंद है, उसके बदलने की कोई संभावना नहीं है, और वह खुद यह तय करने में पूरी तरह

सक्षम है कि जीवन में उसे क्या खुशी देगा।" उस शाम, जब मैं उस समय का इंतजार कर रहा था जब मुझे मिली स्वतंत्रता के कारण मैं जीवन में खुश होना शुरू करूँ या न करूँ, मेरे पिता के शब्दों ने मुझे बहुत बेचैन कर दिया। जब भी उनकी अप्रत्याशित दयालुता प्रकट होती थी, तो मेरे मन में उनकी दाढ़ी के ऊपर, उनके दमकते गालों को चूमने की इतनी तीव्र इच्छा जागृत होती थी कि यदि मैं उस इच्छा को पूरा नहीं कर पाती थी, तो केवल इसलिए कि मुझे उन्हें नाराज़ करने का डर रहता था। और उस दिन, जैसे कोई लेखक अपनी ही चिंतन-मनन की उपज को देखकर चिंतित हो जाता है, जो उसे अपने आप से अलग न होने के कारण अधिक मूल्यवान नहीं लगती, लेकिन प्रकाशक को एक विशेष प्रकार का कागज़ चुनने या शायद उससे भी बेहतर फ़ॉन्ट का उपयोग करने के लिए बाध्य करती है, मैंने स्वयं से पूछा कि क्या लिखने की मेरी इच्छा इतनी महत्वपूर्ण थी कि मेरे पिता द्वारा इतनी उदारता दिखाने को उचित ठहराया जा सके। लेकिन इसके अलावा, जब उन्होंने मेरी प्रवृत्तियों के बारे में कहा कि वे अब परिवर्तन के योग्य नहीं हैं, तो उन्होंने मेरे मन में दो भयानक संदेह जगा दिए। पहली आशंका यह थी कि (उस समय जब मैं हर दिन खुद को एक ऐसे जीवन की दहलीज पर खड़ा पाता था जो अभी भी अक्षुण्ण था और अगली सुबह तक अपना सफर शुरू नहीं करेगा) मेरा अस्तित्व पहले ही शुरू हो चुका था, और इसके अलावा, जो आगे आने वाला था वह बीते हुए समय से किसी भी हद तक अलग नहीं होगा। दूसरी आशंका, जो वास्तव में पहली आशंका का ही एक रूप थी, यह थी कि मैं समय के दायरे से बाहर कहीं स्थित नहीं था, बल्कि उसके नियमों के अधीन था, ठीक वैसे ही जैसे उपन्यासों के पात्र होते हैं, जिनके जीवन के बारे में मैं कॉम्ब्रे में अपने बेंत के बने चौकीनुमा कमरे में बैठकर पढ़ता था और जो मुझे बहुत उदास कर देते थे। सैद्धांतिक रूप से हम जानते हैं

कि पृथ्वी घूमती है, लेकिन व्यवहार में हम इसे महसूस नहीं कर पाते, जिस जमीन पर हम चलते हैं वह हिलती हुई प्रतीत नहीं होती, और हम निश्चिंत होकर जी सकते हैं। जीवन में समय के साथ भी ऐसा ही होता है। और कहानी के प्रवाह को सजीव बनाने के लिए उपन्यासकारों को पेंडुलम की गति को तेजी से बढ़ाकर पाठक को कुछ ही मिनटों में दस, बीस या तीस वर्षों के अंतराल में ले जाना पड़ता है। एक पृष्ठ के शीर्ष पर हम आशा से भरे एक प्रेमी को पाते हैं; अगले पृष्ठ के अंत में हम उससे फिर मिलते हैं, अस्सी वर्ष का एक बूढ़ा, झुका हुआ व्यक्ति, जो एक अनाथालय के आंगन में अपनी दैनिक सैर पर दर्द से कराहते हुए चल रहा है, कही गई बातों का मुश्किल से ही जवाब दे रहा है, अतीत से बेखबर। मेरे बारे में ये कहते हुए, "वह अब बच्चा नहीं रहा," "उसकी पसंद अब नहीं बदलेगी," इत्यादि, मेरे पिता ने मुझे समय के संदर्भ में मेरी स्थिति का अचानक एहसास करा दिया और मुझे उसी तरह की उदासी में डाल दिया, मानो मैं अभी तक उस दुर्बल बूढ़े पेंशनभोगी की जगह उन नायकों में से एक होता, जिनके बारे में लेखक, एक बेहद कष्टदायक उदासीनता भरे लहजे में, पुस्तक के अंत में हमसे कहता है: "वह अब गाँव से बहुत कम ही आता है। उसने अंततः अपने जीवन के अंतिम दिन वहीं बिताने का फैसला कर लिया है।"

इसी बीच, हमारे मेहमान की आलोचना करने की हमारी इच्छा को रोकने के लिए, मेरे पिता ने मेरी माँ से कहा: "सच कहूँ तो, आज शाम बूढ़ा नॉरपोइस बिल्कुल 'आम' जैसा व्यवहार कर रहा था, है ना? जब उसने कहा कि कॉम्टे डी पेरिस से कोई सवाल पूछना 'उचित' नहीं होता, तो मुझे डर था कि तुम हँस पड़ोगी।"

“बिल्कुल नहीं!” मेरी माँ ने उत्तर दिया। “मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि उनकी प्रतिष्ठा और उम्र के बावजूद, वे इस तरह की सादगी बनाए

रखते हैं, जो वास्तव में स्पष्टवादिता और अच्छे संस्कार का प्रतीक है।"

"मुझे तो ऐसा ही लगता है! इससे उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और विवेकशीलता में कोई कमी नहीं आती; मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, मैंने उन्हें आयोग में देखा था, याद है ना, वहाँ वे यहाँ से बिल्कुल अलग थे," मेरे पिता ने कहा, जो यह देखकर प्रसन्न थे कि माँ एम. डी नॉरपोइस की सराहना करती हैं, और उन्हें यह समझाने के लिए उत्सुक थे कि वे उनकी सोच से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं, क्योंकि एक मिलनसार स्वभाव वाला व्यक्ति मित्र के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने में उतना ही आनंद लेता है जितना कि एक शरारती स्वभाव वाला व्यक्ति उन्हें कम आंकने में लेता है। "उन्होंने क्या कहा था, फिर से बताइए—'राजकुमारों के बारे में कोई कभी नहीं जान सकता...'...?"

"हां, यही बात थी। मैंने इसे उसी समय देखा था; यह बहुत ही बढ़िया था। आप देख सकते हैं कि उन्हें जीवन का व्यापक अनुभव है।"

"सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि वह स्वान्स के साथ भोजन कर रहा था, और ऐसा लगता है कि उसे वहां काफी सम्मानित लोग, यहां तक कि अधिकारी भी मिले। आखिर श्रीमती स्वान ने उन्हें कैसे पकड़ लिया?"

"क्या आपने ध्यान दिया कि उसने कितने दुर्भावनापूर्ण तरीके से कहा: 'यह एक ऐसा घर है जो विशेष रूप से सज्जनों को आकर्षित करता है!'?"

और उनमें से प्रत्येक ने एम. डी नॉरपोइस के इन शब्दों को उसी तरह दोहराने का प्रयास किया, जैसे वे ब्रेसांट की आवाज़ या थिरोन की 'ल'एवेंटुरिएर' या 'जेंड्रे डी एम. पोइरियर' में उनके उच्चारण की लय को पकड़ने का प्रयास करते। लेकिन उनके सभी कथनों में से कोई भी इतना प्रिय नहीं था जितना कि फ्रांस्वा को, जो वर्षों बाद भी, अगर हम उन्हें याद दिलाते कि राजदूत ने उन्हें 'सर्वोत्तम रसोइया' कहा था, तो अपनी हंसी

नहीं रोक पाती थीं। यह प्रशंसा मेरी माँ ने स्वयं जाकर उन्हें दी थी, ठीक वैसे ही जैसे कोई युद्ध मंत्री भव्य समीक्षा के बाद किसी आगंतुक सम्राट द्वारा भेजे गए बधाई संदेशों को प्रकाशित करता है। संयोगवश, मैं अपनी माँ से पहले रसोई में पहुँच गया था। क्योंकि मैंने फ्रांस्वा से, जो युद्ध विरोधी होते हुए भी क्रूर थीं, यह बात मनवा ली थी कि वह उस खरगोश को कोई कष्ट न पहुँचाएँ जिसे उन्हें मारना था, और मुझे अभी तक उसकी मृत्यु की कोई खबर नहीं मिली थी। फ्रांस्वा ने मुझे आश्वस्त किया कि उसकी मृत्यु अत्यंत शांतिपूर्वक और अत्यंत शीघ्र हुई। "मैंने ऐसा जानवर पहले कभी नहीं देखा; वह बिना एक शब्द बोले मर गया; ऐसा लगता मानो वह गूंगा हो।" जानवरों की भाषा का मुझे बहुत कम ज्ञान था, इसलिए मैंने सुझाव दिया कि शायद खरगोश मुर्गी की तरह आवाज नहीं निकालता होगा। "बस देखते रहो," फ्रांस्वा ने मेरी अज्ञानता पर तिरस्कार करते हुए कहा, "अगर खरगोश मुर्गियों जितना नहीं रोते, तो वे कहीं ज्यादा शोर मचाते हैं।" उसने एम. डी नॉरपोइस की प्रशंसा को उसी गर्वित सरलता, प्रसन्नता और (कुछ क्षण के लिए ही सही) बुद्धिमत्तापूर्ण भाव से स्वीकार किया, जैसे कोई कलाकार अपनी कला की प्रशंसा सुनकर करता है। जब वह पहली बार हमारे पास आई थी, तो मेरी माँ ने उसे कई बड़े रेस्तरां में भेजा था ताकि वह देख सके कि वहाँ खाना कैसे पकाया जाता है। उस शाम मुझे भी वही आनंद आया जब मैंने उसे उनमें से सबसे प्रसिद्ध लोगों को महज रसोई कहकर खारिज करते सुना, जैसा मुझे बहुत पहले आया था, जब मुझे नाट्य कलाकारों के बारे में पता चला कि उनकी योग्यता का क्रम उनकी प्रतिष्ठा के क्रम से बिलकुल मेल नहीं खाता। मेरी माँ ने उससे कहा, "राजदूत ने मुझे आश्वासन दिया है कि वह ऐसी कोई जगह नहीं जानते जहाँ उन्हें तुम्हारे जैसी बढ़िया ठंडी गोमांस और सूफ़्ले मिल सकें।" फ्रांकोइस ने विनम्रता और सच्चाई का सम्मान करते हुए

सहमति जताई, लेकिन 'राजदूत' उपाधि से वह बिल्कुल भी प्रभावित नहीं दिखीं; उन्होंने एम. डी नॉरपोइस के बारे में, उस मित्रतापूर्ण भाव से कहा जो उन्हें एक रसोइया समझ लेने वाले व्यक्ति के लिए उचित है: "वह मेरी तरह ही एक नेक और नेक इंसान हैं।" उसे सचमुच उम्मीद थी कि आते ही वह उसे देख लेगी, लेकिन यह जानते हुए कि माँ को दरवाजों और खिड़कियों के पीछे उनका खड़े रहना पसंद नहीं था, और यह सोचकर कि माँ को दूसरे नौकरों या चौकीदार से पता चल जाएगा कि वह पहरा दे रही थी (क्योंकि फ्रांस्वा को हर जगह केवल "ईर्ष्या" और "चुगली" ही दिखाई देती थी, जो उसकी कल्पना में उसी तरह भयावह और अंतहीन भूमिका निभाती थी जैसे हममें से कुछ लोगों के लिए जेसुइट्स या यहूदियों की साज़िशें), उसने रसोई की खिड़की से झाँककर ही संतोष कर लिया, "ताकि मैडम से कोई कहा-सुनी न हो," और एम. डी नॉरपोइस के क्षणिक रूप के नीचे उसने "सोचा कि वह महाशय लेग्रैंड हैं," क्योंकि वह उन्हें "फुर्ती" कहती थी और हालाँकि उनमें कोई समानता नहीं थी। "अच्छा," मेरी माँ ने पूछा, "और तुम यह कैसे समझाओगी कि तुम्हारे जैसा जेली कोई और नहीं बना सकता - जब तुम चाहो?" "मैं सचमुच नहीं कह सकती कि यह कैसे होता है," फ्रांस्वा ने उत्तर दिया, जिसने क्रिया 'आना' (कम से कम कुछ अर्थों में) और क्रिया 'बनना' के बीच कोई स्पष्ट सीमा रेखा नहीं खींची थी। वह सच बोल रही थी, भले ही पूरा सच न हो, क्योंकि वह अपनी जेली या क्रीम की श्रेष्ठता के रहस्य को उजागर करने में उतनी ही सक्षम या इच्छुक थी जितनी कि कोई फैशन लीडर अपने श्रृंगार के रहस्य या कोई महान गायिका अपने गीत के रहस्य। उनके स्पष्टीकरण हमें बहुत कम बताते हैं; यही हाल हमारे रसोइए द्वारा दी गई रेसिपी का भी था। "वे इसे बहुत जल्दीबाजी में बनाते हैं," उसने बड़े-बड़े रेस्टोरेंटों का जिक्र करते हुए कहा, "और फिर सब कुछ ठीक से नहीं पकता। आप

चाहते हैं कि बीफ़ स्पंज की तरह नरम हो जाए, तभी वह सारा रस आखिरी बूंद तक सोख लेगा। फिर भी, एक ऐसा कैफ़े था जहाँ मुझे लगा कि उन्हें खाना पकाने की थोड़ी बहुत जानकारी है। मैं यह तो नहीं कहूँगी कि वह मुझे बिल्कुल पसंद आया, लेकिन खाना बहुत बढ़िया बना था, और सूफ़्ले में खूब सारी क्रीम थी।" "क्या तुम्हारा मतलब हेनरीज़ से है?" मेरे पिता (जो अब हमारे साथ आ गए थे) ने पूछा, क्योंकि उन्हें प्लेस गैलन का वह रेस्टोरेंट बहुत पसंद था जहाँ वे नियमित रूप से क्लब डिनर के लिए जाते थे। "अरे नहीं!" फ़्रांस्वा ने अपनी गहरी घृणा को छुपाते हुए विनम्रता से कहा। "मेरा मतलब एक छोटे से रेस्टोरेंट से था। उस हेनरीज़ में सब कुछ बहुत अच्छा है, बेशक, लेकिन वह रेस्टोरेंट नहीं है, वह तो एक तरह का सूप-किचन है।" "तो वेबर का?" "अरे नहीं, महोदय, मेरा मतलब एक अच्छे रेस्तरां से था। वेबर का, वो रू रॉयल में है; वो रेस्तरां नहीं, शराबखाना है। मुझे नहीं पता कि वहाँ जो खाना परोसा जाता है, वो भी परोसा जाता है या नहीं। मुझे लगता है कि वहाँ मेज़पोश भी नहीं होते; वे बस खाना आपके सामने ऐसे ही रख देते हैं, मानो कहो, खाओ या छोड़ दो।" "सिरो का?" "अरे! वहाँ तो खाना दुनिया की औरतें बनाती हैं।" (फ्रांकोइस के लिए 'दुनिया' का मतलब था नीच दुनिया।) "हे भगवान! उन्हें तो लड़कों को लुभाने के लिए इसकी ज़रूरत है।" हम देख सकते थे कि अपनी सादगी के बावजूद, फ्रांकोइस अपने पेशे की मशहूर हस्तियों के लिए सबसे ईर्ष्यालु, सबसे दीवानी अभिनेत्रियों से भी ज़्यादा खतरनाक 'साथी' थी। फिर भी, हमें लगा कि कला के प्रति उसका गहरा लगाव और परंपरा के प्रति सम्मान था। क्योंकि वह आगे बोली: "नहीं, मेरा मतलब एक ऐसे रेस्तरां से है जहाँ देखने में ऐसा लगता था मानो वे एक छोटे से परिवार की तरह अच्छे से खाना परोसते हों। वह एक प्रतिष्ठित जगह भी है। वहाँ काफी ग्राहक आते हैं। ओह, वहाँ तो खूब पैसा आता है।"

फ्रांकोइस, एक अर्थशास्त्री होने के नाते, पैसों में हिसाब लगा रही थी, जबकि आपका प्लंजर सोने में हिसाब लगाता। "मैडम उस जगह को अच्छी तरह जानती हैं, मुख्य बुलेवार्ड के साथ दाईं ओर थोड़ा पीछे।" जिस रेस्तरां के बारे में वह इतने गर्व और सौहार्दपूर्ण सहनशीलता के साथ बात कर रही थी, वह कैफे एंग्लिस निकला।

नए साल का दिन आते ही, सबसे पहले मैं माँ के साथ परिवार के सदस्यों से मिलने गया। माँ ने मुझे थकाने से बचने के लिए (पिताजी द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रम की सहायता से) पहले से ही रिश्तेदारों के बीच के ज़िलों के अनुसार मुलाकातों की योजना बना रखी थी। लेकिन जैसे ही हम उस दूर की चचेरी बहन के ड्राइंग रूम में दाखिल हुए, जिसके घर के पास होने के कारण उसे पहले मिलने का मौका दिया गया था, मेरी माँ यह देखकर दंग रह गईं कि वहाँ मेरे सबसे संवेदनशील चाचा का जिगरी दोस्त खड़ा था, जिसके हाथ में मैरॉन्स ग्लैसेस या डेगुइसेस का उपहार था। वह तुरंत जाकर उन्हें बताएगा कि हमने उनके साथ अपनी मुलाकातों की शुरुआत नहीं की है। और वह चाचा निश्चित रूप से आहत होंगे; उन्हें तो यह बिल्कुल स्वाभाविक लगता कि हम मेडेलीन से जार्डिन डेस प्लांट्स जाएँ, जहाँ वे रहते थे, और फिर सेंट-ऑगस्टिन में रुकते हुए रू डे ल'इकोल डे मेडिसिन की ओर बढ़ें।

हमारी मुलाक़ातें समाप्त हुईं (मेरी दादी ने हमें उनसे मिलने जाने की ज़िम्मेदारी से मुक्त कर दिया था, क्योंकि हमें उस शाम वहीं भोजन करना था), मैं दौड़कर शैंप्स-एलिसी तक गई ताकि हमारे खास दुकानदार को वह पत्र दे सकूँ, जिसे मैंने उस दिन नए साल पर उसे भेजने का फैसला किया था, जिस दिन मेरी सहेली ने मुझे इतनी चिंता में डाल दिया था, और जिसमें मैंने उसे बताया था कि हमारी पुरानी दोस्ती बीते साल के साथ मिट रही है, कि मैं अब अपने पुराने दुखों और निराशाओं को भूल

जाऊँगी, और इस 1 जनवरी से हम एक नई दोस्ती को मज़बूत करने जा रहे हैं, इतनी पक्की कि कोई भी उसे तोड़ नहीं सकता, इतनी अद्भुत कि मुझे उम्मीद है कि गिल्बर्ट इसे इसकी सारी सुंदरता में संरक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करेगी, और मुझे समय रहते चेतावनी देगी, जैसा कि मैंने उसे चेतावनी देने का वादा किया था, अगर हम दोनों में से किसी को भी ऐसा कोई खतरा महसूस हो जो इसे खतरे में डाल सकता है। घर लौटते समय फ्रांस्वा ने मुझे रू रॉयल के कोने पर एक खुली दुकान के सामने रुकने के लिए कहा, जहाँ से उसने अपने उपहारों के लिए पायस IX और रास्पेल की तस्वीरें चुनीं, जबकि मैंने अपने लिए बर्मा की एक तस्वीर खरीदी। उस कलाकार के प्रति अनगिनत प्रशंसा ने उसके चेहरे को लगभग निर्धन बना दिया था, जो अपरिवर्तनीय और नाजुक था, ठीक वैसे ही जैसे उन लोगों के वस्त्र होते हैं जिनके पास कोई बदलाव नहीं होता। यह चेहरा, जिस पर उसे लगातार केवल अपने ऊपरी होंठ का छोटा सा डिंपल, अपनी भौहों की बनावट और कुछ अन्य शारीरिक विशेषताओं को ही दिखाना पड़ता था, जो हमेशा एक जैसी रहती थीं और जरूरत पड़ने पर जलने या चोट लगने के खतरे में थीं। इसके अलावा, यह चेहरा अपने आप में मुझे सुंदर नहीं लगा होगा, लेकिन इसने मुझे यह विचार दिया, और परिणामस्वरूप इसे चूमने की इच्छा हुई, क्योंकि इस पर बहुत सारे चुंबन हुए होंगे, जिनके लिए एल्बम के पन्ने से यह अभी भी मोहक लग रहा था, अपनी उस चंचल कोमल निगाह और बनावटी मासूम मुस्कान के साथ। हमारी बर्मा ने वास्तव में कई नौजवानों के लिए उन लालसाओं को महसूस किया होगा जिन्हें उसने फेड्रा के व्यक्तित्व की आड़ में स्वीकार किया था, ऐसी लालसाएँ जिनकी पूर्ति के लिए सब कुछ, यहाँ तक कि उसके नाम का आकर्षण भी, जिसने उसकी सुंदरता को बढ़ाया और उसकी जवानी को लंबा किया, उसके लिए संतुष्टि को इतना आसान बना

देता था। रात ढल रही थी; मैं नाटक के विज्ञापनों के एक स्तंभ के सामने रुका, जिस पर उस नाटक का विज्ञापन लगा था जिसमें उसे 1 जनवरी को अभिनय करना था। एक नम और कोमल हवा चल रही थी। यह दिन और साल का वह समय था जिसे मैं जानता था; मुझे अचानक एक पूर्वाभास हुआ कि नव वर्ष का दिन बाकी दिनों से अलग नहीं है, यह किसी नई दुनिया का पहला दिन नहीं है, जिसमें शायद, संयोगवश, जो कभी हुआ ही नहीं था, बल्कि अभी भी बरकरार है, मैं गिलबर्ट से फिर से मिल सकूँ, जैसे दुनिया की रचना के समय, मानो अतीत का कोई अस्तित्व ही न रह गया हो, मानो वे संकेत जो मैं अपने भविष्य के मार्गदर्शन के लिए सहेज सकता था, वे निराशाएँ जो उसने कभी-कभी मुझे दी थीं, मिट गई हों; एक नई दुनिया जिसमें पुरानी दुनिया से कुछ भी शेष न रहे—सिवाय एक चीज के, मेरी यह इच्छा कि गिलबर्ट मुझसे प्यार करे। मुझे एहसास हुआ कि अगर मेरा दिल अपने चारों ओर एक ऐसे ब्रह्मांड के पुनर्निर्माण की आशा कर रहा है जिसने उसे पहले संतुष्ट नहीं किया था, तो इसका कारण यह था कि मेरा दिल नहीं बदला था, और मैंने खुद से कहा कि गिलबर्ट का दिल भी क्यों बदला होगा, इसका कोई कारण नहीं है; मुझे लगा कि यह नई दोस्ती भी वैसी ही है, जैसे उनके पूर्ववर्तियों और उन नए वर्षों के बीच कोई सीमा रेखा नहीं है, जिन्हें हम बिना उन तक पहुँचे और उन्हें बदले, अनजाने में ही विशिष्ट नाम दे देते हैं। मैं चाहूँ तो इस नए साल को गिल्बर्ट को समर्पित कर सकता हूँ, और जैसे कोई प्रकृति के अंध नियमों पर धार्मिक व्यवस्था स्थापित करता है, वैसे ही नए साल के दिन को उस विशेष छवि से अंकित करने का प्रयास कर सकता हूँ जो मैंने उसके बारे में बनाई थी; लेकिन व्यर्थ, मुझे लगा कि वह इस बात से अनभिज्ञ है कि लोग उसे नए साल का दिन कहते हैं, कि वह एक सर्द शाम में उसी तरह गुजर रहा है जो मेरे लिए नई नहीं है; उन

पहचाने हुए नाटकपत्रों के स्तंभ के चारों ओर बहने वाली कोमल हवा में, मैंने शाश्वत, सार्वभौमिक सार, परिचित नमी, पुराने दिनों और वर्षों की अनसुनी तरलता को फिर से प्रकट होते हुए महसूस किया।

मैं घर लौट आया। मैंने बुढ़ापे का वो दिन बिताया, जो अपने छोटों से इस मामले में अलग होता है, इसलिए नहीं कि लोग उन्हें तोहफ़े देना बंद कर देते हैं, बल्कि इसलिए कि उनका खुद का नए साल पर विश्वास खत्म हो जाता है। मुझे तोहफ़े तो मिले थे, पर वो तोहफ़ा नहीं जो मुझे सबसे ज़्यादा खुशी दे सकता था, यानी गिल्बर्ट का एक पत्र। फिर भी मैं जवान ही था, क्योंकि मैं उसे एक पत्र लिख पाया था, जिसके ज़रिए मैंने अपने प्रेम और तड़प के अकेले सपनों को बयां करके, उसके मन में भी वैसे ही सपने जगाने की उम्मीद की थी। बूढ़े हो चुके लोगों का दुख इस बात में है कि वे अब ऐसे पत्र लिखने के बारे में सोचते भी नहीं, क्योंकि उनके अनुभव ने उन्हें ये व्यर्थता दिखा दी है।

बिस्तर पर लेटने के बाद, सड़क का शोर, जो इस खुशनुमा शाम में ज़रूरत से ज़्यादा देर तक बना रहा, मुझे जगाए रखा। मैं उन सभी लोगों के बारे में सोच रहा था जो रात को आनंद में बिता रहे थे, उस प्रेमी के बारे में, उस टोली के बारे में, या शायद उन अय्याशों के बारे में जो आज शाम के नाटक के बाद बरमा से स्टेज के दरवाज़े पर मिलने जा रहे थे। उस विचार से उपजे मेरे बेचैनी भरे रात भर के जागरण को शांत करने के लिए भी मैं खुद को यह यकीन नहीं दिला पा रहा था कि कहीं बरमा प्रेम के बारे में तो नहीं सोच रही थी, क्योंकि जो पंक्तियाँ वह सुना रही थी, जिनका उसने लंबे समय तक और सावधानीपूर्वक अभ्यास किया था, हर पल उसे याद दिला रही थीं कि प्रेम एक अद्भुत चीज़ है, जैसा कि वह पहले से ही जानती थी, और इतनी अच्छी तरह जानती थी कि उसने प्रेम की जानी-पहचानी पीड़ाओं को—एक नई तीव्रता और एक अनपेक्षित मिठास के

साथ—अपने चकित दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया; और फिर भी उनमें से हर एक ने स्वयं उन पीड़ाओं को महसूस किया था। मैंने एक बार फिर मोमबत्ती जलाई, ताकि एक बार फिर उसका चेहरा देख सकूँ। यह सोचकर कि निस्संदेह उसी क्षण वह उन पुरुषों द्वारा दुलार की जा रही थी जिन्हें मैं बेरमा को सौंपने और उससे अलौकिक लेकिन अस्पष्ट आनंद प्राप्त करने से नहीं रोक सकी, मेरे भीतर कामुकता से कहीं अधिक क्रूरता का भाव उत्पन्न हुआ। एक ऐसी तड़प जो तुरंत ही एक सींग की आवाज़ से और भी तीव्र हो गई, जैसा कि उपवास के उत्सव की रातों और अक्सर अन्य सार्वजनिक अवकाशों पर सुनाई देता है। उस समय, उसमें किसी प्रकार की कविता का अभाव होता है, और खिलौने के स्क्वीकर से आने वाली वह आवाज़ "शाम को जंगल की गहराई में" की आवाज़ से कहीं अधिक उदास करने वाली लगती है। उस क्षण, गिलबर्ट का संदेश शायद वह नहीं होता जो मैं चाहती। हमारी इच्छाएँ एक-दूसरे के मार्ग को काटती हैं, और इस उलझे हुए जीवन में ऐसा बहुत कम ही होता है कि सौभाग्य का कोई क्षण उस इच्छा के साथ मेल खाए जो उसके लिए व्याकुल थी।

अच्छे दिनों में मैं चैंप्स-एलिसी जाया करता रहता था, उन गलियों से गुज़रता था जहाँ के स्टाइलिश गुलाबी घर (क्योंकि उस समय जलरंग प्रदर्शनियाँ खूब चलन में थीं) एक हल्की-सी हवा में नहाए हुए से लगते थे। यह कहना गलत होगा कि उन दिनों गैब्रियल के महल मुझे आस-पास के घरों से ज़्यादा सुंदर या किसी दूसरे युग के लगते थे। मुझे पैलेस डी ल'इंडस्ट्री में नहीं तो कम से कम ट्रोकाडेरो में ज़्यादा शैली और प्राचीनता का आभास होता था। बेचैन नींद में डूबा हुआ, मेरा किशोरावस्था का दौर उस पूरे इलाके को एक ही नज़रिए से समेटे हुए था, जहाँ मैं घूम रहा होता था, और मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि रू रॉयल में अठारहवीं सदी की कोई इमारत हो सकती है, ठीक वैसे ही जैसे मुझे यह जानकर

हैरानी होती कि लुई XIV के ज़माने की शान, पोर्ट-सेंट-मार्टिन और पोर्ट-सेंट-डेनिस, उन गंदे इलाकों में बनी हाल की इमारतों के समकालीन नहीं थीं, जिनके नाम उन्हीं के नाम पर रखे गए थे। एक बार गैब्रियल के महलों में से केवल एक ने मुझे एक पल से अधिक समय तक रुकने पर मजबूर किया; ऐसा इसलिए था क्योंकि रात होने के कारण, चांदनी से क्षीण हो चुके उसके स्तंभ गत्ते से तराशे हुए प्रतीत हो रहे थे, और मुझे ओपेरा 'ओर्फी ऑक्स एनफर्स' के एक दृश्य की याद दिलाकर पहली बार मुझे सुंदरता का अहसास कराया।

इस बीच गिलबर्ट कभी शैंप्स-एलिसी नहीं आई। फिर भी, उससे मिलना मेरे लिए बहुत ज़रूरी था, क्योंकि मुझे उसकी शक्ल तक याद नहीं थी। जिस जिज्ञासु, चिंतित और बारीकी से हम अपने प्रिय को देखते हैं, कल मिलने की उम्मीद जगाने वाले शब्द की हमारी उत्सुकता, और जब तक वह शब्द बोला नहीं जाता, तब तक खुशी और निराशा की हमारी मिली-जुली कल्पनाएँ, ये सब मिलकर प्रिय के सामने हमारी दृष्टि को इतना अस्थिर बना देते हैं कि हम उसकी स्पष्ट छवि नहीं बना पाते। शायद, सभी इंद्रियों की वह सक्रियता जो केवल दृश्य रूप से ही उसके पीछे छिपी सच्चाई को जानने का प्रयास करती है, जीवित व्यक्ति के हजारों रूपों, बदलती सुगंध और हलचलों के प्रति अति-उदासीन हो जाती है, जिसे हम आमतौर पर, जब हम प्रेम में नहीं होते, तो एक ही स्थिर स्थिति में मानते हैं। जबकि प्रिय व्यक्ति स्थिर नहीं रहता; और उसकी हमारी मानसिक छवियाँ हमेशा धुंधली होती हैं। गिलबर्ट के चेहरे की बनावट मुझे ठीक से नहीं पता थी, सिवाय उन दिव्य क्षणों के जब वह मुझे अपने चेहरे के भाव दिखाती थी; मुझे उसकी मुस्कान के सिवा कुछ याद नहीं था। और उस प्रिय चेहरे को दोबारा न देख पाने के कारण, चाहे मैं उसे फिर से याद करने की कितनी भी कोशिश कर लूँ, मुझे यह देखकर घृणा होती थी कि

मेरी स्मृति में लकड़ी के घोड़ों वाले आदमी और जौ-चीनी बेचने वाली औरत के अर्थहीन, भावहीन चेहरे अत्यंत बारीकी से उकेरे गए हैं; ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति जिसने अपने किसी प्रिय मित्र को खो दिया हो और जिसे वह सोते समय भी न देख पाए, अपने सपनों में अनगिनत असहनीय प्राणियों को देखकर परेशान हो जाता है, जिन्हें जागृत अवस्था में जानना ही काफी होता है। अपने शोक के पात्र की कोई छवि न बना पाने के कारण वे लगभग यह कहने लगते हैं कि उन्हें कोई शोक नहीं है। और मैं इस बात को मानने से बहुत दूर नहीं था कि, चूंकि मैं गिलबर्ट के चेहरे के भावों को याद नहीं कर पा रहा था, इसलिए मैं गिलबर्ट को ही भूल गया था और अब उससे प्रेम नहीं करता था। अंततः वह लगभग हर दिन वहाँ खेलने लौट आती थी, मेरे सामने नए सुखों की कामना जगाती थी, कल के लिए उससे माँगने की इच्छा पैदा करती थी, और इस अर्थ में, उसके लिए मेरा प्यार हर दिन एक नया प्यार बन जाता था। लेकिन एक घटना ने एक बार फिर, और अचानक, उस तरीके को बदल दिया जिससे हर दोपहर लगभग दो बजे मेरे प्रेम का सवाल मेरे सामने आता था। क्या एम. स्वान ने वह पत्र रोक लिया था जो मैंने उनकी बेटी को लिखा था, या गिलबर्टे घटना के बहुत बाद मुझसे कबूल कर रही थी, ताकि मैं भविष्य में अधिक सतर्क रहूँ, एक ऐसी स्थिति जो पहले से ही स्थापित थी? जब मैं उसे बता रहा था कि मैं उसके माता-पिता की कितनी प्रशंसा करता हूँ, तो उसने वही अस्पष्ट, संकोच से भरा और राज़ छुपाए हुए भाव धारण कर लिया, जो वह हमेशा तब अपनाती थी जब कोई उससे उसकी योजनाओं, सैर, यात्रा, मुलाकातों के बारे में बात करता था—फिर अचानक बोली: "तुम्हें पता है, वे तुम्हें बर्दाश्त नहीं कर सकते!" और, जैसे कोई जलपरी हो, मुझसे दूर हटकर ज़ोर से हँस पड़ी। अक्सर उसकी हंसी, उसके शब्दों से बेमेल, संगीत की तरह किसी दूसरे तल पर एक अदृश्य सतह को

उकेरती हुई प्रतीत होती थी। श्रीमान और श्रीमती स्वान ने गिलबर्ट से मेरे साथ खेलना छोड़ने की अपेक्षा नहीं की, लेकिन गिलबर्ट सोचती थी कि अगर हमने कभी खेलना शुरू ही न किया होता तो भी उन्हें उतनी ही खुशी होती। वे हमारे रिश्तेदारों को अच्छी नज़र से नहीं देखते थे; वे मुझे कम नैतिक स्तर का युवक मानते थे और कल्पना करते थे कि उनकी बेटी पर मेरा प्रभाव बुरा ही होगा। स्वान दंपति जिस तरह के बेईमान युवक से मेरी समानता समझते थे, मैंने उसकी कल्पना इस प्रकार की की कि वह अपनी प्रेमिका के माता-पिता से घृणा करता है, उनके सामने उनकी चापलूसी करता है, लेकिन जब वह उसके साथ अकेला होता है तो उनका मज़ाक उड़ाता है, उसे उनकी अवज्ञा करने के लिए उकसाता है और एक बार अपना काम पूरा कर लेने के बाद उन्हें फिर कभी उस पर नज़र भी नहीं डालने देता। इन विशेषताओं के साथ (यद्यपि ये वे विशेषताएं नहीं हैं जिनके तहत सबसे नीच बदमाश भी खुद को पहचानते हैं) मेरे दिल ने स्वान के प्रति उन भावनाओं का कितनी तीव्रता से विरोध किया जो वास्तव में उसे प्रेरित कर रही थीं, इसके विपरीत, इतनी तीव्र कि मुझे कभी संदेह नहीं हुआ कि यदि उसे मेरे बारे में जरा सा भी संदेह होता, तो वह मुझे न्यायिक त्रुटि मानकर दोषी ठहराने पर पछताता। उसके बारे में जो कुछ भी मैं महसूस करती थी, उसे मैंने एक लंबे पत्र में साहसपूर्वक व्यक्त किया, जिसे मैंने गिलबर्ट को सौंप दिया और उससे अनुरोध किया कि वह इसे पहुंचा दे। उसने सहमति दी। अफसोस! उसने मुझमें मेरी आशंका से भी बड़ा धोखेबाज देखा; जिन भावनाओं को मैंने सोलह पृष्ठों में इतनी सच्चाई के साथ चित्रित करने का प्रयास किया था, उसने उन पर संदेह किया; संक्षेप में, मैंने उसे जो पत्र लिखा था, वह उतना ही जोशीला और सच्चा था जितना कि मैंने एम. डी नॉरपोइस से कहे थे, लेकिन उसका भी कोई असर नहीं हुआ। अगले दिन गिलबर्ट ने मुझे लॉरेल के

पेड़ों के झुंड के पीछे एक छोटे से रास्ते पर ले जाकर, जहाँ हम दो कुर्सियों पर बैठ गए, बताया कि जब उसके पिता ने मेरा पत्र पढ़ा, जो वह अब मेरे पास वापस लाई थी, तो उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा: "इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है; इससे तो बस यही साबित होता है कि मैं कितना सही था।" मैं, जो अपने इरादों की पवित्रता और अपनी आत्मा की अच्छाई को जानता था, इस बात से क्रोधित था कि मेरे शब्दों का स्वान की हास्यास्पद गलती पर कोई असर नहीं हुआ। क्योंकि यह एक गलती थी; इस बात में मुझे तब कोई संदेह नहीं था। मुझे लगा कि मैंने अपनी उदार भावनाओं के कुछ अकाट्य गुणों का इतनी सटीकता से वर्णन किया था कि अगर स्वान ने मेरे संकेतों से इन्हें तुरंत नहीं समझा, मुझसे क्षमा नहीं माँगी और अपनी गलती स्वीकार नहीं की, तो इसका कारण यही होना चाहिए कि उसने स्वयं कभी इन महान भावनाओं का अनुभव नहीं किया था, जिसके कारण वह दूसरों में इनके अस्तित्व को समझने में असमर्थ था।

खैर, शायद स्वान को यह पता था कि उदारता अक्सर हमारे अहंकारी भावों का वह आंतरिक रूप ही होती है, जिसे हम तब तक नाम और वर्गीकरण नहीं दे पाते। शायद उन्होंने मेरे द्वारा उनके प्रति व्यक्त की गई सहानुभूति में गिल्बर्ट के प्रति मेरे प्रेम का एक प्रभाव—और सबसे प्रबल प्रमाण—देखा था, जिसके द्वारा, न कि स्वयं के प्रति किसी गौण श्रद्धा से, मेरे आगे के कार्यों को अनियंत्रित रूप से नियंत्रित किया जाएगा। मैं उनके दृष्टिकोण से सहमत नहीं हो सका, क्योंकि मैं अपने प्रेम को स्वयं से अलग करने, उसे मानवता के सामान्य अनुभव में वापस लाने और इस प्रकार उसके परिणामों को प्रत्यक्ष रूप से भुगतने में सफल नहीं हुआ था; मैं निराशा में था। मुझे कुछ देर के लिए गिल्बर्ट को छोड़ना पड़ा; फ्रांस्वा ने मुझे बुलाया था। मुझे उसके साथ हरे रंग की जाली से ढके एक छोटे से

मंडप में जाना था, जो पुराने पेरिस के बंद पड़े टोल-हाउसों जैसा था, जिसमें हाल ही में एक ऐसी चीज़ लगाई गई थी जिसे इंग्लैंड में शौचालय कहते हैं, लेकिन फ्रांस में, एक अज्ञानी अंग्रेज़-प्रेमी द्वारा, "पानी-शौचाल" कहा जाता है। प्रवेश द्वार पर, जहाँ मैं फ्रांस्वा का इंतज़ार कर रहा था, पुरानी, नम दीवारों से एक ठंडी और बासी गंध आ रही थी। इस गंध ने स्वान के शब्दों (जैसा कि गिल्बर्ट ने बताया था) से मेरे मन में पैदा हुई चिंताओं को तुरंत दूर कर दिया और मुझे एक ऐसे सुख से भर दिया जो अन्य सुखों से बिल्कुल अलग था। अन्य सुख ऐसे होते हैं जो व्यक्ति को पहले से भी अधिक अस्थिर कर देते हैं, उन्हें बनाए रखने या उन पर अधिकार करने में असमर्थ बना देते हैं। इसके विपरीत, यह एक ऐसा निरंतर सुख था जिस पर मैं सहारा ले सकता था - स्वादिष्ट, सुखदायक, एक ऐसे सत्य से भरपूर जो स्थायी, अस्पष्ट और निश्चित था। मैं चाहता था, जैसा कि बहुत पहले गुएरमांटेस मार्ग पर अपनी सैर के दौरान, इस प्रभाव के आकर्षण को समझने का प्रयास करना, जिसने मुझे जकड़ लिया था, और वहाँ स्थिर खड़े होकर, इस प्राचीन आभा से प्रश्न करना, जो मुझे केवल एक 'अतिरिक्त' के रूप में दिए जा रहे सुख का आनंद लेने के लिए आमंत्रित नहीं कर रही थी, बल्कि उस अंतर्निहित वास्तविकता में उतरने के लिए आमंत्रित कर रही थी जिसे उसने अभी तक मेरे सामने प्रकट नहीं किया था। लेकिन उस मकान की किराएदार, एक उम्रदराज महिला, जिसके गाल रंगे हुए थे और सिर पर भूरे रंग की विग थी, मुझसे बात कर रही थी। फ्रांस्वा उसे 'सचमुच बहुत संपन्न' मानती थी। उसकी "सुश्री" ने एक ऐसे युवक से शादी की थी जिसे फ्रांस्वा 'परिवार का नौजवान' कहती थी, जिसका मतलब था कि उसकी नज़र में वह एक मज़दूर से उतना ही अलग था जितना कि सेंट-साइमन की नज़र में एक ड्यूक 'आम लोगों के निचले तबके से ऊपर उठे' व्यक्ति से। इसमें कोई

शक नहीं कि किराएदार ने मकान लेने से पहले कई मुश्किलों का सामना किया होगा। लेकिन फ्रांस्वा को पूरा यकीन था कि वह एक 'मार्क्विस' थी और सेंट-फेरेल परिवार से संबंध रखती थी। इस 'मार्क्विस' ने मुझे ठंड में बाहर खड़े न रहने की चेतावनी दी और मेरे लिए अपना एक दरवाज़ा खोलकर कहा: "क्या आप एक मिनट के लिए अंदर नहीं जाएँगे? देखिए, यह एक अच्छा, साफ़-सुथरा कमरा है और मैं आपसे कुछ नहीं लूंगी।" शायद उसने यह प्रस्ताव उसी भावना से दिया होगा, जिस भावना से गौचे की दुकान की युवतियाँ, जब हम वहाँ कुछ ऑर्डर करने जाते थे, मुझे काउंटर पर कांच के डिब्बों में रखी मिठाइयों में से एक देती थीं, जिसे अफ़सोस, माँ मुझे कभी लेने नहीं देती थीं; शायद कम मासूमियत से, उस बूढ़ी फूलवाली की तरह, जिसे माँ अपने फूलों के स्टॉल भरने के लिए बुलाती थीं, जो मुझे गुलाब देते हुए उदास आँखों से मेरी तरफ देखती थी। खैर, अगर उस 'मार्क्विस' को छोटे लड़कों के प्रति लगाव था, जब वह उनके लिए पत्थर के उन छोटे कमरों के दरवाज़े खोलती थी, जिनमें पुरुष स्फिंक्स की तरह दुबके रहते हैं, तो उसकी यह उदारता उन्हें बिगाड़ने की उम्मीद से कम, बल्कि उस आनंद से प्रेरित रही होगी जो हम सभी अपने प्रियजनों के प्रति अनावश्यक उदारता दिखाने में महसूस करते हैं, क्योंकि मैंने उसे एक बूढ़े पार्क-कीपर के अलावा किसी और आगंतुक के साथ कभी नहीं देखा।

कुछ देर बाद मैंने 'मार्क्विस' को अलविदा कहा और फ्रांस्वा के साथ बाहर चली गई, जिसे मैंने गिलबर्ट के पास लौटने के लिए छोड़ दिया। मैंने उसे तुरंत लॉरेल के पेड़ों के झुंड के पीछे एक कुर्सी पर बैठे देखा। वह वहाँ इसलिए बैठी थी ताकि उसके दोस्त उसे देख न सकें: वे लुका-छिपी खेल रहे थे। मैं उसके पास जाकर बैठ गई। उसने एक सपाट टोपी पहन रखी थी जो उसकी आँखों पर आगे की ओर झुकी हुई थी, जिससे उसके चेहरे

पर वही धूर्त, गंभीर और चालाक भाव आ रहा था जो मैंने पहली बार कॉम्ब्रे में देखा था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसके पिता से आमने-सामने बात करने का कोई तरीका नहीं है। गिलबर्ट ने कहा कि उसने यह सुझाव उन्हें दिया था, लेकिन उन्हें यह उपयोगी नहीं लगा। "देखो," उसने आगे कहा, "अपना पत्र लिए बिना मत जाना; मुझे बाकी लोगों के पास जाना है, क्योंकि उन्होंने मुझे अभी तक नहीं पकड़ा है।"

अगर स्वान उस समय वहाँ आ जाता, इससे पहले कि मैं यह पत्र प्राप्त कर पाता, जिसकी ईमानदारी के कारण मुझे लगा कि वह मेरी बात मानने से इनकार करके इतना अनुचित व्यवहार कर रहा था, तो शायद वह समझ जाता कि सही वही था। क्योंकि जैसे ही मैं गिलबर्ट के पास पहुँचा, जो अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठी थी और उसने मुझे पत्र लेने के लिए कहा, लेकिन उसे मेरे सामने नहीं बढ़ाया, मैं उसके शरीर की ओर इतना आकर्षित हुआ कि मैंने उससे कहा: "देखो! तुम मुझे इसे लेने से रोकने की कोशिश करो; हम देखेंगे कि कौन ज़्यादा शक्तिशाली है।"

उसने उसे अपनी पीठ के पीछे छिपा लिया; मैंने अपनी बाहें उसकी गर्दन के चारों ओर डाल दीं, उसके कंधों पर बंधी हुई बालों की चोटियों को ऊपर उठाया, शायद इसलिए कि वह अभी भी उस उम्र की थी या इसलिए कि उसकी माँ ने उसे कुछ और समय तक बच्ची जैसा दिखाने का फैसला किया ताकि वह खुद भी जवान दिखे; और हम एक-दूसरे से जकड़े हुए कुश्ती करने लगे। मैंने उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश की, उसने विरोध किया; प्रयास से उसके गाल लाल और दो चेरी की तरह गोल हो गए थे; वह ऐसे हँसी जैसे मैं उसे गुदगुदी कर रहा हूँ; मैंने उसे अपने पैरों के बीच ऐसे जकड़ रखा था जैसे मैं किसी छोटे पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा हूँ; और, अपनी कसरत के बीच में, जब मैं मांसपेशियों के व्यायाम और खेल की गर्मी से पहले ही हाँफ रहा था, मुझे

लगा जैसे प्रयास से मेरे शरीर से पसीने की कुछ बूँदें निकल आई हों, मेरी खुशी एक ऐसे रूप में व्यक्त हुई जिसे समझने के लिए मैं एक पल भी नहीं रुक सका; तुरंत मैंने उससे पत्र छीन लिया। इस पर गिलबर्ट ने अच्छे स्वभाव से कहा:

"अगर आप चाहें तो हम थोड़ी देर और कुश्ती जारी रख सकते हैं।"

शायद उसे हल्का-फुल्का एहसास था कि मेरे खेल का उद्देश्य मेरे बताए उद्देश्य से अलग था, लेकिन इतना कम कि वह यह देख नहीं पाई कि मैंने वह उद्देश्य प्राप्त कर लिया है। और मुझे डर था कि उसने देख लिया है (और उसने थोड़ी सी शर्मिंदगी महसूस करते हुए जो हल्का सा पीछे हटी और फिर तुरंत ही रुक गई, उससे मुझे लगा कि मेरा डर बेवजह नहीं था), इसलिए मैंने कुश्ती जारी रखने का फैसला किया, कहीं ऐसा न हो कि वह यह सोच ले कि मेरा उद्देश्य इसके अलावा कुछ और नहीं था। इसके बाद मैं बस चुपचाप उसके पास बैठना चाहता था।

घर लौटते समय मुझे अचानक वह एहसास हुआ, जो अब तक मुझसे छिपा हुआ था, जिसकी ओर जालीदार मंडप की ठंडी, लगभग कालिख जैसी गंध मुझे ले गई थी, बिना मुझे उसे पहचानने या समझने दिए। यह मेरे चाचा एडोल्फ़ के कॉम्ब्रे स्थित छोटे से बैठक कक्ष की गंध थी, जिससे वाकई वैसी ही नमी भरी गंध आ रही थी। लेकिन मैं समझ नहीं पाया, और मैंने यह जानने की कोशिश टाल दी कि इतनी मामूली सी याद ने मुझे इतनी तीव्र खुशी क्यों दी। हालांकि, मुझे यह एहसास हुआ कि मैं वाकई एम. डी नॉरपोइस की अवहेलना का पात्र था; मैंने अब तक सभी लेखकों में से उसे ही चुना था जिसे उन्होंने महज़ "बांसुरी वादक" कहा था, और एक गहरी खुशी मुझे किसी महत्वपूर्ण विचार से नहीं, बल्कि एक बासी गंध से मिली थी।

कुछ समय पहले से, कुछ घरों में, अगर कोई आगंतुक शैंप्स-एलिसी का नाम लेता, तो परिवार की मुखिया उस तिरस्कारपूर्ण भाव से उसका स्वागत करती, जैसा कि माताएँ किसी प्रतिष्ठित चिकित्सक के प्रति रखती हैं, जिसे उन्होंने (या उनके अनुसार) इतने गलत निदान करते देखा है कि उन पर से उनका विश्वास ही खत्म हो गया है; लोग जोर देकर कहते थे कि ये उद्यान बच्चों के लिए अच्छे नहीं हैं, कि वे एक से अधिक गले में खराश, एक से अधिक खसरा के मामले और अनगिनत बुखार और ठंड लगने के मामलों के बारे में जानते हैं, जिनके लिए शैंप्स-एलिसी ही जिम्मेदार है। माँ के स्नेह पर खुले तौर पर संदेह किए बिना, जो मुझे वहाँ खेलने देती रहीं, उनकी कई सहेलियाँ इस बात पर खेद व्यक्त करती थीं कि वह इस स्पष्ट तथ्य को क्यों नहीं देख पा रही थीं।

मनोरोगी व्यक्ति, भले ही यह पुरानी कहावत प्रचलित हो, 'अपने अंतर्मन की आवाज़ सुनने' के आदी नहीं होते। वे अपने भीतर इतनी सारी बातें सुन सकते हैं, जिनसे उन्हें बाद में एहसास होता है कि घबरा जाना उनकी गलती थी, और अंततः वे उनमें से किसी पर भी ध्यान नहीं देते। उनका तंत्रिका तंत्र अक्सर उन्हें मदद के लिए पुकारता है, मानो किसी गंभीर बीमारी से, जबकि असल में बात सिर्फ इतनी होती है कि बर्फ गिरने वाली है, या उन्हें अपना कमरा बदलना है। इस वजह से उन्हें इन चेतावनियों पर उतना ही कम ध्यान देने की आदत पड़ जाती है, जितना कि युद्ध की गर्मी में कोई सैनिक इन चेतावनियों को इतना कम महसूस करता है कि मरणासन्न होने के बावजूद भी वह कुछ दिनों तक एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह जीवन जी सकता है। एक सुबह, अपने भीतर अपनी सभी सामान्य अक्षमताओं को समेटे हुए, जिनसे मैंने अपने मन को उसी दृढ़ता से दूर रखा था जैसे अपने रक्त के संचार से, मैं दौड़कर भोजन कक्ष में आया जहाँ मेरे माता-पिता पहले से ही मेज पर बैठे थे, और—हमेशा की तरह

खुद को यह समझाते हुए कि ठंड लगना यह संकेत नहीं है कि खुद को गर्म करना चाहिए, बल्कि यह कि, उदाहरण के लिए, डांट पड़ी है, और भूख न लगना यह संकेत नहीं है कि बारिश होने वाली है, और न ही यह कि कुछ खाना नहीं चाहिए—मैं उनके बीच बैठ गया, तभी एक बेहद स्वादिष्ट कटलेट का पहला निवाला निगलते ही, मतली और चक्कर ने मुझे रोक दिया, एक ऐसी बीमारी की तीव्र प्रतिक्रिया जो पहले ही शुरू हो चुकी थी, जिसके लक्षण मेरी उदासीनता की बर्फ से ढके हुए थे, लेकिन जो हठपूर्वक उस पोषण को ग्रहण करने से इनकार कर रही थी जिसे ग्रहण करने की मेरी स्थिति ठीक नहीं थी। फिर, उसी क्षण, यह विचार कि अगर उन्हें पता चला कि मैं अस्वस्थ हूँ तो वे मुझे बाहर जाने से रोक देंगे, ने मुझे, जैसे आत्मरक्षा की प्रवृत्ति एक घायल व्यक्ति को देती है, अपने कमरे तक रेंगने की शक्ति दी, जहाँ मैंने पाया कि मेरा बुखार 104 डिग्री था, और फिर चैंप्स-एलिसी जाने के लिए तैयार होने की शक्ति दी। उनके चारों ओर मौजूद सुस्त और असुरक्षित आवरण के भीतर, मेरे उत्सुक विचार मुझे गिलबर्ट के साथ प्रिजनर्स बेस का खेल खेलने के सुखदायक आनंद की ओर खींच रहे थे, और एक घंटे बाद, मुश्किल से अपने पैरों पर खड़े रह पाने के बावजूद, उसके साथ होने की खुशी में, मुझमें अभी भी इसका आनंद लेने की शक्ति थी।

वापस लौटने पर फ्रांस्वा ने कहा कि मेरी तबीयत खराब हो गई है, मुझे सर्दी-जुकाम हो गया होगा। वहीं, तुरंत बुलाए गए डॉक्टर ने कहा कि फेफड़ों में जकड़न के साथ आने वाले बुखार की तीव्रता और उग्रता उन्हें अन्य प्रकार के बुखारों से कहीं अधिक गंभीर और कष्टदायी लगी, जो कि एक मामूली सी आग के समान थी। कुछ समय से मुझे घुटन के दौरे पड़ते थे, और मेरी दादी की नाराज़गी की परवाह किए बिना, जो मुझे शराबी की तरह मरते हुए देख रही थीं, हमारे डॉक्टर ने मुझे सलाह दी थी कि सांस

लेने में मदद के लिए दी गई कैफीन के साथ-साथ, जब भी मुझे दौरा पड़ने का एहसास हो, तो मैं बीयर, शैम्पेन या ब्रांडी भी पी लूँ। उन्होंने बताया कि शराब से होने वाले नशे में ये दौरे शांत हो जाते थे। मैं अक्सर मजबूर हो जाता था कि मेरी दादी मुझे दवा दे दें, बजाय इसके कि मैं अपनी घुटन भरी हालत को छुपाऊं, मानो दिखावा कर रहा हूँ। दूसरी ओर, जैसे ही मुझे दौरा पड़ने का आभास होता, मुझे कभी भी पूरी तरह से पता नहीं होता था कि यह कितना गंभीर होगा, और मैं अपनी दादी की चिंता के बारे में सोचकर परेशान हो जाता था, जिससे मैं अपने कष्टों से कहीं अधिक भयभीत था। लेकिन साथ ही, मेरा शरीर, या तो इसलिए कि वह उन कष्टों को छुपाने के लिए बहुत कमजोर था, या इसलिए कि उसे डर था कि आने वाली विपत्ति से अनभिज्ञ लोग मुझसे कोई ऐसा काम करने की मांग कर सकते हैं जो उसके लिए असंभव या खतरनाक होगा, मुझे अपनी दादी को अपने दौरे के बारे में इतनी सावधानी से बताने की आवश्यकता महसूस कराता था कि अंततः मैंने इसे एक प्रकार का शारीरिक संकोच बना लिया। अगर मुझे अपने आप में कोई परेशान करने वाला लक्षण दिखाई देता था जिसे मैंने पहले नहीं देखा था, तो मेरा शरीर तब तक परेशान रहता था जब तक मैं इसे अपनी दादी को नहीं बता देता था। अगर वह अनदेखा करने का नाटक करती थीं, तो मैं जोर देता था। कभी-कभी मैं हद से ज्यादा कर देता था; और वह प्यारा चेहरा, जो अब पहले की तरह अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाता था, उस पर दया का भाव, एक दर्द भरी तड़प दिखाई देने लगी। तब उसका दुख देखकर मेरा दिल पसीज गया; मानो मेरे चुम्बनों में उस दुख को दूर करने की शक्ति हो, मानो मेरा स्नेह मेरी दादी को उतना ही आनंद दे सकता हो जितना मेरे ठीक होने से, मैंने खुद को उसकी बाहों में झोंक दिया। और साथ ही, यह जानकर कि अब वह मेरी तकलीफ को समझ चुकी है, मेरे

मन की झिझक शांत हो गई और मैंने उसे दिलासा देने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। मैंने कहा कि यह तकलीफ कुछ भी नहीं थी, मुझ पर किसी भी तरह से दया नहीं करनी चाहिए, वह पूरी तरह आश्वस्त हो सकती है कि मैं अब खुश हूँ; मेरे शरीर ने ठीक उतनी ही दया पाने की इच्छा की जितनी वह हकदार थी, और अगर किसी को पता होता कि उसके दाहिने हिस्से में 'दर्द' है, तो उसे यह कहने में कोई बुराई नहीं दिखती कि यह दर्द कोई मायने नहीं रखता और मेरी खुशी में कोई बाधा नहीं है; क्योंकि मेरा शरीर अपने इस सिद्धांत पर गर्व नहीं करता था; यह उसके बस की बात नहीं थी। मेरी बीमारी के दौरान लगभग हर दिन मुझे घुटन के ऐसे दौरे पड़ते थे। एक शाम, जब मेरी दादी मुझे कुछ हद तक ठीक छोड़कर चली गईं, तो वह बहुत देर से मेरे कमरे में लौटीं और मुझे साँस लेने में तकलीफ होते देख, सहानुभूति से काँपते चेहरे के साथ बोलीं, "ओह, मेरे बेचारे बच्चे, तुम बहुत दर्द में हो।" वह तुरंत मुझे छोड़कर चली गईं; मैंने बाहर का गेट खुलने की आवाज़ सुनी, और थोड़ी देर में वह कुछ ब्रांडी लेकर वापस आईं जो वह घर में न होने के कारण बाहर से खरीदने गई थीं। थोड़ी देर में मुझे बेहतर महसूस होने लगा। मेरी दादी, जिनका चेहरा थोड़ा लाल था, किसी बात से नाराज़ लग रही थीं, और उनकी आँखों में थकान और उदासी झलक रही थी।

"अब मैं तुम्हें अकेला छोड़ देती हूँ, और तुम्हें इस सुधार का लाभ उठाने देती हूँ," वह अचानक उठकर जाने लगी। मैंने उसे एक चुंबन के लिए रोक लिया, और उसके ठंडे गाल पर कुछ नम महसूस किया, लेकिन यह नहीं पता था कि यह उस रात की हवा की नमी थी जिससे वह अभी गुज़री थी। अगले दिन, वह शाम तक मेरे कमरे में नहीं आई, उसने मुझे बताया कि उसे बाहर जाना पड़ा था। मुझे लगा कि यह मेरे कल्याण के प्रति उसकी आश्चर्यजनक उदासीनता थी, और मुझे खुद को रोकना पड़ा ताकि

मैं उसे इसके लिए दोषी न ठहराऊँ।

मेरी घुटन लंबे समय तक बनी रही, जबकि गले में जकड़न का कोई भी कारण स्पष्ट नहीं था। इसलिए मेरे माता-पिता ने प्रोफ़ेसर कॉटार्ड से परामर्श करने का अनुरोध किया। इस प्रकार के मामलों का इलाज करने वाले चिकित्सक का विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है। जब उनके सामने ऐसे लक्षण आते हैं जो तीन-चार अलग-अलग बीमारियों के हो भी सकते हैं और नहीं भी, तो अंततः उनकी सहज बुद्धि और दृष्टि ही यह तय करती है कि कमोबेश एक समान दिखने वाले लक्षणों के बावजूद उन्हें किससे निपटना है। यह रहस्यमय प्रतिभा बुद्धि के अन्य क्षेत्रों में किसी श्रेष्ठता का संकेत नहीं देती, और एक अत्यंत सामान्य व्यक्ति, जो सबसे घटिया चित्रों, सबसे घटिया संगीत की प्रशंसा करता है, जिसके मन में कुछ भी असामान्य नहीं है, उसमें भी यह प्रतिभा हो सकती है। मेरे मामले में, जो शारीरिक रूप से स्पष्ट था, वह तंत्रिका ऐंठन, तपेदिक के प्रारंभिक चरण, अस्थमा, गुर्दे की कमी के साथ विषाक्त-आहार संबंधी श्वासभ्रम, पुरानी ब्रोंकाइटिस, या एक जटिल स्थिति के कारण भी हो सकता था जिसमें इनमें से एक से अधिक कारक शामिल थे। अब, तंत्रिका ऐंठन का इलाज सख्ती से किया जाना आवश्यक था, और तपेदिक का इलाज अत्यंत सावधानी से और 'पोषण' की प्रक्रिया से हतोत्साहित किया जाना चाहिए था, जो अस्थमा जैसी गठिया की स्थिति के लिए हानिकारक होता, और विषाक्त-आहार संबंधी सांस फूलने की स्थिति में वास्तव में खतरनाक हो सकता था, क्योंकि इस स्थिति में सख्त आहार की आवश्यकता होती है, जो बदले में तपेदिक के रोगी के लिए घातक साबित हो सकता है। लेकिन कॉटार्ड की हिचकिचाहट क्षणिक थी और उनके नुस्खे अत्यावश्यक थे। "दस्त; तीव्र और कठोर दस्त; कुछ दिनों तक दूध, केवल दूध। मांस नहीं। शराब नहीं।" मेरी माँ ने धीरे से कहा कि मुझे फिर भी 'मजबूत' होने की

आवश्यकता है, कि मेरी नसें पहले से ही कमजोर हैं, कि मुझे घोड़े की तरह भिगोना और मेरे आहार को प्रतिबंधित करना मेरी हालत और खराब कर देगा। मैं कॉटार्ड की आँखों में देख सकता था, जो इतनी बेचैन थीं मानो उन्हें ट्रेन छूटने का डर हो, कि वे खुद से पूछ रहे थे कि क्या उन्होंने अपने स्वाभाविक हंसमुख स्वभाव को प्रकट होने नहीं दिया। वह यह सोचने की कोशिश कर रहा था कि क्या उसने अपना निर्मम मुखौटा पहनना याद रखा है, ठीक वैसे ही जैसे कोई आईने में देखता है कि कहीं वह अपनी टाई बांधना तो नहीं भूल गया। अपनी अनिश्चितता में, और शायद जो भी उसने किया हो, उसे ठीक करने के लिए, उसने बेरुखी से जवाब दिया: "मुझे अपने निर्देश दोहराने की आदत नहीं है। मुझे एक कलम दो। अब याद रखना, दूध! बाद में, जब हम संकट और सांस फूलने की समस्या से जूझ रहे हों, तो मैं चाहूंगा कि तुम थोड़ा सा साफ़ सूप लो, और फिर थोड़ा सा शोरबा, लेकिन हमेशा दूध के साथ; दूध! तुम्हें यह पसंद आएगा, क्योंकि आजकल स्पेन का बोलबाला है; ओल्ले, ओल्ले!" उसके छात्र इस मज़ाक को अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि वह अस्पताल में जब भी किसी हृदय या यकृत रोग के मरीज़ को दूध पिलाना पड़ता था, तो यही मज़ाक करता था। "उसके बाद, तुम धीरे-धीरे अपने सामान्य जीवन में लौट आओगे। लेकिन जब भी खांसी या घुटन हो—दस्त, इंजेक्शन, बिस्तर, दूध!" उन्होंने मेरी माँ की अंतिम आपत्तियों को बर्फीली शांति से, बिना एक शब्द बोले, सुना। उन्होंने इस उपचार के कारणों को समझाए बिना ही हमें छोड़ दिया, जिससे मेरे माता-पिता ने निष्कर्ष निकाला कि इसका मेरे मामले से कोई लेना-देना नहीं है और इससे मेरी कमजोरी व्यर्थ ही बढ़ेगी, इसलिए उन्होंने मुझे यह उपचार नहीं आजमाने दिया। स्वाभाविक रूप से, उन्होंने प्रोफेसर से अपनी अवज्ञा को छिपाने की कोशिश की और इसमें सफल होने के लिए उन सभी घरों से दूर रहे जहाँ

उनके मिलने की संभावना थी। फिर, जब मेरा स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, तो उन्होंने मुझे कॉटार्ड के निर्देशों का अक्षरशः पालन करने का निर्णय लिया; तीन दिनों में मेरी घरघराहट और खांसी बंद हो गई, मैं खुलकर सांस ले पा रहा था। तब हमें एहसास हुआ कि कॉटार्ड ने, जैसा कि उन्होंने बाद में हमें बताया, यह पाया कि मैं स्पष्ट रूप से अस्थमा का रोगी था और 'चीजों की कल्पना' करने की प्रवृत्ति रखता था। उन्होंने यह भी समझ लिया था कि वास्तव में मुझे नशा था और मेरे लिवर को ढीला करके और मेरी किडनी को साफ करके वे मेरी श्वसन नलिकाओं की जकड़न दूर कर देंगे और इस तरह मुझे मेरी सांस, मेरी नींद और मेरी ताकत वापस लौटा देंगे। और हमें एहसास हुआ कि यह मूर्ख व्यक्ति एक विलक्षण चिकित्सक था। आखिरकार मैं उठने में सक्षम हो गया। लेकिन उन्होंने मुझे अब और चैंप्स-एलिसी न जाने देने की बात कही। उन्होंने कहा कि वहाँ की हवा खराब है; लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि यह केवल एक बहाना था ताकि मैं मैडम स्वान से न मिल सकूँ, और मैंने खुद को गिलबर्ट का नाम बार-बार दोहराने के लिए मजबूर किया, ठीक वैसे ही जैसे बंदी लोग अपनी मातृभाषा को आपस में सहेजने की कोशिश करते हैं ताकि वे उस भूमि को न भूलें जिसे वे फिर कभी नहीं देख पाएंगे। कभी-कभी मेरी माँ मेरे माथे पर हाथ फेरते हुए कहतीं, "तो अब छोटे लड़के माँ को अपनी परेशानियाँ नहीं बताते?" और फ़्रांस्वा रोज़ मेरे पास आकर कहतीं, "क्या चेहरा है! अगर तुम खुद को देख लो तो कोई भी सोचेगा कि घर में कोई लाश पड़ी है।" यह सच है कि अगर मुझे सिर्फ़ सर्दी-ज़ुकाम भी होता, तो फ़्रांस्वा का हावभाव भी उतना ही गमगीन होता। ये विलाप मेरी सेहत से ज़्यादा उनके 'वर्ग' से जुड़े थे। उस समय मैं यह पता नहीं लगा पाया कि यह निराशावाद दुख के कारण था या संतुष्टि के कारण। मैंने अस्थायी रूप से मान लिया कि यह सामाजिक और पेशेवर कारण था।

एक दिन, डाकिया के जाने के बाद, मेरी माँ ने मेरे बिस्तर पर एक पत्र रख दिया। मैंने उसे लापरवाही से खोला, क्योंकि उस पर वह हस्ताक्षर नहीं था जो मुझे खुशी देता, गिलबर्ट का नाम, जिससे मेरा चैंप्स-एलिसी के बाहर कोई रिश्ता नहीं था। और देखो, पृष्ठ के निचले भाग में, एक चांदी की मुहर से उभरा हुआ, जिस पर हेलमेट पहने एक आदमी का सिर बना था, और उसके नीचे एक स्क्रॉल था जिस पर 'पेर वियम रेक्टम' लिखा था, और उसके नीचे बड़े और सुस्पष्ट अक्षरों में लिखा एक अक्षर था, जिसमें लगभग हर शब्द रेखांकित प्रतीत होता था, क्योंकि 't' के क्रॉस उसके आर-पार नहीं बल्कि ऊपर से जा रहे थे, और इस तरह ऊपर वाले शब्द के संबंधित अक्षरों के नीचे एक रेखा खींच रहे थे। यह वास्तव में गिलबर्ट का हस्ताक्षर था और कुछ नहीं जो मैंने देखा। लेकिन चूंकि मैं जानता था कि मेरे नाम के पत्र पर ऐसा होना असंभव है, इसलिए इसे देखकर, बिना किसी विश्वास के, मुझे कोई खुशी नहीं हुई। एक पल के लिए इसने मेरे आस-पास की हर चीज पर अवास्तविकता का आभास करा दिया। बिजली की तेज़ी से वह असंभव सा चिन्ह मेरे बिस्तर, चिमनी और चारों दीवारों पर नाचने लगा। मैंने सब कुछ हिलता हुआ देखा, जैसे कोई घोड़े से गिर जाता है, और मैंने खुद से पूछा कि क्या कोई ऐसा अस्तित्व नहीं है जो मेरे जाने-पहचाने अस्तित्व से बिल्कुल अलग हो, उसके सीधे विरोध में हो, लेकिन वही सच्चा अस्तित्व हो, जो अचानक मेरे सामने प्रकट होकर मुझे उस झिझक से भर दे जो मूर्तिकार अंतिम न्याय का चित्रण करते समय जागृत मृतकों को देते हैं जो परलोक के द्वार पर पहुँच जाते हैं। "मेरे प्रिय मित्र," पत्र में लिखा था, "मैंने सुना है कि तुम बहुत बीमार हो और तुमने चैंप्स-एलिसी जाना छोड़ दिया है। मैं भी वहाँ बहुत कम जाती हूँ क्योंकि आजकल बहुत ज़्यादा बीमारियाँ फैली हुई हैं। लेकिन मैं यहाँ हर सोमवार और शुक्रवार को अपने दोस्तों को चाय पर बुला रही हूँ। माँ ने

मुझसे कहा है कि अगर तुम भी ठीक होते ही आ जाओ तो हम सबको बहुत खुशी होगी और हम यहाँ चैंप्स-एलिसी की तरह ही कुछ और अच्छी बातें कर सकेंगे। अलविदा, प्रिय मित्र; मुझे आशा है कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हें अक्सर चाय पर आने देंगे। मेरी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ। गिलबर्ट।"

जब मैं ये शब्द पढ़ रहा था, तब मेरी तंत्रिका प्रणाली ने बड़ी तेज़ी से यह खबर ग्रहण कर ली कि मुझ पर एक बहुत बड़ा सौभाग्य आ पड़ा है। परन्तु मेरा मन, अर्थात् मैं स्वयं, और वास्तव में इससे मुख्य रूप से संबंधित व्यक्ति, अभी भी अनभिज्ञ थे। गिलबर्ट से प्राप्त ऐसा सौभाग्य एक ऐसी चीज़ थी जिसका मैंने हमेशा सपना देखा था; यह पूरी तरह से मेरे मन की उपज थी, जैसा कि लियोनार्डो चित्रकला के बारे में कहते हैं, यह कोसा मेंटल (मानसिक शक्ति) थी। अब, लिखे हुए कागज़ का एक टुकड़ा ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मन तुरंत आत्मसात कर ले। परन्तु जैसे ही मैंने पत्र पढ़ना समाप्त किया, मैं इसके बारे में सोचने लगा, यह मेरे सपनों का विषय बन गया, यह भी कोसा मेंटल (मानसिक शक्ति) बन गया, और मुझे इससे इतना प्रेम हो गया कि हर कुछ मिनटों में मुझे इसे पढ़ना, इसे फिर से चूमना पड़ता था। तब जाकर मुझे अंततः अपनी खुशी का एहसास हुआ।

जीवन ऐसे चमत्कारों से भरा पड़ा है, जिनकी प्रेम में डूबे लोग हमेशा आशा रख सकते हैं। हो सकता है कि यह चमत्कार मेरी माँ ने कृत्रिम रूप से करवाया हो। उन्होंने देखा कि कुछ समय से मेरा जीवन में कोई रुचि नहीं रह गई थी, इसलिए उन्होंने गिलबर्ट को मुझे पत्र लिखने का सुझाव दिया होगा। ठीक वैसे ही, जब मैं छोटा था और पहली बार समुद्र किनारे गया था, तो मुझे स्नान का आनंद दिलाने के लिए, जिसे मैं नापसंद करता था क्योंकि उसमें मेरी साँस फूल जाती थी, वह चुपके से उस व्यक्ति को,

जो मुझे स्नान करवाने वाला था, सीपियों और मूंगे की शाखाओं से बने अद्भुत बक्से देती थीं, जिन्हें देखकर मुझे लगता था कि मैंने उन्हें समुद्र की तलहटी में पाया है। हालाँकि, हमारे जीवन में और इसकी विभिन्न परिस्थितियों में जो भी घटना प्रेम से संबंधित होती है, उसे समझने का प्रयास न करना ही बेहतर है, क्योंकि ये घटनाएँ अटल और अप्रत्याशित होती हैं, और ऐसा लगता है कि ये तर्कसंगत नियमों के बजाय जादू से संचालित होती हैं। जब एक करोड़पति—जो अपने करोड़ों के बावजूद बेहद आकर्षक व्यक्तित्व वाला है—अपनी गरीब और बदसूरत प्रेमिका द्वारा ठुकरा दिया जाता है, जिसके साथ वह रह रहा होता है, तो हताशा में वह धन-दौलत के सारे संसाधनों का सहारा लेता है और हर सांसारिक प्रभाव का इस्तेमाल करता है, फिर भी उसे वापस लाने में सफल नहीं होता। ऐसे में, अपनी प्रेमिका के अडिग हठ के सामने, उसके लिए यह मानना ही समझदारी है कि भाग्य उसे कुचलना चाहता है और उसे प्रेम के कारण मृत्यु के घाट उतारना चाहता है, बजाय इसके कि वह कोई तार्किक कारण खोजे। ये बाधाएँ, जिनसे प्रेमियों को जूझना पड़ता है और जिनका विश्लेषण करने की उनकी कल्पना, पीड़ा से अतिउत्तेजित होकर, व्यर्थ ही प्रयास करती है, अक्सर उस महिला के किसी विशेष गुण में निहित होती हैं जिसे वे वापस नहीं ला सकते, उसकी मूर्खता में, उस पर अर्जित प्रभाव में, उन लोगों द्वारा उत्पन्न भय में जिन्हें प्रेमी नहीं जानता, और उस प्रकार के सुखों में जो वह इस समय जीवन से चाहती है, ऐसे सुख जो न तो उसका प्रेमी और न ही उसके प्रेमी का धन उसे दिला सकता है। बहरहाल, प्रेमी के लिए इन बाधाओं की प्रकृति का पता लगाना लगभग असंभव है, क्योंकि स्त्री की धूर्तता उन्हें इनसे छुपाए रखती है और प्रेम से प्रभावित उसका अपना विवेक भी इनका सटीक आकलन करने में असमर्थ रहता है। इनकी तुलना उन ट्यूमर से की जा सकती है जिन्हें डॉक्टर कम तो कर

देता है, लेकिन उनके स्रोत का पता नहीं लगा पाता। उन्हीं की तरह ये बाधाएँ रहस्यमय बनी रहती हैं, पर अस्थायी होती हैं। अंतर केवल इतना है कि ये आमतौर पर प्रेम से अधिक समय तक टिकती हैं। और चूंकि प्रेम एक निस्वार्थ भावना नहीं है, इसलिए जो प्रेमी अब प्रेम में नहीं है, वह यह जानने की कोशिश नहीं करता कि जिस स्त्री से वह प्रेम करता था, जो न तो धनी थी और न ही गुणी, उसने वर्षों तक हठपूर्वक उसे अपने पास रखने से इनकार क्यों किया।

अब वही रहस्य जो प्रेम के मामले में किसी विपत्ति के कारण को हमारी आँखों से छिपा लेता है, उतनी ही बार कुछ सुखद समाधानों की अचानकता को भी घेर लेता है, जैसे कि गिलबर्ट के पत्र के साथ मुझे मिला था। सुखद, या कम से कम देखने में सुखद, क्योंकि ऐसे बहुत कम समाधान होते हैं जो वास्तव में सुखद हो सकते हैं जब हम ऐसी भावना से निपट रहे हों कि हम जो भी संतुष्टि प्रदान करें, वह आमतौर पर केवल कुछ दर्द को कम करने का काम करती है। और फिर भी कभी-कभी हमें राहत मिलती है, और हमें कुछ समय के लिए यह भ्रम होता है कि हम ठीक हो गए हैं।

इस पत्र के संदर्भ में, जिसके अंत में फ्रांस्वा ने गिलबर्टे के नाम को पहचानने से इनकार कर दिया, क्योंकि बिना बिंदी वाले 'i' के ऊपर झुका हुआ बड़ा 'G' देखने में 'A' जैसा लग रहा था, जबकि अंतिम अक्षर को लहराते हुए अलंकरण द्वारा अनिश्चित रूप से लंबा खींचा गया था, यदि हम मेरे प्रति उसके अचानक बदले हुए रवैये की तर्कसंगत व्याख्या खोजने का प्रयास करते रहें, जो इस पत्र में दर्शाया गया था और जिसने मुझे इतनी खुशी दी, तो शायद हमें पता चले कि मैं कुछ हद तक उस घटना का ऋणी था, जिसके बारे में मैंने इसके विपरीत सोचा था कि वह स्वान परिवार की नजरों में मुझे हमेशा के लिए बर्बाद कर देगी। कुछ समय

पहले, ब्लोच मुझसे मिलने आया था, उस समय प्रोफेसर कॉटार्ड, जिनसे अब मैं उनके निर्देशों का पालन कर रहा था, हम फिर से मिलने जा रहे थे, संयोग से मेरे कमरे में थे। मेरी जाँच पूरी होने के बाद, जब वह मेरे साथ केवल एक आगंतुक के रूप में बैठे थे क्योंकि मेरे माता-पिता ने उन्हें रात के खाने पर रुकने के लिए आमंत्रित किया था, तब ब्लोच को अंदर आने की अनुमति दी गई। जब हम सब बातें कर रहे थे, ब्लोच ने उल्लेख किया कि उन्होंने सुना था कि श्रीमती स्वान मुझे बहुत पसंद करती हैं, यह बात उन्होंने एक महिला से कही थी जिसके साथ उन्होंने एक दिन पहले भोजन किया था, और जो स्वयं श्रीमती स्वान की बहुत करीबी थीं। मेरा मन किया कि मैं जवाब दूं कि वह निश्चित रूप से गलत हैं, और यह तथ्य स्थापित करूं (उसी अंतरात्मा की झिझक से जिसने मुझे यह बात एम. डी नॉरपोइस से कहने के लिए मजबूर किया था, और श्रीमती स्वान द्वारा मुझे झूठा समझने के डर से) कि मैं उन्हें नहीं जानती थी और उनसे कभी बात नहीं की थी। लेकिन ब्लोच की गलती को सुधारने का मुझमें साहस नहीं था, क्योंकि मैं अच्छी तरह से देख सकती थी कि यह जानबूझकर किया गया था, और अगर उन्होंने कुछ ऐसा गढ़ा जो श्रीमती स्वान को गलत लगे, तो... स्वान ने ऐसा बिल्कुल नहीं कहा होगा; यह तो बस हमें यह बताने के लिए था (जिसे वह अपने लिए प्रशंसा का विषय समझता था, और जो सच भी नहीं था) कि वह उस महिला की एक सहेली के साथ भोजन कर रहा था। और इस तरह यह हुआ कि, एम. डी नॉरपोइस को जब पता चला कि मैं श्रीमती स्वान को नहीं जानता, लेकिन उनसे मिलना बहुत चाहता हूँ, तो उन्होंने मेरे बारे में उनसे बात करने से बचने का पूरा ध्यान रखा। वहीं, कॉटार्ड, जो उनके डॉक्टर भी थे, ने ब्लोच की बातों से यह समझा कि वह मुझे अच्छी तरह जानती हैं और मेरे बारे में बहुत अच्छी राय रखती हैं। इसलिए उन्होंने अगली बार उनसे मिलने पर यह कहना

उचित समझा कि मैं एक आकर्षक युवक हूँ और उनका बहुत अच्छा दोस्त हूँ, इससे मुझे कोई फायदा नहीं होगा और उन्हें खुद फायदा होगा। इन्हीं दो कारणों से उन्होंने ओडेट से मौका मिलते ही मेरे बारे में बात करने का फैसला किया।

अंततः मैं उस घर में पहुँच गया जहाँ से श्रीमती स्वान की खुशबू सीढ़ियों तक फैली हुई थी, हालाँकि गिलबर्ट के जीवन से निकलने वाले विचित्र, विचलित कर देने वाले आकर्षण ने उसे और भी मधुर बना दिया था। निर्दयी द्वारपाल, जो अब एक दयालु यूमेनिड में बदल गया था, ने ऊपर जाने की अनुमति माँगने पर, अपनी टोपी को शुभ भाव से ऊपर उठाकर मुझे यह संकेत देने की प्रथा अपना ली कि उसने मेरी प्रार्थना सुन ली है। बाहर से देखने पर वे खिड़कियाँ, जो मेरे और अंदर छिपे उन खजानों के बीच एक बाधा की तरह लगती थीं, जो मेरे लिए नहीं थे, एक परिष्कृत, दूरस्थ और सतही निगाहों से देखती थीं, जो मुझे मानो स्वयं स्वान परिवार की निगाहें लगती थीं। गर्म मौसम में जब मैं गिलबर्ट के कमरे में उसके साथ पूरी दोपहर बिताता था, तो मुझे उन्हें खुद खोलना पड़ता था ताकि थोड़ी हवा अंदर आ सके, और यहाँ तक कि अगर उसकी माँ घर पर होतीं, तो मैं उनके बगल में एक खिड़की की चौखट पर झुककर आने वाले मेहमानों को देखता था, जो अक्सर अपनी गाड़ियों से उतरते ही सिर उठाकर मुझे हाथ हिलाकर अभिवादन करते थे, मानो मुझे अपनी मालकिन का कोई भतीजा समझ रहे हों। ऐसे क्षणों में गिलबर्ट की चोटियाँ मेरे गालों को छू जाती थीं। मुझे वे अपनी महीन बनावट में एक साथ प्राकृतिक और अलौकिक लगती थीं, और उनकी मजबूत नक्काशी में एक अद्वितीय कलाकृति लगती थीं, जिसके निर्माण में मानो स्वर्ग की घास का उपयोग किया गया हो। उनमें से एक छोटे से छोटे टुकड़े के लिए भी, मैं किसी दिव्य वनस्पति को भी अस्थि-कलश के रूप में अर्पित करने

को तैयार था। लेकिन चूंकि मुझे उन गुंथों का कोई वास्तविक टुकड़ा प्राप्त करने की आशा नहीं थी, इसलिए कम से कम उनकी एक तस्वीर ही मिल जाती, तो वह विंची की पेंसिल से खींचे गए फूलों के चित्र से कहीं अधिक मूल्यवान होती! इनमें से एक को प्राप्त करने के लिए, मैंने स्वान परिवार के मित्रों और यहां तक कि फोटोग्राफरों के साथ भी ऐसी चापलूसी की, जिससे मुझे वह नहीं मिला जो मैं चाहता था, बल्कि मुझे जीवन भर के लिए कई बेहद थकाऊ लोगों से बांध दिया।

गिलबर्ट के माता-पिता, जिन्होंने इतने लंबे समय तक मुझे उससे मिलने से रोका था, अब—जब मैं उस अंधेरे हॉल में प्रवेश करता था, जहाँ हमेशा मंडराती रहती थी, पुराने वर्साय में राजा के प्रेत से भी अधिक दुर्जेय और अधिक वांछनीय, उनसे मेरी मुलाकात की संभावना, जहाँ हमेशा, पवित्र ग्रंथों में वर्णित मोमबत्ती स्टैंड की तरह सात शाखाओं वाले एक विशाल टोपी स्टैंड से टकराने के बाद, मैं लकड़ी के बक्से पर अपने लंबे भूरे कोट के किनारों के बीच बैठे एक नौकर के सामने भ्रमित होकर झुकने लगता था, जिसे मैंने धुंधली रोशनी में श्रीमती स्वान समझ लिया था—गिलबर्ट के माता-पिता, यदि उनमें से कोई मेरे आगमन के समय वहाँ से गुजर रहा होता, तो नाराज दिखने के बजाय, आकर मुस्कुराते हुए हाथ मिलाते और कहते:

"हाउ डी डू?" (दोनों ने इसे एक ही संक्षिप्त लहजे में बोला, जिसे आप शायद समझ ही सकते हैं कि घर लौटने के बाद मैंने लगातार और बड़े आनंद से नकल करना शुरू कर दिया।) "क्या गिलबर्ट को पता है कि आप यहाँ हैं? पता है? तो मैं आपको उसके साथ छोड़ देता हूँ।"

इससे भी बेहतर, गिलबर्टे द्वारा अपने दोस्तों को आमंत्रित की जाने वाली चाय पार्टियाँ, जो मुझे लंबे समय से उसके और मेरे बीच खड़ी बाधाओं में सबसे बड़ी बाधा लगती थीं, अब हमारे मिलन का एक अवसर बन गईं,

जिसके बारे में वह मुझे कुछ पंक्तियों में बताती थी, जो (क्योंकि मैं अभी भी उसके लिए अपेक्षाकृत अजनबी था) हमेशा अलग-अलग पन्नों पर लिखी होती थीं। एक पन्ने पर नीले रंग में उभरा हुआ पूडल बना होता था, जिसके ऊपर अंग्रेजी में एक अजीबोगरीब शिलालेख होता था और उसके बाद एक विस्मय चिह्न होता था; दूसरे पर एक लंगर, या जी.एस. का मोनोग्राम होता था, जो एक आयत में बेतुके ढंग से लंबा होता था और पृष्ठ के ऊपर से नीचे तक फैला होता था, या फिर गिलबर्टे नाम होता था, जो अब एक कोने में सुनहरे अक्षरों में उकेरा गया होता था, जो मेरी दोस्त के हस्ताक्षर की नकल करता था और एक अलंकृत रेखा में समाप्त होता था, जिसके नीचे काले रंग में छपा हुआ एक खुला छाता होता था, जो अब एक चीनी टोपी के आकार के मोनोग्राम में बंद होता था, जिसमें शब्द के सभी अक्षर बड़े अक्षरों में होते थे, लेकिन उनमें से एक भी अक्षर पढ़ना संभव नहीं होता था। अंततः, गिलबर्ट के पास मौजूद विभिन्न लेखन-पत्रों की संख्या चाहे कितनी भी अधिक क्यों न हो, असीमित नहीं थी। कुछ सप्ताहों बाद, मुझे वह कागज़ फिर से दिखाई दिया जिस पर (उसके द्वारा मुझे लिखे गए पहले पत्र की तरह) 'पर वियम रेक्टम' (सही ढंग से लिखा गया) आदर्श वाक्य अंकित था, और उसके ऊपर एक हेलमेट पहने हुए व्यक्ति का सिर, धूमिल चांदी के पदक में जड़ा हुआ था। और उनमें से प्रत्येक को किसी विशेष अनुष्ठान के कारण, एक दिन के बजाय दूसरे दिन चुना जाता था, जैसा कि मैंने तब अनुमान लगाया था, लेकिन अधिक संभावना है, जैसा कि मैं अब सोचता हूँ, क्योंकि वह यह याद रखने की कोशिश करती थी कि उसने उनमें से कौन सा पहले ही इस्तेमाल कर लिया है, ताकि वह अपने किसी भी पत्र-व्यवहारकर्ता को, कम से कम उन लोगों को जिन्हें वह प्रसन्न करने का विशेष प्रयास करती थी, एक ही कागज़ दोबारा न भेजे, सिवाय लंबे अंतराल के। चूंकि, कक्षाओं के अलग-

अलग समय के कारण, गिलबर्ट अपनी पार्टियों में जिन दोस्तों को आमंत्रित किया करती थी, उनमें से कुछ को बाकी लोगों के आने के ठीक बाद ही जाना पड़ता था, इसलिए जब मैं अभी सीढ़ियों पर ही था, मुझे हॉल से फुसफुसाहट सुनाई दी, जिससे उस भव्य समारोह के कारण मुझमें इतनी भावनाएं उमड़ आईं कि लैंडिंग तक पहुंचने से बहुत पहले ही, मेरे अतीत से जुड़े सभी बंधन टूट गए, यहां तक कि मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मुझे ज्यादा गर्मी लगने पर अपना मफलर उतार देना है और घर पहुंचने में देर न हो इसलिए घड़ी पर नजर रखनी है। इसके अलावा, वह सीढ़ी, जो पूरी तरह से लकड़ी की बनी थी, जैसा कि उस समय कुछ घरों में हेनरी द्वितीय की शैली के अनुरूप बनाई जाती थी, जो ओडेट का आदर्श रही थी (हालांकि जल्द ही उसमें उसकी रुचि कम हो गई थी), और उस पर एक तख्ती लगी थी, जिसका घर पर कोई समकक्ष नहीं था, जिस पर लिखा था: "सूचना। लिफ्ट से नीचे न जाएं।" यह मुझे इतना अद्भुत लगा कि मैंने अपने माता-पिता को बताया कि यह एक प्राचीन सीढ़ी है जिसे एम. स्वान बहुत दूर से लाए थे। सत्य के प्रति मेरा सम्मान इतना प्रबल था कि अगर मुझे पता भी होता कि यह झूठ है, तो भी मैं उन्हें यह जानकारी देने में संकोच नहीं करता, क्योंकि केवल इसी से वे स्वान परिवार की सीढ़ी की गरिमा के प्रति वही सम्मान महसूस कर पाते जो मैं स्वयं महसूस करता था। यह ठीक वैसा ही था जैसे किसी अज्ञानी व्यक्ति से बात करते समय, जो एक महान चिकित्सक की प्रतिभा को नहीं समझ सकता, यह स्वीकार न करना ही बेहतर है कि उसे जुकाम का इलाज करना नहीं आता। लेकिन चूंकि मुझमें अवलोकन की शक्ति नहीं थी, क्योंकि आम तौर पर मैं अपनी आंखों के सामने मौजूद चीजों का नाम या प्रकृति कभी नहीं जानता था, और केवल इतना ही समझ पाता था कि जब वे स्वान परिवार से जुड़ी होती हैं तो वे असाधारण ही होंगी, इसलिए

मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि सीढ़ियों के कलात्मक मूल्य और प्राचीन उत्पत्ति के बारे में अपने माता-पिता को सूचित करके मैं झूठ बोल रहा था। यह निश्चित नहीं लग रहा था; लेकिन यह संभव जरूर लग रहा था, क्योंकि जब मेरे पिता ने मुझे बीच में रोकते हुए कहा, "मैं उन घरों को जानता हूँ; मैं उनमें से एक में गया हूँ; वे सभी एक जैसे हैं; स्वान परिवार के पास बस एक ही इमारत में कई मंजिलें हैं; उन सभी को बर्लियर ने बनवाया था," तो मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने उनमें से एक में फ्लैट लेने के बारे में सोचा था, लेकिन उन्होंने अपना इरादा बदल दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि वे सुविधाजनक रूप से व्यवस्थित नहीं हैं, और सीढ़ियाँ बहुत अंधेरी हैं। उन्होंने ऐसा कहा; लेकिन मुझे सहज रूप से महसूस हुआ कि मेरे मन को स्वान परिवार की महिमा और मेरी अपनी खुशी के लिए आवश्यक बलिदान करने होंगे, और आंतरिक शक्ति के बल पर, जो कुछ मैंने अभी सुना था उसके बावजूद, मैंने हमेशा के लिए अपनी स्मृति से उस विनाशकारी विचार को मिटा दिया, जैसे एक अच्छा कैथोलिक रेनन की 'वी डे जीसस' को मिटाता है, कि उनका घर सिर्फ एक साधारण फ्लैट था जिसमें हम खुद रह सकते थे।

उन चाय-पार्टी के दिनों में, धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, तर्क और स्मृति को बाहरी वस्त्रों की तरह उतार फेंकते हुए, और खुद को सबसे नीच प्रतिक्रियाओं का खेल समझते हुए, मैं उस जगह पहुँच जाता जहाँ श्रीमती स्वान की सुगंध मेरी नाक में प्रवेश करती। मुझे ऐसा लगता था कि मैं चॉकलेट केक की भव्यता को देख सकता हूँ, जो छोटी-छोटी केक से भरी प्लेटों और आकृतियों वाले भूरे दमिश्क के छोटे नैपकिनों से घिरा हुआ था, जैसा कि परंपरा के अनुसार आवश्यक था लेकिन स्वान परिवार की विशेषता थी। लेकिन यह अपरिवर्तनीय और नियंत्रित संपूर्णता, कांट के

आवश्यक ब्रह्मांड की तरह, स्वतंत्र इच्छा के एक सर्वोच्च कार्य पर निर्भर प्रतीत होती थी। क्योंकि जब हम सभी गिल्बर्ट के छोटे से बैठक कक्ष में एक साथ होते, तो अचानक वह घड़ी की ओर देखती और कहती:

"अरे! दोपहर के भोजन को काफी समय हो गया है, और रात का खाना आठ बजे तक नहीं है। मुझे कुछ खाने का मन कर रहा है। आपका क्या कहना है?"

और वह हमें भोजन कक्ष में ले जाती, जो रेम्ब्रांट द्वारा चित्रित किसी एशियाई मंदिर के आंतरिक भाग की तरह गंभीर था। वहाँ एक वास्तुशिल्पीय केक, जो जितना भव्य और आकर्षक था, उतना ही प्रभावशाली भी, मानो किसी भी हालत में वहाँ विराजमान था, मानो गिलबर्टे के मन में अचानक चॉकलेट से बने उसके बुर्जों को हटाकर उसकी खड़ी भूरी दीवारों को काट डालने का विचार आ गया हो, जो डेरियस के महल के गढ़ों की तरह ओवन में पकी थीं। इससे भी बेहतर, उस बेबीलोन जैसी पेस्ट्री को नष्ट करते समय, गिलबर्टे ने केवल अपनी भूख का ही ध्यान नहीं रखा; उसने मेरी भूख के बारे में भी पूछा, जबकि उसने मेरे लिए उस टूटते हुए स्मारक से लाल फलों से सजी एक पूरी चमकदार शिला निकाली, जो प्राच्य शैली की थी। उसने मुझसे यह भी पूछा कि मेरे माता-पिता किस समय भोजन करते हैं, मानो मुझे अभी भी पता हो, मानो मेरे भीतर व्याप्त अशांति ने मेरी खाली स्मृति और लकवाग्रस्त पेट में तृप्ति या भूख की अनुभूति, भोजन का विचार या मेरे परिवार की तस्वीर को बनाए रखा हो। अफसोस, यह लकवा बस क्षणिक था। जो केक मैंने बिना ध्यान दिए खा लिए थे, एक समय आएगा जब मुझे उन्हें पचाना होगा। लेकिन वह समय अभी दूर था। इस बीच गिल्बर्ट मेरे लिए चाय बना रही थी। मैं उसे लगातार पीता रहा, जबकि एक कप मुझे चौबीस घंटे जगाए रखता था। इसीलिए मेरी माँ हमेशा कहती थीं:

"यह कितना झंझट भरा है; यह स्वार्म्स के घर जाता है तो बीमार होकर ही लौटता है।" लेकिन क्या मुझे स्वान्स के घर पर भी यह एहसास था कि मैं चाय पी रहा हूँ? अगर मुझे पता भी होता, तो भी मैं उसे पी लेता, क्योंकि मान लीजिए कि मुझे एक पल के लिए भी वर्तमान का एहसास हो जाता, तो भी मुझे अतीत की यादें या भविष्य की आशंकाएँ वापस नहीं आतीं। मेरी कल्पना उस दूर की धुन तक पहुँचने में असमर्थ थी जिसमें मुझे सोने जाने का विचार और नींद की ज़रूरत महसूस हो सकती थी।

गिलबर्ट की सभी सहेलियाँ उस मदहोशी में नहीं डूबी थीं जिसमें कोई फैसला लेना नामुमकिन हो जाता है। उनमें से कुछ ने चाय पीने से इनकार कर दिया! तब गिलबर्ट उस साल के एक बेहद प्रचलित मुहावरे का इस्तेमाल करते हुए कहतीं, "मुझे लगता है कि चाय के साथ मेरा कुछ खास तालमेल नहीं बैठ रहा है!" और औपचारिकता के सारे भावों को पूरी तरह से मिटाने के लिए, वह मेज के चारों ओर लगी कुर्सियों को इधर-उधर करते हुए कहतीं, "हम तो बिल्कुल शादी के नाश्ते जैसे लग रहे हैं। हे भगवान, नौकर कितने बेवकूफ होते हैं!"

वह मेज से तिरछी रखी पालथी मारकर बैठने वाली कुर्सी पर एक तरफ झुककर अपना केक कुतर रही थी। और फिर, मानो वह अपनी माँ से अनुमति लिए बिना ही उन सभी केक का आनंद ले सकती थी, जब श्रीमती स्वान, जिनका 'दिन' आमतौर पर गिल्बर्ट की चाय पार्टियों के साथ मेल खाता था, अपने किसी मेहमान को दरवाजे तक छोड़कर अंदर आतीं, और कुछ ही क्षण बाद, कभी नीले मखमल के कपड़े में, तो अक्सर सफेद लेस से सजे काले साटन गाउन में, आश्चर्य भरे लहजे में कहतीं: "वाह, ये तो बहुत अच्छा लग रहा है। आप सबको केक खाते देख मुझे भी भूख लग रही है।"

"लेकिन, माँ, ज़रूर! हम आपको आमंत्रित करते हैं!" गिलबर्ट जवाब देती।

"धन्यवाद, नहीं, मेरे प्यारे; मेरे मेहमान क्या कहेंगे? मेरे पास अभी भी श्रीमती ट्रॉमबर्ट, श्रीमती कॉटार्ड और श्रीमती बोंटेम्प्स हैं; आप जानते हैं, प्यारी श्रीमती बोंटेम्प्स कभी भी कम समय के लिए नहीं आतीं, और वह अभी-अभी आई हैं। अगर मैं उनके पास कभी वापस न जाऊं तो वे सभी अच्छे लोग क्या कहेंगे? अगर कोई और नहीं आता, तो मैं फिर से आऊंगी और उनके जाने के बाद आपसे बात करूंगी (जो कहीं अधिक मनोरंजक होगा)। मुझे सच में लगता है कि मैंने थोड़ा आराम कमा लिया है; आज मेरे पास पैंतालीस अलग-अलग लोग आए थे, और उनमें से बयालीस ने मुझे गेरोम की तस्वीर के बारे में बताया! लेकिन आपको किसी दिन अकेले आना चाहिए," वह मेरी ओर मुड़ी, "और गिल्बर्ट के साथ 'अपनी' चाय पीनी चाहिए। वह आपके लिए बिल्कुल वैसे ही चाय बनाएगी जैसे आपको पसंद है, जैसे आप अपने छोटे से 'स्टूडियो' में पीते हैं," वह अपने मेहमानों की ओर उड़ती हुई बोली, मानो यह मेरे लिए मेरी अपनी आदतों की तरह ही परिचित हो (जैसे कि मेरी आदत कि मुझे अगर मैंने कभी चाय पी होती, तो मैं चाय पीने के बारे में सोच भी नहीं सकता था; जहाँ तक मेरे 'स्टूडियो' की बात है, मुझे पक्का पता नहीं था कि मेरा कोई स्टूडियो है भी या नहीं) कि मैं इस रहस्यमयी दुनिया में क्या खोजने आया था। "आप कब आ सकते हैं? कल? हम आपके लिए बिल्कुल वैसा ही 'टोस्ट' बनाएंगे जैसा आपको कोलंबिन के यहाँ मिलता है। नहीं? आप तो बहुत बुरे हैं!"—क्योंकि, जब से उसने भी एक सैलून शुरू किया था, उसने मैडम वर्दुरिन के तौर-तरीके और खासकर उनके चिड़चिड़े निरंकुश लहजे को अपना लिया था। 'टोस्ट' मेरे लिए उतना ही समझ से बाहर था जितना 'कोलंबिन का', इसलिए यह और वादा मेरे लालच को और नहीं बढ़ा सका। अब जब हर कोई ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करता है—और शायद कॉम्ब्रे में भी ये धीरे-धीरे फैल रहे हैं—तो यह और भी अजीब लगेगा कि

जब मैंने मैडम स्वान को हमारी पुरानी 'नर्स' की तारीफ करते सुना, तो मैं पहले समझ ही नहीं पाया कि वह किसके बारे में बात कर रही थीं। मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती थी; हालाँकि, जैसे-जैसे वह बोलती गईं, मुझे समझ आ गया कि इस शब्द का मतलब फ्रांस्वा था। मैं, जो शैंप्स-एलिसी में इस बात से बहुत डरी हुई थी कि वह मुझ पर बुरा प्रभाव डालेगी, अब मुझे श्रीमती स्वान से पता चला कि गिलबर्ट ने मेरी 'नर्स' के बारे में जो कुछ बताया था, उसी ने उनके पति और उन्हें मेरी ओर आकर्षित किया था। "ऐसा लगता है कि वह मुझसे बहुत प्यार करती है; वह ज़रूर अच्छी होगी!" (तुरंत ही फ्रांस्वा के बारे में मेरी राय पूरी तरह बदल गई। इसी तरह, वाटरप्रूफ जैकेट और टोपी में पंख वाली गवर्नेंस का होना अब उतना ज़रूरी नहीं लग रहा था।) अंत में, श्रीमती स्वान ने श्रीमती ब्लैटिन (जिनके अच्छे स्वभाव को वह मानती थीं लेकिन उनके आने से डरती थीं) के बारे में जो कुछ कहा, उससे मुझे पता चला कि उस महिला के साथ व्यक्तिगत संबंध मेरे लिए उतने महत्वपूर्ण नहीं होते जितना मैंने सोचा था, और स्वान परिवार के साथ मेरी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता।

यदि अब मैं श्रद्धा और आनंद से भरे उस जादुई लोक का अन्वेषण करने लगा था, जिसने तमाम संभावनाओं के विपरीत, मेरे लिए अपने अब तक बंद द्वार खोल दिए थे, तब भी यह केवल गिलबर्ट के मित्र के रूप में ही संभव था। जिस राज्य में मेरा स्वागत हुआ था, वह स्वयं एक और भी रहस्यमय राज्य में समाहित था, जिसमें स्वान और उनकी पत्नी अपना अलौकिक जीवन व्यतीत करते थे और जिसकी ओर वे मेरा हाथ थामकर, उसी क्षण हॉल पार करते हुए, लेकिन दूसरी दिशा में, आगे बढ़े। लेकिन जल्द ही मुझे पवित्र स्थान के हृदय तक भी पहुँचना था। उदाहरण के लिए, जब मैं जाता, गिलबर्ट घर से बाहर हो सकती थी, लेकिन श्रीमान या श्रीमती स्वान घर पर होते। वे पूछते कि किसने घंटी बजाई थी, और

यह जानकर कि मैंने बजाई थी, वे मुझे एक पल के लिए अंदर बुलाते और उनसे बात करने के लिए कहते, और मुझसे किसी न किसी तरह से, और किसी न किसी उद्देश्य से, उनकी बेटी पर अपने प्रभाव का उपयोग करने का अनुरोध करते। मुझे वह पत्र याद आया, जो इतना संपूर्ण और इतना प्रभावशाली था, जिसे मैंने कुछ ही दिन पहले स्वान को लिखा था, और जिसे उन्होंने स्वीकार तक नहीं किया था। मैं मन, तर्क और हृदय की उस अक्षमता पर आश्चर्यचकित था, जो किसी भी तरह से परिवर्तन लाने में, उन कठिनाइयों में से एक को भी हल करने में असमर्थ है, जिन्हें जीवन आगे चलकर, बिना किसी को पता चले, बड़ी आसानी से सुलझा देता है। गिलबर्ट के मित्र के रूप में मेरी नई स्थिति, जिसने मुझे उस पर उत्कृष्ट प्रभाव प्रदान किया, और मुझे अब वही अनुग्रह प्राप्त करने का हकदार बना दिया, मानो किसी ऐसे विद्यालय में जहाँ मुझे हमेशा अपनी कक्षा में शीर्ष स्थान पर रखा जाता था, मेरा सहपाठी कोई राजा का पुत्र रहा हो, और उस संयोगवश मुझे महल में अनौपचारिक प्रवेश और सिंहासन कक्ष में मुलाकातों का अधिकार प्राप्त हो गया हो। स्वान, असीम दयालुता के साथ और मानो वह गौरवशाली कार्यों से बोझिल न हो, मुझे अपने पुस्तकालय में ले जाता और वहाँ मुझे एक घंटे तक हकलाते हुए एक-एक शब्द में उत्तर देने देता, डरपोक मौन जो साहस के संक्षिप्त और असंगत विस्फोटों से टूटता था, उन कथनों का जिनमें मेरी भावना मुझे एक भी शब्द समझने से रोकती थी; वह मुझे कलाकृतियाँ और पुस्तकें दिखाता जो उसे लगता था कि मेरी रुचि की होंगी, ऐसी चीजें जिनके बारे में मुझे देखने से पहले ही कोई संदेह नहीं था कि वे सुंदरता में लूव्र या राष्ट्रीय पुस्तकालय में मौजूद किसी भी चीज से कहीं अधिक श्रेष्ठ थीं, लेकिन जिन्हें देखना मेरे लिए असंभव था। ऐसे क्षणों में, अगर स्वान के बटलर ने मुझसे मेरी घड़ी, टाई-पिन, जूते मांगे होते और मुझे उसे अपना

उत्तराधिकारी घोषित करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करवाए होते, तो मुझे उसका आभारी होना चाहिए था: एक लोकप्रिय कहावत के प्रशंसनीय शब्दों में, जिसके लेखक का नाम हमें नहीं पता, हालांकि उन महाकाव्यों की तरह, और वोल्फ और उनके सिद्धांत के प्रति पूरे सम्मान के साथ, निश्चित रूप से उसका भी कोई लेखक रहा होगा, उन आविष्कारशील, विनम्र आत्माओं में से एक, जिनसे हम हर साल मिलते हैं, जो 'चेहरे को नाम देने' जैसे अनमोल रत्न खोज लेते हैं, हालांकि वे अपना नाम हमें कभी नहीं बताते, मुझे नहीं पता था कि मैं क्या कर रहा था। मेरा आश्चर्य तब और भी बढ़ गया, जब मेरी यात्रा लंबी हो गई, यह देखकर कि उस जादुई घर में बिताए गए वे घंटे मुझे किस शून्य की अनुभूति, किस सुखद अंत के अभाव में ले गए। लेकिन मेरी निराशा न तो मुझे दिखाई गई कलाकृतियों की अपर्याप्तता के कारण थी और न ही उन पर मेरी विचलित दृष्टि को स्थिर करने की असंभवता के कारण। क्योंकि स्वान के पुस्तकालय में बैठना मेरे लिए चमत्कारिक इसलिए नहीं था कि वस्तुओं की आंतरिक सुंदरता ही चमत्कारिक थी, बल्कि उन वस्तुओं से मेरा लगाव था—जो शायद दुनिया की सबसे बदसूरत वस्तुएँ रही हों—और वह विशेष भावना, उदासी और कामुकता, जिसे मैंने इतने वर्षों तक उस कमरे में समाहित कर रखा था और जो अब भी उसमें व्याप्त थी; इसी प्रकार, असंख्य दर्पण, चांदी की परत चढ़े ब्रश, सेंट एंथोनी ऑफ पडुआ की वेदी, जिन्हें उनके मित्रों, सबसे प्रख्यात कलाकारों द्वारा तराशा और चित्रित किया गया था, मेरी अपनी अयोग्यता और उनकी राजसी परोपकारिता की भावना के सामने कुछ भी मायने नहीं रखती थीं, जो मेरे भीतर तब जागृत हुई जब श्रीमती स्वान वहाँ आईं। स्वान ने मुझे कुछ क्षणों के लिए अपने कमरे में बुलाया, जहाँ तीन सुंदर और प्रभावशाली महिलाएँ, उनकी मुख्य, द्वितीय और तृतीय दासियाँ, मुस्कुराते हुए उनके

लिए अद्भुत श्रृंगार की तैयारी कर रही थीं, और जहाँ मुझे घुटनों तक की पैंट पहने हुए नौकर द्वारा यह बताया गया कि मैडम मुझसे कुछ शब्द कहना चाहती हैं, मैं उस घुमावदार गलियारे से होकर गुजरा जो दूर-दूर तक उन कीमती सुगंधों से महका हुआ था जो उनके ड्रेसिंग रूम से लगातार एक अत्यंत मधुर सुगंध बिखेर रही थीं।

जब श्रीमती स्वान अपने आगंतुकों के पास लौट आईं, तब भी हम उनकी बातें और हंसी सुन सकते थे, क्योंकि कमरे में केवल दो लोग होने पर भी, और मानो उन्हें एक साथ सभी 'अच्छे दोस्तों' से निपटना पड़ रहा हो, वह अपनी आवाज ऊंची कर देतीं, शब्दों को वैसे ही बोलतीं जैसे उन्होंने अक्सर 'छोटे समूह' में अपनी 'मालकिन' को करते सुना था, जब वह 'बातचीत का नेतृत्व' करती थीं। जिन अभिव्यक्तियों को हमने दूसरों से उधार लिया है, वे वे हैं जिन्हें कम से कम कुछ समय के लिए, हम सबसे अधिक पसंद करते हैं, श्रीमती स्वान। स्वान कभी उन कथनों को चुनती थीं जो उन्होंने प्रतिष्ठित लोगों से सीखे थे, जिनसे उनके पति उन्हें मिलने से नहीं रोक पाए थे (उन्हीं से उन्होंने वह शैली सीखी थी जिसमें किसी व्यक्ति के नाम के विशेषण से पहले आर्टिकल या संकेतवाचक सर्वनाम का प्रयोग नहीं किया जाता है), कभी आम लोगों से संबंधित कथनों को (जैसे कि "यह तो बिलकुल मामूली बात है!", जो उनकी एक सहेली का पसंदीदा मुहावरा था), और उन्हें उन सभी कहानियों में जगह देती थीं जो 'छोटे समूह' में बनी एक आदत के कारण उन्हें लोगों के बारे में सुनाना पसंद था। इन कथनों के बाद वह अपने आप ही कह देती थीं, "मुझे वह कहानी बहुत पसंद आई!" या "मान लो, यह बहुत अच्छी कहानी है!" ये कथन उन्हें उनके पति के माध्यम से गुएरमांटे परिवार से मिले थे, जिन्हें वह जानती भी नहीं थीं।

श्रीमती स्वान भोजन कक्ष से चली गई थीं, लेकिन उनके पति, जो अभी-

अभी घर लौटे थे, बारी-बारी से हमारे बीच आ गए। "क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी माँ अकेली हैं, गिलबर्ट?" "नहीं, पापा, उनके साथ अभी भी कुछ लोग हैं।" "क्या, अभी भी? सात बजे! यह तो भयानक है! बेचारी औरत तो बिल्कुल मर चुकी होगी। यह घिनौना है।" (घर पर मैंने हमेशा इस शब्द के पहले अक्षर को लंबे 'ओ' के साथ उच्चारित होते सुना था, जैसे 'ओड', लेकिन श्रीमान और श्रीमती स्वान इसे छोटा करके बोलते थे, जैसे 'ऑड' में।) "ज़रा सोचो; आज दोपहर दो बजे से!" वह मेरी ओर मुड़ते हुए बोले। "और कैमिल ने मुझे बताया कि चार-पाँच के बीच उसने कम से कम एक दर्जन लोगों को अंदर आने दिया। क्या मैंने एक दर्जन कहा? मुझे लगता है उसने चौदह कहा था। नहीं, एक दर्जन; मुझे याद नहीं। जब मैं घर आई तो मैं पूरी तरह भूल गई थी कि आज उसका 'दिन' है, और जब मैंने दरवाजे के बाहर इतनी सारी गाड़ियाँ देखीं तो मुझे लगा कि घर में शादी है। और अभी, जब मैं एक मिनट के लिए पुस्तकालय में थी, घंटी बजना बंद ही नहीं हुई; सच कहूँ तो, इससे मेरा सिर दर्द हो गया है। और क्या उनमें से बहुत से लोग अभी भी अंदर हैं?" "नहीं; केवल दो।" "वे कौन हैं, क्या आप जानती हैं?" "श्रीमती कॉटार्ड और श्रीमती बोंटेम्प्स।" "ओह! डाक मंत्री के मुख्य सचिव की पत्नी।" "मैं जानती हूँ कि उनके पति किसी न किसी मंत्रालय में क्लर्क हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे क्या करते हैं।" गिलबर्ट ने बचकाना अंदाज़ अपनाया।

"ये क्या? अरे नादान बच्चे, तुम तो दो साल के बच्चे की तरह बातें कर रहे हो। तुम्हारा मतलब क्या है? 'किसी मंत्रालय में क्लर्क'? अरे, वो तो मुख्य सचिव हैं, पूरे सिस्टम के मुखिया हैं, और तो और—मैं क्या सोच रहा हूँ? कसम से, मैं भी तुम्हारी तरह ही बेवकूफ बन रहा हूँ; वो मुख्य सचिव नहीं, स्थायी सचिव हैं।"

"मुझे नहीं पता, मुझे यकीन है; स्थायी सचिव होने का क्या कोई महत्व

है?" गिलबर्ट ने जवाब दिया, जो अपने माता-पिता को गर्व का कारण देने वाली किसी भी बात के प्रति अपनी उदासीनता दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ती थी। (हो सकता है, उसने सोचा हो कि इस तरह के परिचय को कोई विशेष महत्व न देकर वह उसकी प्रतिष्ठा को और बढ़ा रही है।)

"मुझे लगता है कि इसका वाकई बहुत महत्व है!" स्वान ने कहा, जिन्होंने अपनी इस विनम्रता के बजाय, जिससे मुझे संदेह हो सकता था, अधिक स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करना बेहतर समझा। "इसका सीधा सा मतलब है कि वह मंत्री के बाद पहले नंबर पर हैं। वास्तव में, वह मंत्री से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि सारा काम वही करते हैं। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि उनमें अपार क्षमता है, वह प्रथम श्रेणी के व्यक्ति हैं, एक अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। वह लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी हैं। वह एक बहुत ही अच्छे इंसान हैं, और दिखने में भी बेहद आकर्षक हैं।"

(वैसे, इस आदमी की पत्नी ने सबकी इच्छाओं और सलाह के खिलाफ जाकर उससे शादी की थी क्योंकि वह एक 'मनमोहक प्राणी' था। उसके पास, जो एक दुर्लभ और नाजुक व्यक्तित्व के लिए पर्याप्त हो सकता है, एक सुनहरी, रेशमी दाढ़ी, अच्छे चेहरे के भाव, नाक से निकलने वाली आवाज, मजबूत फेफड़े और एक कांच की आंख थी।)

"मैं आपको बता दूँ," उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, "कि मुझे यह देखकर बहुत मज़ा आ रहा है कि ये लोग वर्तमान सरकार में सेवा कर रहे हैं, क्योंकि ये बोंटेम्प्स-चेनट परिवार के बोंटेम्प्स हैं, जो पुराने ज़माने के मध्यमवर्गीय लोग हैं, प्रतिक्रियावादी, पादरीवादी और बेहद रूढ़िवादी। आपके दादाजी उन्हें अच्छी तरह जानते थे—कम से कम नाम और शक्ल से तो ज़रूर जानते होंगे, पिता चेनट को, जो उन दिनों के हिसाब से काफी अमीर होने के बावजूद टैक्सी ड्राइवरों को आधा पैसा से ज़्यादा टिप नहीं देते थे, और बैरन ब्रेउ-चेनट को भी। उनका सारा पैसा यूनियन जेनेराले के

पतन में चला गया—आप इतने छोटे हैं कि आपको यह याद नहीं होगा—और, हे भगवान! उन्हें जैसे-तैसे उसे वापस पाना पड़ा।"

"वह उस छोटी लड़की का चाचा है जो मेरी कक्षाओं में आती थी, मुझसे काफी नीचे की कक्षा में, मशहूर 'अल्बर्टाइन' के नाम से जानी जाती थी। जब वह बड़ी होगी तो निश्चित रूप से बहुत 'तेज' होगी, लेकिन अभी तो वह एक अनोखा नजारा है।"

"मेरी यह बेटी कमाल की है। वह सबको जानती है।"

"मैं उसे नहीं जानती। मैं बस उसे आते-जाते देखती थी, और लोगों को उसे 'अल्बर्टाइन' और 'अल्बर्टाइन' कहते सुनती थी। लेकिन मैं मैडम बोंटेम्प्स को जानती हूँ, और मुझे वह भी ज़्यादा पसंद नहीं है।"

"आप बिलकुल गलत हैं; वह आकर्षक, सुंदर और बुद्धिमान है। वास्तव में, वह बहुत चतुर है। मैं जाकर उससे हालचाल पूछूंगा और उससे यह भी पूछूंगा कि क्या उसके पति को लगता है कि हम युद्ध करने वाले हैं, और क्या हम राजा थियोडोसियस पर भरोसा कर सकते हैं। उन्हें तो पता ही होगा, है ना? क्योंकि वे देवताओं की सभाओं में शामिल हैं।"

पहले स्वान इस तरह बात नहीं करती थीं; लेकिन हममें से कौन उस कम बुद्धि वाली शाही राजकुमारी को याद नहीं कर सकता, जिसे एक नौकर ने अगवा कर लिया था, और फिर दस साल बाद जब उसने समाज में वापस आने की कोशिश की, तो पाया कि लोग उससे मिलने के लिए उत्सुक नहीं थे; क्या हमने उसे अनायास ही पुराने उबाऊ लोगों की भाषा अपनाते हुए नहीं देखा है, और जब हमने किसी फैशन की चरम सीमा पर मौजूद डचेस का जिक्र किया, तो उसे यह कहते हुए नहीं सुना है: "वह कल ही मुझसे मिलने आई थी," या "मैं बहुत शांत जीवन जीती हूँ।" इसलिए शिष्टाचार का अध्ययन करना अनावश्यक है, क्योंकि हम उन सभी को

मनोवैज्ञानिक नियमों से समझ सकते हैं।

स्वान्स परिवार में उन लोगों जैसी ही विलक्षणता थी जिनके बहुत कम दोस्त होते हैं; किसी मामूली व्यक्ति से मुलाक़ात, निमंत्रण या महज़ एक दोस्ताना बात भी उनके लिए ऐसी घटनाएँ होती थीं जिन्हें वे पूरी तरह प्रचारित करना चाहते थे। अगर दुर्भाग्यवश ओडेट की शानदार डिनर पार्टी के समय वर्दुरिन परिवार लंदन में होता, तो ऐसी व्यवस्था की जाती कि कोई साझा मित्र चैनल के पार उन्हें संदेश भेज दे। ओडेट को मिले प्रशंसा पत्रों और टेलीग्रामों को भी स्वान्स परिवार अपने तक सीमित नहीं रख पाता था। वे उनके बारे में अपने दोस्तों से बात करते, उन्हें एक-दूसरे को देते-लेते थक जाते। इस तरह स्वान्स का ड्राइंग रूम किसी समुद्र किनारे के होटल जैसा लगता था जहाँ ताज़ा ख़बरों वाले टेलीग्राम बोर्ड पर लगे होते थे।

फिर भी, जो लोग पुराने स्वान को न केवल समाज से बाहर, जैसा कि मैं जानता था, बल्कि समाज में भी जानते थे, उस गुएरमांटेस समूह में, जो उच्चाधिकारियों और डचेस को कुछ रियायतें देते हुए, बुद्धि और आकर्षण के मामले में लगभग असीम रूप से सख्त था, और जिसके सदस्यों को उबाऊ या अशिष्ट लगने वाले वास्तविक प्रतिष्ठित पुरुषों के लिए उस समूह से निष्कासन का कठोर आदेश था,—वे यह देखकर आश्चर्यचकित हो सकते थे कि उनके पुराने स्वान न केवल अपने परिचितों के बारे में बात करते समय विवेकहीन हो गए थे, बल्कि जब उनसे परिचय कराने को कहा जाता था तो वे मुश्किल पैदा करते थे। आखिर मैडम बोंटेम्प्स, इतनी साधारण, इतनी चिड़चिड़ी, उन्हें कैसे परेशान नहीं कर पाईं? वह उन्हें आकर्षक कैसे कह सकते थे? कोई भी अनुमान लगा सकता है कि गुएरमांटेस समूह की याद ने उन्हें रोका होगा; वास्तव में इसने उन्हें प्रोत्साहित किया। समाज के अधिकांश समूहों की तुलना में, गुएरमांटे

परिवार में निश्चित रूप से सुरुचि थी, वास्तव में परिष्कृत सुरुचि, लेकिन साथ ही एक प्रकार का आडंबर भी था जिसके कारण उस सुरुचि के प्रयोग में क्षणिक रुकावट आने की संभावना रहती थी। यदि बात किसी ऐसे व्यक्ति की हो जो उनके समूह के लिए अपरिहार्य न हो, जैसे कि विदेश मंत्री, एक रिपब्लिकन और आडंबरप्रिय प्रवृत्ति वाला व्यक्ति, या कोई ऐसा शिक्षाविद जो बहुत अधिक बोलता हो, तो उनकी सुरुचि उस पर जमकर हावी हो जाती। स्वान, श्रीमती डी गुएरमांटे के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते, जिन्हें दूतावासों में से किसी एक में रात्रिभोज के दौरान ऐसे लोगों के बगल में बैठना पड़ा था, और वे हजार गुना अधिक एक फैशनेबल व्यक्ति को पसंद करते, यानी गुएरमांटे परिवार के किसी ऐसे व्यक्ति को, जो किसी काम का न हो, लेकिन गुएरमांटे परिवार की बुद्धि से संपन्न हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो उन्हीं के समान विचारधारा का हो। केवल एक ग्रैंड डचेस, एक शाही परिवार की राजकुमारी, को ही श्रीमती डी गुएरमांटे के साथ अक्सर भोजन करना चाहिए। डी गुएरमांटेस भी जल्द ही उसी चैपल में नामांकित हो गईं, जबकि उन्हें वहाँ रहने का कोई अधिकार नहीं था, न ही वे किसी भी तरह से इतनी प्रतिभाशाली थीं। लेकिन समाज के सरल स्वभाव के कारण, जैसे ही वे उन्हें अपने घरों में लाए, उन्होंने उन्हें आकर्षक दिखाने का हर संभव प्रयास किया, क्योंकि वे यह नहीं कह सकते थे कि उन्होंने उन्हें उनके आकर्षक होने के कारण आमंत्रित किया था। स्वान, श्रीमती डी गुएरमांटेस की मदद के लिए आगे आए और महाराज के जाने के बाद उनसे कहा: "आखिरकार, वह इतनी बुरी महिला नहीं हैं; वास्तव में, उनमें हास्य की अच्छी समझ है। मुझे एक पल के लिए भी नहीं लगता कि उन्होंने 'शुद्ध तर्क की आलोचना' में महारत हासिल की है; फिर भी, वह अनाकर्षक नहीं हैं।" "ओह, मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ!" डचेस ने जवाब दिया। "इसके अलावा, वह हम सभी से

थोड़ी डरी हुई थीं; आप देखेंगे कि वह आकर्षक भी हो सकती हैं।" "वह निश्चित रूप से श्रीमती X—— (बातूनी शिक्षाविद की पत्नी, और स्वयं एक असाधारण महिला) "से कहीं कम विनाशकारी हैं, जो आपके सामने बीस-बीस पुस्तकों के उद्धरण देती हैं।" "अरे, लेकिन उनमें कोई तुलना ही नहीं है।" इस तरह की बातें कहने और उन्हें ईमानदारी से कहने की कला स्वान ने डचेस से सीखी थी और कभी नहीं खोई थी। अब वह इसका इस्तेमाल अपने घर आने वाले लोगों के संदर्भ में करता था। वह खुद को उनमें उन गुणों को पहचानने और उनकी प्रशंसा करने के लिए बाध्य करता था जो हर इंसान में दिखते हैं, अगर हम उसे पूर्वाग्रह से देखें, न कि संकीर्ण सोच वाले लोगों की तरह नापसंदगी से; उसने श्रीमती बोंटेम्प्स के गुणों की प्रशंसा की, जैसे उसने कभी प्रिंसेस डी पार्म की की थी, जिन्हें गुएरमांटेस परिवार से बाहर कर दिया जाता अगर कुछ खास राजकुमारों के लिए प्रवेश की विशेष शर्तें न होतीं और चुनाव के समय केवल बुद्धि और आकर्षण पर ही ध्यान दिया जाता। हम पहले ही देख चुके हैं कि स्वान की हमेशा से यह प्रवृत्ति रही है (जिसे वह अब और भी स्थायी रूप से अमल में ला रहा था) कि वह अपनी सामाजिक स्थिति को किसी ऐसी स्थिति से बदल ले जो कुछ परिस्थितियों में उसके लिए बेहतर हो। जो लोग पहली नज़र में अविभाज्य प्रतीत होने वाली चीज़ों का विश्लेषण करने में असमर्थ होते हैं, वही यह मानते हैं कि किसी व्यक्ति का रुतबा उसके व्यक्तित्व से जुड़ा होता है। एक ही व्यक्ति को जीवन के विभिन्न पड़ावों पर देखा जाए तो सामाजिक सीढ़ी के अलग-अलग चरणों में वह ऐसे वातावरण में रहता है जो ज़रूरी नहीं कि समय के साथ और परिष्कृत होता जाए; अपने जीवन के किसी भी दौर में जब भी हम किसी विशेष परिवेश से संबंध बनाते हैं या उसे फिर से स्थापित करते हैं, और उसमें सहजता और आराम महसूस करते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से उसमें

जड़ें जमाकर उससे जुड़ते चले जाते हैं।

जहां तक श्रीमती बोंटेम्प्स का सवाल है, मेरा मानना है कि स्वान ने उनके बारे में इतनी जोर देकर बात करते हुए इस बात का अफसोस नहीं किया होगा कि मेरे माता-पिता को पता चल जाएगा कि वह उनकी पत्नी से मिलने गई थीं। सच कहूं तो, हमारे घर में श्रीमती स्वान जिन लोगों से धीरे-धीरे जान-पहचान बढ़ा रही थीं, उनके नाम सुनकर हमारी जिज्ञासा प्रशंसा से कहीं अधिक बढ़ जाती थी। श्रीमती ट्रॉमबर्ट का नाम सुनते ही मेरी माँ ने कहा, "अरे! यह तो नई सदस्य हैं, और दूसरों को भी लाएंगी।" और मानो उन्हें श्रीमती स्वान के अपने मित्र बनाने के संक्षिप्त, तीव्र और हिंसक तरीके में, मानो विजय के माध्यम से, और एक औपनिवेशिक अभियान में समानता दिखी हो, माँ ने आगे कहा, "अब जब ट्रॉमबर्ट्स ने आत्मसमर्पण कर दिया है, तो पड़ोसी जनजातियाँ भी जल्द ही आ जाएँगी।" अगर वह श्रीमती बोंटेम्प्स के बारे में बात कर लेतीं... जब वह घर लौटती तो हमें बताती, "मैंने श्रीमती स्वान को सड़क पर देखा; वह युद्ध के रंग में रंगी हुई थीं; वह ज़रूर मैसाचुसेट्स, या सिंहली, या ट्रॉम्बर्ट्स के खिलाफ़ किसी विजयी अभियान पर निकली होंगी।" और ऐसा ही उन सभी नए लोगों के बारे में होता जिन्हें मैंने उस कुछ हद तक मिश्रित और कृत्रिम समाज में देखा था, जहाँ उन्हें अक्सर बड़ी मुश्किलों से और अलग-अलग परिवेशों से लाया गया था। माँ तुरंत उनके मूल का पता लगा लेतीं और उनके बारे में ऐसे बात करतीं जैसे वे कोई महंगी खरीदी हुई ट्रॉफी हों, और कहतीं: "फलां-फलां के खिलाफ़ किसी अभियान से वापस लाए गए हैं!"

श्रीमती कॉटार्ड की बात करें तो, मेरे पिता इस बात से चकित थे कि श्रीमती स्वान को इतनी साधारण महिला को अपने घर बुलाने से क्या लाभ हो सकता है, और उन्होंने कहा: "प्रोफेसर की स्थिति के बावजूद,

मुझे यह बात समझ में नहीं आती।" दूसरी ओर, माँ इसे अच्छी तरह समझती थीं; वह जानती थीं कि एक महिला को समाज के उस वर्ग में प्रवेश करने में जो आनंद मिलता है, जो उस वर्ग से भिन्न है जिसमें वह पहले रह चुकी है, वह तब तक अधूरा रहेगा जब तक उसके पास अपने पुराने साथियों को उन अपेक्षाकृत अधिक प्रतिभाशाली लोगों के बारे में सूचित करने का कोई साधन न हो, जिनसे उसने उनका स्थान लिया है। इसलिए, उन्हें एक प्रत्यक्षदर्शी की आवश्यकता है जिसे इस नए, आकर्षक संसार में प्रवेश करने की अनुमति दी जा सके (जैसे कोई भिनभिनाता हुआ कीड़ा फूल में अपना रास्ता बनाता है) और फिर, जैसे-जैसे उसकी यात्राएँ उसे ले जाएँगी, वह ईर्ष्या और आश्चर्य के एक छिपे हुए बीज को फैलाएगी, या कम से कम ऐसी आशा की जा सकती है। श्रीमती कॉटार्ड, जिसे शायद इसी भूमिका के लिए चुना गया था, उन खास लोगों में से एक थी जिन्हें मम्मा (जिन्होंने अपने पिता की कुछ सोच विरासत में पाई थी) 'टेल स्पार्टा' के लोग कहा करती थीं। इसके अलावा —एक और कारण को छोड़कर, जो हमें कई साल बाद पता चला—मैडम स्वान को इस सौम्य, शांत और विनम्र दोस्त को आमंत्रित करते समय इस बात का कोई डर नहीं था कि कहीं वह अपने ड्राइंग रूम में, अपने शानदार दिनों में, किसी गद्दार या प्रतिद्वंद्वी को न ले आ रही हों। वह जानती थीं कि वह व्यस्त महिला, अपने पंख और ताश के पत्तों के साथ, एक ही दोपहर में कितने सारे साधारण लोगों से मिल सकती थी। वह उस प्राणी की प्रसार शक्ति से परिचित थी, और संभाव्यता के नियम के आधार पर अपनी गणना करते हुए, उसे विश्वास हो गया था कि वर्दुरिन परिवार के किसी करीबी को दो-तीन दिनों के भीतर यह खबर जरूर मिल जाएगी कि पेरिस के गवर्नर ने उसके लिए कार्ड छोड़े हैं, या स्वयं श्री वर्दुरिन को यह पता चल जाएगा कि घुड़दौड़ प्रदर्शनी के अध्यक्ष श्री ले हाल्ट डी प्रेसाग्नी

उन्हें, स्वान और उसे, राजा थियोडोसियस के उत्सव में ले गए थे; उसने कल्पना की कि वर्दुरिन परिवार को इन दो घटनाओं की जानकारी होगी, जो उसके लिए बेहद प्रशंसनीय थीं, और केवल इन्हीं की, क्योंकि प्रसिद्धि को साकार करने और उसका पीछा करने के विशिष्ट रूप बहुत कम हैं, हमारे स्वयं के मस्तिष्क की अक्षमता के कारण जो एक ही समय में उन सभी रूपों की कल्पना करने में असमर्थ है, फिर भी हम आशा करते हैं कि प्रसिद्धि हमारे लाभ के लिए एक साथ कई रूप धारण करेगी।

श्रीमती स्वान को तथाकथित 'सरकारी दुनिया' के बाहर कोई सफलता नहीं मिली थी। बुद्धिमान महिलाएं उनके घर नहीं जाती थीं। रिपब्लिकन 'प्रतिष्ठित' लोगों की उपस्थिति उन्हें डराकर भगाती नहीं थी। मेरे बचपन के दिनों में, रूढ़िवादी समाज अत्यंत सांसारिक था, और कोई भी 'अच्छा' घर किसी रिपब्लिकन के लिए अपने दरवाजे नहीं खोलता। ऐसे माहौल में रहने वाले लोग मानते थे कि किसी 'अवसरवादी'—और उससे भी बढ़कर, किसी 'भयानक कट्टरपंथी'—को अपनी पार्टियों में आमंत्रित करना असंभव है, यह बात तेल के दीयों और घोड़े से चलने वाली बसों की तरह हमेशा के लिए बनी रहेगी। लेकिन, एक बहुरूपदर्शक की तरह जिसे समय-समय पर घुमाया जाता है, समाज उन तत्वों को क्रमिक रूप से अलग-अलग क्रमों में व्यवस्थित करता है जिन्हें कोई अचल मानता था, और एक नया पैटर्न बनाता है। मेरे पहले कम्युनियन से पहले, राजनीति में 'सही पक्ष' की महिलाओं को मुलाकातों के दौरान एक बुद्धिमान यहूदी महिला से मिलने का आश्चर्य हुआ था। बहुरंगी शीशे की ये नई व्यवस्थाएँ उस चीज़ से उत्पन्न होती हैं जिसे दार्शनिक 'मानदंड परिवर्तन' कहते हैं। ड्रेफस मामले ने एक और बदलाव लाया, उस समय के कुछ बाद जब मैंने श्रीमती स्वान के यहाँ जाना शुरू किया था, और बहुरंगी शीशे ने एक बार फिर अपने रंग बिखेर दिए। यहूदी संस्कृति से जुड़ी हर चीज़, यहाँ तक कि

स्वयं वह बुद्धिमान महिला भी, पैटर्न से बाहर हो गई, और उसकी जगह विभिन्न अज्ञात राष्ट्रीयताओं के लोग दिखाई देने लगे। पेरिस का सबसे शानदार ड्राइंग रूम एक ऑस्ट्रियाई और कट्टर कैथोलिक राजकुमार का था। यदि ड्रेफस मामले के स्थान पर जर्मनी के साथ युद्ध हुआ होता, तो बहुरंगी शीशे का आधार दूसरी दिशा में मुड़ जाता, और उसका पैटर्न उलट जाता। यहूदियों ने, आम आश्चर्य के बीच, यह साबित कर दिया होता कि वे भी देशभक्त हैं, और वे अपनी स्थिति बनाए रखते, और कोई भी फिर कभी ऑस्ट्रियाई राजकुमार के यहाँ जाने की परवाह नहीं करता, या यह स्वीकार भी नहीं करता कि वह कभी वहाँ गया था। इन सब बातों के बावजूद, समाज में रहने वाले लोग जब भी समाज कुछ समय के लिए स्थिर हो जाता है, तो यह मान लेते हैं कि आगे कोई बदलाव नहीं होगा, ठीक वैसे ही जैसे टेलीफोन के आविष्कार को देखने के बावजूद वे हवाई जहाज पर विश्वास करने से इनकार कर देते हैं। इस बीच, पत्रकारिता के दार्शनिक पिछले युग की निंदा करने में लगे हैं, और न केवल उस युग के उन सुखों की, जिनमें वे लिप्त थे और जो उन्हें भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा लगते हैं, बल्कि उस युग के कलाकारों और दार्शनिकों के कार्यों की भी, जिनका उनकी दृष्टि में अब कोई मूल्य नहीं रह गया है, मानो वे फैशन की क्षणिक चंचलता से अटूट रूप से जुड़े हुए हों। एक बात जो नहीं बदलती वह यह है कि हर समय ऐसा प्रतीत होता है कि 'बड़े बदलाव' हुए हैं। जिस समय मैं श्रीमती स्वान के घर गया था, ड्रेफस का तूफान अभी शुरू नहीं हुआ था, और कुछ प्रमुख यहूदी अत्यंत शक्तिशाली थे। उनमें सबसे शक्तिशाली सर रूफस इसराइल्स थे, जिनकी पत्नी, लेडी इसराइल्स, स्वान की चाची थीं। उसका अपने भतीजे की तरह कोई इतना प्रतिष्ठित परिचित नहीं था, जबकि उसका भतीजा, उससे कोई लगाव न होने के कारण, कभी उसके साथ ज्यादा मेलजोल नहीं रखता था, हालांकि जहाँ

तक ज्ञात था, वह उसका उत्तराधिकारी था। लेकिन स्वान के रिश्तेदारों में से वही एकमात्र ऐसी थी जिसे उसकी सामाजिक स्थिति का कुछ अंदाजा था, बाकी सभी इस मामले में हमेशा अनभिज्ञ रहे, ठीक उसी तरह जैसे हम लंबे समय से अनभिज्ञ थे। जब परिवार के किसी सदस्य का एक हिस्सा 'उच्च समाज' में प्रवेश करता है—जो उसे एक अभूतपूर्व उपलब्धि लगती है, जब तक कि एक दशक बीतने के बाद वह यह नहीं देखता कि उसके बचपन के कई परिचितों ने इसे अलग-अलग तरीकों से और अलग-अलग कारणों से हासिल किया है—तो वह अपने चारों ओर एक अंधकारमय घेरा, एक अज्ञात क्षेत्र बना लेता है, जो उसके साथ रहने वाले सभी लोगों को स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, लेकिन उन लोगों के लिए घोर अंधकार और शून्यता के समान होता है जो उसमें प्रवेश नहीं कर सकते, लेकिन उसके किनारे को छू सकते हैं और उन्हें उसके अस्तित्व का जरा भी संदेह नहीं होता। स्वान की महिला चचेरी बहनों को उनके मेलजोल के बारे में जानकारी देने वाली कोई समाचार एजेंसी न होने के कारण, (उनकी भयानक शादी से पहले) वे पारिवारिक भोजन के दौरान एक-दूसरे को तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ बताती थीं कि उन्होंने 'चचेरे भाई चार्ल्स' से मिलने में एक 'सद्गुणपूर्ण' रविवार बिताया। चार्ल्स को (अपनी समृद्धि से ईर्ष्या करने वाला 'गरीब रिश्तेदार' मानते हुए) वे बाल्ज़ाक की कहानी 'ले कज़िन बेटे' के शीर्षक से प्रेरित होकर मज़ाकिया अंदाज़ में चार्ल्स का नाम देती थीं। हालाँकि, लेडी इसराइल्स उन लोगों के नाम और उनके व्यक्तित्व से भली-भांति परिचित थीं, जिन्होंने स्वान पर मित्रता का ऐसा स्नेह बरसाया था जिससे वे खुलकर ईर्ष्या करती थीं। उनके पति का परिवार, जो महत्व में लगभग रॉथ्सचाइल्ड्स के बराबर था, कई पीढ़ियों से ऑरलियन्स राजकुमारों के मामलों का प्रबंधन करता आ रहा था। लेडी इसराइल्स, जो बेहद धनी थीं, काफ़ी दबदबा था और उन्होंने इसका

इस्तेमाल यह सुनिश्चित करने के लिए किया था कि उनका कोई भी परिचित ओडेट के घर में न आए। केवल एक ने ही चुपके से उनकी बात नहीं मानी थी, वह थीं कॉम्टेस डी मार्सेंट्स। और फिर, दुर्भाग्य से, जब ओडेट श्रीमती डी मार्सेंट्स से मिलने गई, तो लेडी इसराइल्स लगभग उसके पीछे-पीछे कमरे में आ गईं। श्रीमती डी मार्सेंट्स बहुत घबरा गईं। अपनी मर्ज़ी से काम करने की आज़ादी पाने वालों की कायरतापूर्ण बेबसी के साथ, उन्होंने ओडेट से एक शब्द भी नहीं कहा, जिससे ओडेट को उस दुनिया में और आगे बढ़ने का कोई प्रोत्साहन नहीं मिला, जो कि वह बिल्कुल भी नहीं चाहती थी कि उसका स्वागत किया जाए। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के इस पूर्ण अलगाव में, ओडेट को एक अनपढ़ 'हल्की-फुल्की महिला' के रूप में देखा जाता रहा, जो उन सम्मानित महिलाओं से बिल्कुल अलग थी, जो वंशावली के हर छोटे से छोटे पहलू में 'संपूर्ण' थीं और जीवनियों और संस्मरणों को पढ़कर उन कुलीन संबंधों की प्यास बुझाने का प्रयास करती थीं, जो वास्तविक जीवन में उन्हें नहीं मिल पाए थे। और स्वान, अपनी ओर से, निस्संदेह वह प्रेमी बना रहा, जिसकी नज़र में एक पुरानी प्रेमिका की ये सभी विचित्रताएँ प्यारी या कम से कम आपत्तिजनक नहीं लगती थीं, क्योंकि मैंने अक्सर उसकी पत्नी को ऐसी बातें कहते सुना है जो वास्तव में सामाजिक विधर्म थीं, और उसने (चाहे उसके प्रति बचे हुए स्नेह के कारण, समाज के प्रति अनादर के कारण या उसे परिपूर्ण बनाने के प्रयास की थकान के कारण) उन्हें सुधारने का प्रयास नहीं किया। यह शायद उसी सरलता का एक और रूप था जिसने हमें कॉम्ब्रे में लंबे समय तक गुमराह किया था, और जिसका अब यह प्रभाव था कि यद्यपि वह स्वयं कई प्रतिष्ठित लोगों को जानता था, फिर भी अपनी पत्नी के ड्राइंग रूम में बातचीत के दौरान उसने हमें यह जताने का प्रयास नहीं किया कि वे लोग उसके लिए ज़रा भी महत्वपूर्ण नहीं हैं।

वास्तव में, स्वान के लिए उनका महत्व पहले से भी कम हो गया था, क्योंकि उसके जीवन का केंद्र बिंदु बदल चुका था। किसी भी मामले में, ओडेट को सामाजिक भेदों की इतनी कम समझ थी कि यदि डचेस, उसकी चचेरी बहन, के बाद प्रिंसेस डी गुएरमांटेस का नाम लिया जाता, तो वह आश्चर्य से कहती, "तो वे राजकुमार हैं, है ना?" "अरे, वे तो एक पायदान ऊपर चढ़ गए।" यदि कोई ड्यूक डी चार्ट्रेस के बारे में बात करते हुए "राजकुमार" कहता, तो वह उसे यह कहकर सही करती, "ड्यूक, आपका मतलब है; वह ड्यूक डी चार्ट्रेस हैं, राजकुमार नहीं।" पेरिस के कॉम्टे के बेटे ड्यूक डी'ऑरलियन्स के बारे में वह कहतीं, "यह तो अजीब बात है; बेटा बाप से ऊँचा है!" और साथ ही, अंग्रेज़ों के प्रति अत्यधिक लगाव के कारण, वह आगे कहतीं, "ये राजपरिवार तो बेहद उलझन भरे हैं!" वहीं, जब किसी ने उनसे पूछा कि गुएरमांटेस परिवार किस प्रांत से आया है, तो उन्होंने जवाब दिया, "ऐस्ने से।"

लेकिन, ओडेट के मामले में, स्वान न केवल उसकी शिक्षा की कमियों को, बल्कि उसकी बुद्धि के सामान्य साधारण स्तर को भी पूरी तरह से अनदेखा करता था। इससे भी बढ़कर; जब भी ओडेट कोई बेतुकी कहानी सुनाती, स्वान अपनी पत्नी को संतुष्टि, आनंद और लगभग प्रशंसा के भाव से सुनता रहता, जिसमें उसके प्रति उसकी चाहत का कुछ अंश अवश्य समाया होता; जबकि उसी बातचीत में, स्वान द्वारा कही गई कोई भी सूक्ष्म, यहाँ तक कि गहरी बात को भी, ओडेट हमेशा की तरह अरुचि, रूखेपन और अधीरता से सुनती और कभी-कभी तीखे शब्दों में उसका खंडन भी करती। और हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि अशिष्टता द्वारा परिष्कार का यह दासत्व कई घरों में आम बात है, जब हम इसके विपरीत उन सभी श्रेष्ठ महिलाओं के बारे में सोचते हैं जो एक गंवार के बहकावे में आ जाती हैं, जो उनकी सबसे कोमल बातों की भी निर्दयता से आलोचना

करता है, जबकि वे उसके सबसे कमजोर चुटकुलों पर असीम प्रेम से आनंदित हो जाती हैं। उन कारणों पर फिर से विचार करने के लिए जिन्होंने इस दौरान ओडेट को फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में प्रवेश करने से रोका, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सामाजिक परिदृश्य में आए नवीनतम बदलाव कई घोटालों के कारण हुए थे। जिन महिलाओं के घरों में लोग पूरे भरोसे के साथ जाते थे, वे आम वेश्याएं निकलीं, या ब्रिटिश जासूस भी। इसलिए, कुछ समय तक यह उम्मीद की जा सकती थी (कम से कम ऐसा माना जाता था) कि लोग सबसे पहले एक अच्छी स्थिति में हों, नियमित हों, स्थिर हों और जवाबदेह हों। ओडेट उन सभी चीजों का प्रतिनिधित्व करती थी जिनसे लोगों ने अभी-अभी संबंध तोड़े थे, और संयोगवश उन्हें तुरंत फिर से जोड़ने की कोशिश कर रही थी (क्योंकि पुरुषों का स्वभाव दिन-प्रतिदिन बदलता नहीं है, वे हर नई व्यवस्था में पुरानी व्यवस्था की निरंतरता चाहते हैं), लेकिन उन्हें एक ऐसे रूप में फिर से जोड़ने की कोशिश कर रही थी जिससे लोग भोलेपन से धोखा खा जाएं और यह मान लें कि यह आपदा से पहले वाला समाज नहीं रहा। हालांकि, उस समाज के बलि के बकरे और ओडेट में बहुत समानता थी। समाज में सक्रिय लोग बहुत ही अदूरदर्शी होते हैं; जिस क्षण वे उन इस्राएली महिलाओं से संबंध तोड़ लेते हैं जिन्हें वे जानते थे, और जब वे यह सवाल कर रहे होते हैं कि अपने जीवन में आए इस खालीपन को कैसे भरें, तभी अचानक, मानो किसी तूफानी रात के अचानक आए आशीर्वाद से, एक नई महिला, वह भी इस्राएली, उनके जीवन में आ जाती है; लेकिन अपनी नवीनता के कारण, वह उनके मन में अपनी पूर्ववर्तियों से, उन चीजों से नहीं जुड़ती जिन्हें वे त्यागने के लिए दृढ़ विश्वास रखते हैं। वह उनसे अपने ईश्वर का सम्मान करने की अपेक्षा नहीं करती। लोग उसे अपना लेते हैं। जब मैं पहली बार ओडेट से मिलने जाता था, उस समय

यहूदी-विरोध का कोई सवाल ही नहीं था। लेकिन वह उससे इतनी मिलती-जुलती थी कि लोगों को उन चीजों की याद दिला देती थी जिनसे वे कुछ समय के लिए बचना चाहते थे।

जहाँ तक स्वान की बात है, वे अब भी अपने कई पुराने परिचितों से अक्सर मिलते रहते थे, जो ज़ाहिर तौर पर सभी उच्च कोटि के लोग थे। फिर भी, जब उन्होंने हमें उन लोगों के बारे में बताया जिनसे वे अभी-अभी मिले थे, तो मैंने गौर किया कि पुराने दिनों में जिन लोगों को वे जानते थे, उनमें से उनका चुनाव उसी तरह के कलात्मक और ऐतिहासिक रुचि से प्रेरित था, जिसने उन्हें एक संग्राहक के रूप में प्रेरित किया था। और यह देखकर कि अक्सर कोई न कोई प्रतिष्ठित महिला, जिसकी प्रतिष्ठा फीकी पड़ रही थी, उनकी रुचि का कारण बनती थी, या बाल्ज़ाक के उपन्यासों में से कोई एक उनकी दादी को समर्पित था (जैसे वे शैतोब्रिएंड द्वारा लिखे गए चित्र को भी खरीद लेते थे), मुझे संदेह हुआ कि कॉम्ब्रे में हमने एक गलती को, स्वान को महज़ एक स्टॉकब्रोकर समझने की गलती को, जो समाज में नहीं जाता था, एक और गलती से बदल दिया था, जब हमने उन्हें पेरिस के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक मान लिया था। कॉम्टे डी पेरिस का मित्र होना कोई मायने नहीं रखता था। क्या दुनिया ऐसे 'राजकुमारों के मित्रों' से भरी नहीं है, जिन्हें किसी भी 'विशिष्ट' घर में स्वीकार नहीं किया जाएगा? राजकुमार स्वयं को राजकुमार मानते हैं और अभिमानी नहीं होते; इसके अलावा, वे स्वयं को अपने शाही रक्त के अलावा अन्य सभी चीजों से इतना ऊपर समझते हैं कि बड़े रईस और 'व्यापारी' उनके सामने लगभग एक समान स्तर पर दिखाई देते हैं।

लेकिन स्वान इससे भी आगे बढ़ गए; समाज में, जैसा भी वह था, अतीत द्वारा अंकित नामों पर ध्यान केंद्रित करके, जो आज भी पढ़े जाने बाकी थे, केवल एक साधारण कलात्मक और साहित्यिक आनंद की तलाश

करने से संतुष्ट न होकर, उन्होंने विभिन्न तत्वों को एक साथ लाकर, इधर-उधर से संयोगवश चुने गए लोगों को इकट्ठा करके, एक तरह से सामाजिक गुलदस्ते सजाने के थोड़े अशिष्ट मनोरंजन में लिप्त हो गए। समाजशास्त्र के हल्के पक्ष (या स्वान के लिए जो हल्का पक्ष था) में किए गए इन प्रयोगों ने उनकी पत्नी की प्रत्येक सहेली में एक समान प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं की। "मैं कॉटार्ड्स को डचेस डी वेंडोम से मिलवाने के बारे में सोच रहा हूँ," वे मैडम बोंटेम्प्स से हँसते हुए कहते थे, एक ऐसे शौकीन व्यक्ति के लहजे में जिसने लौंग के स्थान पर लाल मिर्च का प्रयोग करने के बारे में सोचा हो और उसे आजमाने का इरादा रखता हो। लेकिन यह योजना, जो वास्तव में कॉटार्ड परिवार के लिए एक पुराने ज़माने के हास्यास्पद दृश्य के रूप में दिखाई देनी थी, श्रीमती बोंटेम्प्स को बेहद क्रोधित करने की क्षमता रखती थी। उन्हें हाल ही में स्वान्स द्वारा डचेस डी वेंडोम से मिलवाया गया था, और उन्हें यह उतना ही सुखद लगा जितना कि यह उनके लिए स्वाभाविक था। कॉटार्ड परिवार को जब उन्होंने इस घटना के बारे में बताया, तो इससे प्रसिद्धि पाने का विचार उनकी खुशी में कोई कमी नहीं थी। लेकिन उन हाल ही में सम्मानित व्यक्तियों की तरह, जो अपना सम्मान प्राप्त करने के बाद सम्मान के स्रोत को बंद करना चाहते हैं, श्रीमती बोंटेम्प्स चाहती थीं कि उनके बाद उनके मित्रों के दायरे में किसी और को राजकुमारी से परिचित न कराया जाए। उसने (स्वयं ही मन ही मन) स्वान के अनैतिक स्वाद की निंदा की, जो अपनी एक तुच्छ सौंदर्यपरक सनक को पूरा करने के लिए, उसे एक ही झटके में वह सारी धूल उड़ाने के लिए मजबूर कर रहा था जो वह डचेस डी वेंडोम के बारे में बताते समय कॉटार्ड्स की आँखों में उड़ाना चाहती थी। वह अपने पति को यह बताने की हिम्मत कैसे कर सकती थी कि प्रोफेसर और उनकी पत्नी भी इस आनंद में शामिल होने वाले हैं, जिसके बारे में उसने उससे ऐसे

डींग मारी थी मानो यह अनोखा हो। और फिर भी, अगर कॉटार्ड्स को यह पता चल जाता कि उन्हें गंभीरता से नहीं बल्कि अपने मेज़बान के मनोरंजन के लिए आमंत्रित किया जा रहा है! यह सच है कि बोंटेम्प्स को भी इसी कारण से आमंत्रित किया गया था, लेकिन स्वान ने अभिजात वर्ग से वह शाश्वत 'डॉन जुआन' वाली भावना प्राप्त कर ली थी, जो दो महत्वहीन महिलाओं से व्यवहार करते समय उनमें से प्रत्येक को यह विश्वास दिला देती है कि केवल वही गंभीर रूप से प्यार की जाती है, और उसने श्रीमती से बात की थी। डचेस डी वेंडोम के बारे में बोंटेम्प्स एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बात कर रहे थे जिनसे डिनर पर मिलना तय था। कुछ हफ़्ते बाद श्रीमती स्वान ने कहा, "हाँ, हमने तय कर लिया है कि राजकुमारी को कॉटार्ड्स के साथ यहाँ बुलाया जाए। मेरे पति को लगता है कि इस संयोग से हमें कुछ मज़ेदार देखने को मिल सकता है।" क्योंकि अगर उन्होंने 'छोटे समूह' से श्रीमती वर्दुरिन की कुछ प्रिय आदतें, जैसे कि सभी श्रद्धालुओं को सुनाने के लिए ज़ोर से चिल्लाना, बरकरार रखी थीं, तो साथ ही साथ उन्होंने कुछ ऐसे भावों का भी इस्तेमाल किया, जैसे 'संयोग', जो गुएरमांटेस समूह को प्रिय थे। इस तरह वह अनजाने में और दूर से ही, जैसे समुद्र चंद्रमा से हिलता है, उनके आकर्षण को महसूस करती थीं, हालाँकि वह उनके करीब स्पष्ट रूप से नहीं आती थीं। स्वान ने पूछा, "हाँ, कॉटार्ड्स और डचेस डी वेंडोम। क्या आपको नहीं लगता कि यह काफी मज़ेदार हो सकता है?" "मुझे लगता है कि वे लोग बिल्कुल बेमेल होंगे, और इससे बहुत परेशानी ही होगी; मेरा कहना है कि आग से नहीं खेलना चाहिए!" श्रीमती बोंटेम्प्स गुस्से से भड़क उठीं। उन्हें और उनके पति को, प्रिंस डी'एग्रीजेंट के साथ, इस रात्रिभोज में आमंत्रित किया गया था, जिसका वर्णन श्रीमती बोंटेम्प्स और कॉटार्ड दोनों के पास अलग-अलग तरीके से करने के लिए थे, यह इस बात पर निर्भर करता था

कि वे किसे इसके बारे में बता रहे थे। एक तरीके से श्रीमती बोंटेम्प्स और कॉटार्ड, जब उनसे पूछा जाता कि पार्टी में और कौन-कौन था, तो वे सहजता से कहते: "केवल प्रिंस डी'एग्रीजेंट; यह सब बहुत ही निजी था।" लेकिन दुर्भाग्य से, कुछ अन्य लोग भी थे जिन्हें शायद बेहतर जानकारी थी (एक बार तो किसी ने कॉटार्ड से पूछा था: "लेकिन क्या बोंटेम्प्स भी वहाँ नहीं थे?" "ओह, मैं उन्हें भूल गया था," कॉटार्ड ने उस असंवेदनशील प्रश्नकर्ता के सामने शर्म से स्वीकार किया था, जिसे उन्होंने बाद में निंदा करने वालों और बुराई फैलाने वालों में गिना)। इन बातों के लिए बोंटेम्प्स और कॉटार्ड्स ने बिना किसी आपसी समझौते के एक ऐसा संस्करण अपना लिया था, जिसका ढांचा दोनों पक्षों के लिए एक जैसा था, केवल उनके अपने नाम बदले हुए थे। "देखने दीजिए;" कॉटार्ड कहते, "वहाँ हमारे मेज़बान और मेज़बानी करने वाले थे, ड्यूक और डचेस डी वेंडोम—" (संतुष्ट मुस्कान के साथ) "प्रोफेसर और श्रीमती कॉटार्ड, और कसम से, भगवान ही जाने वे वहाँ कैसे पहुँचे, क्योंकि वे सूप में बाल की तरह बेमेल लग रहे थे, श्रीमान और श्रीमती बोंटेम्प्स!" श्रीमती बोंटेम्प्स भी ठीक इसी तरह का एक किस्सा सुनातीं, बस फर्क इतना था कि डचेस डी वेंडोम और प्रिंस डी एग्रीजेंट के बीच श्रीमान और श्रीमती बोंटेम्प्स का नाम संतुष्टि भरे लहजे में लिया जाता था, जबकि 'अनौपचारिक मेहमान', जिन पर अंत में वह खुद को आमंत्रित करने का आरोप लगाती थीं और जिन्होंने पार्टी को पूरी तरह से खराब कर दिया था, वे कॉटार्ड्स थे।

जब स्वान लोगों से मिलने जाता था, तो अक्सर खाने से पहले उसके पास बहुत कम समय बचता था। शाम के उस समय, छह बजे, जब पुराने दिनों में वह बहुत दुखी महसूस करता था, वह अब खुद से यह नहीं पूछता था कि ओडेट क्या कर रही होगी, और उसे इस बात की ज़रा भी चिंता नहीं होती थी कि उसके साथ कोई है या वह बाहर गई है। उसे कभी-कभी

याद आता था कि सालों पहले उसने एक बार ओडेट द्वारा फोर्शेविल को लिखे पत्र के लिफाफे को पढ़ने की कोशिश की थी। लेकिन यह याद उसे अच्छी नहीं लगती थी, और इसमें महसूस होने वाली शर्मिंदगी की गहराई में जाने के बजाय, वह थोड़ा मुंह बनाकर, होंठों के कोनों को टेढ़ा करके और ज़रूरत पड़ने पर सिर हिलाकर यह जताना पसंद करता था कि "इस सब से क्या फर्क पड़ता है?" वास्तव में, अब वह सोचता था कि वह परिकल्पना जिसके कारण वह अतीत में अक्सर गतिरोध में आ जाता था, जिसके अनुसार केवल उसकी ईर्ष्यालु कल्पना ही ओडेट के निर्दोष जीवन को धूमिल कर रही थी—वह परिकल्पना (जो अंततः लाभकारी थी, क्योंकि जब तक उसकी प्रेम संबंधी बीमारी बनी रही, इसने उसके कष्टों को काल्पनिक बनाकर कम कर दिया था) सत्य नहीं थी, बल्कि उसकी ईर्ष्या ही थी जिसने चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में देखा था, और यदि ओडेट ने उससे उतना प्यार किया था जितना उसने सोचा था, तो उसने उसे उससे कहीं अधिक धोखा भी दिया था। पहले, जब उसकी पीड़ाएँ अभी भी तीव्र थीं, उसने प्रतिज्ञा की थी कि जैसे ही वह ओडेट से प्रेम करना बंद कर देगा, और उसे नाराज़ करने या उसे यह विश्वास दिलाने से डरना बंद कर देगा कि वह उससे जितना प्यार करता है उससे कहीं अधिक प्यार करता है, वह केवल सत्य के प्रति अपने प्रेम और एक ऐतिहासिक बिंदु के रूप में, उससे यह स्पष्ट करने का संतोष प्राप्त करेगा कि क्या उस दिन फोर्शेविल उसके कमरे में था जब उसने घंटी बजाई थी और खिड़की पर दस्तक दी थी लेकिन उसे अंदर नहीं आने दिया गया था, और उसने फोर्शेविल को लिखा था कि उसका एक चाचा आया था। लेकिन यह इतना दिलचस्प सवाल, जिसका हल वह अपनी ईर्ष्या शांत होने तक ही निकालने का प्रयास कर रहा था, स्वान की नज़रों में ठीक उसी समय पूरी तरह से बेमानी हो गया जब उसकी ईर्ष्या शांत हो गई। हालाँकि, तुरंत

नहीं। अब उसे ओडेट के प्रति उस दिन की याद के अलावा कोई और ईर्ष्या नहीं थी, उस दोपहर की याद जो उसने रू ला पेरूज़ के छोटे से घर पर व्यर्थ दस्तक देने में बिताई थी; ऐसा लगता था मानो उसकी ईर्ष्या, जो उन बीमारियों से कुछ हद तक मिलती-जुलती थी जिनका संक्रमण किसी खास व्यक्ति के बजाय किसी खास जगह, किसी खास घर में पनपता है, का निशाना ओडेट खुद नहीं बल्कि वह दिन, वह घंटा था जो अतीत में कभी नहीं बदला जा सकता, जब स्वान बारी-बारी से उसके घर के हर दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। आप कह सकते थे कि उस दिन, उस घंटे ने ही स्वान के उस प्रेममय व्यक्तित्व के कुछ आखिरी अंशों को सहेज कर रखा था, और अब वह उन्हें वहीं से फिर से पा सकता था। लंबे समय से उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि ओडेट उसके साथ बेवफा थी, और अब भी बेवफा है। फिर भी वह कई सालों से ओडेट के पुराने नौकरों से पूछताछ करता रहा, क्योंकि उसके मन में यह जानने की तीव्र जिज्ञासा थी कि क्या उस दिन, इतने समय पहले, शाम छह बजे, ओडेट फोर्शेविल के साथ बिस्तर पर थी। फिर वह जिज्ञासा अपने आप ही गायब हो गई, लेकिन उसने अपनी खोजबीन नहीं छोड़ी। वह उन चीजों को खोजने का प्रयास जारी रखता रहा जिनमें अब उसकी कोई रुचि नहीं थी, क्योंकि उसका पुराना अहंकार, हालांकि वह जीर्णता की चरम सीमा तक सिकुड़ चुका था, फिर भी यंत्रवत रूप से कार्य करता था, उन चिंताओं के मार्ग का अनुसरण करता था जिन्हें उसने पूरी तरह से त्याग दिया था, जिसके कारण स्वान अब उस पीड़ा का अंदाजा भी नहीं लगा पा रहा था - जो कभी इतनी तीव्र थी कि वह उससे मुक्ति पाने की कल्पना भी नहीं कर पा रहा था, कि केवल उसकी प्रेमिका की मृत्यु (वह मृत्यु, जैसा कि इस कहानी में आगे एक क्रूर उदाहरण से दिखाया जाएगा, ईर्ष्या के कारण होने वाली पीड़ाओं को किसी भी तरह से कम नहीं करती) ही उसे

अपने जीवन के उस मार्ग को सुगम बनाने में सक्षम प्रतीत होती थी, जो उस समय उसके लिए दुर्गम रूप से अवरुद्ध था।

लेकिन ओडेट के जीवन के उन प्रसंगों को उजागर करना, जिनके कारण स्वान को कष्ट सहने पड़े थे, स्वान की एकमात्र महत्वाकांक्षा नहीं थी; उसके मन में एक और महत्वाकांक्षा भी थी कि जब ओडेट से उसका प्रेम समाप्त हो जाएगा और उसे उससे डरना बंद हो जाएगा, तब वह अपने कष्टों का बदला लेगा; और इस दूसरी महत्वाकांक्षा को पूरा करने का अवसर अभी-अभी आया था, क्योंकि स्वान को एक दूसरी स्त्री से प्रेम हो गया था, एक ऐसी स्त्री जिसने उसे ईर्ष्या का कारण तो दिया, पर फिर भी उसे ईर्ष्यालु बना दिया, क्योंकि अब वह अपने प्रेम करने के तरीके को बदलने में असमर्थ था, और जिस तरीके से उसने ओडेट के साथ प्रेम किया था, वही तरीका अब उसे किसी और के साथ भी अपनाना था। स्वान की ईर्ष्या को फिर से जगाने के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह स्त्री बेवफा हो, इतना ही काफी था कि किसी भी कारण से वह उससे अलग हो जाए, उदाहरण के लिए किसी पार्टी में, जहाँ वह संभवतः आनंद ले रही हो। यह उसके भीतर पुराने दर्द को फिर से जगाने के लिए काफी था, उसके प्रेम का वह दुखद और असंगत उभार, जिसने स्वान को हमेशा उस स्त्री से दूर रखा जो वास्तव में वह थी, मानो असंभव को पाने की लालसा हो (वह युवती वास्तव में उसके लिए क्या महसूस करती थी, वह छिपी हुई तड़प जो उसके दिनों को जकड़े हुए थी, उसके दिल के गुप्त कोने)। स्वान और उसकी प्रेमिका के बीच, इस दर्द ने पहले से मौजूद संदेहों का एक अटूट ढेर जमा कर दिया था, जिसका कारण ओडेट थी, या शायद कोई और जो ओडेट से पहले रही हो, जिसने इस बूढ़े प्रेमी को अपनी प्रेमिका को केवल 'उस स्त्री जिसने उसे ईर्ष्या दिलाई' की पारंपरिक और सामूहिक कल्पना में ही जानने दिया, जिसमें उसने मनमाने ढंग से

अपने नए प्यार को साकार कर दिया था। हालांकि, अक्सर स्वान अपनी ईर्ष्या पर काल्पनिक बेवफाई पर विश्वास करने का आरोप लगाता था; लेकिन फिर उसे याद आता था कि उसने ओडेट को भी यही तर्क दिया था और उसमें वह गलत था। और इसलिए, जिस युवती से वह प्रेम करता था, उसके द्वारा उसके साथ न रहने के दौरान किए गए हर कार्य की मासूमियत उसकी नज़रों में नष्ट हो गई। लेकिन उस समय उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि कभी उसका प्रेम उससे विमुख हो जाए, जिसे वह उस समय अपनी भावी पत्नी नहीं मानता था, तो वह उसके प्रति निर्दयतापूर्वक ऐसी उदासीनता प्रदर्शित करेगा जो अंततः सच्ची साबित होगी, ताकि वह अपने उस स्वाभिमान का बदला ले सके जिसे उसने इतने लंबे समय तक ठेस पहुँचाई थी—उन प्रतिशोधों के बारे में जो वह अब बिना किसी जोखिम के कर सकता था (क्योंकि उसके वचन पर विश्वास किए जाने और ओडेट के साथ उन अंतरंग क्षणों से वंचित होने से उसे क्या हानि हो सकती थी जो कभी उसके लिए इतने आवश्यक थे), उन प्रतिशोधों के बारे में उसने अब और नहीं सोचा; उसके प्रेम के साथ ही यह दिखाने की इच्छा भी लुप्त हो गई थी कि वह अब प्रेम में नहीं है। और वह व्यक्ति, जो ओडेट के हाथों पीड़ित होने के दौरान, एक दिन उसे यह दिखाने के लिए बहुत उत्सुक था कि वह एक प्रतिद्वंद्वी के प्यार में पड़ गया है, अब जब वह ऐसा करने की स्थिति में था, तो उसने असीम सावधानी बरती ताकि उसकी पत्नी को इस नए प्यार के अस्तित्व का संदेह न हो।

* * *

अब से मुझे केवल उन चाय पार्टियों में ही भाग नहीं लेना था, जिनके कारण मुझे पहले गिलबर्ट को मुझे छोड़कर समय से पहले घर जाते देखने का दुख होता था, बल्कि उसकी अपनी माँ के साथ होने वाली मुलाकातों में भी भाग लेना था, चाहे वह टहलने जाना हो या किसी दोपहर की पार्टी

में जाना हो, जिसके कारण वह शैंप्स-एलिसी नहीं आ पाती थी और उन दिनों में मैं उससे वंचित रह जाता था जब मैं अकेले लॉन में घूमता था या लकड़ी के घोड़ों के सामने खड़ा रहता था। अब से श्रीमान और श्रीमती स्वान मुझे इन सैर-सपाटे में ले जाने लगे, मुझे उनकी लैंडौ में जगह मिलती थी, और वास्तव में वे मुझसे ही पूछते थे कि क्या मैं थिएटर जाना पसंद करूँगा, गिलबर्ट की किसी सहेली के घर नृत्य की कक्षा में जाना पसंद करूँगा, उसके माता-पिता के दोस्तों द्वारा आयोजित किसी सामाजिक समारोह में जाना पसंद करूँगा (जिसे ओडेट 'एक छोटी सी सभा' कहती थी) या सेंट-डेनिस में मकबरों का दर्शन करना पसंद करूँगा।

जब भी मैं स्वान्स के साथ कहीं जाता, मैं दोपहर के भोजन के समय घर पहुँच जाता, जिसे श्रीमती स्वान 'दोपहर का भोजन' कहती थीं। चूंकि साढ़े बारह बजे से पहले किसी के आने की उम्मीद नहीं होती थी, जबकि मेरे माता-पिता उन दिनों सवा ग्यारह बजे भोजन करते थे, इसलिए उनके मेज से उठने के बाद ही मैं उस आलीशान कमरे की ओर जाता, जो किसी भी समय काफी सुनसान रहता था, लेकिन उस समय तो और भी ज्यादा, जब सब लोग घर के अंदर चले जाते थे। यहां तक कि पाले वाले सर्दियों के दिनों में भी, अगर मौसम ठीक रहता, तो मैं हर कुछ मिनटों में चारवेट की खूबसूरत टाई की गांठ कसता और यह देखता रहता कि मेरे पॉलिश किए हुए जूते गंदे तो नहीं हो रहे हैं, और गलियों में इधर-उधर घूमता रहता, जब तक कि घंटे के सत्ताईस मिनट नहीं बज जाते। मैं दूर से स्वान्स के छोटे से बगीचे में नंगी शाखाओं वाले पेड़ों से सूरज की रोशनी को पाले की तरह चमकते हुए देख सकता था। यह सच है कि बगीचे में केवल दो ही पेड़ थे। उस असामान्य समय ने दृश्य को एक नए रूप में प्रस्तुत किया। प्रकृति के इन सुखों में (आदतों के दमन और वास्तव में मेरी शारीरिक भूख से और भी तीव्र हो गए थे) श्रीमती स्वान के साथ

दोपहर के भोजन पर बैठने की रोमांचक संभावना समाहित हो गई; इसने उन्हें कम नहीं किया, बल्कि उन पर नियंत्रण करके उन्हें अपनी सेवा में लगा दिया; इसलिए यदि इस समय, जब मैं आमतौर पर उन्हें महसूस नहीं करता था, तो अब मुझे सुहावना मौसम, ठंड, शीत ऋतु की धूप का अनुभव हो रहा था, तो यह सब मलाई वाले अंडों की एक तरह की प्रस्तावना थी, एक परत की तरह, एक ठंडी और रंगीन चमक जो उस रहस्यमय चैपल की सजावट पर लगाई गई थी जो श्रीमती स्वान का निवास स्थान था, और जिसके हृदय में, इसके विपरीत, इतनी गर्माहट, इतनी सुगंध और फूल थे।

साढ़े बारह बजे मैं आखिरकार उस घर में प्रवेश करने का निश्चय कर लेता, जो एक विशाल क्रिसमस मोजे की तरह, मुझे अलौकिक आनंद से भर देने के लिए तैयार प्रतीत होता था। (वैसे, फ्रांसीसी नाम 'नोएल' श्रीमती स्वान और गिल्बर्ट को ज्ञात नहीं था, जिन्होंने इसके स्थान पर अंग्रेजी नाम 'क्रिसमस' का प्रयोग किया था, और वे केवल 'क्रिसमस पुडिंग', लोगों द्वारा उन्हें दिए गए 'क्रिसमस उपहार' और 'क्रिसमस के लिए' कहीं जाने की बात करती थीं - जिसका विचार मुझे दुख से पागल कर देता था। घर पर भी, मैं 'नोएल' शब्द का प्रयोग करना अपमानजनक समझता था, और हमेशा 'क्रिसमस' कहता था, जिसे मेरे पिता अत्यंत मूर्खतापूर्ण मानते थे।)

पहले तो मुझे किसी से मुलाकात नहीं हुई, सिवाय एक नौकर के, जो मुझे कई बड़े ड्राइंग रूम से गुजारने के बाद एक छोटे, खाली कमरे में ले गया, जिसकी खिड़कियाँ दोपहर की नीली रोशनी में पहले से ही स्वप्निल सी लग रही थीं; मैं वहाँ ऑर्किड, गुलाब और वायलेट के बीच अकेला रह गया, जो उन लोगों की तरह थे जिन्हें आपके बगल वाले कमरे में इंतजार कराया जाता है लेकिन वे आपको नहीं जानते, उन्होंने एक खामोशी बनाए रखी जिसे जीवित प्राणियों के रूप में उनकी विशिष्टता ने और भी

प्रभावशाली बना दिया, और वे सफेद संगमरमर के एक बेसिन में क्रिस्टल की स्क्रीन के पीछे कीमती ढंग से प्रदर्शित कोयलों की धधकती आग की गर्मी को ठंडेपन से ग्रहण कर रहे थे, जिस पर वह कभी-कभी अपने खतरनाक माणिक बिखेर रहा था।

मैं बैठ गया था, लेकिन दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनकर झट से उठ खड़ा हुआ; एक और नौकर आया, फिर तीसरा, और उनके व्यर्थ के डराने-धमकाने वाले आने-जाने का नतीजा बस इतना ही निकला कि उन्होंने आग में थोड़ा और कोयला डाला या बर्तनों में थोड़ा पानी भर दिया। वे चले गए, और मैं अकेला रह गया, जैसे ही वह दरवाज़ा बंद हुआ जिसे श्रीमती स्वान ज़रूर जल्द ही खोलने वाली थीं। सच कहूँ तो, मैं किसी जादूगर की गुफा में भी इतना असहज नहीं होता जितना इस छोटे से प्रतीक्षालय में, जहाँ आग मुझे क्लिंगसोर की प्रयोगशाला की तरह रासायनिक रूपांतरण करती हुई प्रतीत हो रही थी। कदमों की आहट फिर सुनाई दी, मैं नहीं उठा, मुझे लगा कि कोई और नौकर ही होगा; लेकिन श्रीमती स्वान थीं। "क्या! बिल्कुल अकेले? अब क्या करूँ; मेरी बेचारी पत्नी को तो समय का मतलब ही नहीं पता! एक बजने में दस मिनट बाकी हैं। वह हर दिन देर करती जा रही हैं। और आप देखेंगे, वह बिना किसी जल्दी के आराम से अंदर आएंगी, और सोचेंगी कि उनके पास बहुत समय है।" और चूंकि वह अभी भी न्यूरिटिस से पीड़ित थे, और चूंकि वह थोड़े हास्यास्पद होते जा रहे थे, इसलिए इतनी समय की पाबंद न होने वाली पत्नी का होना, जो जंगल से देर से आती थी, अपने दर्जी के पास सब कुछ भूल जाती थी और कभी भी दोपहर के भोजन के लिए समय पर नहीं आती थी, स्वान को अपने पाचन के लिए चिंतित करता था लेकिन उनके आत्मसम्मान को बढ़ाता था।

उन्होंने मुझे अपनी हाल ही में खरीदी गई वस्तुएँ दिखाईं और उनकी महत्ता

समझाई, लेकिन उस समय तक बिना भोजन के रहने की अपरिचितता के साथ-साथ मेरी भावनाएँ मेरे मन में उमड़ रही थीं, जिससे मेरा मन खाली हो गया था। मैं बोल तो पा रहा था, पर सुन नहीं पा रहा था। खैर, स्वान के पास मौजूद कलाकृतियों के लिए इतना ही काफी था कि वे उनके घर में थीं और दोपहर के भोजन से पहले के उस सुखद पल का हिस्सा थीं। जियोकोंडा की मूर्ति भी वहाँ प्रकट हो जाती तो भी मुझे उतना ही आनंद मिलता जितना मैडम स्वान के किसी गाउन या इत्र की बोतल से मिलता है।

मैं इंतज़ार करता रहा, कभी अकेला तो कभी स्वान के साथ, और अक्सर गिलबर्ट भी हमारे साथ रहने के लिए आती थी। उन सभी भव्य दृश्यों द्वारा मेरे लिए तैयार की गई श्रीमती स्वान का आगमन (जैसा कि मुझे लगा) वास्तव में कुछ बहुत बड़ा होना चाहिए था। मैंने ज़रा सी भी आवाज़ सुनने के लिए अपने कान लगाए। लेकिन कोई भी उतनी ऊँची आवाज़ नहीं सुन पाता जितनी उम्मीद की जा रही थी - एक गिरजाघर, तूफ़ान में एक लहर, हवा में एक नर्तकी की छलांग; उन वर्दीधारी सेवकों के बाद, जो उस गायक मंडली का संकेत दे रहे थे जिसका जुलूस मंच पर प्रवेश करता है और साथ ही रानी के अंतिम आगमन को कम करता है, श्रीमती स्वान, चुपके से रेंगती हुई, एक छोटे से ऊदबिलाव की खाल के कोट में, अपने घूंघट को नीचे करके अपनी ठंड से गुलाबी हो चुकी नाक को ढके हुए, मेरी कल्पना में बसी उम्मीदों को पूरा नहीं कर पाईं।

लेकिन अगर वह पूरी सुबह घर पर ही रहती, तो जब वह ड्राइंग रूम में आती तो वह चमकीले रंग के क्रेप-डी-चाइन के रैपर में लिपटी होती, जो मुझे उसकी किसी भी पोशाक से कहीं अधिक सुंदर लगती।

कभी-कभी स्वान परिवार दोपहर भर घर में ही रहने का फैसला करता था, और फिर, चूंकि हमने दोपहर का भोजन बहुत देर से किया था, मुझे

जल्द ही बगीचे की दीवार के पार उस दिन के सूरज को डूबते हुए देखना पड़ता था, जो मुझे अन्य दिनों से अलग प्रतीत होता था; तब नौकर व्यर्थ ही हर आकार और प्रकार के दीपक लाते थे, और उन्हें किसी कंसोल, कार्ड टेबल, कोने की अलमारी, ब्रैकेट जैसी पवित्र वेदी पर जलाते थे, मानो किसी विचित्र और गुप्त अनुष्ठान का आयोजन हो रहा हो; बातचीत में कुछ भी असाधारण नहीं होता था, और मैं निराश होकर घर लौट जाता था, जैसा कि अक्सर बचपन में आधी रात की प्रार्थना के बाद होता है।

लेकिन मेरी निराशा महज़ मानसिक थी। मैं इस घर में बेहद खुश था, जहाँ गिलबर्ट, जब वह हमारे साथ नहीं थी, प्रकट होने वाली थी और पल भर में, और आने वाले घंटों तक, मुझे अपनी वाणी, अपनी मुस्कुराती हुई और ध्यान से देखने वाली निगाहें, ठीक वैसे ही प्रदान करने वाली थी, जैसे मैंने पहली बार कॉम्ब्रे में देखी थीं। ज़्यादा से ज़्यादा मुझे थोड़ी सी ईर्ष्या होती थी जब मैं उसे अक्सर ऊपर के विशाल कमरों में, जहाँ एक निजी सीढ़ी से पहुँचा जा सकता था, गायब होते देखता था। खुद को ड्राइंग रूम में ही बैठाए रखने के लिए मजबूर, जैसे कोई आदमी किसी अभिनेत्री से प्यार करता हो और अपने 'सामने' वाले स्टॉल में बैठा हो और बेचैनी से सोच रहा हो कि ग्रीन रूम में पर्दे के पीछे क्या चल रहा है। मैंने स्वान से घर के इस दूसरे हिस्से के बारे में चतुराई से छिपे हुए सवाल पूछे, लेकिन ऐसे लहजे में जिससे मैं बेचैनी का भाव पूरी तरह से छिपा नहीं पाया। उन्होंने मुझे समझाया कि गिलबर्ट जिस जगह गई थी, वह लिनेन का कमरा था, उन्होंने मुझे वह कमरा दिखाने की पेशकश की और वादा किया कि जब भी गिलबर्ट को वहाँ जाने का मौका मिलेगा, वे ज़रूर मुझे अपने साथ ले जाएँगे। इन आखिरी शब्दों और उनसे मिली राहत से स्वान ने मेरे मन में उन भयानक आंतरिक विचारों में से एक को तुरंत मिटा दिया, जिनके अंत में वह स्त्री, जिससे हम प्यार करते हैं, बहुत दूर लगने लगती है। उस क्षण

मुझे उनके लिए एक ऐसा स्नेह महसूस हुआ जो मुझे गिलबर्ट के लिए अपने स्नेह से कहीं अधिक गहरा लगा। क्योंकि अपनी बेटी पर अधिकार होने के नाते, वे उसे मुझे सौंप रहे थे, जबकि वह कभी-कभी खुद को रोक लेती थी, और मेरा उस पर वैसा सीधा नियंत्रण नहीं था जैसा स्वान के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से था। इसके अलावा, मैं उसी से प्यार करता था और इसलिए उसे देखे बिना, उस बेचैनी के बिना, उस और अधिक पाने की इच्छा के बिना, जो हमारे भीतर, जिसे हम प्यार करते हैं, उसकी उपस्थिति में प्रेम की भावना को नष्ट कर देती है, मैं उसे देख ही नहीं सकता था।

वैसे तो हम आम तौर पर घर के अंदर नहीं रहते थे, बाहर जाते थे। कभी-कभी कपड़े पहनने से पहले, श्रीमती स्वान पियानो पर बैठ जाती थीं। उनके प्यारे हाथ, गुलाबी, सफेद या अक्सर चटख रंगों वाली उनकी क्रेप-डे-चाइन रैपर की आस्तीनों से बाहर निकलते हुए, उसी उदासी के साथ पियानो की कुंजियों पर लटक जाते थे जो उनकी आँखों में तो थी लेकिन उनके दिल में नहीं। ऐसे ही एक दिन उन्होंने मुझे विंटेइल के सोनाटा का वह हिस्सा सुनाया जिसमें वह छोटा सा वाक्यांश था जो स्वान को बहुत प्रिय था। लेकिन अक्सर, अगर कोई संगीत का टुकड़ा थोड़ा भी जटिल हो और हम उसे पहली बार सुन रहे हों, तो हमें कुछ समझ नहीं आता। फिर भी, जब बाद में यह सोनाटा मुझे दो-तीन बार सुनाया गया, तो मुझे लगा कि मैं इसे अच्छी तरह से जानता हूँ। इसलिए, किसी चीज़ को पहली बार सुनने की बात करना गलत नहीं है। यदि वास्तव में, जैसा कि अनुमान लगाया जाता है, पहली बार सुनने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तो दूसरी और तीसरी बार सुनना भी उतना ही 'पहली बार सुनने' जैसा होगा और दसवीं बार सुनने के बाद उसे बेहतर ढंग से समझने का कोई कारण नहीं होगा। शायद पहली बार कमी समझ की नहीं, बल्कि स्मृति की होती है।

क्योंकि सुनने के दौरान हमें जिन जटिल अनुभवों का सामना करना पड़ता है, उनकी तुलना में हमारी स्मृति नगण्य होती है, उतनी ही संक्षिप्त जितनी उस व्यक्ति की स्मृति जो नींद में हज़ार बातें सोचता है और तुरंत भूल जाता है, या उस व्यक्ति की स्मृति जो अपने दूसरे बचपन में है और एक मिनट बाद भी यह याद नहीं कर पाता कि उससे अभी-अभी क्या कहा गया था। इन अनेक अनुभवों की हमारी स्मृति हमें तुरंत एक चित्र प्रदान करने में सक्षम नहीं है। लेकिन वह चित्र धीरे-धीरे आकार लेता है, और जिन रचनाओं को हमने एक से अधिक बार सुना है, उनके संबंध में हम उस स्कूली बच्चे की तरह हैं जिसने सोने से पहले कई बार उस पाठ को पढ़ा है जिसे वह जानता नहीं था, और अगली सुबह वह उसे कंठस्थ दोहरा सकता है। बात सिर्फ इतनी थी कि मैंने तब तक सोनाटा का एक भी स्वर नहीं सुना था, जबकि स्वान और उनकी पत्नी एक स्पष्ट वाक्यांश को पहचान सकते थे जो मेरी समझ से उतना ही परे था जितना कि कोई नाम जिसे याद करने का प्रयास किया जाता है और जिसके स्थान पर केवल एक खालीपन मिलता है, एक ऐसा खालीपन जिससे, एक घंटे बाद, जब कोई उनके बारे में नहीं सोच रहा होता है, तो वे अक्षर स्वतः ही एक निरंतर उड़ान में फूट पड़ते हैं जिन्हें हमने व्यर्थ ही याद करने का प्रयास किया था। और न केवल कोई वास्तव में महान रचनाओं की छाप तुरंत नहीं पकड़ पाता और न ही उसे बनाए रख पाता है, बल्कि ऐसी किसी भी रचना की विषयवस्तु में भी (जैसा कि मेरे साथ विंटेइल के सोनाटा के मामले में हुआ) सबसे पहले सबसे कम महत्वपूर्ण भाग ही समझ में आते हैं। इस प्रकार, मैं न केवल यह सोचकर गलत था कि इस रचना में मेरे लिए आगे कुछ भी नहीं है (इसलिए मैंने इसे फिर से सुनने का लंबे समय तक कोई प्रयास नहीं किया) उस क्षण से जब श्रीमती स्वान ने मुझे इसका सबसे प्रसिद्ध अंश सुनाया था; इस मामले में मैं उतना ही मूर्ख था

जितना वे लोग जो वेनिस में सेंट मार्क चर्च के सामने खड़े होकर आश्चर्य की उम्मीद नहीं करते, क्योंकि फोटोग्राफी ने उन्हें पहले ही इसके गुंबदों की रूपरेखा से परिचित करा दिया होता है। इससे भी कहीं अधिक, यहाँ तक कि जब मैंने सोनाटा को शुरू से अंत तक सुना, तब भी यह मेरे लिए लगभग पूरी तरह अदृश्य ही रहा, मानो कोई स्मारक जिसकी दूरी या वातावरण में धुंध के कारण हम उसकी केवल एक धुंधली और खंडित झलक ही देख पाते हैं। इसलिए, ऐसे कार्यों के ज्ञान से जुड़ा अवसाद, समय के साथ वास्तविकता प्राप्त करने वाली हर चीज के ज्ञान से जुड़ा होता है। जब विंटेइल के सोनाटा की सबसे कम स्पष्ट सुंदरताएँ मेरे सामने प्रकट हुईं, जो पहले से ही आदत के बल पर मेरी संवेदनशीलता की पहुँच से परे थीं, तब वे सुंदरताएँ जिन्हें मैंने शुरू से ही इसमें विशिष्ट और पसंद किया था, मुझसे दूर भागने लगीं, मुझसे बचने लगीं। चूंकि मैं इस सोनाटा द्वारा दिए गए सभी सुखों का आनंद केवल क्रमिक क्षणों में ही ले पाया, इसलिए मैंने इसे कभी भी पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया: यह स्वयं जीवन के समान था। लेकिन, जीवन जितना निराशाजनक है, उससे कहीं कम निराशाजनक यह है कि महान कलाकृतियाँ शुरुआत में ही हमें अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे देतीं। विंटेइल के सोनाटा में जो सुंदरताएँ हमें पहली नज़र में ही मिल जाती हैं, उन्हीं से हम सबसे जल्दी ऊब भी जाते हैं, और इसका कारण निस्संदेह वही है, कि वे उन चीज़ों से ज़्यादा भिन्न नहीं होतीं जिन्हें हम पहले से जानते हैं। लेकिन जब वे शुरुआती झलकियाँ मिट जाती हैं, तो हमारे आनंद के लिए कुछ ऐसा अंश शेष रह जाता है जिसे इसकी रचना, जो इतनी नई और विचित्र है कि हमारे मन में भ्रम के अलावा कुछ नहीं भरती, ने अविभाज्य बना दिया है और इस प्रकार अक्षुण्ण संरक्षित रखा है; और यह अंश, जिससे हम हर दिन मिलते रहे हैं और जिसका हमने अनुमान नहीं लगाया है, जो इस प्रकार हमारे लिए

आरक्षित रखा गया है, जो अपनी सुंदरता की अपार शक्ति से अदृश्य हो गया है और अज्ञात बना रहा है, यह हमें अंत में प्राप्त होता है। लेकिन यही वह अंतिम अंश भी होना चाहिए जिसे हम छोड़ेंगे। और हम इसे बाकी हिस्सों से ज़्यादा समय तक प्यार करेंगे क्योंकि इसे प्यार करने में हमें ज़्यादा समय लगा है। इसके अलावा, किसी गहन रचना को समझने के लिए जितना समय चाहिए होता है—जैसा कि मुझे इस सोनाटा के मामले में लगा—वह केवल उन वर्षों, यहाँ तक कि सदियों का प्रतीक मात्र है जो जनता को किसी वास्तव में नई कृति को सराहने से पहले बीतने पड़ते हैं। इसलिए, प्रतिभावान व्यक्ति, संसार की अज्ञानतापूर्ण अवमानना से खुद को बचाने के लिए, स्वयं से कह सकता है कि, चूंकि समकालीन लोग आवश्यक तटस्थता रखने में असमर्थ हैं, इसलिए भावी पीढ़ियों के लिए लिखी गई रचनाओं को केवल भावी पीढ़ियों द्वारा ही पढ़ा जाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कुछ चित्र जिन्हें बहुत पास खड़े होने पर सराहा नहीं जा सकता। लेकिन, जैसा कि होता है, गलत निर्णयों से बचने के लिए ऐसी कोई भी कायरतापूर्ण सावधानी विफलता के लिए अभिशप्त है; वे अपरिहार्य हैं। प्रतिभा की कृति को पहली बार में आसानी से सराहा न जाने का कारण यह है कि इसे रचने वाला व्यक्ति असाधारण है, उसके समान बहुत कम लोग हैं। बीथोवेन के क्वार्टेट्स (बारहवां, तेरहवां, चौदहवां और पंद्रहवां) ने ही आधी सदी बीथोवेन के क्वार्टेट्स के लिए एक श्रोता वर्ग बनाने, उसे आकार देने और उसका विस्तार करने में लगा दी। इस तरह, कला के हर महान कार्य की तरह, इसने कलात्मक योग्यता में भले ही प्रगति न की हो, लेकिन बौद्धिक समाज में ज़रूर प्रगति की है, जो आज काफी हद तक उन लोगों से बना है जो कृति के पहली बार प्रकाशित होने के समय मौजूद नहीं थे, यानी उन लोगों की कमी जो इसका आनंद उठा सकें। कलाकार जिसे भावी पीढ़ी कहते हैं, वह

कलाकृति की भावी पीढ़ी होती है। यह आवश्यक है कि कृति (संक्षेप में, इस संभावना को छोड़ दें कि कई प्रतिभाशाली व्यक्ति एक ही समय में समानांतर दिशाओं में काम कर रहे हों ताकि भविष्य में एक अधिक शिक्षित श्रोता वर्ग का निर्माण हो सके, एक ऐसा श्रोता वर्ग जिससे अन्य प्रतिभाशाली व्यक्ति लाभान्वित हों) अपनी भावी पीढ़ी का निर्माण करे। क्योंकि यदि कृति को सुरक्षित रखा जाए, उसे केवल भावी पीढ़ी के लिए प्रकट किया जाए, तो उस कृति के दर्शक भावी पीढ़ी नहीं बल्कि समकालीन लोग होंगे जो उससे लगभग पचास वर्ष बाद जीवित होंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि कलाकार (और यही विंटेउइल ने किया था), यदि वह चाहता है कि उसकी कृति स्वतंत्र रूप से अपना मार्ग प्रशस्त करे, तो उसे जहाँ भी पर्याप्त गहराई मिले, आत्मविश्वास से भविष्य की ओर अग्रसर करे। फिर भी, समय का यह अंतराल, कलाकृति को देखने का सच्चा परिप्रेक्ष्य, यदि इसे अनदेखा करना बुरे पारखियों की गलती है, तो इसे ध्यान में रखना कभी-कभी अच्छे पारखियों के लिए एक खतरनाक सावधानी है। इसमें कोई शक नहीं कि क्षितिज पर हर चीज़ को समान दूरी पर दिखाने वाले भ्रम की तरह, कोई भी आसानी से यह कल्पना कर सकता है कि चित्रकला या संगीत में अब तक हुई सभी क्रांतियों ने कम से कम कुछ नियमों का पालन किया है, जबकि जो हमारे सामने है, चाहे वह प्रभाववाद हो, असंगति की चाह हो, चीनी पैमाने का विशेष उपयोग हो, घनवाद हो, भविष्यवाद हो या कुछ भी हो, वह पहले की सभी कलाओं से बिल्कुल अलग है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम पहले की कलाओं को एक समग्र रूप में देखने की प्रवृत्ति रखते हैं, यह भूलकर कि आत्मसात करने की एक लंबी प्रक्रिया ने उन्हें एक सतत पदार्थ में विलीन कर दिया है, जो निश्चित रूप से विविध है, लेकिन समग्र रूप से देखने पर समरूप है, जिसमें ह्यूगो मोलियर के साथ घुलमिल जाते हैं। आइए

कल्पना करने का प्रयास करें कि अगर हम भविष्य और उसमें होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में न रखें, तो हमें अपने युवावस्था में खींची गई और दिखाई गई अपनी परिपक्व आयु की कुंडली में कितनी चौंकाने वाली असंगति मिलेगी। राशिफल हमेशा सटीक नहीं होते, और कलाकृति का मूल्यांकन करते समय उसकी सुंदरता में समय के कारक को शामिल करने की आवश्यकता हमारे सोचने के तरीके में कुछ ऐसा जोखिम और परिणामस्वरूप उतना ही नीरसपन लाती है, जितना कि हर वह भविष्यवाणी जिसकी पूर्ति न होने से भविष्यवक्ता की कोई अक्षमता सिद्ध नहीं होती, क्योंकि संभावनाओं को अस्तित्व में लाने या उन्हें अस्तित्व से बाहर करने की क्षमता केवल प्रतिभा की ही नहीं होती; कोई व्यक्ति प्रतिभाशाली हो सकता है और फिर भी रेलवे या हवाई यात्रा के भविष्य में विश्वास न करे, या एक प्रतिभाशाली मनोवैज्ञानिक होने के बावजूद, अपनी प्रेमिका या मित्र की बेवफाई में विश्वास न करे, जिसके विश्वासघात को कम प्रतिभाशाली व्यक्ति भी आसानी से देख लेते।

भले ही मुझे सोनाटा समझ में नहीं आया, लेकिन श्रीमती स्वान को बजाते हुए सुनना मुझे मंत्रमुग्ध कर गया। उनका स्पर्श मुझे (उनके लबादे, उनकी सीढ़ियों की खुशबू, उनके लबादे, उनके गुलदाउदी के फूलों की तरह) एक अनोखे और रहस्यमय समग्रता का हिस्सा प्रतीत हुआ, एक ऐसी दुनिया में जो प्रतिभा के विश्लेषण की क्षमता से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी। "विंटुइल सोनाटा कितना आकर्षक है, है ना?" स्वान ने मुझसे पूछा। "वह क्षण जब पेड़ों के बीच रात का अंधेरा छाने लगता है, जब वायलिन की मधुर धुनें धरती पर ठंडी ओस बरसाती हैं। आपको मानना पड़ेगा कि यह बेहद मनमोहक है; यह चांदनी के स्थिर पहलू को पूरी तरह से दर्शाता है, जो इसका मूल तत्व है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मेरी पत्नी जैसी तीव्र गर्मी का अनुभव करने से मांसपेशियों पर असर पड़ता है, क्योंकि चांदनी

पत्तियों को हिलने से रोक सकती है। यही बात वह उस छोटे से वाक्यांश में बखूबी व्यक्त करते हैं, 'बोइस डी बोलोग्ने एक सम्मोहनकारी अवस्था में डूबा हुआ है'। समुद्र के किनारे यह और भी अधिक प्रभावशाली होता है, क्योंकि वहां लहरों की हल्की सी आवाज सुनाई देती है, जिसे आप स्पष्ट रूप से सुन सकते हैं, क्योंकि वहां और कुछ भी हिलने की हिम्मत नहीं करता। पेरिस में मामला बिल्कुल उलट है; ज़्यादा से ज़्यादा, आपको पुरानी इमारतों के बीच अपरिचित रोशनी दिखाई दे सकती है, आकाश मानो किसी रंगहीन और हानिरहित आग से जगमगा रहा हो, उस तरह का विशाल विविधतापूर्ण प्रदर्शन जिसकी झलक आपको कहीं-कहीं मिलती है। लेकिन विंटेइल के उस छोटे से वाक्यांश में, और पूरी सोनाटा में भी, ऐसा नहीं है।" ठीक इसी तरह; दृश्य बोइस में रचा गया है; ग्रुप्पेटो में आप स्पष्ट रूप से एक आवाज सुन सकते हैं: 'मैं लगभग अखबार पढ़ सकता हूँ!' स्वान के ये शब्द बाद में सोनाटा के बारे में मेरी धारणा को गलत साबित कर सकते थे, क्योंकि संगीत इतना विशिष्ट नहीं है कि वह दूसरों द्वारा सुझाए गए विचारों को पूरी तरह से सीमित कर सके। लेकिन उनके कहे अन्य शब्दों से मैं समझ गया कि यह रात्रिकालीन हरियाली बस वही थी जिसकी छाया में उन्होंने पेरिस के बाहरी इलाकों के कई रेस्तरां में कई शामों को इस छोटे से वाक्यांश को सुना था। उस गहन अर्थ के स्थान पर जिसे उन्होंने अक्सर इसमें खोजा था, अब स्वान को इसके चारों ओर व्यवस्थित, गुंथी हुई, चित्रित पत्तियों की शाखाओं की याद आ रही थी (जिन्हें यह फिर से देखने की इच्छा जगा रही थी क्योंकि यह उन्हें उनका आंतरिक, उनका छिपा हुआ स्वरूप, मानो उनकी आत्मा प्रतीत हो रही थी); यह पूरा वसंत ऋतु था जिसका आनंद वह पहले कभी नहीं ले पाया था, क्योंकि बुखार और चिड़चिड़ेपन के कारण उसके पास इसका आनंद लेने के लिए शरीर और मन की पर्याप्त शक्ति नहीं थी। यह वही वसंत

ऋतु थी जो किसी बीमार व्यक्ति के लिए उन स्वादिष्ट व्यंजनों के बारे में कही जाती है जिन्हें वह खा नहीं पाया था। बोइस में कुछ शामों ने उसे जो आकर्षण का अनुभव कराया था, जिसकी याद उसे विंटेइल के सोनाटा ने दिलाई थी, उसे वह ओडेट से पूछताछ करके पुनः प्राप्त नहीं कर सकता था, हालांकि वह और वह छोटा सा वाक्य दोनों ही वहां उसकी साथी थीं। लेकिन ओडेट केवल उसकी साथी थी, उसके बगल में, उसके भीतर नहीं (जैसा कि वह वाक्य था), और इसलिए उसने कुछ भी नहीं देखा था - और न ही वह, यदि वह हजार गुना अधिक समझदार होती, तो भी उस दृश्य को देख पाती जो हममें से किसी के लिए भी (या कम से कम मुझे लंबे समय से यह लगता था कि इस नियम का कोई अपवाद नहीं है) बाहरी रूप से दृश्यमान नहीं हो सकता। “यह कितना मनमोहक है, है ना?” स्वान ने आगे कहा, “कि ध्वनि पानी या कांच की तरह प्रतिबिंब उत्पन्न कर सकती है। यह भी विचित्र है कि विंटेइल का यह वाक्यांश अब मुझे केवल वही चीजें दिखाता है जिन पर मैंने तब ध्यान नहीं दिया था। उन दिनों की मेरी परेशानियों, मेरे प्रेम-प्रसंगों की यह कोई याद नहीं दिलाता, इसने मेरे सभी मूल्यों को बदल दिया है।” “चार्ल्स, मुझे नहीं लगता कि आप जो कह रहे हैं वह मेरे लिए बहुत विनम्रतापूर्ण है।” "शिष्टाचार नहीं? सच में, आप महिलाएं तो कमाल की हैं! मैं बस इस नौजवान को यह समझाने की कोशिश कर रही थी कि संगीत जो दर्शाता है—कम से कम मुझे तो—वह एक पल के लिए भी 'स्वतंत्र इच्छा' या 'अनंत के साथ सामंजस्य' नहीं है, बल्कि कहें तो, जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन के ताड़ के घर में फ्रॉक कोट पहने बूढ़े वर्दुरिन का दृश्य है। सैकड़ों बार, इस कमरे से बाहर निकले बिना ही, यह छोटा सा वाक्यांश मुझे आर्मेनोनविले में भोजन करने के लिए ले गया है। सच में, यह मैडम डी कैम्ब्रेमर के साथ वहाँ जाने से कहीं कम उबाऊ है।" मैडम स्वान हंस पड़ीं।

“वह एक ऐसी महिला हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे चार्ल्स के प्यार में पागल थीं,” उन्होंने उसी लहजे में समझाया, जिस लहजे में उन्होंने कुछ देर पहले, जब हम डेल्फ़्ट के वर्मीर के बारे में बात कर रहे थे, जिनके अस्तित्व के बारे में जानकर मुझे आश्चर्य हुआ था कि वे सचेत थीं, मुझसे कहा था: “मुझे यह स्पष्ट करना चाहिए कि जब श्री स्वान मुझसे प्रेम निवेदन कर रहे थे, तब वे उस चित्रकार के प्रति बहुत आकर्षित थे। है ना, मेरे प्यारे चार्ल्स?” “आप श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के बारे में बातें करना शुरू न करें!” स्वान ने उन्हें रोका, मन ही मन खुश होते हुए। “लेकिन मैं तो बस वही दोहरा रही हूँ जो मुझे बताया गया है। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि वह बहुत ही चतुर महिला हैं; मैं उन्हें खुद नहीं जानता। मेरा मानना है कि वह बहुत ही आक्रामक हैं, जो एक चतुर महिला के लिए मुझे थोड़ा आश्चर्यचकित करता है। लेकिन हर कोई कहता है कि वह आपके लिए दीवानी थीं; इसे दोहराने में कोई हर्ज नहीं है।” स्वान एक मूक-बधिर की तरह चुप रहे, जो एक तरह से उनके कहे की पुष्टि और उनकी अपनी मूर्खता का प्रमाण था। “चूंकि मैं जो बजा रही हूँ, उससे आपको जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन की याद आ रही है,” उनकी पत्नी ने थोड़ी नाराज़गी जताते हुए कहा, “अगर उन्हें अच्छा लगे तो हम उन्हें किसी दिन गाड़ी में बिठाकर वहाँ ले जा सकते हैं। अभी वहाँ का मौसम बहुत ही प्यारा है, और आप अपनी पुरानी यादें ताज़ा कर सकते हैं! और हाँ, जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन की बात करते-करते मुझे याद आया, क्या आपको पता है, इस नौजवान को लगा कि हम एक ऐसी शख्सियत से बहुत ज़्यादा लगाव रखते हैं, जिसे मैं, सच कहूँ तो, जब भी मौका मिलता है, हटा देती हूँ, मैडम ब्लैटिन! मुझे लगता है कि यह हमारे लिए बहुत दुख की बात है कि उन्हें हमारी दोस्त समझा जाता है। ज़रा सोचिए, प्यारे डॉ. कॉटार्ड, जो कभी किसी के बारे में कोई बुरी बात नहीं कहते, कहते हैं कि

वह तो सचमुच संक्रामक हैं।" "एक भयानक औरत! उनके बारे में बस एक ही बात कही जा सकती है कि वह बिलकुल सवोनारोला जैसी हैं। वह फ्रा बार्टोलोमियो द्वारा बनाए गए सवोनारोला के उस चित्र की हूबहू छवि हैं।" चित्रों में लोगों की शक्लें ढूंढने का स्वान का यह जुनून जायज़ था, क्योंकि जिसे हम व्यक्तिगत अभिव्यक्ति कहते हैं, वह भी—जैसा कि हम प्रेम में होने पर और अपने प्रिय की अनूठी वास्तविकता पर विश्वास करने की चाहत में बड़े कष्ट से अनुभव करते हैं—एक व्यापक और सामान्य चीज़ है, जो विभिन्न कालों में मौजूद पाई जा सकती है। लेकिन अगर स्वान की बात सुनी होती, तो पूर्वी राजाओं के जुलूस, जो बेनोज़ो गोज़ोली द्वारा उनमें विभिन्न मेडिसी सदस्यों को शामिल करने के समय से ही कालभ्रमित थे, और भी अधिक कालभ्रमित हो जाते, क्योंकि उनमें गोज़ोली के नहीं बल्कि स्वान के समकालीन पुरुषों की एक पूरी भीड़ के चित्र शामिल होते, जो न केवल ईसा मसीह के जन्म से पंद्रह शताब्दियाँ बाद के थे, बल्कि स्वयं चित्रकार से चार शताब्दियाँ बाद के थे। स्वान के अनुसार, उन ट्रेनों से एक भी उल्लेखनीय जीवित पेरिसवासी गायब नहीं था, ठीक वैसे ही जैसे सार्डू के नाटकों के उस दृश्य से नहीं, जिसमें लेखक और नायिका के प्रति मित्रता के कारण, और साथ ही फैशन के चलते, पेरिस के सभी जाने-माने पुरुष, प्रसिद्ध डॉक्टर, राजनेता, वकील, अलग-अलग शामों को 'वॉक ऑन' करके अपना मनोरंजन करते थे। "लेकिन उसका जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन से क्या लेना-देना है?" "सब कुछ!" "क्या? तुम यह सुझाव तो नहीं दे रहे कि उसकी पीठ बंदरों की तरह आसमानी नीली है?" "चार्ल्स, तुम सच में बहुत भयानक हो! मैं सोच रही थी कि सिंहली ने उससे क्या कहा था। उसे बताओ, चार्ल्स; यह सच में एक अनमोल बात है।" "ओह, यह बहुत मूर्खतापूर्ण है। तुम्हें पता है, मैडम ब्लैटिन लोगों से सवाल पूछना पसंद करती हैं, ऐसे लहजे में जिसे वह

दोस्ताना समझती हैं, लेकिन जो वास्तव में बहुत प्रभावशाली होता है।" "जिसे टेम्स नदी पर हमारे अच्छे दोस्त 'संरक्षण' कहते हैं," ओडेट ने बीच में ही टोक दिया। "बिल्कुल सही। खैर, वो कुछ दिन पहले जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन गई थी, जहाँ कुछ अश्वेत लोग रहते हैं—सिंहली, मुझे लगता है मेरी पत्नी ने यही कहा था; वो मुझसे कहीं ज़्यादा नृविज्ञान में माहिर है।" "अब, चार्ल्स, मेरा मज़ाक मत उड़ाओ।" "मेरा मज़ाक उड़ाने का कोई इरादा नहीं है, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ। खैर, आगे की बात ये है कि वो एक अश्वेत व्यक्ति के पास गई और बोली, 'सुप्रभात, नीग्रो!'..." "अरे, ये तो बहुत ही बेतुका है!" "खैर, ये वर्गीकरण उस अश्वेत व्यक्ति को पसंद नहीं आया। 'मैं नीग्रो,' उसने (बहुत गुस्से में, आप जानते हैं ना) श्रीमती ब्लैटिन से चिल्लाकर कहा, 'मैं नीग्रो; तुम, बुढ़िया!'" "मुझे तो ये बहुत ही मज़ेदार लगा! मुझे ये कहानी बहुत पसंद आई। सच में, ये एक अच्छी कहानी है। क्या आप कल्पना नहीं कर सकते कि बूढ़ी ब्लैटिन वहाँ खड़ी होकर उसे ये कहते हुए सुन रही है: 'मैं नीग्रो; तुम, बुढ़िया'?" वहाँ जाकर इन सिंहली लोगों को देखने की मेरी तीव्र इच्छा थी, जिनमें से एक ने श्रीमती ब्लैटिन को बुढ़िया कहा था। मुझे उनमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन मैंने सोचा कि गार्डन ऑफ़ एक्लिमेटेशन जाते समय और फिर घर लौटते समय, हम उस एले डेस अकेशियास से होकर गुजरेंगे जहाँ मैंने कभी श्रीमती स्वान को निहारने का बड़ा आनंद लिया था, और शायद कोक्वेलिन की मुलेटो सहेली, जिसे मैं कभी भी प्रणाम नहीं कर पाई थी, मुझे वहाँ उसके बगल में बैठी देख लेगी, जब विक्टोरिया कार गुजरेगी।

जब गिलबर्ट तैयार होने के लिए कमरे में नहीं होती थी, तो उन कुछ मिनटों में एम. और मैडम स्वान मुझे अपनी बेटी के सभी दुर्लभ गुणों के बारे में बताने में आनंद लेते थे। और मैंने जो कुछ भी देखा, उससे उनकी

बातें सच साबित होती प्रतीत हुईं। मैंने गौर किया कि, जैसा कि उसकी माँ ने मुझे बताया था, वह न केवल अपने दोस्तों के लिए, बल्कि नौकरों और गरीबों के लिए भी बड़ी सावधानी से सोच-समझकर अत्यंत कोमल भाव रखती थी। दूसरों को प्रसन्न करने की इच्छा और किसी को नाराज़ न करने का भय, ये सभी छोटी-छोटी बातों में झलकते थे, जिनसे अक्सर उसे खुद बहुत असुविधा होती होगी। उसने चैंप्स-एलिसी में हमारे स्टॉल-कीपर के लिए कुछ 'काम' किया था और एक दिन भी बर्बाद न करने के लिए बर्फ में बाहर जाकर उसे अपने हाथों से दिया। उसके पिता ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, "आपको अंदाज़ा नहीं है कि वह कितनी दयालु है, वह इसे ज़ाहिर नहीं होने देती।" अपनी कम उम्र के बावजूद, वह अपने माता-पिता से कहीं अधिक समझदार प्रतीत होती थी। जब स्वान अपनी पत्नी के प्रतिष्ठित मित्रों के बारे में शेखी बघारता, तो गिलबर्ट मुँह फेर लेती और चुप रहती, लेकिन बिना किसी निंदा के, क्योंकि उसे यह अकल्पनीय लगता था कि उसके पिता को थोड़ी सी भी आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। एक दिन, जब मैंने उससे मैडम विंटेइल के बारे में बात की, तो उसने मुझसे कहा:

"मैं उसे कभी नहीं जान पाऊँगी, और इसका एक बहुत अच्छा कारण है, और वो ये है कि वो अपने पिता के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। सुनने में आया है कि वो उन्हें बहुत परेशान करती थी। आप इसे मुझसे ज़्यादा नहीं समझ सकते, है ना? मुझे यकीन है कि आप भी अपने पापा के बिना नहीं रह सकते, जैसे मैं नहीं रह सकती, जो कि स्वाभाविक ही है। भला कोई उस इंसान को कैसे भूल सकता है जिसे आपने पूरी ज़िंदगी प्यार किया हो?"

और एक बार जब वह स्वान को विशेष रूप से आकर्षित करने की कोशिश कर रही थी, तब मैंने इस बारे में उससे तब बात की जब वह

कमरे से बाहर था:

"हाँ, बेचारे पापा, अभी-अभी उनके पिता की पुण्यतिथि है। आप समझ सकते हैं कि उन्हें कैसा लग रहा होगा; आप समझते हैं ना; ऐसी बातों पर हम दोनों का एक जैसा ही हाल होता है। इसलिए मैं बस आज थोड़ी कम शरारत करने की कोशिश कर रही हूँ।" "लेकिन वो तुम्हें कभी शरारती नहीं समझते। वो तो तुम्हें एकदम परफेक्ट समझते हैं।" "बेचारे पापा, क्योंकि वो खुद भी बहुत अच्छे हैं।"

लेकिन उसके माता-पिता गिलबर्ट की प्रशंसा करने से संतुष्ट नहीं थे—वही गिलबर्ट, जो मुझे देखने से पहले ही, हे डे फ़्रांस के एक सुंदर दृश्य में, एक गिरजाघर के सामने खड़ी दिखाई देती थी, और बाद में, अब सपनों में नहीं बल्कि यादों में, हमेशा गुलाबी नागफनी की झाड़ी में घिरी रहती थी, उस छोटी सी गली में जिससे मैं मेसेग्लिस की ओर जाते समय गुजरता था। एक बार जब मैंने श्रीमती स्वान से पूछा (और परिवार के एक मित्र की तरह उदासीन लहजा अपनाने की कोशिश की, जो एक बच्चे की पसंद जानने के लिए उत्सुक था), कि गिलबर्ट को अपने सभी साथियों में से सबसे ज्यादा कौन पसंद है, तो श्रीमती स्वान ने उत्तर दिया: "लेकिन तुम्हें मुझसे कहीं बेहतर पता होना चाहिए। तुम उसकी विश्वासपात्र हो, उसकी सबसे प्यारी, उसकी 'दोस्त', जैसा कि अंग्रेज कहते हैं।"

ऐसा प्रतीत होता है कि इस तरह के परिपूर्ण संयोग में, जब वास्तविकता उस आदर्श को ढकने के लिए लिपट जाती है जिसका हम इतने लंबे समय से सपना देख रहे हैं, तो वह उस आदर्श को पूरी तरह से छिपा लेती है, उसे अपने भीतर समाहित कर लेती है, जैसे जब दो समरूप ज्यामितीय आकृतियों को इस प्रकार मिलाया जाता है कि केवल एक ही आकृति रह जाती है, जबकि हम अपने आनंद को पूर्ण महत्व देने के लिए, अपनी इच्छा के उन सभी अलग-अलग बिंदुओं को, ठीक उसी क्षण जब हम उन्हें

स्पर्श करने में सफल होते हैं, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे वास्तव में स्वयं हैं, अमूर्त होने के भेद को संरक्षित रखना चाहते हैं। और हमारा विचार पुरानी स्थिति को इस प्रकार पुनर्निर्मित भी नहीं कर सकता कि नई स्थिति का उससे सामना कर सके, क्योंकि अब उसके पास कोई स्पष्ट क्षेत्र नहीं बचा है: जो जान-पहचान हमने बनाई है, उन पहले, अनपेक्षित पलों की यादें, जो बातें हमने सुनी हैं, वे अब हमारी चेतना के मार्ग को अवरुद्ध कर रही हैं, और चूंकि वे हमारी कल्पना की तुलना में हमारी स्मृति के मार्गों को कहीं अधिक नियंत्रित करती हैं, इसलिए वे हमारे अतीत पर, जिसे हम अब उनके बिना कल्पना नहीं कर सकते, हमारे भविष्य के अभी तक आकारहीन स्वरूप की तुलना में कहीं अधिक बलपूर्वक प्रभाव डालती हैं। मैं वर्षों से यह मानता आ रहा था कि श्रीमती स्वान से मिलने का अधिकार एक अस्पष्ट और काल्पनिक विशेषाधिकार है जिसे मैं कभी प्राप्त नहीं कर पाऊंगा; उनके ड्राइंग रूम में पंद्रह मिनट बिताने के बाद, वह समय जब मैं उन्हें नहीं जानता था, एक ऐसी संभावना की तरह काल्पनिक और अस्पष्ट हो गया था जिसे किसी वैकल्पिक संभावना के साकार होने ने असंभव बना दिया था। मैं उसके भोजन कक्ष का सपना कैसे देख सकता था, मानो वह एक अकल्पनीय स्थान हो, जब मैं अपने मन में जरा सी भी हलचल नहीं कर सकता था, बिना उस अविनाशी किरण के मार्ग को पार किए, जो अनंत तक, यहाँ तक कि मेरे अपने सबसे दूर के अतीत तक, उस अमेरिकी लॉबस्टर द्वारा डाली गई थी जिसे मैंने अभी-अभी खाया था? और स्वान ने अपने मामले में भी इसी तरह की घटना देखी होगी; क्योंकि जिस घर में उन्होंने मेरा स्वागत किया, उसे वह स्थान माना जा सकता है जहाँ न केवल मेरी कल्पना द्वारा निर्मित आदर्श निवास, बल्कि एक और भी निवास, जो उनके ईर्ष्यालु प्रेम ने, मेरी किसी भी कल्पना की तरह ही रचनात्मक, उन्हें अक्सर चित्रित किया था,

ओडेट और उनके लिए साझा वह निवास जो कभी इतना दुर्गम प्रतीत होता था, उन शामों में जब ओडेट उन्हें फोर्शेविल के साथ अपने घर ले जाती थी ताकि वे उसके साथ संतरे का रस पी सकें; और जो कुछ उनके लिए भोजन कक्ष की दीवारों और फर्नीचर में समाहित हो गया था, जहाँ हम अब दोपहर के भोजन के लिए बैठे थे, वह एक अनचाहा स्वर्ग था, जिसकी कल्पना भी वे पुराने दिनों में बड़े दुख के साथ नहीं कर सकते थे कि एक दिन वे अपने बटलर से ठीक यही शब्द कहेंगे, "क्या मैडम तैयार हैं?" जो मैंने अब उन्हें थोड़ी अधीरता और आत्मसंतुष्टि के साथ कहते हुए सुना। शायद स्वान से भी अधिक मैं अपनी खुशी को नहीं जान सकता था, और जब गिलबर्ट ने एक बार कहा: "किसने सोचा होगा कि जिस छोटी लड़की को तुम कैदियों के अड्डे पर खेलते हुए देखते थे, उससे बात करने की हिम्मत भी नहीं करते थे, वह एक दिन तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त बन जाएगी, और तुम जब चाहो उसके घर जाओगे?" तो उसने एक ऐसे बदलाव की बात की, जिसकी घटना को मैं केवल बाहर से देखकर ही सत्यापित कर सकता था, अपने भीतर उसका कोई निशान नहीं पा सकता था, क्योंकि यह दो अलग-अलग अवस्थाओं से बना था, जिन पर मैं अपने विचारों को एक ही समय में स्थिर नहीं रख सकता था, क्योंकि वे एक दूसरे से अलग होती चली जाती थीं।

फिर भी, क्योंकि स्वान ने इस घर को पाने की इतनी तीव्र इच्छा रखी थी, इसलिए अगर मैं अपने अनुभव के आधार पर कहूँ, तो उसके लिए इसका कुछ आकर्षण अवश्य ही बना रहा होगा, क्योंकि उसके लिए इसका सारा रहस्य अभी भी बरकरार था। वह विलक्षण आकर्षण, जिसमें मैंने इतने लंबे समय से स्वान परिवार के जीवन को डूबा हुआ माना था, घर में प्रवेश करने पर भी पूरी तरह से दूर नहीं हुआ था; मैंने उस आकर्षण को ही उलटा कर रख दिया था, क्योंकि अजनबी, उस अछूत को देखकर वह

आकर्षण क्षीण हो गया था, जिसे अब श्रीमती स्वान ने बड़े ही विनम्रता से बैठने के लिए आगे बढ़ाया था - एक सुंदर, शत्रुतापूर्ण, अपमानजनक कुर्सी; लेकिन मेरे चारों ओर, वह आकर्षण, मेरी स्मृति में, अब भी स्पष्ट है। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि उन दिनों में जब श्रीमान और श्रीमती... स्वान ने मुझे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया, और बाद में उनके और गिल्बर्ट के साथ बाहर जाने के लिए भी कहा। जब मैं वहाँ अकेले बैठकर उनका इंतज़ार कर रही थी, तो मेरी निगाहें कालीन, सोफे, मेज, स्क्रीन, चित्रों पर टिकी रहीं। मेरे मन में यह विचार अंकित हो गया कि श्रीमती स्वान, या उनके पति, या गिल्बर्ट कमरे में आने वाले हैं। क्या ऐसा इसलिए है कि वे वस्तुएँ तब से मेरी स्मृति में स्वान परिवार के साथ बसी हुई हैं, और धीरे-धीरे उनमें उनका व्यक्तिगत स्वरूप समाहित हो गया है? क्या ऐसा इसलिए है कि यह जानते हुए कि स्वान परिवार ने अपना जीवन इन सभी चीजों के बीच बिताया, मैंने उन सभी को उनके निजी जीवन, उनकी उन आदतों का प्रतीक बना लिया, जिनसे मैं बहुत लंबे समय तक वंचित रही थी, और वे मुझे तब भी अजीब लगती रहीं, जब मुझे उनमें शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ? हालांकि जो भी हो, जब भी मैं उस ड्राइंग रूम के बारे में सोचता हूँ जिसे स्वान (हालांकि इस आलोचना में उनकी पत्नी के स्वाद में कोई कमी निकालने का इरादा नहीं था) ने इतना बेमेल पाया था - क्योंकि, हालांकि इसकी योजना और निर्माण अभी भी उसी शैली में किया गया था, आधा संगीत कक्ष, आधा स्टूडियो, जो उन कमरों की शैली थी जिनमें उन्होंने पहली बार ओडेट को देखा था, फिर भी उसने उसमें चीनी सजावटी वस्तुओं की एक मात्रा को, जिन्हें वह अब कुछ हद तक दिखावटी और थोड़ा पुराना मानती थी, छोटी कुर्सियों और स्टूल और पुरानी लुई XIV रेशम से गद्दीदार चीजों के झुंड से बदलना शुरू कर दिया था; स्वान द्वारा स्वयं क्वाई डी'ऑरलियन्स स्थित

अपने घर से लाई गई कलाकृतियों का उल्लेख करना भी उचित होगा— इसके विपरीत, उस मिश्रित, विविध कमरे ने मेरी स्मृति में एक सामंजस्य, एक एकता, एक अनूठा आकर्षण बनाए रखा है, जो अतीत द्वारा हमें विरासत में मिली सबसे पूर्ण, सबसे कम क्षतिग्रस्त संग्रहों में भी नहीं पाया जाता, न ही सबसे आधुनिक, जीवंत और एक जीवंत व्यक्तित्व की छाप से युक्त संग्रहों में; क्योंकि केवल हम ही, इस विश्वास से कि उनका अपना अस्तित्व है, उन वस्तुओं में से कुछ को एक आत्मा प्रदान कर सकते हैं जिन्हें हम देखते हैं, जिसे वे बाद में बनाए रखती हैं, जिसे वे हमारे मन में विकसित करती हैं। घंटों के बारे में मेरे मन में जो भी विचार थे, जो अन्य लोगों के विचारों से भिन्न थे, वे सभी स्वान परिवार के उस घर में बीतते थे जो उनके जीवन के लिए वैसा ही था जैसा शरीर आत्मा के लिए होता है, और जो उसकी विलक्षणता को व्यक्त करता था। फर्नीचर की व्यवस्था, कालीनों की मोटाई, खिड़कियों की स्थिति और नौकरों की सेवा में वे सभी विचार पुनर्व्यवस्थित, मिश्रित हो गए - समान रूप से विचलित करने वाले और अनिश्चित। जब दोपहर के भोजन के बाद, हम ड्राइंग रूम की बड़ी खाड़ी वाली खिड़की में धूप में कॉफी पीने गए, तब श्रीमती... स्वान मुझसे पूछ रही थी कि मैंने चीनी के कितने टुकड़े लिए, यह केवल रेशम से ढका हुआ स्टूल ही नहीं था जिसे उसने मेरी ओर धकेला था, जो उस पीड़ादायक आकर्षण के साथ उत्सर्जित कर रहा था जिसे मैंने बहुत पहले महसूस किया था - पहले गुलाबी नागफनी के बीच और फिर लॉरेल के झुंड के पास - गिल्बर्ट के नाम पर, उसके माता-पिता द्वारा मेरे प्रति दिखाई गई शत्रुता, जिसे फर्नीचर के इस छोटे से टुकड़े ने इतनी अच्छी तरह से समझा था, इतनी पूरी तरह से साझा किया था कि मैंने खुद को अयोग्य महसूस किया, और खुद को इसके असुरक्षित गद्दी पर पैर रखने में लगभग अनिच्छुक पाया; एक व्यक्तित्व, एक आत्मा

उसमें छिपी हुई थी जो इसे दोपहर के दो बजे के प्रकाश से गुप्त रूप से जोड़ती थी, किसी भी अन्य प्रकाश से इतनी अलग, उस खाड़ी में जिसमें हमारे पैरों के आसपास सोने की चमकती लहर खेल रही थी, जिसमें से सोफे की नीली चट्टानें और वाष्पशील कालीन समुद्र तट जादुई द्वीपों की तरह उभर रहे थे; और चिमनी के ऊपर टंगी रूबेंस की पेंटिंग भी, श्रीमती स्वान के फीतेदार बूटों और उस हुड वाले केप की तरह ही आकर्षक थी, जिसे पहनने की मेरी बहुत इच्छा थी। अब जब भी मैं उन्हें गाड़ी में बाहर ले जाती, ओडेट अपने पति से कहती कि वह दूसरा केप पहनकर आ जाए ताकि वह ज़्यादा स्मार्ट दिखे। वह भी कपड़े बदलने चली गई—मेरी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि कोई भी 'बाहरी' पोशाक मैडम स्वान के दोपहर के भोजन के लिए पहनी गई शानदार क्रेप-डी-चाइन या रेशम की पोशाक जितनी सुंदर नहीं हो सकती, चाहे वह पुराने गुलाबी, चेरी रंग की, टिएपोलो गुलाबी, सफेद, बैंगनी, हरी, लाल या पीली हो, सादी हो या डिज़ाइनदार। जब मैंने उसे यकीन दिलाया कि उसे उस पोशाक में बाहर जाना चाहिए, तो वह हँस पड़ी, शायद मेरी अज्ञानता पर उपहास करते हुए या मेरी तारीफ से खुश होकर। उसने इतने सारे रैपर रखने के लिए माफी मांगी, यह समझाते हुए कि यही एकमात्र प्रकार के कपड़े थे जिनमें वह सहज महसूस करती थी, और हमें छोड़कर चली गई, ताकि वह उन शाही वस्त्रों में से एक को पहन सके जो सभी देखने वालों पर अपनी भव्यता का प्रभाव डालते थे, और फिर भी कभी-कभी मुझे उनमें से यह तय करने के लिए बुलाया जाता था कि मैं उसे कौन सा वस्त्र पहने देखना पसंद करूं।

गार्डन ऑफ़ एक्लिमेटेशन में, मुझे कितना गर्व महसूस हुआ जब हम गाड़ी से उतरकर श्रीमती स्वान के साथ चलने लगे! जब वह बेफिक्र होकर टहल रही थीं और उनका लबादा हवा में लहरा रहा था, मैं उन्हें प्रशंसा भरी

निगाहों से देखता रहा, जिसका जवाब उन्होंने मोहक मुस्कान से दिया। और अब, अगर हम गिलबर्ट के किसी दोस्त से मिलें, चाहे लड़का हो या लड़की, जो दूर से हमें नमस्कार करे, तो वे मुझे भी उन खुशनसीब लोगों में से एक मानेंगे जिनकी किस्मत से मैं ईर्ष्या करता था, गिलबर्ट के उन दोस्तों में से एक जो उनके परिवार को जानते थे और उनके जीवन के उस दूसरे हिस्से में भागीदार थे, वह हिस्सा जो चैंप्स-एलिसी में नहीं बीता था।

अक्सर जब हम बोइस या जार्डिन के रास्तों से गुजरते थे, तो हमें कोई न कोई प्रतिष्ठित महिला मिल जाती थी जो स्वान की मित्र होती थी, जिसे शायद वह देख नहीं पाते थे, इसलिए उनकी पत्नी उन्हें यह कहकर जगाती थीं, "चार्ल्स! क्या आप श्रीमती डी मोंटमोरेंसी को नहीं देख रहे?" और स्वान, अपनी उस सौहार्दपूर्ण मुस्कान के साथ, जो उनकी लंबी और घनिष्ठ मित्रता से उपजी थी, अपना सिर झुका लेते थे, लेकिन एक धीमी, सहज और विशिष्ट गरिमापूर्ण हावभाव के साथ। कभी-कभी वह महिला रुक जातीं, श्रीमती स्वान के प्रति शिष्टाचार दिखाने का अवसर पाकर प्रसन्न होतीं, जिसका कोई कष्टदायक परिणाम न हो, और वे सभी जानते थे कि वह इससे कभी लाभ उठाने की कोशिश नहीं करेंगी, क्योंकि स्वान ने उन्हें संयम का इतना अच्छा प्रशिक्षण दिया था। फिर भी उन्होंने शिष्ट समाज के सभी तौर-तरीके सीख लिए थे, और चाहे वह महिला कितनी भी बुद्धिमान या गरिमामय क्यों न हो, श्रीमती स्वान हमेशा उनके बराबर ही होती थीं; अपने पति द्वारा पहचाने गए और संबोधित कर रहे मित्र के सामने एक क्षण के लिए रुककर, वह हम दोनों, गिलबर्ट और मेरा, का परिचय इतने सहजता से करातीं, इतनी सहजता और शांति से शिष्टाचार का पालन करतीं कि उन दोनों को देखकर यह कहना मुश्किल होता कि उनमें से कुलीन कौन है। जिस दिन हम सिंहली लोगों का निरीक्षण करने गए थे, घर लौटते समय हमने अपनी दिशा में आती हुई एक बुजुर्ग लेकिन

अभी भी आकर्षक महिला को देखा, जिसके पीछे दो अन्य लोग थे जो उसके अंगरक्षक के रूप में प्रतीत हो रहे थे। महिला ने गहरे रंग का लबादा ओढ़ा हुआ था और सिर पर एक छोटी सी टोपी थी जो उसकी ठुड्डी के नीचे दो रिबन से बंधी हुई थी। "आह! यहाँ कोई है जो आपको रुचिकर लगेगी!" स्वान ने कहा। वह बुजुर्ग महिला, जो हमसे कुछ ही गज की दूरी पर आ गई थी, अब हम पर स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ मुस्कुराई। स्वान ने अपनी टोपी उतारी। श्रीमती... स्वान ने झुककर प्रणाम किया और उस महिला का हाथ चूमने का नाटक किया, जो विंटरहाल्टर की पेंटिंग की तरह खड़ी थी, उसने उसे वापस उठाया और उसके गाल पर चुंबन किया। "अरे, अरे; अपनी टोपी पहन लो!" उसने स्वान को भारी और लगभग गुर्राती हुई आवाज़ में डांटा, मानो कोई पुरानी और परिचित दोस्त बोल रही हो। "मैं आपको महारानी से मिलवाने जा रही हूँ," श्रीमती स्वान ने फुसफुसाते हुए कहा। स्वान मुझे एक पल के लिए एक तरफ ले गया जबकि उसकी पत्नी राजकुमारी के साथ मौसम और हाल ही में गार्डन डी'एक्लिमेटेशन में शामिल किए गए जानवरों के बारे में बात कर रही थी। "वह राजकुमारी मैथिल्डे हैं," उसने मुझे बताया; "आप जानती हैं ना, मेरा मतलब किससे है? फ्लाउबर्ट, सैंटे-ब्यूव और डुमास की दोस्त। ज़रा सोचिए, वो नेपोलियन प्रथम की भतीजी हैं। उन्हें नेपोलियन तृतीय और रूस के सम्राट से विवाह के प्रस्ताव मिले थे। है ना दिलचस्प? उनसे थोड़ी बात कीजिए। लेकिन मुझे उम्मीद है कि वो हमें यहाँ एक घंटे तक खड़ा नहीं रखेंगी!...मैं कुछ दिन पहले टैने से मिला था," उन्होंने राजकुमारी को संबोधित करते हुए कहा, "और उन्होंने मुझे बताया कि आपकी महारानी उनसे नाराज़ हैं।" "वो बिलकुल बदतमीज़ की तरह बर्ताव कर रहे हैं!" उन्होंने रूखेपन से कहा, 'कोचोन' शब्द का उच्चारण ऐसे किया जैसे वो जोन ऑफ आर्क के समकालीन बिशप कॉचोन का जिक्र कर रही हों।

"सम्राट पर उनके लेख के बाद मैंने उनके पास अपना कार्ड छोड़ दिया था जिस पर 'पी.पी.सी.' लिखा था।" मुझे वही हैरानी हुई जो जन्म से राजकुमारी पैलेटाइन रहीं डचेस डी'ऑरलियन्स के पत्रों को खोलने पर होती है। और सचमुच, राजकुमारी मैथिल्डे, जो पूरी तरह से फ्रांसीसी भावनाओं से प्रेरित थीं, ने उन्हें एक सीधी-सादी और स्पष्टवादी शैली में व्यक्त किया, जो पिछली पीढ़ी के जर्मनी की याद दिलाती थी, और निस्संदेह उन्हें यह शैली अपनी वुर्टेमबर्ग स्थित मां से विरासत में मिली थी। उनकी यह कुछ हद तक रूखी और लगभग मर्दाना स्पष्टवादिता, जैसे ही उन्होंने मुस्कुराना शुरू किया, इतालवी आलस्य के साथ नरम पड़ गई। और उनका पूरा पहनावा एक विशिष्ट 'द्वितीय साम्राज्य' शैली का था - हालाँकि राजकुमारी ने इसे सादगी से और केवल, निस्संदेह, उन फैशनों के प्रति लगाव के कारण पहना था जिन्हें उन्होंने अपने बचपन में पसंद किया था - ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने जानबूझकर ऐतिहासिक रंग में जरा सा भी अंतर न आने देने की योजना बनाई थी, और उन लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करने की कोशिश की थी जो उनसे एक बीते युग की यादों को ताजा करने की उम्मीद करते थे। मैंने स्वान से फुसफुसाकर पूछा कि क्या वह मुसेट को जानती थीं। "बहुत थोड़ा-बहुत, महोदय," यह उत्तर था, जो प्रश्न पर झुंझलाहट का दिखावा करते हुए दिया गया था, और निश्चित रूप से यह एक मजाक था कि उन्होंने स्वान को 'श्रीमान' कहा, क्योंकि वे घनिष्ठ मित्र थे। "मैंने उन्हें एक बार खाने पर बुलाया था। मैंने उन्हें सात बजे आमंत्रित किया था। साढ़े सात बजे तक, जब वे नहीं आए, तो हम खाने पर बैठ गए। वे आठ बजे आए, मुझे प्रणाम किया, अपनी सीट पर बैठ गए, एक शब्द भी नहीं बोला, और खाना खाने के बाद बिना मेरी आवाज सुने ही चले गए। ज़ाहिर है, वे बहुत नशे में थे। इससे मुझे दोबारा कोशिश करने की हिम्मत बिल्कुल नहीं हुई।" हम, स्वान और मैं,

थोड़ी दूरी पर खड़े थे। "मुझे उम्मीद है कि यह छोटी सी मुलाकात ज़्यादा देर तक नहीं चलेगी," वे बुदबुदाए, "मेरे पैरों के तलवे दुख रहे हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मेरी पत्नी क्यों लगातार बातें कर रही है। घर पहुँचने पर वही थकान की शिकायत करेगी, और वह जानती है कि मैं इस तरह खड़ा नहीं रह सकता।" श्रीमती स्वान के लिए, जिन्हें श्रीमती से यह खबर मिली थी... बोंटेम्प्स राजकुमारी को बता रहे थे कि सरकार ने अंततः अपनी भ्रष्टता की गहराई को महसूस करते हुए, कुछ दिनों में उन्हें मंच पर उपस्थित होने के लिए निमंत्रण भेजने का फैसला किया है, जब ज़ार निकोलस इनवैलिड्स का दौरा करने वाले थे। लेकिन राजकुमारी, जो बाहरी दिखावे के बावजूद, अपने मंडली के चरित्र के बावजूद, जिसमें मुख्य रूप से कलाकार और साहित्यकार शामिल थे, दिल से नेपोलियन की भतीजी बनी रहीं और जब भी उन्हें कार्रवाई करनी पड़ी, उन्होंने अपनी पहचान उजागर की, उन्होंने उत्तर दिया: "जी महोदया, मुझे यह आज सुबह मिला था, और मैंने इसे मंत्री को वापस भेज दिया है, जो अब तक उनके पास पहुँच गया होगा। मैंने उनसे कहा कि मुझे इनवैलिड्स जाने के लिए निमंत्रण की आवश्यकता नहीं है। यदि सरकार चाहती है कि मैं वहाँ उपस्थित रहूँ, तो यह मंच पर नहीं, बल्कि हमारे तहखाने में होगा, जहाँ सम्राट का मकबरा है। मुझे वहाँ प्रवेश के लिए किसी कार्ड की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास मेरी चाबियाँ हैं। मैं जब चाहूँ अंदर-बाहर जाती हूँ। सरकार को बस मुझे यह बताना है कि वह मेरी उपस्थिति चाहती है या नहीं। लेकिन अगर मैं इनवैलिड्स जाती हूँ, तो मैं वहाँ नीचे ही जाऊँगी या कहीं नहीं जाऊँगी।" उसी क्षण, श्रीमती स्वान और मुझे एक युवक ने अभिवादन किया, जिसने बिना रुके उनका अभिवादन किया, और मुझे पता नहीं था कि वह उसे जानती थीं; वह ब्लोच था। मैंने उसके बारे में पूछताछ की, और मुझे बताया गया कि श्रीमती बोंटेम्प्स ने उसका

परिचय उनसे करवाया था, और वह मंत्री के सचिवालय में कार्यरत था, जो मेरे लिए बिल्कुल नई बात थी। खैर, वह उससे अक्सर नहीं मिलती होंगी—या शायद उन्होंने ब्लोच का नाम लेना उचित नहीं समझा, क्योंकि वह नाम उन्हें उतना आकर्षक नहीं लगता था। उन्होंने मुझे बताया कि उनका नाम एम. मोरुएल था। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि वह गलत थीं, उनका नाम ब्लोच ही था। राजकुमारी ने अपने पीछे लहराते हुए वस्त्र का पिछला भाग समेटा, जबकि श्रीमती स्वान उसे प्रशंसा भरी निगाहों से निहार रही थीं। "यह तो बस एक फर है जो रूस के सम्राट ने मुझे भेजा है," उन्होंने समझाया, "और चूंकि मैं अभी उनसे मिलकर आई हूं, इसलिए मैंने इसे पहन लिया ताकि उन्हें दिखा सकूं कि मैंने इसे एक चादर की तरह सिलवा लिया है।" "मैंने सुना है कि राजकुमार लुई रूसी सेना में भर्ती हो गए हैं; राजकुमारी उन्हें खोने से बहुत दुखी होंगी," श्रीमती स्वान ने अपने पति के दुख के संकेतों को अनसुना करते हुए कहा। "यह तो बहुत अच्छी बात थी। जैसा कि मैंने उनसे कहा, 'सिर्फ़ इसलिए कि परिवार में पहले एक सैनिक रहा है, इसका यह मतलब नहीं है!'" राजकुमारी ने नेपोलियन महान की ओर इशारा करते हुए, अपनी इस सीधी-सादी बात से जवाब दिया। लेकिन स्वान और चुप नहीं रह सके। "महोदया, मैं ही राजकुमार की भूमिका निभाना चाहता हूँ और आपसे एकांत में जाने की अनुमति माँगता हूँ; लेकिन देखिए, मेरी पत्नी की तबीयत ठीक नहीं है और मैं नहीं चाहता कि वह ज़्यादा देर तक खड़ी रहें।" श्रीमती स्वान ने फिर से झुककर अभिवादन किया, और राजकुमारी ने हम सभी को एक दिव्य मुस्कान दी, मानो वह अतीत से, अपने बचपन की सुंदरता से, कॉम्पीएग्ने की शामों से, एक ऐसी मुस्कान जो उनके अब तक उदास चेहरे पर मधुर और अटूट रूप से तैरती रही; फिर वह अपने रास्ते चली गई, उसके पीछे-पीछे दो दासियाँ भी चल रही थीं, जो दुभाषियों, बच्चों या

बीमारों की नर्सों की तरह, हमारी बातचीत को निरर्थक वाक्यों और अनावश्यक स्पष्टीकरणों से ही काट रही थीं। "इस सप्ताह किसी दिन जाकर अपना नाम उनकी पुस्तिका में लिखवा लो," श्रीमती स्वान ने मुझे सलाह दी। "इन 'शाही लोगों' (जैसा कि अंग्रेज उन्हें कहते हैं) के लिए कोई कार्ड नहीं छोड़ता, लेकिन अगर तुम अपना नाम लिखवा लोगी तो वह तुम्हें अपने घर बुलाएँगी।"

कभी-कभी सर्दियों के उन आखिरी दिनों में, अपनी यात्रा शुरू करने से पहले, हम उन छोटे-छोटे सिनेमाघरों में से किसी एक में जाया करते थे जो उस समय आयोजित हो रहे थे। वहाँ स्वान, एक प्रतिष्ठित कला संग्राहक होने के नाते, उन दीर्घाओं के डीलरों द्वारा विशेष सम्मान के साथ उनका स्वागत किया जाता था, जहाँ ये प्रदर्शनियाँ आयोजित होती थीं। और उस ठंडे मौसम में, दक्षिण फ्रांस और वेनिस जाने की पुरानी इच्छा उन कमरों को देखकर फिर से जागृत हो जाती थी, जहाँ वसंत ऋतु पूरी तरह से विकसित हो चुकी थी और चमकता सूरज गुलाबी आल्पिल्स पर्वतमाला पर बैंगनी छाया डालता था और ग्रैंड कैनाल को पन्ना की तरह चमकीला बना देता था। यदि मौसम खराब होता, तो हम किसी संगीत कार्यक्रम या थिएटर में जाते, और उसके बाद किसी फैशनेबल चायघर में जाते। वहाँ, जब भी श्रीमती स्वान को मुझसे कुछ कहना होता, जिसे वह बगल की मेज पर बैठे लोगों या यहाँ तक कि चाय लाने वाले वेटर को भी नहीं समझाना चाहती थीं, तो वह उसे अंग्रेजी में कहतीं, मानो वह हम दोनों की ही गुप्त भाषा हो। संयोगवश, उस जगह पर सभी लोग अंग्रेजी जानते थे - केवल मैंने ही अभी तक यह भाषा नहीं सीखी थी, और मुझे श्रीमती स्वान से यह बात कहनी पड़ी ताकि वह चाय पी रहे या हमें चाय परोस रहे लोगों पर ऐसी टिप्पणियां करना बंद कर दें, जिन्हें मैं बिना समझे या संदर्भित व्यक्ति को एक भी शब्द खोए बिना अपमानजनक समझती थी।

एक बार, थिएटर में एक दोपहर के दौरान, गिलबर्ट ने मुझे बहुत बड़ा आश्चर्य दिया। यह ठीक वही दिन था जिसके बारे में उसने कुछ समय पहले मुझसे बात की थी, और जिस दिन उसके दादाजी की पुण्यतिथि थी। हम, मैं और वह, उसकी गवर्नेंस के साथ, एक ओपेरा के कुछ अंश सुनने जा रहे थे। गिलबर्ट ने इस प्रदर्शन में शामिल होने के लिए तैयार होकर कपड़े पहने थे और हमेशा की तरह उदासीनता का भाव लिए हुए थी, वह कहती थी कि दुनिया में कुछ भी हो, चाहे कुछ भी हो, बस मुझे अच्छा लगे और उसके माता-पिता को मंज़ूरी मिल जाए। दोपहर के भोजन से पहले, उसकी माँ हमें एक तरफ ले गई और बताया कि उसके पिता उस दिन थिएटर जाने की बात से नाराज़ थे। मुझे यह स्वाभाविक ही लगा। गिलबर्ट शांत रही, लेकिन गुस्से से उसका चेहरा पीला पड़ गया जिसे वह छिपा नहीं सकी; फिर भी उसने एक शब्द भी नहीं कहा। जब एम. स्वान हमारे साथ आए, तो उनकी पत्नी उन्हें कमरे के दूसरे छोर पर ले गईं और उनके कान में कुछ कहा। उन्होंने गिलबर्ट को बुलाया और वे दोनों अगले कमरे में चले गए। हम उनकी ऊंची आवाजें सुन सकते थे। फिर भी मुझे यह विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी विनम्र, इतनी प्यारी, इतनी विचारशील गिलबर्ट, ऐसे दिन और इतनी मामूली बात पर अपने पिता की अपील को ठुकरा देगी। आखिरकार स्वान उसे लेकर वापस आया और बोला: "तुमने मेरी बात सुन ली। अब तुम जो चाहो कर सकती हो।"

दोपहर के भोजन के दौरान गिलबर्ट के चेहरे पर लगातार शिकन बनी रही, जिसके बाद हम उसके कमरे में चले गए। फिर अचानक, बिना किसी हिचकिचाहट के और मानो उसने कभी भी अपने कार्यों को लेकर संकोच न किया हो: "दो बज गए!" उसने कहा। "तुम्हें पता है कि संगीत कार्यक्रम साढ़े दो बजे शुरू होता है।" और उसने अपनी नौकरानी को जल्दी आने

का आदेश दिया।

"लेकिन," मैंने उसे याद दिलाया, "क्या तुम्हारे पिता तुमसे नाराज़ नहीं होंगे?"

"बिल्कुल भी नहीं!"

"निश्चित रूप से, उन्हें डर था कि सालगिरह के कारण यह अजीब लगेगा।"

"लोगों की राय से मुझे क्या फर्क पड़ता है? मुझे लगता है कि भावनाओं के मामलों में दूसरों की चिंता करना सरासर बेवकूफी है। हम अपने लिए महसूस करते हैं, जनता के लिए नहीं। मैडमोजेल को बहुत कम सुख मिलते हैं; वह इस कॉन्सर्ट में जाने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रही थीं। मैं सिर्फ जनता की राय को संतुष्ट करने के लिए उन्हें इससे वंचित नहीं करने वाली।"

"लेकिन, गिलबर्टे," मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए विरोध किया, "यह जनमत को संतुष्ट करने के लिए नहीं है, यह तुम्हारे पिता को खुश करने के लिए है।"

"मुझे उम्मीद है कि आप मेरे आचरण पर कोई टिप्पणी नहीं करेंगे," उसने तीखे स्वर में कहा और अपना हाथ झटक कर दूर कर लिया।

* * *

मुझे जार्डिन डी'एक्लिमेटेशन ले जाने से भी कहीं अधिक अनमोल उपकार यह था कि स्वान परिवार ने मुझे बर्गोट के साथ अपनी मित्रता से भी वंचित नहीं किया, जो मेरे मन में उनके प्रति आकर्षण का मूल कारण थी। गिलबर्ट से मिलने से पहले ही, मैंने सोचा था कि उस देवतुल्य बुजुर्ग के साथ उनकी घनिष्ठता उन्हें मेरे लिए सबसे भावुक और मोहक मित्र बना देती, यदि मेरे प्रति उनके मन में उत्पन्न होने वाली घृणा ने मुझे यह आशा करने से न रोका होता कि वे कभी मुझे उनके साथ उन शहरों की सैर पर

ले जाएंगी जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे। और फिर, एक दिन, श्रीमती स्वान की ओर से एक बड़े दोपहर के भोजन की पार्टी का निमंत्रण आया। मुझे नहीं पता था कि और कौन-कौन मेहमान होंगे। मेरे आगमन पर, हॉल पार करते ही, एक भयावह घटना ने मुझे व्याकुल कर दिया। श्रीमती... स्वान उन रीति-रिवाजों को अपनाने का शायद ही कभी मौका छोड़ती थीं जो कुछ समय के लिए चलन में आते हैं और फिर, जब उन्हें समर्थन नहीं मिलता, तो उन्हें जल्दी ही छोड़ दिया जाता है (जैसे, उदाहरण के लिए, कई साल पहले, उन्होंने अपने 'प्राइवेट हैंसम' (या कहें कि अब उनके पास था) कार्ड पर अंग्रेजी में छपवाया था, जिसमें दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया गया था, और उसके बाद किसी कमोबेश महत्वपूर्ण व्यक्ति का नाम लिखा होता था)। अक्सर इन प्रथाओं में कुछ भी रहस्यमय नहीं होता था और इसके लिए किसी दीक्षा की आवश्यकता नहीं होती थी। उदाहरण के लिए, उन दिनों की एक छोटी सी नवीनता को लें, जो इंग्लैंड से आई थी; ओडेट ने अपने पति से कुछ विजिटिंग कार्ड छपवाए थे जिन पर चार्ल्स स्वान के नाम से पहले "श्रीमान" लिखा था। मेरे पहले दौरे के बाद, श्रीमती स्वान ने मेरे दरवाजे पर ऐसा ही एक कार्ड छोड़ दिया था, जैसा कि वह उन्हें कहती थीं। इससे पहले किसी ने भी मेरे लिए कार्ड नहीं छोड़ा था; मुझे एक साथ इतना गर्व, भावना और कृतज्ञता महसूस हुई कि मैंने अपने पास मौजूद सारा पैसा इकट्ठा करके कैमेलिया के फूलों की एक शानदार टोकरी मंगवाई और उसे श्रीमती स्वान को भेज दिया। स्वान। मैंने अपने पिता से विनती की कि वे जाकर उनके लिए एक कार्ड छोड़ दें, लेकिन पहले जल्दी से कुछ कार्ड छपवा लें जिन पर उनके नाम के आगे "श्रीमान" लिखा हो। उन्होंने मेरी दोनों प्रार्थनाएँ पूरी नहीं कीं; मैं कुछ दिनों तक निराशा में डूबी रही, और फिर खुद से सोचने लगी कि क्या वे आखिरकार सही ही थे। लेकिन "श्रीमान" का यह प्रयोग, अगर

इसका कोई अर्थ नहीं था, तो कम से कम समझ में तो आ रहा था। लेकिन एक और बात जो मुझे इस दोपहर के भोजन के अवसर पर पता चली, वह ऐसी नहीं थी, लेकिन बिना किसी संकेत के। जिस क्षण मैं हॉल से ड्राइंग रूम में कदम रखने वाली थी, बटलर ने मुझे एक पतला, आयताकार लिफाफा दिया जिस पर मेरा नाम लिखा था। आश्चर्य में मैंने उन्हें धन्यवाद दिया; लेकिन मैंने लिफाफे को संदेह भरी नजरों से देखा। मुझे ठीक वैसे ही नहीं पता था कि मुझे इसके साथ क्या करना है, जैसे किसी विदेशी को चीनी भोज में उसके स्थान पर रखे उन छोटे बर्तनों के साथ क्या करना है, यह नहीं पता होता। मैंने देखा कि यह गोंद से चिपकाया हुआ था; मुझे डर था कि अगर मैं उसे वहीं खोल देता तो मैं अविवेकी लगूंगा; इसलिए मैंने उसे ऐसे अपनी जेब में रख लिया जैसे मुझे सब कुछ पता हो। श्रीमती स्वान ने कुछ दिन पहले मुझे पत्र लिखकर कुछ लोगों के साथ दोपहर के भोजन पर आने के लिए कहा था। हालांकि, हम सोलह लोग थे, जिनमें मुझे एक पल के लिए भी शक नहीं था कि मुझे बर्गोट मिलेगी। श्रीमती स्वान, जिन्होंने पहले ही अपने कई मेहमानों के सामने मेरा नाम लिया था, अचानक मेरा नाम लेने के बाद, उसी लहजे में जैसे उन्होंने मेरा नाम लिया था (दरअसल, जैसे कि हम उनकी पार्टी के केवल दो मेहमान हों, जिन्हें एक-दूसरे से मिलकर समान रूप से प्रसन्न होना चाहिए), उन्होंने बर्फीले बालों वाली मधुर गायिका का नाम लिया। बर्गोट नाम सुनकर मैं ऐसे उछल पड़ा जैसे मुझ पर रिवाल्वर से गोली चलाई गई हो, लेकिन सहज रूप से, दिखावे के लिए, मैंने झुककर अभिवादन किया; ठीक मेरे सामने, उन जादूगरों की तरह जो पिस्तौल की गोली के धुएं में, जिसमें से एक कबूतर फड़फड़ाकर निकला हो, अपने फ्रॉक कोट पहने, पूरी तरह से सुरक्षित खड़े दिखाई देते हैं, मेरे अभिवादन का जवाब एक छोटे, मोटे, तगड़े, लाल नाक वाले, घोंघे के खोल की तरह

मुड़े हुए और ठोड़ी पर काले बालों के गुच्छे वाले युवक ने दिया। मैं बुरी तरह निराश हुआ, क्योंकि विस्फोट की धूल में जो गायब हो गया था, वह न केवल वह कमजोर बूढ़ा आदमी था, जिसका अब कोई निशान नहीं बचा था; बल्कि उस विशाल कृति की सुंदरता भी गायब हो गई थी जिसे मैंने उस नाजुक और पवित्र शरीर में स्थापित करने की कोशिश की थी, जिसे मैंने एक मंदिर की तरह, विशेष रूप से अपने लिए बनाया था, लेकिन उस छोटे से, चपटी नाक और काली दाढ़ी वाले आदमी की रक्त वाहिकाओं, हड्डियों, मांसपेशियों और नसों से भरी हुई, तंग आकृति में उसके लिए कोई जगह नहीं थी। मैंने बर्गॉट की जिस छवि को धीरे-धीरे और सूक्ष्मता से, बूंद-बूंद करके, उनकी पुस्तकों की पारदर्शी सुंदरता से एक स्टैलेक्टाइट की तरह, अपने लिए गढ़ा था, वह (मुझे तुरंत समझ आ गया) उस क्षण से निरर्थक हो गई, जब मुझे उनमें घोंघे के खोल जैसी नाक और छोटी काली दाढ़ी को शामिल करना पड़ा; ठीक वैसे ही जैसे हम किसी समस्या के हल को बेकार मान लेते हैं जिसके नियम हमने पूरे नहीं पढ़े हों, क्योंकि हम यह ध्यान नहीं देते कि कुल योग एक निश्चित संख्या के बराबर होना चाहिए। नाक और दाढ़ी भी इसी तरह अपरिहार्य तत्व थे, और यह बात और भी पेचीदा इसलिए थी क्योंकि, एक ओर तो वे मुझे बर्गॉट के व्यक्तित्व का पूर्ण पुनर्निर्माण करने के लिए मजबूर कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर वे एक विशेष प्रकार के सचेत और आत्मसंतुष्ट मन की भावना को लगातार दर्शाते, उत्पन्न करते और प्रकट करते प्रतीत हो रहे थे, जो उस छवि में मौजूद नहीं थी, क्योंकि ऐसे मन का उन पुस्तकों में व्याप्त बुद्धि से कोई संबंध नहीं था, जिनसे मैं बहुत अच्छी तरह परिचित था और जो एक कोमल और दैवीय ज्ञान से परिपूर्ण थीं। उनसे शुरू करते हुए, मैं उस घोंघे के खोल जैसी नाक तक कभी नहीं पहुँच पाता; लेकिन उस नाक से शुरू करते हुए, जो ज़रा भी शर्मिंदा नहीं दिखती थी, बल्कि

उसके चेहरे पर जड़े एक विचित्र आभूषण की तरह अकेली खड़ी थी, मुझे बर्गोट के काम से बिल्कुल विपरीत दिशा में आगे बढ़ना होगा। ऐसा लगता है कि मुझे एक व्यस्त और मग्न इंजीनियर की मानसिकता तक पहुँचना होगा, उस तरह का इंजीनियर जो सड़क पर आपसे मिलने पर यह कहना सही समझता है: "धन्यवाद, और आप?" इससे पहले कि आप वास्तव में उनसे उनका हालचाल पूछें, या फिर, यदि आप उन्हें आश्वस्त करते हैं कि उनसे मिलकर आपको खुशी हुई है, तो वे एक संक्षिप्त जवाब देते हैं जिसे वे प्रभावी, बुद्धिमान और आधुनिक समझते हैं, क्योंकि इससे व्यर्थ औपचारिकताओं में कीमती समय की बर्बादी नहीं होती: "मैं भी!" नाम, निःसंदेह, मनमौजी चित्रकारों की तरह होते हैं, जो हमें लोगों और स्थानों के ऐसे रेखाचित्र देते हैं जो वास्तविकता से इतने कम मिलते-जुलते होते हैं कि जब हमारे सामने, कल्पना के स्थान पर, दृश्य जगत होता है (जो कि वास्तव में सच्चा जगत नहीं है, क्योंकि हमारी इंद्रियाँ चित्र बनाने की कला में हमारी कल्पना से कुछ ही अधिक सक्षम हैं, इतनी कम कि वास्तविकता के जो अंतिम और लगभग सजीव चित्र हम प्राप्त कर पाते हैं, वे दृश्य जगत से उतने ही भिन्न होते हैं जितना कि वह कल्पना से था), तो हम अक्सर एक प्रकार के स्तब्ध रह जाते हैं। लेकिन बर्गोट के मामले में, उनके नाम से उनके बारे में मेरी पूर्वकल्पित धारणा ने मुझे उनके काम से मेरी परिचितता की तुलना में कहीं कम परेशान किया, जिससे मैं एक गुब्बारे की डोरी की तरह, छोटी दाढ़ी वाले व्यक्ति को जोड़ने के लिए बाध्य था, यह जाने बिना कि क्या उसमें उसे जमीन से उठाने की शक्ति होगी। हालाँकि, यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत हुआ कि वास्तव में उन्हीं ने वे पुस्तकें लिखी थीं जिनका मैंने इतना आनंद लिया था, क्योंकि श्रीमती। स्वान ने यह महसूस किया कि उसे इनमें से एक के प्रति मेरी प्रशंसा के बारे में उसे बताना चाहिए, इसलिए उसने इस बात पर

कोई आश्चर्य नहीं जताया कि उसने यह बात पार्टी के किसी अन्य व्यक्ति के बजाय उसे ही बताई। न ही उसने उसके इस कार्य को किसी गलतफहमी का परिणाम माना, बल्कि इन सभी विशिष्ट अतिथियों के सम्मान में पहने हुए अपने फ्रॉक कोट को आने वाले भोजन की प्रत्याशा में फूले हुए शरीर के साथ और भी फुलाते हुए, जबकि उसका मन पूरी तरह से अन्य, अधिक वास्तविक और महत्वपूर्ण विचारों में डूबा हुआ था, वह अपने प्रारंभिक जीवन के किसी बीते हुए प्रसंग की तरह मुस्कुराया, मानो किसी ने ड्यूक डी गुइज़ की उस पोशाक का जिक्र किया हो जिसे उसने एक बार किसी फैंसी ड्रेस बॉल में पहना था; और अपने पुस्तकों के विचार पर वापस लौटते हुए, वह मुस्कुराया; जिससे मेरी नजरों में पुस्तकें तुरंत गिरने लगीं (सौंदर्य, संसार और जीवन के संपूर्ण मूल्य को भी नीचे खींचती हुई), यहाँ तक कि वे एक छोटी दाढ़ी वाले व्यक्ति के मात्र आकस्मिक मनोरंजन के रूप में प्रतीत होने लगीं। मैंने मन ही मन सोचा कि उन्होंने इन रचनाओं पर बहुत मेहनत की होगी, लेकिन अगर वे मोती-सीपियों से घिरे किसी द्वीप पर रहते, तो वे मोती के व्यापार में ही अपना जीवन लगा देते और उससे खूब धन कमा लेते। उनका काम अब मुझे उतना स्वाभाविक नहीं लगा। फिर मैंने खुद से पूछा कि क्या मौलिकता वास्तव में यह साबित करती है कि महान लेखक देवता होते हैं, जो अपने-अपने राज्य पर राज करते हैं, या फिर यह सब सिर्फ कल्पना मात्र है, क्या एक लेखक की पुस्तक और दूसरे की पुस्तक के बीच का अंतर उनके अपने-अपने परिश्रम का परिणाम है, न कि दो विपरीत व्यक्तित्वों के बीच के मूलभूत और महत्वपूर्ण अंतर की अभिव्यक्ति।

इसी बीच हम मेज पर अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। मेरी थाली के बगल में मुझे एक कार्नेशन फूल मिला, जिसकी डंठल चांदी के कागज में लिपटी हुई थी। इसने मुझे उस लिफाफे से कम शर्मिंदा किया जो मुझे

हॉल में दिया गया था, हालांकि मैं उसे पूरी तरह से भूल चुका था। यह रिवाज, हालांकि मेरे लिए अजीब था, तब समझ में आया जब मैंने देखा कि सभी पुरुष अतिथि अपनी थालियों के पास पड़े वैसे ही कार्नेशन फूल उठा रहे थे और उन्हें अपने कोट के बटनहोल में लगा रहे थे। मैंने भी उनकी तरह ही किया, उस सहजता के साथ जो एक स्वतंत्र विचारक चर्च में अपनाता है, जो पूजा-पाठ के नियमों से परिचित नहीं होता, लेकिन सबके उठने पर उठता है और सबके घुटने टेकने के एक क्षण बाद घुटने टेकता है। एक और रिवाज, जो मेरे लिए उतना ही अजीब था लेकिन कम क्षणभंगुर था, ने मुझे और भी बेचैन कर दिया। मेरी थाली के दूसरी तरफ एक छोटी थाली थी, जिस पर एक काला पदार्थ रखा हुआ था जिसे मैं उस समय कैवियार नहीं जानता था। मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी कि इसका क्या करना है, लेकिन मैंने इसे अपने मुंह में न जाने देने का पक्का इरादा कर लिया था।

बर्गोट मेरे पास ही बैठे थे और मैं उनकी कही हर बात साफ़-साफ़ सुन पा रहा था। तब मुझे समझ आया कि एम. डी नॉरपोइस ने उनके बारे में क्या धारणा बनाई थी। वाकई उनकी आवाज़ में एक अनोखी विशेषता थी; किसी के बोलने के पीछे छिपे विचार से आवाज़ की भौतिक गुणवत्ता में इतना बदलाव और किसी चीज़ से नहीं आता; स्वरों की गूंज, होंठों की ऊर्जा, सब कुछ गहराई से प्रभावित होता है—वास्तव में, बोलने का पूरा तरीका ही बदल जाता है। मुझे लगा कि उनकी आवाज़ उनके लेखन से बिल्कुल अलग थी, और यहाँ तक कि उनके कहे शब्द भी उनकी किताबों में लिखी बातों से अलग थे। लेकिन आवाज़ एक ऐसे मुखौटे के पीछे से निकलती है जिसके ज़रिए हम पहली नज़र में उस चेहरे को पहचान नहीं पाते जिसे हमने वक्ता की साहित्यिक शैली में पहले ही देखा है। बातचीत के कुछ बिंदुओं पर, जब बर्गोटे, आदत के चलते, उस तरह से बोलने लगे

जिसे एम. डी नॉरपोइस के अलावा कोई भी बनावटी या अप्रिय नहीं मानता, तो मुझे उनकी किताबों के उन हिस्सों से सटीक समानता समझने में काफी समय लगा जिनमें उनकी शैली इतनी काव्यात्मक और संगीतमय हो जाती थी। उन बिंदुओं पर मैं उनके शब्दों में एक ऐसी कलात्मक सुंदरता देख सकता था जो उनके वाक्यों के अर्थ से स्वतंत्र थी, और जिस प्रकार मानवीय वाणी मानवीय आत्मा को प्रतिबिंबित करती है, भले ही साहित्यिक शैली उसे व्यक्त न करे, बर्गोटे लगभग निरर्थक बातें करते प्रतीत होते थे, कुछ शब्दों को स्वरबद्ध करते हुए और मानो गुप्त रूप से उनके नीचे एक ही बिम्ब का अनुसरण कर रहे हों, उन्हें एक निरंतर स्वर में, थकाऊ एकरसता के साथ पिरोते हुए। इस प्रकार एक आडंबरपूर्ण, ज़ोरदार और नीरस शुरुआत उनके शब्दों के दुर्लभ सौंदर्य मूल्य का संकेत थी, और उनकी बातचीत में उसी शक्ति का प्रभाव था जिसने उनकी किताबों में बिम्बों के उस सामंजस्यपूर्ण प्रवाह को उत्पन्न किया था। मुझे इसे शुरू में समझने में और भी कठिनाई हुई, क्योंकि ऐसे क्षणों में उसने जो कुछ कहा, वह बर्गोट के प्रामाणिक कथन होने के बावजूद, बर्गोट के शब्दों जैसा प्रतीत नहीं होता था। यह स्पष्ट रूप से परिभाषित विचारों का एक समृद्ध भंडार था, जो उस 'बर्गोट शैली' में समाहित नहीं था जिसे कई कहानीकारों ने अपना लिया था; और यह भिन्नता शायद इस तथ्य का एक और पहलू थी—जिसे बातचीत के प्रवाह के माध्यम से समझना मुश्किल था, जैसे धुंधले शीशे से ग्रहण दिखाई देता है—कि जब कोई बर्गोट का एक पृष्ठ पढ़ता है, तो वह कभी भी उन बेजान नकलचियों द्वारा लिखे गए शब्दों जैसा नहीं होता, जो फिर भी, समाचार पत्रों और पुस्तकों में, अपने गद्य को कई "बर्गोट जैसी" छवियों और विचारों से सजाते हैं। शैली में यह अंतर इस तथ्य से उत्पन्न हुआ कि "बर्गोटवाद" से तात्पर्य सर्वप्रथम और सर्वथा प्रत्येक वस्तु के हृदय में छिपे सत्य के एक अमूल्य

तत्व से था, जिसे उस महान लेखक ने अपनी प्रतिभा के बल पर निकाला था, और यह निष्कर्षण, न कि मात्र "बर्गोटवाद" का सृजन, मेरे प्रिय सिंगर का लेखन का उद्देश्य था। यद्यपि, यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि उन्होंने स्वयं के बावजूद और बर्गोट होने के कारण, उनका सृजन जारी रखा, इसलिए एक अर्थ में, उनके कार्य में प्रत्येक नई सुंदरता उस वस्तु के हृदय में दबी बर्गोट की एक छोटी सी बूंद थी जिसे उन्होंने उससे निकाला था। परन्तु यदि इस कारण से, उनमें से प्रत्येक सुंदरता अन्य सभी से संबंधित थी, और उनमें 'पारिवारिक समानता' थी, तब भी प्रत्येक अलग और विशिष्ट बनी रही, ठीक उसी प्रकार जैसे वह खोज जिसने उसे प्रकाश में लाया था; यह नई शैली थी, और इसलिए उस शैली से भिन्न थी जिसे बर्गोट शैली कहा जाता था, जो उनके द्वारा पहले से ही आविष्कृत और लिखित रूप में प्रस्तुत सभी "बर्गोटवादों" का एक ढीला संश्लेषण था, जिसमें प्रतिभाहीन लोगों के लिए उनकी अगली खोज का कोई संकेत नहीं था। सभी महान लेखकों के साथ ऐसा ही होता है, उनकी भाषा की सुंदरता उतनी ही अतुलनीय होती है जितनी कि किसी ऐसी स्त्री की जिसे हमने कभी नहीं देखा; यह रचनात्मक होती है, क्योंकि यह एक बाहरी वस्तु पर लागू होती है जिसके बारे में वे सोच रहे होते हैं, न कि अपनी भाषा या उसकी सुंदरता के बारे में, जिसे उन्होंने अभी तक व्यक्त नहीं किया है। हमारे समय के संस्मरणों का एक लेखक, जो सेंट-साइमन की तरह स्पष्ट रूप से लिखे बिना लिखना चाहता है, कभी-कभी हमें विलर्स के अपने चित्र की पहली पंक्ति दे सकता है: "वह एक लंबा, सांवला आदमी था... एक सतर्क, खुले, अभिव्यंजक चेहरे वाला," लेकिन नियतिवाद का कौन सा नियम उसे सेंट-साइमन की अगली पंक्ति की खोज तक ले जा सकता है, जो "और, सच कहूँ तो, थोड़ा पागल" से शुरू होती है? वास्तविक विविधता वास्तविक और अप्रत्याशित तत्वों की इस प्रचुरता में

निहित है, नीले फूलों से लदी उस शाखा में जो सभी तर्क के विरुद्ध, पहले से ही फूलों से लदी प्रतीत होने वाली वसंतकालीन बाड़ से आगे बढ़ती है, जबकि विविधता की विशुद्ध औपचारिक नकल (और शैली के अन्य सभी गुणों के लिए भी यही तर्क दिया जा सकता है) केवल एक बंजर एकरूपता है, यानी विविधता का बिलकुल विपरीत, और नकल करने वालों की रचना में, विविधता का भ्रम नहीं दे सकती या विविधता के अन्य उदाहरणों को याद नहीं दिला सकती, सिवाय उस पाठक के जिसने स्वयं उस्तादों से इसका बोध नहीं किया है।

और इसलिए—जिस प्रकार बर्गोट की बोलने की शैली निस्संदेह मनमोहक होती यदि वह स्वयं मात्र बर्गोट की नकल करने वाला एक शौकिया वक्ता होता, जबकि यह बर्गोट के सक्रिय और क्रियाशील मन से उन मूलभूत संबंधों से जुड़ी हुई थी जिन्हें कान तुरंत नहीं पहचान पाते—ठीक उसी प्रकार, बर्गोट ने अपने मन को उस वास्तविकता पर सटीक रूप से लागू किया जो उन्हें प्रसन्न करती थी, इसीलिए उनकी भाषा में कुछ सकारात्मकता, कुछ अति-समृद्धि थी, जिसने उन लोगों को निराश किया जो उनसे केवल 'रूपों की शाश्वत धारा' और 'सौंदर्य के रहस्यमय रोमांच' की बात सुनने की अपेक्षा रखते थे। इसके अलावा, उनके लेखन की गुणवत्ता, जो हमेशा दुर्लभ और नवीन होती थी, उनकी बातचीत में किसी प्रश्न तक पहुँचने के इतने सूक्ष्म तरीके से व्यक्त होती थी, जिसमें वे उसके हर परिचित पहलू को अनदेखा करते थे, कि ऐसा प्रतीत होता था मानो वे किसी महत्वहीन विवरण को पकड़ रहे हों, उस पर पूरी तरह से गलत हों, विरोधाभास में बोल रहे हों, जिससे उनके विचार अक्सर भ्रमित प्रतीत होते थे, क्योंकि हममें से प्रत्येक को स्पष्टता केवल उन्हीं विचारों में मिलती है जो उसी भ्रम की स्थिति में होते हैं जैसे उसके अपने। इसके अलावा, चूंकि हर नवीनता सबसे पहले उस रूढ़िवादी सोच को दूर करने

पर निर्भर करती है, जिसकी हमें आदत हो गई है और जो हमें वास्तविकता ही लगती है, इसलिए हर नई बातचीत, साथ ही हर मौलिक चित्रकला और संगीत, हमेशा श्रमसाध्य और उबाऊ प्रतीत होता है। यह उन अलंकारिक भाषा पर आधारित है जिनसे हम परिचित नहीं हैं; वक्ता हमें पूरी तरह से रूपकों में बात करता हुआ प्रतीत होता है; और यह हमें थका देता है और सत्य की कमी का आभास कराता है। (आखिरकार, पुराने समय में बोलने के तरीके ऐसी छवियां रहे होंगे जिन्हें समझना श्रोता के लिए तब मुश्किल रहा होगा जब वह उस ब्रह्मांड से परिचित नहीं था जिसका वे चित्रण कर रहे थे। लेकिन उसने बहुत पहले ही यह मान लिया है कि यही वास्तविक ब्रह्मांड है, और इसलिए वह इस पर पूरी तरह से भरोसा करता है।) इसलिए जब बर्गोट—और आज उनके उदाहरण काफी सरल लगते हैं—ने कॉटार्ड के बारे में कहा कि वह एक बोतल में बंद पुतला था, जो हमेशा सतह पर आने की कोशिश करता रहता था, और ब्रिचोट के बारे में कहा कि "उनके लिए, श्रीमती स्वान से भी अधिक, अपने बालों को संवारना एक चिंताजनक विचार-विमर्श का विषय था, क्योंकि अपनी छवि और प्रतिष्ठा दोनों को लेकर चिंतित रहने के कारण, उन्हें हमेशा यह सुनिश्चित करना होता था कि उनके बाल इस तरह से संवारे गए हों कि वे एक ही समय में शेर और दार्शनिक दोनों की छवि प्रस्तुत करें," तो तुरंत तनाव महसूस हुआ, और किसी ऐसी चीज पर सहारा खोजने की कोशिश की गई जिसे अधिक ठोस कहा जा सके, जिसका अर्थ है अधिक सामान्य। ये अस्पष्ट शब्द, जो मेरी आँखों के सामने मौजूद मुखौटे से निकल रहे थे, वास्तव में उस लेखक के ही थे जिनकी मैं प्रशंसा करता था, फिर भी वे उनकी पुस्तकों में, विभिन्न पहेलियों की श्रृंखला में एक पहेली के रूप में नहीं डाले जा सकते थे; वे एक अलग ही स्तर पर थे और उन्हें एक ऐसे रूपांतरण की आवश्यकता

थी जिसके माध्यम से, एक दिन, जब मैं स्वयं से कुछ ऐसे वाक्यांश दोहरा रहा था जो मैंने बर्गोट को प्रयोग करते हुए सुने थे, तो मैंने उनमें उनकी साहित्यिक शैली की पूरी कार्यप्रणाली को खोज निकाला, जिसके विभिन्न तत्वों को मैं इस मौखिक प्रवचन में पहचान और नाम दे सका जो मुझे इतना भिन्न लगा था।

एक कम प्रत्यक्ष दृष्टिकोण से देखें तो, कुछ शब्दों, कुछ विशेषणों के उच्चारण का उनका विशेष तरीका, जो उनकी बातचीत में लगातार दोहराए जाते थे और जिन्हें वे बिना किसी विशेष बल के कभी नहीं बोलते थे, प्रत्येक अक्षर को एक अलग शक्ति देते हुए और अंतिम अक्षर पर ज़ोर देते हुए (उदाहरण के लिए, 'visage' शब्द, जिसे वे 'figure' के बजाय हमेशा प्राथमिकता देते थे और जिसमें कई अतिरिक्त 'v', 's' और 'g' जुड़ जाते थे, जो ऐसे क्षणों में उनकी फैली हुई हथेली से फूटते हुए प्रतीत होते थे), उनके गद्य में मौजूद उन सुंदर अंशों से बिल्कुल मेल खाता था, जिनमें वे अपने पसंदीदा शब्दों को प्रकाश में लाते थे, एक प्रकार के हाशिये के साथ और वाक्य की संपूर्ण लय में इस तरह से रचित करते थे कि पाठक को, यदि वह कोई गलत अर्थ न निकाले, तो प्रत्येक शब्द को उसका पूरा महत्व देना पड़ता था। फिर भी, बर्गोट के भाषण में वह चमक नहीं पाई जाती थी जो उनकी पुस्तकों में, अन्य लेखकों की तरह, अक्सर लिखित वाक्य में शब्दों के स्वरूप को बदल देती थी। इसका कारण निःसंदेह यही था कि वह प्रकाश इतनी गहरी गहराई से निकलता है कि उसकी किरणें हमारे बोले गए शब्दों तक नहीं पहुँच पातीं, उन क्षणों में जब बातचीत के दौरान हम दूसरों के सामने खुल जाते हैं और एक हद तक स्वयं से ही कटे रहते हैं। इस लिहाज़ से, उनकी किताबों में उनकी बातचीत की तुलना में अधिक लय और उच्चारण था; एक ऐसा उच्चारण जो शैली की सुंदरता से परे था, जिसे शायद लेखक ने स्वयं भी नहीं

समझा होगा, क्योंकि यह उनके सबसे अंतरंग व्यक्तित्व से अविभाज्य है। यही उच्चारण था, जब बर्गोट अपनी किताबों में पूरी तरह से स्वाभाविक होते थे, तो उनके लिखे शब्दों को एक लय देता था—अक्सर ऐसे क्षणों में ये लय बिल्कुल महत्वहीन होती थी। यह लहजा मुद्रित पृष्ठ पर अंकित नहीं है, इसे इंगित करने के लिए वहां कुछ भी नहीं है, फिर भी यह उनके वाक्यों में स्वतः ही आ जाता है, उन्हें किसी अन्य तरीके से उच्चारित नहीं किया जा सकता है, यह लेखक में सबसे क्षणभंगुर और साथ ही सबसे गहन था, और यही उनके सच्चे स्वभाव की गवाही देगा, यही बताएगा कि क्या, उनके द्वारा व्यक्त की गई सभी कठोरता के बावजूद, वे कोमल थे, अपनी सभी कामुकता के बावजूद भावुक थे।

बर्गोट की बातचीत में झलकने वाली कुछ खास वाक्पटुताएँ केवल उन्हीं की नहीं थीं; क्योंकि बाद में जब मैं उनके भाई-बहनों से मिला, तो मैंने पाया कि उनकी वाणी में ये वाक्पटुताएँ कहीं अधिक स्पष्ट थीं। किसी हल्के-फुल्के और जोशीले वाक्य के अंतिम शब्दों में एक तरह की अचानकता और कठोरता होती थी, जबकि किसी उदास वाक्य के अंत में एक तरह की मंदता और उदासी छा जाती थी। स्वान, जो गुरु को बचपन से जानते थे, ने मुझे बताया कि उन दिनों उनके होठों पर, ठीक वैसे ही जैसे उनके भाई-बहनों के होठों पर, वे लहजे सुनाई देते थे, जो लगभग पारिवारिक परंपरा बन चुके थे - ज़ोरदार उल्लास की चीखें और लंबे समय तक चलने वाली उदासी की फुसफुसाहट। और जिस कमरे में वे सब एक साथ संगीत बजाते थे, वहाँ वे उन सभी से बेहतर, उनके संगीत में अपना हिस्सा निभाते थे, जो कभी कान फाड़ देने वाला तो कभी धीमा होता था। चाहे यह कितना भी विशिष्ट क्यों न हो, मनुष्य के होठों से निकलने वाली ध्वनि क्षणभंगुर होती है और वक्ता के बाद जीवित नहीं रहती। लेकिन बर्गोट परिवार के उच्चारण के साथ ऐसा नहीं था। भले ही यह समझना

मुश्किल हो कि एक कलाकार पक्षियों की चहचहाहट सुनकर संगीत की रचना कैसे कर सकता है, यहाँ तक कि मेइस्टरसिंगर में भी, फिर भी बर्गोट ने अपनी लिखित भाषा में शब्दों पर ज़ोर देने की उस शैली को समाहित कर लिया था, जो खुशी की चीखों में दोहराई जाती हैं, या उदासी भरी आहों में बूंद-बूंद करके गिरती हैं। उनकी पुस्तकों में ऐसे ही समापन वाक्यांश हैं जहाँ संचित ध्वनियाँ लंबी खिंचती हैं (जैसे किसी ओपेरा के ओवरचर के अंतिम स्वर जो कभी समाप्त नहीं होता, और कंडक्टर द्वारा छड़ी रखने से पहले अपनी सर्वोच्च लय पर कई बार दोहराया जाता है), जिनमें बाद में मुझे बर्गोट परिवार के उन ध्वन्यात्मक 'उच्चारण' का संगीतमय समकक्ष मिला। लेकिन अपने मामले में, जिस क्षण उन्होंने उन्हें अपनी पुस्तकों में उतारा, उन्होंने सहज रूप से अपने भाषण में उनका उपयोग करना बंद कर दिया। जिस दिन से उन्होंने लिखना शुरू किया था—और विशेष रूप से बाद के वर्षों में जब मैं उनसे पहली बार मिला था—उनकी आवाज से यह लय हमेशा के लिए गायब हो गई थी।

ये युवा बर्गोट्स—भविष्य के लेखक और उनके भाई-बहन—निस्संदेह किसी भी तरह से उनसे श्रेष्ठ नहीं थे, बल्कि उनसे बहुत दूर थे। ये युवा उनसे कहीं अधिक परिष्कृत और बुद्धिमान थे, जिन्हें बर्गोट्स कुछ "उग्र" यानी थोड़े अशिष्ट लगते थे, और उनके घर के लहजे में व्याप्त व्यंग्यात्मक बातें उन्हें चिढ़ाती थीं, जो दिखावटी और बचकानी दोनों थीं। लेकिन प्रतिभा, और यहाँ तक कि केवल महान कौशल भी, दूसरों की तुलना में बेहतर बुद्धि और सामाजिक परिष्कार के बीजों से नहीं, बल्कि उन्हें रूपांतरित करने और रूपांतरित करने की क्षमता से उत्पन्न होती है। किसी तरल को बिजली के लैंप पर गर्म करने के लिए सबसे शक्तिशाली लैंप की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि ऐसे लैंप की आवश्यकता होती है

जिसकी धारा प्रकाश देना बंद कर दे, और प्रकाश के बजाय ऊष्मा उत्पन्न करे। आकाश में उड़ान भरने के लिए सबसे शक्तिशाली मोटर की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि ऐसी मोटर की आवश्यकता होती है जो पृथ्वी की सतह पर लगातार चलने के बजाय, उस क्षैतिज रेखा को काटती हुई, जिस पर उसने चलना शुरू किया था, अपनी गति को आरोही बल में परिवर्तित करने में सक्षम हो। इसी प्रकार, प्रतिभावान रचनाकार वे नहीं होते जो अत्यंत उत्तम वातावरण में रहते हैं, जिनकी बातचीत अत्यंत प्रभावशाली होती है या जिनकी संस्कृति सबसे व्यापक होती है, बल्कि वे होते हैं जिनमें क्षण भर के लिए केवल अपने लिए जीना छोड़ देने की शक्ति होती है, जो अपने व्यक्तित्व का उपयोग दर्पण की तरह करते हैं, इस प्रकार कि उनका जीवन, चाहे सामाजिक रूप से कितना भी महत्वहीन हो, और एक अर्थ में बौद्धिक रूप से भी, उसमें प्रतिबिंबित होता है। प्रतिभा लेखक की प्रतिबिंबित शक्ति में निहित होती है, न कि प्रतिबिंबित दृश्य की आंतरिक गुणवत्ता में। जिस दिन युवा बर्गोट अपने पाठकों के सामने उस नीरस घर को प्रदर्शित करने में सफल हुए जिसमें उन्होंने अपना बचपन बिताया था, और अपने और अपने भाइयों के बीच की नीरस बातचीत को भी, उस दिन वे अपने परिवार के उन मित्रों से कहीं ऊपर उठ गए जो उनसे अधिक बुद्धिमान और प्रतिष्ठित थे; वे अपनी शानदार रोल्स रॉयस में घर लौटते समय बर्गोट परिवार की अशिष्टता के प्रति उचित तिरस्कार व्यक्त कर सकते थे; लेकिन वे, अपने साधारण वाहन से, जो अंततः जमीन से ऊपर उठ गया था, उनके सिर के ऊपर से उड़ गए।

लेकिन उनकी वाक्पटुता की कुछ ऐसी विशेषताएँ भी थीं जो उनके परिवार के सदस्यों में नहीं, बल्कि कुछ समकालीन लेखकों में पाई जाती थीं। युवा लेखक, जो उन्हें गुरु मानने से इनकार कर रहे थे और स्वयं को

उनसे किसी भी प्रकार की बौद्धिक समानता से वंचित कर रहे थे, अनजाने में ही अपनी समानता प्रदर्शित कर रहे थे जब वे उन्हीं क्रियाविशेषणों और पूर्वसर्गों का प्रयोग कर रहे थे जिन्हें वे बार-बार दोहराते थे, जब वे अपने वाक्यों की रचना उसी प्रकार कर रहे थे, उसी शांत, धीमी आवाज़ में बोल रहे थे, जो पिछली पीढ़ी की वाक्पटु और सरल भाषा के प्रति उनकी प्रतिक्रिया थी। शायद इन युवाओं ने—जिनमें से कुछ के बारे में आगे चलकर हमें जानकारी मिलेगी—बर्गोट को कभी जाना ही नहीं था। लेकिन उनकी चिंतन शैली, जो उनमें समाहित हो गई थी, ने उन्हें वाक्य रचना और उच्चारण में उन परिवर्तनों की ओर अग्रसर किया जो मौलिक बौद्धिक क्षमता से आवश्यक रूप से संबंधित हैं। एक ऐसा संबंध जिसकी खोज करना आवश्यक है। इस प्रकार, यदि बर्गोट ने अपनी लेखन शैली के लिए किसी से कुछ नहीं लिया, तो उन्होंने अपनी बोलने की शैली अपने शुरुआती साथियों में से एक से ली थी, जो एक अद्भुत वक्ता थे और जिनकी कला से वे प्रभावित थे। वे अनजाने में ही बातचीत में उनकी नकल करते थे, लेकिन स्वयं कम प्रतिभाशाली होने के कारण उन्होंने कभी कोई उत्कृष्ट पुस्तक नहीं लिखी थी। इसलिए, यदि कोई बोलने में मौलिकता की तलाश में होता, तो बर्गोट को शिष्य, एक परोक्ष लेखक कहा जाता, जबकि अपने मित्र से केवल बोलने में प्रभावित होने के कारण, वे अपने लेखन में मौलिक और रचनात्मक थे। निस्संदेह, पिछली पीढ़ी से खुद को अलग करने के लिए, जो अमूर्त विचारों और गंभीर सामान्य बातों की शौकीन थी, जब बर्गोट किसी पुस्तक की प्रशंसा करना चाहते थे, तो वे हमेशा किसी ऐसे दृश्य को प्रमुखता देते थे, किसी ऐसी तस्वीर को उद्धृत करते थे जिसका कोई तार्किक अर्थ न हो। "आह, हाँ!" वह कहते, "यह तो वाकई प्रशंसनीय है! एक छोटी बच्ची नारंगी शॉल ओढ़े है। यह बहुत बढ़िया है!" या फिर, "ओह, हाँ, एक ऐसा अंश है जिसमें

एक रेजिमेंट सड़क पर मार्च कर रही है; हाँ, यह बहुत बढ़िया है!" जहाँ तक शैली की बात है, वह पूरी तरह से अपने समय के नहीं थे (हालाँकि वह अपनी ही शैली के प्रति पूरी तरह समर्पित रहे और टॉल्स्टॉय, जॉर्ज एलियट, इब्सन और दोस्तोयेव्स्की से घृणा करते थे), क्योंकि जब भी वह किसी लेखक की शैली की प्रशंसा करना चाहते थे, तो उनके मुख से हमेशा 'सौम्य' शब्द निकलता था। "हाँ, आप जानते हैं कि मुझे अटाला में शैतोब्रियां रेने की तुलना में अधिक पसंद हैं; वह मुझे 'सौम्य' लगते हैं।" वह यह शब्द ऐसे बोलते थे जैसे कोई डॉक्टर, जब उसका मरीज कहता है कि दूध से उसे बदहजमी हो जाएगी, तो जवाब देता है, "लेकिन, आप जानते हैं, यह बहुत 'सौम्य' है।" और यह सच है कि बर्गोट की शैली में एक प्रकार का सामंजस्य था, जो उस सामंजस्य के समान था जिसके लिए प्राचीन काल के लोग अपने कुछ वक्ताओं की प्रशंसा उन शब्दों में किया करते थे जिन्हें अब हमारे लिए समझना कठिन है, क्योंकि हम अपनी आधुनिक भाषाओं के आदी हैं जिनमें उस प्रकार के प्रभाव की तलाश नहीं की जाती है।

जब किसी ने उनकी लिखी रचनाओं की प्रशंसा की, तो वे शरमाते हुए मुस्कुराते हुए कहते, "मुझे लगता है यह कमोबेश सही है, कमोबेश सटीक है; शायद इसका कुछ महत्व हो।" लेकिन वे यह बात केवल विनम्रता से कहते, ठीक वैसे ही जैसे कोई स्त्री, जिसे कोई कहे कि उसका पहनावा या उसकी बेटी आकर्षक है, जवाब देती है, "यह आरामदायक है" या "वह अच्छी बच्ची है।" लेकिन बर्गोट में रचनात्मक प्रवृत्ति इतनी गहरी थी कि वे इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे कि उन्होंने उपयोगी और सत्य के मार्ग पर जो रचना की है, उसका एकमात्र प्रमाण उनके द्वारा दिए गए आनंद में निहित है, जो उन्हें सबसे पहले स्वयं को और बाद में उनके पाठकों को मिला। कई वर्षों बाद, जब उनमें कोई प्रतिभा नहीं बची थी, तब भी जब वे

कुछ ऐसा लिखते जिससे वे संतुष्ट नहीं होते, तो उसे दबाने से बचने के लिए, जैसा कि उन्हें करना चाहिए था, ताकि वे उसे निःसंकोच प्रकाशित कर सकें, वे स्वयं से दोहराते, "आखिरकार, यह कमोबेश सटीक है, देश के लिए इसका कुछ महत्व तो अवश्य होगा।" इसलिए, जो वाक्यांश बहुत पहले उनके प्रशंसकों के बीच विनम्रता की बनावटी आवाज़ में फुसफुसाया जाता था, वही अंततः उनके हृदय की एकांतता में अहंकार की बेचैन ज़ुबान से फुसफुसाने लगा। और वही शब्द, जो बर्गोट के प्रारंभिक कार्यों की उत्कृष्टता के लिए एक अवांछित बहाने के रूप में काम करते थे, उनके नवीनतम कार्यों की निराशाजनक साधारणता के लिए एक तरह से अप्रभावी सांत्वना बन गए।

उनकी रुचि में एक प्रकार की संयमशीलता थी, एक प्रकार का दृढ़ संकल्प था कि वे कुछ भी ऐसा नहीं लिखेंगे जिसे वे 'सौम्य' न कह सकें, जिसके कारण लोग उन्हें इतने वर्षों तक एक बांझ और दिखावटी कलाकार, सूक्ष्म बारीकियों को गढ़ने वाला कलाकार मानते रहे, लेकिन वास्तव में यही उनकी शक्ति का रहस्य था, क्योंकि आदत लेखक की शैली को उतना ही आकार देती है जितना कि व्यक्ति का चरित्र, और जो लेखक अपने विचारों की अभिव्यक्ति में एक विशेष प्रकार की आकर्षणशीलता प्राप्त करने के लिए एक से अधिक बार धैर्य रखता है, वह ऐसा करके अपनी प्रतिभा की सीमाओं को अपरिवर्तनीय रूप से निर्धारित कर देता है, ठीक उसी तरह जैसे यदि वह बार-बार सुख, आलस्य, या कष्ट में पड़ने के भय के आगे झुक जाता है, तो वह अपने अवगुणों के स्वरूप और अपने सद्गुणों की सीमाओं का वर्णन ऐसे शब्दों में कर देगा जिन्हें किसी भी प्रकार के संशोधन से बदला नहीं जा सकता।

लेकिन, लेखक और उस व्यक्ति के बीच बाद में मुझे जो भी समानताएँ नज़र आईं, उनके बावजूद अगर श्रीमती स्वान के ड्राइंग रूम में पहली

नज़र में मुझे यह विश्वास नहीं हुआ कि मेरे सामने खड़े ये व्यक्ति बर्गोट हैं, जो इतने सारे धार्मिक ग्रंथों के लेखक हैं, तो शायद मैं पूरी तरह गलत नहीं था, क्योंकि वे स्वयं भी, शब्द के कड़े अर्थों में, इस बात पर 'विश्वास' नहीं करते थे। वे इस बात पर विश्वास इसलिए नहीं करते थे क्योंकि वे प्रतिष्ठित लोगों (यहाँ तक कि वे घमंडी नहीं थे) और साहित्यकारों और पत्रकारों के बीच, जो उनसे कहीं कमतर थे, बड़ी लगन से पेश आते थे। बेशक, वे अपने पाठकों के मत से बहुत पहले ही जान चुके थे कि उनमें प्रतिभा है, जिसके सामने सामाजिक पद और आधिकारिक ओहदा कुछ भी नहीं हैं। उन्हें पता चल गया था कि उनमें प्रतिभा है, लेकिन उन्हें इस पर विश्वास नहीं था क्योंकि वे साधारण लेखकों के प्रति दिखावटी सम्मान का ढोंग करते रहे ताकि जल्द ही वे शिक्षाविद बन सकें, जबकि अकादमी और फाउबर्ग सेंट-जर्मेन का उस शाश्वत मन के अंश से कोई लेना-देना नहीं है जो बर्गोट की रचनाओं का रचयिता है, ठीक वैसे ही जैसे कारण-कार्य के नियम या ईश्वर के विचार से। यह भी वे जानते थे, लेकिन एक चोर की तरह, बिना इस ज्ञान का लाभ उठाए, कि चोरी करना गलत है। और छोटी दाढ़ी और घोंघे के खोल जैसी नाक वाला वह व्यक्ति प्रतिष्ठित अकादमिक पद या किसी ऐसी महिला को पाने के प्रयास में चम्मच चुराने वाले सज्जन की सारी चालें जानता और इस्तेमाल करता था जो चुनाव में कई वोटों को प्रभावित कर सकती थी, लेकिन उनके रास्ते में वे यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते थे कि कोई भी ऐसा व्यक्ति जो ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति को बुराई समझे, उन्हें यह करते हुए न देखे। वे केवल आधे ही सफल हुए; सच्चे बर्गोट के भाषण के साथ-साथ, दूसरे बर्गोट के भाषण को भी सुना जा सकता था, जो महत्वाकांक्षी, पूर्णतः स्वार्थी था, और जो अपने शक्तिशाली, धनी या कुलीन मित्रों के अलावा किसी और के बारे में बात करना उचित नहीं समझता था, ताकि वह अपनी स्थिति को

और बेहतर बना सके, वही जिसने अपनी किताबों में, जब वह वास्तव में खुद था, तो गरीबी के आकर्षण को, पहाड़ के झरने की तरह शुद्ध, इतनी खूबसूरती से चित्रित किया था।

एम. डी नॉरपोइस द्वारा उल्लिखित अन्य दुर्गुणों की बात करें, तो वह लगभग अनैतिक प्रेम, जो लोगों के अनुसार, धन के मामले में शालीनता की कमी के कारण और भी बदतर हो गया था, भले ही वह उनके नवीनतम उपन्यासों की प्रवृत्ति के विपरीत था, जिनमें उन्होंने हर जगह उचित और उपयुक्त के प्रति इतना कठोर सम्मान दिखाया था कि उनके नायकों के सबसे निर्दोष सुख भी इससे दूषित हो गए थे, और यहां तक कि पाठक भी तीव्र बेचैनी के साथ पन्ने पलटते हुए खुद से पूछते थे कि क्या सबसे शांत जीवन जीना भी संभव है, तो ये दुर्गुण, यदि वे बर्गोट पर निष्पक्ष रूप से आरोपित किए गए थे, तो यह बिल्कुल भी साबित नहीं करते कि उनका साहित्य झूठ था और उनकी सारी संवेदनशीलता मात्र दिखावा थी। जिस प्रकार रोग विज्ञान में कुछ समान दिखने वाली स्थितियाँ तनाव, स्राव आदि की अधिकता के कारण होती हैं, कुछ इसकी कमी के कारण, उसी प्रकार अतिसंवेदनशीलता से भी दुर्गुण उत्पन्न हो सकते हैं। शायद नैतिक समस्या अपने संपूर्ण विघ्न स्वरूप में केवल अत्यंत दुष्ट जीवन में ही उभर सकती है। और इस समस्या का समाधान कलाकार अपने व्यक्तिगत जीवन के संदर्भ में नहीं, बल्कि अपने लिए वास्तविक जीवन, एक सामान्य, एक साहित्यिक समाधान के संदर्भ में पाता है। जिस प्रकार चर्च के महान विद्वान अक्सर अपने सद्गुणों को खोए बिना, समस्त मानव जाति के पापों से परिचित होकर अपने व्यक्तिगत पवित्रता को प्राप्त करते थे, उसी प्रकार महान कलाकार भी अक्सर, पूर्णतः दुष्ट होते हुए भी, अपने दुर्गुणों का उपयोग उस नैतिक नियम की अवधारणा तक पहुँचने के लिए करते हैं जो हम सभी पर लागू होता है। लेखकों ने

अक्सर अपनी पुस्तकों में उनके परिवेश के दुर्गुणों (या मात्र कमजोरियों और मूर्खताओं), निरर्थक बातचीत, उनकी बेटियों के तुच्छ या चौंकाने वाले जीवन, उनकी पत्नियों की बेवफाई, या उनके स्वयं के कुकर्मों की निंदा की है, हालाँकि उन्होंने अपने घरेलू जीवन में बदलाव करना या अपने घर के माहौल को सुधारना आवश्यक नहीं समझा। और यह विरोधाभास बर्गोट के समय में जितना स्पष्ट था, उतना पहले कभी नहीं था। एक ओर, जैसे-जैसे समाज भ्रष्ट होता गया, नैतिकता के हमारे विचार उतने ही ऊंचे होते गए, वहीं दूसरी ओर, साहित्यकारों के निजी जीवन के बारे में जनता को पहले से कहीं अधिक जानकारी मिलने लगी थी। थिएटर में कुछ शामों को लोग उस लेखक की ओर इशारा करते थे, जिसकी मैं कॉम्ब्रे में बहुत प्रशंसा करता था, जो एक ऐसे बॉक्स के पीछे बैठा होता था जिसकी बनावट ही उसके नवीनतम पुस्तक में प्रस्तुत सिद्धांत पर एक विचित्र हास्यपूर्ण, या शायद तीक्ष्ण व्यंग्यात्मक टिप्पणी—या कहें तो उसका निर्भीक खंडन—लगती थी। ऐसा नहीं था कि किसी भी व्यक्ति द्वारा बताई गई कोई भी बात बर्गोट की अच्छाई या बुराई के प्रश्न को सुलझाने में मेरे लिए उपयोगी साबित होती। एक घनिष्ठ मित्र उसकी कठोरता के प्रमाण प्रस्तुत करता; फिर एक अजनबी उसकी वास्तविक भावनाओं की गहराई का कोई उदाहरण देता (जो मार्मिक होता था, क्योंकि जाहिर तौर पर वह इसे छिपाए रखना चाहता था)। उसने अपनी पत्नी के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया था। लेकिन एक गाँव के सराय में, जहाँ वह रात बिताने गया था, वह एक गरीब महिला की देखभाल करने के लिए रुक गया जिसने आत्महत्या करने की कोशिश की थी। जब उसे अपनी यात्रा जारी रखनी पड़ी, तो उसने सराय के मालिक के पास बड़ी रकम छोड़ दी, ताकि वह उस बेचारी को बाहर न निकाले, बल्कि उसकी उचित देखभाल करे। शायद बर्गोट में महान लेखक का विकास दाढ़ी वाले छोटे आदमी की

कीमत पर जितना अधिक हुआ, उतना ही उसका अपना निजी जीवन उन सभी काल्पनिक जीवन की बाढ़ में डूबता चला गया, यहाँ तक कि वह कुछ व्यावहारिक कर्तव्यों को निभाने के लिए बाध्य महसूस करना बंद कर दिया, जिनके स्थान पर उसने उन अन्य जीवन की कल्पना करने का कर्तव्य ग्रहण कर लिया था। लेकिन साथ ही, क्योंकि वह दूसरों की भावनाओं को इतनी गहराई से समझता था मानो वे उसकी अपनी हों, इसलिए जब भी उसे किसी कारणवश किसी दुर्भाग्यशाली व्यक्ति से बात करनी पड़ती (अर्थात अनौपचारिक मुलाकात में), तो वह अपनी व्यक्तिगत दृष्टि को छोड़कर पीड़ित व्यक्ति की दृष्टि को अपना लेता था। वह ऐसी दृष्टि अपना लेता था जिसमें वह उन लोगों की बातों से भयभीत हो जाता था जो दूसरे के दुख में भी अपनी छोटी-मोटी चिंताओं में डूबे रहते थे। परिणामस्वरूप, वह हर जगह उचित आक्रोश और अमर कृतज्ञता का स्रोत बन जाता था।

सबसे बढ़कर, वह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने हृदय में केवल कुछ विशेष छवियों से ही प्रेम करता था और (जैसे किसी संदूक के फर्श पर बनी लघु मूर्ति) शब्दों में उन्हें रचने और चित्रित करने से। किसी द्वारा भेजे गए मामूली उपहार के लिए भी, यदि वह उपहार उसे इनमें से एक या दो छवियों को प्रस्तुत करने का अवसर देता, तो वह अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ता, जबकि किसी महंगे उपहार के लिए वह जरा भी कृतज्ञता नहीं दिखाता। और यदि उसे किसी न्यायालय के समक्ष निवेदन करना पड़ता, तो वह अपने शब्दों का चयन इस आधार पर नहीं करता कि उनका न्यायाधीश पर क्या प्रभाव पड़ेगा, बल्कि इस आधार पर करता कि कुछ ऐसी छवियां उसके मन में उठतीं जिन्हें न्यायाधीश कभी समझ ही नहीं पाता।

जिस पहले दिन मैं गिलबर्ट के माता-पिता के साथ उनसे मिला, मैंने बर्गोट

को बताया कि मैं हाल ही में फ्रेड्रे में बर्मा का प्रदर्शन देखने गया था; और उन्होंने मुझे बताया कि उस दृश्य में जिसमें वह अपना हाथ कंधे के स्तर तक उठाकर खड़ी थीं - उन्हीं दृश्यों में से एक जिसे इतनी सराहना मिली थी - उन्होंने कला की महान गरिमा के साथ कुछ शास्त्रीय आकृतियों को चित्रित करने में कामयाबी हासिल की थी, जिन्हें संभवतः उन्होंने कभी देखा भी नहीं था, ओलंपिया में एक मेटोप पर उसी मुद्रा में उकेरी गई एक हेस्पेरिड और साथ ही एरेक्थियम पर सुंदर आदिम कुंवारी कन्याओं की आकृतियाँ।

"यह महज़ मेरा वहम हो सकता है, फिर भी मुझे लगता है कि वह संग्रहालयों में जाती है। यह 'पक्का करना' दिलचस्प होगा।" ('पक्का करना' बर्गोट के नियमित मुहावरों में से एक था, और कई ऐसे नौजवान, जो उनसे कभी मिले भी नहीं थे, उन्होंने भी इसे उनसे सीख लिया था, मानो किसी तरह के टेलीपैथिक संकेत से उन्हीं की तरह बोल रहे हों।)

"क्या आपका मतलब कैरिएटाइड्स से है?" स्वान ने पूछा।

"नहीं, नहीं," बर्गोट ने कहा, "उस दृश्य को छोड़कर जहाँ वह ओएनोन के सामने अपने प्रेम का इज़हार करती है, जहाँ वह सेरामिकस में हेगेसो द्वारा बनाए गए शिलालेख की तरह ही अपना हाथ हिलाती है, यह एक कहीं अधिक आदिम कला है जिसे वह पुनर्जीवित करती है। मैं पुराने एरेक्थियम के कोराई की बात कर रहा था, और मैं मानता हूँ कि शायद रेसीन की कला से इतना अलग कुछ भी नहीं है, लेकिन फ्रेड्रे में पहले से ही बहुत सी चीजें हैं... एक और... ओह, और फिर, हाँ, वह वास्तव में मनमोहक है, छठी शताब्दी की वह छोटी सी फ्रेड्रे, बांह की दृढ़ता, 'संगमरमर में जमी हुई' बालों की लट, हाँ, आप जानते हैं, यह सब खोज करना उसके लिए अद्भुत है। इसमें इस वर्ष 'प्राचीन' करार दी जा रही अधिकांश पुस्तकों की तुलना में कहीं अधिक प्राचीनता है।"

जैसा कि बर्गोट ने अपनी एक रचना में इन प्राचीन मूर्तियों के लिए एक प्रसिद्ध प्रार्थना की थी, उनके द्वारा कहे गए शब्द मुझे पूरी तरह समझ में आ गए और बर्मा के अभिनय में रुचि लेने का एक नया कारण मिल गया। मैंने उन्हें उस दृश्य में फिर से अपने मन में चित्रित करने की कोशिश की, जिसमें मुझे याद है कि उन्होंने अपना हाथ अपने कंधे तक उठाया था। और मैंने खुद से कहा, "यहीं पर ओलंपिया की हेस्पेरिड हैं; यहीं पर एक्रोपोलिस पर उन पूजनीय प्रार्थना करने वालों की बहन हैं; कला में वाकई गरिमा है!" लेकिन अगर इन विचारों से बर्मा के हावभाव की सुंदरता मेरे लिए बढ़नी थी, तो बर्गोट को इन्हें प्रदर्शन से पहले मेरे दिमाग में डाल देना चाहिए था। तब, जब अभिनेत्री का वह हावभाव मेरी आँखों के सामने साक्षात मौजूद था, उस क्षण में जब जो कुछ घट रहा था उसमें वास्तविकता का सार था, मैं उससे प्राचीन मूर्तिकला का विचार निकालने की कोशिश कर सकता था। लेकिन उस दृश्य में बर्मा की जो छवि मेरे मन में बसी थी, वह एक ऐसी स्मृति थी जिसे अब बदला नहीं जा सकता था, एक ऐसी धुंधली तस्वीर की तरह जिसमें वर्तमान काल का वह व्यापक परिप्रेक्ष्य नहीं होता जहाँ व्यक्ति गहराई से सोचने और हमेशा कुछ नया खोजने के लिए स्वतंत्र होता है, एक ऐसी तस्वीर जिसे अतीत में ऐसा अर्थ नहीं दिया जा सकता जो बाहरी सत्यापन और सुधार के अधीन न हो। इसी समय श्रीमती स्वान बातचीत में शामिल हुईं और मुझसे पूछा कि क्या गिलबर्टे ने मुझे बर्गोट द्वारा फ्रेड्रे के बारे में लिखी गई सामग्री दी थी, और आगे कहा, "मेरी बेटी तो बिल्कुल भुलक्कड़ है!" बर्गोट ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा कि वे केवल कुछ पन्ने थे, जिनका कोई महत्व नहीं था। "लेकिन वह छोटा सा पैम्फलेट, आपका वह छोटा सा 'लेख' तो बिल्कुल मनमोहक है!" श्रीमती स्वान ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा, यह दिखाने के लिए कि वह एक अच्छी मेज़बान हैं, हम सभी को यह विश्वास

दिलाने के लिए कि उन्होंने बर्गोट का निबंध पढ़ा है, और इसलिए भी क्योंकि उन्हें न केवल बर्गोट की चापलूसी करना पसंद था, बल्कि उनके लेखन में से अपने लिए कुछ अंश चुनना, उनके लेखन को नियंत्रित करना भी पसंद था। और यह स्वीकार करना होगा कि उसने उसे प्रेरित किया, हालांकि उस तरह से नहीं जैसा उसने सोचा था। लेकिन अंततः, मैडम स्वान के ड्राइंग रूम की भव्यता और बर्गोट के काम के एक पूरे पहलू में इतनी घनिष्ठ समानता है कि आज के समय में दोनों में से कोई भी काम बुजुर्ग पुरुषों के बीच एक दूसरे की समीक्षा के रूप में काम कर सकता है।

मैंने खुलकर अपने विचार उसे बताए। अक्सर बर्गोट मुझसे असहमत होते थे, लेकिन उन्होंने मुझे बोलने दिया। मैंने उन्हें बताया कि मुझे वह हरी बत्ती अच्छी लगी जो फेड्रा के हाथ उठाने पर जलती थी। आह! डिज़ाइनर को यह सुनकर बहुत खुशी होगी; वह सचमुच एक कलाकार हैं। मैं उन्हें बता दूँगी कि आपको यह पसंद आया, क्योंकि उन्हें इस प्रभाव पर बहुत गर्व है। मुझे खुद यह उतना पसंद नहीं आया, यह हर चीज़ को एक तरह के जलीय वाष्प में डुबो देता है, वहाँ खड़ी छोटी फेड्रा किसी एक्वेरियम के फर्श पर मूंगे की शाखा जैसी दिखती है। आप मुझसे ज़रूर कहेंगे कि यह नाटक के ब्रह्मांडीय पहलू को उभारता है। यह बिल्कुल सही है। फिर भी, अगर यह दृश्य नेपच्यून के दरबार में होता तो ज़्यादा उपयुक्त होता। हाँ, बिल्कुल, मुझे पता है कि नेपच्यून का प्रतिशोध नाटक में आता है। मेरा यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि हमें सिर्फ पोर्ट-रॉयल के बारे में सोचना चाहिए, लेकिन आखिरकार रेसीन की कहानी 'समुद्री अर्चिन का प्रेम' तो नहीं है। फिर भी, यही तो मेरे दोस्त की इच्छा थी, और यह बहुत अच्छे से किया गया है, चाहे सही हो या गलत, और देखने में सचमुच बहुत सुंदर है। हाँ, तो आपको यह पसंद आया, है ना? आप इसका मतलब समझ गए होंगे, बिल्कुल; हम दोनों की राय एक जैसी है, है ना? उसने जो किया

है, वह थोड़ा असंतुलित है, आप मुझसे सहमत होंगे, लेकिन कुल मिलाकर यह उसकी बहुत ही चतुराई भरी चाल है। और इसलिए, जब बर्गोट को अपनी राय व्यक्त करनी पड़ी जो मेरी राय से बिल्कुल विपरीत थी, तो उसने मुझे किसी भी तरह से चुप नहीं कराया, न ही मुझे कोई जवाब देने में असमर्थ बनाया, जैसा कि एम. डी नॉरपोइस ने किया होता। इससे यह साबित नहीं होता कि बर्गोट की राय राजदूत की राय से कम महत्वपूर्ण थी; बिलकुल नहीं। एक शक्तिशाली विचार अपनी कुछ शक्ति उस व्यक्ति को भी दे देता है जो उसे चुनौती देता है। स्वयं सार्वभौमिक मन की समृद्धि का एक हिस्सा होने के कारण, यह उस व्यक्ति के मन में प्रवेश कर जाता है, उस पर अपना प्रभाव जमा लेता है जिसका खंडन करने के लिए इसे नियुक्त किया जाता है, पहले से मौजूद विचारों के बीच में प्रवेश कर जाता है, जिसकी सहायता से, थोड़ा सा आधार प्राप्त करके, वह इसे पूर्ण और संशोधित करता है; इस प्रकार अंतिम कथन हमेशा किसी भी चर्चा में शामिल दोनों पक्षों का कुछ हद तक योगदान होता है। यह उन विचारों के लिए है जो वास्तव में विचार हैं ही नहीं, ऐसे विचार जो किसी आधार के बिना स्थापित हैं, विरोधी के विचारों में कोई समर्थन या समानता नहीं पा सकते, और जो किसी ऐसी चीज से जूझ रहा है जो मौजूद ही नहीं है, जिसके उत्तर में कोई शब्द नहीं है। एम. डी नॉरपोइस के तर्क (कला के विषय में) अनुत्तरित थे क्योंकि वे वास्तविकता से रहित थे।

चूंकि बर्गोट ने मेरी आपत्तियों को नज़रअंदाज़ नहीं किया, इसलिए मैंने उनसे स्वीकार किया कि एम. डी नॉरपोइस को ये आपत्तियां बुरी लगीं। जवाब मिला, "लेकिन वो तो बूढ़ा तोता है!" "वो तुम्हें चोंच मारता रहता है क्योंकि वो हर समय सोचता है कि तुम केक का टुकड़ा हो, या कटलफिश का टुकड़ा हो।" स्वान ने पूछा, "ये क्या है?" "क्या तुम नॉरपोइस के दोस्त हो?" बर्गोट के फैसले पर पूरा भरोसा रखने वाली और शायद डरने वाली

उसकी पत्नी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "वो बिल्कुल सुस्त है।" "मैंने रात के खाने के बाद उससे बात करवाने की कोशिश की; पता नहीं उसकी उम्र का असर है या बदहज़मी का, लेकिन मुझे वो इतना सुस्त लगा कि कुछ बोल ही नहीं पाया। मुझे लगा कि मुझे उसे दवा देनी पड़ेगी।" "हाँ, है ना?" बर्गोट ने बीच में कहा, "देखो, उसे आधे समय चुप रहना पड़ता है ताकि वह अपनी सारी निरर्थक बातें न कह दे, जिनसे उसकी कमीज़ नीचे लटकी रहती है और उसकी सफेद जैकेट ऊपर रहती है।" "मुझे लगता है कि बर्गोट और मेरी पत्नी दोनों ही उस पर बहुत सख्ती बरतते हैं," स्वान ने कहा, जो अपने घर में एक सीधे-सादे, समझदार आदमी की छवि बनाए रखता था। "मैं समझता हूँ कि नॉरपोइस में आपकी ज़्यादा दिलचस्पी नहीं होगी, लेकिन दूसरे नज़रिए से देखें तो," (क्योंकि स्वान को 'वास्तविक जीवन' के टुकड़े इकट्ठा करने का शौक था) "वह वाकई असाधारण हैं, एक असाधारण प्रेमी। जब वह रोम में सचिव थे," गिलबर्टे को सुने बिना उन्होंने आगे कहा, "पेरिस में उनकी एक प्रेमिका थी, जिससे उन्हें बेइंतहा प्यार था, और वह हर हफ्ते दो बार यात्रा करने का समय निकाल लेते थे, ताकि उनसे कुछ घंटों के लिए मिल सकें। संयोग से, वह एक बहुत ही बुद्धिमान महिला थीं, और आज भी बेहद आकर्षक हैं; अब वह विधवा हैं। और उसके बाद से उनकी कई और प्रेमिकाएँ भी रही हैं। मुझे यकीन है कि अगर मेरी प्रेमिका पेरिस में रहती और मुझे रोम में बंद रहना पड़ता, तो मैं पागल हो जाता। डरपोक पुरुषों को हमेशा, जैसा कि निचले तबके के लोग कहते हैं, अपने से 'नीचे' की महिलाओं से प्यार करना चाहिए, ताकि उनकी महिलाओं को उनकी बात मानने के लिए कोई ठोस प्रोत्साहन मिले।" जब वह बोल रहा था, स्वान को एहसास हुआ कि मैं शायद इस सिद्धांत को खुद पर और ओडेट पर लागू कर रहा हूँ, और जैसा कि श्रेष्ठ प्राणियों में भी, जब आप और वे जीवन के धरातल से ऊपर एक साथ

उड़ान भरते प्रतीत होते हैं, तब भी उनका व्यक्तिगत अभिमान नीच मानवीय ही रहता है, इसलिए उसके मन में मेरे प्रति तीव्र द्वेष उत्पन्न हुआ। लेकिन यह केवल उसकी निगाहों की बेचैनी में ही प्रकट हुआ। उस समय उसने मुझसे और कुछ नहीं कहा। वैसे, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जब रेसीन (एक कहानी के अनुसार, जिसकी सच्चाई अब सिद्ध नहीं हो चुकी है, हालाँकि इसका विषय पेरिस के जीवन में हर दिन दोहराया जाता है) ने लुई XIV के सामने स्कारॉन को एक भ्रम दिखाया, तो पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली सम्राट ने उस शाम कवि से कुछ नहीं कहा। अगले दिन ही उसका पतन हुआ।

लेकिन किसी सिद्धांत को समग्र रूप से व्यक्त करना आवश्यक होता है, इसलिए स्वान ने इस क्षणिक झुंझलाहट के बाद, और अपना चश्मा पोंछने के बाद, अपने मन की बात इन शब्दों में पूरी की, जो बाद में मेरी स्मृति में एक भविष्यवाणीय चेतावनी का महत्व ग्रहण करने वाले थे, जिसे समझने की समझ मुझमें तब नहीं थी: "उस प्रकार के प्रेम का खतरा यह है कि स्त्री का अधीन होना पुरुष की ईर्ष्या को कुछ समय के लिए शांत तो कर देता है, लेकिन उसे और भी कठोर बना देता है। कुछ समय बाद वह अपनी प्रेमिका को उन कैदियों की तरह रहने के लिए मजबूर कर देगा जिनकी कोठरियों में दिन-रात रोशनी जलती रहती है ताकि वे भाग न सकें। और इसका अंत आमतौर पर मुसीबत में ही होता है।"

मैंने एम. डी नॉरपोइस से बात की। "तुम्हें उस पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए; उसकी ज़बान बहुत बुरी है!" श्रीमती स्वान ने ऐसे लहजे में कहा जिससे मुझे लगा कि एम. डी नॉरपोइस ने उनके बारे में कुछ 'बुरी बातें' कही थीं, खासकर जब स्वान ने अपनी पत्नी की ओर फटकार भरे लहजे में देखा, मानो उन्हें हद से आगे बढ़ने से पहले रोक रहे हों।

इस बीच, गिलबर्ट, जिसे हमारी यात्रा के लिए तैयार होने को कहा गया

था, बातचीत सुनने के लिए वहीं रुक गई और अपनी माँ और पिता के बीच खड़ी होकर, स्नेहपूर्वक उनके कंधे से टिक गई। पहली नज़र में, सांवली श्रीमती स्वान से लाल बालों और सुनहरी त्वचा वाली यह बच्ची बिल्कुल अलग थी। लेकिन एक पल के लिए दोनों को देखने के बाद, गिलबर्ट में उनकी कई विशेषताएं दिखाई देती थीं—उदाहरण के लिए, एक अनदेखे मूर्तिकार द्वारा तीक्ष्ण और अडिग ढंग से तराशी गई छोटी नाक, जिसकी छेनी पीढ़ियों पर अपना काम दोहराती है—उनकी अभिव्यक्ति, उनकी मां की हरकतें; कला के एक अन्य रूप से उदाहरण लें तो, उसे देखकर श्रीमती स्वान के किसी ऐसे चित्र की याद आती थी जो उनकी शक्ल से मेल नहीं खाता था, जिसे चित्रकार ने रंग भरने की किसी सनक में, आंशिक रूप से भेस बदलकर, वेनिस के 'चरित्र' में किसी पार्टी में जाने के लिए तैयार किया था। और चूंकि उसने न केवल एक सुंदर विग पहन रखी थी, बल्कि उसके शरीर से सांवले रंग का हर कण गायब हो चुका था, जो भूरेपन के आवरण से मुक्त होकर और भी नग्न प्रतीत हो रहा था, मानो किसी आंतरिक सूर्य द्वारा बिखेरी गई प्रकाश की किरणों से ढका हो, इसलिए यह 'मेक-अप' केवल सतही नहीं था, बल्कि उसमें समाहित था; गिलबर्ट किसी काल्पनिक जानवर का रूप धारण किए हुए या किसी पौराणिक वेश में प्रतीत हो रही थी। उसकी लालिमा उसके पिता की त्वचा से इतनी मिलती-जुलती थी कि गिलबर्ट की रचना करते समय प्रकृति को शायद श्रीमती स्वान की त्वचा के अलावा किसी अन्य सामग्री के बिना, टुकड़ों में पुनर्निर्माण करने की समस्या का समाधान करना पड़ा होगा। और प्रकृति ने इसका पूर्ण उपयोग किया, ठीक वैसे ही जैसे कोई कुशल नक्काशीकार अपनी लकड़ी के रेशों और गांठों को स्पष्ट रूप से दर्शाने में माहिर होता है। गिलबर्ट के चेहरे पर, ओडेट की नाक की हूबहू प्रतिकृति के कोने पर, त्वचा को इस तरह उभारा गया था कि

श्रीमती स्वान के दो सौंदर्य चिह्न बरकरार रहें। यह श्रीमती स्वान का एक नया रूप था। इस प्रकार प्राप्त स्वान, उसके बगल में ऐसे उग रहा था मानो बैंगनी लिली के पेड़ के बगल में सफेद लिली का पेड़ हो। साथ ही, इन दोनों समानताओं के बीच की सीमा रेखा को निश्चित रूप से तय मानना भी उचित नहीं था। कभी-कभी, जब गिलबर्ट मुस्कुराती थी, तो उसकी माँ के चेहरे पर उसके पिता के गाल का अंडाकार आकार स्पष्ट दिखाई देता था, मानो किसी ने उन्हें आपस में मिलाकर यह देखने की कोशिश की हो कि मिश्रण से क्या परिणाम निकलेगा; यह अंडाकार आकार धीरे-धीरे स्पष्ट होता गया, जैसे कोई भ्रूण एक जीवित आकृति में विकसित होता है, यह तिरछे रूप से लंबा होता गया, फैलता गया और एक क्षण बाद गायब हो गया। गिलबर्ट की आँखों में उसके पिता की स्पष्ट और ईमानदार दृष्टि थी; उसने मुझे भी इसी तरह देखा था जब उसने मुझे अगेट का कंचा दिया था और कहा था, "इसे संभाल कर रखना, हमारी दोस्ती की याद दिलाता रहेगा।" लेकिन अगर कोई गिलबर्ट से सवाल करे, उससे पूछे कि वह क्या कर रही थी, तो उसकी आँखों में वही शर्मिंदगी, अनिश्चितता, टालमटोल और दुख दिखाई देता था जो पुराने दिनों में ओडेट दिखाती थी, जब स्वान उससे पूछता था कि वह कहाँ थी और वह उसे झूठ बोलकर जवाब देती थी, जो उन दिनों प्रेमी को निराश कर देता था और अब उसे एक बेपरवाह और समझदार पति की तरह अचानक बातचीत का विषय बदलने पर मजबूर कर देता था। अक्सर शैंप्स-एलिसी में गिलबर्ट के चेहरे पर यह भाव देखकर मैं परेशान हो जाता था। लेकिन आमतौर पर मेरी आशंकाएँ निराधार होती थीं। क्योंकि उसमें, जो अपनी माँ की मात्र शारीरिक प्रतिरूप थी, इस भाव का (अगर कुछ और नहीं तो) कोई अर्थ नहीं रह गया था। जब गिलबर्ट अपनी कक्षाओं से लौटकर घर किसी पाठ के लिए जाती थी, तब उसके शिष्यों ने वह हरकत की, जो

पहले ओडेट की नज़र में इस डर से होती थी कि कहीं यह ज़ाहिर न हो जाए कि उसने दिन में अपने किसी प्रेमी के लिए दरवाज़ा खोल दिया था, या उस समय किसी गुप्त स्थान पर जाने की जल्दी में थी। इस प्रकार, मेलुसीन के शरीर में एम. और मैडम स्वान के दो अलग-अलग स्वभाव बारी-बारी से एक-दूसरे पर हावी होते हुए दिखाई देते थे।

यह सर्वविदित है कि बच्चा अपने माता-पिता दोनों से मिलता-जुलता है। फिर भी, विरासत में मिले गुणों और दोषों का वितरण इतना विचित्र होता है कि माता-पिता में से किसी एक में जो दो अच्छे गुण अटूट प्रतीत होते हैं, वे बच्चे में केवल एक ही पाए जाते हैं, और वह भी दूसरे माता-पिता के उस दोष से जुड़ा होता है जो उससे बिल्कुल मेल नहीं खाता। वास्तव में, एक असंगत शारीरिक दोष में अच्छे नैतिक गुण का समाहित होना अक्सर संतान-पुत्र के बीच समानता का एक नियम है। दो बहनों में से एक अपने पिता के गर्वपूर्ण व्यवहार के साथ अपनी माँ की तुच्छ आत्मा को समाहित करती है; दूसरी, पिता की बुद्धिमत्ता से भरपूर, उसे दुनिया के सामने उसी रूप में प्रस्तुत करती है जिसे उसकी माँ ने परिचित कराया है; उसकी माँ की बेढंगी नाक और दुबली छाती उन प्रतिभाओं का शारीरिक आवरण बन जाती हैं जिन्हें आपने एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व के नीचे पहचानना सीखा था। परिणामस्वरूप, दोनों बहनों के बारे में समान रूप से यह कहा जा सकता है कि वह अपने माता-पिता में से किसी एक से अधिक मिलती-जुलती है। यह सच है कि गिल्बर्ट इकलौती संतान थी, लेकिन कम से कम दो गिल्बर्ट तो थीं ही। उसके पिता और माता के दो स्वभाव उसमें समाहित हो गए थे; वे उस पर अपना अधिकार जमाने के लिए संघर्ष कर रहे थे—और फिर भी यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता जिससे यह लगे कि तीसरी गिल्बर्ट इन दोनों के शिकार होकर पीड़ित हो रही थी। गिल्बर्ट बारी-बारी से एक और दूसरी होती थी, और किसी भी क्षण में वह दो में से एक ही

होती थी, यानी जब वह अच्छा व्यवहार नहीं कर रही होती थी, तो उसके अनुसार पीड़ित होने में असमर्थ थी, क्योंकि अच्छी गिल्बर्ट उस समय अपनी क्षणिक अनुपस्थिति के कारण दूसरी के सद्गुण से भटकने का पता नहीं लगा पाती थी। और इसलिए दोनों में से कम अच्छी गिल्बर्ट नीच प्रकार के सुखों का आनंद लेने के लिए स्वतंत्र थी। जब दूसरी अपने पिता के दिल से आपसे बात करती थी, तो उसके विचार व्यापक होते थे, आप उसके साथ किसी उत्तम और लाभकारी कार्य में शामिल होना चाहते थे; आपने उसे ऐसा कहा, लेकिन जैसे ही आपकी व्यवस्थाएं पूरी हो रही थीं, उसकी माँ का दिल फिर से धड़कने लगा; जवाब में उसकी ही आवाज़ सुनाई दी; और आप निराश और परेशान हो गए—लगभग स्तब्ध रह गए, मानो एक व्यक्ति की जगह दूसरा आ गया हो—एक अनुचित विचार, एक बनावटी हंसी से, जिसमें गिलबर्ट को कोई बुराई नहीं दिखी, क्योंकि ये सब उस क्षण उसकी अपनी स्थिति से उपजी थीं। वास्तव में, इन दोनों गिलबर्टों के बीच कभी-कभी इतना बड़ा अंतर होता था कि आपने खुद से पूछा, हालांकि आपको कोई जवाब नहीं मिला, कि पिछली बार आपने उससे ऐसा क्या कहा या किया था कि अब वह इतनी बदल गई है। जब उसने खुद आपसे कहीं मिलने का इंतज़ाम किया था, तो वह न केवल नहीं आई और बाद में कोई बहाना भी नहीं बनाया, बल्कि चाहे जो भी प्रभाव रहा हो जिसने उसे अपना इरादा बदलने पर मजबूर किया हो, जब आप उससे मिले तो उसका व्यवहार इतना अलग था कि आप आसानी से यह मान सकते थे कि मेनाएकमी की कहानी के कथानक जैसी समानता से प्रभावित होकर आप किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे हैं जो वह नहीं है जिसने इतनी विनम्रता से आपसे मिलने की इच्छा व्यक्त की थी, अगर उसने खराब मनोदशा के संकेत न दिखाए होते जिससे पता चलता कि वह खुद को गलत समझ रही थी और स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता से

बचना चाहती थी।

"तो अब जाओ और तैयार हो जाओ; तुम हमें इंतजार करवा रही हो," उसकी मां ने उसे याद दिलाया।

"मैं अपने छोटे पापा के साथ यहाँ बहुत खुश हूँ; मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रहना चाहती हूँ," गिलबर्ट ने जवाब दिया और अपना सिर अपने पिता की बांह के नीचे छिपा लिया, जिन्होंने प्यार से अपनी उंगलियों को उसके चमकीले बालों में फेरा।

स्वान उन पुरुषों में से एक थे, जो प्रेम के भ्रमों में लंबे समय तक जीने के बाद, अनगिनत महिलाओं के जीवन में लाए गए सुख को तो देख चुके थे, लेकिन उन महिलाओं में अपने उपकार करने वालों के प्रति कोई कृतज्ञता या कोमलता नहीं जगा पाए थे। लेकिन उन्हें विश्वास था कि अपने बच्चे में वे एक ऐसा स्नेह देख सकते हैं, जो उनके नाम में समाहित होकर, उनकी मृत्यु के बाद भी उन्हें इस संसार में जीवित रखेगा। जब चार्ल्स स्वान नहीं रहेंगे, तब भी एक श्रीमती स्वान या कोई और श्रीमती स्वान होंगी, जो अपने दिवंगत पिता से प्रेम करती रहेंगी। वास्तव में, शायद वह उनसे कुछ ज़्यादा ही प्रेम कर रहे थे, स्वान यही सोच रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने गिल्बर्ट के दुलार का जवाब "अच्छी बच्ची!" कहकर दिया, उसी कोमल स्वर में, जो हमारी आशंकाओं से भरा था, और जो भविष्य के बारे में सोचते समय हमें उस प्राणी के अत्यधिक भावुक स्नेह से प्रेरित करता है, जो हमसे अधिक समय तक जीवित रहने वाला है। अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए, वह बर्मा के बारे में हमारी बातचीत में शामिल हो गए। उन्होंने मुझे बताया, लेकिन एक उदासीन, उदासीन स्वर में, मानो वे अपनी बात से कुछ हद तक बेपरवाह रहना चाहते हों, कि अभिनेत्री ने कितनी बुद्धिमत्ता और आश्चर्यजनक कुशलता से ओनेन से कहा, "तुम्हें पता था!" वे सही थे। कम से कम उस स्वर का एक ऐसा अर्थ था जो वास्तव में समझने

योग्य था, और इसलिए बर्मा की प्रशंसा करने के लिए निर्विवाद कारण खोजने की मेरी इच्छा को संतुष्ट कर सकता था। लेकिन इसकी स्पष्टता ही मुझे बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं कर पाई। उनका स्वर इतना चतुर, इतना स्पष्ट और अर्थपूर्ण था कि ऐसा लगता था मानो वह अपने आप में ही मौजूद हो, और कोई भी बुद्धिमान अभिनेत्री इसे सीख सकती थी। यह एक अच्छा विचार था; लेकिन जो कोई भी इसे इतनी कुशलता से समझे, उसे भी उतना ही निपुण होना चाहिए। यह तो बर्मा की उपलब्धि थी कि उसने इसकी खोज की, लेकिन क्या किसी को 'खोज' शब्द का प्रयोग करने का अधिकार है जब विचाराधीन वस्तु ऐसी हो जो अगर किसी को दी गई होती तो भी वैसी ही रहती, ऐसी चीज जो मूल रूप से किसी की अपनी प्रकृति से संबंधित नहीं है क्योंकि कोई और बाद में इसकी पुनरुत्पादन कर सकता है?

"सच कहूँ तो, आपकी मौजूदगी से बातचीत का माहौल वाकई खुशनुमा हो गया है!" स्वान ने बर्गोट से माफी मांगते हुए मुझसे कहा; क्योंकि गुएरमांटेस के समूह में उनकी यह आदत बन गई थी कि वे महान कलाकारों का स्वागत ऐसे करते थे जैसे वे आम दोस्त हों, जिन्हें सिर्फ उनकी पसंद के व्यंजन खिलाना, उनके साथ खेल खेलना या ग्रामीण इलाकों में उनकी मनपसंद खेलकूद में शामिल करना होता था। "लगता है हम कला के बारे में बहुत बातें कर रहे हैं," उन्होंने आगे कहा। "पर ये तो बहुत अच्छा है, मुझे तो ये बहुत पसंद है!" श्रीमती स्वान ने कृतज्ञता भरी नज़र से मेरी ओर देखते हुए कहा, न सिर्फ इसलिए कि उन्होंने बौद्धिक बातचीत की अपनी पुरानी इच्छा को नहीं छोड़ा था। इसके बाद बर्गोट ने समूह के अन्य सदस्यों, और मुख्य रूप से गिल्बर्ट से बात की। मैंने उसे अपने सारे भाव खुलकर बता दिए थे, जिस निडरता ने मुझे स्वयं आश्चर्यचकित कर दिया था। इसका कारण यह था कि वर्षों पहले (अकेले

बैठकर पढ़ने के उन घंटों के दौरान, जिनमें वह मेरे लिए मेरे ही एक बेहतर रूप थे) मैंने उनके साथ ईमानदारी, स्पष्टवादिता और विश्वास की आदत विकसित कर ली थी। इसलिए, मैं उनसे उतना भयभीत नहीं था जितना कि किसी ऐसे व्यक्ति से जिससे मैं पहली बार बात कर रहा होता। फिर भी, इसी कारण से, मैं इस बात से बहुत परेशान था कि मैं उन पर क्या प्रभाव डाल रहा हूँगा, और मुझे लगता था कि मेरे विचारों के प्रति उनके मन में जो तिरस्कार का भाव होगा, वह उस दोपहर से नहीं बल्कि उस समय से होगा जब मैंने कॉम्ब्रे स्थित हमारे बगीचे में उनकी किताबें पढ़ना शुरू किया था। फिर भी शायद मुझे खुद को याद दिलाना चाहिए था कि, चूंकि मैंने पूरी ईमानदारी से, अपने विचारों के प्रवाह में बहते हुए, एक ओर बर्गोट के काम के प्रति गहरी सहानुभूति महसूस की थी और दूसरी ओर रंगमंच में एक ऐसी निराशा का अनुभव किया था जिसका कारण मुझे नहीं पता था, इसलिए वे दो सहज भावनाएँ जिन्होंने मुझे अपनी ओर खींच लिया था, एक दूसरे से बहुत अलग नहीं हो सकतीं, बल्कि एक ही नियमों का पालन करती होंगी; और बर्गोट का वह मन जिसे मैंने उनकी किताबों में पसंद किया था, मेरी निराशा और उसे व्यक्त करने में मेरी असमर्थता से पूरी तरह से अलग और शत्रुतापूर्ण नहीं हो सकता। क्योंकि मेरी बुद्धि एक समान चीज होनी चाहिए, शायद वास्तव में एक ही बुद्धि का अस्तित्व है, जिसमें दुनिया का हर व्यक्ति भाग लेता है, जिसकी ओर हममें से प्रत्येक अपने अलग शरीर की स्थिति से अपनी निगाहें घुमाता है, जैसे रंगमंच में, जहाँ यदि हर किसी की अपनी अलग सीट है, तो दूसरी ओर केवल एक ही मंच है। बेशक, जिन विचारों को सुलझाने की मेरी इच्छा थी, वे शायद वे विचार नहीं थे जिनकी गहराई में बर्गोट आमतौर पर अपनी किताबों में उतरते थे। लेकिन अगर हम दोनों के पास एक ही बुद्धि थी, तो जब वे मुझे उन विचारों को व्यक्त करते सुनते, तो उन्हें वे विचार

याद आते, वे उन्हें संजोते, उन पर मुस्कुराते, और शायद, मेरी धारणा के विपरीत, अपने मन में बुद्धि की एक पूरी दुनिया को संजोए रखते, उस बुद्धि से परे जिसका एक अंश उनकी किताबों में समाया था, एक अंश जिस पर मैंने उनके पूरे मानसिक जगत की कल्पना आधारित की थी। जिस प्रकार पुरोहित, मानव हृदय के सबसे व्यापक अनुभव के कारण, उन पापों को क्षमा करने में सबसे सक्षम होते हैं जो वे स्वयं नहीं करते, उसी प्रकार प्रतिभा, मानव बुद्धि के सबसे व्यापक अनुभव के कारण, उन विचारों को सबसे अच्छी तरह समझ सकती है जो सीधे तौर पर उन विचारों के विपरीत होते हैं जो उनके अपने लेखन की नींव बनाते हैं। मुझे ये सब बातें खुद से कहनी चाहिए थीं (हालाँकि, सच कहूँ तो, ये कोई बहुत सुकून देने वाला विचार नहीं था, क्योंकि महान बुद्धिजीवियों की परोपकारी विनम्रता का परिणाम छोटे बुद्धिजीवियों की नासमझी और शत्रुता के रूप में सामने आता है; और किसी महान लेखक की मित्रता से, जो कि घनिष्ठ संबंध न होने पर उनकी किताबों में व्यक्त होती है, उससे कहीं कम खुशी मिलती है, बजाय उस महिला की शत्रुता से पीड़ित होने के जिसे आपने उसकी बुद्धिमत्ता के लिए नहीं चुना, लेकिन फिर भी उससे प्यार किए बिना नहीं रह सकते)। मुझे ये सब बातें खुद से कहनी चाहिए थीं, लेकिन मैंने नहीं कही; मुझे यकीन था कि मैं बर्गोट के सामने मूर्ख साबित हो गया था, तभी गिल्बर्ट ने मेरे कान में फुसफुसाया:

"आप सोच भी नहीं सकते कि मैं कितनी खुश हूँ, क्योंकि आपने मेरे प्यारे दोस्त बर्गोट को जीत लिया है। वह माँ को बता रहा है कि उसे आप बेहद बुद्धिमान लगे।"

“हम कहाँ जा रहे हैं?” मैंने उससे पूछा। “ओह, जहाँ आपको अच्छा लगे; आपको पता है, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।” लेकिन उसके दादाजी की पुण्यतिथि पर घटी घटना के बाद से मैं खुद से यह सवाल करने लगा था

कि क्या गिलबर्ट का चरित्र वैसा नहीं था जैसा मैंने सोचा था, क्या उसकी उदासीनता, उसकी बुद्धिमत्ता, उसका शांत स्वभाव, उसका सौम्य और निरंतर समर्पण वास्तव में उन तीव्र इच्छाओं को नहीं छुपाता था जिन्हें उसका आत्मसम्मान प्रकट नहीं होने देता था और जिन्हें वह केवल तभी प्रकट करती थी जब किसी भी तरह से वे पूरी नहीं होती थीं, और वह अचानक उनका विरोध करती थी। चूंकि बर्गोट मेरे माता-पिता के पड़ोस में ही रहते थे, इसलिए हम साथ में घर से निकले; गाड़ी में उन्होंने मुझसे मेरी सेहत के बारे में बात की। “हमारे दोस्तों ने मुझे बताया कि आप बीमार थे। मुझे बहुत दुख हुआ। और फिर भी, मुझे उतना दुख नहीं हुआ, क्योंकि मैं अच्छी तरह देख सकता हूँ कि आप मन के सुखों का आनंद लेने में सक्षम हैं, और शायद यही आपके लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है, जैसा कि हर उस व्यक्ति के लिए जिसने इन्हें जाना है।”

अफसोस, जो कुछ वह कह रहा था, वह मुझ पर कितना कम लागू होता था, क्योंकि तर्क-वितर्क, चाहे वह कितना भी उन्नत क्यों न हो, मुझ पर बेअसर था। मैं केवल खाली समय में ही खुश रहता था, जब मैं आराम से और संतुष्ट होता था। मुझे एहसास हुआ कि जीवन में मेरी हर इच्छा विशुद्ध रूप से भौतिक थी, और मैं बुद्धि को कितनी आसानी से त्याग सकता था। चूंकि मैं अपने सुखों में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होने वाले, अलग-अलग गहराई और स्थायित्व वाले सुखों के बीच कोई भेद नहीं करता था, इसलिए जब उसे उत्तर देने का समय आया, तो मैं सोच रहा था कि मुझे ऐसा जीवन पसंद होता जिसमें मैं डचेस डी गुएरमांटेस के साथ घनिष्ठ संबंध रखता, और अक्सर शैंप्स-एलिसी के पुराने टोल-हाउस जैसी जगहों पर मुझे एक ठंडी गंध मिलती जो मुझे कॉम्ब्रे की याद दिलाती। लेकिन इस आदर्श जीवन में, जिसके बारे में मैं उसे बताने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, मानसिक सुखों के लिए कोई जगह नहीं थी।

"नहीं महोदय, मन के सुख मेरे लिए बहुत कम मायने रखते हैं; मैं उनकी तलाश नहीं करता; वास्तव में मुझे यह भी नहीं पता कि मैंने कभी उनका स्वाद चखा है या नहीं।"

"क्या तुम्हें सच में ऐसा नहीं लगता?" उसने जवाब दिया। "अच्छा, हो सकता है, नहीं, ज़रा रुको, हाँ, आख़िरकार यही तो तुम्हें सबसे ज़्यादा पसंद होगा, अब मुझे साफ़-साफ़ समझ आ रहा है, मुझे इस बात का पूरा यकीन है।"

बेशक, वह मुझे समझाने में कामयाब नहीं हुए; फिर भी मैं पहले से ज़्यादा खुश और कम बंधा हुआ महसूस कर रहा था। एम. डी नॉरपोइस की बातों के बाद, मैंने अपने सपनों, उत्साह और आत्मविश्वास के पलों को पूरी तरह से व्यक्तिपरक और सच्चाई से रहित मान लिया था। लेकिन बर्गोट के अनुसार, जो मेरी बात समझते हुए प्रतीत हुए, ऐसा लगा कि मामला बिल्कुल उलट था, कि जिस लक्षण को मुझे नज़रअंदाज़ करना चाहिए था, वह वास्तव में मेरे संदेह और खुद से मेरी घृणा थी। इसके अलावा, एम. डी नॉरपोइस के बारे में उन्होंने जो कहा, उससे उस फैसले का असर काफी हद तक कम हो गया, जिसके बारे में मैंने सोचा था कि अब उससे कोई अपील संभव नहीं है।

"क्या आपकी ठीक से देखभाल हो रही है?" बर्गोट ने मुझसे पूछा। "आपका इलाज कौन कर रहा है?" मैंने उन्हें बताया कि मैं कॉटार्ड से मिल चुका हूँ, और शायद आगे भी मिलता रहूँ। "लेकिन वह तो बिलकुल भी उस तरह का आदमी नहीं है जिसे आप चाहते हैं!" उन्होंने मुझसे कहा। मैं उनके बारे में डॉक्टर के तौर पर कुछ नहीं जानता। लेकिन मैं उनसे मैडम स्वान के यहाँ मिला हूँ। वो आदमी बिल्कुल मंदबुद्धि है। मान लीजिए कि इससे वो एक अच्छे डॉक्टर नहीं बन सकते, जिस पर मुझे यकीन नहीं होता, तो भी वो कलाकारों और बुद्धिजीवियों के लिए अच्छे डॉक्टर नहीं

बन सकते। आप जैसे लोगों के लिए उपयुक्त डॉक्टर होने चाहिए, मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि उनके लिए विशेष रूप से अनुकूलित उपचार और दवाएँ होनी चाहिए। कॉटार्ड आपको बोर कर देगा, और यही बात उसके इलाज को बेअसर कर देगी। इसके अलावा, आपके लिए उपचार का सही तरीका किसी आम आदमी से बिल्कुल अलग हो सकता है। बुद्धिजीवियों की 90% बीमारियाँ उनकी बुद्धि से उत्पन्न होती हैं। उन्हें कम से कम एक ऐसे डॉक्टर की ज़रूरत होती है जो उनकी बीमारी को समझता हो। आप कैसे उम्मीद करते हैं कि कॉटार्ड आपका इलाज कर पाएगा? उसने सॉस पचाने में कठिनाई और पेट की समस्याओं को तो ध्यान में रखा है, लेकिन शेक्सपियर पढ़ने के प्रभाव को नहीं। इसलिए आपके मामले में उसकी गणनाएँ गलत हैं, संतुलन बिगड़ गया है; आप देख रहे हैं ना, हमेशा की तरह छोटी सी समस्या फिर से उभर रही है। फिर से। उसे पता चल जाएगा कि तुम्हारा पेट फूला हुआ है; उसे इसकी जाँच करने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह उसकी नज़र में पहले से ही है। तुम इसे उसके चश्मे में देख सकते हो।" बोलने का यह तरीका मुझे बहुत थका गया; मैंने सामान्य बुद्धि की मूर्खता के साथ मन ही मन कहा: "प्रोफेसर कॉटार्ड के चश्मे में कोई फूला हुआ पेट नहीं दिख रहा है, ठीक वैसे ही जैसे एम. डी नॉरपोइस की सफेद जैकेट के पीछे कोई निरर्थक बातें नहीं छिपी हैं।" "मैं तुम्हें इसके बजाय डॉ. डू बोलबोन से सलाह लेने की सलाह दूँगा, जो काफी बुद्धिमान व्यक्ति हैं।" "वह तुम्हारी किताबों के बहुत बड़े प्रशंसक हैं," मैंने उत्तर दिया। मैंने देखा कि बर्गोट यह जानता था, और मैंने तय किया कि एक जैसी सोच वाले लोग जल्दी मिल जाते हैं, कि किसी के सच्चे 'अज्ञात मित्र' बहुत कम होते हैं। कॉटार्ड के बारे में बर्गोट ने जो कुछ मुझसे कहा, वह मुझे प्रभावित कर गया, हालाँकि यह मेरे अपने विश्वासों के बिल्कुल विपरीत था। मुझे अपने डॉक्टर को उबाऊ पाकर ज़रा भी

परेशानी नहीं हुई; मुझे उनसे यह उम्मीद थी कि वे एक ऐसी कला के बल पर, जिसके नियम मेरी समझ से परे थे, मेरी अंत:क्रियाओं का अध्ययन करने के बाद मेरे स्वास्थ्य के विषय पर अचूक भविष्यवाणी करेंगे। और मुझे यह बिल्कुल भी नहीं चाहिए था कि वे अपनी बुद्धि, जिसमें मैं उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ था, का उपयोग करके मेरी बुद्धि को समझने का प्रयास करें, जिसे मैं अपने लिए मात्र एक साधन मानता था, जिसका अपने आप में कोई महत्व नहीं था, और जिसके माध्यम से मैं कुछ बाहरी सत्यों को जानने का प्रयास करता था। मुझे इस बात पर गहरा संदेह था कि क्या बुद्धिजीवियों को मंदबुद्धि लोगों से अलग प्रकार की स्वच्छता की आवश्यकता होती है, और मैं स्वयं को मंदबुद्धि लोगों के अधीन करने के लिए पूरी तरह से तैयार था। "मैं आपको बताता हूँ कि वास्तव में किसे अच्छे डॉक्टर की आवश्यकता है, और वह है हमारा मित्र स्वान," बर्गोट ने कहा। और जब मैंने उससे पूछा कि क्या वह बीमार है, तो उसने कहा, "देखो, वह उस आदमी का बिल्कुल सटीक उदाहरण है जिसने वेश्या से शादी की है, और जिसे हर दिन सौ सांप निगलने पड़ते हैं, उन औरतों से जो उसकी पत्नी से मिलने से इनकार करती हैं, या उन आदमियों से जो उससे पहले उसके साथ थे। तुम उन्हें उसके मुंह में तड़पते हुए देख सकते हो। बस देख लो, किसी भी दिन जब तुम वहां जाओ, जिस तरह वह अंदर आते ही अपनी भौंहें उठाता है, यह देखने के लिए कि कमरे में कौन है।" जिस द्वेष के साथ बर्गोट ने उन दोस्तों के एक अजनबी से इस तरह बात की, जिनके घर में उसका इतने लंबे समय से स्वागत किया जाता रहा था, वह मेरे लिए उतना ही नया था जितना कि वह लगभग प्रेमपूर्ण लहजा जो वह उस घर में लगातार उनसे बात करने के लिए अपनाता था। निश्चित रूप से मेरी बड़ी चाची जैसी कोई व्यक्ति, उदाहरण के लिए, हममें से किसी के साथ उस विनम्रता से पेश आने में असमर्थ होती, जिस विनम्रता

से मैंने बर्गोट को स्वान पर बरसते हुए सुना था। यहां तक कि जिन लोगों को वह पसंद करती थी, उनसे भी अप्रिय बातें कहने में उसे आनंद आता था। लेकिन उनकी पीठ पीछे वह कभी एक शब्द भी नहीं बोलती जिसे वे न सुनते। कॉम्ब्रे में हमारा समाज सामाजिक 'जगत' से बिल्कुल अलग था। स्वान्स का घर उस समाज की ओर, उसकी अस्थिर लहरों की ओर जाने वाले रास्ते का एक पड़ाव था। अगर वे अभी तक खुले समुद्र तक नहीं पहुँचे थे, तो वे निश्चित रूप से लैगून में थे। "यह सब हमारे बीच की बात है," बर्गोट ने मुझे मेरे दरवाजे के बाहर छोड़ते हुए कहा। कुछ साल बाद मुझे जवाब देना चाहिए था: "मैं बातें दोहराता नहीं हूँ।" यह समाज का एक प्रचलित वाक्य है, जिससे चुगली करने वाला हमेशा झूठी तसल्ली पा लेता है। यही बात मुझे उस समय बर्गोट से कहनी चाहिए थी, क्योंकि कोई भी अपने सारे भाषण खुद नहीं बनाता, खासकर तब जब वह सिर्फ सामाजिक परिवेश में एक मोहरे की तरह काम कर रहा हो। लेकिन मुझे तब तक यह तरीका नहीं पता था। दूसरी ओर, मेरी बड़ी चाची इसी तरह के मौके पर कहतीं: "अगर तुम नहीं चाहते कि यह बात दोहराई जाए, तो तुम इसे क्यों कहते हो?" यह तो असामाजिक और झगड़ालू लोगों का जवाब होता है। मैं वैसा बिल्कुल नहीं था: मैं चुपचाप सिर झुकाए बैठा रहा।

मेरी नज़र में जो साहित्यकार काफी महत्वपूर्ण थे, उन्हें बर्गोट के साथ संबंध बनाने में सालों तक साजिशें रचनी पड़ीं, जो अंत तक फीके साहित्यिक ही रहे और उनके अध्ययन कक्ष की चारदीवारी से बाहर कभी नहीं निकले। वहीं, मैं तो महान लेखक के मित्रों में पहले ही प्रयास में, बिना किसी प्रयास के, शामिल हो गया, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति थिएटर में खराब सीट पाने के लिए घंटों भीड़ में खड़ा रहने के बजाय, जनता के लिए बंद दरवाजे से अंदर जाकर सीधे सबसे अच्छी सीट पा

लेता है। अगर स्वान ने मेरे लिए ऐसा दरवाजा खोला था, तो निस्संदेह इसलिए क्योंकि जिस प्रकार एक राजा स्वाभाविक रूप से अपने बच्चों के मित्रों को शाही बॉक्स में या शाही नौका पर आमंत्रित करता है, उसी प्रकार गिल्बर्ट के माता-पिता ने अपनी बेटी के मित्रों का अपने घर की सभी कीमती चीजों और वहां संजोए गए उससे भी अधिक अनमोल अंतरंग संबंधों के बीच स्वागत किया। लेकिन उस समय मैंने सोचा था, और शायद मेरा सोचना सही भी था, कि स्वान की यह मित्रता अप्रत्यक्ष रूप से मेरे माता-पिता के लिए थी। मुझे याद आ रहा था कि मैंने एक बार कॉम्ब्रे में सुना था कि उन्होंने मेरे माता-पिता से कहा था कि बर्गोट के प्रति मेरी प्रशंसा को देखते हुए, उन्हें मुझे अपने साथ भोजन पर ले जाना चाहिए, और मेरे माता-पिता ने यह कहकर मना कर दिया था कि मैं अभी बहुत छोटी हूँ और जल्दी उत्तेजित हो जाती हूँ, इसलिए बाहर जाना ठीक नहीं है। मेरे माता-पिता, निस्संदेह, कुछ अन्य लोगों (विशेष रूप से वे लोग जो मुझे सबसे अद्भुत लगते थे) के लिए मुझसे बिल्कुल अलग छवि रखते थे, इसलिए, ठीक वैसे ही जैसे गुलाबी पोशाक वाली महिला ने मेरे पिता को वह भेंट दी थी जिसके वे बिल्कुल अयोग्य थे, मैं चाहती थी कि वे समझें कि मुझे अभी-अभी कितना अनमोल उपहार मिला है, और उस उदार और विनम्र स्वान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें जिसने मुझे, या बल्कि उन्हें, यह भेंट दी थी, बिना इसके मूल्य के प्रति सचेत हुए, ठीक वैसे ही जैसे लुइनी के भित्तिचित्र में धनुषाकार नाक और सुनहरे बालों वाले आकर्षक जादूगर को, जिससे स्वान की एक समय में बहुत समानता मानी जाती थी।

दुर्भाग्य से, स्वान ने मुझ पर जो एहसान किया था, जिसके बारे में मैंने घर में प्रवेश करते ही, अपना ओवरकोट उतारने से पहले ही, अपने माता-पिता को बताया था, इस उम्मीद में कि इससे उनके दिलों में भी मेरे जैसी ही

भावना जागृत होगी और वे स्वान परिवार के प्रति कोई बड़ा और निर्णायक शिष्टाचारपूर्ण कार्य करेंगे, लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उन्होंने इसकी सराहना की हो। "स्वान ने तुम्हें बर्गोट से मिलवाया? तुम्हारे लिए एक बेहतरीन दोस्त, कितनी प्यारी संगत!" मेरे पिता ने व्यंग्यपूर्वक कहा। "बस यही तो चाहिए था!" अफसोस, जब मैंने आगे कहा कि बर्गोट को एम. डी नॉरपोइस की प्रशंसा करने में कोई रुचि नहीं थी:

“मैं तो यही कहूंगा!” मेरे पिता ने पलटकर कहा। “इससे तो यही साबित होता है कि वह मूर्ख और दुष्ट मानसिकता वाला व्यक्ति है। मेरे बेचारे बेटे, तुममें कभी अक्ल नहीं थी, फिर भी मुझे दुख है कि तुम ऐसे लोगों के बीच फंस गए हो जो तुम्हारा अंत कर देंगे।”

मेरे स्वान्स के घर बार-बार जाने मात्र से ही मेरे माता-पिता बिल्कुल भी खुश नहीं थे। बर्गोट से मेरा यह परिचय उन्हें एक घातक लेकिन स्वाभाविक परिणाम लगा, जो उनकी एक मूल गलती का नतीजा था, यानी मुझ पर नियंत्रण रखने में उनकी अपनी कमजोरी, जिसे मेरे दादाजी 'सावधानी का अभाव' कहते थे। मुझे लगा कि उनकी नाराज़गी को और बढ़ाने के लिए मुझे बस इतना कहना था कि यह विकृत व्यक्ति, जो एम. डी नॉरपोइस की सराहना नहीं करता था, मुझे बेहद बुद्धिमान मानता था। क्योंकि मैंने देखा था कि जब भी मेरे पिता को लगता था कि कोई भी, उदाहरण के लिए मेरा कोई स्कूली मित्र, गलत रास्ते पर जा रहा है—जैसा कि मैं उस समय था—अगर उस व्यक्ति को किसी ऐसे व्यक्ति का समर्थन प्राप्त होता था जिसे मेरे पिता उच्च स्थान नहीं देते थे, तो वे इसे अपने कठोर निर्णय की पुष्टि के रूप में देखते थे। बुराई उन्हें और भी स्पष्ट दिखाई देती थी। मैं उन्हें पहले से ही यह कहते हुए सुन सकता था, "बेशक, सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है," एक ऐसा वाक्यांश जिसने मुझे उन सुधारों की अस्पष्टता और व्यापकता से भयभीत कर दिया, जिनके

मेरे शांत जीवन में आने का खतरा मंडरा रहा था। लेकिन चूंकि, अगर मैं उन्हें यह न बताता कि बर्गोट ने मेरे बारे में क्या कहा था, तब भी मेरे माता-पिता के मन में बनी धारणा को मिटाया नहीं जा सकता था, इसलिए स्थिति और बिगड़ने से मुझे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था। इसके अलावा, वे मुझे इतने अन्यायपूर्ण, इतने गलत लग रहे थे कि न केवल मुझे कोई उम्मीद नहीं थी, बल्कि उन्हें अधिक न्यायसंगत दृष्टिकोण अपनाने के लिए मनाने की मेरी कोई इच्छा भी नहीं थी। साथ ही, जैसे ही ये शब्द मेरे होंठों से निकले, मुझे एहसास हुआ कि वे इस बात से कितने चिंतित होंगे कि मुझे एक ऐसे व्यक्ति का स्नेह मिला है जो बुद्धिमान लोगों को मूर्ख समझता है और सभी सभ्य लोगों की घृणा का पात्र है, और जिसकी प्रशंसा, जैसा कि मुझे लगता था, मुझे गलत काम करने के लिए ही प्रोत्साहित करेगी। इसलिए, लड़खड़ाते स्वर में और थोड़ी शर्मिंदगी के साथ, अपनी कहानी के अंत में, मैंने उन्हें ये कहा: "उसने स्वान्स को बताया कि उसने मुझे बेहद बुद्धिमान पाया।" जैसे कोई ज़हर खाया हुआ कुत्ता खेत में बिना कारण जाने सीधे उस घास की ओर दौड़ता है जो उसके द्वारा निगले गए ज़हर का सटीक प्रतिकार होती है, वैसे ही मैंने भी, ज़रा भी संदेह किए बिना, वह बात कह दी थी जो मेरे माता-पिता के मन में बर्गोट के प्रति मौजूद इस पूर्वाग्रह को दूर करने में सक्षम थी - एक ऐसा पूर्वाग्रह जिसे मेरे द्वारा दिए गए सभी अच्छे तर्क, मेरे द्वारा दी गई सभी प्रशंसाएँ भी पराजित नहीं कर सकती थीं। पल भर में स्थिति बदल गई।

"ओह! उन्होंने कहा कि उन्हें आप बुद्धिमान लगे," मेरी माँ ने दोहराया। "यह सुनकर मुझे खुशी हुई, क्योंकि वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं।"

“क्या! उसने ऐसा कहा?” मेरे पिता ने बीच में कहा। “मैं एक पल के लिए भी उसकी साहित्यिक उत्कृष्टता से इनकार नहीं करता, जिसके सामने पूरी दुनिया नतमस्तक है; बस यह अफ़सोस की बात है कि वह

उस निंदनीय जीवन को जी रहा है जिसका ज़िक्र पुराने नॉरपोइस ने यहाँ रहते हुए दबे स्वर में किया था," वह आगे बोले, यह न समझते हुए कि मैंने अभी जिन जादुई शब्दों को दोहराया था, उनकी सर्वोच्च पवित्रता के सामने बर्गोट के नैतिक पतन की संभावना उसके निर्णय की असत्यता से कहीं अधिक कम थी।

"लेकिन, मेरे प्यारे," माँ ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यह सच है। लोग तरह-तरह की बातें करते हैं। इसके अलावा, एम. डी नॉरपोइस के तौर-तरीके भले ही दुनिया में सबसे उत्तम हों, लेकिन उनका स्वभाव हमेशा अच्छा नहीं होता, खासकर उन लोगों के प्रति जो उनके जैसे नहीं होते।"

"यह बिलकुल सच है; मैंने खुद भी यह देखा है," मेरे पिता ने स्वीकार किया।

"और फिर, बर्गोट को बहुत कुछ माफ कर देना चाहिए, क्योंकि वह मेरे छोटे बेटे के बारे में अच्छा सोचता है," माँ ने अपनी उंगलियों से मेरे बालों को सहलाते हुए और मुझ पर एक लंबी और गंभीर निगाह डालते हुए कहा।

मेरी माँ ने वास्तव में बर्गोट के इस फैसले का इंतज़ार किए बिना ही मुझसे कहा था कि जब भी मेरे दोस्त घर आएँ तो मैं गिल्बर्ट को चाय पर बुला सकती हूँ। लेकिन दो कारणों से मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर पाई। पहला कारण यह था कि गिल्बर्ट के घर पर चाय के अलावा और कुछ पीने को नहीं होता था। जबकि घर पर माँ हमेशा चॉकलेट का एक बर्तन भी रखती थीं। मुझे डर था कि गिल्बर्ट इसे 'सामान्य' समझेगी और हमारे प्रति गहरी घृणा का भाव रखेगी। दूसरा कारण एक औपचारिक समस्या थी, एक प्रक्रियात्मक प्रश्न जिसे मैं कभी सुलझा नहीं पाई। जब मैं

श्रीमती स्वान के घर जाती थी, तो वह मुझसे पूछती थीं: "और तुम्हारी माँ कैसी हैं?" मैंने माँ से कई बार यह जानने की कोशिश की कि क्या वह भी गिल्बर्ट के आने पर ऐसा ही करेंगी, यह बात मुझे लुई 14वें के दरबार में 'मोनसिग्नोर' के प्रयोग से भी ज़्यादा गंभीर लगती थी। लेकिन माँ ने इस बारे में एक पल के लिए भी सुनना नहीं चाहा।

"बिल्कुल नहीं। मैं श्रीमती स्वान को नहीं जानता।"

"लेकिन वह भी तुम्हें नहीं जानती।"

"मैंने कभी नहीं कहा कि उसने ऐसा किया, लेकिन हम हर बात में बिल्कुल एक जैसा व्यवहार करने के लिए बाध्य नहीं हैं। मैं गिलबर्ट के प्रति विनम्रता दिखाने के अन्य तरीके खोज लूंगी, जो श्रीमती स्वान ने आपके साथ नहीं अपनाए हैं।"

लेकिन मुझे यकीन नहीं हुआ और मैंने गिलबर्ट को आमंत्रित न करना ही बेहतर समझा।

अपने माता-पिता को छोड़कर मैं कपड़े बदलने के लिए ऊपर गया और जेबें खाली करते ही मुझे वह लिफाफा मिला जो स्वान्स के बटलर ने मुझे ड्राइंग रूम में ले जाने से पहले दिया था। अब मैं अकेला था। मैंने उसे खोला; अंदर एक कार्ड था जिस पर उस महिला का नाम लिखा था जिसे मुझे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करना था।

लगभग इसी दौर में ब्लोच ने दुनिया के बारे में मेरी धारणा को पूरी तरह बदल दिया और मेरे लिए खुशी की नई संभावनाएं खोल दीं (जो बाद में दुख की संभावनाओं में बदल गईं)। उन्होंने मुझे आश्वस्त किया कि मेसेग्लिस मार्ग पर सैर के दौरान मैंने जो कुछ भी माना था, उसके विपरीत, महिलाएं प्रेम करने से बेहतर कुछ नहीं मांगतीं। उन्होंने इस सेवा में एक और सेवा जोड़ दी, जिसका महत्व मुझे बहुत बाद में समझ आया;

वही मुझे पहली बार एक अव्यवस्थित घर में ले गए थे। उन्होंने वास्तव में मुझसे कहा था कि वहां कई खूबसूरत महिलाएं हैं जिनके साथ आनंद लिया जा सकता है। लेकिन मैं उन्हें केवल एक धुंधली रूपरेखा में ही देख पा रहा था, जिसके स्थान पर उन घरों ने मुझे वास्तविक मानवीय चेहरे देखने का अवसर दिया। इसलिए, यदि मैं ब्लोच का ऋणी था—उनके इस 'शुभ समाचार' के लिए कि सौंदर्य और सौंदर्य का आनंद अगम्य वस्तुएँ नहीं हैं, और हमने उन्हें हमेशा के लिए त्याग कर मूर्खतापूर्ण कार्य किया है —तो उसी प्रकार का कृतज्ञता का ऋणी, जैसा कि हम किसी आशावादी चिकित्सक या दार्शनिक के ऋणी होते हैं, जिसने हमें इस संसार में दीर्घायु होने की आशा दी है और परलोक में जाने के बाद इससे पूरी तरह से अलग न होने की आशा दी है, तो कुछ वर्षों बाद जिन गुप्त स्थानों पर मैं जाने लगा—उन्होंने मुझे सौंदर्य के नमूने प्रदान किए, मुझे स्त्रियों के सौंदर्य में वह तत्व जोड़ने की अनुमति दी जिसे हम स्वयं नहीं बना सकते, जो पूर्व सौंदर्यों के मात्र सारांश से कहीं अधिक है, वह दिव्य वर्तमान, वह एकमात्र वर्तमान जिसे हम स्वयं को प्रदान नहीं कर सकते, जिसके सामने हमारी बुद्धि की सभी तार्किक रचनाएँ क्षीण हो जाती हैं और विफल हो जाती हैं, और जिसे हम केवल वास्तविकता से ही खोज सकते हैं: एक व्यक्तिगत आकर्षण—वह मेरे द्वारा उन अन्य उपकारकों के साथ स्थान पाने योग्य है जो हाल ही में अस्तित्व में आए हैं लेकिन तुलनीय उपयोगिता के हैं (उस मोहक आकर्षण को खोजने से पहले जिसे हम बिना किसी उत्साह के कल्पना करते थे)। मंटेग्ना, वैगनर और सिएना के आकर्षणों को जानने के लिए, मैंने अन्य चित्रकारों का अध्ययन किया, अन्य संगीतकारों को सुना और अन्य शहरों का दौरा किया: चित्रकला के इतिहास के सचित्र संस्करण, सिम्फनी संगीत कार्यक्रम और 'मध्यकालीन शहरों' की पुस्तिकाएँ। लेकिन जिस घर में ब्लोच मुझे ले गया (और जहाँ

वह स्वयं भी लंबे समय से जाना बंद कर चुका था), वह बहुत ही साधारण था, वहाँ के निवासी बहुत ही साधारण और कम विविधता वाले थे, जो मेरी पुरानी जिज्ञासाओं को शांत करने या नई जिज्ञासाओं को जगाने में असमर्थ थे। उस घर की मालकिन उन महिलाओं में से किसी को भी नहीं जानती थी जिनसे बातचीत करने के लिए कहा जाता था, और वह हमेशा ऐसी महिलाओं के नाम सुझाती थी जिन्हें मैं नहीं चाहता था। उसने विशेष रूप से एक महिला के बारे में मुझे बताया, जिसके बारे में वह एक आशा भरी मुस्कान के साथ (जैसे कि यह एक दुर्लभ घटना और विशेष अवसर हो) फुसफुसाती थी: "वह एक यहूदी है! क्या इससे तुम्हारा मन नहीं करता?" (वैसे, शायद इसीलिए उस लड़की का नाम राहेल था।) और एक बनावटी और भोली उत्तेजना के साथ, जिसे वह उम्मीद कर रही थी कि वह दूसरों को भी प्रभावित करेगी, और जो एक कर्कश गड़गड़ाहट में समाप्त हुई, मानो कामुक संतुष्टि से भरी हो: "सोचो, मेरे लड़के, एक यहूदी लड़की! कितना प्यारा होगा! र्र्र!" यह राहेल, जिसकी एक झलक मैंने बिना उसे देखे ही देखी थी, सांवली और दिखने में सुंदर नहीं थी, लेकिन उसमें बुद्धिमत्ता झलकती थी, और जब वह उन 'लड़कों' पर मुस्कुराती थी जिन्हें उससे मिलवाया जाता था और जिनकी बातचीत मैं सुन सकता था, तो वह अपनी जीभ को होठों पर फेरती थी, और उसके चेहरे पर असीम उद्दंडता झलकती थी। उसका छोटा और पतला चेहरा काले बालों के छोटे-छोटे घुंघराले गुच्छों से घिरा हुआ था, जो अनियमित थे मानो स्याही से बनी किसी धुंधली रेखा पर कलम की लकीरें खींची गई हों। हर शाम मैं उस बुढ़िया से वादा करता था जिसने बड़ी ज़िद करके मुझे राहेल से मिलवाया था, उसकी बुद्धिमत्ता और शिक्षा की तारीफ़ करते हुए, कि मैं एक दिन राहेल से मिलने ज़रूर आऊँगा, जिसे मैंने "राहेल जो प्रभु से आई है" नाम दिया था। लेकिन पहली शाम जब वह घर से निकल रही

थी, तो मैंने उसे मालकिन से कहते सुना: "तो फिर बात पक्की हो गई; मैं कल खाली रहूँगी, अगर आपके पास कोई हो तो मुझे बुलाना मत भूलना।"

और इन शब्दों ने मुझे उसे एक व्यक्ति के रूप में पहचानने से रोक दिया था, क्योंकि उन्होंने मुझे उसे तुरंत उन महिलाओं की एक सामान्य श्रेणी में डाल दिया था जिनकी आदत, उन सभी में समान थी, शाम को वहाँ आकर यह देखना कि क्या उन्हें एक-दो लुई मिल सकते हैं। वह बस अपना तरीका बदल देती थी, और बेपरवाही से कहती थी: "अगर तुम मुझे चाहते हो" या "अगर तुम किसी को भी चाहते हो।"

मालकिन, जो हालेवी के ओपेरा से परिचित नहीं थीं, यह नहीं जानती थीं कि मैं उस लड़की को हमेशा "राहेल व्हेन फ्रॉम द लॉर्ड" क्यों कहता था। लेकिन किसी मजाक को न समझ पाने से आज तक किसी को भी वह कम मजेदार नहीं लगा, और वह हमेशा दिल खोलकर हंसते हुए मुझसे कहती थीं:

"तो आज रात कुछ नहीं हो रहा? मैं तुम्हें 'रेचल व्हेन फ्रॉम द लॉर्ड' से कब मिलवाऊँगी? तुम हमेशा 'रेचल व्हेन फ्रॉम द लॉर्ड' क्यों कहती हो? ओह, ये तो बहुत चालाकी है। मैं तुम दोनों की जोड़ी बना दूँगी। तुम्हें पछतावा नहीं होगा, तुम देखोगी।"

एक बार तो मैं बस फैसला ही कर पा रही थी कि वो खबरों में आ गई, दूसरी बार नाई के पास, एक बुजुर्ग सज्जन जो महिलाओं के लिए उनके खुले बालों में तेल लगाने और कंघी करने के अलावा कुछ नहीं करते थे। और मैं इंतज़ार करते-करते थक गई थी, हालाँकि उस जगह पर आने वाली कुछ साधारण महिलाएं (खुद को काम करने वाली लड़कियां कहती थीं, लेकिन वे हमेशा बेरोजगार ही लगती थीं) मेरे लिए पेय बनाने और

लंबी बातचीत करने आती थीं, जिनमें चर्चा के विषय कितने भी गंभीर क्यों न हों, वक्ताओं का आंशिक या पूर्ण नग्न होना एक आकर्षक सादगी प्रदान करता था। इसके अलावा, मैंने उस घर में जाना बंद कर दिया क्योंकि, घर की मालकिन को, जिसे फर्नीचर की ज़रूरत थी, अपनी सद्भावना का प्रतीक देने के लिए, मैंने उसे कई चीज़ें दी थीं, खासकर एक बड़ा सोफा, जो मुझे मेरी चाची लियोनी से विरासत में मिला था। मैं उन्हें कभी नहीं देखती थी, क्योंकि जगह की कमी के कारण मेरे माता-पिता उन्हें घर में नहीं रख पाए थे, और वे एक गोदाम में रखे हुए थे। लेकिन जैसे ही मैंने उन्हें उस घर में दोबारा पाया जहाँ ये औरतें उनका इस्तेमाल कर रही थीं, कॉम्ब्रे में मेरी चाची के कमरे के माहौल में मैंने जो सद्गुण आत्मसात किए थे, वे सब मेरे सामने प्रकट हो गए। उन्हें उनकी बेबसी में छोड़कर जाने के क्रूर स्पर्श से मैं बहुत दुखी था! अगर मैंने मृतकों का अपमान किया होता, तो मुझे इतना पछतावा नहीं होता। मैं उनकी नई मालकिन से मिलने कभी नहीं लौटा, क्योंकि वे मुझे जीवित प्रतीत होती थीं और मुझसे अपील करती हुई लगती थीं, ठीक वैसे ही जैसे फारसी परियों की कहानियों में दिखने में निर्जीव लगने वाली वस्तुएँ, जिनमें शहादत झेल रही मानवीय आत्माएँ समाहित होती हैं और मुक्ति की याचना करती हैं। इसके अलावा, चूंकि हमारी स्मृति आमतौर पर चीजों को उनके कालानुक्रमिक क्रम में नहीं, बल्कि एक प्रतिबिंब के रूप में प्रस्तुत करती है जिसमें भागों का क्रम उलट जाता है, मुझे बहुत बाद में याद आया कि उसी सोफे पर, कई साल पहले, मैंने अपनी एक चचेरी बहन के साथ पहली बार प्यार की मिठास का स्वाद चखा था, जिसके साथ मुझे नहीं पता था कि कहाँ जाना है, जब तक कि उसने कुछ जल्दबाजी में सुझाव नहीं दिया कि हम उस क्षण का फायदा उठाएं जब चाची लियोनी अपने कमरे से बाहर गई थीं।

मैंने अपनी चाची लियोनी की बहुत सी चीज़ें, और विशेष रूप से चांदी के पुराने बर्तनों का एक शानदार सेट, अपने माता-पिता की चेतावनियों के बावजूद बेच दिया, ताकि मेरे पास खर्च करने के लिए अधिक पैसे हों और मैं श्रीमती स्वान को अधिक फूल भेज सकूँ। श्रीमती स्वान ऑर्किड की एक विशाल टोकरी पाकर मुझसे कहती थीं, "अगर मैं तुम्हारा पिता होता, तो मैं तुम्हें इसके लिए मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर देता।" मैं कैसे सोच सकता था कि एक दिन मुझे चांदी के बर्तनों के खोने का सबसे अधिक अफसोस होगा और मैं गिलबर्ट के माता-पिता पर कृपा करने के सुख से कहीं अधिक अन्य सुखों को महत्व दूँगा (जो शायद बिल्कुल भी न के बराबर रह जाता)। इसी तरह, गिलबर्ट को ध्यान में रखते हुए और उससे अलग न होने के लिए, मैंने विदेश में कूटनीति का करियर न अपनाने का फैसला किया था। अक्सर, इसी तरह, एक ऐसी मानसिक स्थिति से प्रेरित होकर जो स्थायी नहीं होती, हम अपने अटल निर्णय लेते हैं। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि गिलबर्ट में समाया वह विचित्र पदार्थ, जो उससे उसके माता-पिता और घर में समा गया था और मुझे बाकी सब चीजों के प्रति उदासीन बना दिया था, उससे मुक्त होकर किसी दूसरे व्यक्ति में समा सकता है। वही पदार्थ, निर्विवाद रूप से, फिर भी मुझ पर उसका बिल्कुल अलग प्रभाव होगा। क्योंकि एक ही बीमारी कई रूपों से गुजरती है, और एक स्वादिष्ट जहर को भी उम्र बीतने के साथ-साथ उतनी आसानी से नहीं लिया जा सकता, जब हृदय की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।

इस बीच, मेरे माता-पिता चाहते थे कि बर्गोट ने मुझमें जो बुद्धिमत्ता देखी थी, वह किसी असाधारण उपलब्धि के रूप में प्रकट हो। जब मैं स्वान्स को नहीं जानता था, तब मुझे लगता था कि गिलबर्ट से अपनी इच्छा से न मिल पाने की वजह से मैं जिस बेचैनी में डूबा रहता था, उसी के कारण मैं

काम नहीं कर पा रहा था। लेकिन अब जब उनका दरवाज़ा मेरे लिए खुला था, तो जैसे ही मैं अपनी मेज पर बैठता, मैं उठकर उनके पास दौड़ पड़ता। और जब मैं उनसे विदा लेकर घर वापस आता, तो मेरा अकेलापन केवल नाममात्र का रह जाता, मेरा मन उन शब्दों की धारा के विरुद्ध तैरने में असमर्थ हो जाता, जिन पर मैं घंटों तक यंत्रवत बहता रहता था। अकेले बैठे-बैठे मैं ऐसी बातें गढ़ता रहता जो स्वान्स को प्रसन्न या मनोरंजन कर सकती थीं, और इस समय को और मनोरंजक बनाने के लिए मैं स्वयं उन अनुपस्थित पात्रों की भूमिका निभाने लगता, मैं अपने आप से काल्पनिक प्रश्न पूछता, इस प्रकार चुने हुए कि मेरे शानदार व्यंग्य केवल उनके सुखद उत्तर के रूप में काम करते। हालांकि यह अभ्यास मौन में किया गया था, फिर भी यह एक संवाद था, ध्यान नहीं। मेरा एकांत एक मानसिक समाज था जिसमें मैं स्वयं नहीं बल्कि अन्य काल्पनिक वक्ता मेरे शब्दों के चयन को नियंत्रित कर रहे थे, और जिसमें मैंने उन विचारों के स्थान पर, जिन्हें मैं सत्य मानता था, उन विचारों को गढ़ते हुए, जो सहजता से मेरे मन में आए, और जिसमें बाहरी आत्मनिरीक्षण शामिल नहीं था, उस प्रकार का पूर्णतः निष्क्रिय आनंद महसूस किया, जो सुस्त पाचन से ग्रस्त किसी भी व्यक्ति को शांत बैठने से मिलता है।

अगर मेरा दृढ़ निश्चय काम शुरू करने का न होता, तो शायद मैं तुरंत शुरू करने की कोशिश करता। लेकिन चूंकि मेरा संकल्प स्पष्ट था, चूंकि चौबीस घंटों के भीतर, उस लंबे कल के खालीपन में, जिसमें सब कुछ इतनी अच्छी तरह से व्यवस्थित था क्योंकि मैं खुद अभी उसमें प्रवेश नहीं कर पाया था, मेरे नेक इरादे बिना किसी कठिनाई के पूरे हो जाते, इसलिए बेहतर था कि मैं उस शाम को काम शुरू करने के लिए न चुनूं जिस शाम मेरा मन न हो, क्योंकि आने वाले दिन भी इसके लिए अनुकूल नहीं थे। लेकिन मैं समझदार था। इतने सालों से इंतज़ार कर रहे व्यक्ति

के लिए दो-तीन दिन की देरी को बर्दाश्त न करना बचकाना होता। मुझे पूरा भरोसा था कि परसों तक मैं कई पन्ने लिख चुका होऊंगा, इसलिए मैंने अपने माता-पिता को अपने फैसले के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा; मैंने कुछ घंटों तक धैर्य रखना बेहतर समझा और फिर आश्वस्त और संतुष्ट दादी को उस काम का नमूना दिखाना चाहा जो पहले से ही चल रहा था। दुर्भाग्य से, आने वाला कल वह विशाल, बाहरी दिन नहीं था जिसकी मैं बुखार में उम्मीद कर रहा था। जब यह सब समाप्त हुआ, तो मेरी सुस्ती और कुछ आंतरिक बाधाओं को दूर करने का मेरा कष्टदायक संघर्ष बस चौबीस घंटे और बढ़ गया। और कई दिनों के अंत में, मेरी योजनाएँ पूरी नहीं हो पाईं, और अब मुझे वह आशा नहीं रही कि वे तुरंत साकार हो जाएँगी, इसलिए अब उनमें वह साहस भी नहीं रहा कि मैं बाकी सब कुछ उनके साकार होने के अधीन कर दूँ: मैं फिर से देर रात तक जागने लगा, क्योंकि अब मुझे किसी भी शाम जल्दी सोने के लिए बाध्य करने वाली यह निश्चित आशा नहीं रही कि मेरा काम अगली सुबह शुरू हो जाएगा। अपनी रचनात्मक ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने से पहले मुझे कई दिनों के आराम की आवश्यकता थी, और यही वह एकमात्र समय था जब मेरी दादी ने कोमल और निराश स्वर में मुझे फटकार लगाई: "अच्छा, और तुम्हारा वह काम; क्या अब हमें उसके बारे में बात भी नहीं करनी चाहिए?" मुझे उसकी दखलअंदाजी से बहुत बुरा लगा, क्योंकि मुझे यकीन था कि मेरी दृढ़ इच्छाशक्ति को न समझ पाने के कारण उसने मेरे काम को और भी लंबे समय तक टाल दिया था। मेरे साथ हुए अन्याय से मुझे गहरा सदमा लगा था, और जब तक मैं उस सदमे से उबर नहीं जाता, तब तक मेरा काम शुरू करने का मन नहीं करेगा। उसे लगा कि उसके संदेह ने मेरे इरादे पर अंधाधुंध प्रहार किया है। उसने मुझे चूमते हुए माफी मांगी और कहा, "मुझे खेद है; मैं अब कुछ नहीं कहूंगी," और मुझे निराश

न करने के लिए उसने मुझे आश्वासन दिया कि जिस दिन मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊंगा, उस दिन से काम अपने आप मेरी शक्ति की अधिकता से पूरा हो जाएगा।

इसके अलावा, मैंने मन ही मन सोचा, स्वान्स के साथ सारा समय बिताकर, क्या मैं वही नहीं कर रहा जो बर्गोट करता है? मेरे माता-पिता को तो ऐसा लगता था मानो मैं, भले ही आलसी था, एक महान लेखक के साथ एक ही ड्राइंग रूम में समय बिताने के कारण प्रतिभा के विकास के लिए सबसे अनुकूल जीवन जी रहा था। फिर भी, यह मानना कि किसी को अपनी प्रतिभा स्वयं से उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं है और वह इसे किसी और से प्राप्त कर सकता है, उतना ही असंभव है जितना यह मानना कि कोई व्यक्ति स्वच्छता के सभी नियमों की अनदेखी करने और हद से ज़्यादा भोग-विलास करने के बावजूद, केवल किसी चिकित्सक की संगति में बार-बार भोजन करने से स्वस्थ रह सकता है। वैसे, इस भ्रम में सबसे ज़्यादा फँसी हुई, जिसने मुझे और मेरे माता-पिता दोनों को गुमराह किया, वह थीं श्रीमती स्वान। जब मैंने उसे समझाया कि मैं नहीं आ पाऊँगी, कि मुझे घर पर रहकर काम करना होगा, तो उसने ऐसे देखा जैसे वह सोच रही हो कि मैंने बेवजह ही इतना हंगामा किया है, कि मैंने जो कहा उसमें कुछ मूर्खतापूर्ण होने के साथ-साथ आडंबरपूर्ण भी था।

"लेकिन बर्गोट आ रहे हैं, है ना? क्या आपका मतलब है कि आपको उनका लेखन अच्छा नहीं लगता? बहुत जल्द यह और भी बेहतर हो जाएगा," उन्होंने आगे कहा, "क्योंकि वह अधिक सटीक लिखते हैं, अखबारों के लेखों में वह किताबों की तुलना में अधिक केंद्रित होते हैं, जहाँ वह अक्सर बहुत अधिक विस्तार कर देते हैं। मैंने तय कर दिया है कि भविष्य में फिगारो में मुख्य लेख वही लिखेंगे। वह वहाँ बिल्कुल 'सही

जगह पर सही व्यक्ति' होंगे।" और अंत में, "आइए! वह आपको सबसे बेहतर तरीके से बताएंगे कि आपको क्या करना चाहिए।"

और इसलिए, जिस प्रकार कोई अपने कर्नल से मिलने के लिए किसी उच्च पदस्थ अधिकारी को आमंत्रित करता है, उसी प्रकार मेरे करियर के हित में, और मानो साहित्य की उत्कृष्ट कृतियाँ लोगों को "जानने-पहचानने" से ही उत्पन्न होती हैं, उसने मुझसे कहा कि मैं अगले दिन उसके साथ रात के खाने पर आना न भूलूँ, ताकि मैं बर्गोट से मिल सकूँ।

और इसलिए स्वान परिवार की ओर से, और मेरे माता-पिता की ओर से भी, यानी उन लोगों की ओर से, जिन्होंने अलग-अलग समय पर मेरे रास्ते में बाधाएँ डालने का प्रयास किया था, उस सुखद जीवन में कोई और रुकावट नहीं आई, जिसमें मैं गिलबर्ट से जितनी बार चाहूँ, आनंद के साथ मिल सकता था, भले ही मन को शांति न मिले। प्रेम में मन की शांति नहीं हो सकती, क्योंकि जो लाभ प्राप्त होता है, वह हमेशा आगे की इच्छाओं का नया आरंभ होता है। जब तक मैं उस सुख के उस अथाह लक्ष्य पर अपनी निगाहें गड़ाए, उससे मिलने के लिए स्वतंत्र नहीं था, तब तक मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वहाँ मेरे लिए कितनी नई चिंताएँ इंतज़ार कर रही थीं। एक बार जब उसके माता-पिता का प्रतिरोध टूट गया, और समस्या अंततः हल हो गई, तो यह फिर से नए रूप में सामने आने लगी। हर शाम, घर पहुँचकर, मैं खुद को याद दिलाता था कि मुझे गिलबर्ट से कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण बातें कहनी हैं, ऐसी बातें जिन पर हमारी पूरी दोस्ती टिकी थी, और ये बातें कभी एक जैसी नहीं होती थीं। लेकिन कम से कम मैं खुश था, और मेरी खुशी को खतरे में डालने वाला कोई और खतरा नहीं था। अफसोस, एक खतरा उस तरफ से प्रकट हुआ जहाँ मैंने कभी कोई खतरा महसूस नहीं किया था, यानी गिलबर्ट और खुद से। फिर भी मुझे उस चीज़ से परेशान होना चाहिए था जिसने मुझे इसके

विपरीत आश्वस्त किया, जिसे मैंने खुशी समझ लिया था। जब हम प्यार करते हैं, तो हम एक असामान्य अवस्था में होते हैं, जो किसी भी क्षण घटित होने वाली सबसे सरल दिखने वाली घटना को भी एक गंभीर रूप दे देती है, जबकि वह घटना अपने आप में इतनी गंभीर नहीं हो सकती। जो चीज़ हमें इतना खुश करती है, वह हमारे हृदय में मौजूद एक अस्थिर तत्व की उपस्थिति है जिसे हम निरंतर बनाए रखने की कोशिश करते रहते हैं, और जब तक वह विस्थापित नहीं हो जाता, तब तक हम लगभग उसके प्रति सचेत नहीं रहते। वास्तव में, प्रेम में पीड़ा का एक स्थायी तनाव होता है जिसे खुशी बेअसर कर देती है, केवल सशर्त बना देती है, टाल देती है, लेकिन जो किसी भी क्षण वह बन सकता है जो बहुत पहले बन जाता अगर हमें वह न मिलता जिसकी हम तलाश कर रहे थे, यानी घोर पीड़ा।

कई बार मुझे लगा कि गिलबर्टे मेरी मुलाकातों को टालने के लिए बेचैन थी। यह सच है कि जब भी मुझे उससे मिलने की तीव्र इच्छा होती, तो मैं बस उसके माता-पिता से निमंत्रण प्राप्त कर लेता, जो उस पर मेरे अच्छे प्रभाव के बारे में आश्वस्त होते जा रहे थे। मैं सोचा करता था, "उनकी बदौलत, मेरे प्यार को कोई खतरा नहीं है; जैसे ही वे मेरे पक्ष में हो जाते हैं, मैं निश्चिंत हो जाता हूँ; गिलबर्टे पर उनका पूरा अधिकार है।" लेकिन, अफसोस, मैंने उसमें कुछ अधीरता के संकेत देखे, जो उसके पिता द्वारा मुझे लगभग उसकी इच्छा के विरुद्ध घर बुलाने पर प्रकट हुए, और मैंने खुद से पूछा कि क्या जिसे मैं अपनी खुशी की रक्षा मानता था, वह वास्तव में मेरी उस खुशी के न टिकने का गुप्त कारण तो नहीं था।

पिछली बार जब मैं गिलबर्ट से मिलने गई थी, बारिश हो रही थी; उसे कुछ लोगों के घर पर डांस क्लास के लिए बुलाया गया था, जिनसे उसकी जान-पहचान इतनी कम थी कि वह मुझे अपने साथ नहीं ले जा सकी। हवा में नमी को देखते हुए मैंने सामान्य से ज़्यादा कैफीन ले ली थी।

शायद मौसम की वजह से, या शायद जिस घर में पार्टी हो रही थी, उससे उसे कोई आपत्ति थी, इसलिए जब उसकी बेटी कमरे से बाहर जा रही थी, तो श्रीमती स्वान ने उसे तेज़ आवाज़ में वापस बुलाया: "गिलबर्ट!" और मेरी तरफ इशारा करते हुए बताया कि मैं उससे मिलने आई हूँ और उसे मेरे साथ ही रुकना चाहिए। यह "गिलबर्ट!" उसने मेरे लिए अच्छे इरादे से कहा था, या यूँ कहें कि चिल्लाकर कहा था, लेकिन गिलबर्ट ने अपने बाहरी कपड़े उतारते हुए जिस तरह से कंधे उचकाए, उससे मैं समझ गई कि उसकी माँ ने अनजाने में उस धीमी गति से हो रहे बदलाव को तेज़ कर दिया था, जिसे शायद तब तक रोका जा सकता था, जो धीरे-धीरे मेरी दोस्त को मुझसे दूर कर रहा था। "तुम्हें हर दिन नाचने के लिए बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है," ओडेट ने अपनी बेटी से कहा, उसकी समझदारी, जो उसने शायद बचपन में स्वान से सीखी थी। फिर, अपने असली रूप में लौटकर, वह अपनी बेटी से अंग्रेज़ी में बात करने लगी। तुरंत ही ऐसा लगा जैसे मेरे सामने एक दीवार खड़ी हो गई हो और गिलबर्ट के जीवन का एक हिस्सा मुझसे छिपा लिया हो, जैसे किसी दुष्ट आत्मा ने मेरी सहेली को कहीं दूर भगा दिया हो। जिस भाषा को हम जानते हैं, उसमें हम ध्वनियों की अस्पष्टता की जगह विचारों की स्पष्टता पा लेते हैं। लेकिन जिस भाषा को हम नहीं जानते, वह एक बंद किले की तरह है, जिसकी दीवारों के भीतर हमारी प्रेमिका हमारे साथ बेवफ़ाई कर सकती है, जबकि हम बाहर खड़े होकर, अपनी बेबसी में बेतहाशा सतर्क रहते हुए, देख तो सकते हैं, पर कुछ रोक नहीं सकते। तो अंग्रेज़ी में हुई यह बातचीत, जिस पर एक महीने पहले मैं महज़ मुस्कुरा देता, जिसमें बीच-बीच में कुछ फ्रांसीसी नामों का भी ज़िक्र था जो मेरी बेचैनी को और भी बढ़ा रहे थे, जब दो बेजान व्यक्तियों ने उसी क्रूरता से मेरे कुछ ही फ़ीट के भीतर यह बातचीत की, तो मुझे उतना ही अकेला और बेसहारा महसूस हुआ जितना कि मेरे

साथी के जबरन अपहरण ने। आख़िरकार, श्रीमती स्वान हमें छोड़कर चली गईं। उस दिन, शायद मेरे प्रति नाराज़गी के कारण, क्योंकि मैं अनचाहा कारण था कि वह बाहर जाकर आनंद नहीं ले पाईं, और शायद इसलिए भी कि उन्हें मुझसे नाराज़ समझकर मैं उनके साथ सामान्य से ज़्यादा ठंडा व्यवहार कर रहा था, गिलबर्ट का चेहरा, खुशी के हर निशान से रहित, उदास, निर्जीव, लूटा हुआ सा, पूरी दोपहर उस चार दिवसीय नृत्य के लिए एक उदास खेद व्यक्त करता हुआ प्रतीत हुआ जिसमें मेरे आने से वह भाग नहीं ले पाईं, और मानो हर जीवित प्राणी को, यहाँ तक कि मुझे भी, उन सूक्ष्म कारणों को समझने की चुनौती दे रहा हो जिनके कारण बोस्टन के प्रति उनका भावनात्मक लगाव पैदा हुआ था। वह मुझसे बार-बार मौसम, बारिश की बढ़ती तीव्रता और घड़ी की धीमी गति के बारे में ही बात करती रहती थी। हमारी बातचीत में बीच-बीच में मौन और एक-एक शब्द के वाक्य आते रहते थे, जिनमें मैं एक तरह के हताश गुस्से से उन पलों को बर्बाद करने की कोशिश करता रहता था जिन्हें हम दोस्ती और खुशी के लिए समर्पित कर सकते थे। हमारी हर बात पर मानो एक चरम कठोरता की छाप होती थी, उनकी महत्वहीनता के कारण, जो साथ ही साथ मुझे तसल्ली भी देती थी, क्योंकि इससे गिलबर्टे मेरी बातों की तुच्छता और मेरे लहजे की उदासीनता से प्रभावित नहीं होती थी। मेरा विनम्रतापूर्वक कहना व्यर्थ था: "मैंने तो उस दिन सोचा था कि घड़ी धीमी चल रही है"; वह स्पष्ट रूप से समझ गई थी कि मेरा मतलब था: "तुम कितनी उबाऊ बातें कर रही हो!" उस बारिश से भीगी दोपहर भर, शब्दों के उस नीरस बादल को, जिसमें कोई उम्मीद की किरण नहीं थी, मैं हठपूर्वक खींचता रहा, लेकिन मुझे पता था कि मेरी उदासीनता उतनी अटल नहीं थी जितना मैं दिखावा कर रहा था, और गिलबर्ट को यह अच्छी तरह से पता होगा कि अगर तीन बार कहने के बाद, मैं चौथी बार यह कह

देता कि शाम ढल रही है, तो मुझे अपने आँसू रोकने में मुश्किल होती। जब वह ऐसी थी, जब उसकी आँखों में कोई मुस्कान नहीं थी और उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, तो मैं उसकी उदास आँखों और गंभीर चेहरे पर छाई उस भयानक नीरसता का वर्णन नहीं कर सकता। उसका लगभग पीला पड़ चुका चेहरा मुझे उन सुनसान समुद्र तटों की याद दिलाता था जहाँ दूर तक डूबता हुआ समुद्र अपनी धुंधली टिमटिमाहट से थका देता है, हर जगह एक जैसा, एक अपरिवर्तनीय और नीची क्षितिज पर स्थिर। अंत में, जब मुझे गिलबर्ट में उस सुखद बदलाव का कोई संकेत नहीं दिखा जिसका मैं कुछ घंटों से इंतज़ार कर रहा था, तो मैंने उससे कहा कि वह अच्छा व्यवहार नहीं कर रही है। "तुम ही अच्छे नहीं बन रहे हो," उसने जवाब दिया। "अरे, लेकिन ज़रूर—!" मैंने खुद से पूछा कि मैं क्या कर सकता था, और कोई जवाब न पाकर, मैंने उससे ही सवाल किया। "स्वाभाविक रूप से, तुम खुद को अच्छा समझते हो!" उसने हंसते हुए मुझसे कहा और हंसती रही। तब मुझे वह सारी पीड़ा महसूस हुई जो मेरे अंदर थी, क्योंकि मैं उसके मन के उस दूसरे, कम बोधगम्य, स्तर तक नहीं पहुंच पा रहा था जिसका संकेत उसकी हंसी दे रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी हंसी का मतलब हो: "नहीं, नहीं, मैं तुम्हारी किसी भी बात से प्रभावित नहीं होने वाली, मुझे पता है कि तुम मुझसे बेइंतहा प्यार करते हो, लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मुझे तुम्हारी ज़रा भी परवाह नहीं है।" लेकिन मैंने खुद से कहा कि आखिर हंसी कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसे इतनी अच्छी तरह से परिभाषित किया जा सके कि मैं निश्चित रूप से समझ सकूं कि इस हंसी का असली मतलब क्या है। और गिलबर्ट के शब्द स्नेहपूर्ण थे। "लेकिन मैं कैसे अच्छा नहीं बन रहा हूँ?" मैंने उससे पूछा। "बताओ; मैं तुम्हारी हर बात मानूंगा।" "नहीं; इससे कोई फायदा नहीं होगा। मैं समझा नहीं सकती।" एक पल के लिए मुझे

डर लगा कि कहीं वह यह न सोच ले कि मैं उससे प्यार नहीं करता, और यह मेरे लिए एक नया दर्द था, जो पहले से कम तीव्र नहीं था, लेकिन जिसके लिए बातचीत का एक अलग तरीका ज़रूरी था। "अगर तुम्हें पता होता कि तुम मुझे कितना दुख पहुँचा रहे हो तो मुझे बता देते।" लेकिन यह दर्द, जो अगर उसे मेरे प्यार पर शक होता तो उसे खुशी देता, इसके बजाय उसे और ज़्यादा गुस्सा दिला रहा था। फिर, अपनी गलती का एहसास करते हुए, मैंने उसकी बातों पर ध्यान न देने का फैसला किया, और उसे (उस पर विश्वास किए बिना) यह कहते हुए सुना: "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, सचमुच करता हूँ; तुम एक दिन देखोगे," (वह दिन जब दोषी मानते हैं कि उनकी बेगुनाही साबित हो जाएगी, और जो किसी रहस्यमय कारण से कभी वह दिन नहीं होता जब उनकी गवाही ली जाती है), मुझे हिम्मत मिली और मैंने अचानक उससे दोबारा न मिलने का फैसला कर लिया, और उसे अभी बताया भी नहीं क्योंकि वह मुझ पर विश्वास नहीं करती।

जिस व्यक्ति से प्रेम किया जाता है, उसके कारण होने वाला दुःख अत्यंत तीखा हो सकता है, भले ही वह दुःख उन व्यस्तताओं, कामों और सुखों के बीच उत्पन्न हो जिनमें वह व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से शामिल न हो और जिनसे हमारा ध्यान कभी-कभार ही हटता हो। परन्तु जब ऐसा दुःख जन्म लेता है—जैसा कि अब हो रहा था—उस क्षण में जब उस व्यक्ति को देखने की प्रसन्नता हमें सर्वथा अभिभूत कर देती है, तो उस समय हमारे मन पर छा जाने वाला तीव्र अवसाद, जो अब तक प्रसन्न, स्थिर और शांत था, हमारे भीतर एक प्रचंड तूफान ला देता है, जिसके विरुद्ध हम नहीं जानते कि अंत तक संघर्ष कर पाएंगे या नहीं। मेरे हृदय में उठने वाला तूफान इतना प्रचंड था कि मैं हताश, क्षत-विक्षत होकर घर लौटा, यह महसूस करते हुए कि मैं केवल अपने कदम पीछे हटाकर, किसी भी बहाने

से गिल्बर्ट की उपस्थिति में लौटकर ही अपनी साँसें वापस ले सकता हूँ। लेकिन उसने मन ही मन कहा होगा: "वापस आ गया! ज़ाहिर है, मैं उसके साथ किसी भी हद तक जा सकती हूँ; वह हर बार वापस आएगा, और जब वह मुझे छोड़कर जाएगा तो जितना दुखी होगा, उतना ही आज्ञाकारी होगा।" इसके अलावा, मैं विचारों में उसकी ओर अनवरत रूप से आकर्षित थी, और वे वैकल्पिक दिशाएँ, मेरे भीतर दिशा-निर्देश की सुई का वह पागलपन भरा उतार-चढ़ाव, घर पहुँचने के बाद भी बना रहा, और गिलबर्ट को लिखे उन परस्पर विरोधी पत्रों में व्यक्त हुआ जिन्हें मैंने लिखना शुरू किया था।

मैं उन कठिन संकटों में से एक से गुज़रने वाला था जिनका सामना हमें आम तौर पर जीवन के विभिन्न चरणों में करना पड़ता है, और यद्यपि हमारे चरित्र, हमारी प्रकृति (वह प्रकृति जो हमारे प्रेम को जन्म देती है, और लगभग उन महिलाओं को भी जन्म देती है जिनसे हम प्रेम करते हैं, उनकी कमियों सहित) में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर भी हम हर बार, यानी हर उम्र में, इसका सामना एक ही तरीके से नहीं करते हैं। ऐसे क्षणों में हमारा जीवन विभाजित हो जाता है, मानो तराजू के दो संतुलित पलड़ों में बँट जाता है, जिनमें सब कुछ समाहित होता है। एक पलड़े में हमारी यह इच्छा होती है कि हम उस प्राणी को नाराज़ न करें, उसके प्रति अत्यधिक विनम्र न दिखें जिससे हम प्रेम करते हैं, जबकि हम उसे समझ नहीं पाते हैं, लेकिन कभी-कभी हम उसे लगभग अनदेखा करना अधिक सुविधाजनक पाते हैं, ताकि उसे अपनी अपरिहार्यता का वह अहसास न हो जो उसे हमसे दूर कर दे; दूसरे पैमाने पर एक पीड़ा का अहसास होता है—और यह पीड़ा केवल एक जगह तक सीमित या आंशिक नहीं होती —जिसे तब तक शांत नहीं किया जा सकता जब तक हम स्त्री को प्रसन्न करने और उसे यह विश्वास दिलाने का विचार त्यागकर कि हम उसके

बिना भी काम चला सकते हैं, तुरंत उससे मिलने न चले जाएं। जब हम उस बर्तन से, जिसमें हमारा अहंकार समाया है, अपनी उस इच्छाशक्ति का एक छोटा सा अंश निकाल लेते हैं जिसे हमने बढ़ती उम्र के साथ कमजोर होकर समाप्त होने दिया है, जब हम उस बर्तन में, जिसमें हमारा अहंकार समाया है, उस शारीरिक पीड़ा को मिला देते हैं जिसे हमने अर्जित किया है और बढ़ने दिया है, तब, उस साहसी समाधान के बजाय जो इक्कीस वर्ष की आयु में हमें सफलता दिला सकता था, पचास वर्ष की आयु में दूसरा, अत्यधिक भारी और असंतुलित समाधान ही हमें कुचल देता है। यह और भी अधिक इसलिए है क्योंकि परिस्थितियाँ, स्वयं को दोहराते हुए भी, बदलती रहती हैं, और पूरी संभावना है कि मध्य जीवन या वृद्धावस्था में, हमें उस आदत के दखल से अपने प्रेम को जटिल बनाने की कड़वी संतुष्टि प्राप्त होगी जिसे किशोरावस्था, अन्य मांगों से दबी हुई, स्वयं पर कम नियंत्रण होने के कारण, कभी नहीं जान पाती।

मैंने अभी-अभी गिलबर्ट को एक पत्र लिखा था जिसमें मैंने अपने क्रोध के बवंडर को फूटने दिया, लेकिन साथ ही साथ कुछ शब्दों का सहारा भी लिया जो मानो पन्ने पर अनायास ही आ गए हों, ताकि शायद मेरी सहेली सुलह कर ले; एक क्षण बाद, हवा का रुख बदल गया और मैंने उसे प्रेम से भरे वाक्य लिखे, कुछ उदास भावों की मिठास के लिए चुने हुए, वे "कभी नहीं" जो लिखने वालों को इतने मार्मिक लगते हैं, और उसे पढ़ने वाले के लिए इतने थकाऊ, चाहे वह उन्हें झूठा समझे और 'कभी नहीं' का अर्थ 'आज शाम, अगर तुम मुझे चाहो' समझे, या उन्हें सच समझे और इस तरह उसे उन अंतिम भेदों में से एक की खबर सुनाए जो हमारे जीवन में बहुत कम फर्क डालते हैं जब दूसरा व्यक्ति वह होता है जिससे हम प्यार नहीं करते। लेकिन चूंकि प्रेम में रहते हुए हम उन लोगों के लिए उचित पूर्ववर्ती बनने में असमर्थ होते हैं, जो हमारे जैसे बन जाएंगे और जो

तब प्रेम में नहीं रहेंगे, तो हम उस स्त्री की वास्तविक मनस्थिति की कल्पना कैसे कर सकते हैं, जिसे हम जानते हुए भी कि हम उसके लिए कोई मायने नहीं रखते, अपने विचारों में लगातार यह कल्पना करते रहते हैं कि वह हमें सुखद सपने में सुलाने या किसी गहरे दुख में सांत्वना देने के लिए वही बातें कह रही है जो वह हमसे प्रेम करने पर कहती। जब हम अपनी प्रिय स्त्री के विचारों और कार्यों का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं, तो हम उतने ही असमंजस में पड़ जाते हैं जितना कि प्रकृति के रहस्यों का सामना करते हुए, दुनिया के प्रथम प्रकृतिवादी दार्शनिक, अपने विज्ञान के विकसित होने और अज्ञात पर प्रकाश डालने से पहले, असमंजस में रहे होंगे। या, इससे भी बदतर, हम उस व्यक्ति की तरह हैं जिसके मन में कारण-कार्य का नियम लगभग न के बराबर है, एक ऐसा व्यक्ति जो एक घटना को दूसरी से जोड़ने में असमर्थ है, जिसकी आँखों को संसार का दृश्य एक सपने की तरह अस्थिर प्रतीत होता है। बेशक मैंने इस असंगति से बाहर निकलने और चीजों के कारण खोजने का प्रयास किया। मैंने 'वस्तुनिष्ठ' होने का भी प्रयास किया और इसके लिए मैंने गिलबर्ट के महत्व और न केवल उसके लिए मेरे, बल्कि अन्य लोगों के लिए उसके खुद के महत्व के बीच मौजूद असंतुलन को अच्छी तरह से ध्यान में रखा, एक ऐसा असंतुलन जिसे यदि मैंने अनदेखा किया होता, तो मैं अपने मित्र की मात्र मित्रता को एक भावुक अभिस्वीकृति समझ लेता और अपने आप को एक सुंदर चेहरे की ओर आकर्षित होने वाली सरल और सुंदर भावना समझ लेता। लेकिन मुझे इस बात का भी डर था कि कहीं मैं इसके विपरीत गलती न कर बैठूँ, जिसमें मैं गिलबर्ट की नियुक्ति में देरी को एक अपूरणीय शत्रुता समझ लूँ। मैंने इन दो दृष्टिकोणों के बीच, जो समान रूप से विकृत थे, एक तीसरा दृष्टिकोण खोजने की कोशिश की जो मुझे चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में

देखने में सक्षम बनाए; इस उद्देश्य से मुझे जो गणनाएँ करनी पड़ीं, उनसे मेरा ध्यान मेरे कष्टों से हट गया; और चाहे गणित के नियमों का पालन करते हुए या इसलिए कि मैंने उनसे मनचाहा उत्तर प्राप्त कर लिया था, मैंने मन बना लिया कि अगले दिन मैं स्वान्स के घर जाऊँगा, खुश होकर, लेकिन उसी तरह खुश होकर जैसे वे लोग जो लंबे समय से उस यात्रा के विचार से व्याकुल हैं जिसे वे करना नहीं चाहते, स्टेशन तक ही जाते हैं और अपने बक्से खोलने के लिए घर लौट आते हैं। और चूंकि, जब कोई हिचकिचा रहा होता है, तो संभावित समाधान का विचार (जब तक कि कोई यह तय करके उस विचार को निष्फल न कर दे कि वह कोई समाधान नहीं निकालेगा) जमीन में बीज की तरह विकसित होता है, उस क्रिया के निष्पादन से उत्पन्न होने वाली भावनाओं की रूपरेखा, हर विवरण, इसलिए मैंने खुद से कहा कि गिलबर्ट से दोबारा न मिलने के सुझाव से इतना आहत होना मेरे लिए सरासर बेवकूफी थी, मानो मैं सचमुच उस सुझाव को अमल में लाने वाला था, और चूंकि, इसके विपरीत, मुझे अंत में उसके पास लौटना था, तो मैं उन सभी व्यर्थ इच्छाओं और पीड़ादायक स्वीकारोक्तियों के खर्च से खुद को बचा सकता था। लेकिन मैत्रीपूर्ण संबंधों की यह बहाली केवल स्वान्स के घर पहुंचने तक ही चली; इसलिए नहीं कि उनके बटलर, जो वास्तव में मुझे पसंद करते थे, ने मुझे बताया कि गिलबर्ट बाहर गई है (एक बयान जिसकी सच्चाई की पुष्टि उसी शाम उन लोगों ने की जिन्होंने उसे कहीं देखा था), बल्कि इसलिए कि उन्होंने यह बात किस लहजे में कही। "महोदय, युवती घर पर नहीं हैं; मैं आपको विश्वास दिला सकती हूँ, महोदय, कि मैं सच कह रही हूँ। यदि आप कोई पूछताछ करना चाहें तो मैं युवती की नौकरानी को बुला सकती हूँ। आप भली-भांति जानते हैं, महोदय, कि मैं आपकी सहायता के लिए अपनी पूरी कोशिश करूँगी, और यदि युवती घर पर

होती तो मैं आपको तुरंत उसके पास ले जाती।" ये शब्द, जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं, अर्थात् सहज हैं, ऐसे शब्द जो हमें एक रेडियोग्राफ की तरह दिखाते हैं, कम से कम उस अकल्पनीय वास्तविकता के मुख्य बिंदुओं को, जो एक तैयार भाषण के नीचे पूरी तरह से छिपी होती, यह साबित करते हैं कि गिलबर्ट के घर में यह धारणा थी कि मैं अपने आने-जाने से उसे परेशान करती हूँ; और इसलिए, उस व्यक्ति के बोलते ही मेरे मन में उसके प्रति घृणा उत्पन्न हो गई, जिसका शिकार मैं गिलबर्ट के बजाय उसे बनाना चाहती थी; उसने मेरे मित्र के प्रति मेरे मन में मौजूद सभी क्रोधपूर्ण भावनाओं को अपने ऊपर ले लिया; इन उलझनों से मुक्त होकर, उसके शब्दों के कारण, मेरा प्रेम ही शेष रह गया; लेकिन उनके शब्दों ने मुझे यह भी दिखाया कि मुझे फिलहाल गिलबर्ट से मिलने की कोशिश बंद कर देनी चाहिए। वह मुझे ज़रूर पत्र लिखकर माफ़ी मांगेगी। इसके बावजूद, मुझे उससे मिलने तुरंत नहीं लौटना चाहिए, ताकि मैं उसे यह साबित कर सकूँ कि मैं उसके बिना रह सकता हूँ। इसके अलावा, एक बार उसका पत्र मिल जाने के बाद, गिलबर्ट की संगति के बिना मैं कुछ समय के लिए आसानी से रह सकता था, क्योंकि मुझे पूरा भरोसा था कि जब भी मैं चाहूँ, वह मुझसे मिलने के लिए तैयार रहेगी। स्वेच्छा से अलग होने के बोझ को कम पीड़ादायक ढंग से सहने के लिए मुझे बस इतना ही चाहिए था कि मेरा दिल उस भयानक अनिश्चितता से मुक्त हो जाए कि क्या हम हमेशा के लिए अलग हो गए हैं, क्या उसने किसी और से शादी का वादा कर लिया है, पेरिस छोड़ दिया है, या उसे जबरदस्ती ले जाया गया है। अगले दिन उस पुराने नए साल के पहले सप्ताह जैसे थे जो मुझे गिलबर्ट के बिना अकेले बिताना पड़ा था। लेकिन जब वह सप्ताह धीरे-धीरे समाप्त हुआ, तो एक तो मेरी सहेली फिर से शैंप्स-एलिसी आ रही थी, मैं उससे पहले की तरह मिलूंगी; मुझे इस बात का पूरा यकीन था; दूसरी बात, मुझे

यह भी उतना ही यकीन था कि जब तक नए साल की छुट्टियां रहेंगी, शैंप्स-एलिसी जाना मेरे लिए व्यर्थ होगा, जिसका मतलब यह था कि उस दुखद सप्ताह के दौरान, जो अब बीती बात हो चुकी थी, मैंने अपने दुख को शांत मन से सहन किया था क्योंकि उसमें न तो डर था और न ही आशा। अब, दूसरी ओर, यही आशा, मेरे भविष्य के डर के साथ-साथ, मेरे दुःख के बोझ को असहनीय बना रही थी। उस शाम गिलबर्ट से कोई पत्र न मिलने पर, मैंने इसे उसकी लापरवाही, उसके अन्य कामों में व्यस्तता मान लिया था, मुझे पूरा विश्वास था कि सुबह की डाक में मुझे उससे कुछ न कुछ जरूर मिलेगा। मैं हर दिन धड़कते दिल से इसका इंतज़ार करती थी, जो तब शांत हो जाता था जब मुझे गिलबर्ट के अलावा किसी और के पत्र मिलते थे, या फिर कुछ भी नहीं मिलता था, जो कि कोई बुरी बात नहीं थी, क्योंकि किसी और की दोस्ती के सबूत उसकी बेरुखी को और भी ज़्यादा दर्दनाक बना देते थे। मैंने अपनी उम्मीदें दोपहर की डाक पर टिका दीं। यहाँ तक कि चिट्ठियों के आने-जाने के बीच भी मैं घर से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करती थी, क्योंकि हो सकता है वह किसी संदेशवाहक के ज़रिए अपनी चिट्ठी भेज रही हो। फिर, आखिरकार वह समय आ गया जब न तो डाकिया और न ही स्वान्स के घर का कोई नौकर उस रात आ सकता था, तो मुझे चैन की उम्मीद को टालना पड़ा, और इस तरह, क्योंकि मुझे विश्वास था कि मेरे दुख हमेशा के लिए नहीं हैं, मैं उन्हें बार-बार दोहराने के लिए मजबूर थी। मेरी निराशा शायद वैसी ही थी, लेकिन पुराने दिनों की तरह एक ही भावना को लगातार बनाए रखने के बजाय, यह दिन में कई बार फिर से शुरू होती थी, हर बार एक ऐसी भावना के साथ जो इतनी बार नवगठित होती थी कि अंत में—यह विशुद्ध रूप से शारीरिक, इतनी क्षणिक अवस्था—स्थिर हो जाती थी, इतनी निरंतर कि प्रतीक्षा का तनाव कम होने से पहले ही प्रतीक्षा का एक

नया कारण सामने आ जाता था, दिन में एक भी मिनट ऐसा नहीं होता था जिसमें मैं उस चिंता की अवस्था में न रहूँ जिसे एक घंटे के लिए भी सहन करना मुश्किल होता है। इसलिए मेरी सजा उन पुराने नव वर्ष की छुट्टियों की तुलना में कहीं अधिक क्रूर थी, क्योंकि इस बार मेरे भीतर उस सजा को सीधे-सादे ढंग से स्वीकार करने के बजाय, हर पल उसके अंत की आशा थी। और फिर भी अंततः मैं इसी स्वीकृति की अवस्था तक पहुँच गया; तब मुझे समझ आया कि यह अंतिम होना ही है, और मैंने अपने प्रेम के हित में और सबसे बढ़कर इस आशा में कि वह मेरे प्रति कोई तिरस्कारपूर्ण स्मृति न रखे, गिलबर्ट को हमेशा के लिए त्याग दिया। दरअसल, उस पल से, ताकि उसे मेरे प्रति किसी प्रकार की प्रेम-भरी द्वेष भावना न हो, जब भी वह मुझसे मिलने का समय तय करती, मैं अक्सर उसे स्वीकार कर लेता और फिर अंतिम क्षण में उसे लिखता कि मैं नहीं आ पाऊंगा, लेकिन उसी निराशा भरे लहजे के साथ, जैसा मैं किसी ऐसे व्यक्ति से कहता जिससे मैं मिलना नहीं चाहता था। मुझे लगता था कि खेद के ये भाव, जो हम आम तौर पर उन लोगों के लिए रखते हैं जो हमारे लिए मायने नहीं रखते, गिलबर्ट को मेरी उदासीनता के बारे में समझाने में उस उदासीनता से कहीं अधिक कारगर होंगे जो हम केवल अपने प्रियजनों के प्रति अपनाते हैं। जब मैं मात्र शब्दों से बेहतर, बार-बार किए जाने वाले कार्यों से, उसे यह साबित कर देता कि मुझे उससे मिलने की कोई इच्छा नहीं है, तो शायद वह मुझसे फिर से मिलने की इच्छा प्रकट करती। अफसोस! मेरी असफलता निश्चित थी; उससे मिलना बंद करके, उसमें मुझसे मिलने की इच्छा को फिर से जगाने का प्रयास करना, उसे हमेशा के लिए खो देने जैसा था। सबसे पहले तो इसलिए कि जब यह भावना फिर से जागृत होने लगी, और अगर मैं इसे कायम रखना चाहता था, तो मुझे इसके आगे तुरंत हार नहीं माननी थी; इसके अलावा, तब तक सबसे

कष्टदायक क्षण बीत चुके होते; यही वह क्षण था जब वह मेरे लिए अपरिहार्य थी, और मैं उसे यह चेतावनी देना चाहता था कि मुझे फिर से देखकर उसे जिस पीड़ा को शांत करना होगा, वह इतनी कम हो चुकी होगी कि अब वह वैसी नहीं रहेगी (जैसी कुछ क्षण पहले थी), और न ही इसे समाप्त करने का विचार, न ही समर्पण, सुलह, या आगे की मुलाकातों का कोई कारण। और फिर, बाद में, जब मैं अंततः गिलबर्ट के सामने (उसके लिए मेरी चाहत इतनी प्रबल हो चुकी होगी) अपनी चाहत को सुरक्षित रूप से स्वीकार कर पाऊंगा, तब तक गिलबर्ट, इतने लंबे अलगाव के तनाव को सहन न कर पाने के कारण, अस्तित्वहीन हो चुकी होगी; गिलबर्ट मेरे लिए महत्वहीन हो चुकी होगी। मैं यह जानता था, लेकिन मैं उसे समझा नहीं सका; वह मान लेती कि अगर मैं यह दिखावा कर रहा था कि अगर मैं उससे बहुत देर तक नहीं मिला तो मैं उससे प्यार करना छोड़ दूंगा, तो यह सिर्फ इसलिए था ताकि वह मुझे तुरंत वापस बुला ले। इस बीच, मेरे लिए इस अलगाव को स्वीकार करना इसलिए आसान हो गया क्योंकि (उसे यह स्पष्ट करने के लिए कि मेरे विरोध के बावजूद, यह मेरी अपनी इच्छा थी, न कि कोई मजबूरी या मेरी खराब सेहत, जिसके कारण मैं उससे नहीं मिल पा रहा था), जब भी मुझे पहले से पता होता कि गिल्बर्ट घर पर नहीं होगी, किसी दोस्त के साथ बाहर जा रही होगी और रात के खाने पर घर नहीं आएगी, तो मैं श्रीमती स्वान से मिलने जाता था, जो मेरे लिए एक बार फिर वही बन गई थीं, जो उस समय थीं जब मुझे उनकी बेटी से मिलने में बहुत कठिनाई होती थी और (जिन दिनों उनकी बेटी चैंप्स-एलिसी नहीं आती थी) मैं एले डेस अकेशिया जाया करता था। इस तरह मुझे गिलबर्ट के बारे में पता चलता रहता, और मुझे पूरा यकीन था कि समय आने पर उसे भी मेरे बारे में पता चल जाएगा, और ऐसे शब्दों में पता चलेगा जिससे उसे यह समझ

आ जाएगा कि मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। और मैंने पाया, जैसा कि सभी पीड़ित पाते हैं, कि मेरी उदासी और भी बदतर हो सकती थी। गिलबर्ट के घर में किसी भी समय जाने की आज़ादी होने के कारण, मैं खुद को लगातार याद दिलाता रहता था, भले ही मैंने उस विशेषाधिकार का इस्तेमाल न करने का पक्का इरादा कर लिया था, कि अगर कभी मेरा दर्द बहुत बढ़ जाए तो उसे कम करने का एक तरीका है। मैं दुखी नहीं था, बस दिन-प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा दुखी रहता था। और यह भी एक अतिशयोक्ति है। एक घंटे में कितनी बार (लेकिन अब उस बेचैन उम्मीद के बिना जिसने हमारे झगड़े के बाद पहले कुछ हफ्तों में मेरी हर नस को तनाव में डाल दिया था, स्वान्स के घर वापस जाने से पहले) मैं खुद से उस पत्र के शब्दों को दोहराता रहता था जो गिलबर्ट ज़रूर भेजेगी, शायद खुद मेरे पास लाएगी भी। उस काल्पनिक खुशी की निरंतर कल्पना ने मुझे अपनी वास्तविक खुशी की निराशा को सहने में मदद की। जो महिलाएं हमसे प्रेम नहीं करतीं, ठीक वैसे ही जैसे 'लापता' लोगों के मामले में, यह ज्ञान कि अब कोई आशा नहीं बची है, हमें खबर का इंतजार करने से नहीं रोकता। हम हर पल बेचैनी में जीते हैं, जरा सी भी आवाज से चौंक जाते हैं; जिस माँ का बेटा किसी खतरनाक खोज यात्रा पर समुद्र में गया है, वह अपने बेटे की मृत्यु की पुष्टि हो जाने के बहुत समय बाद भी, हर पल उसे कल्पना में देखती है, मानो वह किसी चमत्कार से बचकर, स्वस्थ अवस्था में कमरे में लौट आया हो। और इंतजार का यह तनाव, उसकी स्मृति की शक्ति और शारीरिक अंगों की सहनशक्ति के अनुसार, या तो उसे वर्षों के इस सफर में मदद करता है, जिसके अंत में वह अपने बेटे के न रहने के ज्ञान को सहन कर पाएगी, धीरे-धीरे भूल पाएगी और उसके नुकसान से उबर पाएगी, या फिर यह उसे मार डालता है।

दूसरी ओर, मेरे दुःख को इस विचार से सांत्वना मिली कि मेरे प्रेम को इससे लाभ अवश्य होगा। गिलबर्ट से मिले बिना श्रीमती स्वान से मिलने का मेरा हर दौरा एक क्रूर दंड था, लेकिन मुझे लगता था कि इससे गिलबर्ट के मन में मेरे प्रति धारणा और भी मजबूत होती जा रही थी।

इसके अलावा, अगर मैं श्रीमती स्वान से मिलने जाने से पहले हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि उनकी बेटी के आने का कोई खतरा न हो, तो यह बात सच है कि मेरे उनसे संबंध तोड़ने के दृढ़ निश्चय से उपजी थी, लेकिन शायद सुलह की उस आशा से भी कम नहीं थी जो उन्हें त्यागने के मेरे इरादे पर हावी थी (हमारे इस मानवीय मन में ऐसे इरादे बहुत कम ही पूर्ण होते हैं, कम से कम निरंतर रूप में तो नहीं, जिसका एक नियम, स्मृति द्वारा प्रदान किए जाने वाले अप्रत्याशित उदाहरणों की प्रचुरता से पुष्ट होता है, अनिश्चितता है), और जिसने मुझसे उस सब को छिपा दिया जो उसमें असहनीय रूप से क्रूर था। जहाँ तक उस आशा की बात है, मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि वह कितनी हद तक काल्पनिक थी। मैं उस कंगाल की तरह था जो अपने सूखे भूसे को कम आँसुओं से भीगता है अगर उसे यह आश्वासन हो कि किसी भी क्षण कोई अजनबी उसे अपनी सारी संपत्ति दे देगा। हम सभी को, यदि वास्तविकता को सहनीय बनाना है, तो अपने भीतर कुछ छोटी-मोटी मूर्खताओं को पालना अनिवार्य है। अब मेरी उम्मीद कुछ हद तक बरकरार थी—और साथ ही हमारा अलगाव और भी गहरा होता—अगर मैं गिलबर्ट से न मिलता। अगर मैं उसकी माँ के ड्राइंग रूम में उससे आमने-सामने होता, तो शायद हम कुछ ऐसे शब्द कह देते जो हमारे बीच की दूरी को हमेशा के लिए खत्म कर देते, मेरी उम्मीद को तोड़ देते और दूसरी तरफ, एक नई चिंता पैदा करके मेरे प्यार को फिर से जगा देते और इस बात को स्वीकार करना और भी कठिन बना देते।

बहुत समय पहले, जब मैंने उनकी बेटी से रिश्ता तोड़ने के बारे में सोचा

भी नहीं था, श्रीमती स्वान ने मुझसे कहा था: "तुम्हारा गिल्बर्ट से मिलने आना बहुत अच्छी बात है; मैं चाहूँगी कि तुम कभी-कभी मेरे लिए आओ, मेरे 'बर्तन ढोल' के लिए नहीं, जो तुम्हें भीड़ के कारण बोर कर देगा, बल्कि बाकी दिनों में, जब तुम देर से आओगे तो मैं हमेशा घर पर ही मिलूँगी।" ताकि जब मैं उनसे मिलने जाऊँ, तो ऐसा लगे कि मैं उनकी उस इच्छा के आगे झुक रहा हूँ जिसे उन्होंने पहले ज़ाहिर किया था और लंबे समय तक विरोध किया था। और दोपहर बहुत देर से, जब पूरी तरह अंधेरा हो जाता था, लगभग उस समय जब मेरे माता-पिता खाना खाने बैठते थे, मैं श्रीमती स्वान से मिलने निकल पड़ता था, और मुझे पता था कि इस दौरान मैं गिल्बर्ट को नहीं देख पाऊँगा, फिर भी मैं सिर्फ उन्हीं के बारे में सोचता रहूँगा। उस इलाके में, जिसे तब पेरिस का एक दूरस्थ हिस्सा माना जाता था, जो आज के पेरिस से कहीं अधिक अंधकारमय था, जहाँ केंद्र में भी सार्वजनिक सड़कों पर बिजली नहीं थी और निजी घरों में भी नाममात्र की रोशनी थी, वहाँ भूतल पर स्थित या उससे थोड़ा ऊपर बने ड्राइंग रूम के लैंप (जैसे कि वे कमरे जहाँ श्रीमती स्वान आमतौर पर अपने आगंतुकों से मिलती थीं) सड़क को रोशन करने के लिए पर्याप्त थे, और राहगीर को अपनी नज़रें ऊपर उठाने के लिए मजबूर कर देते थे, क्योंकि उनकी रोशनी के साथ-साथ, इसके स्पष्ट लेकिन छिपे हुए कारण से, दरवाजे के बाहर खड़ी शानदार गाड़ियों की कतार दिखाई देती थी। राहगीर को कुछ भावनाओं के साथ यह विश्वास हुआ कि इस रहस्यमय कारण में कुछ बदलाव आया है, जब उसने एक गाड़ी को चलते हुए देखा; लेकिन यह केवल एक कोचवान था, जो अपने घोड़ों को सर्दी लगने के डर से उन्हें बार-बार तेज गति से चला रहा था, जो और भी प्रभावशाली इसलिए था क्योंकि रबर के टायरों वाले पहियों ने उनके खुरों की आवाज़ को एक खामोशी की पृष्ठभूमि में छिपा दिया था जिससे वह

और भी स्पष्ट और साफ सुनाई दे रही थी।

उन दिनों राहगीरों को अक्सर किसी भी गली में "शीतकालीन उद्यान" की झलक मिल जाती थी, बशर्ते कि उनका ड्राइंग रूम फुटपाथ से बहुत ऊपर न हो। लेकिन आज यह उद्यान केवल पी. जे. स्टाल की उपहार पुस्तकों में छपी तस्वीरों में ही देखने को मिलता है। आजकल प्रचलित लुई सोलहवीं शैली के ड्राइंग रूम की सीमित पुष्प सजावट के विपरीत—जैसे कि क्रिस्टल के लंबे गले वाले फूलदान में एक अकेला गुलाब या जापानी आइरिस, जिसमें दूसरा रखना असंभव हो—ऐसा लगता है कि उस समय लोगों के पास मौजूद ढेरों इनडोर पौधों और उनकी व्यवस्था में शैली के पूर्ण अभाव के कारण, ऐसा लगता है कि जिन महिलाओं के घरों को यह सुशोभित करता था, उनमें वनस्पति विज्ञान के प्रति किसी जीवंत और आनंददायक जुनून रहा होगा, न कि निर्जीव सजावट के प्रति किसी उदासीन चिंता का। इससे उन दिनों के घरों में बड़े पैमाने पर बने उन छोटे-छोटे, पोर्टेबल ग्रीनहाउस की याद आती है, जिन्हें नए साल की सुबह जलते हुए दीपक के नीचे सजाया जाता था—क्योंकि बच्चे हमेशा उजाले का इंतजार करने के लिए बहुत अधीर होते थे—नए साल के अन्य सभी उपहारों में से सबसे प्यारा, जिसमें असली पौधे होते थे जिनकी देखभाल करके वे सर्दियों की बंजर मिट्टी को सुकून देते थे; और उन छोटे ग्रीनहाउस से भी कहीं अधिक, वे शीतकालीन उद्यान उस ग्रीनहाउस की तरह थे जिसे बच्चे उसी समय एक मनमोहक पुस्तक में देख सकते थे, जो उनके उपहारों में से एक थी, और जो यद्यपि उन्हें नहीं बल्कि कहानी की नायिका, श्रीमती लिली को दी गई थी, फिर भी उन्हें इस कदर मोहित कर देती थी कि आज भी, जब वे लगभग बूढ़े हो चुके हैं, वे खुद से पूछते हैं कि क्या उन सौभाग्यशाली वर्षों में, सर्दी सबसे प्यारी ऋतु नहीं थी। और अंदर, शीतकालीन उद्यान के पार, सड़क से दिखाई देने वाली तरह-तरह

की झाड़ियों के बीच से, रोशन खिड़की बच्चों के खिलौनों के काँच के सामने वाले हिस्से जैसी दिखती थी, चाहे वो चित्र हो या असली। राहगीर अपने पंजों पर खड़े होकर अक्सर एक आदमी को फ्रॉक कोट पहने, बटनहोल में गार्डेनिया या कार्नेशन लगाए, एक बैठी हुई महिला के सामने खड़ा देखता था। दोनों धुंधले से दिखाई देते थे, मानो पुखराज में खुदी हुई दो नक्काशी हों। ड्राइंग रूम के गहरे वातावरण में, जहाँ समोवर (जो उस समय नया आयात था) से भाप निकल रही होती थी, और अगर निकल भी रही हो, तो अब हम इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि कोई उस पर ध्यान नहीं देता। श्रीमती स्वान अपनी 'चाय' को बहुत महत्व देती थीं; उनका मानना था कि जब वह किसी पुरुष से कहती थीं, "आप मुझे किसी भी दिन देर रात घर पर पाएँगे; चाय पर आइए!", तो इससे उनकी मौलिकता और आकर्षण झलकता था। इसलिए उसने अपने शब्दों के साथ एक प्यारी और कोमल मुस्कान बिखेरी, जिनमें अंग्रेजी लहजे की हल्की सी झलक थी। उसके श्रोता ने इसे ध्यान से सुना और सम्मानपूर्वक झुककर स्वीकार किया, मानो निमंत्रण कोई महत्वपूर्ण और असाधारण बात हो, जिसके लिए आदर और ध्यान देना आवश्यक हो। श्रीमती स्वान के ड्राइंग रूम में फूलों का महत्व केवल सजावट से कहीं अधिक था, इसके अलावा एक और कारण भी था, और यह कारण काल से नहीं, बल्कि कुछ हद तक ओडेट के पूर्व जीवन से संबंधित था। एक महान वेश्या, जैसी वह रही थी, अपने प्रेमियों के लिए ही जीती है, यानी घर के लिए, जिसका अर्थ है कि समय के साथ वह अपने घर के लिए जीने लगती है। एक 'सम्मानित' महिला के घर में जो चीजें दिखाई देती हैं, जो बेशक उसके लिए भी महत्वपूर्ण हो सकती हैं, वे वेश्या के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। उसके दिन का सबसे महत्वपूर्ण क्षण वह नहीं होता जब वह सबके सामने सजती-संवरती है, बल्कि वह होता है जब वह किसी पुरुष के लिए

अपने कपड़े उतारती है। वह अपने लबादे और नाइटगाउन में उतनी ही सजग होनी चाहिए जितनी कि अपने बाहरी परिधानों में। अन्य महिलाएं अपने गहने दिखाती हैं, लेकिन वह अपने मोतियों की अंतरंगता में जीती है। इस प्रकार का जीवन उसके लिए एक दायित्व बन जाता है और अंततः उसे विलासिता के प्रति एक गुप्त, यानी लगभग उदासीन लगाव पैदा कर देता है। श्रीमती स्वान ने इसे अपने फूलों तक विस्तारित किया। उनकी कुर्सी के बगल में हमेशा एक विशाल क्रिस्टल का कटोरा होता था जो पर्मा वायलेट से लबालब भरा होता था या पानी पर बिखरी लंबी सफेद डेज़ी की पंखुड़ियाँ होती थीं, जो आने वाले मेहमान की नज़र में किसी पसंदीदा और अधूरे काम की गवाही देती प्रतीत होती थीं, जैसे कि चाय का प्याला जिसे श्रीमती स्वान अपने मनोरंजन के लिए अकेले ही पी रही होती थीं; एक ऐसा अंतरंग और रहस्यमय कार्य, इतना कि ओडेट के बगल में रखे फूलों को देखकर मानो क्षमा मांगने का मन करता था, ठीक वैसे ही जैसे खुली किताब का शीर्षक देखकर क्षमा मांगते, जिससे पता चल जाता कि ओडेट ने अभी-अभी क्या पढ़ा है—और शायद उसके मन में क्या चल रहा है। और किताब के विपरीत, फूल सजीव थे; जब कोई श्रीमती स्वान से मिलने कमरे में जाता, तो यह देखकर झुंझलाहट होती कि वह अकेली नहीं हैं, या यदि कोई उनके साथ घर लौटता, तो कमरा खाली न मिले। उस कमरे में इतना महत्वपूर्ण स्थान, रहस्यमय और उनकी मालकिन के जीवन के उन क्षणों से अंतरंग रूप से जुड़ा हुआ, जिनके बारे में कुछ भी पता नहीं था, उन फूलों ने धारण कर लिया था, जिन्हें ओडेट के आगंतुकों के लिए तैयार नहीं किया गया था, बल्कि मानो वह उन्हें वहीं भूल गई थीं। इन फूलों ने उनके साथ उन निजी बातचीत को संजो रखा था और आगे भी संजो कर रखेंगे, जिन्हें छेड़ने से डर लगता था। उस रहस्य को पढ़ने की व्यर्थ कोशिश की जाती थी, नम बैंगनी रंग पर, परमा

वायलेट के अभी भी तरल पानी जैसे रंग पर अपनी निगाहें गड़ाए हुए। अक्टूबर के अंत तक ओडेट समय की पाबंदी के साथ चाय के लिए घर आने लगी थी, जिसे उस समय 'पांच बजे की चाय' कहा जाता था। उसने एक बार यह कहावत सुनी थी और उसे यह दोहराना पसंद था कि अगर श्रीमती वर्दुरिन एक सैलून चला पाईं, तो इसका कारण यह था कि लोग उन्हें हमेशा एक ही समय पर घर पर पाते थे। वह कल्पना करती थी कि उसका भी एक सैलून है, उसी तरह का, लेकिन अधिक स्वतंत्र, जैसा कि वह कहा करती थी, 'बिना किसी बंधन के'। वह खुद को एक तरह से लेस्पिनैस मानती थी और मानती थी कि उसने अपने छोटे समूह के डू डेफिएंट से अपने कुछ सबसे आकर्षक पुरुषों को लेकर एक प्रतिद्वंद्वी सैलून की स्थापना की है, विशेष रूप से स्वान को, जो उसके बाद उसके साथ उसके अलगाव और सेवानिवृत्ति में भी रहा था। - एक ऐसे संस्करण के अनुसार, जिसे समझा जा सकता है कि वह अपने हाल के मित्रों के बीच, जो बीते समय से अनभिज्ञ थे, साख हासिल करने में सफल रही थी, हालांकि वह खुद को आश्वस्त नहीं कर पाई थी। लेकिन कुछ पसंदीदा भूमिकाएँ हम जनता के सामने इतनी बार निभाते हैं और अकेले में इतनी सावधानी से उनका अभ्यास करते हैं कि हमें उनकी काल्पनिक गवाही का हवाला देना उस वास्तविकता की तुलना में कहीं अधिक आसान लगता है जिसे हम लगभग पूरी तरह से भूल चुके हैं। जिन दिनों श्रीमती स्वान घर से बाहर नहीं निकलती थीं, उन्हें अक्सर क्रेप-डी-चाइन के एक लबादे में देखा जाता था, जो सर्दियों की पहली बर्फ की तरह सफेद होता था, या शायद मूसलीन-डी-सोई के उन लंबे प्लीटेड कपड़ों में, जो सफेद या गुलाबी पंखुड़ियों की बौछार से अधिक कुछ नहीं लगते थे, और जिन्हें आज के समय में सर्दियों के लिए शायद ही उपयुक्त माना जाएगा, हालांकि यह पूरी तरह से गलत है। उन दिनों के घुटन भरे ड्राइंग रूमों की

गर्मी में, जिनके दरवाज़े भारी पर्दों से ढके होते थे और जिनके बारे में उस समय के समाज के उपन्यासकार बस इतना ही कह पाते थे कि वे "बेहद सुंदर गद्दीदार" हैं, उन महिलाओं को ये हल्के कपड़े और कोमल रंग वही शीतलता प्रदान करते थे जो उन गुलाबों को देते थे जो सर्दियों के बावजूद, अपनी नग्नता के दमकते रंग में, उनके बगल में कमरे में टिके रहते थे, मानो वसंत आ गया हो। कालीनों में हर तरह की आवाज़ दब जाने और अपने आरामदायक एकांत के कारण, घर की मालकिन, आज की तरह आपके प्रवेश से अनभिज्ञ होने के कारण, तब तक पढ़ती रहती थीं जब तक आप उनकी कुर्सी के सामने खड़े नहीं हो जाते थे, जिससे उस रोमांटिक भावना, उस गुप्त खोज के आकर्षण में और भी इजाफा होता था, जो हमें आज उन गाउनों की यादों में मिलता है, जो तब भी फैशन से बाहर हो चुके थे, जिन्हें श्रीमती... स्वान शायद अकेली ऐसी थीं जिन्होंने इन्हें नहीं त्यागा था, और इससे हमें यह आभास होता है कि इन्हें पहनने वाली महिला किसी उपन्यास की नायिका रही होगी क्योंकि हममें से अधिकांश ने हेनरी ग्रेविल की कुछ कहानियों के पन्नों के बाहर इन्हें शायद ही कभी देखा हो। उस समय, जब सर्दी शुरू हुई, ओडेट के ड्राइंग रूम में विशाल आकार और विभिन्न रंगों के गुलदाउदी के फूल थे, ऐसे फूल जो स्वान ने पुराने दिनों में रू ला पेरूज़ स्थित अपने ड्राइंग रूम में निश्चित रूप से कभी नहीं देखे थे। उनके प्रति मेरी प्रशंसा तब और बढ़ गई जब मैं श्रीमती ओडेट को श्रद्धांजलि देने गई। स्वान के साथ हुई वो उदास मुलाकातों में से एक, जिसके दौरान, मेरे दुख से प्रेरित होकर, मैंने उनमें उस गिलबर्ट की माँ के रूप में उनके चरित्र की सारी रहस्यमय कविता खोज निकाली, जिससे वो अगले दिन कहेंगी: "कल तुम्हारी दोस्त मुझसे मिलने आई थी," - निस्संदेह, यह मेरी इस भावना से उपजी थी कि, उनकी कुर्सियों को ढकने वाले लुई XIV रेशम की तरह गुलाबी, उनके

क्रेप-डी-चाइन रैपर की तरह बर्फ-सफेद, या उनके समोवर की तरह धातुई लाल रंग के, उन्होंने कमरे की सजावट पर एक और, पूरक सजावट योजना को आरोपित किया, जो अपने रंग में उतनी ही समृद्ध और नाजुक थी, लेकिन जो जीवंत थी और केवल कुछ दिनों तक ही टिकेगी। लेकिन मुझे यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि ये गुलदाउदी क्षणभंगुर से कहीं अधिक, लगभग स्थायी प्रतीत हो रही थीं, जब मैंने इनकी तुलना नवंबर की दोपहर की धुंध में डूबते सूरज के गुलाबी और तांबे जैसे रंगों से की, जो उस समय बहुत ही भव्यता से प्रदर्शित होते थे। घर में प्रवेश करने से पहले ही मैंने उन्हें आकाश से ओझल होते देखा, और फिर उन्हें घर के अंदर, फूलों के ज्वलंत रंगों पर प्रतिबिंबित होते हुए पाया। जैसे किसी महान रंगकर्मी ने वातावरण और सूर्य की क्षणभंगुरता से आग को पकड़ कर स्थिर कर दिया हो, ताकि वह किसी मानव निवास में प्रवेश कर उसे सुशोभित कर सके, वैसे ही इन गुलदाउदी ने मुझे अपने सभी दुखों को भुलाकर उस 'चाय के समय' नवंबर के क्षणिक आनंद का भरपूर स्वाद लेने के लिए आमंत्रित किया, जिसकी अंतरंग और रहस्यमय महिमा उन्होंने मेरे चारों ओर प्रज्वलित कर दी थी। अफसोस, जिन वार्तालापों को मुझे सुनना था, उनमें मुझे उस महिमा को प्राप्त करने की आशा नहीं थी; उनका उससे कोई लेना-देना नहीं था। यहाँ तक कि श्रीमती के साथ भी। कॉटार्ड के पास, और हालांकि काफी देर हो चुकी थी, श्रीमती स्वान ने अपने सबसे स्नेहपूर्ण अंदाज में कहा: "अरे नहीं, वास्तव में देर नहीं हुई है; आपको घड़ी नहीं देखनी चाहिए; यह सही समय नहीं है; यह रुक चुकी है; अब आपके पास करने के लिए और कुछ नहीं हो सकता, इतनी जल्दी में क्यों हैं?" यह कहते हुए उन्होंने प्रोफेसर की पत्नी को एक आखिरी टार्टलेट थमा दिया, जो भागने की तैयारी में अपना कार्ड-केस पकड़े हुए थी।

"इस घर से कोई खुद को अलग नहीं कर सकता!" श्रीमती बोंटेम्प्स ने श्रीमती स्वान से कहा, जबकि श्रीमती कॉटार्ड, अपने ही विचार को शब्दों में व्यक्त होते देखकर आश्चर्यचकित होकर बोलीं, "अरे, मैं भी तो हमेशा यही कहती हूँ, यही मैं अपने छोटे से न्यायाधीश से कहती हूँ, अंतरात्मा की अदालत में!" जॉकी क्लब के सज्जनों ने तालियाँ बजाकर उनका अभिवादन किया, जिन्होंने श्रीमती स्वान द्वारा इस साधारण और बिल्कुल भी आकर्षक न दिखने वाली महिला से परिचय कराए जाने पर मानो उन्हें इतना सम्मान मिलने पर आश्चर्यचकित कर दिया हो। ओडेट की प्रतिभाशाली सहेलियों के सामने वह हमेशा संयमित रहती थीं, या यूँ कहें कि खुद को 'रक्षात्मक' स्थिति में रखती थीं, क्योंकि वह साधारण से साधारण घटनाओं का वर्णन करने के लिए भी गरिमापूर्ण भाषा का प्रयोग करती थीं। "मुझे तो कभी शक भी नहीं हुआ था," श्रीमती स्वान ने टिप्पणी की, "लगातार तीन बुधवार से तुमने मुझे धोखा दिया है।" "यह बिलकुल सच है, ओडेट; सच में बहुत समय हो गया है, तुम्हें आखिरी बार देखे हुए तो मानो अनंत काल बीत गया हो। देखो, मैं अपनी गलती मानती हूँ; लेकिन मुझे तुम्हें बताना ही होगा," उसने थोड़ी शर्मिंदगी भरी आवाज़ में कहा, क्योंकि एक डॉक्टर की पत्नी होने के बावजूद वह गठिया या गुर्दे में ठंड लगने का ज़िक्र किए बिना बोलने की हिम्मत नहीं करती, "कि मुझे बहुत सारी छोटी-छोटी परेशानियाँ हुई हैं। जैसा कि हम सभी को होती हैं, मैं कह सकती हूँ। और इसके अलावा मेरे नौकरों के बीच भी एक संकट सा आ गया है। मुझे यकीन है कि मैं भी ज़्यादातर महिलाओं की तरह अपने अधिकार को लेकर उतनी ही अभिमानी हूँ; फिर भी मुझे, तुम्हें पता है, एक उदाहरण पेश करने के लिए, अपने वटेल को नोटिस देना पड़ा; मुझे लगता है कि वह वैसे भी ज़्यादा वेतन वाली नौकरी की तलाश में था। लेकिन उसके जाने से लगभग मेरा पूरा काम-काज ठप हो गया। मेरी

अपनी नौकरानी ने घर में एक पल भी रुकने से इनकार कर दिया; ओह, हमारे बीच कुछ बहुत ही नाटकीय दृश्य हुए। हालाँकि मैंने हर मुश्किल में डटकर सामना किया; पूरा यह घटना मेरे लिए एक बेहतरीन सबक साबित हुई है, जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगी, मैं आपको बता सकती हूं। मुझे डर है कि नौकरों के बारे में इन सब कहानियों से मैं आपको बोर कर रही हूं, लेकिन आप भी मेरी तरह जानते हैं कि घर का सामान व्यवस्थित करना कितना मुश्किल काम होता है।

“क्या हमें आपकी प्यारी बच्ची की कोई झलक नहीं मिलेगी?” उसने बात खत्म करते हुए कहा। “नहीं, मेरी प्यारी बच्ची एक दोस्त के साथ खाना खा रही है,” श्रीमती स्वान ने जवाब दिया, और फिर मेरी ओर मुड़कर बोलीं: “मुझे लगता है उसने आपको पत्र लिखा है, जिसमें उसने आपको कल उससे मिलने आने के लिए कहा है। और आपके बच्चे?” उसने श्रीमती कॉटार्ड से पूछा। मैंने राहत की सांस ली। श्रीमती स्वान के इन शब्दों ने मुझे यह साबित कर दिया कि मैं जब चाहूँ गिलबर्ट से मिल सकती हूँ, और मुझे वही सुकून दिया जिसकी मुझे तलाश थी, और जिसके कारण उस समय श्रीमती स्वान से मिलना मेरे लिए इतना ज़रूरी हो गया था। “नहीं, मुझे डर है कि नहीं; मैं उसे आज शाम पत्र लिखूँगी। गिलबर्ट और मैं अब एक-दूसरे से मिलते ही नहीं लगते,” मैंने आगे कहा, जैसे हमारे अलगाव का कारण कोई रहस्यमय शक्ति हो, जिससे मुझे प्यार में होने का और भ्रम हुआ, और गिलबर्ट के बारे में मेरे और उसके मेरे बारे में स्नेहपूर्ण तरीके से बात करने से भी यह भ्रम और मज़बूत हुआ। “आप जानती हैं, वह आपसे बहुत प्यार करती है,” श्रीमती स्वान ने कहा। "सच में, तुम कल नहीं आओगे?" अचानक मेरा दिल खुशी से झूम उठा; मेरे मन में यह ख्याल आया—"आखिर मैं क्यों न आऊं, आखिर उसकी मां ने ही तो यह सुझाव दिया है?" लेकिन इस विचार के साथ ही

मैं फिर से अपने पुराने अवसाद में डूब गया। मुझे डर था कि कहीं गिलबर्ट मुझे दोबारा देखकर यह न सोचे कि हाल ही में मेरी उदासीनता दिखावा थी, और शायद हमारे अलगाव को लंबा खींचना ही बेहतर होगा। इन बातों के दौरान श्रीमती बोंटेम्प्स राजनेताओं की पत्नियों की असहनीय नीरसता की शिकायत कर रही थीं, क्योंकि वह दिखावा कर रही थीं कि हर कोई या तो बहुत नीरस है या बहुत मूर्ख, और अपने पति के आधिकारिक पद पर अफ़सोस जता रही थीं। "क्या तुम्हारा मतलब है कि तुम पचास डॉक्टरों की पत्नियों से एक के बाद एक ऐसे ही हाथ मिला सकते हो?" उन्होंने श्रीमती कॉटार्ड से कहा, जो उनसे बिल्कुल अलग, हर किसी के लिए बेहद दयालु भाव रखती थीं और हर तरह से अपना कर्तव्य निभाने के लिए दृढ़ थीं। "अरे! आप तो कानून का पालन करने वाली महिला हैं! देखिए, मेरे मामले में, मंत्रालय में, क्या आप नहीं जानतीं, मुझे बस इसे जारी रखना पड़ता है, बिल्कुल। यह मेरे लिए बहुत ज़्यादा है, मैं आपको बता सकती हूँ; आप जानती हैं कि उन अधिकारियों की पत्नियाँ कैसी होती हैं, मैं बड़ी मुश्किल से खुद को उन पर जीभ निकालने से रोक पाती हूँ। और मेरी भतीजी अल्बर्टीन बिल्कुल मेरे जैसी है। आप यकीन नहीं करेंगी कि वह लड़की कितनी बेशर्म है। पिछले हफ्ते, मेरे 'दिन' पर, मेरे पास वित्त राज्य उप सचिव की पत्नी आई थीं, जिन्होंने हमसे कहा कि उन्हें खाना पकाने के बारे में कुछ भी नहीं पता। 'लेकिन ज़रूर, महोदया,' मेरी भतीजी ने अपनी सबसे प्यारी मुस्कान के साथ कहा, 'आपको तो इसके बारे में सब कुछ पता होना चाहिए, आखिर आपके पिता को कितने बर्तन धोने पड़ते थे।' "ओह, मुझे यह कहानी बहुत पसंद आई; मुझे लगता है यह बहुत ही शानदार है!" श्रीमती स्वान ने कहा। “लेकिन डॉक्टर से परामर्श के दिनों में आपको ‘घर’ पर ही रहना चाहिए, अपने फूलों, किताबों और सभी सुंदर चीज़ों के बीच,” उन्होंने श्रीमती कॉटार्ड से आग्रह

किया। “सीधे-सीधे! धड़ाम! सीधे मुँह पर; धड़ाम! मैं आपको बता सकती हूँ, उसने इस बारे में ज़रा भी संकोच नहीं किया! और उसने मुझसे इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, वह छोटी सी दुष्ट; वह बंदर की तरह चालाक है। आप भाग्यशाली हैं कि आप खुद पर काबू रख सकती हैं; मुझे उन लोगों से ईर्ष्या होती है जो अपने मन की बात छुपा सकते हैं।” “लेकिन मुझे ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है, श्रीमती बोंटेम्प्स, मुझे खुश करना इतना मुश्किल नहीं है,” श्रीमती कॉटार्ड ने धीरे से कहा। “एक बात तो यह है कि मैं इतनी विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति में नहीं हूँ,” उन्होंने अपनी बात जारी रखी, अपनी आवाज़ को थोड़ा ऊँचा करते हुए, जैसा कि उनकी आदत थी, मानो वह अपनी बात पर ज़ोर दे रही हों, जब भी वह बातचीत में उन कोमल शिष्टाचारों, उन कुशल चापलूसी का इस्तेमाल करती थीं जिनसे उन्हें प्रशंसा मिलती थी और उनके पति के करियर में मदद मिलती थी। और इसके अलावा, प्रोफेसर के लिए उपयोगी कोई भी काम करने में मुझे बहुत खुशी होगी।

"लेकिन, मेरी प्यारी, मायने यह नहीं रखता कि आप क्या करना चाहते हैं; मायने यह रखता है कि आप क्या कर सकते हैं! मुझे उम्मीद है कि आप घबरा नहीं रही होंगी। क्या आपको पता है, जब भी मैं युद्ध मंत्री की पत्नी को मुंह बनाते देखती हूं, तो मैं तुरंत उनकी नकल करने लगती हूं। मेरे जैसा स्वभाव होना वाकई भयानक बात है।"

"हाँ, बिलकुल," श्रीमती कॉटार्ड ने कहा, "मैंने लोगों को कहते सुना है कि उसे एक अजीब सी हरकत होती थी; मेरे पति एक ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो बहुत उच्च पद पर है, और जब सज्जन आपस में बातचीत करते हैं तो यह स्वाभाविक ही है..."

"और फिर, आपको पता है, रजिस्ट्री के प्रमुख के साथ भी बिल्कुल ऐसा ही है; वो कुबड़ा है। जब भी वो मुझसे मिलने आता है, कमरे में आए पाँच

मिनट भी नहीं हुए होते कि मेरी उंगलियाँ उसका कुबड़ा सहलाने के लिए खुजली करने लगती हैं। मेरे पति कहते हैं कि मैं उसकी नौकरी छीन लूँगी। अगर मैंने ऐसा कर दिया तो! मंत्रालय जाए भाड़ में! हाँ, मंत्रालय जाए भाड़ में! मैं इसे अपने नोटपैड पर आदर्श वाक्य के रूप में छपवाना चाहूँगी। मुझे पता है कि मैं आपको चौंका रही हूँ; आप बहुत ही सभ्य हैं, लेकिन मुझे कहना होगा कि मुझे कभी-कभार थोड़ी शरारत करने में बहुत मज़ा आता है। इसके बिना जीवन बहुत नीरस हो जाएगा।" और वो मंत्रालय के बारे में लगातार बात करती रही, मानो वो माउंट ओलंपस हो। बातचीत बदलने के लिए, श्रीमती स्वान ने श्रीमती कॉटार्ड की ओर मुड़कर कहा: "लेकिन आप आज बहुत स्मार्ट लग रही हैं। रेडफर्न फेकिट?"

"नहीं, तुम्हें पता है, मैं हमेशा रौथनिट्ज़ की ही तारीफ करती हूँ। वैसे भी, ये तो बस एक पुरानी चीज़ है जिसे मैंने ठीक करवाया है।" "बिल्कुल नहीं! ये तो बहुत ही आकर्षक है!"

"अंदाज़ा लगाओ कितना... नहीं, पहली संख्या बदल दो!"

"सच में! ये तो कुछ भी नहीं है; ये तो सबको पता है! कम से कम तीन गुना तो पता होना चाहिए था।" "देखो, इतिहास कैसे लिखा जाता है," डॉक्टर की पत्नी ने कहा। और श्रीमती स्वान द्वारा उपहार में दिए गए गले के रिबन की ओर इशारा करते हुए बोलीं: "देखो, ओडेट! क्या तुम इसे पहचानती हो?"

दो पर्दों के बीच से एक सिर बड़े ही सलीके से झाँका, मानो पार्टी में खलल न डालने का नाटक कर रहा हो; वह स्वान था। "ओडेट, प्रिंस डी'एग्रीजेंट मेरे साथ अध्ययन कक्ष में हैं। वे जानना चाहते हैं कि क्या वे आपसे मिल सकते हैं। मैं उन्हें क्या बताऊँ?" "मुझे बहुत खुशी होगी," ओडेट ने जवाब दिया, मन ही मन खुश होते हुए, लेकिन अपनी सहजता

को ज़रा भी नहीं खोते हुए, जो उसे हमेशा से, यहाँ तक कि अपने उपवास के दिनों में भी, संभ्रांत पुरुषों का स्वागत करने की आदत होने के कारण और भी आसानी से मिल जाती थी। स्वान संदेश देने के लिए चला गया और राजकुमार के साथ तुरंत लौट आएगा, जब तक कि इस बीच श्रीमती वर्दुरिन न आ जाएँ। ओडेट से शादी करते समय स्वान ने ज़ोर देकर कहा था कि वह उस छोटे से परिवार में आना-जाना बंद कर दे। (इस शर्त के लिए उनके पास कई अच्छे कारण थे, हालांकि अगर कोई कारण न भी होता, तो भी वे कृतघ्नता के उस नियम का पालन करते हुए इसे बना ही देते, जो कोई अपवाद नहीं मानता और यह साबित करता है कि हर 'बिचौलिया' या तो दूरदर्शिता से रहित होता है या फिर पूरी तरह से उदासीन होता है।) उन्होंने केवल इतना ही स्वीकार किया था कि ओडेट और श्रीमती वर्दुरिन साल में एक बार एक-दूसरे से मिल सकती हैं, और यह भी कुछ 'वफादारों' को अत्यधिक लगा, जो उस 'मालकिन' के अपमान से नाराज थे, जिसने इतने वर्षों तक ओडेट और यहां तक कि स्वान को भी अपने घर के लाड़ले बच्चों की तरह पाला था। क्योंकि यदि उस छोटे समूह में ऐसे झूठे साथी भी थे जो कुछ शामों को जानबूझकर अनुपस्थित रहते थे ताकि वे ओडेट का निमंत्रण गुप्त रूप से स्वीकार कर सकें, और पकड़े जाने पर यह बहाना बना सकें कि वे बर्गोट से मिलने के लिए उत्सुक थे (हालाँकि मालकिन ने उन्हें आश्वासन दिया था कि वह कभी स्वान्स के घर नहीं जाता था, और अगर जाता भी था, तो उसमें प्रतिभा का कोई अंश नहीं था—इसके बावजूद वह उसे 'आकर्षित' करने के लिए भरपूर प्रयास कर रही थी, जैसा कि वह अक्सर कहती थी), तो उस छोटे समूह में कुछ कट्टर समर्थक भी थे। और ये लोग, यद्यपि उन पारंपरिक शिष्टाचारों से अनभिज्ञ थे जो अक्सर लोगों को उस चरम रवैये से रोकते हैं जिसे कोई उन्हें किसी और को परेशान करने के लिए अपनाते

देखना चाहता था, फिर भी वे मैडम से यही चाहते थे। वेरदुरिन से उनकी बहुत इच्छा थी, लेकिन वे कभी भी ओडेट से सारे संबंध तोड़ने के लिए उन्हें मना नहीं पाए, और इस तरह ओडेट को इस बात की संतुष्टि से वंचित कर दिया कि वह व्यंग्यपूर्ण हंसी के साथ कह सके: "विभाजन के बाद से हम मालकिन के यहाँ बहुत कम जाते हैं। जब मेरे पति कुंवारे थे तब सब ठीक था, लेकिन शादी के बाद, आप जानते हैं, यह हमेशा इतना आसान नहीं होता... अगर आपको जानना ही है, तो श्री स्वान को बूढ़ी माँ वेरदुरिन बिल्कुल पसंद नहीं हैं, और उन्हें यह विचार भी पसंद नहीं आएगा कि मैं वहाँ नियमित रूप से जाऊँ, जैसा कि मैं पहले जाती थी। और मैं, एक कर्तव्यनिष्ठ पत्नी के रूप में, क्या आप नहीं समझते...?" स्वान अपनी पत्नी के साथ वहाँ उनकी वार्षिक शाम में जाते थे, लेकिन इस बात का ध्यान रखते थे कि जब श्रीमती वेरदुरिन मिलने आएँ तो वे कमरे में न हों। इसलिए, यदि 'मालकिन' ड्राइंग रूम में होतीं, तो प्रिंस डी'एग्रीजेंट अकेले ही अंदर जाते। अकेले ही, ओडेट उन्हें श्रीमती वेरदुरिन से मिलवाती थीं, जो चाहती थीं कि श्रीमती वेरदुरिन उन्हें अकेले ही मिलवाएँ। वेरदुरिन को अपने साधारण मेहमानों के नामों से अनभिज्ञ रखा जाना चाहिए, और इस प्रकार, कमरे में एक से अधिक अजनबी चेहरों को देखकर, वह यह मान सकती थी कि वह अभिजात वर्ग के उच्च वर्ग के साथ मेलजोल कर रही है। यह युक्ति इतनी सफल साबित हुई कि श्रीमती वेरदुरिन ने उस शाम अपने पति से गहरी अवमानना के साथ कहा: "उसके दोस्त कितने आकर्षक लोग हैं! मैं तो प्रतिक्रियावादी वर्ग के सभी उत्तम लोगों से मिली थी!" ओडेट श्रीमती वेरदुरिन के संबंध में एक विपरीत भ्रम में जी रही थी। ऐसा नहीं था कि बाद वाले का सैलून उस रूप में विकसित होना शुरू हुआ था जैसा कि हम एक दिन उसे बनते हुए देखेंगे। श्रीमती वेरदुरिन अभी उस अवस्था में नहीं पहुंची थीं जिसमें कोई अपनी बड़ी

पार्टियों को त्याग देता है, जहां हाल ही में प्राप्त कुछ प्रतिभाशाली लोग अत्यधिक भीड़ में खो जाते हैं, और तब तक प्रतीक्षा करना पसंद करता है जब तक कि दस योग्य लोगों की सृजनात्मक शक्ति, जिन्हें आकर्षित करने में वह सफल रही है, उन दस की संख्या को सत्तर गुना न बढ़ा दे। चूंकि ओडेट को अब ऐसा करने में देर नहीं लगने वाली थी, श्रीमती वेरदुरिन... वेरदुरिन ने सचमुच 'समाज' को अपना अंतिम लक्ष्य बनाने का विचार रखा था, लेकिन उसका आक्रमण क्षेत्र अभी इतना सीमित था, और उससे भी कहीं अधिक दूर था जहाँ ओडेट के लिए समान लक्ष्य तक पहुँचने, रक्षा पंक्ति को तोड़ने की कोई संभावना थी, कि ओडेट 'मालकिन' द्वारा बनाई जा रही रणनीतिक योजनाओं से पूरी तरह अनभिज्ञ रही। और जब कोई उससे श्रीमती वेरदुरिन के बारे में कहता कि वह घमंडी है, तो ओडेट पूरी ईमानदारी से हंसते हुए जवाब देती, "अरे नहीं, बिलकुल विपरीत! एक तो उसे घमंडी होने का मौका ही नहीं मिलता; वह किसी को जानती ही नहीं। और फिर, उसके साथ न्याय करने के लिए, मुझे कहना होगा कि वह किसी को न जानने से काफी खुश लगती है। नहीं, उसे तो अपने बुधवार और अच्छी बातें करने वाले लोग पसंद हैं।" और अपने मन ही मन वह श्रीमती वेरदुरिन से ईर्ष्या करती थी। वर्दुरिन (यद्यपि उन्होंने इतने प्रतिष्ठित विद्यालय में स्वयं उन कलाओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करने की आशा नहीं छोड़ी थी) ने उन कलाओं को, जिन्हें 'शिक्षिका' ने इतना महत्व दिया था, भले ही वे केवल अस्तित्वहीनता की छायाओं के बीच भेद करती थीं, शून्य को गढ़ती थीं, और वास्तव में, महत्वहीनता की कलाएँ थीं: अर्थात्, घर की महिला में, लोगों को 'एक साथ लाने', 'समूह बनाने', 'उभारने', 'पृष्ठभूमि में रखने' और 'जोड़ने वाली कड़ी' के रूप में कार्य करने की कला।

बहरहाल, श्रीमती स्वान की सहेलियाँ उनके घर में उस महिला को देखकर

प्रभावित हुईं, जिसे वे केवल अपने घर में ही देखती थीं। वह अपने मेहमानों के बीच, अपने छोटे से समूह के साथ, इस तरह सजी-धजी, संक्षेप में कहें तो, एकत्रित होकर, एक ही कुर्सी पर 'मालकिन' के शारीरिक रूप में बैठी थीं। मेज़बान से मेहमान बनीं श्रीमती स्वान अपने लबादे में लिपटी हुई थीं, जिस पर चितकबरी झालर लगी थी, और वह लबादा उस सफेद खाल की तरह खुरदुरा था जिस पर उस ड्राइंग रूम का कालीन बिछा था जिसमें श्रीमती वर्दुरिन स्वयं एक ड्राइंग रूम थीं। महिलाओं में से जो अधिक संकोची थीं, उन्होंने पीछे हटना ही उचित समझा, और बहुवचन का प्रयोग करते हुए, जैसा कि लोग तब करते हैं जब वे कमरे के बाकी लोगों को यह संकेत देना चाहते हैं कि पहली बार बिस्तर से उठी हुई बीमार महिला को थकाना उचित नहीं है: "ओडेट," उन्होंने धीरे से कहा, "हम आपको छोड़कर जा रहे हैं।" उन्हें श्रीमती स्वान से ईर्ष्या हुई। कॉटार्ड, जिसे 'मालकिन' उसके ईसाई नाम से पुकारती थी। "क्या मैं आपको कहीं छोड़ दूं?" श्रीमती वर्दुरिन ने उससे पूछा, यह सोचकर वह असहनीय रूप से परेशान थी कि वफादारों में से एक उसके पीछे कमरे से जाने के बजाय वहीं रुक जाएगी। "ओह, लेकिन इस महिला ने इतनी दयालुता दिखाई है कि वह मुझे ले जाएंगी," श्रीमती कॉटार्ड ने उत्तर दिया, वह यह नहीं भूलना चाहती थी कि एक अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति के पास आने पर उसने श्रीमती बोंटेम्प्स के उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था जिसमें उन्होंने उसे अपने मुकुटधारी कोचवान के पीछे घर छोड़ने की बात कही थी। "मुझे कहना होगा कि मैं उन दोस्तों की विशेष रूप से आभारी हूं जो इतनी दयालुता से मुझे अपने वाहनों में ले जाते हैं। यह मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं है, क्योंकि मेरे पास कोई ऑटोमेडन नहीं है।" "विशेष रूप से," 'मालकिन' ने बीच में कहा, क्योंकि वह श्रीमती कॉटार्ड को जानती थी और उसे लगा कि उसे कुछ कहना

चाहिए। बोंटेम्प्स ने थोड़ा मज़ाक किया और उसे बुधवार को अपने यहाँ आने का न्योता दिया, "जैसा कि मैडम डी क्रेसी के घर पर है, तुम घर के ज़्यादा पास नहीं हो। अरे, मैं कभी मैडम स्वान कहने की गलती नहीं करूँगी!" छोटे से परिवार में, जो लोग ज़्यादा हाज़िरजवाब नहीं थे, उनके बीच यह एक जानी-मानी मज़ाक-मस्ती थी कि वे यह दिखावा करते थे कि उन्हें 'मैडम स्वान' कहने की आदत कभी नहीं पड़ सकती। "मुझे मैडम डी क्रेसी कहने की इतनी आदत हो गई है कि मैं लगभग फिर से गलती कर बैठी!" केवल मैडम वर्दुरिन, जब ओडेट से बात करती थीं, तो लगभग से संतुष्ट नहीं होती थीं, बल्कि जानबूझकर गलती करती थीं। "क्या तुम्हें डर नहीं लगता, ओडेट, इस तरह जंगल में रहते हुए? मुझे यकीन है कि मुझे अंधेरा होने के बाद घर आने में बिल्कुल भी आराम नहीं मिलेगा। इसके अलावा, यहाँ बहुत नमी है। यह तुम्हारे पति के एक्जिमा के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं हो सकता। मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे घर में चूहे नहीं होंगे!" "अरे नहीं। कितना भयानक विचार है!" "यह तो अच्छी बात है; मुझे बताया गया था कि आपने ऐसा किया है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि यह सच नहीं है, क्योंकि मुझे उन जीवों से घोर घृणा है, और मैं आपसे दोबारा मिलने कभी नहीं आती। अलविदा, मेरी प्यारी बच्ची, हम जल्द ही फिर मिलेंगे; आप जानती हैं कि आपसे मिलना मेरे लिए कितनी खुशी की बात है। आपको गुलदाउदी को पानी में रखना नहीं आता," वह कमरे से बाहर जाने की तैयारी करते हुए बोलीं, श्रीमती स्वान उन्हें छोड़ने के लिए उठ खड़ी हुईं। "ये जापानी फूल हैं; आपको इन्हें उसी तरह सजाना चाहिए जैसे जापानी लोग सजाते हैं।" "मैं श्रीमती वर्दुरिन से सहमत नहीं हूँ, हालाँकि वह मेरे लिए हर बात में धर्म और पैगंबर के समान हैं! ओडेट, तुम्हारे जैसी कोई नहीं है जो इतने सुंदर गुलदाउदी ढूंढ सके, या यूँ कहें कि गुलदाउदी, क्योंकि लगता है कि अब हमें उन्हें यही कहना चाहिए,"

श्रीमती कॉटार्ड ने जैसे ही 'मालकिन' ने दरवाजा बंद किया, वैसे ही कहा। "प्रिय श्रीमती वर्दुरिन दूसरों के फूलों के बारे में हमेशा अच्छी राय नहीं रखतीं," ओडेट ने मीठी आवाज़ में कहा। "ओडेट, तुम किसके पास जाती हो?" श्रीमती कॉटार्ड ने 'मालकिन' की और आलोचना को रोकने के लिए पूछा। "लेमैत्रे? मुझे स्वीकार करना होगा, कुछ दिन पहले लेमैत्रे की दुकान की खिड़की में मैंने एक बहुत बड़ा गुलाबी फूल देखा, जिसे देखकर मैंने कुछ ऐसा कर दिया जो मुझे बिल्कुल पागल कर देने वाला था।" लेकिन शर्म के मारे वह फूल की कीमत के बारे में और ज़्यादा जानकारी नहीं दे सकीं, और उन्होंने बस इतना कहा कि प्रोफ़ेसर, "और आप जानती हैं, वह बिल्कुल भी जल्दी गुस्सा करने वाले आदमी नहीं हैं," ने "अपनी तलवार हवा में लहराई" और उनसे कहा कि उन्हें "पैसे का मतलब नहीं पता।" "नहीं, नहीं, मेरा डेबैक के अलावा कोई नियमित फूलवाला नहीं है।" "मेरा भी नहीं है," श्रीमती कॉटार्ड ने कहा, "लेकिन मैं स्वीकार करती हूँ कि मैं कभी-कभी लाचौम के साथ उनके प्रति बेवफ़ा हो जाती हूँ।" "ओह, तुम उसे छोड़कर लाचौम के साथ चली गई, है ना? मुझे देबैक को ये बताना ही होगा," ओडेट ने पलटकर जवाब दिया, जो हमेशा अपनी चतुराई दिखाने और अपने घर में बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक रहती थी, जहाँ वह छोटे से परिवार की तुलना में ज़्यादा सहज महसूस करती थी। "इसके अलावा, लाचौम सचमुच बहुत महंगा होता जा रहा है; उसकी कीमतें हद से ज़्यादा हैं, तुम्हें पता नहीं; मुझे तो उसकी कीमतें असहनीय लगती हैं!" उसने हंसते हुए कहा।

इस बीच, श्रीमती बोंटेम्प्स, जिन्हें सौ बार यह कहते सुना गया था कि कोई भी चीज़ उन्हें वर्दुरिन के घर जाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती, प्रसिद्ध बुधवार की पार्टियों में आमंत्रित किए जाने पर प्रसन्न थीं और मन ही मन योजना बना रही थीं कि वे उनमें से ज़्यादा से ज़्यादा पार्टियों में कैसे

शामिल हो सकती हैं। उन्हें इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि श्रीमती वर्दुरिन चाहती थीं कि कोई भी पार्टी न छूटे; साथ ही, वे उन लोगों में से थीं जिनकी संगति कम ही पसंद की जाती है, जो जब कोई मेज़बान उन्हें कई पार्टियों में आमंत्रित करता है, तो वे बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार नहीं करते और चले जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे लोग जो जानते हैं कि जब भी उनके पास थोड़ा समय हो और बाहर जाने का मन करे, तो उनसे मिलना हमेशा सुखद होता है; उनके जैसे लोग पहली और तीसरी शाम को खुद को अनुपस्थित रखते हैं, यह सोचकर कि उनकी अनुपस्थिति पर ध्यान दिया जाएगा, और दूसरी और चौथी शाम के लिए खुद को बचा कर रखते हैं, जब तक कि ऐसा न हो कि किसी विश्वसनीय स्रोत से यह पता चले कि तीसरी पार्टी विशेष रूप से शानदार होने वाली है, तो वे मूल योजना को उलट देते हैं और मेज़बान को आश्वासन देते हैं कि "दुर्भाग्य से, पिछले सप्ताह हमारा कोई और कार्यक्रम था।" इसलिए श्रीमती बोंटेम्प्स... बोंटेम्प्स हिसाब लगा रही थी कि ईस्टर से पहले कितने बुधवार बचे हैं, और वह किस तरह एक अतिरिक्त बुधवार हासिल कर सकती है, ताकि वह अपनी मेज़बान पर बोझ न लगे। घर लौटते समय गाड़ी में उसके साथ जाने वाली श्रीमती कॉटार्ड से उसे कुछ सुझाव मिलने की उम्मीद थी। "ओह, श्रीमती बोंटेम्प्स, मैं देख रही हूँ कि आप उठकर जा रही हैं; इस तरह जाने का संकेत देना बहुत बुरा है! पिछले गुरुवार को न आने के लिए आपको मुझे कुछ मुआवज़ा देना चाहिए... आइए, एक मिनट के लिए फिर से बैठ जाइए। आप खाने से पहले कहीं और तो नहीं जा रही हैं। सच में, आप खुद को लालच में नहीं आने देंगी?" श्रीमती स्वान ने कहा, और केक की एक प्लेट आगे बढ़ाते हुए बोलीं, "जानती हैं, ये छोटे-छोटे केक बिल्कुल भी बुरे नहीं हैं। ये देखने में अच्छे नहीं लगते, लेकिन एक चखकर देखिए, मुझे पता है आपको पसंद आएंगे।" "इसके

विपरीत, ये तो बहुत स्वादिष्ट लग रहे हैं," श्रीमती कॉटार्ड ने बीच में कहा। "ओडेट, आपके घर में खाने-पीने की कभी कमी नहीं होती। मुझे ट्रेडमार्क देखने की ज़रूरत नहीं है; मैं जानती हूँ कि आप सब कुछ रेबाटेट से मंगवाती हैं। मुझे कहना पड़ेगा कि मेरी पसंद थोड़ी अलग है। मीठे बिस्कुट और इस तरह की चीज़ों के लिए मैं अक्सर बोर्बोन्यू जाती हूँ। लेकिन मैं मानती हूँ कि उन्हें 'आइस' का मतलब नहीं पता। रेबाटेट हर तरह की आइसिंग, सिरप और शर्बत के लिए, वे उस्ताद हैं। जैसा कि मेरे पति कहते थे, वे सबसे बेहतरीन हैं।" "ओह, लेकिन हम तो इन्हें घर पर ही बनाते हैं। क्या सच में?" "मैं रात का खाना बिल्कुल नहीं खा पाऊँगी," मैडम बोंटेम्प्स ने विनती करते हुए कहा, "लेकिन मैं बस एक पल के लिए फिर से बैठ जाऊँगी; आप जानती हैं, मुझे आप जैसी समझदार महिला से बात करना बहुत अच्छा लगता है।" "ओडेट, तुम मुझे बहुत अविवेकी समझोगी, लेकिन मैं जानना चाहता हूँ कि मैडम ट्रॉमबर्ट की टोपी के बारे में तुम्हारा क्या विचार था। मुझे पता है कि आजकल बड़ी टोपियाँ फैशन में हैं। फिर भी, क्या वह थोड़ी ज़्यादा ही बड़ी नहीं थी? और जिस टोपी को पहनकर वह मुझसे मिलने आई थी, उसकी तुलना में अभी वाली टोपी तो बिल्कुल छोटी थी!" "अरे नहीं, मैं बिलकुल भी समझदार नहीं हूँ," ओडेट ने कहा, यह सोचकर कि यह बात अच्छी लग रही है। "मैं बिल्कुल भोली हूँ, मैं लोगों की हर बात पर विश्वास कर लेती हूँ और छोटी-छोटी बातों पर बहुत ज़्यादा परेशान हो जाती हूँ।" और उसने इशारा किया कि पहले तो उसे स्वान जैसे आदमी से शादी करने के विचार से बहुत तकलीफ हुई थी, जिसका अपना एक अलग जीवन था और जो उसके प्रति बेवफा था। इसी बीच, प्रिंस डी'एग्रीजेंट ने "मैं बिलकुल भी समझदार नहीं हूँ" ये शब्द सुनकर विरोध करना अपना कर्तव्य समझा; दुर्भाग्य से, उसे हाज़िरजवाबी का हुनर नहीं आता था। "अरे बाप रे!" श्रीमती बोंटेम्प्स

चिल्लाईं, "तुम चालाक नहीं हो!" "मैं भी यही सोच रहा था—'मैं क्या सुन रहा हूँ?'," राजकुमार ने इस बात को सहारा बनाते हुए कहा, "मेरे कानों ने मुझे धोखा दिया होगा!" "नहीं, मैं आपको यकीन दिलाती हूँ," ओडेट ने आगे कहा, "मैं सचमुच एक साधारण महिला हूँ, बहुत जल्दी आहत हो जाती हूँ, पूर्वाग्रहों से भरी हूँ, अपनी ही दुनिया में खोई रहती हूँ और बेहद अज्ञानी हूँ।" और फिर, अगर उन्हें बैरन डी चार्लस के बारे में कोई खबर हो, तो उन्होंने पूछा, "क्या आपने हमारे प्यारे बैरोनेट को देखा है?" "तुम, अज्ञानी!" श्रीमती बोंटेम्प्स चिल्लाईं। "तो फिर मुझे आश्चर्य होता है कि आप आधिकारिक दुनिया के बारे में क्या कहेंगे, उन सभी महामहिमों की पत्नियों के बारे में जो अपनी पोशाकों के अलावा किसी और बात नहीं कर सकतीं... सुनो, मेरे दोस्त; एक हफ्ते पहले ही मैंने शिक्षा मंत्री की पत्नी से लोहेनग्रिन का जिक्र किया। उन्होंने मुझे घूरकर देखा और कहा, 'लोहेनग्रिन? ओह, हाँ, फोलिज़-बर्गेरेस में नया शो। मैंने सुना है कि यह बहुत मजेदार है!' इस पर आप क्या कहेंगे, है ना? आप खुद को रोक नहीं सकते; जब लोग ऐसी बातें कहते हैं तो खून खौल उठता है। मैं उन्हें मारना चाहता था। क्योंकि मेरा भी थोड़ा गुस्सा है। आप क्या कहते हैं, महोदय;" वह मेरी ओर मुड़ीं, "क्या मैं सही नहीं थी?" "सुनो," श्रीमती कॉटार्ड ने कहा, "जब लोगों से बिना किसी चेतावनी के सीधे-सीधे ऐसा सवाल पूछा जाता है, तो वे थोड़ा अटपटा जवाब देने से खुद को रोक नहीं पाते। मैं इसके बारे में थोड़ा जानती हूँ, क्योंकि श्रीमती वर्दुरिन को भी आपके सिर पर पिस्तौल रखने की आदत है।" "श्रीमती वर्दुरिन की बात हो रही है," श्रीमती बोंटेम्प्स ने श्रीमती कॉटार्ड से पूछा, "क्या आपको पता है कि बुधवार को वहाँ कौन होगा? ओह, मुझे अभी याद आया कि हमने अगले बुधवार के लिए एक निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। क्या आप अगले बुधवार को हमारे साथ भोजन करना चाहेंगी? हम श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ

साथ चल सकते हैं। मैं अकेले वहाँ जाने की हिम्मत कभी नहीं करती; मुझे नहीं पता क्यों, वह महान महिला हमेशा मुझे डराती हैं।" "मैं आपको बताती हूँ," श्रीमती कॉटार्ड ने उत्तर दिया, "श्रीमती वर्दुरिन के बारे में जो बात आपको डराती है, वह है उनका अंग। लेकिन आप जानती हैं कि हर किसी के पास श्रीमती स्वान जैसा सुरीला अंग नहीं हो सकता। जैसा कि 'मालकिन' कहती हैं, एक बार जब आप बोलना सीख जाएँगी, तो झिझक जल्दी दूर हो जाएगी। क्योंकि वास्तव में, उनके साथ घुलना-मिलना बहुत आसान है। लेकिन मैं आपकी भावना को पूरी तरह समझ सकती हूँ; किसी अनजान देश में पहली बार जाना कभी सुखद नहीं होता।" "क्या आप भी हमारे साथ खाना खाएंगी?" श्रीमती बोंटेम्प्स ने श्रीमती स्वान से कहा। "खाने के बाद हम सब एक साथ वर्दुरिन के घर जा सकते हैं, 'वर्दुरिन स्टाइल में'; और भले ही इसका मतलब यह हो कि 'मालकिन' मुझे घूर-घूर कर देखेगी और फिर कभी अपने घर नहीं बुलाएगी, लेकिन वहाँ पहुँचकर हम बस अकेले में बैठकर शांति से बातें करेंगे, मुझे यकीन है कि मुझे यही सबसे अच्छा लगेगा।" लेकिन यह बात पूरी तरह सच नहीं थी, क्योंकि श्रीमती बोंटेम्प्स ने आगे पूछा: "आपको क्या लगता है कि अगले बुधवार को वहाँ कौन-कौन होगा? वे क्या कर रहे होंगे? मुझे उम्मीद है कि ज़्यादा भीड़ नहीं होगी!" "मैं तो बिल्कुल नहीं आऊँगी," ओडेट ने कहा। "हम बस आखिरी बुधवार को एक मिनट के लिए वहाँ जाएँगे। अगर आपको तब तक इंतज़ार करने में कोई आपत्ति न हो तो—" लेकिन श्रीमती बोंटेम्प्स को यह प्रस्ताव पसंद नहीं आया।

यह मानते हुए कि किसी घराने की बौद्धिक विशिष्टता और उसकी बुद्धिमत्ता आम तौर पर प्रत्यक्ष अनुपात के विपरीत अनुपात में होती है, यह मानना होगा कि चूंकि स्वान को श्रीमती बोंटेम्प्स आकर्षक लगीं, इसलिए एक बार स्वीकार की गई स्थिति का कोई भी त्याग हमें उन लोगों

के प्रति कम सतर्क बना देता है जिनके बीच हमने मनोरंजन पाने के लिए खुद को समर्पित कर दिया है, उनकी बुद्धिमत्ता के प्रति भी उतना ही कम सतर्क बना देता है जितना कि उनके बारे में अन्य सभी चीजों के प्रति। और यदि यह सच है, तो मनुष्य, राष्ट्रों की तरह, अपनी स्वतंत्रता के साथ अपनी संस्कृति और यहां तक कि अपनी भाषा को भी लुप्त होते हुए देखेंगे। इस छूट का एक प्रभाव उस प्रवृत्ति को बढ़ाना है जो एक निश्चित उम्र के बाद हमारे भीतर उन भाषणों में आनंद खोजने की ओर ले जाती है जो हमारी अपनी मानसिकता, हमारी कमजोरियों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं, हमें उनके आगे झुकने के लिए प्रोत्साहित करते हैं; यानी वह उम्र जब एक महान कलाकार मौलिक प्रतिभाओं की संगति के बजाय उन शिष्यों की संगति को पसंद करता है जिनका उससे केवल उसके सिद्धांतों के शाब्दिक अर्थों में ही संबंध होता है, जो उसे सुनते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं; जिस युग में प्रेम के लिए समर्पित एक प्रतिष्ठित पुरुष या स्त्री को यह अनुभव होता है कि किसी सभा में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति शायद कोई साधारण व्यक्ति ही होता है, जिसने अपने किसी कथन से यह सिद्ध कर दिया हो कि वह शिष्टाचार को समर्पित जीवन का अर्थ समझता और स्वीकार करता है, और इस प्रकार अपने प्रेमी या प्रेमिका की कामुक भावनाओं को सुखद रूप से उत्तेजित कर देता है; यह वह युग भी था जब स्वान, ओडेट के पति बनने के बाद, श्रीमती बोंटेम्प्स को यह कहते हुए सुनना पसंद करते थे कि घर में केवल डचेस का होना कितना मूर्खतापूर्ण है (इससे वेरदुरिन के घर में अपने पुराने विचारों के बिल्कुल विपरीत निष्कर्ष निकालते हुए कि वह एक अच्छी महिला, अत्यंत समझदार और बिल्कुल भी घमंडी नहीं थीं) और उन्हें ऐसी कहानियाँ सुनाते थे जिन्हें सुनकर वे 'हंसते-हंसते लोटपोट' हो जाती थीं क्योंकि उन्होंने उन्हें पहले कभी नहीं सुना था, हालाँकि वे हमेशा तुरंत ही बात

समझ जाती थीं; स्वान को अपने मनोरंजन के लिए उनकी चापलूसी करना अच्छा लगता था। "तो क्या डॉक्टर आपकी तरह फूलों के दीवाने नहीं हैं?" श्रीमती स्वान ने श्रीमती बोंटेम्प्स से पूछा। कॉटार्ड। "ओह, आप जानती हैं, मेरे पति एक ज्ञानी व्यक्ति हैं; वे हर बात में संयम बरतते हैं। फिर भी, मुझे मानना पड़ेगा, उनमें एक शौक है।" उनकी आँखों में शरारत, खुशी और जिज्ञासा झलक रही थी, "और वह क्या है, कृपया बताइए?" श्रीमती बोंटेम्प्स ने पूछा। श्रीमती कॉटार्ड ने बड़े सरल शब्दों में उत्तर दिया, "पढ़ना।" "ओह, पति में यह तो बहुत सुकून देने वाला शौक है!" श्रीमती बोंटेम्प्स ने शरारती हंसी दबाते हुए कहा। "जब डॉक्टर के हाथों में किताब आ जाती है, तो आप समझ ही जाती हैं!" "खैर, इससे आपको ज़्यादा चिंता करने की ज़रूरत नहीं है..." "लेकिन चिंता तो है, उनकी आँखों की रोशनी के लिए। मुझे अब जाकर उनका ध्यान रखना होगा, ओडेट, और मैं जैसे ही मौका मिलेगा, आपके दरवाजे पर दस्तक दूंगी। आँखों की रोशनी की बात करें तो, क्या आपने सुना है कि श्रीमती वर्दुरिन ने जो नया घर खरीदा है, उसमें बिजली की रोशनी होगी? यह जानकारी मुझे किसी गुप्त सूचना से नहीं मिली, बल्कि किसी और स्रोत से मिली; यह जानकारी मुझे खुद इलेक्ट्रीशियन मिल्डे ने दी। देखिए, मैं तो अपने विश्वसनीय सूत्रों का हवाला देती हूँ! वह कहता है कि यहाँ तक कि बेडरूम में भी शेड वाले इलेक्ट्रिक लैंप होंगे जो रोशनी को छानेंगे। यह उन लोगों के लिए एक शानदार विलासिता है जो इसे वहन कर सकते हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि हमारे समकालीनों को हर हाल में वही चीज़ चाहिए जो दुनिया में अपनी तरह की इकलौती हो। ज़रा सोचिए, मेरी एक सहेली की भाभी ने अपने घर में टेलीफोन लगवा लिया है! वह घर से बाहर निकले बिना ही अपने कारीगरों से सामान मंगवा सकती है! मैं मानती हूँ कि मैंने इसका भरपूर फायदा उठाया है। वहाँ एक दिन जाने की

अनुमति पाने के लिए खुलेआम हथकंडे अपनाए जा रहे हैं, सिर्फ़ उस यंत्र में बोलने के लिए। यह बहुत लुभावना है, लेकिन घर से ज़्यादा किसी दोस्त के घर में। मुझे नहीं लगता कि मैं अपने घर में टेलीफ़ोन रखना चाहूँगी। एक बार शुरुआती उत्साह खत्म हो जाए, तो हर समय ज़बरदस्त शोरगुल चलता रहेगा। अब, ओडेट, मुझे जाना होगा; अब आप श्रीमती बोंटेम्प्स को और नहीं रोक सकतीं, वह मेरी देखभाल कर रही हैं। मुझे ज़बरदस्ती जाना होगा; आप मुझे अच्छे से व्यवहार करने पर मजबूर कर रही हैं, मैं अपने पति के बाद घर जाऊँगी!

और मेरे लिए भी घर लौटने का समय हो गया था, इससे पहले कि मैं उन सर्दियों के सुखों का स्वाद चख पाता, जिनके चमकदार आवरण के समान मुझे गुलदाउदी के फूल दिखाई दे रहे थे। ये सुख अभी तक प्रकट नहीं हुए थे, फिर भी श्रीमती स्वान को देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि उन्हें और कुछ उम्मीद है। उन्होंने नौकरों को चाय-पानी का सामान ले जाने दिया, मानो भला कौन कहे, "कृपया थोड़ा समय दीजिए, सज्जनों!" और अंत में उन्होंने मुझसे कहा: "सचमुच, क्या आपको जाना ही है? ठीक है; अलविदा!" मुझे लगा कि मैं उन अज्ञात सुखों का अनुभव किए बिना भी वहीं रह सकता था, और मेरी उदासी उन्हें छोड़ने का कारण नहीं थी। तो क्या वे सुख समय के उस नियमित मार्ग पर नहीं, जो हमें हमेशा प्रस्थान के क्षण तक ले जाता है, बल्कि किसी ऐसे अनजान चौराहे पर थे, जिस पर मुझे भटक जाना चाहिए था? कम से कम, मेरी यात्रा का उद्देश्य तो पूरा हो गया था; गिलबर्ट को पता चल जाएगा कि मैं उसके माता-पिता से मिलने आया था जब वह घर पर नहीं थी, और यह कि मैंने, श्रीमती स्वान की तरह, कॉटार्ड मुझे लगातार आश्वस्त करती रही, "मैंने श्रीमती वर्दुरिन को पहली ही कोशिश में पूरी तरह से जीत लिया," और आगे कहा कि उसने उन्हें कभी किसी के लिए इतना प्यार भरा व्यवहार करते नहीं देखा

था। ("तुम दोनों के बीच ज़रूर कोई गहरा रिश्ता बन गया होगा।") वह जानती थीं कि मैंने उनके बारे में उचित ही स्नेह से बात की थी, लेकिन मेरे अंदर उनके बिना एक-दूसरे को देखे बिना रहने की वह अक्षमता नहीं थी, जिसे मैं हमारी पिछली मुलाकातों में उनकी बोरियत का मूल कारण मानता था। मैंने श्रीमती स्वान को बताया था कि मैं गिलबर्ट से दोबारा नहीं मिल पाऊंगा। मैंने यह इस तरह कहा था मानो मैंने उनसे फिर कभी न मिलने का अंतिम निर्णय ले लिया हो। और जो पत्र मैं गिलबर्ट को भेजने वाला था, वह भी इसी भाव से लिखा होगा। केवल अपने मन में, हिम्मत जुटाने के लिए, मैंने कुछ दिनों के लिए एक पूर्ण और केंद्रित प्रयास करने का संकल्प लिया। मैंने खुद से कहा: "यह आखिरी बार है जब मैं उनसे मिलने से इनकार कर रहा हूं; मैं अगला निमंत्रण स्वीकार करूंगा।" हमारे बिछड़ने को कम कष्टदायी बनाने के लिए, मैंने इसे अंतिम नहीं माना। लेकिन मुझे अच्छी तरह पता था कि ऐसा ही होगा।

उस सर्दी में जनवरी का पहला दिन मेरे लिए बेहद कष्टदायक था। निस्संदेह, जब हम दुखी होते हैं, तो कोई भी तारीख या वर्षगांठ हमारे लिए उतनी ही कष्टदायक होती है। लेकिन अगर हमारा दुख किसी प्रिय मित्र के बिछड़ने के कारण है, तो हमारा कष्ट केवल वर्तमान और अतीत की एक असामान्य रूप से जीवंत तुलना में ही निहित होता है। मेरे मामले में, इसमें एक अनकही आशा भी जुड़ गई थी कि गिलबर्टे ने सुलह की दिशा में पहला कदम उठाने के लिए मुझे अकेला छोड़ने का इरादा किया था, और यह जानकर कि मैंने ऐसा नहीं किया है, वह केवल नए साल के दिन का बहाना ढूंढ रही थी ताकि मुझे पत्र लिखकर कह सके: "क्या बात है? मैं तुमसे बेइंतहा प्यार करती हूँ; आओ, चलो सब कुछ ठीक से सुलझा लें; मैं तुम्हें देखे बिना नहीं रह सकती।" जैसे-जैसे पुराने साल के आखिरी दिन बीतते गए, ऐसा पत्र आना संभव लगने लगा। शायद ऐसा

कुछ नहीं था, लेकिन हमें यह विश्वास दिलाने के लिए कि ऐसा होना संभव है, हमारी इच्छा, हमारी ज़रूरत ही काफी थी। सैनिक को पूरा विश्वास होता है कि गोली लगने से पहले उसे एक निश्चित समय मिलेगा, जिसे अनिश्चित काल तक बढ़ाया जा सकता है, चोर को पकड़े जाने से पहले और आम तौर पर सभी मनुष्यों को मरने से पहले यही विश्वास होता है। यही वह ताबीज है जो लोगों को—और कभी-कभी पूरे समुदाय को—खतरे से नहीं, बल्कि खतरे के डर से बचाता है, वास्तव में खतरे के विश्वास से, जो कुछ मामलों में उन्हें बिना वास्तव में बहादुर हुए भी उसका सामना करने की शक्ति देता है। इसी तरह का विश्वास, और वह भी इतने कम आधार पर, उस प्रेमी को सहारा देता है जो सुलह की, एक पत्र की उम्मीद में जी रहा होता है। मेरे लिए पत्र की उम्मीद छोड़ देने के लिए इतना ही काफी होता कि मैं पत्र की कामना करना ही छोड़ देता। चाहे कोई यह जानता हो कि जिसे वह अब भी प्यार करता है, उसकी नजरों में वह कितना भी महत्वहीन क्यों न हो, फिर भी वह उसके बारे में कई विचार रखता है (भले ही उनका कुल योग उदासीनता हो), उन विचारों को व्यक्त करने का इरादा, उसके आंतरिक जीवन की एक जटिलता जिसमें वह लगातार उसकी घृणा का, लेकिन निश्चित रूप से उसके ध्यान का पात्र होता है। लेकिन गिलबर्ट के मन में क्या चल रहा था, यह समझने के लिए मुझे बस इतनी शक्ति चाहिए थी कि मैं उस नए साल के दिन यह अनुमान लगा सकूँ कि आने वाले किसी भी साल के पहले दिन मुझे कैसा महसूस होगा, जब गिलबर्ट का ध्यान, मौन, स्नेह या शीतलता लगभग अनसुनी रह जाएगी और मैं सपने में भी नहीं सोच पाऊँगी कि उन समस्याओं का हल ढूँढ़ूँ जो मुझे अब परेशान नहीं करेंगी। जब हम प्रेम में होते हैं, तो हमारा प्रेम इतना विशाल होता है कि हम उसे पूरी तरह अपने भीतर समाहित नहीं कर पाते। यह प्रियतम की ओर विकिरणित होता है, उसमें

एक ऐसी सतह पाता है जो इसे रोक देती है, इसे अपने आरंभिक बिंदु पर लौटने के लिए विवश करती है, और हमारे अपने स्नेह के इस प्रतिध्वनि के आघात को ही हम दूसरे का अपने प्रति आदर कहते हैं, और जो हमें इसकी बाहरी यात्रा की तुलना में उस समय अधिक प्रसन्न करता है क्योंकि हम इसे अपने भीतर से उत्पन्न हुआ नहीं मानते। नए साल का दिन बीत गया, लेकिन गिलबर्ट का वह पत्र मुझ तक नहीं पहुँचा। और जब मुझे कुछ और शुभकामनाओं वाले पत्र मिले, जो उस मौसम में डाक के अत्यधिक बोझ के कारण देर से या विलंबित हुए थे, तो 3 और 4 जनवरी को भी मुझे उम्मीद बनी रही, लेकिन मेरी उम्मीद हर घंटे धुंधली होती चली गई। अगले दिनों में मैं आँसुओं के धुंध में डूबा रहा। इसका निस्संदेह यही अर्थ था कि गिलबर्टे को त्यागने में मैं जितना ईमानदार था, उससे कम ईमानदार होने के कारण, मैंने नए साल के लिए उससे एक पत्र की उम्मीद पाल रखी थी। और जब मैंने उस उम्मीद को किसी और उम्मीद के सहारे टूटने से पहले ही खत्म होते देखा, तो मुझे वैसा ही कष्ट हुआ जैसा किसी बीमार व्यक्ति को होता है जिसने मॉर्फिया की अपनी शीशी खाली कर दी हो और उसके पास दूसरी शीशी न हो। लेकिन शायद मेरे मामले में भी—और ये दोनों स्पष्टीकरण परस्पर विरोधी नहीं हैं, क्योंकि एक ही भावना अक्सर विपरीत तत्वों से बनी होती है—अंततः पत्र प्राप्त करने की मेरी उम्मीद ने एक बार फिर मेरे मन में गिलबर्टे की छवि ला दी थी, उन भावनाओं को फिर से जगा दिया था जो उसकी उपस्थिति में होने की अपेक्षा, उसे देखने के दर्शन, उसके मेरे साथ व्यवहार करने के तरीके ने मुझमें पहले जगाई थीं। सुलह की तत्काल संभावना ने मुझमें उस क्षमता को दबा दिया था जिसकी अहमियत को हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं: त्याग की क्षमता। मानसिक तनाव से ग्रस्त लोगों के लिए उन दोस्तों की बात मानना नामुमकिन होता है जो उन्हें भरोसा

दिलाते हैं कि अगर वे बिस्तर पर पड़े रहें, कोई चिट्ठी न पढ़ें, कोई अखबार न पढ़ें तो धीरे-धीरे उन्हें मानसिक शांति मिल जाएगी। उन्हें लगता है कि ऐसा करने से उनकी बेचैन नसें और भी ज़्यादा तनावग्रस्त हो जाएँगी। और इसी तरह प्रेमी, जो अपने एकांतवास में विपरीत मन से इसे देखते हैं, जिन्होंने अभी तक इसे आज़माया नहीं है, त्याग की उपचार शक्ति पर विश्वास नहीं कर पाते।

मेरी धड़कनें तेज़ होने के कारण, कैफीन की खुराक कम कर दी गई; धड़कनें शांत हो गईं। तब मैंने खुद से पूछा कि क्या कुछ हद तक दवा ही उस पीड़ा का कारण नहीं थी जो मुझे गिलबर्ट से झगड़ा करते समय महसूस हुई थी, एक ऐसी पीड़ा जिसे मैंने हर बार अपनी दोस्त को फिर कभी न देख पाने या उसे केवल उसी खराब मूड में देखने के जोखिम से जोड़ा था। लेकिन अगर यह दवा उन कष्टों की जड़ थी जिन्हें मेरी कल्पना ने उस स्थिति में गलत समझा होगा (वैसे इसमें कुछ भी असामान्य नहीं है, क्योंकि प्रेमियों के बीच, सबसे तीव्र मानसिक पीड़ा अक्सर उस महिला के शारीरिक रूप ले लेती है जिसके साथ वे रह रहे होते हैं), तो उस अर्थ में, यह उस औषधि की तरह थी जो पीने के बहुत समय बाद भी ट्रिस्टन को इसोल्डे से बांधे रखती है। कैफीन की मात्रा कम करने से मेरे शरीर में जो शारीरिक सुधार हुआ, वह उस दुःख की प्रगति को नहीं रोक पाया, जिसे उस विष के सेवन ने शायद - यदि उसने इसे उत्पन्न नहीं किया था - तो कम से कम और अधिक तीव्र कर दिया था।

जनवरी के मध्य तक आते-आते, नए साल के दिन पत्र मिलने की मेरी उम्मीदें टूट चुकी थीं, उस निराशा से उपजे अतिरिक्त व्यवधान के शांत होने के बाद, मेरा पुराना दुख, 'छुट्टियों से पहले वाला' दुख, फिर से शुरू हो गया। शायद इसकी सबसे क्रूर बात यह थी कि मैं स्वयं ही इसका सूत्रधार था, अचेतन, जानबूझकर, निर्दयी और धैर्यवान। जो एक चीज़

मायने रखती थी, गिलबर्ट के साथ मेरे संबंध, मैं ही उन्हें असंभव बनाने के लिए मेहनत कर रहा था, अपनी सहेली से इस लंबे अलगाव से धीरे-धीरे उसकी उदासीनता नहीं, बल्कि अंततः उसी के समान परिणाम देने वाली मेरी अपनी उदासीनता पैदा कर रहा था। मैं अपने भीतर के उस हिस्से की धीमी और दर्दनाक आत्महत्या के लिए खुद को अथक ऊर्जा से उकसा रहा था जो गिलबर्ट का प्रेमी था, न केवल इस बात की स्पष्ट समझ के साथ कि मैं वर्तमान में क्या कर रहा हूँ, बल्कि भविष्य में इसके क्या परिणाम होंगे; मुझे न केवल यह पता था कि एक निश्चित समय के बाद मैं गिल्बर्ट से प्रेम करना बंद कर दूंगा, बल्कि यह भी कि उसे स्वयं इसका पछतावा होगा और मुझसे मिलने के उसके प्रयास उतने ही व्यर्थ होंगे जितने कि अभी हो रहे हैं, ऐसा इसलिए नहीं कि मैं उससे बहुत अधिक प्रेम करता हूं, बल्कि इसलिए कि मैं निश्चित रूप से किसी अन्य स्त्री के प्रेम में पड़ जाऊंगा, जिसके लिए मैं तरसता रहूंगा, जिसका इंतजार करता रहूंगा, और उन घंटों में से एक पल भी गिल्बर्ट के लिए नहीं निकाल पाऊंगा, जो तब मेरे लिए कुछ भी नहीं होगी। और निःसंदेह उसी क्षण (चूंकि मैंने उससे दोबारा न मिलने का निश्चय कर लिया था, जब तक कि वह औपचारिक रूप से स्पष्टीकरण न मांगे या अपने प्रेम का पूर्ण इज़हार न करे, जिनमें से कोई भी अब मुझे मिलने की संभावना नहीं थी) मैं गिलबर्ट को खो चुका था, और उससे पहले से कहीं अधिक प्रेम कर रहा था, और पिछले वर्ष की तुलना में उसके महत्व को बेहतर ढंग से महसूस कर पा रहा था, जब मैं अपनी सभी दोपहरें उसके साथ बिताता था, या जितनी भी मैं चाहता था, और मानता था कि हमारी मित्रता को कोई खतरा नहीं है। निःसंदेह उस क्षण यह विचार कि एक दिन मैं किसी और के लिए भी ऐसी ही भावनाएँ रखूँगा, मुझे घृणित लग रहा था, क्योंकि यह विचार मुझे गिलबर्ट, मेरे प्रेम और मेरे दुखों से परे ले गया। मेरा प्रेम,

मेरे दुख जिनमें आँसुओं के माध्यम से मैंने गिलबर्ट को ठीक से समझने का प्रयास किया, और यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हुआ कि वे केवल उसी से संबंधित नहीं थे, बल्कि देर-सवेर किसी और स्त्री का हिस्सा भी होंगे। इसलिए—या कम से कम उस समय मेरी यही सोच थी—हम हमेशा अपने साथी प्राणियों से अलग-थलग रहते हैं; जब कोई पुरुष उनमें से किसी एक से प्रेम करता है, तो उसे लगता है कि उसका प्रेम उन दोनों के नामों से बंधा नहीं है, बल्कि भविष्य में उसका पुनर्जन्म हो सकता है, या हो सकता है कि अतीत में किसी और के लिए जन्म ले चुका हो, न कि उसके लिए। और जब वह प्रेम में नहीं होता, यदि वह दार्शनिक रूप से इस बात पर विचार करे कि प्रेम में असंगत क्या है, तो उसे पता चलेगा कि जिस प्रेम की वह निडरता से बात कर सकता है, उसे उसने बोलते समय महसूस नहीं किया था, और इसलिए जाना भी नहीं था, क्योंकि इन मामलों में ज्ञान क्षणिक होता है और भावना की वास्तविक उपस्थिति से अधिक समय तक नहीं टिकता। वह भविष्य जिसमें मैं गिल्बर्ट से प्रेम नहीं करूँगा, जिसका अनुमान मेरे कष्टों ने मुझे लगाया, यद्यपि मेरी कल्पना अभी तक उसकी स्पष्ट तस्वीर नहीं बना पाई थी, निश्चित रूप से गिल्बर्ट को यह चेतावनी देने का समय होता कि यह धीरे-धीरे आकार ले रहा है, कि इसका आना, यदि निकट नहीं तो कम से कम अपरिहार्य है, यदि स्वयं गिल्बर्ट मेरी सहायता के लिए न आती और मेरी नवजात उदासीनता को जड़ से नष्ट न कर देती। कितनी बार मैं गिलबर्ट को पत्र लिखने या उससे यह कहने ही वाला था: "अपना ख्याल रखना। मैंने मन बना लिया है। मैं अभी जो कर रहा हूँ, वही मेरा सबसे बड़ा प्रयास है। मैं तुमसे अब आखिरी बार मिल रहा हूँ। बहुत जल्द मैं तुमसे प्रेम करना छोड़ दूँगा।" लेकिन किस उद्देश्य से? किस अधिकार से मैं गिलबर्ट को उस उदासीनता के लिए दोषी ठहराता, जो मैंने स्वयं भी दिखाई थी, हालाँकि मैं स्वयं को उस मामले में

दोषी नहीं मानता था, और वह उदासीनता गिलबर्ट के अलावा हर किसी के प्रति थी? आखिरी बार! मेरे लिए, यह बहुत महत्वपूर्ण प्रतीत होता था, क्योंकि मैं गिलबर्ट से प्रेम करता था। उस पर इसका उतना ही प्रभाव पड़ता जितना उन पत्रों का, जिनमें हमारे मित्र देश छोड़ने से पहले हमसे मिलने आने का अनुरोध करते हैं, और जिसे हम उन उबाऊ महिलाओं के प्रस्तावों की तरह ठुकरा देते हैं जो हमसे प्रेम करती हैं, क्योंकि हमारे अपने सुख-सुविधाएँ भविष्य में मिलने वाली होती हैं। हमारे पास हर दिन जो समय होता है, वह लचीला होता है; हमारी भावनाएँ इसे बढ़ाती हैं, और हमारी प्रेरणाएँ इसे कम करती हैं; और आदतें शेष समय को भर देती हैं।

इसके अलावा, अगर मैं गिलबर्ट से बात करता तो क्या फायदा होता; वह मुझे समझ ही नहीं पाती। हम बोलते समय हमेशा यही सोचते हैं कि हमारे अपने कान, हमारा अपना दिमाग ही सुन रहे हैं। मेरे शब्द उस तक विकृत रूप में ही पहुँचते, मानो किसी झरने के बहते पर्दे से गुज़रने के बाद ही मेरी सहेली तक पहुँचे हों, पहचान से परे, बेतुके से, अर्थहीन। जो सत्य हम अपने शब्दों में पिरोते हैं, वह अपने आप सीधा रास्ता नहीं बनाता, अकाट्य प्रमाणों से समर्थित नहीं होता। शब्दों में उसी स्तर का सत्य आकार लेने में काफी समय लगता है। तब वह राजनीतिक विरोधी, जो तमाम तर्कों और सबूतों के बावजूद प्रतिद्वंद्वी विचारधारा के अनुयायी को देशद्रोही साबित करने की कोशिश करता है, खुद उस घृणित विश्वास का हिस्सा बन जाता है, जिससे वह व्यक्ति, जिसने कभी व्यर्थ ही उसे फैलाने की कोशिश की थी, अब बंधा नहीं रहता। फिर साहित्य की वह उत्कृष्ट कृति, जिसे पढ़कर उसके प्रशंसक उसकी उत्कृष्टता के प्रमाण स्वतः सिद्ध होते हुए प्रतीत करते हैं, जबकि सुनने वालों के लिए वह केवल एक निरर्थक या साधारण छवि प्रस्तुत करती है, उसे भी उन्हीं के द्वारा उत्कृष्ट

कृति घोषित कर दिया जाएगा, लेकिन तब तक लेखक को उनकी इस खोज का पता चल चुका होगा। इसी प्रकार प्रेम में, चाहे कोई कितना भी प्रयास कर ले, बाधाओं को बाहर से नहीं तोड़ा जा सकता, जिसे वे पागलपन से रोकती हैं; जब वह उन बाधाओं से बेपरवाह हो जाता है, तभी अचानक, कहीं और से किए गए प्रयास के फलस्वरूप, उस स्त्री के हृदय में, जिसने उससे प्रेम नहीं किया था, वे बाधाएँ टूट जाती हैं जिन्हें उसने व्यर्थ ही तोड़ने का प्रयास किया था। यदि मैं गिलबर्ट के पास अपनी भावी उदासीनता और उसे रोकने के उपायों के बारे में बताने आया होता, तो वह मेरे इस कार्य से यह समझ जाती कि उसके प्रति मेरा प्रेम, उसकी आवश्यकता, मेरे अनुमान से भी कहीं अधिक है, और इस प्रकार मुझे देखकर उसकी अरुचि और बढ़ जाती। और संयोगवश यह बिलकुल सच है कि उसके प्रति मेरे उसी प्रेम ने, मेरे मन में उत्पन्न होने वाली असंगत मानसिक अवस्थाओं के माध्यम से, मुझे उस प्रेम के अंत को उससे भी अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद की। फिर भी, शायद मैं कुछ समय बाद गिलबर्ट को पत्र द्वारा या अपने शब्दों में ऐसी चेतावनी दे सकता था, जिससे वह मेरे लिए कम अपरिहार्य हो जाती, और उसे भी यह सिद्ध हो जाता कि वह इतनी अपरिहार्य नहीं थी। दुर्भाग्य से, कुछ लोगों ने—अच्छे या बुरे इरादे से—मेरे बारे में उससे इस तरह बात की जिससे उसे लगा होगा कि वे ऐसा मेरे कहने पर कर रहे हैं। जब भी मुझे पता चलता कि कॉटार्ड, मेरी अपनी माँ, यहाँ तक कि एम. डी नॉरपोइस ने भी कुछ गलत शब्दों से मेरे द्वारा किए गए सभी बलिदानों को व्यर्थ कर दिया है, मुझे गलत तरीके से यह आभास दिलाकर कि मैं उससे बाहर निकल आया हूँ, मेरे संयम के सभी लाभ को बर्बाद कर दिया है, तो मुझे दुगना गुस्सा आता था। सबसे पहले तो, मैं अब वर्तमान के अलावा किसी और तारीख से अपने उस परिश्रमपूर्ण और फलदायी संयम की गणना नहीं कर सकता

था, जिसे इन थकाऊ लोगों ने मेरी जानकारी के बिना बाधित कर दिया और व्यर्थ कर दिया। और इतना ही नहीं; मुझे गिलबर्ट से मिलने में कम आनंद आएगा, जो अब मुझे गरिमापूर्ण समर्पण में संयमित रहने वाले व्यक्ति के बजाय, उस मुलाकात के लिए अंधेरे में साजिश रचने वाले व्यक्ति के रूप में देखेगी, जिसे उसने मुझे देने से इनकार कर दिया था। मैंने उन सभी व्यर्थ की बातों को कोसा जो लोग अक्सर, हमें चोट पहुँचाने या हमारी कोई सेवा करने के इरादे के बिना, बिना किसी कारण के, केवल बात करने के लिए, अक्सर इसलिए कि हम स्वयं उनकी उपस्थिति में बोलने से खुद को रोक नहीं पाते हैं, और क्योंकि वे अविवेकी होते हैं (जैसे हम स्वयं हैं), एक महत्वपूर्ण क्षण में हमें इतना नुकसान पहुँचाते हैं। यह सच है कि हमारे प्रेम को मिटाने के लिए चलाए गए इस क्रूर अभियान में उनकी भूमिका उन दो व्यक्तियों की भूमिका के बराबर नहीं है, जिनमें से एक में अत्यधिक अच्छाई और दूसरे में द्वेष है, और जो हर चीज़ के सुलझने के कगार पर पहुँचने पर उसे बिगाड़ देते हैं। लेकिन इन दोनों व्यक्तियों के प्रति हमारे मन में वैसी कोई द्वेष नहीं है, जैसा कि इस संसार के अभागे कॉटार्ड्स के प्रति है, क्योंकि कॉटार्ड तो वह व्यक्ति है जिससे हम प्रेम करते हैं और कॉटार्ड हम स्वयं हैं।

इस बीच, चूंकि जब भी मैं श्रीमती स्वान से मिलने जाती, वे मुझे अपनी बेटी के साथ किसी और दिन चाय पर बुलातीं और मुझसे सीधे उन्हें जवाब देने को कहतीं, इसलिए मैं लगातार गिलबर्ट को पत्र लिखती रही। इन पत्रों में मैंने ऐसे शब्दों का चुनाव नहीं किया जिनसे, मुझे लगता था, उनका दिल जीत लिया जा सके; बल्कि मैंने अपने आंसुओं के सैलाब को बहाने का सबसे आसान रास्ता खोज निकाला। क्योंकि, इच्छा की तरह, पश्चाताप का विश्लेषण नहीं, बल्कि संतुष्टि की चाह होती है। जब कोई प्रेम में पड़ता है, तो वह अपना समय यह जानने में नहीं लगाता कि उसका

प्रेम वास्तव में क्या है, बल्कि अगले दिन मिलने की संभावना बनाने में लगाता है। जब कोई प्रेम छोड़ देता है, तो वह अपने दुःख को जानने की कोशिश नहीं करता, बल्कि उसे दुख देने वाले को उस दुःख की अभिव्यक्ति अर्पित करता है जो उसे सबसे अधिक मार्मिक लगती है। वह वही बातें कहता है जो उसे कहने की आवश्यकता महसूस होती है, और जिन्हें दूसरा नहीं समझ पाएगा; वह केवल अपने लिए बोलता है। मैंने लिखा: "मैंने सोचा था कि यह संभव नहीं होगा। अफसोस, अब मुझे समझ आ रहा है कि यह इतना मुश्किल नहीं है।" मैंने ये भी कहा: "शायद मैं तुमसे दोबारा न मिल पाऊँगा।" मैंने ये शब्द इस तरह कहे कि मैं अपनी बेरुखी को छिपा सकूँ, जिसे वो बनावटी समझ सकती थी। ये शब्द लिखते समय मेरी आँखों में आँसू आ गए, क्योंकि मुझे लगा कि ये वो नहीं कह रहे जो मैं मानना चाहता था, बल्कि वो कह रहे हैं जो शायद होने वाला था। क्योंकि अगली बार जब वो मुझसे मिलने का अनुरोध करेगी, तो मुझे फिर से वही हिम्मत जुटानी पड़ेगी जो अब थी, और बार-बार मना करने के बाद, धीरे-धीरे वो पल आ जाएगा जब उससे दोबारा न मिलने के कारण मैं उससे मिलना ही नहीं चाहूँगा। मैं रोया, लेकिन मैंने त्याग करने की हिम्मत जुटाई। मैंने उसके साथ रहने की खुशी को त्यागने का सुख चखा, इस उम्मीद में कि शायद एक दिन मैं उसे आकर्षक लगूँ, एक ऐसा दिन जब, अफसोस, उसके लिए मेरा आकर्षक लगना मेरे लिए कोई मायने नहीं रखेगा। हालांकि यह मानना बहुत ही असंभव था कि इस समय, जैसा कि उसने मेरी पिछली मुलाकात के दौरान दिखावा किया था, वह मुझसे प्यार करती है, और यह कि जिस व्यक्ति से मैं ऊब चुका हूँ, उसके साथ रहने पर जो ऊब मुझे महसूस होती है, वह केवल ईर्ष्या या उदासीनता का दिखावा मात्र थी, जो मेरी अपनी उदासीनता के समान थी, फिर भी मेरा निर्णय थोड़ा कम कष्टदायी रहा। मुझे लगा कि आने वाले

वर्षों में, जब हम एक-दूसरे को भूल चुके होंगे, जब मैं पीछे मुड़कर उसे बता पाऊँगा कि यह पत्र जो मैं अभी लिख रहा हूँ, एक पल के लिए भी सच्चा नहीं था, तो वह कहेगी, "क्या, तुम सच में मुझसे प्यार करते थे? काश तुम्हें पता होता कि मैं उस पत्र का कितना इंतज़ार करती थी, कितनी उम्मीद करती थी कि तुम मुझसे मिलने आओगे, और उसे पढ़कर मैं कितना रोई थी।" जब मैं यह पत्र लिख रहा था, उसकी मां के घर से लौटने के तुरंत बाद, मेरे मन में यह विचार आया कि शायद मैं उस गलतफहमी को पैदा करने में मदद कर रहा था। इस विचार ने मुझे जो उदासी दी, और गिलबर्ट द्वारा प्यार किए जाने की कल्पना से मुझे जो खुशी मिली, उसी ने मुझे अपना पत्र जारी रखने की प्रेरणा दी।

जब श्रीमती स्वान की चाय पार्टी समाप्त हुई और मैं उनसे विदा ले रही थी, उस समय मैं उनकी बेटी को क्या लिखूँगी, इसके बारे में सोच रही थी, लेकिन श्रीमती कॉटार्ड के मन में बिल्कुल अलग ही विचार चल रहे थे। अपने छोटे से निरीक्षण दौरे पर उन्होंने श्रीमती स्वान को उनके ड्राइंग रूम में रखी नई कलाकृतियों और हाल ही में खरीदी गई वस्तुओं के लिए बधाई दी। उनमें से कुछ वस्तुएँ, हालांकि बहुत कम, ऐसी थीं जो ओडेट के पुराने दिनों में रू ला पेरूज़ में थीं, जैसे कीमती पत्थरों में तराशे गए जानवरों की मूर्तियाँ और उनकी ताबीज़ें।

क्योंकि श्रीमती स्वान ने एक ऐसी सहेली से, जिसकी राय को वह महत्व देती थीं, 'दाउडी' शब्द सीखा था - जिसने उनके लिए एक नया क्षितिज खोल दिया था क्योंकि यह ठीक उन्हीं चीजों को दर्शाता था जिन्हें कुछ साल पहले तक वह 'स्मार्ट' मानती थीं - तब से वे सभी चीजें, एक-एक करके, उस सुनहरी जाली के साथ विदा हो गईं जो उनके गुलदाउदी के फूलों की पृष्ठभूमि का काम करती थी, गिरौक्स की मिठाई के अनगिनत डिब्बे, और मुकुटनुमा नोट-पेपर (साथ ही मेंटलपीस पर बिखरे हुए सुनहरे

गत्ते के सिक्के, जिन्हें स्वान से मिलने से पहले ही एक समझदार व्यक्ति ने उन्हें त्यागने की सलाह दी थी)। इसके अलावा, कलात्मक अव्यवस्था में, कमरों की स्टूडियो जैसी अव्यवस्था में, जिनकी दीवारें अभी भी गहरे रंगों में रंगी हुई थीं, जो उन्हें सफेद-इनेमल्ड ड्राइंग-रूम से बिल्कुल अलग बनाती थीं, जिनमें कुछ समय बाद श्रीमती स्वान को स्थापित किया जाना था, सुदूर पूर्व अठारहवीं शताब्दी की आक्रमणकारी शक्तियों के सामने और भी अधिक पीछे हटता जा रहा था; और वे तकिए, जिन्हें मुझे 'आरामदायक' बनाने के लिए श्रीमती स्वान ने मेरे पीछे ढेर करके रखा था, उन पर लुई XV के फूलों की मालाएँ बनी हुई थीं, न कि पुराने ज़माने के चीनी ड्रैगन। जिस कमरे में वह अक्सर पाई जाती थीं, और जिसके बारे में वह कहती थीं, "हाँ, मुझे यह कमरा पसंद है; मैं इसका बहुत इस्तेमाल करती हूँ। मैं हर समय मुझ पर गालियाँ बरसाते हुए बहुत सारी भद्दी और अश्लील चीज़ों के साथ नहीं रह सकती; यहीं मैं अपना काम करती हूँ ——" हालाँकि उन्होंने कभी स्पष्ट रूप से नहीं बताया कि वह क्या काम कर रही थीं। क्या वह कोई चित्र बना रही थीं? शायद कोई किताब, क्योंकि लेखन का शौक उन महिलाओं में आम होने लगा था जो 'कुछ करना' पसंद करती थीं, न कि बिल्कुल बेकार बैठे रहना। वह ड्रेस्डेन की कलाकृतियों से घिरी हुई थी (उसे उस तरह के चीनी मिट्टी के बर्तनों का विशेष शौक था, जिनका नाम वह अंग्रेजी लहजे में लेती थी और हर संदर्भ में कहती थी: "यह कितना सुंदर है; यह मुझे ड्रेस्डेन के फूलों की याद दिलाता है"), और उसे अपने विचित्र आकृतियों और गमलों के लिए अपने नौकरों के अज्ञानपूर्ण व्यवहार से पहले से भी अधिक डर लगता था, जिन्हें समय-समय पर अपने द्वारा उत्पन्न चिंता का प्रायश्चित करना पड़ता था, जब वे क्रोध के प्रकोप को सहन करते थे, जिसे स्वान, जो सबसे विनम्र और विचारशील स्वामी था, बिना विचलित हुए देखता रहता था। ऐसा

नहीं है कि जिनसे हम प्यार करते हैं, उनकी कुछ कमजोरियों को स्पष्ट रूप से जानने से उनके प्रति हमारा स्नेह किसी भी तरह से कम हो जाता है; बल्कि स्नेह हमें उन कमजोरियों को आकर्षक बना देता है। आजकल ओडेट अपने परिचितों से मिलने के लिए शायद ही कभी उन जापानी लबादों में से किसी एक का इस्तेमाल करती थी, बल्कि वह अक्सर वॉटो गाउन के चमकीले और लहराते रेशम में होती थी, जिसके फूलनुमा झाग को वह अपने सीने पर प्यार से सहलाती थी। वह उस गाउन में डूबी रहती थी, गंभीर दिखती थी, पानी में भीगी रहती थी और खेलती थी, इतने आराम, ठंडी त्वचा और गहरी सांसों के साथ कि ऐसा लगता था मानो वह इन कपड़ों को केवल सजावटी वस्तु या अपने लिए एक आवरण नहीं मानती थी, बल्कि उन्हें अपने सौंदर्य और स्वच्छता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक समझती थी, ठीक उसी तरह जैसे उसका 'टब' या उसका दैनिक 'आउटिंग'। वह अक्सर कहती थी कि वह 'कला' और 'अपने आस-पास की अच्छी चीजों' को छोड़ने के बजाय रोटी के बिना रहना पसंद करेगी, और 'जियोकोंडा' का जलना उसे उन लाखों लोगों के विनाश से कहीं अधिक दुखी करेगा जिन्हें वह जानती थी। उनके सिद्धांत उनके मित्रों को विरोधाभासी लगते थे, लेकिन उन्हीं सिद्धांतों के कारण उनके बीच उनकी छवि श्रेष्ठ बनी रही और उन्हें बेल्जियम के मंत्री से सप्ताह में एक बार मिलने का अवसर मिला। इसलिए, उस छोटी सी दुनिया में, जिसकी वह सूर्य समान थीं, हर कोई यह जानकर आश्चर्यचकित रह जाता कि कहीं और—उदाहरण के लिए, वर्दुरिन परिवार के यहाँ—उन्हें मूर्ख समझा जाता था। अभिव्यक्ति की इसी जीवंतता के कारण श्रीमती स्वान महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संगति को अधिक पसंद करती थीं। लेकिन जब वह महिलाओं की आलोचना करती थीं, तो हमेशा एक वेश्या के दृष्टिकोण से करती थीं, उनकी उन कमियों को

उजागर करती थीं जो पुरुषों की नज़र में उन्हें नीचा दिखा सकती थीं, जैसे कि मोटा शरीर, खराब रंग, वर्तनी की अक्षमता, बालों वाले पैर, दुर्गंधयुक्त श्वास, पेंसिल से सजी भौहें। लेकिन जिस महिला ने अतीत में उनके प्रति दया या उदारता दिखाई हो, उनके प्रति वह अधिक उदार रहती थीं, खासकर यदि वह महिला अब संकट में हो। वह उनका गर्मजोशी से बचाव करते हुए कहती थीं: "लोग उनके साथ न्याय नहीं कर रहे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, वह वास्तव में बहुत अच्छी महिला हैं।"

ओडेट के ड्राइंग रूम का फर्नीचर ही नहीं, बल्कि स्वयं ओडेट को पहचानना भी मुश्किल होता अगर श्रीमती कॉटार्ड और श्रीमती डी क्रेसी के समाज में अक्सर आने-जाने वाले सभी लोग उन्हें कुछ समय से न देख पाए होते। वह बहुत छोटी लग रही थीं। निस्संदेह इसका कुछ कारण यह था कि वह पहले से अधिक स्वस्थ, बेहतर स्थिति में, शांत, सौम्य और शांत प्रतीत हो रही थीं, और साथ ही साथ उनके बालों की नई चोटी ने उनके चेहरे को और अधिक विस्तृत बना दिया था, जो गुलाबी पाउडर के कारण जीवंत लग रहा था, और जिसमें उनकी आंखें और चेहरा, जो पहले बहुत उभरे हुए थे, अब मानो समाहित हो गए थे। लेकिन इस बदलाव का एक और कारण यह था कि जीवन के मोड़ पर पहुँचकर, ओडेट ने अंततः अपनी एक अनूठी शारीरिक बनावट, एक अपरिवर्तनीय 'चरित्र', एक 'सौंदर्य शैली' की खोज या आविष्कार कर लिया था, और अपने असंगत चेहरे पर—जो इतने लंबे समय तक हर खतरे, शरीर की हर कमजोरी के संपर्क में रहा था, थोड़ी सी थकान पर भी आने वाले वर्षों से क्षण भर के लिए युवावस्था की एक झिलमिलाती छाया उधार लेता था, और उसे, उसकी मनोदशा और दिखावट के अनुसार, अच्छे या बुरे रूप में, एक बिखरे हुए, अस्थिर, आकारहीन और आकर्षक चेहरे से सुसज्जित करता था—अब एक तरह से अमर यौवन का यह स्थिर स्वरूप स्थापित कर

चुका था।

स्वान के कमरे में, उनकी पत्नी की उन खूबसूरत तस्वीरों के बजाय, जिनमें वही रहस्यमय, विजयी भाव झलकता था और किसी भी पोशाक और टोपी में, उनके विजयी चेहरे और आकृति को पहचाना जा सकता था, उनकी एक पुरानी, सादी सी डैगरेओटाइप तस्वीर थी, जो इस नए प्रकार के आविष्कार से बहुत पहले ली गई थी। इसलिए, ओडेट की वह युवावस्था और सुंदरता, जो उन्होंने तस्वीर लेते समय अभी तक नहीं पाई थी, उसमें गायब सी लगती थी। लेकिन यह संभव है कि स्वान, अपनी पत्नी के प्रति स्थिर रहने या उनकी एक अलग धारणा पर लौट आने के कारण, चिंतनशील आँखों और थके हुए चेहरे वाली उस दुबली-पतली युवती में, जो विश्राम और गति के बीच की मुद्रा में कैद थी, बॉटिकेली जैसी ही सुंदरता पाते थे। क्योंकि उन्हें अब भी अपनी पत्नी में बॉटिकेली की किसी आकृति की झलक दिखाई देती थी। दूसरी ओर, ओडेट अपने उन पहलुओं को उजागर करने की नहीं, बल्कि उन्हें छिपाने और ढकने की कोशिश करती थी जो उसे पसंद नहीं थे। जो शायद किसी कलाकार के लिए उसके 'चरित्र' को व्यक्त करते हों, लेकिन उसकी स्त्री दृष्टि में वे मात्र दोष थे। वह उस चित्रकार का नाम अपने सामने नहीं लेना चाहती थी। स्वान के पास नीले और गुलाबी रंग का एक अद्भुत प्राच्य रेशमी स्कार्फ था, जिसे उसने इसलिए खरीदा था क्योंकि वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैग्निफिकैट में आवर लेडी ने पहना था। लेकिन श्रीमती स्वान ने उसे पहनने से इनकार कर दिया। केवल एक बार उन्होंने अपने पति को प्राइमावेरा की तरह डेज़ी, कॉर्नफ्लावर, फॉरगेट-मी-नॉट और कैम्पेनुला से सजी पोशाक मंगवाने की अनुमति दी। और कभी-कभी शाम को, जब वह थकी हुई होती, तो वह चुपके से मेरा ध्यान उस तरीके की ओर दिलाता, जिसमें वह बिल्कुल अनजाने में, अपने चिंतनशील हाथों को उस बेकाबू,

लगभग व्याकुल वर्जिन मैरी की तरह गति दे रही होती, जो देवदूत द्वारा दिए गए स्याही के बर्तन में कलम डुबोकर उस पवित्र पृष्ठ पर लिखती है जिस पर पहले से ही "मैग्निफिकैट" शब्द खुदा हुआ है। लेकिन उसने आगे कहा, "जो भी हो, इसके बारे में उससे कुछ मत कहना; अगर उसे पता चल गया कि वह ऐसा कर रही है, तो वह तुरंत अपनी मुद्रा बदल लेगी।"

अनायास विश्राम के इन क्षणों को छोड़कर, जिनमें स्वान ने बॉटिकेली की उदास लय को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया, ओडेट अब एक ही आकृति में तराशी हुई प्रतीत होती थी, पूरी तरह से एक रेखा के भीतर सीमित, जो स्त्री की आकृति का अनुसरण करते हुए, घुमावदार रास्तों, मनमौजी पुनरावृति और उभारों, रेडियल बिंदुओं, पूर्व के दिनों के फैशन के विस्तृत फैलाव को त्याग चुकी थी, लेकिन साथ ही, जहां उसकी शारीरिक रचना आदर्श परिधि के भीतर या बाहर अनावश्यक विचलन करके गलत हो गई थी, वहां वह एक साहसिक स्ट्रोक द्वारा प्रकृति की त्रुटियों को सुधारने में सक्षम थी, अपने मार्ग के एक पूरे खंड के साथ, मानव और वस्त्र दोनों तत्वों की विफलता की भरपाई करने में सक्षम थी। पैड, वह बेतुका 'बस्टल' गायब हो चुका था, साथ ही वे पूंछ वाले कोर्सेट भी जो स्कर्ट के नीचे उभरे हुए और व्हेल की हड्डी की छड़ों से कसे हुए थे, जिन्होंने ओडेट को कृत्रिम पेट जैसा उभार दिया था और उसे ऐसा रूप दिया था मानो वह कई बेमेल टुकड़ों से बनी हो जिनमें कोई व्यक्तिगत जुड़ाव न हो। झालरों का सीधा गिरना, ट्रिमिंग का घुमाव, शरीर के उस झुकाव के लिए जगह बना चुके थे जिससे रेशम ऐसे कांपता था जैसे कोई जलपरी लहरों को हिलाती है, और कैम्ब्रिक को अब एक मानवीय अभिव्यक्ति मिल गई थी क्योंकि वह अब मुक्त हो चुका था, मानो कोई प्राणी आकार लेकर सांस ले रहा हो, उन फैशनों की लंबी अराजकता और धुंधले आवरण से जो अंततः सिंहासन से हटा दिए गए थे। लेकिन श्रीमती

स्वान ने इनमें से कुछ के अवशेषों को उन नए फैशनों के बीच संरक्षित करने का चुनाव किया था, जिन्होंने उन्हें प्रतिस्थापित कर दिया था। जब शाम को, खुद को काम करने में असमर्थ पाकर और यह सोचकर कि गिल्बर्ट अपने दोस्तों के साथ थिएटर गई है, मैं उसके माता-पिता के घर अचानक पहुँच जाती थी, तो अक्सर मुझे श्रीमती स्वान एक सुरुचिपूर्ण अस्त-व्यस्त पोशाक में मिलती थीं, जिसकी स्कर्ट, गहरे लाल या नारंगी रंग की होती थी, जो हमेशा मानो कुछ खास अर्थ रखती थी, क्योंकि वे अब फैशन में नहीं थीं, और उस पर तिरछी, हालांकि छिपी नहीं, काली लेस की एक चौड़ी पट्टी होती थी जो पुराने जमाने के झालरों की याद दिलाती थी। जब वसंत ऋतु की एक ठंडी दोपहर में वह मुझे (अपनी बेटी से मेरे संबंध टूटने से पहले) गार्डन डी'एक्लिमेटेशन ले गई थीं, तो उनके कोट के नीचे, जिसे वह व्यायाम से मिलने वाली गर्मी के अनुसार खोलती या बंद करती थीं, उनके ब्लाउज का दांतेदार किनारा किसी काल्पनिक वेस्टकोट के लैपल की झलक देता था, जैसा कि वह कुछ साल पहले पहना करती थीं, जब उन्हें उनके किनारों पर इसी तरह के हल्के निशान पसंद थे; और उसका स्कार्फ—उसी 'स्कॉच टार्टन' का, जिसके प्रति वह वफादार रही थी, लेकिन जिसके रंगों को उसने इतना नरम कर दिया था कि लाल रंग गुलाबी और नीला बैंगनी हो गया था, कि कोई उसे लगभग उन कबूतर-छाती वाले टैफेटा में से एक समझ सकता था जो उस समय की नवीनतम नवीनता थी—उसकी ठुड्डी के नीचे इस तरह से बंधा हुआ था कि यह पता लगाना मुश्किल था कि यह कहाँ बंधा है, जिससे उन बोनट की डोरियों की याद आना स्वाभाविक था जो अब नहीं पहनी जाती थीं। उसे बस कुछ और समय तक इसी तरह 'बने रहना' था और उसके पहनावे के सिद्धांत को समझने की कोशिश करने वाले युवा कहते: "मैडम स्वान अपने आप में एक युग हैं, है ना?" जैसे एक उत्कृष्ट साहित्यिक

शैली अपने विभिन्न रूपों से एक परंपरा को रेखांकित करती है और इस प्रकार उनमें छिपी परंपरा को मजबूत करती है, वैसे ही मैडम स्वान में भी। स्वान के पहनावे में वेस्टकोट या घुंघराले बालों की धुंधली यादें, कभी-कभी 'सब सवार हो जाओ' की दबी हुई प्रवृत्ति, या 'मेरा पीछा करो' का दूर और अस्पष्ट संकेत, ठोस रूप के नीचे जीवित रखे गए अन्य, पुराने रूपों की अधूरी समानता को दर्शाते थे, जिन्हें अब आप किसी दर्जी या ड्रेसमेकर से दोबारा नहीं बनवा सकते, लेकिन जिनके बारे में आपके विचार लगातार मंडराते रहते थे, और श्रीमती स्वान को एक कुलीनता के आवरण में लपेटे रखते थे—शायद इसलिए कि इन दिखावटी चीजों की निरर्थकता उन्हें उपयोगितावादी उद्देश्य से कहीं अधिक सार्थक बनाती थी, शायद इसलिए कि उनमें बीते वर्षों के निशान संजोए हुए थे, या फिर इसलिए कि इस महिला के वॉर्डरोब में एक प्रकार का व्यक्तित्व व्याप्त था, जो उनके सबसे भिन्न परिधानों को भी एक विशिष्ट पारिवारिक समानता प्रदान करता था। ऐसा लगता था कि वह केवल अपने शरीर के आराम या सजावट के लिए कपड़े नहीं पहनती थीं; वह अपने वस्त्रों से इस प्रकार घिरी हुई थीं मानो किसी सभ्यता के संपूर्ण रूप की नाजुक और आध्यात्मिक मशीनरी से घिरी हों।

जब गिलबर्ट, जो आम तौर पर अपनी चाय-पार्टी उन दिनों देती थी जब उसकी माँ "घर पर" होती थी, को किसी कारणवश बाहर जाना पड़ता था, और इस प्रकार मुझे श्रीमती स्वान की 'केतल्ड्रम' में शामिल होने का समय मिल जाता था, तो मैं उसे उसके सुंदर गाउन में सजे हुए पाती थी, जिनमें से कुछ टैफेटा के, कुछ ग्रोसग्रेन के, या मखमल के, या क्रेप-डी-चाइन के, या साटन या रेशम के होते थे। ये गाउन, घर में पहने जाने वाले गाउन की तरह ढीले नहीं होते थे, बल्कि कसकर बटन लगे होते थे जैसे कि वह अभी-अभी बाहर जा रही हो, जिससे उन दोपहरों में उसकी घर पर

रहने वाली सुस्ती में कुछ चुस्ती और ऊर्जा का संचार होता था। और निःसंदेह, उनके परिधानों की साहसिक सादगी उनकी आकृति और उनके हाव-भाव के लिए एकदम उपयुक्त थी, जिन्हें उनकी आस्तीनें दिन-प्रतिदिन बदलते रंगों में दर्शाती हुई प्रतीत होती थीं: नीले मखमल में एक अचानक दृढ़ संकल्प, सफेद टैफेटा में एक सहज प्रसन्नता और काले क्रेप-डी-चाइन में अपनी बांह को आगे बढ़ाने के उनके तरीके में एक गरिमापूर्ण विवेक झलकता था, मानो वह किसी महान बलिदान करने वाली की मुस्कान से चकाचौंध कर रही हों। लेकिन साथ ही, इन जीवंत गाउनों की जटिल सजावट, जिनमें से किसी का भी कोई व्यावहारिक मूल्य या उद्देश्य नहीं था, एक अलग, विचारशील, रहस्यमय भाव को उभारती थी, जो उस उदासी के अनुरूप था जिसे श्रीमती स्वान हमेशा प्रदर्शित करती थीं, कम से कम उनकी आंखों के नीचे के काले घेरों और झुकी हुई हथेलियों में। नीलम के गहनों, तामचीनी से सजे चार पत्ती वाले तिपतिया घास, चांदी के पदकों, सोने के मेडलों, फ़िरोज़ा के ताबीजों, माणिक की मालाओं और पुखराज के शाहबलूतों की बहुतायत के नीचे, पोशाक पर ही, रंगों से बनी कोई ऐसी डिज़ाइन होती थी जो एक अंतर्निहित पैनल की सतह पर अपना एक पूर्वनिर्धारित अस्तित्व समेटे रहती थी, साटन के छोटे-छोटे बटनों की कोई पंक्ति होती थी जो न तो बंद होती थी और न ही खोली जा सकती थी, एक लेस की पट्टी होती थी जो सूक्ष्मता और एक नाजुक संकेत की विवेकशीलता से आंखों को भाने का प्रयास करती थी; और ये, साथ ही अन्य गहने भी, एक गुप्त इरादे को प्रकट करने, स्नेह की प्रतिज्ञा होने, एक रहस्य को छुपाने, किसी अंधविश्वास को बढ़ावा देने, बीमारी से ठीक होने, किसी मनोकामना की पूर्ति, प्रेम प्रसंग या किसी 'फिलिपिन' की याद दिलाने का प्रभाव रखते थे। और कभी-कभार चोली के नीले मखमल में हेनरी द्वितीय की शैली में

'स्लैश' की हल्की सी झलक, काले साटन के गाउन में एक हल्की सी उभार, जो अगर कंधों के ठीक नीचे आस्तीनों में होती, तो 1830 की 'मटन लेग' आस्तीनों की याद दिलाती, या दूसरी ओर, अगर लुई XV शैली के पैनियर वाले स्कर्ट के नीचे होती, तो पोशाक को 'फैंसी ड्रेस' का हल्का सा आभास देती और हर हाल में, आज के जीवन में अतीत की एक धुंधली सी याद को समाहित करके, श्रीमती स्वान के व्यक्तित्व में इतिहास या रोमांस की कुछ नायिकाओं का आकर्षण समाहित कर देती। और अगर मैं उनका ध्यान इस ओर दिलाती: "मैं गोल्फ नहीं खेलती," तो वे जवाब देतीं, "मेरे कई दोस्तों की तरह। इसलिए मेरे पास उनके जैसे स्वेटर पहनकर घूमने का कोई बहाना नहीं है।"

अपने ड्राइंग रूम की अव्यवस्था में, एक आगंतुक को विदा करते हुए या किसी दूसरे को लुभाने के लिए केक से भरी थाली लिए, श्रीमती स्वान जब मेरे पास से गुजरतीं तो मुझे एक पल के लिए अलग ले जातीं: "गिल्बर्ट से मुझे विशेष निर्देश मिले हैं कि आपको परसों दोपहर के भोजन पर आना है। चूंकि मुझे यकीन नहीं था कि आप यहां आएंगे, इसलिए अगर आप नहीं आते तो मैं आपको पत्र लिखने वाली थी।" मैं विरोध करता रहा। और यह विरोध धीरे-धीरे कम होता जा रहा था, क्योंकि चाहे कोई उस जहर से कितना भी प्यार करे जो उसे नष्ट कर रहा है, जब उसे मजबूरी में उसके बिना रहना पड़ता है, और कुछ समय से ऐसा ही चल रहा है, तो मन की उस शांति को, जिसे उसने खो दिया था, भावनाओं और पीड़ा की अनुपस्थिति को एक विशेष महत्व दिए बिना नहीं रहा जा सकता। यदि कोई अपने आप को यह विश्वास दिलाने में पूरी तरह ईमानदार नहीं है कि वह जिसे प्यार करता है उसे फिर कभी नहीं देखना चाहता, तो वह यह कहने में भी जरा भी ईमानदार नहीं होगा कि वह उसे देखना चाहता है। निस्संदेह, उसकी अनुपस्थिति को तभी सहन किया जा

सकता है जब स्वयं से यह वादा किया जाए कि यह अधिक समय तक नहीं रहेगी, और उस दिन के बारे में सोचा जाए जब उसे फिर से देखा जा सकेगा, लेकिन साथ ही यह भी एहसास होता है कि तत्काल और लगातार टलती हुई मुलाकात के वे दैनिक सपने कितने कम कष्टदायक हैं, बजाय उस मुलाकात के जिसके बाद ईर्ष्या का दौरा पड़ सकता है, और परिणामस्वरूप, जिसे आप प्यार करते हैं उससे जल्द ही मिलने की खबर एक ऐसी बेचैनी पैदा कर सकती है जो बिल्कुल भी सुखद नहीं होगी। अब जो हम दिन-प्रतिदिन टालते रहते हैं, वह अब अलगाव के कारण होने वाली असहनीय चिंता का अंत नहीं है, बल्कि भावनाओं का वह भयावह नवीनीकरण है जो किसी भी परिणाम की ओर नहीं ले जा सकता। ऐसी किसी भी मुलाकात की तुलना में हम उस शांत स्मृति को कितना अधिक पसंद करते हैं जिसे हम अपनी इच्छा अनुसार सपनों से भर सकते हैं, जिसमें वह जो वास्तव में प्यार नहीं करती, ऐसा प्रतीत होता है कि वह अकेले में हमारे लिए अपने प्यार का इजहार कर रही है; वह स्मृति जिसे हम अपनी इच्छाओं के अंशों को धीरे-धीरे मिलाकर, अपनी इच्छानुसार सुखद बना सकते हैं, वह उस टाले गए साक्षात्कार से कहीं अधिक श्रेष्ठ है जिसमें हमें एक ऐसे प्राणी से निपटना पड़ता है जिसे हम अपनी इच्छा अनुसार अपने मनचाहे शब्द नहीं सुना सकते, बल्कि जिससे हमें नई शीतलता और अप्रत्याशित हिंसा का सामना करना पड़ता है। हम सभी जानते हैं, जब हमारा प्रेम समाप्त हो जाता है, कि विस्मृति, यहाँ तक कि एक धुंधली स्मृति भी हमें उतना कष्ट नहीं देती जितना एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम देता है। ऐसी ही विस्मृति की आशा में, मैंने अनजाने में ही, उस शांत और स्थिर अवस्था को प्राथमिकता दी।

इसके अलावा, मानसिक अलगाव और एकांत के इस दौर में जो भी असुविधा होती है, वह एक और कारण से धीरे-धीरे कम होती जाती है,

और वह यह है कि यह प्रेम की उस स्थिर आसक्ति को ठीक करने की प्रक्रिया में कमजोर पड़ जाती है। मेरी आसक्ति अभी भी इतनी मजबूत थी कि मैं गिल्बर्ट की नज़र में अपनी पुरानी स्थिति को पुनः प्राप्त करने की उम्मीद कर सकता था, जो मेरे जानबूझकर परहेज को देखते हुए, मुझे लगता था, लगातार बढ़ रही होगी; दूसरे शब्दों में, वे सभी शांत और उदास दिन, जब मैं उसे नहीं देखता था, बिना किसी रुकावट के एक के बाद एक आते रहते थे, और बिना किसी नियम के भी (जब तक कि कोई दखलंदाजी करने वाला मेरे मामलों में हस्तक्षेप न करे), मेरे लिए व्यर्थ नहीं बल्कि लाभप्रद थे। हालांकि, यह लाभ व्यर्थ हो सकता था, क्योंकि जल्द ही वे घोषणा कर सकते थे कि मैं ठीक हो गया हूँ। त्याग, हमारी आदतों को नियंत्रित करते हुए, हमारी शक्ति के कुछ तत्वों को अनिश्चित काल तक बढ़ाने की अनुमति देता है। गिलबर्ट से मेरे अलगाव की पहली शाम को, मेरे दुख को सहारा देने के लिए मेरे पास जो कुछ भी था—जो इतना अपर्याप्त था—वह तब से अनगिनत गुना बढ़ गया था। लेकिन, अस्तित्व में मौजूद हर चीज की अपनी निरंतरता बनाए रखने की प्रवृत्ति कभी-कभी अचानक आवेगों से बाधित हो जाती है, जिनके आगे हम बिना किसी संकोच के बह जाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि कितने दिनों तक, कितने महीनों तक हम खुद को रोक पाए हैं, और अभी भी रोक सकते हैं। और अक्सर ऐसा तब होता है जब हमारी बचत का पर्स लगभग भर जाता है, तब हम उसे खोलकर खाली कर देते हैं, हम अपने चिकित्सा उपचार के परिणाम की प्रतीक्षा किए बिना और जब हम इसके अभ्यस्त हो जाते हैं, तब इसे छोड़ देते हैं। तो, एक दिन, जब श्रीमती... स्वान अपनी जानी-पहचानी बात दोहरा रही थी कि गिलबर्टे को मुझे देखकर कितनी खुशी होगी, इस तरह वह उस खुशी को, जिससे मैं इतने लंबे समय से खुद को वंचित रख रहा था, मानो मेरे बिल्कुल करीब ला रही थी। यह जानकर मैं

दंग रह गया कि मेरे लिए अभी भी उस खुशी का आनंद लेना संभव है, और मैं अगले दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था, जब मैंने शाम को, खाने से पहले, गिलबर्टे को अचानक सरप्राइज देने का मन बना लिया था।

अगले लंबे दिन में धैर्य बनाए रखने में मेरी मदद मेरी एक और योजना ने की। जिस क्षण सब कुछ भुला दिया गया, जिस क्षण मेरा गिलबर्ट से सुलह हो गया, उस क्षण से मैं उससे केवल एक प्रेमी के रूप में ही मिलना चाहता था। हर दिन उसे मेरे द्वारा उगाए गए सबसे सुंदर फूल मिलने चाहिए थे। और यदि श्रीमती स्वान, हालांकि उन्हें इतनी सख्त माँ होने का कोई अधिकार नहीं था, मुझे हर दिन फूल चढ़ाने से मना कर दें, तो मैं अन्य उपहार ढूंढ लूंगा, जो अधिक कीमती और कम बार दिए जाने वाले हों। मेरे माता-पिता ने मुझे महंगे सामान खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं दिए थे। मैंने एक पुराने चीनी मिट्टी के बड़े कटोरे के बारे में सोचा जो मुझे चाची लियोनी ने दिया था, और जिसके बारे में माँ रोज़ भविष्यवाणी करती थीं कि फ्रांस्वा दौड़कर उनके पास आएगी और कहेगी, "ओह, यह तो टूट गया!" और फिर इसका अंत हो जाएगा। ऐसे में क्या इसे बेच देना, गिलबर्ट को जितना हो सके उतना सुख देना, बेहतर नहीं होगा? मुझे पूरा विश्वास था कि मैं इसे आसानी से एक हजार फ्रैंक में बेच सकता हूँ। मैंने उसे कागज़ में लपेटकर रखा था; मुझे उसकी इतनी आदत हो गई थी कि मैंने उस पर ध्यान देना ही बंद कर दिया था; उससे अलग होने का कम से कम इतना तो फायदा हुआ कि मुझे एहसास हुआ कि वह कैसा था। मैं उसे अपने साथ लेकर स्वान्स के घर के लिए रवाना हुई और ड्राइवर को उनका पता देकर उसे शैंप्स-एलिसीज़ से जाने को कहा, जिसके एक छोर पर पूर्वी वस्तुओं के एक बड़े व्यापारी की दुकान थी, जो मेरे पिता को जानता था। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने मुझे कटोरे के लिए एक हज़ार नहीं बल्कि दस हज़ार फ्रैंक दिए। मैंने खुशी-खुशी नोट ले लिए। पूरे

एक साल तक, मैं रोज़ गिल्बर्ट को गुलाब और बकाइन के फूलों से सजा सकती थी। जब मैं दुकान से निकली और अपनी टैक्सी में वापस बैठी तो ड्राइवर (स्वाभाविक रूप से, क्योंकि स्वान्स बोइस के पास रहते थे) सामान्य रास्ते के बजाय मुझे एवेन्यू डेस शैंप्स-एलिसीज़ से ले जाने लगा। रू डे बेरी के आखिरी छोर को पार करते ही, ढलते उजाले में, मुझे लगा कि स्वान्स के घर के पास, लेकिन दूसरी दिशा में, उससे दूर जाती हुई, गिलबर्ट धीरे-धीरे, लेकिन दृढ़ कदमों से, एक युवक के साथ चल रही थी, जिससे वह बातें कर रही थी, लेकिन जिसका चेहरा मैं पहचान नहीं पाया। मैं टैक्सी में खड़ा हो गया, ड्राइवर को रुकने के लिए कहने के इरादे से; फिर हिचकिचा गया। टहलते हुए दंपति पहले ही काफी दूर जा चुके थे, और उनकी धीमी चाल से बन रही समानांतर रेखाएं स्वर्ग के धुंधलके में गायब होने वाली थीं। एक पल बाद, मैं गिलबर्ट के दरवाजे पर पहुँच गया। श्रीमती स्वान ने मेरा स्वागत किया। "ओह! उसे बहुत दुख होगा!" मैंने अभिवादन किया, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि वह घर पर क्यों नहीं है। वह अभी-अभी एक पाठ से घर आई है, गर्मी की शिकायत कर रही थी, और कहा कि वह एक दूसरी लड़की के साथ थोड़ी ताजी हवा लेने बाहर जा रही है।" "मुझे लगता है कि मैं उससे एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसीज़ में मिला था।" "ओह, मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो सकता है। खैर, उसके पिता को मत बताना; उन्हें रात के इस समय उसका बाहर जाना पसंद नहीं है। क्या तुम्हें जाना ही है? अलविदा।" मैं उसे छोड़कर चला गया, अपने ड्राइवर को उसी रास्ते से घर जाने को कहा, लेकिन उन दोनों चलते-फिरते लोगों का कोई निशान नहीं मिला। वे कहाँ गए थे? अंधेरे में वे एक-दूसरे से इतनी गुप्त रूप से क्या बातें कर रहे थे?

मैं दस हज़ार फ़्रैंक की अपनी अचानक मिली दौलत को बड़ी मुश्किल से थामे घर लौटा, जिससे मैं उस गिल्बर्ट के लिए कई सुखद आश्चर्यों का

इंतज़ाम कर सकता था, जिसे अब मैंने फिर कभी न देखने का निश्चय कर लिया था। निस्संदेह, व्यापारी के यहाँ जाने से मुझे खुशी मिली थी क्योंकि मुझे यह उम्मीद थी कि भविष्य में जब भी मैं अपनी सहेली से मिलूंगा, वह मुझसे प्रसन्न और आभारी होगी। लेकिन अगर मैं वहाँ न गया होता, अगर मेरे तांगा चालक ने मुझे एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसीज़ से न ले गया होता, तो मैं गिल्बर्ट को उस युवक के साथ न देख पाता। इस प्रकार एक ही क्रिया के दो विरोधाभासी प्रभाव हो सकते हैं, और उससे उत्पन्न दुर्भाग्य उस सौभाग्य को नष्ट कर देता है जो पहले ही आ चुका होता है। मेरे साथ अक्सर होने वाली घटना के ठीक विपरीत हुआ था। हम किसी सुख की इच्छा रखते हैं, और उसे प्राप्त करने के भौतिक साधन उपलब्ध नहीं होते। लैब्रूयेर कहते हैं, "पर्याप्त धन के बिना प्रेम करना एक गलती है।" ऐसे में उस सुख की इच्छा को धीरे-धीरे समाप्त करने के प्रयास के अलावा कोई चारा नहीं है। हालांकि, मेरे मामले में, भौतिक साधन तो उपलब्ध थे, लेकिन उसी क्षण, यदि तार्किक प्रभाव से नहीं, तो कम से कम उस प्रारंभिक सफलता के आकस्मिक परिणाम के रूप में, मेरा सुख मुझसे छीन लिया गया था।

क्योंकि, देखा जाए तो, ऐसा लगता है मानो यह हमेशा से ऐसा ही होता आया है। हालांकि, आमतौर पर ऐसा उसी शाम को नहीं होता जब हमें वह सब कुछ मिल जाता है जिससे यह संभव हो पाता है। आम तौर पर, हम कुछ और समय तक संघर्ष और आशा करते रहते हैं। लेकिन सुख कभी साकार नहीं हो पाता। यदि हम परिस्थितियों के बल पर विजय प्राप्त कर भी लेते हैं, तो प्रकृति तुरंत युद्धक्षेत्र को बदल देती है, उसे हमारे भीतर स्थापित कर देती है, और हमारे हृदय में धीरे-धीरे परिवर्तन लाती है जब तक कि वह उस चीज़ से कुछ अलग चाहने न लगे जो उसे प्राप्त होने वाली है। और यदि यह परिवर्तन इतना तीव्र होता है कि हमारे हृदय को

बदलने का समय ही नहीं मिलता, तो प्रकृति इस कारण से भी हमें जीतने से पीछे नहीं हटती, बल्कि अधिक धीरे-धीरे, अधिक सूक्ष्म, लेकिन कम प्रभावी नहीं, तरीके से जीत लेती है। तब, अंतिम क्षण में, हमारी खुशी हमसे छीन ली जाती है, या यूं कहें कि वही चीज है जिसका उपयोग प्रकृति अपनी धूर्त चालाकी से हमारी खुशी को नष्ट करने के लिए करती है। जीवन और कर्म के हर क्षेत्र में असफलता के बाद, प्रकृति हमारे भीतर एक अंतिम अक्षमता, सुख के लिए मानसिक अक्षमता, उत्पन्न करती है। खुशी की अनुभूति या तो प्रकट ही नहीं होती, या फिर तुरंत ही सबसे कड़वी प्रतिक्रियाओं में तब्दील हो जाती है।

मैंने अपने दस हज़ार फ़्रैंक एक दराज में रख दिए। लेकिन अब उनका मेरे लिए कोई उपयोग नहीं था। वे इतनी जल्दी खर्च हो गए कि जैसे मैं गिल्बर्ट को रोज़ फूल भेजता, उससे भी जल्दी। शाम होते-होते मैं इतना दुखी हो जाता था कि घर में नहीं रह पाता था और उन स्त्रियों के पास जाकर अपना दुख बाँटता था जिनसे मुझे प्रेम नहीं था। गिल्बर्ट को किसी भी प्रकार का सुख देने की बात तो मैंने सोची ही नहीं थी; अब उसके घर जाना मेरे कष्टों को और बढ़ा देता। गिल्बर्ट को देखना भी, जो कल तक मेरे लिए कितना सुखद होता, अब पर्याप्त नहीं था। क्योंकि जब तक मैं उसके साथ नहीं होता, तब तक मैं दुखी ही रहता। इसी तरह एक स्त्री, हम पर हर नए अत्याचार से, अक्सर अनजाने में ही, हम पर अपना अधिकार और साथ ही साथ अपनी माँगें भी बढ़ा देती है। हर बार जब वह हमें चोट पहुँचाती है, तो वह हमें और भी गहराई से घेर लेती है, हमारी बेड़ियों को दुगुना कर देती है—लेकिन उन बेड़ियों की ताकत को आधा कर देती है जिन्हें हम अब तक उसे बांधने के लिए पर्याप्त समझते थे ताकि हम अपनी मानसिक शांति बनाए रख सकें। कल तक, अगर मुझे गिल्बर्ट को नाराज़ करने का डर न होता, तो मैं केवल कभी-कभार

मुलाकातों से ही संतुष्ट हो जाता, जो अब मुझे संतुष्ट नहीं करतीं और जिनके बदले मैं बिल्कुल अलग शर्तें रखता। क्योंकि इस मामले में प्रेम युद्ध जैसा नहीं है; युद्ध समाप्त होने के बाद हम और भी जोश से लड़ाई शुरू करते हैं, और हम जितनी बुरी तरह हारते हैं, उतना ही अधिक जोश बढ़ाते हैं, बशर्ते कि हम अभी भी लड़ने की स्थिति में हों। गिल्बर्ट के मामले में मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी। साथ ही, पहले तो मैं उसकी माँ को दोबारा नहीं देखना चाहता था। यह सच है कि मैं खुद को यही यकीन दिलाता रहा कि गिल्बर्ट मुझसे प्यार नहीं करती, कि मैं यह बहुत लंबे समय से जानता हूँ, कि अगर मैं चाहूँ तो उससे दोबारा मिल सकता हूँ, और अगर मैं न चाहूँ तो समय के साथ उसे भूल जाऊँगा। लेकिन ये विचार, किसी ऐसी दवा की तरह जिसका कुछ बीमारियों पर कोई असर नहीं होता, उन दो समानांतर रेखाओं को मिटाने में बिल्कुल असमर्थ थे जिन्हें मैं लगातार देख रहा था, गिलबर्ट और उस युवक द्वारा बनाई गई रेखाएँ जो धीरे-धीरे एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसीज़ पर गायब हो रही थीं। यह एक नई विपत्ति थी, जो बाकी विपत्तियों की तरह धीरे-धीरे अपनी शक्ति खो देगी, एक नई छवि जो एक दिन मेरे मन में पूरी तरह से हर हानिकारक तत्व से मुक्त होकर प्रकट होगी, जैसे वे घातक जहर जिन्हें बिना किसी खतरे के छुआ जा सकता है, या जैसे डायनामाइट का एक टुकड़ा जिसका उपयोग बिना विस्फोट के डर के सिगरेट जलाने के लिए किया जा सकता है। इस बीच, मेरे भीतर एक और शक्ति थी जो उस अस्वस्थ शक्ति को पराजित करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रही थी जो मुझे अभी भी, बिना किसी परिवर्तन के, गोधूलि बेला में चलती हुई गिलबर्ट की आकृति दिखा रही थी: स्मृति के नए हमलों के आघात का सामना करने और उसे तोड़ने के लिए, मेरे पास दूसरी तरफ प्रभावी ढंग से काम कर रही कल्पना थी। पहली शक्ति मुझे बार-बार चैंप्स-एलिसी में

टहलते उस जोड़े की छवि दिखाती रही और अतीत से जुड़ी कुछ अप्रिय तस्वीरें भी मेरे सामने पेश करती रही, जैसे कि गिलबर्ट का अपनी मां के कहने पर कंधे उचकाना, जब उसकी मां ने उसे रुककर मेरा मनोरंजन करने के लिए कहा था। लेकिन दूसरी शक्ति, मेरी आशाओं के कैनवास पर काम करते हुए, एक ऐसे भविष्य की रूपरेखा प्रस्तुत करती रही जो इस दयनीय अतीत से कहीं अधिक आकर्षक और विकसित था, जो अंततः इतना सीमित था। गिलबर्ट के उदास चेहरे को देखने के एक पल में ही, मैंने कितने ही पलों में अपनी संतुष्टि के लिए वे सभी कदम सोचे जो वह हमारे सुलह की ओर, शायद हमारी सगाई की ओर भी उठाने वाली थी। यह सच है कि यह शक्ति, जिसे मेरी कल्पना भविष्य पर केंद्रित कर रही थी, वास्तव में अतीत से ही प्रेरणा ले रही थी। मैं अब भी उससे प्यार करता था, जिसे, सच है, मैं नफरत करता था। लेकिन जब भी कोई मुझसे कहता कि मैं अच्छा दिख रहा हूँ या अच्छे कपड़े पहने हुए हूँ, तो मेरी इच्छा होती कि काश वह मुझे देखने के लिए वहाँ होती। इस दौरान कई लोगों की मुझे अपने घर बुलाने की इच्छा से मैं चिढ़ गई और मैंने उनके सभी निमंत्रण ठुकरा दिए। घर पर हंगामा मच गया क्योंकि मैं अपने पिता के साथ उस आधिकारिक भोज में नहीं गई थी जिसमें बोंटेम्प परिवार अपनी भतीजी अल्बर्टीन के साथ उपस्थित होने वाला था, जो अभी बच्ची ही थी। इस तरह हमारे जीवन के विभिन्न कालखंड एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने से तिरस्कारपूर्वक इनकार कर देते हैं जिसे हम प्यार करते हैं और जो एक दिन हमारे लिए महत्वहीन हो जाएगा, जबकि दूसरा व्यक्ति आज महत्वहीन है, जिससे हमें कल प्यार हो जाएगा, जिससे शायद, अगर हम अभी मिलने के लिए राजी हो जाते, तो हमें थोड़ा पहले ही प्यार हो जाता और इस तरह हमारे वर्तमान कष्टों का अंत हो जाता, और उनकी जगह दूसरे आ जाते। मेरे

कष्ट धीरे-धीरे कम होते जा रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे हृदय में एक दिन एक भावना जागती, अगले दिन दूसरी, जो आमतौर पर गिलबर्ट से संबंधित किसी आशा या भय से प्रेरित होती थी। उस गिलबर्ट के लिए जिसे मैंने अपने भीतर संजो रखा था। मुझे खुद को याद दिलाना चाहिए था कि दूसरी, असली गिलबर्ट, शायद मेरी गिलबर्ट से पूरी तरह अलग थी, उसे उन पछतावों के बारे में कुछ भी पता नहीं था जो मैंने उस पर थोपे थे, वह शायद मेरे बारे में मुझसे कम सोच रही थी, न केवल इसलिए कि मैं उसके बारे में उससे ज्यादा सोच रही थी, बल्कि इसलिए भी कि जब मैं अपनी काल्पनिक गिलबर्ट के साथ अकेले में थी, यह सोच रही थी कि मेरे बारे में उसकी भावनाएं वास्तव में क्या थीं और इसलिए उसकी एकाग्रता को लगातार अपनी ओर निर्देशित मान रही थी, तो मैंने उसे मेरे बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया था।

उन समयों में जब हमारे मन की कड़वाहट, यद्यपि धीरे-धीरे कम होती जाती है, फिर भी बनी रहती है, तो हमें दो बातों में अंतर करना आवश्यक है: एक वह कड़वाहट जो उस व्यक्ति के बारे में लगातार सोचने से उत्पन्न होती है और दूसरी वह जो कुछ यादों, किसी तीखे शब्द या उसके द्वारा लिखे गए किसी पत्र के शब्दों से जागृत होती है। उस कड़वाहट के विभिन्न रूपों की हम तब चर्चा करेंगे जब हम एक अन्य प्रेम प्रसंग पर विचार करेंगे; फिलहाल इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि इन दोनों प्रकारों में से पहला प्रकार कहीं कम क्रूर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उस व्यक्ति की हमारी छवि, जो हमेशा हमारे भीतर विद्यमान रहती है, उस आभा से सुशोभित होती है जिसे हम भी जल्द ही उसे प्रदान करने वाले हैं, और यदि आशा की निरंतर सांत्वना के नहीं, तो कम से कम एक स्थायी दुःख की शांति के चिह्न धारण करती है। (यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस व्यक्ति से हमें पीड़ा मिलती है, उसकी छवि प्रेम के दुख को बढ़ाने वाली,

उसे लंबा खींचने वाली और उससे उबरने में बाधा डालने वाली जटिलताओं में नगण्य होती है, ठीक वैसे ही जैसे कुछ बीमारियों में कारण उसके बाद आने वाले बुखार और ठीक होने में लगने वाले समय की तुलना में महत्वहीन होता है।) लेकिन अगर हमारे प्रिय व्यक्ति का विचार एक ऐसे मन से प्रकाश की किरण पकड़ता और प्रतिबिंबित करता है जो कुल मिलाकर आशावादी है, तो उन विशेष यादों, उन चुभने वाले शब्दों, उस शत्रुतापूर्ण पत्र (मुझे गिल्बर्ट से केवल एक ही ऐसा पत्र मिला जिसे इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है) के साथ ऐसा नहीं होता; आप कहेंगे कि वह व्यक्ति स्वयं उन टुकड़ों में निवास करता था, चाहे वे कितने ही कम और बिखरे हुए क्यों न हों, और वहाँ उस शक्ति से कई गुना अधिक निवास करता था जिसकी तुलना में वह उस छवि से बहुत कम है जो हम उसके बारे में समग्र रूप से बनाने के आदी हैं। क्योंकि पत्र को - प्रिय प्राणी की छवि की तरह - हमने पश्चाताप की उदासी भरी शांति में नहीं देखा है; हमने इसे पढ़ा है, एक अनपेक्षित विपत्ति से उत्पन्न भयानक पीड़ा में डूबकर इसे आत्मसात किया है। इस प्रकार के दुःख हमें एक अलग तरीके से आते हैं; बाहर से; और सबसे क्रूर पीड़ा के मार्ग से होकर वे हमारे हृदय में प्रवेश कर जाते हैं। हमारे मन में हमारे मित्र की जो छवि है, जिसे हम प्राचीन, मूल और प्रामाणिक मानते हैं, वास्तव में उसने उसे कई बार नया रूप दिया है। वह क्रूर स्मृति स्वयं पुनर्निर्मित छवि के समकालीन नहीं है, वह एक अलग युग की है, वह एक भयावह अतीत की दुर्लभ गवाहों में से एक है। लेकिन चूंकि यह अतीत आज भी विद्यमान है, सिवाय हमारे, जिन्होंने इसके स्थान पर स्वर्णिम युग, एक स्वर्ग, जहां समस्त मानव जाति का सामंजस्य स्थापित होगा, की कल्पना कर रखी है, इसलिए वे स्मृतियाँ, वे पत्र हमें वास्तविकता में वापस ले जाते हैं, और उनके द्वारा उत्पन्न अचानक पीड़ा से हमें यह एहसास दिलाते हैं कि कुछ

होने की प्रतीक्षा में प्रतिदिन उत्पन्न होने वाली निराधार आशाओं ने हमें उस वास्तविकता से कितना दूर कर दिया है। ऐसा नहीं है कि यह वास्तविकता हमेशा एक जैसी ही रहेगी, हालांकि कभी-कभी ऐसा हो भी जाता है। हमारे जीवन में कई ऐसी महिलाएं होती हैं जिनसे हम दोबारा मिलना नहीं चाहते, और जिन्होंने हमारी इस खामोशी का स्वाभाविक जवाब गहरी खामोशी से दिया है। लेकिन उनके मामले में, चूंकि हमने उनसे कभी प्यार नहीं किया, इसलिए हमने उनसे बिछड़े सालों को गिना भी नहीं, और यह उदाहरण, जो हमारे पूरे तर्क को गलत साबित कर सकता है, हम एकांत के उपचारात्मक प्रभाव पर विचार करते समय भूल जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पूर्वाभास में विश्वास करने वाले लोग उन सभी मौकों को भूल जाते हैं जब उनका पूर्वाभास सच नहीं हुआ।

लेकिन, कुछ समय बाद, अनुपस्थिति कारगर साबित हो सकती है। हमें फिर से देखने की इच्छा, हमारी लालसा, उस हृदय में फिर से जन्म ले सकती है जो वर्तमान में हमसे घृणा करता है। बस, हमें समय को जगह देनी होगी। अब, समय से हमारी अपेक्षाएँ उतनी ही अधिक होती हैं जितनी कि बदलते हुए हृदय की। एक तो, समय ही वह चीज़ है जिसे हम सबसे कम देना चाहते हैं, क्योंकि हमारा अपना दुख तीव्र होता है और हम उसे जल्द से जल्द समाप्त करना चाहते हैं। और फिर, जिस समय अंतराल में दूसरे हृदय को अपना परिवर्तन करना होता है, उस समय तक हमारा अपना हृदय भी स्वयं को परिवर्तित करने में व्यतीत हो चुका होता है, इसलिए जब हमारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने योग्य हो जाता है, तो वह लक्ष्य मात्र नहीं रह जाता, या उसे प्राप्त करने योग्य नहीं लगता। हालाँकि, यह विचार कि वह प्राप्त करने योग्य होगा, कि जो चीज़ हमारे लिए सौभाग्य का संकेत नहीं देती, वह अंततः सौभाग्य नहीं है, यह विचार सत्य का एक अंश मात्र है। हमारा सौभाग्य हमें तब प्राप्त होता है जब हम

उसके प्रति उदासीन हो जाते हैं। लेकिन हमारी उदासीनता ने ही हमें कम अपेक्षाशील बना दिया होगा, और हमें बाद में यह विश्वास दिलाया होगा कि यदि यह सौभाग्य उस समय आया होता जब शायद यह हमें बेहद अपर्याप्त लगता, तो हम अपने सौभाग्य पर अत्यधिक प्रसन्न होते। लोगों को संतुष्ट करना बहुत कठिन नहीं होता, और न ही वे उन मामलों के अच्छे पारखी होते हैं जिनमें उनकी कोई रुचि नहीं होती। जिस व्यक्ति से अब हम प्रेम नहीं करते, उसकी मित्रतापूर्ण पहल, जो हमारी उदासीनता के कारण हमें अत्यधिक लगती है, शायद हमारे प्रेम को संतुष्ट करने में बहुत कम पड़ती। उन कोमल शब्दों, उस निमंत्रण या स्वीकृति के बारे में हम केवल उस आनंद के बारे में सोचते हैं जो उनसे हमें मिलता, न कि उन सभी अन्य भाषणों और मुलाकातों के बारे में जिन्हें हम तुरंत देखना चाहते थे, और जिन्हें हम शायद अपनी लालसा के कारण कभी होने ही नहीं देते। इसलिए हम कभी भी निश्चित नहीं हो सकते कि प्रेम समाप्त होने के बाद जो सौभाग्य हमें मिलता है, वह उस सौभाग्य के बिल्कुल समान है जिसकी कमी ने हमें कभी दुखी किया था। यह निर्णय केवल एक ही व्यक्ति कर सकता है; हमारा उस समय का अहंकार; वह अब हमारे साथ नहीं है, और यदि वह पुनः प्रकट हो जाए, तो निःसंदेह वह हमारे सौभाग्य को—चाहे वह समान हो या नहीं—लुप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

एक ऐसे सपने की मृत्यु के बाद पूर्ति होने की प्रतीक्षा में, जिसमें मुझे समय आने पर बहुत अधिक रुचि नहीं होनी चाहिए थी, क्योंकि मुझे उन दिनों की तरह ही, जब मैं गिल्बर्ट को मुश्किल से ही जानता था, उसके भाषण और पत्र गढ़ने पड़ रहे थे जिनमें उसने मुझसे क्षमा मांगी थी, शपथ ली थी कि उसने मेरे सिवा किसी और से प्रेम नहीं किया और मुझसे विवाह करने की विनती की थी, सुखद छवियों की एक श्रृंखला लगातार नवीनीकृत होती रही और धीरे-धीरे मेरे मन में गिल्बर्ट और उस युवक की

छवि से अधिक स्थान ग्रहण करने लगी, जिसका अब कोई आधार नहीं था। इस बिंदु पर शायद मैं श्रीमती स्वान से मिलने फिर से चला जाता, लेकिन एक सपने के कारण, जिसमें मेरे एक मित्र ने, जिसे मैं पहचान नहीं सका, मेरे साथ अत्यंत विश्वासघात किया और ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मानता था कि मैंने उसके साथ विश्वासघात किया है। सपने से उत्पन्न झनझनाहट से अचानक मेरी नींद खुल गई, और जागने के बाद भी वह झनझनाहट बनी रही। मैंने सपने पर फिर से ध्यान केंद्रित किया, और यह पता लगाने की कोशिश की कि वह मित्र कौन हो सकता है जिसे मैंने सपने में देखा था, जिसका नाम—एक स्पेनिश नाम—अब मेरे कानों में स्पष्ट नहीं था। यूसुफ और फिरौन के अंशों को मिलाकर, मैंने अपने सपने की व्याख्या करने का प्रयास किया। मैं जानता था कि सपने की व्याख्या करते समय, अक्सर सपने में दिखाई देने वाले लोगों के रूप-रंग पर अधिक ध्यान देना एक गलती होती है, क्योंकि हो सकता है कि वे भेस बदले हुए हों या उनके चेहरे बदले हुए हों, जैसे गिरजाघरों की दीवारों पर चित्रित विकृत संतों की मूर्तियाँ जिन्हें अज्ञानी पुरातत्वविदों ने पुनर्स्थापित किया है, एक के शरीर को दूसरे के सिर से जोड़कर उनके सभी गुणों और नामों को भ्रमित कर दिया है। सपने में लोगों के रूप-रंग हमें गुमराह कर सकते हैं। जिस व्यक्ति से हम प्रेम करते हैं, उसे केवल हमारे द्वारा सहे गए दर्द की तीव्रता से ही पहचाना जा सकता है। मुझे अपने अनुभव से पता चला कि सोते समय भले ही मैं एक युवक में परिवर्तित हो गया था, लेकिन जिस व्यक्ति के हालिया विश्वासघात से मुझे अभी भी दुख हो रहा था, वह गिलबर्ट थी। मुझे याद आया कि पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, उस दिन जब उसकी माँ ने उसे नृत्य कक्षा में जाने से मना किया था, तब उसने, चाहे ईमानदारी से हो या दिखावे के लिए, अजीब तरह से हंसते हुए, मेरे प्रति अपनी सच्ची भावनाओं पर विश्वास करने से इनकार कर

दिया था। और इसी याद से मुझे एक और बात याद आ गई। उससे बहुत पहले, स्वान को मेरी ईमानदारी पर विश्वास नहीं था, न ही इस बात पर कि मैं गिलबर्ट के लिए एक उपयुक्त मित्र हूँ। मैंने उसे व्यर्थ ही पत्र लिखा था, गिलबर्ट मेरा पत्र वापस ले आई थी और उसी समझ से परे हंसी के साथ मुझे लौटा दिया था। उसने मुझे तुरंत पत्र नहीं लौटाया था: मुझे अब लॉरेल के पेड़ों के पीछे का पूरा दृश्य याद आ गया। जैसे ही कोई दुखी होता है, वह नैतिक बन जाता है। गिलबर्ट की मेरे प्रति हालिया घृणा मुझे उस दोपहर मेरे आचरण के लिए जीवन द्वारा दिया गया एक फैसला लग रही थी। ऐसे निर्णयों से हम शायद बच सकते हैं क्योंकि सड़क पार करते समय हम गाड़ियों का ध्यान रखते हैं और स्पष्ट खतरों से बचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो हमारे भीतर असर डालते हैं। दुर्घटना उस तरफ से आती है जिस तरफ हमने ध्यान नहीं दिया होता, भीतर से, दिल से। गिलबर्ट के शब्द: "अगर आप चाहें, तो हम कुश्ती जारी रख सकते हैं," सुनकर मैं सिहर उठा। मैंने कल्पना की कि वह शायद घर पर, लिनेन-रूम में, उस युवक के साथ ऐसा ही व्यवहार कर रही होगी जिसे मैंने एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसी पर उसके साथ चलते देखा था। और इसलिए, ठीक वैसे ही जैसे कुछ समय पहले, जब मैंने खुद को शांत और प्रसन्न अवस्था में स्थापित मान लिया था, अब जब मैंने प्रसन्नता के सभी विचारों को त्याग दिया था, तो यह मान लेना मेरे लिए मूर्खतापूर्ण था कि कम से कम मैं परिपक्व हो गया हूँ और शांत रहूँगा। क्योंकि जब तक हमारा हृदय किसी दूसरे व्यक्ति की छवि को स्थायी रूप से संजोए रखता है, तब तक न केवल हमारी प्रसन्नता ही किसी भी क्षण नष्ट हो सकती है; जब वह सुख लुप्त हो जाता है, जब हम कष्ट भोगते हैं, और बाद में, जब हम अपने कष्टों को शांत करने में सफल हो जाते हैं, तब जो चीज़ उतनी ही मायावी, उतनी ही अनिश्चित होती है जितनी हमारी खुशी कभी थी, वह है

हमारी शांति। मेरी शांति अंत में मुझे लौट आई, क्योंकि वह बादल जो हमारे प्रतिरोध को कम करते हुए, हमारी इच्छाओं को संयमित करते हुए, स्वप्न के माध्यम से हमारे मन के घेरे में प्रवेश कर चुका है, समय के साथ घुल जाएगा, क्योंकि इस संसार में किसी भी चीज़ की स्थायित्व और स्थिरता सुनिश्चित नहीं है, यहाँ तक कि दुःख की भी नहीं। इसके अलावा, जिनका कष्ट प्रेम के कारण होता है, वे, जैसा कि हम कुछ रोगियों के बारे में कहते हैं, अपने स्वयं के चिकित्सक होते हैं। क्योंकि उन्हें सांत्वना केवल उसी व्यक्ति से मिल सकती है जो उनके दुःख का कारण है, और क्योंकि उनका दुःख उसी व्यक्ति से उत्पन्न होता है, इसलिए अंततः उन्हें अपने दुःख में ही उसका उपाय खोजना होगा: जो दुःख उन्हें किसी न किसी क्षण प्रकट करेगा, क्योंकि जब तक वे इस दुःख पर विचार करते रहेंगे, यह दुःख उन्हें उस प्रिय, उस दिवंगत प्राणी के नए-नए रूप दिखाता रहेगा, कभी इतना घृणास्पद कि उसे देखने की जरा भी इच्छा नहीं रहेगी, क्योंकि उसकी संगति में आनंद पाने से पहले उसे पीड़ा देनी होगी, और कभी इतना सुखद कि उसके प्रति दिखाई गई सुखदता उसके अच्छे गुणों में वृद्धि करेगी और उसमें आशा का एक नया कारण पाएगी। लेकिन यद्यपि मेरे भीतर फिर से जागृत हुआ व्यथा अंततः शांत हो गया, फिर भी मैं श्रीमती स्वान से मिलने की इच्छा नहीं रखता था—सिवाय कभी-कभार के। सबसे पहले तो इसलिए कि जो लोग प्रेम करते हैं और जिन्हें त्याग दिया गया है, उनमें निरंतर बनी रहने वाली (भले ही वह इसे स्वीकार न करे) उम्मीद की अवस्था में स्वतः ही परिवर्तन आ जाता है, और देखने में तो यह अपरिवर्तित लगती है, लेकिन इसके मूल तत्वों की जगह ठीक विपरीत तत्व आ जाते हैं। पहले तत्व उन दर्दनाक घटनाओं के परिणाम थे —उनकी प्रतिक्रिया—जिन्होंने हमें झकझोर दिया था। भविष्य की प्रतीक्षा का तनाव भय से भरा होता है, खासकर इसलिए क्योंकि ऐसे क्षणों में,

यदि हमारे प्रिय से कोई संदेश न आए, तो हम स्वयं कुछ करना चाहते हैं, और उस कदम की सफलता को लेकर भी आश्वस्त नहीं होते, जिसे एक बार उठा लेने के बाद शायद आगे बढ़ाना असंभव हो जाए। लेकिन क्षण भर में, बिना किसी परिवर्तन को महसूस किए, यह तनाव, जो अभी भी बना हुआ है, अब अतीत की यादों से नहीं, बल्कि एक काल्पनिक भविष्य की प्रत्याशा से कायम है। उस क्षण से यह लगभग सुखद हो जाता है। इसके अलावा, पहली अवस्था कुछ समय तक बनी रहने से हमें उम्मीद में जीने की आदत डाल देती है। पिछली मुलाकातों के दौरान हमने जो पीड़ा महसूस की थी, वह अब भी हमारे भीतर मौजूद है, लेकिन अब वह सुप्त अवस्था में है। हम उसे जगाने की जल्दी में नहीं हैं, खासकर इसलिए क्योंकि हमें अभी यह स्पष्ट नहीं है कि हमें क्या मांगना चाहिए। जिस स्त्री से हम प्रेम करते हैं, उसका थोड़ा और हिस्सा पाने से हमारे लिए वह हिस्सा और भी अधिक आवश्यक हो जाएगा जो अभी तक हमारे पास नहीं है, और जो हर हाल में बना रहेगा, क्योंकि हमारी आवश्यकताएं हमारी संतुष्टियों से ही उत्पन्न होती हैं, एक अपरिवर्तनीय तत्व।

एक और अंतिम कारण बाद में सामने आया जिसने इस बात को और पुख्ता कर दिया और मुझे श्रीमती स्वान से मिलना पूरी तरह बंद करने पर मजबूर कर दिया। यह कारण, जो धीरे-धीरे सामने आया, यह नहीं था कि मैं गिल्बर्ट को भूल चुका था, बल्कि यह था कि मुझे उसे जल्द से जल्द भूलने के लिए हर संभव प्रयास करना था। निस्संदेह, अब जब मेरे दुख की तीव्रता कम हो गई थी, श्रीमती स्वान से मिलना मेरे भीतर बचे हुए दुख के लिए एक बार फिर वही सुखदायक और ध्यान भटकाने वाला साधन बन गया था जो पहले मेरे लिए इतना कीमती था। लेकिन जिस बात ने सुखदायक को कारगर बनाया, उसी ने ध्यान भटकाने को असंभव बना दिया, वह यह थी कि इन मुलाकातों के साथ गिल्बर्ट की स्मृति

गहराई से जुड़ गई थी। ध्यान भटकाना मेरे लिए तब तक किसी काम का नहीं था जब तक कि इसका उपयोग उस भावना से लड़ने के लिए न किया जाए जिसे गिल्बर्ट की उपस्थिति अब पोषित नहीं करती थी - ऐसे विचार, रुचियां, जुनून जिनमें गिल्बर्ट का कोई स्थान नहीं होना चाहिए था। चेतना की ये अवस्थाएँ, जिनमें हमारा प्रिय व्यक्ति अजनबी बना रहता है, एक ऐसा स्थान ग्रहण कर लेती हैं जो आरंभ में चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, उस प्रेम से हमेशा बहुत कुछ छीन लिया जाता है जिसने हमारी आत्मा पर निर्विवाद अधिकार जमा रखा है। हमें इन विचारों को प्रोत्साहित करने, उन्हें विकसित करने का प्रयास करना चाहिए, जबकि वह भावना जो अब मात्र एक स्मृति बनकर रह गई है, क्षीण होती जाती है, ताकि हमारे मन में प्रवेश करने वाले नए तत्व उस भावना से संघर्ष करें, उससे हमारी आत्मा का एक बढ़ता हुआ हिस्सा छीन लें, जब तक कि अंततः विजय पूर्ण न हो जाए। मैंने निश्चय किया कि यही एकमात्र तरीका है जिससे मैं अपने प्रेम को समाप्त कर सकता हूँ, और मैं अब भी इतना युवा और इतना साहसी था कि इस प्रयास को करने का साहस कर सकूँ, उस सबसे क्रूर दुःख को सहने के लिए जो इस निश्चितता से उत्पन्न होता है कि चाहे हम इस प्रयास में कितना भी समय लगाएँ, अंत में यह सफल ही होगा। गिलबर्ट को लिखे पत्रों में मैंने उससे मिलने से इनकार करने का जो कारण बताया, वह एक रहस्यमय, पूरी तरह से काल्पनिक गलतफहमी का संकेत था, जो मेरे और उसके बीच पैदा हुई थी, और जिसके बारे में मुझे पहले उम्मीद थी कि गिलबर्ट मुझसे स्पष्टीकरण मांगेगी। लेकिन, वास्तव में, जीवन के सबसे मामूली रिश्तों में भी, स्पष्टीकरण की मांग कभी भी उस व्यक्ति से नहीं आती जो जानता है कि एक अस्पष्ट, असत्य, आरोप लगाने वाला वाक्य जानबूझकर लिखा गया है ताकि वह इसका विरोध करे, और इसे पढ़कर उसे यह महसूस करने में

खुशी होती है कि आने वाली कार्रवाइयों में पहल उसी के हाथ में है। खासकर हमारे कोमल रिश्तों में, जिनमें प्रेम में बहुत अधिक वाक्पटुता होती है, जबकि उदासीनता में जिज्ञासा की कमी होती है। गिलबर्ट ने इस गलतफहमी के बारे में कभी संदेह नहीं जताया और न ही इसके बारे में अधिक जानने की कोशिश की, इसलिए यह मेरे लिए एक वास्तविक तथ्य बन गया, जिसका जिक्र मैं हर पत्र में नए सिरे से करता था। और इन निराधार परिस्थितियों में, उदासीनता के दिखावे में, एक तरह का आकर्षण होता है जो उनमें बने रहने के लिए प्रेरित करता है। "अब जब हमारे दिल अलग हो गए हैं," लिखकर, ताकि गिल्बर्ट जवाब दे सके: "लेकिन ऐसा नहीं है। कृपया समझाएं कि आपका क्या मतलब है," धीरे-धीरे मुझे यह विश्वास होने लगा था कि वे अलग हो गए हैं। "हमारे लिए जीवन भले ही बदल गया हो, लेकिन यह एक-दूसरे के लिए हमारे प्यार को कभी नष्ट नहीं कर सकता," यह बार-बार दोहराते हुए, इस उम्मीद में कि एक दिन मैं खुद कहूँगी: "लेकिन कोई बदलाव नहीं हुआ है, यह भावना अब पहले से कहीं अधिक मजबूत है," मैं इस विचार के साथ जी रही थी कि जीवन वास्तव में बदल गया है, कि हमें केवल उस भावना की स्मृति रखनी चाहिए जो अब अस्तित्व में नहीं है, जैसे कुछ मनोरोगी, जो पहले बीमार होने का नाटक करते हैं, अंत में चिरस्थायी रोगी बन जाते हैं। अब, जब भी मुझे गिल्बर्ट को पत्र लिखना होता, मैं इस काल्पनिक बदलाव को याद करता, जिसे अब उसके जवाबों में चुप्पी साधे रहने से मान लिया गया था कि यह हमारे बीच भविष्य में भी बना रहेगा। फिर गिल्बर्ट ने इसे जानबूझकर नज़रअंदाज़ करना बंद कर दिया। उसने भी मेरे दृष्टिकोण को अपना लिया; और, जैसे आधिकारिक भोजों में भाषणों में, जब मेहमाननवाज़ी कर रहे विदेशी सम्राट लगभग उन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हैं जो मेहमाननवाज़ी कर रहे सम्राट ने कहे होते हैं, वैसे ही जब भी मैं

गिल्बर्ट को लिखता: "जीवन ने हमें अलग कर दिया है; उन दिनों की यादें जब हम एक-दूसरे को जानते थे, हमेशा बनी रहेंगी," तो वह हमेशा जवाब देती: "जीवन ने हमें अलग कर दिया है; यह हमें उन सुखद पलों को भुला नहीं सकता जो हम दोनों के लिए हमेशा प्यारे रहेंगे," (हालाँकि हमारे लिए यह कहना मुश्किल होता कि 'जीवन' ने हमें क्यों या कैसे अलग किया, या क्या बदलाव आया था)। मेरे कष्ट अब उतने अधिक नहीं थे। फिर भी, एक दिन जब मैं उसे पत्र में बता रही थी कि मैंने शैंप्स-एलिसी में हमारी बूढ़ी जौ-चीनी बेचने वाली महिला की मृत्यु के बारे में सुना है, और जैसे ही मैंने ये शब्द लिखे: "मुझे तुरंत एहसास हुआ कि इससे तुम्हें दुख होगा, इसने मेरे मन में अनेक यादें ताजा कर दीं," मैं खुद को आँसू बहाने से नहीं रोक पाई जब मैंने देखा कि मैं भूतकाल में लिख रही हूँ, मानो किसी मृत मित्र के बारे में, जिसे अब लगभग भुला दिया गया है, उस प्रेम के बारे में जिसके बारे में मैं न चाहते हुए भी कभी सोचना बंद नहीं कर पाई, मानो वह अभी भी जीवित हो, या कम से कम पुनर्जन्म ले सके। उन मित्रों के बीच इस तरह के पत्राचार से अधिक स्नेहपूर्ण कुछ नहीं हो सकता जो अब एक-दूसरे को देखना नहीं चाहते। गिलबर्ट के मेरे लिए लिखे पत्रों में वही कोमलता और परिष्कार था जो मैं उन लोगों को लिखती थी जिनका मेरे लिए कोई महत्व नहीं था, और उनमें मुझे स्नेह के वही स्पष्ट संकेत दिखाई देते थे, जिन्हें उससे प्राप्त करना मेरे लिए बहुत सुखद था।

लेकिन, जैसे-जैसे समय बीतता गया, उससे मिलने से हर बार इनकार करने पर मेरी बेचैनी कम होती गई। और जैसे-जैसे वह मेरे लिए कम प्रिय होती गई, मेरी दर्द भरी यादें अब इतनी प्रबल नहीं रह गईं कि बार-बार लौटकर फ्लोरेंस या वेनिस के बारे में सोचने से मिलने वाले बढ़ते आनंद को नष्ट कर सकें। ऐसे क्षणों में मुझे इस बात का अफसोस होता था कि

मैंने कूटनीति का विचार त्याग दिया था और खुद को एक गतिहीन जीवन के लिए अभिशप्त कर लिया था, ताकि उस लड़की से अलग न हो जाऊं जिसे मैं फिर कभी नहीं देख पाऊंगा और जिसे मैं लगभग भूल चुका था। हम अपने जीवन का घर किसी दूसरे व्यक्ति के अनुरूप बनाते हैं, और जब अंततः वह घर उसके स्वागत के लिए तैयार होता है, तो वह व्यक्ति नहीं आता; पल भर में वह हमारे लिए मर जाती है, और हम उन दीवारों के भीतर कैदी बनकर जीते रहते हैं जो केवल उसके लिए बनी थीं। यदि मेरे माता-पिता को वेनिस बहुत दूर लगता था और वहाँ का मौसम खतरनाक, तो कम से कम मेरे लिए बिना थके वहाँ जाना और बालबेक में बस जाना काफी आसान था। लेकिन ऐसा करने के लिए मुझे पेरिस छोड़ना पड़ता, उन मुलाकातों को छोड़ना पड़ता, जिनकी बदौलत, भले ही वे कभी-कभार होती थीं, मैं कभी-कभी श्रीमती फ्लोरेंस की आवाज सुन पाता था। स्वान मुझे अपनी बेटी के बारे में बता रही थी। इसके अलावा, मुझे उनमें कई ऐसे सुख मिलने लगे थे जिनमें गिल्बर्ट का कोई हिस्सा नहीं था।

जब वसंत ऋतु का आगमन हुआ और उसके साथ ही सर्द मौसम भी, बर्फीले उपवास के दौरान और पवित्र सप्ताह के ओलावृष्टि के समय, जब श्रीमती स्वान को घर में ठंड लगने लगी, तो मैं अक्सर उन्हें अपने मेहमानों का स्वागत करते हुए फर के वस्त्रों में देखती थी, उनके कांपते हाथ और कंधे एक विशाल आयताकार मफ और एक केप के चमकदार सफेद कालीन के नीचे छिपे होते थे, दोनों ही अर्माइन के बने होते थे, जिन्हें उन्होंने अपने घर से अंदर आते समय नहीं उतारा था, और जो सर्दियों की बर्फ के अंतिम टुकड़ों का आभास देते थे, जो बाकी की तुलना में अधिक स्थायी थे, जिन्हें न तो आग की गर्मी और न ही बढ़ते मौसम ने पिघलाने में सफलता प्राप्त की थी। और इन बर्फीले लेकिन पहले से ही खिले हुए

हफ्तों के बारे में पूरी सच्चाई मुझे इस ड्राइंग-रूम में सुझाई गई थी, जिसमें मैं जल्द ही फिर कभी प्रवेश नहीं करने वाला था, सफेदी के अन्य अधिक मादक रूपों द्वारा, उदाहरण के लिए, ग्वेल्डर-गुलाब के गुच्छे, अपने लंबे नंगे डंठलों के शिखर पर, प्री-राफेलाइट चित्रों में आयताकार पेड़ों की तरह, उनके फूलों के गोले, विभाजित फिर भी मिश्रित, घोषणा करते स्वर्गदूतों की तरह सफेद और नींबू जैसी सुगंध बिखेरते हुए। क्योंकि टैन्सनविले की मालकिन जानती थी कि अप्रैल, यहाँ तक कि बर्फ से जमा हुआ अप्रैल भी, फूलों से रहित नहीं होता, कि सर्दी, वसंत, गर्मी को उन अवरोधों द्वारा अलग नहीं किया जाता जो इतने बंद होते हैं जितना कि शहर में रहने वाला व्यक्ति मान सकता है, जो पहले गर्म दिन तक दुनिया को बारिश में नंगे खड़े घरों के अलावा कुछ भी नहीं समझता। कि श्रीमती... स्वान अपने कॉम्ब्रे माली द्वारा उपलब्ध कराए गए सामान से संतुष्ट थीं, कि उन्होंने अपने 'विशेष' फूलवाले के हस्तक्षेप से, अपर्याप्त रूप से शक्तिशाली जादू से छोड़े गए अंतराल को भूमध्य सागर के किनारे से उधार ली गई सब्सिडी से नहीं भरा, मैं एक पल के लिए भी यह सुझाव नहीं देता, और न ही उस समय मुझे इसकी चिंता थी। यह मुझे ग्रामीण दृश्यों के लिए तरसने के लिए पर्याप्त था, जो मैडम के मफ की ढीली बर्फ की परतों के ऊपर लटके हुए थे। स्वान ने अपने हाथों को संभाले रखा, और गिल्डर-गुलाब के बर्फ के गोले (जो संभवतः मेरी मेज़बान के मन में बर्गोट की सलाह पर, अपने फर्नीचर और कपड़ों के साथ 'सिम्फनी इन व्हाइट' की रचना करने के अलावा किसी और उद्देश्य से नहीं थे) ने मुझे याद दिलाया कि पार्सिफ़ल में गुड फ्राइडे का संगीत एक प्राकृतिक चमत्कार का प्रतीक था जिसे हर साल देखा जा सकता था, यदि कोई इसे देखने की समझ रखता, और अन्य प्रकार के फूलों की तीखी और मादक सुगंध से, जिनके नाम मुझे भले ही अज्ञात थे, लेकिन कॉम्ब्रे के आसपास

अपनी सैर के दौरान मुझे अक्सर उन्हें निहारने के लिए थम जाने पर मजबूर कर देते थे, श्रीमती स्वान के ड्राइंग रूम को उतना ही पवित्र, उतना ही स्पष्ट रूप से 'खिलता हुआ' बना दिया, बिना किसी हरियाली के, फूलों की वास्तविक सुगंध से उतना ही भरा हुआ जितना कि टैनसनविले के पास की छोटी सी गली थी।

लेकिन फिर भी, इन यादों का मुझे बार-बार याद आना असहनीय था। इस बात का खतरा था कि कहीं ये यादें गिल्बर्ट के लिए मेरे बचे-खुचे प्यार को फिर से न जगा दें। इसके अलावा, हालांकि श्रीमती स्वान से मिलने के दौरान मुझे अब ज़रा भी तकलीफ़ नहीं होती थी, फिर भी मैंने उनके बीच का अंतराल बढ़ा दिया और उनसे जितना हो सके कम मिलने की कोशिश की। ज़्यादा से ज़्यादा, क्योंकि मैं पेरिस से बाहर नहीं जाता था, मैं कभी-कभार उनके साथ टहलने निकल जाता था। आखिरकार मौसम सुहाना हो गया था और धूप तेज़ थी। जैसा कि मुझे पता था कि दोपहर के भोजन से पहले श्रीमती... स्वान रोज़ाना एक घंटे के लिए बाहर जाया करती थीं और एटॉइल के पास एवेन्यू डू बोइस में थोड़ी देर टहलती थीं। उस समय, वहाँ जमा होने वाले लोगों की वजह से, जो उन 'अमीरों' को देखने आते थे जिन्हें वे नाम से ही जानते थे, उस जगह को 'शैबी-जेंटल क्लब' के नाम से जाना जाता था। रविवार को (क्योंकि सप्ताह के दिनों में मैं सुबह से व्यस्त रहता था) मैं अपने माता-पिता को मना लेता था कि मुझे दोपहर का खाना उनके खाने के काफी बाद, सवा एक बजे तक, खाने के लिए टाल दें और मैं उससे पहले टहलने चला जाऊँ। उस साल मई के महीने में, मैंने एक भी रविवार नहीं छोड़ा, क्योंकि गिल्बर्ट गाँव में दोस्तों के साथ रहने गई हुई थीं। मैं दोपहर करीब 12 बजे आर्क डी ट्रायम्फ पहुँच जाता था। मैं एवेन्यू के प्रवेश द्वार पर नज़र रखता था और गली के उस कोने से अपनी निगाहें नहीं हटाता था जहाँ से श्रीमती स्वान, जिन्हें बस कुछ ही

कदम चलना होता था, अपने घर से आती थीं। इस समय तक वहाँ टहल रहे कई लोग दोपहर के भोजन के लिए घर जा रहे थे, इसलिए जो लोग बचे थे उनकी संख्या कम थी और अधिकतर लोग फैशनेबल कपड़े पहने हुए थे। अचानक, कंकड़ वाले रास्ते पर, शांत, ठंडी और भरपूर गति से, श्रीमती स्वान प्रकट हुईं, अपने चारों ओर एक ऐसा श्रृंगार प्रदर्शित करते हुए जो कभी दो बार एक जैसा नहीं होता था, लेकिन मुझे याद है कि वह विशिष्ट रूप से बैंगनी रंग का था; फिर उन्होंने अपनी पूरी आभा के चरम पर, ठीक उसी क्षण, एक चौड़ी छतरी के रेशमी बैनर को उसके लंबे डंठल के सिरे पर फहराया और फैलाया, जिसका रंग उनके गाउन की गिरती हुई पंखुड़ियों से मेल खाता था। लोगों का एक पूरा समूह उनके साथ चल रहा था; स्वयं स्वान, क्लब के चार-पाँच साथी, जो उस सुबह उससे मिलने आए थे या जिनसे वह सड़क पर मिली थी; और उनका काला या धूसर समूह, उसके हर इशारे का पालन करते हुए, एक निर्जीव परिवेश की लगभग यांत्रिक गतिविधियों को प्रदर्शित करते हुए, जिसमें ओडेट को स्थापित किया गया था, उस महिला को, जिसकी आँखों में ही एकमात्र तीव्रता थी, ऐसा आभास दे रहा था मानो वह उन सभी पुरुषों के बीच से अपने सामने देख रही हो, मानो वह किसी खिड़की के पीछे खड़ी हो, और उसे वहाँ से, कमजोर लेकिन निडर, अपने कोमल रंगों की नग्नता में, किसी भिन्न प्रजाति, किसी अज्ञात जाति के प्राणी की तरह, लगभग योद्धा जैसी शक्ति से उभरने दे रहा हो, जिसके बल पर वह अपने सभी साथियों का अकेले ही मुकाबला कर सकती थी। मुस्कुराते हुए, सुहावने मौसम में, उस धूप में जो अभी तक कष्टदायक नहीं हुई थी, आनंदित होते हुए, एक ऐसे रचनाकार के शांत आत्मविश्वास के साथ जिसने अपना कार्य पूरा कर लिया है और इसके अलावा किसी और चीज की परवाह नहीं करता; उसे पूरा यकीन था कि उसके कपड़े—भले ही आम लोग

उनकी सराहना न करें—सबसे शानदार थे, इसलिए वह उन्हें अपने लिए और अपने दोस्तों के लिए पहनती थी, स्वाभाविक रूप से, उन पर ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान दिए बिना, लेकिन पूरी तरह से उदासीन हुए बिना भी; वह अपनी चोली और स्कर्ट पर लगे छोटे-छोटे रिबन को हवा में लहराने से नहीं रोकती थी, मानो वे अलग-अलग जीव हों जिनकी उपस्थिति से वह अनजान नहीं थी, बल्कि उन्हें अपनी मर्ज़ी से खेलने देती थी, अपनी लय बनाए रखते हुए, बशर्ते कि वे उसके साथ चलें जहाँ वह आगे बढ़ती थी; और यहाँ तक कि अपने बैंगनी रंग के छाते पर भी, जिसे वह अक्सर दृश्य पर आने से पहले 'सजा' नहीं पाती थी, वह कभी-कभी उसे ऐसे गिरा देती थी जैसे परमा वायलेट के गुच्छे पर, एक प्रसन्न और इतनी दयालु दृष्टि से कि जब उसकी नज़र अपने दोस्तों से हटकर किसी निर्जीव वस्तु पर पड़ती थी, तब भी उसकी आँखें मुस्कुराती हुई प्रतीत होती थीं। इस प्रकार उसने अपने वस्त्रों को खुला रखा, उसने उस सुरुचिपूर्णता के अंतराल को धारण किया, जिसका सम्मान उसके सबसे घनिष्ठ संबंध रखने वाले पुरुष, एक निश्चित आदर के साथ करते थे, मानो किसी पवित्र स्थान पर आने वाले अपवित्र आगंतुक हों, अपनी अज्ञानता को स्वीकार करते हुए, एक ऐसा अंतराल जिस पर वे यह मानते थे कि उनकी मित्र को (जैसे हम किसी बीमार व्यक्ति को उसकी विशेष सावधानियों के लिए या किसी माँ को अपने बच्चों की शिक्षा के लिए) एक सक्षम अधिकार प्राप्त है। उसके चारों ओर मौजूद उस घेरे से कम नहीं, जो राहगीरों पर ध्यान नहीं देता प्रतीत होता था, श्रीमती स्वान के वहाँ देर से आने से तुरंत उन कमरों का आभास होता था जिनमें उसने इतनी लंबी, इतनी आरामदेह सुबह बिताई थी और जहाँ उसे दोपहर के भोजन के लिए लौटना था; वह अपनी धीमी गति से, जैसे कोई अपने बगीचे में ऊपर-नीचे घूमता है, उन कमरों की निकटता का संकेत देती प्रतीत होती थी; उन कमरों के बारे में कोई कह

सकता था कि वह अब भी अपने साथ ठंडी, घर की छाया लिए हुए है। लेकिन इसी कारण से उन्हें देखकर मुझे खुलेपन और गर्माहट का और भी प्रबल अहसास हुआ। यह अहसास और भी प्रबल था क्योंकि मैं मन ही मन आश्वस्त था कि धार्मिक अनुष्ठानों के अनुसार, जिनमें श्रीमती स्वान पारंगत थीं, उनके वस्त्र वर्ष और दिन के समय से एक अपरिहार्य और अद्वितीय बंधन से जुड़े हुए थे। मुझे ऐसा लगा मानो उनकी टोपी के कड़े भूसे के किनारे पर लगे फूल, उनके वस्त्रों पर लगे नन्हे रिबन, बगीचों और जंगलों के फूलों से भी अधिक स्वाभाविक रूप से मई के महीने में खिले हों; और मौसम या ऋतु में आए नवीनतम परिवर्तन को जानने के लिए मुझे अपनी आँखें उनके छाते से ऊपर उठाने की आवश्यकता नहीं थी, जो किसी निकट के आकाश की तरह खुला और फैला हुआ था, गोल, सौम्य, गतिशील, नीला। इन रीति-रिवाजों के लिए, यदि वे वास्तव में अत्यंत महत्वपूर्ण थे, तो उन्होंने अपनी महिमा (और फलस्वरूप, श्रीमती स्वान की भी) दिन, वसंत और सूर्य के प्रति विनम्रतापूर्वक समर्पित कर दी। मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि इनमें से कोई भी इतना प्रसन्न करने वाला था कि इतनी सुंदर महिला ने कृपापूर्वक इनके अस्तित्व को अनदेखा नहीं किया, और इनके लिए एक चमकीले, पतले कपड़े का गाउन चुना, जिसके कॉलर और आस्तीन के खुलेपन से मुझे गले और कलाई की नम गर्माहट का आभास हुआ, संक्षेप में, उन्होंने इनके लिए वह सब परिश्रम किया जो एक महान व्यक्ति करता है, जो देश के आम लोगों से मिलने के लिए प्रसन्नतापूर्वक आता है, जिन्हें हर कोई, यहाँ तक कि सबसे साधारण व्यक्ति भी जानता है, फिर भी इस अवसर के लिए उपयुक्त पोशाक पहनता है। उनके आने पर मैं श्रीमती स्वान का अभिवादन करता, वे मुझे रोककर (अंग्रेज़ी में) 'शुभ प्रभात' कहतीं और मुस्कुरातीं। हम थोड़ी दूर साथ चलते। और तब मुझे पता चला कि जिन नियमों के अनुसार वह

कपड़े पहनती थी, उनका पालन वह अपनी संतुष्टि के लिए करती थी, मानो किसी सर्वोच्च ज्ञान के आगे समर्पण कर रही हो, जिसकी वह स्वयं प्रधान पुजारिन थी: क्योंकि अगर कभी ऐसा होता कि उसे बहुत गर्मी लगती और वह अपनी जैकेट खोल देती या उतारकर मुझे दे देती, जिसे वह बटन लगाकर रखना चाहती थी, तो मैं उसके नीचे ब्लाउज में हजारों बारीक कारीगरी देख लेता, जो शायद किसी की नजरों से छिपी रह सकती थी, ठीक वैसे ही जैसे ऑर्केस्ट्रा के उन संगीत के हिस्सों को, जिन पर संगीतकार ने अथक परिश्रम किया हो, भले ही वे कभी जनता के कानों तक न पहुंचें: या फिर मेरी बांह पर पड़ी जैकेट की आस्तीनों में मैं कुछ उत्कृष्ट कारीगरी देख लेता, धीरे-धीरे, अपने आनंद के लिए या उसे पहनने वाली के प्रति स्नेह से, उसे निहार लेता, कोई मनमोहक रंगीन पट्टी, बैंगनी रंग की साटिन की अस्तर, जो आमतौर पर सबकी नजरों से छिपी रहती है, फिर भी बाहरी हिस्सों की तरह ही नाजुक ढंग से गढ़ी गई होती है, ठीक वैसे ही जैसे किसी गिरजाघर पर बनी गॉथिक नक्काशी, जो अस्सी फीट दूर रेलिंग के अंदर छिपी होती है। जमीन, मुख्य बरामदे के ऊपर की नक्काशी जितनी ही परिपूर्ण है, और फिर भी किसी भी जीवित व्यक्ति द्वारा कभी नहीं देखी गई है, जब तक कि संयोगवश अपनी यात्रा के दौरान उस रास्ते से गुजरते हुए, एक कलाकार को उनके बीच ऊपर चढ़ने, खुली हवा में टहलने, ऊंचे टावरों के बीच से पूरे शहर को एक व्यापक दृष्टि से देखने की अनुमति नहीं मिल जाती।

श्रीमती स्वान के एवेन्यू में इस तरह चलने की धारणा को और बल देने वाली बात यह थी कि - उनकी 'व्यायाम करने' की आदत से अनभिज्ञ लोगों के लिए - वह पैदल ही आई थीं, उनके पीछे कोई गाड़ी नहीं थी। मई का महीना शुरू होते ही, लोग उन्हें पेरिस के सबसे शानदार परिधानों और सबसे उत्तम वर्दी में, आठ स्प्रिंग वाले विशाल विक्टोरियाई महल की

सुहावनी हवा में, एक देवी की तरह, सौम्य और राजसी ढंग से बैठे हुए देखने के आदी थे। पैदल चलते हुए श्रीमती स्वान - विशेषकर जब धूप में उनकी चाल धीमी होने लगी - ऐसा प्रतीत होता था मानो उन्होंने जिज्ञासा के आगे घुटने टेक दिए हों, मानो उन्होंने अपने आचरण के सभी नियमों का 'अद्वितीय' उल्लंघन किया हो, ठीक उन सम्राटों की तरह जो बिना किसी से सलाह लिए, अपने उन साथियों की थोड़ी-सी प्रशंसा के साथ जो आलोचना करने का साहस नहीं करते, किसी भव्य प्रदर्शन के दौरान अपने बॉक्स से बाहर निकलकर थिएटर की लॉबी में जाते हैं और कुछ क्षणों के लिए बाकी दर्शकों के साथ घुलमिल जाते हैं। इस प्रकार श्रीमती स्वान और... स्वान और भीड़ को ऐसा लगा कि एक खास तरह की समृद्धि की ऐसी बाधाएं मौजूद हैं, जो उन्हें सबसे दुर्गम लगती हैं। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में भी ऐसी बाधाएं हो सकती हैं, लेकिन ये 'साधारण-शिष्ट' लोगों की नज़रों और कल्पना में उतनी स्पष्ट नहीं होतीं। ये लोग, जब किसी वास्तविक व्यक्तित्व, जो सरल हो, जिसे आसानी से किसी छोटे व्यवसायी या व्यापारी की पत्नी समझा जा सके, और जो आम लोगों से दूर न हो, के सामने होते हैं, तो उन्हें अपनी असमानता, लगभग अयोग्यता का वैसा एहसास नहीं होता, जैसा उन्हें श्रीमती स्वान से मिलने पर होता है। निःसंदेह, उस प्रकार की महिलाएं स्वयं भीड़ की तरह अपने परिधानों की चमक से चकाचौंध नहीं होतीं, उन्होंने इस पर ध्यान देना बंद कर दिया है, लेकिन केवल इसलिए कि वे इसकी आदी हो चुकी हैं, अर्थात् इसे अधिकाधिक स्वाभाविक और आवश्यक समझने लगी हैं, अपने साथी मनुष्यों का मूल्यांकन इस आधार पर करना कि वे इन विलासितापूर्ण जीवन शैली में कितने अभ्यस्त हैं: इसलिए (वह भव्यता जिसे वे स्वयं प्रदर्शित करने या दूसरों में प्रकट करने की अनुमति देती हैं, पूरी तरह से भौतिक, आसानी से सत्यापित, धीरे-धीरे अर्जित की गई, और इसकी

कमी की भरपाई करना कठिन है) यदि ऐसी महिलाएं किसी राहगीर को समाज के सबसे निचले पायदान पर रखती हैं, तो यह उसी सहज प्रक्रिया के कारण होता है जिसने उन्हें उसके सामने उच्चतम पायदान पर प्रकट किया है, अर्थात् सहज रूप से, पहली नज़र में, और बिना किसी अपील की संभावना के। शायद समाज का वह विशेष वर्ग जिसमें उन दिनों लेडी इसराइल्स जैसी महिलाएं शामिल थीं, जो अभिजात वर्ग की महिलाओं के साथ घुलमिल जाती थीं, और मैडम... स्वान, जो बाद में उनसे परिचित होने वाले थे, उस मध्यवर्ती वर्ग को, जो फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से निम्नतर था, क्योंकि वह उस क्षेत्र के निवासियों के पीछे भागता था, लेकिन फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से बाहर की हर चीज़ से श्रेष्ठ था, जिसमें यह विशेषता थी कि, यद्यपि वह केवल धनी लोगों की दुनिया से अलग हो चुका था, फिर भी वह धन का ही प्रतिनिधित्व करता था, लेकिन ऐसा धन जिसे एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस्तेमाल किया जाता था, एक कलात्मक विचार से प्रेरित, लचीले सोने की तरह, काव्यात्मक डिजाइन से तराशा हुआ, मुस्कुराना सिखाया हुआ; शायद वह वर्ग—कम से कम उसी रूप में और उसी आकर्षण के साथ—अब अस्तित्व में नहीं है। किसी भी स्थिति में, उस वर्ग की महिलाएं आज उस प्राथमिक शर्त को पूरा नहीं कर पाएंगी जिस पर उनका शासन था, क्योंकि बढ़ती उम्र के साथ उन्होंने—लगभग सभी ने—अपनी सुंदरता खो दी है। जबकि (अपनी कुलीन संपत्ति के शिखर से) अपनी परिपक्व और अभी भी सुगंधित ग्रीष्म ऋतु के शानदार चरम से ही श्रीमती स्वान ने अपनी सुंदरता को बरकरार रखा था। स्वान, गरिमामय, मुस्कुराती हुई, दयालु, जैसे-जैसे एवेन्यू डू बोइस पर आगे बढ़ती गई, उसने हाइपेटिया की तरह अपने कदमों की धीमी चाल के नीचे घूमती हुई दुनिया को देखा। कई युवक जो वहाँ से गुज़र रहे थे, उसे चिंता से देख रहे थे, यह नहीं जानते थे कि क्या उससे उनका अस्पष्ट परिचय

(विशेषकर इसलिए कि स्वान से उनका परिचय केवल एक बार ही हुआ था, और उन्हें डर था कि कहीं वह उन्हें याद न रखे) उनके लिए अपनी टोपी उतारने का पर्याप्त बहाना था। और वे अपने मन में निर्णय लेते हुए परिणामों के बारे में सोचकर कांप रहे थे, खुद से पूछ रहे थे कि क्या यह इतना साहसी, इतना अपवित्र और ईश्वर के नियमों को चुनौती देने वाला इशारा, प्रकृति की विनाशकारी शक्तियों को न जगा दे या उन पर किसी ईर्ष्यालु देवता का प्रकोप न ला दे। जैसे घड़ी की कलपुर्जे को घुमाने पर होता है, वैसे ही इस दृश्य ने छोटे-छोटे, विनम्र और झुककर अभिवादन करने वाले लोगों की एक श्रृंखला को जन्म दिया। ये लोग ओडेट के साथ आए हुए लोग थे, जिनमें सबसे पहले स्वान खुद थे। स्वान ने हरे चमड़े से सजी अपनी लंबी टोपी को बड़ी विनम्रता से उठाया, जो उन्होंने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में सीखी थी, लेकिन अब उसमें वह उदासीनता नहीं थी जो कभी उनमें हुआ करती थी। अब टोपी की जगह (मानो उन पर ओडेट के पूर्वाग्रहों का कुछ असर हो गया हो) एक तरफ तो उस व्यक्ति के अभिवादन का जवाब देने की झुंझलाहट थी जो बहुत अच्छे कपड़े नहीं पहने हुए था, और दूसरी तरफ अपनी पत्नी के इतने सारे लोगों को जानने की संतुष्टि थी। इस मिली-जुली भावना को उन्होंने अपने साथ चल रहे होशियार दोस्तों से यह कहकर व्यक्त किया: "क्या! एक और! सच में, मैं सोच भी नहीं सकता कि मेरी पत्नी इन सबको कहाँ से लाती है!" इसी बीच, डरे हुए युवक को, जो पहले ही आँखों से ओझल हो चुका था, हालाँकि उसका दिल अभी भी ज़ोर से धड़क रहा था, सिर हिलाकर अभिवादन करने के बाद, श्रीमती स्वान मेरी ओर मुड़ीं: "तो सब खत्म हो गया?" उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम अब कभी गिलबर्ट से मिलने नहीं आओगे? मुझे खुशी है कि तुमने मेरे लिए अपवाद बनाया है, और मुझे तुरंत 'छोड़' नहीं रहे हो। मुझे तुमसे मिलना अच्छा लगता है, लेकिन मुझे

यह भी अच्छा लगता था कि तुम मेरी बेटी पर कितना प्रभाव डालते थे। मुझे यकीन है कि उसे भी इसका बहुत अफ़सोस होगा। हालाँकि, मुझे तुम पर दबाव नहीं डालना चाहिए, वरना तुम तुरंत तय कर लोगे कि तुम मुझे फिर कभी देखना नहीं चाहोगे।" "ओडेट, सैगन तुमसे बात करने की कोशिश कर रहा है!" स्वान ने अपनी पत्नी का ध्यान अपनी ओर खींचा। और सचमुच, राजकुमार वहाँ थे, मानो किसी नाटक के अंत में, या किसी सर्कस में, या किसी पुरानी पेंटिंग में किसी रूपांतरण दृश्य में, अपने घोड़े को घुमाकर उनका सामना कर रहे हों, एक भव्य वीर मुद्रा में, और एक व्यापक नाटकीय और, एक तरह से, प्रतीकात्मक अंदाज में अपनी टोपी उतार रहे हों, जिसमें वे एक महान कुलीन व्यक्ति के सभी शूरवीर शिष्टाचार का प्रदर्शन कर रहे हों, जो किसी महिला के प्रति अपने सम्मान का प्रतीक है, मानो वह एक ऐसी महिला में अवतरित हुई हों जिसे उनकी माँ या बहन के लिए जानना असंभव था। और हर क्षण, तरल पारदर्शिता की गहराई और उनकी छतरी द्वारा डाली गई चमकदार छाया में पहचानी जाने वाली, श्रीमती स्वान अंतिम विलंबित घुड़सवारों का अभिवादन प्राप्त कर रही थीं, जो एवेन्यू की चकाचौंध भरी रोशनी में सरपट दौड़ते हुए मानो किसी सिनेमाटोग्राफ में फिल्माए गए दृश्य की तरह गुजर रहे थे, क्लबों के लोग, जिनके नाम, जो जनता के लिए केवल मशहूर हस्तियाँ थे, एंटोनी डी कैस्टेलन, एडलबर्ट डी मोंटमोरेंसी और बाकी - श्रीमती स्वान के लिए थे। स्वान, दोस्तों के जाने-पहचाने नाम। और जीवन की औसत अवधि की तरह, काव्य संवेदनाओं की हमारी यादों की सापेक्षिक दीर्घायु, हृदय द्वारा सहन किए गए कष्टों की हमारी यादों की तुलना में कहीं अधिक होती है। गिलबर्ट के कारण मैंने जो दुख महसूस किए थे, वे भले ही फीके पड़ गए हों और लुप्त हो गए हों, लेकिन उनके बाद भी वह आनंद बना रहता है जो मुझे आज भी प्राप्त होता है—जब भी मैं अपनी

आँखें बंद करता हूँ और पढ़ता हूँ, मानो किसी धूपघड़ी पर, मई के महीने में सवा बारह से एक बजे के बीच के मिनट—खुद को एक बार फिर श्रीमती स्वान के साथ उनकी छतरी के नीचे टहलते और बातें करते हुए देखता हूँ, मानो विस्टेरिया के रंगीन लतानुमा पेड़ों की छाया में।

जगह के नाम

स्थान

गिलबर्ट के प्रति मेरी उदासीनता लगभग पूर्णतः समाप्त हो चुकी थी, जब दो वर्ष बाद मैं अपनी दादी के साथ बालबेक गई। जब मैं एक अजनबी चेहरे के आकर्षण में बह गई, जब मैंने किसी अन्य लड़की की मदद से इटली के गॉथिक गिरजाघरों, महलों और उद्यानों को देखने की आशा की, तो मैंने उदास मन से कहा कि हमारा यह प्रेम, जहाँ तक यह किसी एक विशेष प्राणी के प्रति प्रेम है, शायद उतना वास्तविक नहीं है, क्योंकि यदि सुखद या अप्रिय विचारों का जुड़ाव इसे कुछ समय के लिए किसी स्त्री से जोड़ सकता है, जिससे हमें यह विश्वास हो जाता है कि यह उसी से प्रेरित है, कर्म से कर्म के आवश्यक क्रम में, तो भी जब हम जानबूझकर या अनजाने में उन जुड़ावों से खुद को अलग कर लेते हैं, तो यह प्रेम, मानो वास्तव में एक सहज चीज हो और केवल हमसे ही उत्पन्न हुआ हो, पुनर्जीवित होकर किसी अन्य स्त्री पर अपना प्रेम प्रकट कर देता है। हालाँकि, बालबेक के लिए मेरी प्रस्थान तिथि के समय और वहाँ मेरे प्रवास के आरंभिक भाग के दौरान, मेरी उदासीनता अभी भी केवल रुक-रुक कर ही थी। अक्सर, हमारा जीवन कालक्रम के प्रति इतना लापरवाह होता है कि दिनों के क्रम में इतने सारे विसंगतियाँ आ जाती हैं कि मैं आज

भी उन्हीं दिनों में जी रहा होता हूँ—जो कल या पिछले सप्ताह से कहीं अधिक पुराने हैं—जिनमें मैंने गिलबर्ट से प्रेम किया था। और उसे न देख पाना मेरे लिए उतना ही असहनीय कष्ट बन गया जितना उस समय था। वह स्व जो उससे प्रेम करता था, जिसे एक दूसरे स्व ने लगभग पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया था, मुझमें फिर से जागृत हो गया, जो अक्सर किसी महत्वपूर्ण घटना की तुलना में किसी तुच्छ घटना से अधिक प्रेरित होता था। उदाहरण के लिए, यदि मैं एक क्षण के लिए नॉर्मंडी में अपने आगमन की कल्पना करूँ, तो मैंने बालबेक के समुद्र तट पर मुझसे गुजर रहे किसी व्यक्ति को 'डाक मंत्रालय के सचिव और उनके परिवार' का जिक्र करते सुना। अब, यह देखते हुए कि मुझे अभी तक उस परिवार के मेरे जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में कुछ भी पता नहीं था, इस टिप्पणी को अनसुना कर देना चाहिए था; इसके बजाय, इसने मुझे तुरंत एक तीव्र पीड़ा दी, जो मुझमें मौजूद उस स्व ने महसूस की थी जो काफी हद तक लंबे समय से विकसित हो चुका था, गिलबर्ट से बिछड़ने पर। क्योंकि मैंने गिलबर्ट की अपने पिता के साथ हुई उस बातचीत पर कभी ध्यान नहीं दिया था, जो मेरे सामने हुई थी और जिसमें डाक मंत्रालय के सचिव और उनके परिवार का ज़िक्र हुआ था। अब हमारी प्रेम स्मृतियाँ स्मृति के सामान्य नियमों का अपवाद नहीं हैं, जो बदले में आदत के और भी सामान्य नियमों द्वारा नियंत्रित होती हैं। और जैसे-जैसे आदत हर छाप को कमज़ोर करती है, कोई व्यक्ति हमें जो सबसे स्पष्ट रूप से याद दिलाता है, वह ठीक वही होता है जिसे हम भूल चुके होते हैं, क्योंकि वह महत्वहीन था, और इसलिए हमने उसे पूरी शक्ति के साथ छोड़ दिया था। यही कारण है कि हमारी स्मृति का बेहतर हिस्सा हमारे बाहर मौजूद होता है, बारिश की बूँदों में, बिना हवादार कमरे की गंध में या ठंडी अंगीठी में जलती हुई पहली चटकती हुई लकड़ी की आग की गंध में: संक्षेप में, जहाँ

कहीं भी हम उस चीज़ को पाते हैं जिसे हमारे मन ने, जिसका कोई उपयोग न होने के कारण, अस्वीकार कर दिया था, अतीत का अंतिम खजाना, सबसे समृद्ध, वह जो हमारे आँसुओं का सारा प्रवाह स्रोत पर सूख जाने के बाद भी हमें फिर से रुला सकता है। क्या मैंने कहा कि यह हमारे बाहर है; बल्कि हमारे भीतर है, लेकिन हमारी आँखों से कमोबेश लंबे समय तक विस्मृति में छिपा हुआ है। यह केवल इसी विस्मृति के कारण है कि हम समय-समय पर उस प्राणी को पुनः प्राप्त कर पाते हैं जो हम थे, अतीत की घटनाओं का सामना उसी तरह कर पाते हैं जैसे उस प्राणी ने किया था, नए सिरे से पीड़ा सहते हैं क्योंकि अब हम स्वयं नहीं बल्कि वह प्राणी हैं, और क्योंकि उसने उस चीज़ से प्रेम किया जिसने हमें अब उदासीन कर दिया है। हमारी सामान्य स्मृति के प्रकाश में अतीत की छवियां धीरे-धीरे धुंधली पड़ जाती हैं और दृष्टि से ओझल हो जाती हैं, उनका कुछ भी शेष नहीं रहता, हम उन्हें फिर कभी नहीं पा सकेंगे। या यूं कहें कि हम उन्हें फिर कभी नहीं पा पाते यदि कुछ शब्द (जैसे 'डाक मंत्रालय के सचिव') विस्मृति में सावधानीपूर्वक बंद न कर दिए गए होते, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई लेखक राष्ट्रीय पुस्तकालय में किसी पुस्तक की प्रति जमा करता है जो अन्यथा अनुपलब्ध हो सकती है।

लेकिन गिलबर्ट के लिए मेरे प्रेम का यह दुख और पुनरुत्थान सपने में दिखने वाली ऐसी चीजों से ज्यादा देर तक नहीं टिक पाया, बल्कि इस बार तो इसके विपरीत, क्योंकि बालबेक में पुरानी आदत उन्हें जीवित रखने के लिए मौजूद नहीं थी। और अगर आदत के ये दो प्रभाव असंगत प्रतीत होते हैं, तो इसका कारण यह है कि आदत अनेक नियमों से बंधी होती है। पेरिस में आदत के कारण मैं गिलबर्ट के प्रति उदासीन होता जा रहा था। आदत में बदलाव, यानी आदत का अस्थायी विराम, बालबेक के लिए रवाना होने पर आदत का काम पूरा कर दिया। यह कमजोर करता

है, लेकिन स्थिर भी करता है; यह विघटन की ओर ले जाता है, लेकिन बिखरे हुए तत्वों को अनिश्चित काल तक कायम रखता है। बीते वर्षों से, मैं प्रतिदिन अपने मन की स्थिति को, कमोबेश प्रभावी रूप से, पिछले दिन की स्थिति के अनुरूप ढालता आ रहा था। बालबेक में, एक अजीब सा बिस्तर, जिसके बगल में सुबह एक ऐसी थाली लाई गई जो पेरिस में मेरी नाश्ते की थाली से बिल्कुल अलग थी, जाहिर तौर पर उन कल्पनाओं को सहारा नहीं दे सका जिन पर गिलबर्ट के लिए मेरा प्यार पनपा था: ऐसे मामले होते हैं (हालांकि मैं मानता हूँ कि आम तौर पर नहीं) जिनमें, गतिहीन जीवन से दिन पंगु हो जाने पर, समय बचाने का सबसे अच्छा तरीका निवास स्थान बदलना होता है। बालबेक की मेरी यात्रा एक ऐसे रोगी की पहली सैर की तरह थी जिसे यह यकीन दिलाने के लिए बस यही काफी था कि वह ठीक हो गया है।

यह यात्रा अब संभवतः मोटरकार से की जाएगी, जिससे यह और भी रोचक हो जाएगी। हम यह भी देखेंगे कि इस तरह से पूरी की गई यात्रा एक अर्थ में अधिक वास्तविक भी होगी, क्योंकि हम पृथ्वी की सतह पर बनी विभिन्न आकृतियों का अधिक निकटता से, अधिक घनिष्ठता से अनुसरण करेंगे। लेकिन अंततः यात्रा का विशेष आकर्षण रास्ते में स्थानों पर उतरने और थकते ही पूरी तरह से रुकने में नहीं है, बल्कि प्रस्थान और आगमन के बीच के अंतर को यथासंभव सूक्ष्म नहीं बल्कि तीव्र बनाने में है, ताकि हम इसे इसकी संपूर्णता में, अक्षुण्ण रूप से, उसी रूप में महसूस कर सकें, जैसा कि यह हमारे मन में तब मौजूद थी जब कल्पना हमें उस स्थान से, जहाँ हम रह रहे थे, उस स्थान के हृदय तक ले गई जिसे हम देखने के लिए तरस रहे थे, एक ही झटके में जो हमें चमत्कारिक लगा, इसलिए नहीं कि इसने एक निश्चित दूरी तय की, बल्कि इसलिए कि इसने दुनिया की दो अलग-अलग पहचानों को एकजुट किया,

हमें एक नाम से दूसरे नाम तक ले गया; और यह अंतर उन विशिष्ट स्थानों, रेलवे स्टेशनों में होने वाली रहस्यमय क्रिया द्वारा और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है (उस परिवहन माध्यम की तुलना में जिसमें, चूंकि कोई भी अपनी इच्छानुसार रुक और उतर सकता है, इसलिए शायद ही कोई गंतव्य बिंदु कहा जा सकता है), जो कि, एक तरह से, आसपास के शहर का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि इसके व्यक्तित्व का सार समाहित करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे उनके साइनबोर्ड पर इसका नाम चित्रित होता है।

लेकिन इस मामले में भी, और अन्य सभी मामलों में भी, हमारा युग चीजों को केवल उनके उचित परिवेश में प्रदर्शित करने के जुनून से ग्रस्त है, जिससे उस मूलभूत तत्व, उस मानसिक क्रिया का दमन हो जाता है जिसने उन्हें उस परिवेश से अलग किया। आजकल एक चित्र को उसी काल के फर्नीचर, आभूषणों और पर्दों के बीच 'प्रस्तुत' किया जाता है, जो सजावट की एक पुरानी योजना है, जिसकी संरचना में आज के घरों में वही गृहिणी श्रेष्ठ है जो कल तक इतनी अज्ञानी थी, लेकिन अब अपना समय अभिलेखों और पुस्तकालयों में व्यतीत करती है; और इन सबके बीच वह उत्कृष्ट कृति जिसे हम भोजन करते समय मेज से ऊपर देखते हैं, हमें वह रोमांचकारी आनंद नहीं देती जो हम उससे केवल एक सार्वजनिक गैलरी में ही प्राप्त कर सकते हैं, जो अपनी सादगी, सभी अनावश्यक विवरणों की अनुपस्थिति से, उन अंतर्मन को कहीं बेहतर ढंग से दर्शाती है जिनमें कलाकार ने उसे रचने के लिए एकांतवास किया था।

दुर्भाग्य से, रेलवे स्टेशन जैसे वे अद्भुत स्थान, जहाँ से कोई दूर के गंतव्य के लिए रवाना होता है, दुखद स्थान भी हैं, क्योंकि यदि उनमें वह चमत्कार हो जाता है जिसके द्वारा अब तक हमारे मन के सिवा अस्तित्व में न रहे दृश्य हमारे जीवन के दृश्य बन जाते हैं, तो ठीक इसी कारण से हमें प्रतीक्षा-कक्ष से बाहर निकलते ही, उन परिचित दीवारों के भीतर फिर

से खुद को पाने के किसी भी विचार को त्याग देना चाहिए, जो क्षण भर पहले तक हमें घेरे हुए थीं। हमें अपने घर जाकर अपने बिस्तर पर सोने की सारी उम्मीदें त्याग देनी होंगी, एक बार जब हमने उस रहस्यमय गुफा में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया है जिसके माध्यम से हम उस रहस्य तक पहुँच सकते हैं, उन विशाल, कांच की छतों वाली झोपड़ियों में से एक में, जैसे कि सेंट-लाज़ारे की झोपड़ी जिसमें मुझे बालबेक के लिए ट्रेन खोजने के लिए जाना होगा, और जो शहर के फटे हुए गर्भगृहों पर उन उजाड़ और असीम आकाशों में से एक को फैलाती है, जो नाटकीय खतरों के संचय से भारी है, जैसे कि कुछ आकाश जिन्हें मांटेग्ना या वेरोनीज़ ने लगभग पेरिसियन आधुनिकता के साथ चित्रित किया है, जिसके नीचे केवल कुछ गंभीर और भव्य कार्य ही संपन्न हो सकते हैं, जैसे कि ट्रेन से प्रस्थान या क्रॉस का उत्थान।

जब तक मैं पेरिस में अपने आरामदायक बिस्तर की गर्माहट में लेटे-लेटे, बर्फीली बारिश से ढके हुए बालबेक के फारसी गिरजाघर को निहारने में संतुष्ट था, तब तक मेरे शरीर ने इस यात्रा पर कोई आपत्ति नहीं जताई थी। आपत्ति तभी शुरू हुई जब उसे पता चला कि उसे भी इस यात्रा में शामिल होना होगा, और मेरे आगमन की शाम को मुझे 'मेरा' कमरा दिखाया जाएगा जो मेरे शरीर के लिए अपरिचित होगा। मेरा विद्रोह और भी गहरा हो गया क्योंकि मेरे प्रस्थान की पूर्व संध्या पर ही मुझे पता चला कि मेरी माँ हमारे साथ नहीं आ रही हैं, मेरे पिता, जो एम. डी नॉरपोइस के साथ स्पेन जाने का समय आने तक मंत्रालय में व्यस्त रहेंगे, ने पेरिस के आसपास ही एक घर लेना बेहतर समझा है। दूसरी ओर, बालबेक का नज़ारा मुझे कम आकर्षक नहीं लगा, भले ही मुझे उसे असुविधा की कीमत पर खरीदना पड़ा, जो कि इसके विपरीत, मुझे उस अनुभव की वास्तविकता को दर्शाती और सुनिश्चित करती हुई प्रतीत हुई, जिसे मैं वहाँ

पाने के लिए जा रहा था। एक ऐसा अनुभव जिसकी बराबरी का कोई भी नज़ारा, कोई भी ऐसा मनोरम दृश्य जिसे मैं अपने घर लौटकर अपने बिस्तर पर सोने से वंचित हुए बिना देख सकता था, उसे भर नहीं सकता था। यह पहली बार नहीं था जब मुझे लगा कि प्रेम करने वाले और आनंद पाने वाले हमेशा एक जैसे नहीं होते। मुझे विश्वास था कि मैं बालबेक के लिए उतना ही तरस रहा था जितना कि मेरा इलाज करने वाला डॉक्टर, जब उसने हमारे प्रस्थान की सुबह मुझे इतना दुखी देखकर आश्चर्यचकित होकर कहा, "मैं आपको यह बताने में संकोच नहीं करता कि अगर मुझे एक सप्ताह के लिए समुद्र तट पर जाकर आराम करने का समय मिल जाए, तो मैं दोबारा पूछे बिना ही चला जाऊँगा। वहाँ आपकी रेस, नौका दौड़ें होंगी; आप नहीं जानते कि क्या-क्या होगा!" लेकिन मुझे यह सबक बहुत पहले ही मिल चुका था—बर्मा को सुनने के लिए ले जाए जाने से पहले—कि मैं चाहे जो भी प्रेम करूं, वह एक लंबी और हृदयविदारक खोज के अंत के बिना कभी प्राप्त नहीं होगा, जिसके दौरान मुझे पहले उस सर्वोपरि अच्छाई के लिए अपने स्वयं के सुख का त्याग करना होगा, बजाय इसके कि मैं उसे वहां खोजूं।

मेरी दादी, स्वाभाविक रूप से, हमारे इस पलायन को कुछ अलग नज़रिए से देखती थीं, और (क्योंकि वे अब भी इस बात को लेकर उतनी ही उत्सुक थीं कि मुझे मिलने वाले उपहार कलात्मक रूप धारण करें) उन्होंने योजना बनाई थी कि वे मुझे इस यात्रा की एक ऐसी 'प्रतिबिंबित छवि' भेंट कर सकें जो कम से कम कुछ हिस्सों में 'पुरानी' हो। वे चाहती थीं कि हम रेल और सड़क मार्ग से उसी यात्रा को दोहराएँ जो श्रीमती डी सेविग्ने ने पेरिस से चौलनेस और पोंट-ऑडेमर होते हुए 'पूर्व' की यात्रा के दौरान अपनाई थी। लेकिन मेरे पिता के कहने पर मेरी दादी को यह योजना छोड़नी पड़ी, क्योंकि वे जानते थे कि जब भी वे किसी यात्रा का आयोजन

करती थीं जिसका उद्देश्य उससे अधिकतम बौद्धिक लाभ प्राप्त करना होता था, तो छूटी हुई ट्रेनों, खोए हुए सामान, गले में खराश और टूटे नियमों की कितनी कहानियाँ सुनने को मिलती थीं। कम से कम वह इस विचार से प्रसन्न हो सकती थी कि जब हमारे लिए समुद्र तट पर जाने का समय आएगा, तो हमें कभी भी उस जोखिम का सामना नहीं करना पड़ेगा कि अचानक से एक ऐसी गाड़ी आ जाए जिसे उसका प्रिय सेविग्ने 'एक विशालकाय गाड़ी' कहता है, और हमें घर के अंदर ही रहना पड़े, क्योंकि हम बालबेक में किसी को भी नहीं जानते होंगे, क्योंकि लेग्रैंडिन ने हमें अपनी बहन से परिचय पत्र देने से परहेज किया था। (मेरी चाचियों सेलीन और फ्लोरा को यह परहेज़ उतना पसंद नहीं आया था। वे बचपन से उस महिला को जानती थीं, जिनके बारे में वे तब तक अपनी इस शुरुआती घनिष्ठता को याद करने के लिए हमेशा 'रेनी डी कैम्ब्रेमर' कहकर बात करती थीं। उनसे उन्हें कई छोटे-छोटे उपहार मिले थे, जो कमरे या बातचीत की शोभा बढ़ाते हैं, लेकिन जिनके प्रति अब दोनों पक्षों के बीच कोई भावना नहीं रह गई थी। उन्होंने सोचा कि वे हमारे अपमान का बदला ले रही हैं, जब वे श्रीमती लेग्रैंडिन से मिलने जाती थीं, तो उनकी बेटी का नाम फिर कभी नहीं लेती थीं। घर से सुरक्षित बाहर निकलने के बाद वे बस एक-दूसरे को बधाई देती थीं: "मैंने तो तुम्हें पता है किसका ज़िक्र नहीं किया!" "मुझे लगता है यह बात समझ में आ गई होगी!")

और इसलिए हमें पेरिस से उसी एक सौ बाईस नंबर की ट्रेन से निकलना था, जिसे मैं रेलवे समय सारिणी में देखकर अक्सर खुद को बहला लेता था, जहाँ उसका यात्रा कार्यक्रम मुझे हमेशा यह एहसास दिलाता था, लगभग यह भ्रम पैदा करता था कि मैं उसी से यात्रा शुरू कर रहा हूँ, न कि यह कि मैं उसे पहले से जानता हूँ। जैसे किसी भी प्रकार की खुशी की विशेषताओं का हमारे मन में चित्रण उस ट्रेन के बारे में हमारे पास मौजूद

जानकारी की सटीकता से अधिक, हमारे भीतर जागृत होने वाली इच्छाओं की प्रकृति पर निर्भर करता है, मुझे लगा कि मैं इस ट्रेन को उसके हर विवरण में जानता हूँ, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि इसके किसी डिब्बे में बैठकर, जैसे-जैसे दिन ढलने लगता, मुझे एक विशेष आनंद महसूस होगा, जब ट्रेन किसी स्टेशन के पास पहुँचती, तो इस या उस दृश्य को निहारते हुए; इतना अधिक कि यह ट्रेन, जो हमेशा मेरे मन में उन्हीं शहरों की छवियाँ लाती थी, जिन्हें मैंने दोपहर के बाद के उन घंटों की धूप में नहाया था, जिनसे यह ट्रेन गुज़रती थी, मुझे हर दूसरी ट्रेन से अलग लगती थी; और मैंने—जैसा कि हम अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति के साथ करते हैं जिसे हमने कभी नहीं देखा होता, लेकिन जिसके बारे में हम यह मानना पसंद करते हैं कि हमने उसकी मित्रता जीत ली है—उस यात्री को एक विशिष्ट और अपरिवर्तनीय चेहरा देकर अपनी बात समाप्त की, जो कलात्मक था, सुनहरे बालों वाला था, और जो मुझे अपने साथ अपनी यात्रा पर ले जाना चाहता था, और जिसे मैं सेंट-लो कैथेड्रल के नीचे विदाई देने वाला था, इससे पहले कि वह डूबते सूरज को पकड़ने के लिए जल्दी करे।

मेरी दादी माँ बालबेक सीधे जाने जैसी 'मूर्खतापूर्ण' हरकत नहीं करना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने अपनी यात्रा बीच में ही रोक दी और अपनी एक सहेली के घर रात बिताई। मुझे भी उसी शाम उसी सहेली के घर से निकलना था, ताकि मैं उनके रास्ते में न आऊँ और सुबह होते-होते बालबेक चर्च देख सकूँ, जो हमें पता चला था कि बालबेक-प्लेज से कुछ दूरी पर है। ऐसा इसलिए ताकि स्नान शुरू करने के बाद मुझे वहाँ जाने का मौका न मिले। शायद मेरे लिए यह कम कष्टदायक था कि मेरी यात्रा का वांछित लक्ष्य मेरे और उस क्रूर पहली रात के बीच खड़ा था, जिस रात मुझे एक नए घर में प्रवेश करना था और वहाँ रहने के लिए सहमत होना

था। लेकिन मुझे पहले पुराना घर छोड़ना था। मेरी माँ ने उसी दोपहर सेंट-क्लाउड में 'रहने' का इंतज़ाम कर लिया था, और स्टेशन पर हमें छोड़ने के बाद सीधे वहाँ जाने की सारी व्यवस्था कर ली थी, या यूँ कहें कि करने का दिखावा कर रही थीं, ताकि उन्हें हमारे घर वापस न जाना पड़े, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं मैं आखिरी समय में बालबेक जाने के बजाय उनके साथ वापस न लौट जाऊँ। दरअसल, उन्होंने नए घर में बहुत काम होने और समय की कमी का बहाना बनाया था, लेकिन असल में मुझे लंबे समय तक चलने वाले बिछड़ने के कष्ट से बचाने के लिए, उन्होंने हमारे साथ उस पल तक न रुकने का फैसला किया था, जब जाने का संकेत मिलता है। अब तक बेकार की भागदौड़ और तैयारियों के बीच छिपा हुआ बिछड़ना अचानक प्रकट हो जाता है, जिसे टालना नामुमकिन हो जाता है, और एक ही पल में पूरी तरह से लाचार और बेहद स्पष्ट हो जाता है।

पहली बार मुझे यह एहसास होने लगा कि मेरी माँ मेरे बिना भी एक अलग जीवन जी सकती हैं। वह मेरे पिता के साथ रहने जा रही थीं, जिनके जीवन में शायद मेरी कमज़ोर सेहत और मेरी घबराहट भरी बेचैनी ने कुछ हद तक मुश्किलें और उदासी ला दी थी। इस अलगाव ने मुझे और भी दुखी कर दिया क्योंकि मैंने मन ही मन सोचा कि शायद यह मेरी माँ के लिए उन लगातार निराशाओं का अंत था जो मैंने उन्हें दी थीं, जिनके बारे में उन्होंने मुझसे कभी एक शब्द भी नहीं कहा था, लेकिन जिनसे उन्हें हमारे साथ छुट्टियाँ बिताने की कठिनाई का एहसास हो गया था; और शायद यह उस तरह के जीवन का पहला अनुभव भी था जिसके लिए वह अब भविष्य के लिए खुद को तैयार कर रही थीं, जैसे-जैसे मेरे पिता और उनके जीवन के वर्ष बीतते जा रहे थे, एक ऐसा जीवन जिसमें मैं उन्हें कम देख पाऊँगी, जिसमें (एक ऐसी बात जो मेरे बुरे सपनों में भी मुझे नहीं दिखाई दी थी) वह एक तरह से अजनबी बन जाएँगी, एक ऐसी महिला

जो अकेले घर जाती हुई दिखाई देगी, जहाँ मैं नहीं होऊँगी, और चौकीदार से पूछेगी कि क्या मेरे द्वारा उनके लिए कोई पत्र आया है।

स्टेशन पर मेरा बैग उठाने की पेशकश करने वाले व्यक्ति को मैं मुश्किल से ही जवाब दे पाई। मेरी माँ ने मुझे दिलासा देने के लिए वे सभी तरीके आजमाए जो उन्हें सबसे कारगर लगे। मेरी उदासी को अनदेखा करने का दिखावा करना व्यर्थ समझते हुए, उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज़ में मुझसे इस बारे में मज़ाक किया:

अच्छा, और अगर बालबेक चर्च को पता चले कि लोग उसे देखने जाते समय ऐसे मुंह बनाते हैं, तो वह क्या कहेगा? यकीनन ये वो मुग्ध पर्यटक नहीं है जिनके बारे में रस्किन बात करते हैं। वैसे भी, अगर तुम मेरा साथ दोगे, तो मुझे पता चल जाएगा, भले ही हम मीलों दूर हों, मैं अपने छोटे बेटे के साथ रहूंगी। तुम्हें कल मम्मी का पत्र मिलेगा।

मेरी दादी ने कहा, "मेरी प्यारी, मैं तुम्हें श्रीमती डी सेविग्ने की तरह देखती हूँ, तुम्हारी आँखें नक्शे पर टिकी रहती हैं, और तुम एक पल के लिए भी हमें नज़र से ओझल नहीं होने देती।"

फिर माँ ने मेरा ध्यान भटकाने की कोशिश की, मुझसे पूछा कि रात के खाने में क्या बनाऊँ, मेरा ध्यान फ्रांस्वा की ओर दिलाया, और उसकी टोपी और लबादे की तारीफ की, जिन्हें वह पहचान नहीं पाई, जबकि बहुत पहले जब उसने उन्हें पहली बार मेरी परदादी पर देखा था, तो वे डर गई थीं। एक टोपी पर एक विशालकाय पक्षी बना था, और दूसरी पर भद्दा डिज़ाइन और काले मोती जड़े थे। लेकिन लबादा इतना पुराना हो गया था कि पहनने लायक नहीं था, इसलिए फ्रांस्वा ने उसे पलटवा दिया था, जिससे अंदर का सादा कपड़ा और अच्छा रंग दिखाई दे रहा था। जहाँ तक उस पक्षी की बात है, तो वह बहुत पहले ही मर चुका था और उसे फेंक

दिया गया था। और जिस प्रकार कभी-कभी यह देखना विचलित करने वाला होता है कि सबसे सजग कलाकार केवल प्रयास से ही जो प्रभाव प्राप्त करते हैं, वे किसी लोकगीत में, किसी किसान की झोपड़ी की दीवार पर दिखाई देते हैं, जहाँ दरवाजे के ऊपर, रचना के बिल्कुल सही स्थान पर, एक सफेद या पीला गुलाब खिलता है—ठीक उसी प्रकार मखमली पट्टी, रिबन का लूप जो शार्डिन या व्हिस्लर के चित्र में किसी को भी प्रसन्न कर देता, फ्रांस्वा ने टोपी पर सरल लेकिन अचूक स्वाद के साथ लगाया था, जो अब मनमोहक लग रही थी।

एक पुराने युग से तुलना करें तो, हमारी वृद्ध सेविका के चेहरे पर अक्सर दिखाई देने वाली विनम्रता और सत्यनिष्ठा, जो उनके चेहरे को एक कुलीनता प्रदान करती थी, अब उनके वस्त्रों में भी झलकती थी। एक संयमित लेकिन विनम्र महिला होने के नाते, जो अपनी गरिमा और स्थान बनाए रखना जानती थी, उन्होंने यात्रा के लिए ऐसे वस्त्र पहने थे ताकि वे हमारी संगति में उचित दिखें, लेकिन साथ ही साथ खुद को ज्यादा ध्यान आकर्षित करने की इच्छा भी न रखें। चेरी रंग के कपड़े से बने, अब फीके पड़ चुके, लबादे और फर कॉलर की सूक्ष्म बनावट में फ्रांकोइस को देखकर मुझे ऐनी ऑफ ब्रिटनी के उन लघु चित्रों की याद आ गई, जो किसी प्राचीन चित्रकार द्वारा 'बुक्स ऑफ आवर्स' में चित्रित किए गए थे, जिनमें सब कुछ इतनी सटीकता से अपनी जगह पर है, संपूर्ण भाव सभी भागों में इतनी समान रूप से वितरित है कि पोशाक की समृद्ध और प्राचीन विशिष्टता आंखों, होंठों और हाथों के समान ही पवित्र गंभीरता को व्यक्त करती है।

फ्रांस्वा के संदर्भ में, विचारों की बात करना लगभग असंभव था। वह कुछ भी नहीं जानती थी, उस पूर्ण अर्थ में जिसमें कुछ भी न जानना अर्थ कुछ भी न समझना होता है, सिवाय उन दुर्लभ सत्यों के जिन्हें हृदय प्रत्यक्ष

रूप से प्राप्त कर सकता है। विचारों का विशाल संसार उसके लिए अस्तित्वहीन था। लेकिन जब कोई उसकी निगाहों की स्पष्टता, नाक और होंठों की रेखाओं, उन सभी चिह्नों का अध्ययन करता है जो इतने सारे सुसंस्कृत लोगों में नहीं पाए जाते, जिनमें वे अन्यथा सर्वोच्च विशिष्टता, एक चयनित आत्मा की महान वैराग्यता का प्रतीक होते, तो व्यक्ति बेचैन हो जाता है, जैसे कोई कुत्ते की स्पष्ट, बुद्धिमान आँखों को देखकर बेचैन हो जाता है, जिसके लिए, फिर भी, हम जानते हैं कि हमारी सभी मानवीय अवधारणाएँ पराई हैं, और स्वयं से यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित होता है कि क्या उन अन्य विनम्र भाइयों, हमारे किसान देशवासियों में, ऐसे प्राणी नहीं हो सकते जो पृथ्वी के महान लोगों की तरह, सरल मन के हों, या यों कहें कि कठोर भाग्य द्वारा सरल मन वालों के बीच रहने के लिए अभिशप्त हों, दिव्य प्रकाश से वंचित हों, फिर भी अधिकांश शिक्षित लोगों की तुलना में अधिक स्वाभाविक रूप से, अधिक सहजता से चयनित आत्माओं के निकट हों, एक तरह से, सभी सदस्य हों, भले ही बिखरे हुए हों, भटके हुए हों, तर्क की अपनी विरासत से वंचित हों, स्वर्गीय परिवार के, उन रिश्तेदारों के, जो बचपन में खो गए हैं, उन सर्वोच्च दिमागों के, जिनके लिए - जैसा कि उनकी आँखों में अचूक प्रकाश से स्पष्ट है, हालांकि वे उस प्रकाश को किसी भी चीज पर केंद्रित न करें—उनमें प्रतिभा प्रदान करने के लिए केवल ज्ञान की कमी रही है।

मेरी माँ ने देखा कि मैं अपने आँसू रोक नहीं पा रही थी, तो उन्होंने मुझसे कहा: "रेगुलस की आदत थी, जब हालात गंभीर हो जाते थे...। और ये माँ के लिए अच्छा नहीं है! श्रीमती डी सेविग्ने क्या कहती हैं? तुम्हारी दादी तुमसे कहेंगी: 'मुझे वह सारा साहस जुटाना पड़ेगा जो तुममें नहीं है।'" और यह याद रखते हुए कि किसी दूसरे के प्रति स्नेह स्वार्थी दुखों को भुला देता है, उन्होंने मुझे बहलाने की कोशिश की और बताया कि उन्हें उम्मीद

है कि सेंट-क्लाउड जाने में कोई परेशानी नहीं होगी, उन्हें टैक्सी पसंद आई, जिसका उन्होंने इंतज़ार करवाया था, ड्राइवर सभ्य लग रहा था और सीटें आरामदायक थीं। मैंने इन छोटी-छोटी बातों पर मुस्कुराने की कोशिश की और सहमति और संतुष्टि का भाव दिखाते हुए सिर झुका लिया। लेकिन उन्होंने मुझे माँ के आसन्न प्रस्थान को और अधिक सटीक रूप से अपने मन में चित्रित करने में ही मदद की, और मैं व्यथित हृदय से उन्हें ऐसे निहारता रहा मानो वे मुझसे पहले ही बिछड़ चुकी हों, उस चौड़ी किनारी वाली भूसे की टोपी के नीचे, जिसे उन्होंने गाँव में पहनने के लिए खरीदा था, उस पतले कपड़े में, जिसे उन्होंने दोपहर की चिलचिलाती धूप में लंबी यात्रा के लिए पहना था; टोपी और कपड़े ने उन्हें किसी और का रूप दे दिया था, किसी ऐसे व्यक्ति का जो पहले से ही विला मोंट्रेटआउट का हिस्सा बन चुकी थीं, जहाँ मैं उन्हें कभी नहीं देख पाऊँगा।

यात्रा के दौरान होने वाले घुटन के दौरों से बचने के लिए डॉक्टर ने मुझे सलाह दी थी कि यात्रा शुरू करते ही मैं एक अच्छी-खासी मात्रा में बीयर या ब्रांडी पी लूँ, ताकि मैं 'उत्साह' की अवस्था में यात्रा शुरू कर सकूँ, जिसमें तंत्रिका तंत्र कुछ समय के लिए कमज़ोर नहीं होता। मैंने अभी तक तय नहीं किया था कि मुझे ऐसा करना चाहिए या नहीं, लेकिन मैं कम से कम यह चाहता था कि मेरी दादी मान लें कि अगर मैंने ऐसा करने का फैसला किया, तो मेरे पास समझदारी और अधिकार होगा। इसलिए मैंने ऐसे बात की जैसे मेरी झिझक सिर्फ इस बात को लेकर थी कि मैं अपना पेय कहाँ से लूँ, प्लेटफार्म पर बने बार से या ट्रेन के रेस्तरां वाले डिब्बे से। लेकिन जैसे ही मेरी दादी के चेहरे पर नाराज़गी का भाव आया, मानो वह एक पल के लिए भी ऐसा विचार मन में नहीं लाना चाहती थीं, मैंने तुरंत कहा, "क्या!" मैंने मन ही मन कहा, अचानक शराब पीने के लिए बाहर जाने का निश्चय करते हुए, जो मेरी स्वतंत्रता के प्रमाण के रूप

में आवश्यक हो गया था क्योंकि इसकी मौखिक घोषणा बिना किसी विरोध के नहीं हुई थी, "क्या! आप जानते हैं कि मैं कितना बीमार हूँ, आप जानते हैं कि डॉक्टर ने क्या सलाह दी है, और आप मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं!"

जब मैंने अपनी दादी को अपनी तबीयत के बारे में बताया, तो उनकी चिंता और दयालुता साफ झलक रही थी। उन्होंने जवाब दिया, "जाओ, जल्दी; अगर इससे तुम्हें आराम मिले तो थोड़ी बीयर या शराब ले लो।" यह सुनकर मैं उन पर टूट पड़ी और लगभग उन्हें चूमने लगी। और अगर उसके बाद मैंने ट्रेन के रेस्तरां वाले डिब्बे में जाकर ज़रूरत से ज़्यादा पी लिया, तो इसलिए क्योंकि मुझे लगा कि अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो मुझे हमेशा से ज़्यादा तेज़ दौरा पड़ जाएगा, जिससे उन्हें सबसे ज़्यादा गुस्सा आएगा। पहले स्टॉप पर जब मैं अपने डिब्बे में वापस चढ़ी, तो मैंने अपनी दादी को बताया कि मैं बालबेक जाने से कितनी खुश हूँ, मुझे लग रहा है कि सब कुछ बढ़िया होगा, आखिरकार मैं जल्द ही माँ के बिना रहने की आदत डाल लूँगी, ट्रेन बहुत आरामदायक है, बार में अटेंडेंट और स्टीवर्ड इतने मिलनसार हैं कि मैं यह यात्रा बार-बार करना चाहूँगी ताकि उनसे दोबारा मिलने का मौका मिले। हालाँकि, मेरी दादी को इन सभी अच्छी खबरों से मेरे जैसी खुशी नहीं हुई। उसने मेरी ओर देखे बिना उत्तर दिया:

"थोड़ी देर सो क्यों नहीं लेते?" और उसने अपनी नज़र खिड़की की ओर घुमाई, जिसका पर्दा, हालांकि हमने खींच रखा था, कांच को पूरी तरह से नहीं ढक रहा था, जिससे सूरज की रोशनी दरवाजे की पॉलिश की हुई ओक की लकड़ी और सीट के कपड़े पर से छनकर अंदर आ रही थी (प्रकृति के साथ बिताए जीवन के विज्ञापन की तरह, जो रेलवे कंपनी द्वारा डिब्बे की दीवारों पर लगाए गए उन विज्ञापनों से कहीं अधिक प्रेरक था, जिनमें देश के उन स्थानों का वर्णन था जिनके नाम मैं जहां बैठा था वहां

से पढ़ नहीं पा रहा था), वही गर्म और नींद लाने वाली रोशनी जो जंगल के खुले मैदानों में फैली होती है।

लेकिन जब मेरी दादी को लगता था कि मेरी आँखें बंद हैं, तो मैं उन्हें कभी-कभी उनके घूंघट पर बने बड़े काले धब्बों के बीच से मुझे एक नज़र डालते हुए, फिर नज़र हटाते हुए और फिर से नज़र डालते हुए देख सकता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यायाम को करने की कोशिश कर रहा हो जो उसे कष्ट देता हो, ताकि वह उसे आदत बन जाए।

तब मैंने उससे बात की, लेकिन ऐसा लगा कि उसे इससे भी प्रसन्नता नहीं हुई। फिर भी मुझे अपनी आवाज़ सुहावनी लग रही थी, और मेरे शरीर की सबसे सूक्ष्म, सबसे आंतरिक हलचलें भी। इसलिए मैंने इसे लंबा खींचने की कोशिश की। मैंने अपने हर स्वर को उसके शब्द पर आलस से टिके रहने दिया, मैंने अपनी आँखों की हर नज़र को ठीक उसी जगह पहुँचते हुए महसूस किया जहाँ वह निर्देशित थी और वहाँ सामान्य समय से अधिक देर तक ठहरती रही। "अब, अब, शांत बैठो और आराम करो," मेरी दादी ने कहा। "अगर तुम्हें नींद नहीं आ रही है, तो कुछ पढ़ो।" और उन्होंने मुझे मैडम डी सेविग्ने की एक किताब दी जिसे मैंने खोला, जबकि वह मैडम डी ब्यूसेर्जेंट के संस्मरणों में मग्न हो गईं। वह इन दोनों की एक-एक किताब के बिना कहीं नहीं जाती थीं। ये दोनों उनकी पसंदीदा लेखिकाएँ थीं। अपने सिर को बिना हिलाए, एक ही मुद्रा में बने रहने से मुझे तीव्र आनंद मिल रहा था। मैं अपने हाथों में मैडम डी सेविग्ने की किताब पकड़े हुए लेटा रहा, जिसे मैंने बंद होने दिया था। मैंने अपनी आँखें नीचे नहीं कीं, और न ही उन्हें नीले खिड़की के पर्दे के अलावा कुछ और देखने दिया। लेकिन इस पर्दे को देखना मुझे अद्भुत लग रहा था, और अगर कोई मुझे इससे विचलित करने की कोशिश करता, तो मैं उसे जवाब देने की जहमत नहीं उठाता। इस पर्दे का नीला रंग, शायद अपनी

सुंदरता से नहीं, बल्कि अपनी तीव्र जीवंतता से, मेरे जन्म से लेकर मेरे पेय का अंतिम घूंट पीने और उसके असर शुरू होने तक मेरी आँखों के सामने से गुज़रे सभी रंगों को इस कदर मिटा रहा था कि इस नीले रंग की तुलना में वे रंग उतने ही फीके और खाली लग रहे थे, जितना कि जन्म से अंधे व्यक्ति के लिए वह अंधकार होता है, जिसे बाद में एक ऑपरेशन से देखने और रंगों में अंतर करने की क्षमता मिली हो। एक बूढ़ा टिकट कलेक्टर हमारे टिकट मांगने आया। उनकी जैकेट के धातु के बटनों से छलकती चांदी जैसी चमक ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया, भले ही मैं पूरी तरह से उसमें खोई हुई थी। मैं उनसे हमारे बगल में बैठने के लिए कहना चाहती थी। लेकिन वे अगले डिब्बे में चले गए, और मैं रेलकर्मियों के जीवन के बारे में सोचने लगी, जो अपना सारा समय रेल पटरी पर ही बिताते हैं, इसलिए शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता होगा जब वे इस पुराने संग्रहकर्ता को न देख पाते हों। उस अंधे व्यक्ति को घूरने और अपने मुंह को आधा खुला रखने में जो आनंद मुझे मिल रहा था, वह धीरे-धीरे कम होने लगा। मैं अधिक गतिशील हो गई; मैं अपनी सीट पर भी हिलने लगी; मैंने अपनी दादी द्वारा दी गई किताब खोली और उसके पन्ने लापरवाही से पलटने लगी, जो भी मेरी नज़र में आता, उसे पढ़ने लगी। और जैसे-जैसे मैं पढ़ती गई, मैडम डी सेविग्ने के प्रति मेरी प्रशंसा बढ़ती गई।

औपचारिक विवरणों, उस दौर की मुहावरों या सामाजिक रीति-रिवाजों में बह जाना एक गलती है। इसका नतीजा यह होता है कि कुछ लोग यह मान लेते हैं कि उन्होंने सेविग्ने शैली को अपना लिया है जब वे कहते हैं: "बताओ, मेरी प्यारी," या "वह काउंट मुझे एक गुणी व्यक्ति लगा," या "घास काटना दुनिया की सबसे सुखद चीज़ है।" श्रीमती डी सिमिआन पहले से ही यह कल्पना कर रही हैं कि वह अपनी दादी की तरह व्यवहार कर रही हैं क्योंकि वह लिख सकती हैं: "श्रीमान, श्रीमान, श्रीमान डी ला

बूली बहुत अच्छी तरह से बच्चे को जन्म दे रहे हैं और उनकी मृत्यु की खबर सुनने के लिए पूरी तरह तैयार हैं," या "ओह, मेरे प्यारे मार्क्विस, आपके पत्र ने मुझे कितना मोहित कर दिया! मैं इसका जवाब देने के अलावा और क्या कर सकती हूँ?" या "मुझे लगता है, श्रीमान, कि आपको मुझे एक पत्र लिखना है और मुझे आपको बरगामोट के कुछ डिब्बे देने हैं। मैं आठ तक अपना कर्ज चुका देती हूँ; बाकी बाद में भेज दूँगी... धरती ने कभी इतने फल नहीं दिए। जाहिर तौर पर आपकी खुशी के लिए।" और वह इसी शैली में रक्तस्राव, नींबू आदि पर लिखे अपने पत्र भी लिखती है, यह मानकर कि यह मैडम डी सेविग्ने के पत्रों की विशिष्ट शैली है। लेकिन मेरी दादी, जो अपने परिवार और प्रकृति के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर उस महिला के भीतर से उनके करीब आई थीं, ने मुझे उनके पत्रों की वास्तविक सुंदरता का आनंद लेना सिखाया, जो बिल्कुल अलग थी। यह सुंदरता मुझ पर और भी अधिक प्रभावशाली होने वाली थी क्योंकि मैडम डी सेविग्ने उसी शैली की एक महान कलाकार थीं, जिस शैली के चित्रकार से मैं बालबेक में मिलने वाली थी, जहाँ चीजों को देखने के मेरे दृष्टिकोण पर उनका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा था। बालबेक में मुझे एहसास हुआ कि वह भी उन्हीं की तरह चीजों को अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत करती थीं, उन्हें समझने के क्रम में, न कि पहले उनके विभिन्न कारणों के संदर्भ में उनकी व्याख्या करने के। लेकिन उसी दोपहर रेलगाड़ी के डिब्बे में, जब मैंने उस पत्र को फिर से पढ़ा जिसमें चांदनी झलकती है: "मैं प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकती: मैं अपने सभी टोप और घूंघट पहन लेती हूँ, हालाँकि उनकी कोई आवश्यकता नहीं है, मैं इस गली में टहलती हूँ, जहाँ हवा मेरे कमरे की तरह मीठी है; मुझे हजारों कल्पनाएँ दिखाई देती हैं, सफेद और काले भिक्षु, धूसर और सफेद नन, जमीन पर इधर-उधर बिखरे हुए लिनेन, पेड़ों के तनों के सहारे सीधे खड़े हुए पुरुष,"

मैं उस चीज़ से मंत्रमुग्ध हो गई जिसे, थोड़ी देर बाद, मैं मैडम डी सेविग्ने के पत्रों के डोस्टोयेव्स्की पक्ष के रूप में वर्णित करूँगी (क्योंकि क्या वह परिदृश्यों को उसी तरह चित्रित नहीं करती जैसे वह पात्रों को चित्रित करता है?)।

उस शाम, जब मैं अपनी दादी को उनके गंतव्य तक छोड़ने और उनकी सहेली के घर में कुछ घंटे बिताने के बाद, अकेले ट्रेन में वापस लौटी, तो कम से कम मुझे अगली रात में कोई परेशानी नहीं हुई; ऐसा इसलिए था क्योंकि मुझे वह रात ऐसे कमरे में नहीं बितानी पड़ी जिसकी नींद मुझे जगाए रखती; मैं ट्रेन की उन सभी हलचलों की सुखदायक गतिविधि से घिरी हुई थी जो मेरा साथ दे रही थीं, अगर मैं सो नहीं पाती तो मेरे साथ रुकने और बातचीत करने की पेशकश कर रही थीं, और अपनी आवाज़ों से मुझे लोरी सुना रही थीं जिनसे मैं जुड़ गई थी—जैसे मैं अक्सर कॉम्ब्रे की घंटियों की झंकार से जुड़ जाती थी—कभी एक लय से, कभी दूसरी से (अपनी इच्छा अनुसार पहले चार समतल और समतुल्य अर्ध-क्वेवर सुनती थी, फिर एक अर्ध-क्वेवर जो एक क्रोचेट से उग्र रूप से टकराता था); उन्होंने मेरी अनिद्रा के अपकेंद्रीय बल को विपरीत दबाव डालकर निष्क्रिय कर दिया, जिससे मैं संतुलन में बना रहा और मेरी गतिहीनता और क्षण भर में मेरी उनींदापन उसी ताजगी के साथ महसूस हुई, जैसा कि मुझे तब होता जब मैं शक्तिशाली शक्तियों की सुरक्षात्मक निगरानी में, प्रकृति और जीवन की गोद में विश्राम कर रहा होता, जब मैं एक क्षण के लिए स्वयं को समुद्र में सो रही मछली के रूप में, धाराओं और ज्वार से बेपरवाह होकर बह रही मछली के रूप में, या हवा में फैले हुए बाज के रूप में, केवल तूफान के सहारे, साकार कर पाता।

लंबी रेल यात्राओं के साथ सूर्योदय होना उतना ही आवश्यक है, जितना उबले अंडे, सचित्र समाचार पत्र, ताश के पत्ते, और नदियाँ जिन पर नावें

ज़ोर लगाती हैं लेकिन आगे नहीं बढ़ पातीं। एक क्षण में—जब मैं पिछले कुछ मिनटों में अपने मन में उमड़े विचारों को गिन रहा था, यह पता लगाने के लिए कि मैं अभी सोया था या नहीं (और जब वही अनिश्चितता जिसने मुझे यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया, मुझे एक सकारात्मक उत्तर प्रदान करने वाली थी), खिड़की के धुंधले चौकोर हिस्से में, एक छोटे से काले जंगल के ऊपर, मैंने कुछ फटे-पुराने बादल देखे जिनके ऊनी किनारे एक स्थिर, मृत गुलाबी रंग के थे, जो बदलने वाले नहीं थे, ठीक उस रंग की तरह जो पंख को रंग देता है जिस पर वह रंग चढ़ा है, या उस रेखाचित्र की तरह जिस पर कलाकार की कल्पना ने उसे उकेरा है। लेकिन मुझे लगा कि, उनके विपरीत, यह रंग न तो जड़ता के कारण था और न ही सनक के कारण, बल्कि आवश्यकता और जीवन के कारण था। कुछ ही क्षण में उसके पीछे प्रकाश का भंडार इकट्ठा हो गया। वह चमक उठा; आकाश गहरे लाल रंग में बदल गया, जिसे मैं खिड़की से टकटकी लगाकर और स्पष्ट रूप से देखने का प्रयास कर रहा था, क्योंकि मुझे लगा कि यह प्रकृति के सबसे अंतरंग जीवन से किसी न किसी तरह जुड़ा हुआ है। लेकिन, पटरी का मार्ग बदलते ही, ट्रेन मुड़ गई, और खिड़की के फ्रेम में सुबह का दृश्य एक रात्रिकालीन गाँव में तब्दील हो गया, जिसकी छतें अभी भी चाँदनी से नीली थीं, उसका तालाब रात के ओपल जैसे मोती से ढका हुआ था, और आकाश अभी भी अपने सभी तारों से जगमगा रहा था। मैं अपने गुलाबी आकाश के उस टुकड़े के खो जाने का शोक मना रहा था, तभी मुझे वह फिर से दिखाई दिया, लेकिन इस बार लाल रंग का, दूसरी खिड़की में, जिसे उसने पटरी के दूसरे मोड़ पर छोड़ दिया था। इसलिए मैंने अपना समय एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक दौड़ते हुए बिताया, ताकि मैं अपने सुंदर, लाल, निरंतर बदलते सुबह के रुक-रुक कर बिखरते, विपरीत ध्रुवों के टुकड़ों को एक ही कैनवास पर इकट्ठा कर

सकूँ, और उसका एक व्यापक दृश्य और एक निरंतर चित्र प्राप्त कर सकूँ।

दृश्य अचानक बदल गया, ट्रेन दो पहाड़ों के बीच एक छोटे से स्टेशन पर रुक गई। घाटी में दूर, तेज़ बहती धारा के किनारे, केवल एक अकेला चौकीदार घर दिखाई दे रहा था, जो पानी में गहराई से धंसा हुआ था और जिसकी खिड़कियाँ पानी के स्तर तक बह रही थीं। यदि कोई व्यक्ति उस मिट्टी की उपज हो सकता है जिसका अनूठा आकर्षण उस व्यक्ति में दिखाई देता है, उस किसान लड़की से भी अधिक जिसे मैं रूसैनविले के जंगलों में मेसेग्लिस मार्ग पर अकेले घूमते हुए देखने के लिए बहुत तरसता था, तो वह बड़ी लड़की ही होगी जिसे मैंने अब घर से निकलते हुए देखा और सूरज की पहली तिरछी किरणों से रोशन रास्ते पर चढ़ते हुए, दूध का घड़ा लिए स्टेशन की ओर आते हुए देखा। उसकी घाटी में, जहाँ उसकी ऊँची चोटियाँ बाकी दुनिया को छुपाए रखती थीं, वह इन ट्रेनों के अलावा किसी और को नहीं देख सकती थी जो केवल एक पल के लिए रुकती थीं। वह खिड़कियों की कतार में आगे बढ़ी और कुछ जागे हुए यात्रियों को कॉफी और दूध दिया। सुबह की सुनहरी रोशनी से उसका चेहरा बैंगनी हो गया था, मानो आकाश से भी अधिक गुलाबी। उसकी उपस्थिति में मैंने जीने की उस इच्छा को महसूस किया जो हममें तब पुनर्जन्म लेती है जब हम सौंदर्य और सुख के प्रति नए सिरे से सजग हो जाते हैं। हम अक्सर भूल जाते हैं कि ये व्यक्तिगत गुण हैं, और अपने मन में इन्हें एक पारंपरिक छवि से प्रतिस्थापित कर देते हैं, जो हमें लुभाने वाले विभिन्न चेहरों और हमारे द्वारा अनुभव किए गए सुखों के बीच एक तरह का मध्य मार्ग अपनाकर प्राप्त होती है। इस तरह हमारे पास केवल अमूर्त छवियां रह जाती हैं जो निर्जीव और नीरस होती हैं क्योंकि उनमें नवीनता का वह तत्व नहीं होता, जो हमारे द्वारा अनुभव की गई किसी भी चीज़ से भिन्न

होता है, वह तत्व जो सौंदर्य और सुख के लिए आवश्यक है। और हम जीवन पर एक निराशावादी निर्णय देते हैं जिसे हम उचित मानते हैं, क्योंकि हमने यह मान लिया था कि जीवन का निर्माण करते समय हमने सुख और सौंदर्य को ध्यान में रखा था, जबकि वास्तव में हमने उन्हें छोड़ दिया और उनकी जगह ऐसे संश्लेषण को स्थापित कर दिया जिसमें इनमें से किसी का भी एक अंश नहीं है। इसलिए, जब कोई व्यक्ति किसी नई 'अच्छी किताब' के बारे में बात करता है, तो एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति तुरंत ऊब से जम्हाई लेने लगता है, क्योंकि वह उन सभी अच्छी किताबों का एक मिला-जुला रूप समझता है जिन्हें वह पहले ही पढ़ चुका है और जानता है। जबकि एक अच्छी किताब कुछ खास होती है, कुछ अनमोल होती है, और वह पिछली सभी उत्कृष्ट कृतियों के योग से नहीं, बल्कि किसी ऐसी चीज से बनी होती है जिसे उन सभी को पूरी तरह से आत्मसात करने से भी कोई नहीं खोज सकता, क्योंकि वह उनके योग में नहीं, बल्कि उससे परे विद्यमान होती है। एक बार जब वह इस नई रचना से परिचित हो जाता है, तो अब तक उदासीन रहा पढ़ा-लिखा व्यक्ति उसमें चित्रित वास्तविकता के प्रति रुचि जागृत महसूस करता है। इसलिए, सुंदरता के उन आदर्शों से बिल्कुल अलग, जिन्हें मेरी कल्पना अकेले में गढ़ती थी, इस हष्ट-पुष्ट लड़की ने मुझे तुरंत एक विशेष प्रकार की खुशी का एहसास कराया (खुशी की अनुभूति को सीखने का एकमात्र रूप, जो हमेशा भिन्न होता है), एक ऐसी खुशी जो उसके साथ रहकर और जीवन व्यतीत करके ही प्राप्त हो सकती थी। लेकिन इसमें भी आदत के अस्थायी विराम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैं दूधवाली को अपना पूरा अस्तित्व दे रहा था, उन सबसे तीव्र सुखों का स्वाद चखने के लिए तैयार था जो अब उसके सामने थे। आम तौर पर हम न्यूनतम अवस्था में ही जीते हैं, हमारी अधिकांश क्षमताएँ सुप्त अवस्था में रहती हैं क्योंकि वे

आदत पर निर्भर होती हैं, जो जानती है कि क्या करना है और उसे उनकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन यात्रा की इस सुबह, मेरे जीवन की दिनचर्या में आए व्यवधान, स्थान और समय के परिवर्तन ने उनकी उपस्थिति को अपरिहार्य बना दिया था। मेरी आदतें, जो स्थिर थीं और सुबह की नहीं, मुझे धोखा दे गईं, और मेरी सभी क्षमताएँ अपना स्थान लेने के लिए दौड़ पड़ीं, एक-दूसरे से होड़ करते हुए, तूफ़ान की लहरों की तरह, एक ही अपरिचित स्तर पर पहुँच गईं, सबसे निचले स्तर से लेकर सबसे ऊँचे स्तर तक, साँस, भूख, रक्त संचार से लेकर ग्रहणशीलता और कल्पना तक। मैं यह नहीं कह सकता कि क्या इस लड़की को बाकी महिलाओं से अलग दिखाने के लिए, इन बंजर इलाकों का कठोर आकर्षण उसमें समाहित हो गया था, लेकिन अगर ऐसा था तो उसने इसे वापस लौटा दिया। जीवन मुझे कितना सुंदर लगता अगर मैं उसके साथ घंटों बिता पाता, उसके साथ नदी, गाय, ट्रेन तक जा पाता, हमेशा उसके साथ रह पाता, यह महसूस कर पाता कि वह मुझे जानती है, उसके विचारों में मेरी जगह है। वह मुझे ग्रामीण जीवन और दिन के पहले घंटों के आनंद से परिचित करा देती। मैंने उसे अपनी कॉफी में से कुछ देने का इशारा किया। मुझे लगा कि वह मुझे जरूर देखेगी। उसने मुझे नहीं देखा; मैंने उसे पुकारा। उसके भारी-भरकम शरीर के ऊपर, उसके चेहरे का रंग इतना चमकीला और लाल था कि ऐसा लग रहा था मानो मैं उसे किसी रोशन खिड़की से देख रहा हूँ। वह मुड़ी और मेरी ओर आ रही थी; मैं उसकी ओर से अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था, उसका चेहरा पास आते ही और बड़ा होता जा रहा था, मानो कोई सूरज हो जिसे किसी तरह रोककर अपनी ओर खींच लिया गया हो, और जो पास से दिखाई दे, अपनी लाल और सुनहरी चमक से आँखों को चकाचौंध कर दे। उसने अपनी तीक्ष्ण निगाहों से मुझे घूरा, लेकिन कुली प्लेटफार्म पर दरवाजे बंद

करते हुए दौड़ पड़े और ट्रेन चलने लगी। मैंने उसे स्टेशन से निकलते और पहाड़ी से नीचे अपने घर जाते देखा; अब उजाला हो चुका था; मैं भोर से दूर भाग रहा था। चाहे मेरी यह उमंग उस लड़की की वजह से पैदा हुई हो या फिर उसके दर्शन, उसकी उपस्थिति के एहसास से मुझे जो आनंद मिला हो, उसका अधिकांश हिस्सा उसी लड़की की वजह से हो, दोनों ही स्थिति में वह इससे इतनी गहराई से जुड़ी हुई थी कि उसे फिर से देखने की मेरी इच्छा वास्तव में शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक इच्छा थी, इस उत्साह को पूरी तरह से नष्ट न होने देने की, उस व्यक्ति से हमेशा के लिए अलग न होने की जिसने, भले ही अनजाने में, इसमें हिस्सा लिया था। यह केवल इसलिए नहीं था कि यह अवस्था सुखद थी। मुख्यतः इसका कारण यह था कि (जैसे किसी तार पर तनाव बढ़ने या नस के कंपन तेज होने से एक अलग ध्वनि या रंग उत्पन्न होता है) इसने मेरे देखे हर दृश्य को एक नई ध्वनि दी, मुझे एक अज्ञात और कहीं अधिक रोचक ब्रह्मांड के मंच पर एक अभिनेता के रूप में प्रस्तुत किया; वह सुंदर लड़की जिसे मैं ट्रेन के तेज होते ही देख पा रहा था, मेरे जाने-पहचाने जीवन से अलग एक जीवन का हिस्सा थी, एक स्पष्ट सीमा द्वारा उससे अलग, जिसमें चीजों से उत्पन्न होने वाली संवेदनाएँ अब पहले जैसी नहीं थीं, और अब अपने पुराने जीवन में लौटना लगभग आत्महत्या के समान होगा। इस नए जीवन से कम से कम लगाव का सुख पाने के लिए इतना ही काफी होगा कि मैं उस छोटे से स्टेशन के काफी पास रहूँ ताकि हर सुबह उस लड़की से एक कप कॉफी पीने के लिए वहाँ आ सकूँ। लेकिन अफसोस, वह उस दूसरे जीवन से हमेशा के लिए दूर हो जाएगी जिसकी ओर मैं तेजी से बढ़ रहा था, एक ऐसा जीवन जिसकी संभावना के लिए मैंने खुद को केवल इस तरह से तैयार किया कि मैं किसी दिन उसी ट्रेन में फिर से सवार हो सकूं और उसी स्टेशन पर रुक सकूं, एक ऐसी योजना जिसका एक अतिरिक्त

लाभ यह होगा कि यह मानव मन की स्वार्थी, सक्रिय, व्यावहारिक, यांत्रिक, आलसी, अपकेंद्री प्रवृत्ति को विषयवस्तु प्रदान करेगी; क्योंकि हमारा मन किसी सुखद अनुभव का सामान्य और निष्पक्ष तरीके से विश्लेषण करने के लिए आवश्यक प्रयास से आसानी से मुंह मोड़ लेता है। और दूसरी ओर, चूंकि हम उस अनुभव के बारे में सोचते रहना चाहते हैं, इसलिए मन उसे भविष्य काल में कल्पना करना पसंद करता है, जो हमें वस्तु की वास्तविक प्रकृति के बारे में कोई सुराग तो नहीं देता, लेकिन हमें उसे अपनी चेतना में पुनः सृजित करने की परेशानी से बचाता है और हमें यह आशा देता है कि हम उसे बाहर से नए सिरे से प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ कस्बों के नाम, जैसे वेज़ेले या चार्ट्रेस, बोर्सेस या ब्यूवेस, संक्षेप में उन कस्बों के मुख्य गिरजाघर का संकेत देते हैं। यह आंशिक अर्थ, जिसे हम अक्सर इस्तेमाल करते हैं, अंततः—यदि नाम उन स्थानों के हों जिन्हें हम अभी तक नहीं जानते—तो हमारे लिए नाम की एक ठोस छवि बना देता है। इसके बाद, जब भी हम उस कस्बे का, जिसे हमने कभी नहीं देखा, वर्णन करना चाहते हैं, तो यह छवि, एक सांचे पर समान नक्काशीदार रूपरेखाओं के साथ, एक ही कलात्मक शैली में, कस्बे को एक विशाल गिरजाघर जैसा बना देती है। फिर भी, एक रेलवे स्टेशन पर, एक भोजनालय के दरवाजे के ऊपर, मैंने बालबेक का नाम पढ़ा—जो लगभग फ़ारसी शैली का था। मैं स्टेशन से होते हुए उसके आगे जाने वाली सड़क पर उत्साह से चला गया। मैंने समुद्र तट का रास्ता पूछा ताकि मैं वहाँ केवल गिरजाघर और समुद्र देख सकूँ; लोगों को मेरी बात समझ नहीं आई। पुराने बालबेक, बालबेक-एन-टेरे, जहाँ मैं पहुँचा था, में न तो समुद्र तट था और न ही बंदरगाह। किंवदंती के अनुसार, मछुआरों ने चमत्कारिक ईसा मसीह को समुद्र में ही पाया था, जिसकी खोज का

उल्लेख उस गिरजाघर की एक खिड़की में किया गया था जो मेरे वर्तमान स्थान से कुछ ही गज की दूरी पर स्थित था; वास्तव में, लहरों से टकराती चट्टानों से ही इसके मुख्य भाग और मीनारों का पत्थर निकाला गया था। लेकिन यह समुद्र, जिसे मैंने उन कारणों से खिड़की के नीचे आकर समाप्त होते हुए कल्पना की थी, बारह मील से भी अधिक दूर बालबेक-प्लेज में था, और इसके गुंबद के बगल में वह शिखर, जिसके बारे में मैंने हमेशा यह कल्पना की थी कि यह स्वयं एक ऊबड़-खाबड़ नॉर्मन चट्टान है जिस पर बीज उड़कर अंकुरित होते हैं, जिसके चारों ओर समुद्री पक्षी चक्कर लगाते हैं, एक ऐसे चौक पर खड़ा था जहाँ से ट्रामवे की दो लाइनें निकलती थीं, एक कैफे के सामने जिस पर सुनहरे अक्षरों में 'बिलियर्ड्स' लिखा था; यह उन घरों की पृष्ठभूमि में अलग दिखता था जिनकी छतों में कोई भी खड़ा मस्तूल नहीं मिला हुआ था। और चर्च—कैफे के साथ, उस राहगीर अजनबी के साथ जिससे मुझे रास्ता पूछना पड़ा था, और उस स्टेशन के साथ जहाँ मुझे अभी लौटना था—मेरे मन में आया—एक समग्र दृश्य का हिस्सा बन गया, मानो एक संयोग हो, इस गर्मी की दोपहर का एक उप-उत्पाद हो, जिसमें आकाश के सामने उसका कोमल और फैला हुआ गुंबद एक फल की तरह था, जिसकी त्वचा उसी प्रकाश में पक रही थी जो घरों की चिमनियों को नहला रहा था, गुलाबी, चमकती, पिघलती हुई—नरम। लेकिन मैं केवल नक्काशी के शाश्वत महत्व पर विचार करना चाहता था जब मैंने प्रेरितों को पहचाना, जिन्हें मैंने ट्रोकाडेरो संग्रहालय में सांचों में देखा था, और जो वर्जिन मैरी के दोनों ओर, बरामदे के गहरे छेद के सामने, मेरा आदर करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने सौम्य, सीधे-सादे, शांत चेहरों और झुके हुए कंधों के साथ वे स्वागत भाव से मेरी ओर बढ़ते हुए प्रतीत हो रहे थे, मानो एक सुहावने दिन का अलेलुया गा रहे हों। लेकिन यह स्पष्ट था कि उनके चेहरे पर भाव किसी

मृत व्यक्ति के चेहरे की तरह अपरिवर्तित थे, और उन्हें केवल मेरे मुड़कर अलग-अलग दिशाओं से देखने पर ही बदला जा सकता था। मैंने मन ही मन कहा: "मैं यहाँ हूँ: यह बालबेक का गिरजाघर है। यह चौक, जो अपनी महिमा से भली-भांति परिचित प्रतीत होता है, दुनिया में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ बालबेक का गिरजाघर स्थित है। अब तक मैंने इस गिरजाघर की और इन प्रसिद्ध प्रेरितों, बरामदे की इस कुंवारी कन्या की केवल तस्वीरें ही देखी हैं। अब यह गिरजाघर स्वयं है, यह मूर्ति स्वयं है; ये वे हैं; वे अद्वितीय वस्तुएँ हैं—यह उससे कहीं अधिक महान है।"

शायद यह कुछ कम भी था। जैसे परीक्षा या द्वंद्वयुद्ध के दिन एक युवक को अपने ज्ञान और वीरता के भंडार के सामने, जो वह प्रदर्शित करना चाहता है, पूछे गए प्रश्न और अपने द्वारा दागे गए तीर बहुत तुच्छ लगते हैं, वैसे ही मेरा मन, जिसने बरामदे की वर्जिन मैरी को मेरे सामने मौजूद सभी प्रतिमाओं से कहीं ऊपर उठा दिया था, जो उतार-चढ़ावों से अछूती थीं, नष्ट होने के बावजूद अक्षुण्ण, आदर्श और सार्वभौमिक मूल्य से संपन्न थीं, उस प्रतिमा को देखकर चकित रह गया जिसे उसने हज़ार बार तराशा था, अब पत्थर में अपने वास्तविक स्वरूप में सिमट गई थी, मेरी फैली हुई भुजा की त्रिज्या पर, उस स्थान पर जहाँ उसके प्रतिद्वंद्वी एक चुनावी पोस्टर और मेरी छड़ी की नोक थी, चौक से बंधी हुई, मुख्य सड़क के शीर्ष से अविभाज्य, कैफे और बस कार्यालय की निगाहों से छिपने में असमर्थ, डूबते सूरज की उस किरण का आधा भाग अपने चेहरे पर ग्रहण कर रही थी (कुछ ही क्षणों में आधा भाग)। घंटों के समय (स्ट्रीट लैंप की रोशनी में) जिसका दूसरा आधा हिस्सा बैंक की इमारत को मिला, जो एक साहूकारी संस्था की शाखा के साथ-साथ पेस्ट्री बनाने वाले के ओवन की गंध से दूषित था, और व्यक्तिवाद के अत्याचार के अधीन इस हद तक था कि, अगर मैंने उस पत्थर पर अपना नाम लिखने का विकल्प चुना होता,

तो वह वही होती, वह प्रख्यात वर्जिन जिसे मैंने तब तक एक सामान्य अस्तित्व और एक अमूर्त सुंदरता प्रदान की थी, बालबेक की वर्जिन, अद्वितीय (जिसका अर्थ, अफसोस, एकमात्र था) जिसने अपने शरीर पर, उसी कालिख से ढके हुए, जिसने पड़ोसी घरों को दूषित किया था, खुद को उससे मुक्त करने में असमर्थ होकर, वहाँ उसे निहारने आए सभी प्रशंसक अजनबियों को, मेरे चाक के निशान और मेरे नाम के अक्षर दिखाए होते; वास्तव में, वह अमर कलाकृति, जिसकी लंबे समय से कामना की जा रही थी, जिसे मैंने पाया, चर्च की तरह ही, पत्थर की एक छोटी बूढ़ी औरत में परिवर्तित हो गई थी जिसकी ऊँचाई मैं माप सकता था और उसकी झुर्रियों को गिन सकता था। लेकिन समय बीत रहा था; मुझे स्टेशन लौटना था, जहाँ मुझे अपनी दादी और फ्रांस्वा का इंतज़ार करना था, ताकि हम सब एक साथ बालबेक-प्लेज पहुँच सकें। मैंने बालबेक के बारे में जो पढ़ा था, स्वान के इस कथन को याद किया: "यह बेहद खूबसूरत है; सिएना जितना ही सुंदर।" और अपनी निराशा का दोष कई आकस्मिक कारणों पर डालते हुए, जैसे कि मेरी सेहत, यात्रा के बाद की थकावट, चीजों को ठीक से न देख पाने की मेरी अक्षमता, मैंने इस विचार से खुद को सांत्वना देने की कोशिश की कि मेरे लिए अभी भी दूसरे शहर बाकी हैं, कि शायद जल्द ही मैं मोतियों की बौछार की तरह, क्विम्परले से टपकती ठंडी टप-टप की आवाज़ में, उस हरे पानी को पार कर रही होऊँगी जो गुलाबी चमक से जगमगा रहा था और जिसमें पोंट-एवेन नहाया हुआ था; लेकिन बालबेक की बात करें तो, जैसे ही मैंने उसमें कदम रखा, ऐसा लगा मानो मैंने एक ऐसे नाम को खोल दिया हो जिसे पूरी तरह से बंद रखा जाना चाहिए था, और जिसमें, उस अवसर का लाभ उठाते हुए जो मैंने नासमझी से उन्हें तब दिया था जब मैंने उसमें अब तक बसी सभी छवियों को बाहर निकाल दिया था, एक ट्रामवे, एक कैफे,

चौक पार करते लोग, एक बैंक की स्थानीय शाखा, किसी बाहरी दबाव, एक वायुगतिकीय बल द्वारा अनियंत्रित रूप से धकेले जाने के कारण, उन दो अक्षरों के भीतर भीड़ जमा कर ली थी, जो उन्हें घेरकर, अब फारसी चर्च के बरामदे की सीमा के रूप में काम कर रहे थे, और आगे कभी भी उन्हें समाहित करना बंद नहीं करेंगे।

स्थानीय रेलवे कंपनी की छोटी सी ट्रेन में, जो हमें बालबेक-प्लेज ले जाने वाली थी, मुझे मेरी दादी मिलीं, लेकिन वे अकेली थीं—क्योंकि उन्होंने सोचा था कि वे फ्रांस्वा को आगे भेज रही हैं ताकि हमारे पहुँचने से पहले सब कुछ तैयार हो जाए, लेकिन निर्देशों में गड़बड़ी के कारण वे फ्रांस्वा को गलत दिशा में भेज बैठी थीं, जो उस समय पूरी रफ्तार से, बिना किसी संदेह के, नैनटेस जा रही थी और शायद अगली सुबह बोर्डो में जागेगी। जैसे ही मैं सूर्यास्त की क्षणिक रोशनी और दोपहर की उमस भरी ट्रेन में बैठा (सूर्य की रोशनी के कारण, मुझे दादी के चेहरे पर साफ दिखाई दे रहा था कि दोपहर की गर्मी ने उन्हें कितना थका दिया था), उन्होंने पूछा, "अच्छा, और बालबेक?" उनके चेहरे पर इतनी तेज मुस्कान थी, मानो उन्हें उम्मीद थी कि मैं बहुत खुश हूँगा, कि मैं तुरंत अपनी निराशा उनके सामने प्रकट करने की हिम्मत नहीं कर पाया। इसके अलावा, जिस छवि को मेरा मन तलाश रहा था, वह उस स्थान के नज़दीक आने के साथ-साथ कम होती जा रही थी, जहाँ मुझे अपने शरीर को अभ्यस्त करना था। इस यात्रा के अंत में—जो अभी भी एक घंटे से अधिक दूर था—मैं बालबेक के होटल के मैनेजर की छवि बनाने की कोशिश कर रहा था, जिसके लिए उस समय मेरा कोई अस्तित्व नहीं था, और मैं चाहता था कि मैं अपनी दादी की बजाय किसी अधिक प्रभावशाली व्यक्ति के साथ उसके सामने पेश होऊं, क्योंकि दादी निश्चित रूप से उससे शुल्क में छूट मांगतीं। उसके बारे में एकमात्र सकारात्मक

बात उसका घमंडी और अहंकारी स्वभाव था; उसके चेहरे के भाव अभी भी अस्पष्ट थे।

हर कुछ मिनटों में छोटी सी ट्रेन हमें बालबेक-प्लेज से पहले आने वाले स्टेशनों में से किसी एक पर रोक देती थी। इन स्टेशनों के नाम (इनकारविले, मार्कोविले, डोविले, पोंट-ए-कूलेउव्रे, अरम्बौविले, सेंट-मार्स-ले-विएक्स, हर्मोनविले, मेनविले) मुझे अटपटे लगते थे, जबकि अगर मैंने इन्हें किसी किताब में पढ़ा होता तो मैं तुरंत ही कॉम्ब्रे के आसपास के कुछ स्थानों के नामों से इनकी समानता देखकर चौंक जाता। लेकिन एक पारखी कान के लिए, दो संगीतमय धुनें, जिनमें से प्रत्येक में इतने सारे स्वर हों, और जिनमें से कई दोनों में समान हों, उनमें कोई समानता नहीं दिखेगी यदि उनके सामंजस्य और संयोजन में अंतर हो। इसलिए, ये नीरस नाम, जो रेत, बहुत हवादार और खाली जगह और नमक से बने थे, और जिनमें से 'विले' शब्द हमेशा ऐसे निकल आता था जैसे 'तितली' शब्द के अंत से 'मक्खी' निकलती है, मुझे उन दूसरे नामों, रूसैनविले या मार्टिनविले की याद नहीं दिलाते थे, जिन्हें मैंने अपनी बड़ी चाची को भोजन कक्ष में अक्सर बोलते हुए सुना था, और जिनके उच्चारण में एक विशेष प्रकार का गंभीर आकर्षण समा गया था, जिसमें शायद 'प्रिजर्व' के स्वाद, लकड़ियों की आग की गंध, बर्गोट की किसी किताब के पन्नों की महक, और सामने वाले घर के पथरीले अग्रभाग के रंग का मिश्रण था। ये सभी चीजें आज भी, जब मेरी स्मृति की गहराइयों से एक गैसीय बुलबुले की तरह उभरती हैं, तो प्रतिद्वंद्वी हितों की उन सभी क्रमिक परतों के बावजूद अपनी विशिष्ट सुंदरता को बनाए रखती हैं जिन्हें सतह तक पहुंचने से पहले पार करना पड़ता है।

ये जगहें—अपनी-अपनी टीलों की चोटियों से दूर समुद्र को निहारती हुई या रात के लिए पहले से ही खुरदुरे हरे रंग और असुविधाजनक आकार

की पहाड़ियों के नीचे सिमटी हुई, ठीक वैसे ही जैसे किसी होटल के बेडरूम में सोफे का आकार होता है, जहाँ कोई अभी पहुँचा हो—विलाओं के एक समूह से बनी थीं, जिनकी कतार में एक लॉन-टेनिस कोर्ट और कभी-कभी एक कैसीनो भी शामिल होता था, जिसके ऊपर एक झंडा ताज़ी हवा में खोखली खांसी की तरह फड़फड़ाता रहता था—पानी के स्थानों की एक श्रृंखला, जहाँ मुझे पहली बार उनके नियमित आगंतुकों को देखने का मौका मिला, लेकिन मुझे केवल उन आगंतुकों की बाहरी विशेषताएं ही दिखाई दीं—सफेद टोपी पहने लॉन-टेनिस खिलाड़ी, स्टेशन मास्टर जो अपना सारा जीवन अपने इमली और गुलाब के बीच वहीं बिताता था, एक भूसे की 'बोटर' टोपी पहने महिला, जो एक ऐसे जीवन की दिनचर्या का पालन कर रही थी जिसे मैं कभी नहीं जान पाऊंगा, अपने कुत्ते को बुला रही थी जो सड़क पर कुछ देखने के लिए रुका था, फिर अपने बंगले में चली गई जहाँ उसके लौटने के लिए पहले से ही दीपक जला हुआ था—ये अजीबोगरीब सामान्य और कुछ हद तक परिचित दृश्य मेरे मन को चुभ गए। अनभिज्ञ निगाहों ने मेरे निर्वासित हृदय को छलनी कर दिया। लेकिन मेरी पीड़ा तब और बढ़ गई जब हम अंततः बालबेक के ग्रैंड होटल के हॉल में पहुँचे और मैं संगमरमर जैसी दिखने वाली विशाल सीढ़ी के सामने खड़ी थी, जबकि मेरी दादी, उन अजनबियों की बढ़ती शत्रुता की परवाह किए बिना, जिनके बीच हमें रहना था, मैनेजर के साथ 'शर्तों' पर बातचीत कर रही थीं। मैनेजर एक तरह का चापलूस अधिकारी था, जिसका चेहरा और आवाज दोनों ही निशानों से ढके हुए थे (विदेशी वंश और महानगरीय परवरिश से प्राप्त विभिन्न लहजों के कारण अनगिनत फोड़े-फुंसियों को निकालने से बने निशान)। वह एक स्मार्ट डिनर जैकेट पहने, एक विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक की तरह खड़ा था, और जब भी बस से कोई नया यात्री आता, वह 'कुलीन और संभ्रांत' लोगों

को 'बेवकूफ' और 'होटल के बदमाश' लोगों को कुलीन और संभ्रांत के रूप में वर्गीकृत करता था। शायद यह भूलकर कि वह खुद महीने में पाँच सौ फ़्रैंक नहीं कमाता था, वह उन लोगों को बहुत तुच्छ समझता था जिनके लिए पाँच सौ फ़्रैंक—या जैसा कि वह कहना पसंद करता था, 'पच्चीस लुई'—बहुत बड़ी रकम थी, और उन्हें समाज से बहिष्कृत मानता था जिनके लिए ग्रैंड होटल बिल्कुल भी नहीं बना था। यह सच है कि होटल के अंदर भी ऐसे लोग थे जो बहुत कम भुगतान करते थे, फिर भी प्रबंधक की नज़र में सम्मान बनाए रखते थे, बशर्ते कि प्रबंधक को यह आश्वासन दिया जाए कि वे अपने खर्च पर गरीबी के कारण नहीं बल्कि लालच के कारण लगाम लगा रहे हैं। क्योंकि इससे उनकी प्रतिष्ठा किसी भी तरह से कम नहीं हो सकती थी, क्योंकि यह एक दुर्गुण है और इसलिए यह हर सामाजिक स्तर पर पाया जा सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा ही वह एकमात्र चीज़ थी जिससे प्रबंधक प्रभावित होता था, सामाजिक प्रतिष्ठा, या यूँ कहें कि वे संकेत जो उसे उच्च प्रतिष्ठा का आभास कराते प्रतीत होते थे, जैसे कि हॉल में प्रवेश करते समय टोपी न उतारना, निकर या कमरबंद वाला ओवरकोट पहनना, और कुचले हुए मोरक्को चमड़े के डिब्बे से बैंगनी और सुनहरे रंग की पट्टी वाली सिगार निकालना—इनमें से किसी भी विशेषता का दावा मैं दुर्भाग्यवश नहीं कर सकता था। वह अपने व्यावसायिक वार्तालाप में चुनिंदा अभिव्यक्तियों का भी प्रयोग करता था, जिनका वह अक्सर गलत अर्थ निकालता था।

जब मैं अपनी दादी को सुन रही थी, जो ज़रा भी नाराज़ नहीं थीं कि वह सिर पर टोपी पहने और दाँतों से सीटी बजाते हुए उनकी बातें सुन रहा था, और बनावटी आवाज़ में उससे पूछ रही थीं, "और आपके शुल्क क्या हैं?... ओह! मेरे छोटे से बजट के लिए तो बहुत ज़्यादा हैं," एक बेंच पर बैठे हुए, मैं अपनी चेतना की गहराइयों में शरण ले रही थी, शाश्वत विचारों

के तल पर जाने का प्रयास कर रही थी—खुद का कुछ भी न छोड़ने का, अपने शरीर की सतह पर जो कुछ भी जीवित और महसूस करता था, उसे न छोड़ने का, जो उन जानवरों की तरह सुन्न हो गया था जो हमले के समय संकोच के कारण मृत्यु का नाटक करते हैं—ताकि इस जगह पर मुझे बहुत ज़्यादा कष्ट न हो, जिससे मेरी पूरी तरह अपरिचितता तब और भी स्पष्ट हो गई जब मैंने उसी क्षण एक सजी-धजी महिला को परिचित होते देखा, जिसके प्रति प्रबंधक ने हॉल में उसके पीछे-पीछे चल रहे छोटे कुत्ते के साथ छेड़छाड़ करके अपना सम्मान दिखाया, और टोपी में पंख लगाए उस नौजवान को, जिसने अंदर आते ही पूछा, 'कोई पत्र हैं?'—ये सभी लोग जिनके लिए यह संगमरमर की उन नकली सीढ़ियों पर चढ़ना घर वापसी जैसा अनुभव था। और उसी समय, मिनोस, ऐकस और राडामंथस की तिहरी भौंहें (जिनके नीचे मैंने अपनी नग्न आत्मा को एक अज्ञात तत्व में डुबो दिया था जहाँ अब उसे बचाने वाला कोई नहीं था) मुझ पर उन सज्जनों के एक समूह द्वारा कठोरता से टिकी हुई थीं, जो शायद मेहमाननवाज़ी की कला में कम पारंगत थे, फिर भी 'स्वागत क्लर्क' की उपाधि धारण किए हुए थे। उनके पीछे, कांच की एक बंद दीवार के पार, एक वाचनालय में लोग बैठे थे, जिसके वर्णन के लिए मुझे दांते से बारी-बारी से स्वर्ग और नरक को चित्रित करने वाले रंगों का सहारा लेना पड़ता, इस आधार पर कि मैं उन चुनिंदा लोगों की खुशी के बारे में सोच रहा था जिन्हें वहाँ बिना किसी बाधा के बैठने और पढ़ने का अधिकार था, या उस भय के बारे में जो मेरी दादी मुझमें पैदा कर देतीं यदि इस तरह के प्रभाव के प्रति अपनी असंवेदनशीलता में उन्होंने मुझे वहाँ जाकर अकेले उनका इंतजार करने के लिए कहा होता।

कुछ ही देर में मेरी तन्हाई और भी बढ़ गई: जब मैंने अपनी दादी को बताया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, और मुझे लगता है कि हमें पेरिस

लौटना पड़ेगा, तो उन्होंने कोई विरोध नहीं किया, बस इतना कहा कि वह कुछ सामान खरीदने जा रही हैं जो चाहे हम जाएं या रहें, दोनों ही स्थितियों में काम आएगा (और बाद में मुझे पता चला कि वह सारा सामान मेरे लिए ही था, क्योंकि फ्रांस्वा कुछ ऐसी चीजें लेकर गई थीं जिनकी मुझे ज़रूरत पड़ सकती थी); उनके आने का इंतज़ार करते हुए मैं गलियों में घूमा, जो लोगों की भीड़ से भरी हुई थीं और उनमें एक तरह की घर जैसी गर्माहट थी। उन गलियों में नाई की दुकान और पेस्ट्री बनाने वाले की दुकान अभी भी खुली थी, पेस्ट्री बनाने वाले की दुकान डुगुए-ट्रूइन की मूर्ति के सामने आइसक्रीम खाते ग्राहकों से भरी हुई थी। इस भीड़ ने मुझे उतना ही आनंद दिया जितना किसी सचित्र पत्रिका में उसकी तस्वीर देखकर किसी मरीज़ को सर्जन के प्रतीक्षालय में पन्ने पलटते हुए मिलता है। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मुझसे इतने अलग लोग भी थे कि शहर में घूमने की सलाह मुझे मैनेजर ने एक मनोरंजन के तौर पर दी थी, और यह भी कि नया निवास स्थान, जो किसी यातना कक्ष जैसा है, कुछ लोगों को 'लगातार मनोरंजन' लग सकता है, जैसा कि होटल के विवरण में लिखा था। यह विवरण शायद अतिशयोक्तिपूर्ण था, लेकिन फिर भी यह ग्राहकों की एक पूरी फौज को संबोधित था, जिनकी पसंद को यह अवश्य ही आकर्षित करेगा। यह सच है कि ग्रैंड होटल, बालबेक में आने के लिए, इसमें न केवल 'स्वादिष्ट भोजन' और 'कैसिनो गार्डन के पार परी-समान दृश्य' का उल्लेख किया गया था, बल्कि 'महारानी फैशन के नियमों' का भी जिक्र किया गया था, जिनका उल्लंघन कोई भी आसानी से नहीं कर सकता, या बोएटियन कहलाने से बच नहीं सकता, एक ऐसा आरोप जो कोई भी सभ्य व्यक्ति स्वेच्छा से नहीं उठाएगा। मेरी दादी के प्रति मेरी अब जो आवश्यकता थी, वह इस डर से और भी बढ़ गई थी कि मैंने उनके एक और भ्रम को तोड़ दिया है। वह निराश महसूस कर रही

होगी, सोच रही होगी कि अगर मैं इस यात्रा की थकान सहन नहीं कर सका, तो हवा बदलने से मुझे कभी कोई लाभ नहीं होगा। मैंने होटल लौटने और उसका इंतज़ार करने का फैसला किया: मैनेजर खुद आगे आया और एक बटन दबाया, और एक व्यक्ति, जिससे मेरी अभी तक जान-पहचान नहीं हुई थी, जिस पर 'लिफ्ट' लिखा था (जो इमारत के उस सबसे ऊँचे स्थान पर, जो नॉर्मन चर्च के लालटेन के समान था, एक फोटोग्राफर के डार्करूम या एक ऑर्गन वादक के मचान की तरह बैठा था), एक पालतू, फुर्तीली, पिंजरे में बंद गिलहरी की तरह तेज़ी से मेरी ओर आया। फिर, एक स्टील के खंभे के सहारे ऊपर की ओर सरकते हुए, वह मुझे अपने साथ इस धन-संपन्न मंदिर के गुंबद की ओर ले गया। हर मंजिल पर, एक संकरी सीढ़ी के दोनों ओर, छायादार दीर्घाओं की एक श्रृंखला फैली हुई थी, जिनमें से एक में तकिया लिए एक नौकरानी गुज़री। मैंने उसके चेहरे को, जो ढलती शाम की धुंध में भावहीन हो गया था, अपने सौंदर्य के सबसे भावुक सपनों का मुखौटा पहना दिया, लेकिन उसकी आँखों में, जो मेरी ओर मुड़ीं, मैंने अपने अस्तित्वहीनता का भय पढ़ लिया। इस बीच, इस अंतहीन सहमति के दौरान, उस नश्वर पीड़ा को कम करने के लिए जो मुझे इस कविताविहीन, अंधकारमय वातावरण के रहस्य में चुपचाप प्रवेश करने से महसूस हो रही थी, जो प्रत्येक मंजिल पर बने एकाकी शौचालय की छोटी खिड़कियों की एक ऊर्ध्वाधर रेखा से प्रकाशित था, मैंने उस युवा ऑर्गन वादक से कुछ शब्द कहे, जो मेरी यात्रा का सूत्रधार और कैद में मेरा साथी था, जो अपने वाद्य यंत्र के सुरों को बजाता और स्टॉप बटन दबाता रहा। मैंने इतनी जगह लेने और उसे इतनी परेशानी देने के लिए क्षमा मांगी और पूछा कि क्या मैं उस कला के अभ्यास में बाधा तो नहीं डाल रहा हूँ, जिसके प्रति, कलाकार की प्रशंसा करने के लिए, मैंने केवल जिज्ञासा दिखाने से कहीं अधिक किया, मैंने

अपना गहरा लगाव स्वीकार किया। लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, चाहे मेरे शब्दों पर आश्चर्य के कारण हो, अपने काम में व्यस्तता के कारण हो, परंपराओं का सम्मान करने के कारण हो, कम सुनने के कारण हो, पवित्र भूमि के प्रति आदर के कारण हो, खतरे के डर से हो, समझने में देरी के कारण हो, या प्रबंधक के आदेशों के कारण हो।

शायद ही कोई ऐसी चीज हो जो हमें बाहरी दुनिया की वास्तविकता का इतना सशक्त आभास दे सके जितना कि किसी ऐसे व्यक्ति की स्थिति में अंतर, जो हमारे लिए बिल्कुल महत्वहीन हो, उससे मिलने से पहले और बाद में। मैं वही व्यक्ति था जिसने उस दोपहर बालबेक से तट तक छोटी ट्रेन ली थी, मेरे शरीर में वही चेतना थी। लेकिन उस चेतना पर, उस स्थान पर जहाँ छह बजे, प्रबंधक, ग्रैंड होटल या उसके निवासियों के बारे में कोई भी विचार बनाने की असंभवता के साथ, अपने गंतव्य तक पहुँचने के क्षण के लिए एक अस्पष्ट और भयभीत अधीरता थी, अब उस सर्वदेशीय प्रबंधक के चेहरे से निकाले गए फुंसी दिखाई दे रहे थे (वास्तव में, वह एक स्वाभाविक मोनाकोवासी था, हालाँकि - जैसा कि उसने खुद कहा था, क्योंकि वह हमेशा उन अभिव्यक्तियों का उपयोग करता था जिन्हें वह विशिष्ट मानता था, बिना यह ध्यान दिए कि वे गलत थीं - 'रोमानियाई मौलिकता'), लिफ्ट के लिए घंटी बजाने की उसकी क्रिया, लिफ्ट-बॉय स्वयं, ग्रैंड होटल रूपी उस पेंडोरा के बक्से से निकलने वाले कठपुतली शो के पात्रों की एक पूरी श्रृंखला, निर्विवाद, अपरिवर्तनीय, और, हर साकार चीज़ की तरह, रोगाणुनाशक। लेकिन कम से कम यह बदलाव, जिसे लाने में मेरा कोई हाथ नहीं था, ने मुझे यह साबित कर दिया कि कुछ ऐसा हुआ था जो मुझसे परे था—भले ही वह कितना भी महत्वहीन क्यों न हो—और मैं उस यात्री की तरह था जो यात्रा शुरू करते समय सूरज की तेज धूप का सामना कर रहा था, और जब सूरज को अपने पीछे पाता

है तो सोचता है कि वह कई घंटों से सड़क पर चल रहा है। मैं थकावट से अधमरा था, बुखार से तड़प रहा था; मैं बिस्तर पर जाना चाहता था, लेकिन मेरे पास रात में सोने के लिए कुछ नहीं था। कम से कम थोड़ी देर के लिए बिस्तर पर लेट जाना तो अच्छा होता, लेकिन उससे क्या फायदा होता, क्योंकि वहाँ मुझे कोई आराम नहीं मिलता, क्योंकि संवेदनाओं का वह समूह, जो हममें से प्रत्येक का भौतिक नहीं तो संवेदी शरीर है, और उस शरीर को घेरने वाली अपरिचित वस्तुएँ, जो उसे अपनी धारणाओं को एक सतर्क और रक्षात्मक रक्षक की तरह स्थायी स्थिति में रखने के लिए मजबूर करती हैं, मेरी दृष्टि, मेरी श्रवण शक्ति, मेरी सभी इंद्रियों को उसी तंग और असुविधाजनक स्थिति में रखतीं (भले ही मैं अपने पैर फैला लेता), जैसे कार्डिनल ला बालू उस पिंजरे में थे जिसमें वे न खड़े हो सकते थे और न बैठ सकते थे। हमारा उन्हें देखना ही चीजों को एक कमरे में रखता है, और उनसे अभ्यस्त होना ही उन्हें फिर से दूर कर देता है और हमारे लिए जगह बनाता है। बालबेक में मेरे शयनकक्ष (नाम मात्र का) में मेरे लिए कोई जगह नहीं थी; यह उन चीजों से भरा हुआ था जो मुझे नहीं जानती थीं, जो मुझ पर वही अविश्वास भरी नज़रें डाल रही थीं जो मैंने उन पर डाली थीं, और मेरे अस्तित्व की परवाह किए बिना, यह दिखा रही थीं कि मैं उनके काम में बाधा डाल रहा हूँ। घड़ी—जबकि घर पर मैं अपनी घड़ी की टिक-टिक सप्ताह में केवल कुछ सेकंड ही सुनता था, जब मैं किसी गहन ध्यान से बाहर आता था—बिना एक पल रुके, एक अनजान भाषा में, लगातार ऐसी टिप्पणियाँ कर रही थी जो मेरे लिए बहुत अपमानजनक रही होंगी, क्योंकि बैंगनी पर्दे बिना जवाब दिए उन्हें सुन रहे थे, लेकिन उस तरह के भाव से जैसे लोग कंधे उचकाकर यह जताते हैं कि किसी तीसरे व्यक्ति को देखकर उन्हें चिढ़ हो रही है। उन्होंने ऊँची छत वाले इस कमरे को एक अर्ध-ऐतिहासिक स्वरूप दिया था जो इसे ड्यूक

डी गुइज़ की हत्या के लिए और बाद में थॉमस कुक एंड सन के गाइडों में से किसी एक द्वारा व्यक्तिगत रूप से निर्देशित पर्यटकों के समूहों के लिए एक उपयुक्त स्थान बना सकता था, लेकिन मेरे सोने के लिए—नहीं। दीवारों के साथ-साथ बनी कांच की छोटी-छोटी किताबों की अलमारियों की मौजूदगी मुझे बहुत परेशान कर रही थी, लेकिन खासकर एक कोने में खड़े पैरों वाले बड़े शीशे से, क्योंकि मुझे लग रहा था कि जब तक वह कमरे से हट नहीं जाता, मुझे वहां चैन नहीं मिलेगा। मैं बार-बार अपनी आंखें उठा रही थी—पेरिस के मेरे कमरे की चीजें मेरी पलकों की तरह ही मेरी आंखों को भी परेशान नहीं कर रही थीं, क्योंकि वे तो मेरे अंगों का ही विस्तार थीं, मेरा ही एक बड़ा रूप—मेरी दादी द्वारा मेरे लिए चुने गए होटल की सबसे ऊंची चोटी पर बने इस ऊंचे चबूतरे की ओर; और उस हिस्से में जो हमारे देखने और सुनने के हिस्सों से भी कहीं अधिक अंतरंग है, वह हिस्सा जहां हम गंधों की गुणवत्ता को परखते हैं, लगभग मेरे अंतर्मन के बिल्कुल बीचोंबीच, फूलों वाली घासों की खुशबू ने मेरी बची-खुची सुरक्षा पंक्ति पर अपना हमला छेड़ दिया, जहां मैं बेचैनी से लगातार सूंघकर खुद को और भी थका रही थी। अब मेरे पास कोई दुनिया नहीं थी, कोई जगह नहीं थी, कोई शरीर नहीं था जो मेरे चारों ओर मंडरा रहे दुश्मनों से अछूता हो; बुखार से मेरी हड्डियाँ तक जकड़ी हुई थीं; मैं बिलकुल अकेला था; मैं मरना चाहता था। तभी मेरी दादी आईं, और मेरे कमजोर होते दिल के विस्तार के लिए मानो अनंत अंतरिक्ष के द्वार खुल गए।

वह एक ढीला कैम्ब्रिक गाउन पहने हुए थी जिसे वह घर पर तब पहनती थी जब हममें से कोई बीमार होता था (क्योंकि वह उसमें अधिक सहज महसूस करती थी, वह अक्सर कहती थी, क्योंकि वह हमेशा अपने कार्यों के पीछे स्वार्थ का भाव देखती थी), और जो हमारी देखभाल करने, हमारे

बिस्तरों के पास पहरा देने के लिए, उसकी नौकरानी की वर्दी, उसकी नर्स की वर्दी, उसका धार्मिक वस्त्र था। लेकिन जहाँ नौकरों, नर्सों, धार्मिक लोगों द्वारा की गई मेहनत, हमारे प्रति उनकी दयालुता, उनमें पाए जाने वाले गुण और उनके प्रति हमारी कृतज्ञता, ये सब मिलकर हमें उनकी नज़रों में एक अलग व्यक्ति होने का एहसास दिलाते हैं, यह एहसास दिलाते हैं कि हम अकेले हैं, अपने विचारों और जीने की इच्छा पर हमारा नियंत्रण अपने हाथों में है, वहीं मैं अपनी दादी के साथ रहते हुए जानती थी कि मुझमें चाहे कितना भी दुख क्यों न हो, वह उसे और भी अधिक करुणा से ग्रहण करेंगी; कि मेरी हर चीज़, मेरी चिंताएँ, मेरी इच्छाएँ, मेरी दादी में मेरे जीवन को बचाने और लंबा करने की ऐसी इच्छा पर टिकी होंगी जो मेरी अपनी इच्छा से भी अधिक प्रबल होगी; और मेरे विचार बिना किसी विचलन के उनमें निरंतर प्रवाहित होते रहे, क्योंकि वे मेरे मन से उनके मन में बिना वातावरण या व्यक्तित्व में परिवर्तन के समाहित हो गए। और—जैसे कोई व्यक्ति शीशे के सामने अपनी टाई बाँधने की कोशिश करता है और भूल जाता है कि जो सिरा उसे परावर्तित दिखाई दे रहा है, वह उस तरफ नहीं है जिस तरफ उसने हाथ उठाया है, या जैसे कोई कुत्ता हवा में नाचती हुई किसी कीड़े की परछाई का पीछा करता है —उनके शारीरिक रूप से प्रकट होने से भ्रमित होकर, जैसा कि हम इस संसार में अक्सर हो जाते हैं जहाँ हमें लोगों की आत्माओं का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता, मैंने स्वयं को अपनी दादी की बाहों में डाल दिया और अपने होठों से उनके चेहरे को इस प्रकार चूम लिया मानो मुझे उस विशाल हृदय तक पहुँच प्राप्त हो गई हो जिसे उन्होंने मेरे लिए खोल दिया था। और जब मैंने महसूस किया कि मेरा मुँह उनके गालों और माथे से चिपक गया है, तो मैंने उनसे कुछ ऐसा लाभकारी, ऐसा पोषण प्रदान किया कि मैं उनकी बाहों में एक शिशु की तरह स्थिर, गंभीर और शांत भाव से तृप्त

होकर लेटा रहा।

अंततः मैंने उसे छोड़ दिया, और लेटकर निहारने लगा, और उसके विशाल चेहरे को निहारते-निहारते थक नहीं रहा था, जो किसी महीन बादल की तरह स्पष्ट, दमकता और शांत था, जिसके पीछे मैं उसके कोमल प्रेम की चमक देख सकता था। और हर वो चीज़ जिसे, चाहे थोड़ी सी ही सही, उसकी संवेदनाओं का कोई अंश प्राप्त हुआ था, हर वो चीज़ जो किसी भी तरह से उससे संबंधित कही जा सकती थी, एक पल में इतनी आध्यात्मिक, इतनी पवित्र हो गई थी कि मैंने फैले हुए हाथों से उसके प्यारे बालों को, जो अभी भी लगभग सफ़ेद ही थे, उतने ही आदर, सावधानी और आराम से सहलाया मानो मैं सचमुच उसकी अच्छाई को छू रहा हो। उसे भी मुझे आराम देने में वैसी ही खुशी मिलती थी, और मेरे थके हुए अंगों को मिले उस क्षणिक आराम में उसे इतना आनंद आता था कि जब उसने देखा कि वह मेरे कपड़े उतारने और जूते उतारने में मेरी मदद करना चाहती है, तो मैंने उसे रोकने का नाटक किया और खुद कपड़े उतारने लगा, तो उसने विनती भरी निगाहों से मेरे हाथों को रोक लिया जब वे मेरे कोट और जूतों के ऊपरी बटनों को टटोल रहे थे।

"ओह, मुझे इजाज़त दीजिए!" उसने विनती की। "तुम्हारी दादी को इससे बहुत खुशी होगी। और रात में अगर तुम्हें कुछ चाहिए हो तो दीवार पर दस्तक ज़रूर देना। मेरा बिस्तर बस दूसरी तरफ है, और दीवार का पर्दा बहुत पतला है। जैसे ही तुम तैयार हो जाओ, अभी दस्तक दे देना, ताकि हमें पता चल जाए कि हम कहाँ हैं।"

और, सचमुच, उस शाम मैंने तीन बार खटखटाया—यह एक ऐसा संकेत था जिसे अगले सप्ताह, जब मैं बीमार था, कई दिनों तक हर सुबह दोहराता रहा, क्योंकि मेरी दादी चाहती थीं कि मुझे सुबह जल्दी दूध मिल जाए। फिर, जब मुझे लगा कि मैं उनकी करवट सुन सकता हूँ, ताकि उन्हें

इंतज़ार न करना पड़े और दूध लाते ही वे फिर से सो जाएँ, तो मैंने धीरे से, दबे स्वर में, लेकिन स्पष्ट रूप से तीन बार खटखटाने की हिम्मत की, क्योंकि अगर मुझे डर था कि कहीं मैं उन्हें परेशान न कर दूँ, यह सोचकर कि मैं गलत था और वे अभी भी सो रही थीं, तो मैं यह भी नहीं चाहता था कि वे जागकर मेरी आवाज़ सुनें जिसे उन्होंने तुरंत नहीं सुना और जिसे दोहराने की हिम्मत मुझमें भी नहीं थी। और जैसे ही मैंने खटखटाया, मुझे तीन और आवाज़ें सुनाई दीं, मेरी आवाज़ से अलग स्वर में, शांत अधिकार के साथ, दो बार दोहराई गईं ताकि कोई गलती न हो, और मुझसे साफ-साफ कहा गया: "घबराओ मत; मैंने तुम्हें सुन लिया; मैं एक मिनट में तुम्हारे पास आ रही हूँ!" और थोड़ी देर बाद मेरी दादी प्रकट हुईं। मैंने उसे समझाया कि मुझे डर था कि वह मेरी बात नहीं सुनेगी, या शायद सोचेगी कि दूर वाले कमरे में कोई और चाट रहा है; जिस पर वह मुस्कुराई:

"मेरी बेचारी चूजे की खटखटाहट को किसी और की खटखटाहट समझ लेना! अरे, दादी तो इसे हज़ारों चूजों में भी पहचान सकती हैं! क्या तुम्हें लगता है कि दुनिया में कोई और भी ऐसा बेवकूफ है, जिसकी नन्ही उंगलियां इतनी बेचैन हों, जो मुझे जगाने से इतना डरता हो और मुझे कुछ समझा न पाने से इतना घबराता हो? अगर वो बस हल्की सी खरोंच भी दे, तो दादी तुरंत अपने चूहे की आवाज़ पहचान लेंगी, खासकर मेरे जैसे बेचारे छोटे चूहे की। मैं अभी भी उसकी आवाज़ सुन सकती हूँ, वो अपना मन बनाने की कोशिश कर रही है, बिस्तर की चादरें सरसरा रही है, और अपनी सारी हरकतें कर रही है।"

उसने खिड़की के शटर खोल दिए; होटल का एक हिस्सा मेरी खिड़की से समकोण पर निकला हुआ था, और सूरज छत पर ऐसे लग चुका था मानो कोई मिस्त्री सुबह जल्दी उठकर चुपचाप काम कर रहा हो ताकि सोए हुए शहर को जगा न दे, जिसकी शांति उसकी सक्रियता को और बढ़ा देती है।

उसने मुझे बताया कि कितने बजे हैं, मौसम कैसा है; कि मेरा उठकर खिड़की तक आना व्यर्थ है, समुद्र पर धुंध छाई हुई है; क्या बेकरी खुल गई है; और मुझे जो वाहन के गुजरने की आवाज़ सुनाई दे रही है, वह क्या है। वह संक्षिप्त, तुच्छ सा पर्दा उठाने वाला दृश्य, नए दिन का वह नगण्य आरंभ, बिना किसी दर्शक के किया गया, जीवन का एक छोटा सा अंश जो केवल हम दोनों के लिए था, जिसे मैं बाद में फ्रांकोइस या अजनबियों से भी दोहराने में संकोच नहीं करूँगा, उस कोहरे के बारे में बात करते हुए 'जिसे उस सुबह छह बजे चाकू से काटा जा सकता था', उस आडंबर के साथ जैसे कोई अपने द्वारा अर्जित ज्ञान का नहीं बल्कि केवल अपने प्रति दिखाए गए स्नेह का बखान कर रहा हो; प्रिय सुबह का क्षण, मेरे तीन नलों के लयबद्ध संवाद द्वारा एक सिम्फनी की तरह खुला, जिस पर मेरे शयनकक्ष की पतली दीवार, प्रेम और आनंद में डूबी हुई, मधुर, निराकार, देवदूतों के गायन की तरह गाते हुए, तीन अन्य नलों के साथ प्रतिक्रिया करती है, उत्सुकता से प्रतीक्षित, बार-बार दोहराई जाती है, जिसमें वह मेरी दादी की आत्मा को, पूर्ण और परिपूर्ण, और उनके आने के वादे को, घोषणा की शीघ्रता और मधुर सटीकता के साथ, मुझ तक पहुँचाने में कामयाब होती है। लेकिन हमारे आगमन के बाद उस पहली रात, जब मेरी दादी मुझे छोड़कर चली गईं, तो मुझे फिर से वही महसूस होने लगा जो मुझे एक दिन पहले पेरिस में घर छोड़ते समय हुआ था। शायद यह डर जो मुझे था—और मेरे कई साथियों के साथ साझा था —एक अनजान कमरे में सोने का, शायद यह डर हमारे वर्तमान जीवन के अधिकांश हिस्सों का निर्माण करने वाली चीजों द्वारा हमारे मानसिक रूप से उस भविष्य के सूत्र को सत्य मानकर स्वीकार करने के प्रति उत्पन्न महान और हताश प्रतिरोध का सबसे विनम्र, अस्पष्ट, स्वाभाविक, लगभग अचेतन रूप है जिसमें उन चीजों का कोई स्थान नहीं होगा; एक प्रतिरोध

जो उस भय की जड़ में था जो मुझे अक्सर इस विचार से महसूस कराया जाता था कि मेरे माता-पिता को एक दिन मरना होगा, कि जीवन की कठोर आवश्यकता मुझे गिल्बर्ट से दूर रहने के लिए विवश कर सकती है, या बस एक ऐसी जगह पर स्थायी रूप से बसने के लिए जहाँ मैं अपने किसी भी पुराने दोस्त को कभी नहीं देख पाऊँगा; एक प्रतिरोध जो मेरी अपनी मृत्यु की कल्पना करने में आने वाली कठिनाई का मूल कारण भी था, या उस तरह के अस्तित्व की कल्पना करने में, जैसा कि बर्गोट अपनी पुस्तकों में मानवता से वादा करते थे, एक ऐसा अस्तित्व जिसमें मुझे अपनी यादों, अपनी कमजोरियों, अपने चरित्र को अपने साथ ले जाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, जो आसानी से अस्तित्वहीन होने के विचार को स्वीकार नहीं करते थे, और न ही मेरे लिए विनाश चाहते थे और न ही एक ऐसी अनंतता जिसमें उनका कोई स्थान न हो।

एक दिन पेरिस में जब मैं बहुत अस्वस्थ महसूस कर रही थी, तब स्वान ने मुझसे कहा: "तुम्हें प्रशांत महासागर के उन शानदार द्वीपों में से किसी एक पर चले जाना चाहिए; अगर तुम चली गई तो कभी वापस नहीं आओगी।" मेरा मन किया कि मैं जवाब दूं: "लेकिन फिर मैं तुम्हारी बेटी को फिर कभी नहीं देख पाऊंगी; मैं ऐसे लोगों और चीजों के बीच रहूंगी जिन्हें उसने कभी नहीं देखा।" लेकिन मेरी अंतरात्मा ने मुझे कहा: "इससे क्या फर्क पड़ता है, क्योंकि तुम पर इसका कोई असर नहीं पड़ने वाला? जब श्री स्वान तुमसे कहते हैं कि तुम वापस नहीं आओगी, तो उनका मतलब यही है कि तुम वापस आना नहीं चाहोगी, और अगर तुम नहीं आना चाहती हो तो इसका मतलब है कि तुम वहां ज्यादा खुश रहोगी।" क्योंकि मेरी अंतरात्मा जानती थी कि आदत—वह आदत जो अभी भी मुझे इस अपरिचित जगह को पसंद करने के लिए मजबूर कर रही थी, दर्पण की स्थिति बदलने के लिए, पर्दों का रंग बदलने के लिए, घड़ी को रोकने के

लिए—उन साथियों को भी हमारे लिए प्रिय बना देती है जिन्हें हम पहले नापसंद करते थे, उनके चेहरों को एक नया रूप दे देती है, उनकी आवाज को आकर्षक बना देती है, उनके दिलों की भावनाओं को बदल देती है। यह सच है कि स्थानों और लोगों के प्रति ये नई मित्रताएँ पुरानी को भूलने पर आधारित होती हैं; लेकिन मेरी अंतरात्मा जो सोच रही थी वह यह थी कि मैं उस जीवन के परिदृश्य को बिना किसी भय के देख सकता हूँ जिसमें मैं उन लोगों से हमेशा के लिए अलग हो जाऊँगा जिनकी सारी यादें मैं खो दूँगा, और सांत्वना के रूप में मेरा मन मेरे हृदय को विस्मृति का वादा कर रहा था जो केवल उसकी निराशा को और तीव्र करने में सफल रहा। ऐसा नहीं है कि समय के साथ, जब अलगाव पूर्ण हो जाता है, तो हृदय आदत के सुखदायक प्रभाव को महसूस करने से मुक्त हो जाता है; लेकिन तब तक वह पीड़ा सहता रहेगा। और उस भविष्य का हमारा भय जिसमें हमें उन चेहरों को देखने, उन आवाजों को सुनने से वंचित रहना होगा जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन दोस्तों से जिनसे हमें आज सबसे अधिक आनंद मिलता है, यह भय कम होने के बजाय और भी तीव्र हो जाता है, यदि हम इस अभाव के दुख में यह सोचें कि भविष्य में हमें जो और भी क्रूर दुख प्रतीत होता है, वह भी जुड़ जाएगा; उसे दुख के रूप में महसूस न करना—उदासीन रहना; क्योंकि यदि ऐसा हुआ, तो हमारा अहंकार बदल जाएगा; तब न केवल हमारे परिवार, हमारी प्रेमिका, हमारे मित्रों का आकर्षण हमें घेरना बंद कर देगा, बल्कि उनके प्रति हमारा स्नेह भी समाप्त हो जाएगा; यह हमारे हृदय से, जिसमें आज यह एक प्रमुख तत्व है, पूरी तरह से मिट जाएगा; और हम उनसे अलग उस जीवन का आनंद ले सकेंगे, जिसके विचार मात्र से ही आज हम भयभीत हो जाते हैं; इसलिए यह वास्तव में स्वयं की मृत्यु होगी, एक ऐसी मृत्यु जिसके बाद पुनरुत्थान तो होगा, लेकिन एक भिन्न अहंकार में, वह जीवन, वह प्रेम,

जो वर्तमान अहंकार के उन तत्वों की पहुँच से परे है जो मरने के लिए अभिशप्त हैं। ये वही भावनाएँ हैं—यहाँ तक कि सबसे तुच्छ भावनाएँ भी, जैसे कि हमारे शयनकक्ष के आयामों और वातावरण से हमारा अस्पष्ट लगाव—जो हठी हो जाती हैं और विद्रोह के कृत्यों में अवज्ञा करती हैं, जिन्हें हमें मृत्यु के प्रति हमारे प्रतिरोध के एक गुप्त, आंशिक, मूर्त और सच्चे पहलू के रूप में पहचानना चाहिए, उस लंबे प्रतिरोध के रूप में, जो हताश और प्रतिदिन नवगठित होता है, एक खंडित और क्रमिक मृत्यु के प्रति जो हमारे पूरे जीवन में व्याप्त होती है, हर पल हमसे हमारा एक अंश छीन लेती है, मृत पदार्थ जिस पर नई कोशिकाएँ गुणा और विकसित होंगी। और मेरे जैसे विक्षिप्त स्वभाव के लिए, यानी एक ऐसा स्वभाव जिसमें मध्यस्थ, नसें, अपना कार्य ठीक से नहीं करतीं—चेतना तक पहुँचने के मार्ग में उसे रोक नहीं पातीं, बल्कि वहाँ प्रवेश करने देती हैं, अलग-अलग, थका देने वाली, असंख्य, पीड़ादायक, व्यक्तित्व के उन सबसे विनम्र तत्वों की कराह जो लुप्त होने वाले हैं—वह चिंता और भय जो मैंने उस अजीब और बहुत ऊँची छत के नीचे लेटे हुए महसूस किया, वह उस परिचित और नीची छत के लिए मुझमें बचे हुए स्नेह का विरोध मात्र था। निःसंदेह यह स्नेह भी लुप्त हो जाएगा, और दूसरा इसकी जगह ले लेगा (जब मृत्यु, और फिर एक नया जीवन, आदत के वेश में अपना दोहरा कार्य पूरा कर लेंगे); लेकिन इसके विनाश तक, हर रात यह नए सिरे से पीड़ा सहेगा, और विशेष रूप से इस पहली रात, एक ऐसे भविष्य का सामना करते हुए जिसमें इसके लिए कोई जगह नहीं होगी, यह विद्रोह में उठ खड़ा हुआ, इसने मुझे अपने विलाप की तीखी आवाज़ से तब तक तड़पाया जब तक मेरी तड़पती आँखें, जो उन्हें चोट पहुँचा रही थी उससे नज़रें हटाने में असमर्थ थीं, उस दुर्गम छत पर अपनी निगाहें टिकाने का प्रयास करती रहीं।

लेकिन अगली सुबह!—एक नौकर मुझे बुलाने आया, मेरे लिए गर्म पानी लाया, और जब मैं नहा-धोकर कपड़े पहन रही थी और अपने ट्रंक में अपनी मनचाही चीजें व्यर्थ ही ढूंढ रही थी, जिसमें से मैंने बेतरतीब ढंग से केवल बहुत सी बेकार चीजें निकालीं, तब दोपहर के भोजन और समुद्र तट पर टहलने के सुखों के बारे में सोचते हुए, खिड़की में और किताबों की अलमारियों के सभी कांच के अग्रभागों में, जैसे किसी जहाज के केबिन के पोर्टहोल में, खुले समुद्र को देखना मेरे लिए कितना आनंदमय था, नग्न, बिना छाया के, फिर भी उसका आधा विस्तार छाया में था, एक पतली और लहराती रेखा से घिरा हुआ, और अपनी आंखों से उन लहरों का पीछा करना जो मेरी ओर उछलती हुई आ रही थीं, एक के बाद एक, जैसे गोताखोर स्प्रिंगबोर्ड पर तैर रहे हों। हर दूसरे पल, एक हाथ में होटल का नाम छपा हुआ कड़ा, सख्त तौलिया पकड़े हुए, जिससे मैं खुद को सुखाने की व्यर्थ कोशिश कर रहा था, मैं खिड़की पर लौट आता था ताकि उस विशाल, चकाचौंध भरे, पर्वतीय मैदान और उसकी पन्ना जैसी बर्फीली लहरों की चोटियों को एक बार फिर निहार सकूँ, जो कहीं-कहीं पॉलिश की हुई और पारदर्शी थीं, जो एक शांत उग्रता के साथ, शेर की तरह भौंहें झुकाकर, अपने ऊंचे अग्रभागों को, जिन पर अब सूरज एक बिना चेहरे या विशेषताओं वाली मुस्कान बिखेर रहा था, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने देती थीं, लड़खड़ाती थीं, पिघलती थीं और फिर गायब हो जाती थीं। वह खिड़की जिसमें मुझे अब से हर सुबह बैठना था, ठीक वैसे ही जैसे किसी डाक गाड़ी के शीशे पर बैठकर देखना होता है जिसमें रात बिताई हो, यह देखने के लिए कि क्या लंबे समय से खोजी जा रही पर्वत श्रृंखला पास आई है या दूर चली गई है—लेकिन यहाँ वे समुद्र की पहाड़ियाँ थीं जो नाचते हुए हमारी ओर लौटने से पहले इतनी दूर चली जाती थीं कि अक्सर एक लंबे और रेतीले मैदान के अंत में ही मुझे उनकी

पहली लहरें दिखाई देती थीं, जो मीलों दूर लगती थीं, एक पारदर्शी, धुंधली, नीली पृष्ठभूमि पर, ठीक वैसे ही जैसे टस्कन आदिमों की पृष्ठभूमि में ग्लेशियर दिखाई देते हैं। कभी-कभी सुबह सूरज बिल्कुल पास ही उन हरे पानी पर मुस्कुराता था जो अल्पाइन चरागाहों में संरक्षित कोमल हरे रंग का होता था (उन पहाड़ों के बीच जिन पर सूरज इधर-उधर एक आलसी दानव की तरह फैलता है जो किसी भी क्षण खुशी से उनकी चट्टानी ढलानों से नीचे कूद सकता है) उनकी मिट्टी की नमी से नहीं बल्कि उनके प्रकाश की तरल गतिशीलता से। बहरहाल, उस खाई में, जिसके बीच तट और जल शेष संसार को भेदते हैं, प्रकाश के प्रवाह और उसके संचय के लिए, प्रकाश ही सर्वोपरि है। यह प्रकाश ही है जो समुद्र की लहरों को आकार देता है, चाहे वह किसी भी दिशा से आए और हमारी आँखें उसी दिशा में उसका अनुसरण करें। प्रकाश का अंतर किसी स्थान के अभिविन्यास को उतना ही बदल देता है, जितना कि किसी लंबी यात्रा में तय की गई दूरी। जब सुबह सूरज होटल के पीछे से निकलता है और मुझे समुद्र के पहले तटबंधों तक प्रकाश से सराबोर रेत दिखाता है, तो ऐसा लगता है मानो वह मुझे चित्र का एक दूसरा पहलू दिखा रहा हो, और मुझे उसकी किरणों के घुमावदार मार्ग पर, घंटों के विविध परिदृश्य के सभी सुंदर दृश्यों के बीच एक स्थिर लेकिन निरंतर परिवर्तनशील यात्रा में संलग्न कर रहा हो। और उस पहली सुबह सूरज ने मुझे दूर समुद्र की उन नीली चोटियों की ओर एक हंसमुख उंगली से इशारा किया, जिनका किसी भी भूगोलवेत्ता के नक्शे पर कोई नाम नहीं है, जब तक कि उनकी गर्जना करती और अराजक सतह पर अपने शानदार भ्रमण से चक्कर खाकर, वह मेरे शयनकक्ष में हवा से बचने के लिए वापस नहीं आ गया, बिना बिछे बिस्तर पर इतराते हुए और अपनी दौलत को बेसिन-स्टैंड की छींटों वाली सतह पर और मेरे खुले हुए ट्रंक में बिखेर दिया, जहाँ अपनी

भव्यता और बेमेल विलासिता से उसने अव्यवस्था के समग्र प्रभाव को और भी बढ़ा दिया। हाय, समुद्र से आने वाली वह हवा; एक घंटे बाद, विशाल भोजन कक्ष में—जब हम दोपहर का भोजन कर रहे थे, और एक नींबू के चमड़े जैसे लौकी से कुछ सुनहरी बूँदें जूतों की तली पर छिड़क रहे थे, जो थोड़ी देर बाद हमारी प्लेटों पर अपने चुने हुए कंकालों के पंख छोड़ जाते थे, जो कड़े पंखों की तरह मुड़े हुए और सिथर की तरह गूंजते थे—मेरी दादी को यह एक क्रूर अभाव जैसा लग रहा था कि वह अपने गालों पर उसकी जीवनदायिनी साँस को महसूस नहीं कर पा रही थीं, खिड़की के कारण, जो पारदर्शी तो थी लेकिन बंद थी, जो किसी संग्रहालय में कांच के बक्से के सामने की तरह हमें समुद्र तट से अलग करती थी, लेकिन हमें उसके पूरे विस्तार को देखने की अनुमति देती थी, और जिसमें आकाश इस तरह से प्रवेश करता था कि उसका नीला रंग खिड़कियों के रंग जैसा लगता था और उसके सफेद बादल कांच में कुछ खामियों जैसे लगते थे। यह कल्पना करते हुए कि मैं 'समुद्र तट पर बैठा' हूँ या बॉडेलेयर द्वारा वर्णित 'शौचालय' में विश्राम कर रहा हूँ, मैंने स्वयं से पूछा कि क्या उनकी 'समुद्र पर सूर्य की किरणें'—शाम की किरण से बिल्कुल भिन्न, जो सुनहरी पेंसिल की लहराती रेखा की तरह सरल और सतही होती है—ठीक वही नहीं थीं जो उस क्षण समुद्र को पुखराज-भूरा कर रही थीं, उसे किण्वित कर रही थीं, उसे झागदार बीयर की तरह पीला और दूधिया बना रही थीं, जबकि बीच-बीच में उस पर विशाल नीली परछाइयाँ मंडरा रही थीं जिन्हें मानो कोई देवता अपने मनोरंजन के लिए आकाश में दर्पण घुमाकर इधर-उधर कर रहा हो। दुर्भाग्य से, यह न केवल अपने दृश्य में हमारे कॉम्ब्रे स्थित कमरे से भिन्न था, जो सामने के घरों की ओर खुलता था, बल्कि बालबेक का यह भोजन कक्ष, जिसकी दीवारें खाली थीं, संगमरमर के कुंड में पानी की तरह हरे सूर्य के प्रकाश से भरा हुआ था,

जबकि कुछ ही फीट दूर पूर्ण ज्वार और दिन का उजाला मानो स्वर्गिक नगर के द्वारों के सामने पन्ना और सोने का एक अटूट और गतिशील प्राचीर खड़ा कर रहा था। कॉम्ब्रे में, चूंकि हम सभी को जानते थे, इसलिए मैंने किसी की परवाह नहीं की। समुद्र तट पर जीवन में, इंसान केवल अपने साथियों को ही जानता है। मैं अभी इतना बड़ा नहीं हुआ था, मैं अभी भी इतना संवेदनशील था कि दूसरों की नज़र में अच्छा बनने और उनका दिल जीतने की इच्छा से बाहर नहीं निकल पाया था। न ही मुझमें वह उदात्त उदासीनता थी जो एक अनुभवी व्यक्ति में होती है, कमरे में दोपहर का भोजन कर रहे लोगों के प्रति, न ही खिड़की के सामने टहल रहे लड़कों और लड़कियों के प्रति, जिनके साथ मुझे यह सोचकर दुख होता था कि मुझे कभी भी अभियानों पर जाने की अनुमति नहीं मिलेगी, हालांकि उतना दुख नहीं होता जितना कि अगर मेरी दादी, जो सामाजिक औपचारिकताओं की अवहेलना करती थीं और मेरी सेहत के अलावा किसी और चीज की परवाह नहीं करती थीं, उनके पास यह अनुरोध लेकर जातीं, जिसे सुनकर मुझे शर्मिंदगी होती, कि वे मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दे दें। चाहे वे मेरी समझ से परे किसी विला में लौट रहे हों, या रैकेट हाथ में लिए किसी लॉन-टेनिस कोर्ट की ओर जा रहे हों, या घोड़ों पर सवार हों जिनके खुरों ने मेरे दिल को कुचल दिया हो, मैं उन्हें उस चकाचौंध भरी समुद्र तट की रोशनी में, जहाँ सामाजिक भेद मिट जाते हैं, एक तीव्र जिज्ञासा से निहारता रही। मैं उस विशाल कांच के पारदर्शी द्वार से उनकी हर हरकत का अनुसरण करती रही, जिससे कमरे में भरपूर रोशनी आती थी। लेकिन यह हवा को रोक रहा था, और यह मेरी दादी को अनुचित लगा। वह यह सोचकर सहन नहीं कर पा रही थीं कि मैं खुली हवा में एक घंटे का आनंद खो रही हूँ, इसलिए उन्होंने चुपके से एक शीशा खोला और तुरंत ही खाने के बिल, अखबार, घूंघट और अन्य मेजों पर बैठे

सभी लोगों की टोपियाँ उड़ा दीं। वह स्वयं, स्वर्ग की शक्ति से परिपूर्ण होकर, संत ब्लैंडिना की तरह शांत और मुस्कुराती रही, उन तिरस्कारपूर्ण, अस्त-व्यस्त, क्रोधी आगंतुकों द्वारा हम पर बरसाए गए अपशब्दों की बाढ़ के बीच, जिसने मेरे अलगाव और दुख की भावना को और बढ़ा दिया।

कुछ हद तक—और बालबेक में, इस तरह के शानदार और 'विशिष्ट' होटल की आबादी को, जो आम तौर पर एकरस रूप से समृद्ध और महानगरीय थी, एक विशिष्ट स्थानीय चरित्र प्रदान करती थी—वे फ्रांस के उस क्षेत्र की विभागीय राजधानियों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से बने थे, जिनमें केन से एक मुख्य मजिस्ट्रेट, चेरबर्ग बार के एक नेता, ले मैन्स से एक बड़े वकील शामिल थे, जो हर साल, जब छुट्टियां आती थीं, तो उन विभिन्न स्थानों से, जहां वे पूरे कामकाजी वर्ष के दौरान युद्ध में स्नाइपरों या बोर्ड पर ड्राफ्ट्समैन की तरह बिखरे रहते थे, इस होटल में अपनी ताकत इकट्ठा करते थे। वे हमेशा एक ही कमरे आरक्षित करते थे, और अपनी पत्नियों के साथ, जो कुलीनता का दावा करती थीं, एक छोटा समूह बनाते थे, जिसमें पेरिस से एक प्रमुख बैरिस्टर और एक प्रमुख डॉक्टर शामिल होते थे, जो अपने प्रस्थान के दिन दूसरों से कहते थे:

"ओह, जी हाँ, बिल्कुल; आप हमारी ट्रेन से नहीं जाते। आप भाग्यशाली हैं, आप दोपहर के भोजन तक घर पहुँच जाएँगे।"

"खुशकिस्मत, क्या कहते हो? तुम, जो राजधानी में, 'पेरिस जैसे महान शहर' में रहते हो, जबकि मुझे एक लाख लोगों के एक दयनीय काउंटी कस्बे में रहना पड़ता है (यह सच है कि पिछली जनगणना में हमारी आबादी एक लाख दो हजार ही थी, लेकिन तुम्हारी ढाई मिलियन आबादी के मुकाबले यह क्या है?) और फिर भी, डामर की सड़कों और पेरिस के जीवन की सारी चहल-पहल और उल्लास में वापस जाना पड़ता है?"

उन्होंने ये बात देहाती लहजे में, लेकिन बिना किसी कड़वाहट के कही, क्योंकि वे अपने-अपने प्रांत में अग्रणी थे। अन्य लोगों की तरह वे भी चाहें तो पेरिस जा सकते थे—कैन के मुख्य मजिस्ट्रेट को तो कई बार अपील न्यायालय में न्यायाधीश का पद प्रस्तावित किया गया था—लेकिन उन्होंने अपने गृह नगरों के प्रति प्रेम, गुमनामी या प्रसिद्धि की चाहत, या फिर प्रतिक्रियावादी होने के कारण वहीं रहना पसंद किया, और आस-पास के ग्रामीण घरों से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना उन्हें अच्छा लगता था। इसके अलावा, उनमें से कई लोग तुरंत अपने काउंटी नगरों में वापस नहीं लौट रहे थे।

क्योंकि बालबेक की खाड़ी एक विशाल दुनिया के बीचोंबीच एक छोटी सी अलग दुनिया थी, जिसमें ऋतुओं का एक ऐसा संग्रह था जो अच्छे और बुरे दिनों को एक घेरे में समेटे हुए था, और महीने भी क्रम से व्यवस्थित थे। इसलिए, न केवल उन दिनों में जब रिवेबेल दिखाई देता था, जो अपने आप में आने वाले तूफानों का संकेत था, तो वहां के घरों पर धूप दिखाई देती थी जबकि बालबेक अंधेरे में डूबा रहता था, बल्कि बाद में, जब बालबेक में ठंड का मौसम आ जाता था, तो उस विपरीत तट पर दो या तीन अतिरिक्त महीने की गर्माहट मिलने का आश्वासन दिया जा सकता था। ग्रैंड होटल के वे नियमित आगंतुक जिनकी छुट्टियां देर से शुरू होती थीं या लंबी चलती थीं, बारिश और कोहरे के आने पर और शरद ऋतु का आभास होने पर अपने बक्से पैक करके जहाज पर चढ़ाने और रिवेबेल या कोस्टेडोर में फिर से गर्मी की तलाश में खाड़ी के पार रवाना होने का आदेश देते थे। बालबेक होटल में बैठा यह छोटा सा समूह हर नए आने वाले को शक की निगाह से देखता था, और दिखावटी तौर पर उसमें कोई दिलचस्पी न दिखाते हुए, सब मिलकर अपने दोस्त, मुख्य वेटर से सवाल पूछने में जुट जाते थे। दरअसल, वही मुख्य वेटर—ऐमे—हर साल सीज़न

के लिए लौटता था और उनके लिए मेज़ें संभालता था। उनकी सहेलियाँ, यह सुनकर कि उसकी पत्नी गर्भवती है, खाने के बाद बैठकर छोटी-छोटी चीज़ें करती रहती थीं, बस अपने गिलास उठाकर हम दोनों, मेरी दादी और मुझे, घूरती रहती थीं, क्योंकि हम सलाद में उबले अंडे खा रहे थे, जो आम बात मानी जाती थी, और वास्तव में एलेनकॉन के संभ्रांत समाज में 'स्वीकार्य' था। वे उस फ्रांसीसी के प्रति तिरस्कारपूर्ण व्यंग्य का भाव दिखाती थीं, जिसे 'महामहिम' कहा जाता था और जिसने वास्तव में दक्षिण सागर के एक छोटे से द्वीप का राजा होने का दावा किया था, जहाँ कुछ ही आदिवासियों का निवास था। वह अपनी खूबसूरत प्रेमिका के साथ होटल में ठहरा हुआ था, जो जब नहाने के लिए समुद्र तट पार करती थी, तो छोटे लड़के "रानी के लिए तीन जयकारे!" कहकर उसका अभिवादन करते थे, क्योंकि वह उन्हें चांदी के छोटे-छोटे सिक्कों की बौछार से पुरस्कृत करती थी। मुख्य मजिस्ट्रेट और वकील तो उसे अनदेखा करने का नाटक भी करते थे, और अगर उनके किसी दोस्त की नज़र उस पर पड़ जाती, तो वे उसे यह कहकर चेतावनी देना अपना कर्तव्य समझते थे कि वह तो बस एक छोटी सी दुकान में काम करने वाली लड़की है।

"लेकिन मुझे बताया गया था कि ओस्टेंड में वे शाही स्नान मशीन का इस्तेमाल करते थे।"

"अच्छा, और क्यों नहीं? यह बीस फ्रैंक में किराए पर मिलता है। अगर आपको ऐसी चीज़ों में दिलचस्पी है, तो आप इसे खुद ले जा सकते हैं। वैसे, मुझे पक्का पता है कि जब वह वहाँ था, तो उस आदमी ने राजा से मिलने की गुहार लगाई थी, जिन्होंने जवाब में कहा कि उन्हें किसी भी तरह के नाटकबाज़ राजकुमारों से कोई मतलब नहीं है।" "सच में, यह तो दिलचस्प है! दुनिया में कितने अजीब लोग हैं, वाकई!"

और मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह सब बिल्कुल सच था: लेकिन यह इस विचार के प्रति आक्रोश से भी उपजा था कि उनके कई साथी आगंतुकों के लिए, वे स्वयं केवल सम्मानित लेकिन साधारण लोग थे जो इस राजा और रानी को नहीं जानते थे जो अपने छोटे-मोटे पैसों को इतनी उदारता से खर्च करते थे। इसी आक्रोश के कारण, जब वे जिसे 'कार्निवल' कहना पसंद करते थे, वह बीत गया, तो सॉलिसिटर, मजिस्ट्रेट और बैरिस्टर को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने ज़ोर से अपनी नाराजगी व्यक्त की, जिसे उनके मित्र, मुख्य वेटर ने पूरी तरह से समझ लिया। मुख्य वेटर, इन उदार, भले ही वास्तविक न हों, सम्राटों के प्रति उचित शिष्टाचार दिखाने के लिए बाध्य था, फिर भी, उनके ऑर्डर लेते समय, वह दूर से ही अपने पुराने ग्राहकों पर एक गुप्त लेकिन अर्थपूर्ण नज़र डालता था। शायद उनमें कुछ इसी तरह की नाराजगी भी थी कि उन्हें गलती से कमतर समझा जा रहा था और वे यह साबित करने में असमर्थ थे कि वे अधिक बुद्धिमान थे, जिससे उस 'उत्कृष्ट नमूने' की भावना पर बल मिलता था जिसके साथ उन्होंने एक युवा 'वंशज' का वर्णन किया था, जो एक उद्योगपति का क्षय रोग से ग्रस्त और अय्याश बेटा था, जो हर दिन नए सूट में आता था, बटनहोल में एक ऑर्किड लगाए रहता था, दोपहर के भोजन में शैंपेन पीता था, और फिर होटल से बाहर निकलता था, पीला पड़ा हुआ, भावहीन, होठों पर पूर्ण उदासीनता की मुस्कान लिए हुए, कैसीनो में जाकर बैकारेट टेबल पर भारी रकम उड़ा देता था, 'जिसे वह खोने का जोखिम नहीं उठा सकता था,' जैसा कि वकील ने मुख्य मजिस्ट्रेट से हताश भाव से कहा, जिसकी पत्नी को 'विश्वसनीय सूत्रों' से पता चला था कि यह 'हानिकारक' युवक अपने माता-पिता के सफेद बालों को दुख में कब्र तक ले जा रहा था।

दूसरी ओर, वकील और उसके दोस्त एक धनी, प्रतिष्ठित बूढ़ी महिला के

विषय पर व्यंग्य करने से बाज नहीं आते थे, क्योंकि वह कभी भी अपने पूरे परिवार को साथ लिए बिना कहीं नहीं जाती थी। जब भी वकील और मजिस्ट्रेट की पत्नियाँ उसे भोजन कक्ष में भोजन के समय देखतीं, तो वे अपने गिलास ऊपर उठा लेतीं और उसे इतनी बारीकी से और अविश्वास से देखतीं, मानो वह कोई दिखावटी नाम वाली व्यंजन हो, जिसका रूप-रंग संदिग्ध हो और जिसे व्यवस्थित अध्ययन के बाद ऊँचे स्वर में हाथ हिलाकर और घृणा का मुँह बनाकर दूर कर दिया जाए।

इस व्यवहार से उनका एकमात्र उद्देश्य यह दिखाना था कि यदि संसार में ऐसी कोई वस्तुएँ थीं जिनकी उन्हें स्वयं कमी थी—इस मामले में, कुछ विशेषाधिकार जो उस वृद्ध महिला को प्राप्त थे, और उससे परिचित होने का विशेषाधिकार—तो यह इसलिए नहीं था कि वे उन्हें प्राप्त नहीं कर सकती थीं, बल्कि इसलिए था कि उन्होंने उन्हें प्राप्त करने का चुनाव ही नहीं किया था। लेकिन वे स्वयं को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गई थीं कि वास्तव में वे यही महसूस करती हैं; और अपरिचित जीवन शैली के प्रति सभी इच्छाओं, सभी जिज्ञासाओं, नए लोगों को प्रसन्न करने की सभी आशाओं (जिनके स्थान पर महिलाओं ने बनावटी तिरस्कार और कृत्रिम चमक का सहारा लिया था) का दमन ही वह विचित्र परिणाम था जिसके कारण उन्हें अपनी असंतुष्टि को संतुष्टि का नाम देना पड़ा और हमेशा के लिए स्वयं से झूठ बोलना पड़ा, जिसके लिए वे अत्यंत दयनीय थीं। लेकिन होटल में हर कोई निस्संदेह इसी प्रकार व्यवहार कर रहा था, हालाँकि उसका व्यवहार अलग रूप ले सकता था, और यदि आत्म-महत्व के लिए नहीं, तो कम से कम कुछ सिखाए गए सिद्धांतों और मानसिक आदतों के लिए एक विचित्र प्रकार के जीवन में घुलमिल जाने के रोमांचकारी आनंद का त्याग कर रहा था। निःसंदेह, उस छोटे से संसार का वातावरण, जिसमें वह बुढ़िया एकांत में बैठी थी, उस भयंकर

कड़वाहट से दूषित नहीं था, जैसा कि उस समूह का था जिसमें वकील और मजिस्ट्रेट की पत्नियाँ बेबसी भरी क्रोध में बड़बड़ा रही थीं। वास्तव में, वह वातावरण एक कोमल और पुराने जमाने की सुगंध से महका हुआ था, जो फिर भी कृत्रिम थी। क्योंकि हृदय से बुढ़िया शायद नए मित्रों की रहस्यमयी सहानुभूति को आकर्षित करने, उनसे जुड़ने (और इस उद्देश्य से स्वयं को पुनर्जीवित करने) में एक ऐसा आकर्षण पाती, जो केवल अपने ही संसार के लोगों के साथ घुलने-मिलने से मिलने वाले आनंद में बिलकुल नहीं होता, और यह याद दिलाता है कि अपना संसार ही सर्वोपरि है, इसलिए 'बाहरी लोगों' के बारे में निराधार तिरस्कार को नजरअंदाज किया जा सकता है। शायद उसे लगा होगा कि अगर वह बालबेक के ग्रैंड होटल में गुप्त रूप से पहुँचती, तो अपने काले गाउन और पुराने ज़माने की टोपी में वह किसी बूढ़े बदमाश के होंठों पर मुस्कान ला देती, जो अपनी झूला कुर्सी की गहराई से ऊपर देखता और बुदबुदाता, "कितना भद्दा है!" या, इससे भी बुरा, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के होंठों पर, जिसके पास मजिस्ट्रेट की तरह, अपनी सफ़ेद दाढ़ी के बीच गुलाबी रंगत और चमकती आँखें थीं, जैसी उसे देखना पसंद था, और वह तुरंत वैवाहिक चश्मे के आवर्धक लेंस से इस विचित्र घटना को देख लेता; और शायद उन पहले कुछ मिनटों के अनकहे डर में, जो कि भले ही कोई जानता हो कि वे कुछ ही मिनट होंगे, फिर भी उतने ही डरावने होते हैं, जैसे पानी में सिर डुबोने का पहला अनुभव, इस बूढ़ी महिला ने पहले ही एक नौकर को नीचे भेज दिया, जो होटल को अपनी मालकिन के व्यक्तित्व और आदतों के बारे में सूचित करेगा, और प्रबंधक के अभिवादन को बीच में ही रोकते हुए, एक ऐसी जल्दबाजी के साथ जिसमें गर्व से अधिक झिझक थी, अपने कमरे की ओर चल पड़ा, जहाँ होटल की खिड़कियों पर लगे पर्दों की जगह उसके अपने पर्दे, उसकी अपनी स्क्रीन और तस्वीरें, उसके और बाहरी

दुनिया के बीच इतनी प्रभावी ढंग से एक अवरोध बन गई थीं, जिससे उसे अन्यथा खुद को ढालना पड़ता, उसके निजी जीवन की एक ऐसी दीवार कि ऐसा लग रहा था जैसे उसका घर (जिसमें वह आराम से रह रही थी) यात्रा कर रहा हो, न कि वह स्वयं।

उसके बाद से, उसने अपने और होटल के कर्मचारियों व सज्जाकारों के बीच, नौकरों को खड़ा कर दिया, जो उसकी जगह इस अजनबी भीड़ से संपर्क के सदमे को सहते थे और अपनी मालकिन के आसपास उसका परिचित माहौल बनाए रखते थे। उसने अपने पूर्वाग्रहों को अन्य आगंतुकों से अलग रखते हुए, इस बात की परवाह किए बिना कि वह उन लोगों को ठेस पहुँचा रही है जिन्हें उसके मित्र अपने घरों में नहीं बुलाते, अपने ही संसार में जीना जारी रखा, अपने मित्रों के साथ पत्राचार के माध्यम से, यादों के माध्यम से, अपनी स्थिति के प्रति अपने गहरे बोध और आत्मविश्वास से, अपने व्यवहार की गुणवत्ता से, अपनी शिष्टता की दक्षता से। और हर दिन, जब वह अपनी गाड़ी में घूमने के लिए नीचे आती, तो उसके पीछे आने वाली नौकरानी, जो उसके शॉल लिए होती थी, और उससे आगे चलने वाला नौकर, उसे किसी दूतावास के द्वार पर तैनात संतरियों की तरह लगते थे, जो उसके देश का झंडा फहराते हुए, उसे विदेशी धरती पर भी अतिरिक्त अधिकार का आश्वासन देते थे। हमारे आगमन के अगले दिन दोपहर तक वह अपने कमरे से बाहर नहीं निकलीं, इसलिए हम उन्हें भोजन कक्ष में नहीं देख पाए। चूंकि हम वहां अजनबी थे, इसलिए प्रबंधक हमें भोजन कक्ष में ले गए, मानो एक सिपाही रंगरूटों के दस्ते को दर्जी के पास ले जाता है ताकि उनके कपड़े सिल सकें। हालांकि, कुछ ही देर बाद हमने एक ग्रामीण सज्जन और उनकी बेटी को देखा, जो एक गुमनाम लेकिन बहुत पुराने ब्रेटन परिवार से थे, श्रीमान और श्रीमती डी स्टरमारिया, जिनकी मेज हमें इस विश्वास में दी गई थी कि वे

बाहर गए हैं और शाम तक वापस नहीं आएंगे। वे बालबेक केवल आस-पास के कुछ जाने-माने रईसों से मिलने आए थे, इसलिए उन्होंने होटल के भोजन कक्ष में, निमंत्रण स्वीकार करने और मुलाकातों के कारण, केवल उतना ही समय बिताया जितना अपरिहार्य था। उनकी अकड़ ने ही उन्हें मानवीय सहानुभूति से पूरी तरह बचाए रखा था, आस-पास बैठे अजनबियों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्हीं अजनबियों के बीच एम. डी. स्टरमारिया ने वही बर्फीला, संशयपूर्ण, दूर, असभ्य, नियमनिष्ठ और अविश्वासी भाव बनाए रखा था जो हम रेलवे के जलपान कक्ष में उन सहयात्रियों के बीच अपना लेते हैं जिन्हें हमने पहले कभी नहीं देखा और न ही कभी देखेंगे, और जिनके साथ हम अपने ठंडे चिकन के हिस्से और ट्रेन में अपनी कोने वाली सीट की रक्षा करने के अलावा कोई और संबंध नहीं सोच सकते। जैसे ही हमने दोपहर का भोजन शुरू किया, हमें मेज छोड़ने के लिए कहा गया। यह निर्देश एम. डी. स्टरमारिया ने दिया था, जो अभी-अभी आए थे और हमसे माफी मांगने की जरा भी कोशिश किए बिना, हमारे सामने ही मुख्य वेटर से अनुरोध किया कि "यह सुनिश्चित करें कि ऐसी गलती दोबारा न हो", क्योंकि उन्हें यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी कि "जिन लोगों को वे नहीं जानते" वे उनकी मेज पर बैठे हों।

और निश्चित रूप से उस भावना में, जिसने एक युवा अभिनेत्री (जो ओडियन में कभी-कभार निभाई गई भूमिकाओं की तुलना में अपने शानदार कपड़ों, अपनी चतुर बातों और जर्मन चीनी मिट्टी के बर्तनों के संग्रह के लिए अधिक जानी जाती थी), उसके प्रेमी, एक बेहद धनी युवक, जिसके लिए उसने अपनी संस्कृति हासिल की थी, और उस समय सार्वजनिक रूप से काफी चर्चित दो कुलीन व्यक्तियों को एक छोटा सा अलग समूह बनाने, केवल साथ यात्रा करने, बालबेक में दोपहर के भोजन के लिए बहुत देर से आने, सबके भोजन समाप्त करने के बाद आने; और

पूरा दिन अपने बैठक कक्ष में ताश खेलते हुए बिताने के लिए प्रेरित किया, उनमें हममें से बाकी लोगों के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं थी, बल्कि यह केवल एक विशेष प्रकार की बातचीत, अच्छे जीवन के कुछ परिष्कार के लिए उनके द्वारा विकसित किए गए स्वाद की आवश्यकता थी, जिसने उन्हें अपना समय बिताने, केवल अकेले भोजन करने में आनंद दिया, और उन रहस्यों से अपरिचित लोगों के साथ सामान्य जीवन असहनीय बना दिया होता। यहां तक कि डिनर या ताश खेलते समय भी, उनमें से प्रत्येक को यह सुनिश्चित करना होता था कि उनके सामने बैठे साथी में, गुप्त रूप से, एक विशेष प्रकार का ज्ञान छिपा हो, जिसका अभी तक उपयोग न किया गया हो। यह ज्ञान उन्हें पेरिस के कई घरों में बिखरे पड़े कबाड़ को असली मध्ययुगीन या पुनर्जागरण काल की कृतियों के रूप में पहचानने में सक्षम बनाता था और चर्चा का विषय चाहे जो भी हो, वे अपने समूह के उन सभी मानदंडों को लागू कर सकते थे जिनके द्वारा वे अच्छे और बुरे काम में अंतर करते थे। शायद ऐसे ही क्षणों में, भोजन या खेल की सामान्य शांति में कभी-कभार होने वाले मनोरंजक व्यवधान से, या दोपहर के भोजन या पोकर के लिए युवा अभिनेत्री द्वारा पहनी गई नई और आकर्षक पोशाक से, वह विशेष प्रकार का जीवन प्रकट होता था जिसमें ये चारों मित्र सबसे अधिक डूबे रहना चाहते थे। लेकिन उन्हें इस प्रकार उन आदतों की प्रणाली में लपेटकर, जिन्हें वे दिल से जानते थे, उन्हें अपने चारों ओर चल रहे जीवन के रहस्य से बचाना पर्याप्त था। पूरी दोपहर, समुद्र उनकी आँखों के सामने इस तरह रुका रहा जैसे किसी धनी कुंवारे के फ्लैट की दीवार पर आकर्षक रंगों से सजी कोई पेंटिंग टंगी हो, और केवल खेल के बीच के अंतराल में ही, जब खिलाड़ियों में से कोई एक, करने के लिए कुछ बेहतर न पाकर, मौसम या समय का कुछ संकेत पाने के लिए और दूसरों को यह याद दिलाने के लिए कि चाय तैयार है,

अपनी नज़रें समुद्र की ओर उठाता था। और रात में वे होटल में भोजन नहीं करते थे, जहाँ बिजली के छिपे हुए स्रोत विशाल भोजन कक्ष को प्रकाश से भर देते थे, जिससे वह एक विशाल और अद्भुत एक्वेरियम जैसा बन जाता था, जिसकी कांच की दीवार के सामने बालबेक की कामकाजी आबादी, मछुआरे और व्यापारियों के परिवार, बाहरी अंधेरे में अदृश्य रूप से एकत्रित होकर, अपने चेहरे सटाकर अंदर सुनहरे भंवरों पर धीरे-धीरे तैरते हुए, उसके निवासियों के विलासितापूर्ण जीवन को देखते थे, जो गरीबों के लिए उतना ही असाधारण था जितना कि अजीब मछलियों या घोंघे का जीवन (यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न है: क्या कांच की दीवार हमेशा इन अद्भुत जीवों को उनके भोज में सुरक्षित रखेगी, क्या रात में भूखे होकर उन्हें देखने वाले गुमनाम लोग किसी दिन अंदर घुसकर उन्हें उनके एक्वेरियम से निकालकर खा नहीं जाएंगे)। इस बीच, शायद देखने वाली भीड़ के बीच, अंधेरे में एक गतिहीन, आकारहीन समूह रहा होगा, कोई लेखक, मानव मत्स्यविज्ञान का कोई छात्र, जो बूढ़ी स्त्री विकृतियों के जबड़ों को भोजन के एक निवाले पर बंद होते और फिर उसे निगलते हुए देख रहा था, और उनका वर्गीकरण करके अपना मनोरंजन कर रहा था, उनकी नस्ल के अनुसार, उनकी जन्मजात विशेषताओं के साथ-साथ उन अर्जित विशेषताओं के आधार पर भी, जिनके कारण एक बूढ़ी सर्बियाई महिला, जिसका मुख एक बड़ी समुद्री मछली जैसा उभरा हुआ है, क्योंकि वह अपने शुरुआती वर्षों से फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के ताजे पानी में रही है, अपना सलाद बिल्कुल ला रोशेफौकॉल्ड की तरह खाती है।

उस समय तीनों युवक डिनर जैकेट पहने उस युवती का इंतज़ार कर रहे थे, जो हमेशा की तरह देर से आई थी, लेकिन थोड़ी देर बाद, हमेशा की तरह अलग पोशाक और अपने प्रेमी की किसी खास इच्छा को पूरा करने

के लिए चुनी गई कई स्कार्फों में से एक पहने, लिफ्ट की सीढ़ी का पायदान उतारकर, किसी गुड़िया की तरह डिब्बे से बाहर निकली। फिर चारों, क्योंकि उन्होंने पाया कि बालबेक की धरती पर बने 'महल' की अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि वहाँ खाने के बजाय भौतिक वैभव में ही फली-फूली थी, एक गाड़ी में सवार होकर एक मील दूर एक छोटे से मशहूर रेस्तरां में भोजन करने गए, जहाँ उन्होंने रसोइए के साथ अपने भोजन की संरचना और विभिन्न व्यंजनों को पकाने के बारे में अंतहीन चर्चाएँ कीं। अपनी यात्रा के दौरान, बालबेक से बाहर जाने वाली सेब के पेड़ों से घिरी सड़क उनके लिए उस दूरी से अधिक कुछ नहीं थी जिसे उन्हें तय करना था - अंधेरे में यह दूरी पेरिस में उनके घरों और कैफे एंग्लिस या टूर डी'अर्जेंट के बीच की दूरी से मुश्किल से ही अलग पहचानी जा सकती थी - इससे पहले कि वे उस फैशनेबल छोटे रेस्तरां में पहुँच सकें जहाँ, जहाँ युवक के दोस्त उससे ईर्ष्या करते थे क्योंकि उसकी प्रेमिका बहुत ही सजी-धजी थी, वहीं उसकी प्रेमिका के स्कार्फ उस छोटे से समूह पर एक सुगंधित, बहते हुए घूंघट की तरह फैले हुए थे, लेकिन एक ऐसा घूंघट जो उन्हें बाहरी दुनिया से अलग रखता था।

अफसोस, मेरी मन की शांति भंग हो गई, क्योंकि मुझमें इन सभी लोगों जैसी तटस्थता नहीं थी। उनमें से कई लोगों के बारे में मैं लगातार सोचता रहता था; मैं उस व्यक्ति की नजरों से बचकर नहीं निकलना चाहता था, जिसकी भौंहें झुकी हुई थीं और आंखें उसके पूर्वाग्रहों और शिक्षा के पर्दों के बीच इधर-उधर भटकती रहती थीं। वह जिले का बड़ा रईस था, जो लेग्रैंडिन का बहनोई था और कभी-कभी बालबेक में किसी से मिलने आता था। रविवार को, अपनी पत्नी के साथ आयोजित साप्ताहिक गार्डन पार्टी के कारण, वह होटल के कई मेहमानों को खाली कर देता था, क्योंकि उनमें से एक-दो को इन पार्टियों में आमंत्रित किया जाता था और

बाकी, यह जताने के लिए कि उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया है, उस दिन किसी दूर स्थान पर घूमने चले जाते थे। संयोग से, सीज़न के पहले दिन होटल में उसका बहुत बुरा स्वागत हुआ था, जब रिवेरा से आए नए कर्मचारियों को यह पता नहीं था कि वह कौन है या क्या है। वह न केवल सफेद फलालैन नहीं पहने हुए था, बल्कि पुराने जमाने की फ्रांसीसी शिष्टाचार और आलीशान होटलों के तौर-तरीकों से अनभिज्ञता के चलते, महिलाओं से भरे हॉल में प्रवेश करते ही उसने दरवाजे पर अपनी टोपी उतार दी थी। इसका असर यह हुआ कि मैनेजर ने अभिवादन के तौर पर अपनी उंगली तक नहीं उठाई, यह सोचते हुए कि यह कोई बेहद साधारण परिवार का व्यक्ति होगा, जिसे वह 'आम आदमी' कहता था। केवल वकील की पत्नी ही उस अजनबी की ओर आकर्षित हुई थी, जो सचमुच सम्मानित लोगों की सारी बनावटी अशिष्टता बिखेर रहा था, और उसने ले मैन्स के उच्च समाज से कोई रहस्य न रखने वाले व्यक्ति की अचूक समझ और निर्विवाद अधिकार के साथ कहा कि एक नजर में ही पता चल जाता है कि कोई एक महान, उत्तम संस्कार वाले सज्जन के सामने है, जो बालबेक में आमतौर पर दिखने वाले लोगों से बिलकुल अलग था, जिन्हें वह तब तक जानना असंभव मानती थी जब तक वह उन्हें जानती नहीं थी। लेग्रैंडिन के बहनोई के बारे में उसने जो अनुकूल फैसला सुनाया था, वह शायद उस व्यक्ति की निर्बल उपस्थिति पर आधारित था जिससे किसी को भी डराने वाली कोई बात नहीं थी; शायद उसने एक पादरी जैसी चाल वाले इस सज्जन किसान में अपने स्वयं के कट्टर पादरीवाद के मेसोनिक संकेत भी पहचान लिए थे।

मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि होटल के पास से हर रोज घोड़े पर सवार होकर गुजरने वाले युवक एक संदिग्ध आर्थिक स्थिति वाले कपड़े की दुकान के मालिक के बेटे थे, जिनसे मेरे पिता कभी बात करने

का सपना भी नहीं देखते। 'समुद्री जीवन' की चकाचौंध ने उन्हें मेरी नजरों में देवताओं की तरह ऊँचा दर्जा दे दिया था, और मेरी सबसे बड़ी उम्मीद यही थी कि वे अपनी अभिमानी निगाहें मुझ जैसे बेचारे लड़के पर कभी न डालें, जो होटल के भोजन कक्ष से निकलकर रेत पर विनम्रता से बैठ जाता था। मैं तो खुश हो जाता अगर मुझे दक्षिण सागर के एक रेगिस्तानी द्वीप के राजा रह चुके उस साहसी व्यक्ति से भी कुछ प्रतिक्रिया मिल जाती, यहाँ तक कि उस युवा तपेदिक रोगी से भी, जिसके बारे में मैं सोचता था कि वह अपने उद्दंड बाहरी रूप के नीचे एक शर्मीला और कोमल हृदय छिपाए हुए है, जो शायद मुझ पर, और केवल मुझ पर ही, अपने स्नेह का खजाना लुटा देता। इसके अलावा (यात्रा के दौरान मिलने वाले लोगों के बारे में आमतौर पर जो कहा जाता है, उसके विपरीत) जिस प्रकार किसी विशेष समूह में देखे जाने से हमें उस स्थान पर एक ऐसा महत्व प्राप्त होता है जहाँ हम अगले वर्ष फिर लौटेंगे, जिसका हमारे वास्तविक सामाजिक जीवन में कोई समकक्ष नहीं होता, उसी प्रकार पेरिस लौटने के बाद हम जिस चीज़ को इतनी दृढ़ता से दूर रखते हैं, उससे बढ़कर समुद्र के किनारे बनी मित्रताएँ होती हैं। मैं उन सभी अस्थायी या स्थानीय हस्तियों की राय को लेकर चिंतित था, जिन्हें मैंने स्वयं को दूसरों की जगह रखकर और उनके मन में जो कुछ था उसे फिर से गढ़ने की प्रवृत्ति के कारण उनके वास्तविक दर्जे पर नहीं रखा था, उदाहरण के लिए, पेरिस में उनका जो दर्जा होता, जो काफी नीचा होता, बल्कि उस दर्जे पर रखा था जो वे अपना मानते होंगे, और वास्तव में बालबेक में उनका वही दर्जा था, जहाँ एक समान आधार की कमी ने उन्हें एक प्रकार की सापेक्ष श्रेष्ठता और व्यक्तिगत लाभ प्रदान किया था। अफसोस, इन लोगों में से किसी का भी मेरे प्रति तिरस्कार एम. डी स्टरमारिया के तिरस्कार जितना असहनीय नहीं था।

जैसे ही उनकी बेटी कमरे में दाखिल हुई, मैंने उसे तुरंत देख लिया था। उसके सुंदर नैन-नक्श, उसका पीला, लगभग नीला रंग, उसकी लंबी कद-काठी और चाल में जो विशिष्टता थी, उससे मुझे उसके लंबे वंश और कुलीन परवरिश का आभास हुआ, और यह आभास और भी स्पष्ट हो गया क्योंकि मैं उसका नाम जानता था। ठीक वैसे ही जैसे प्रतिभाशाली संगीतकारों द्वारा रचित वे भावपूर्ण धुनें, जो आग की चमक, पानी की धारा, खेतों और जंगलों की शांति को शानदार रंगों में चित्रित करती हैं, उन श्रोताओं के लिए जो कार्यक्रम पर एक नज़र डालने के बाद अपनी कल्पना को सही दिशा में निर्देशित करते हैं। 'सदियों की विरासत' का लेबल, मैडम डी स्टरमारिया के आकर्षण में उनकी उत्पत्ति का विचार जोड़कर, उन्हें और भी अधिक वांछनीय बना देता है, उनकी दुर्लभता का विज्ञापन करता है, जैसे ऊंची कीमत किसी ऐसी चीज़ का मूल्य बढ़ा देती है जो पहले ही हमें मोहित कर चुकी हो। और उसकी वंशानुगत विरासत ने उसके रंग-रूप को, जिसमें इतने सारे चुनिंदा रस मिश्रित थे, किसी विदेशी फल या किसी प्रसिद्ध वाइन की सुगंध प्रदान की।

और फिर महज़ संयोग से, मेरी दादी और मुझे, होटल के बाकी सभी मेहमानों की नज़रों में तुरंत एक अलग पहचान बनाने का मौका मिल गया। उस पहले दिन दोपहर को, जब बुज़ुर्ग महिला अपने कमरे से नीचे आईं, और अपने से पहले आए नौकर और उसके पीछे दौड़कर आई नौकरानी की बदौलत, जो एक किताब और एक कालीन लेकर आई थी, जो छूट गया था, उन्हें लेकर आईं, तो उन्हें देखने वाले हर किसी पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा और हर किसी के मन में जिज्ञासा जाग उठी, जिससे ज़ाहिर था कि एम. डी स्टरमारिया भी अछूते नहीं थे। तभी मैनेजर मेरी दादी की ओर झुका और नेकदिली से (जैसे कोई शाह या रानी रानावलो के बारे में किसी ऐसे अनजान दर्शक को बता सकता है जिसका इतने

शक्तिशाली शासक से कोई संबंध न हो, लेकिन फिर भी यह जानकर दिलचस्पी हो सकती है कि वह उनके कुछ ही फ़ीट की दूरी पर खड़ा था) उनके कान में फुसफुसाया, "मार्क्विस डी विलेपारिसिस!" उसी समय, मेरी दादी को देखते ही उस बूढ़ी औरत ने सुखद आश्चर्य से अपनी हैरानी को दबा नहीं पाई।

यह कल्पना की जा सकती है कि सबसे शक्तिशाली परी का अचानक एक छोटी बूढ़ी औरत के वेश में प्रकट होना मुझे उतना आनंद नहीं देता, क्योंकि मैं मैडम डी स्टरमारिया से मिलने के किसी भी साधन से वंचित था, एक ऐसी अनजान जगह पर जहाँ मैं किसी को नहीं जानता था: किसी भी व्यावहारिक उद्देश्य से। सौंदर्य की दृष्टि से, मानव रूपों की संख्या इतनी सीमित है कि हम जहाँ भी हों, हमें लगातार उन लोगों को देखने का आनंद मिलता है जिन्हें हम जानते हैं, भले ही हम उन्हें स्वान जैसे पुराने उस्तादों की कृतियों में न खोजें। इस प्रकार, बालबेक की हमारी यात्रा के पहले कुछ दिनों में, मैं स्वान के हॉल पोर्टर लेग्रैंडिन और स्वयं मैडम स्वान को खोजने में सफल रहा, जो एक वेटर, एक विदेशी आगंतुक (जिसे मैंने फिर कभी नहीं देखा) और एक स्नान अधीक्षक के रूप में परिवर्तित हो चुकी थीं। और एक प्रकार का चुंबकत्व कुछ विशेषताओं, चेहरे और मानसिक, को एक के बाद एक इतनी अविभाज्य रूप से आकर्षित और बनाए रखता है कि जब प्रकृति इस प्रकार किसी व्यक्ति को एक नए शरीर में डालती है, तो वह उसे अनावश्यक रूप से विकृत नहीं करती। वेटर बने लेग्रैंडिन ने अपना कद, नाक की आकृति और ठोड़ी का कुछ हिस्सा बरकरार रखा था; पुरुष पुरुष के रूप में और स्नान अधीक्षक के पद पर कार्यरत श्रीमती स्वान न केवल परिचित चेहरे से, बल्कि अपने बोलने के तरीके से भी जानी जाती थीं। लेकिन, लाल कमरबंद पहने, समुद्र तट पर खड़ी होकर, हवा के पहले झोंके पर उस झंडे

को फहराते हुए, जो हमें स्नान करने से मना करता था (क्योंकि ये अधीक्षक समझदार लोग होते हैं और शायद ही कभी तैरना जानते हों), वह मेरे लिए उतनी ही उपयोगी थीं जितनी कि मूसा के जीवन के उस भित्तिचित्र में, जिसमें स्वान ने बहुत पहले जेथ्रो की बेटी के चित्र में उनकी पहचान की थी। जबकि यह श्रीमती... डी विलेपारिसिस अपने वास्तविक स्वरूप में थीं, वह किसी ऐसे जादू का शिकार नहीं थीं जिसने उनकी शक्ति छीन ली हो, बल्कि इसके विपरीत, वह मेरी शक्ति को सौ गुना बढ़ाने वाले जादू का प्रयोग करने में सक्षम थीं, और जिसके बदौलत, मानो मैं किसी काल्पनिक पक्षी के पंखों पर हवा में उड़ रहा हूँ, मैं कुछ ही क्षणों में उस असीम रूप से चौड़ी (कम से कम, बालबेक में) सामाजिक खाई को पार कर गया जो मुझे मैडम डी स्टरमारिया से अलग करती थी।

दुर्भाग्य से, अगर दुनिया में कोई एक व्यक्ति था जो सबसे ज़्यादा अपनी ही छोटी सी दुनिया में सिमटा रहता था, तो वह मेरी दादी थीं। वह मुझसे नफ़रत तो नहीं करतीं, बस मेरी बात समझ नहीं पातीं अगर उन्हें पता चलता कि मैं दूसरों की राय को अहमियत देती हूँ, कि मुझे उन लोगों में दिलचस्पी है जिनके अस्तित्व पर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया और जब बालबेक छोड़ने का समय आएगा तो उनके नाम भी उन्हें याद नहीं रहेंगे। मैंने उनसे यह कहने की हिम्मत नहीं की कि अगर इन्हीं लोगों ने उन्हें श्रीमती डी विलेपारिसिस से बात करते देखा होता, तो मुझे बहुत खुशी होती, क्योंकि मुझे लगता था कि मार्क्विज़ होटल में बहुत अहमियत रखती थीं और उनकी दोस्ती से हमें श्रीमती डी स्टरमारिया की नज़र में इज़्ज़त मिल जाती। ऐसा नहीं था कि मेरी दादी की सहेली मुझे किसी भी मायने में कुलीन वर्ग की सदस्य लगती थीं: मैं उनके नाम से इतना परिचित था कि मेरे दिमाग में उस पर विचार करने से पहले ही वह मेरे कानों से परिचित हो चुका था, क्योंकि बचपन में मैंने घर पर बातचीत में

उनका नाम सुना था: जबकि उनकी उपाधि ने इसमें केवल एक विचित्रता का स्पर्श जोड़ा—जैसे कोई असामान्य ईसाई नाम करता है, या जैसे सड़कों के नाम होते हैं, जिनमें से हमें रू लॉर्ड बायरन, आम लोगों से भरी और यहां तक कि गंदी रू रोशेचौआर्ट, या रू ग्रामोंट में रू लियोन्स रेनॉड या रू हिप्पोलिटे लेबास से अधिक कोई भव्य नाम नहीं दिखता। श्रीमती डी विलेपारिसिस मुझे किसी विशेष दुनिया से ताल्लुक रखने वाली व्यक्ति के रूप में नहीं देखती थीं, ठीक वैसे ही जैसे उनके चचेरे भाई मैकमोहन, जिन्हें मैं गणतंत्र के राष्ट्रपति एम. कार्नोट या रास्पेल से स्पष्ट रूप से अलग नहीं कर पाता था, जिनकी तस्वीर फ्रांस्वा ने पायस IX की तस्वीर के साथ खरीदी थी। मेरी दादी माँ का एक सिद्धांत यह था कि घर से दूर रहते समय किसी भी प्रकार का सामाजिक मेलजोल नहीं रखना चाहिए, लोगों से मिलने के लिए समुद्र तट पर नहीं जाना चाहिए, क्योंकि पेरिस में इस तरह की चीजों के लिए बहुत समय होता है। उनका मानना था कि केवल शिष्टाचार निभाने और व्यर्थ की बातचीत में समय बर्बाद हो जाएगा, जबकि यह कीमती समय खुले आसमान के नीचे, लहरों के किनारे बिताना चाहिए। दादी माँ को यह लगता था कि यह विचार सभी का है, और इसी कारण होटल में संयोग से मिले पुराने दोस्तों के बीच वे एक-दूसरे को पहचाने बिना मिलने का नाटक करते थे। मैनेजर से अपनी दोस्त का नाम सुनकर दादी माँ ने बस दूसरी तरफ देखा और मैडम डी विलेपारिसिस को न देखने का नाटक किया। दादी माँ को यह एहसास हुआ कि वे पहचानी नहीं जाना चाहतीं, तो उन्होंने भी एक खालीपन में देखना शुरू कर दिया। वे आगे बढ़ गईं और मैं एक ऐसे अकेलेपन में रह गया, जैसे कोई जहाज़ टूटने के बाद अपनी ओर आता हुआ नाविक, जिसने बिना कोई नाव उतारे ही क्षितिज में गायब हो गया हो।

वह भी भोजन कक्ष में ही खाना खाती थी, लेकिन उसके दूसरे छोर पर।

वह होटल में ठहरे हुए या मिलने आए लोगों में से किसी को भी नहीं जानती थी, यहाँ तक कि एम. डी कैम्ब्रेमर को भी नहीं; वास्तव में, मैंने देखा कि एक दिन जब उन्होंने अपनी पत्नी के साथ बैरिस्टर के साथ दोपहर के भोजन का निमंत्रण स्वीकार किया, तो उन्होंने उसे अभिवादन तक नहीं किया। बैरिस्टर, जो उस रईस को अपने साथ भोजन करते देख इतने सम्मानित महसूस कर रहे थे कि उन्होंने अपने रोज़मर्रा के दोस्तों से दूरी बना ली और पलकें झपकाकर उनका ध्यान इस ऐतिहासिक घटना की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया, लेकिन इतनी चतुराई से कि उनके इशारे को वे पार्टी में शामिल होने का निमंत्रण न समझ सकें।

"खैर, मुझे उम्मीद है कि आपने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने होंगे; मुझे उम्मीद है कि आप खुद को काफी स्मार्ट महसूस कर रहे होंगे," उस शाम मजिस्ट्रेट की पत्नी ने उनका अभिवादन करते हुए कहा।

"समझदारी? मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए?" वकील ने अतिशयोक्तिपूर्ण आश्चर्य में अपनी खुशी छुपाते हुए पूछा। "मेरे मेहमानों की वजह से, आपका मतलब है?" उसने आगे कहा, यह महसूस करते हुए कि अब इस नाटक को जारी रखना असंभव है। "लेकिन दोपहर के भोजन पर कुछ दोस्तों को बुलाने में समझदारी क्या है? आखिर, उन्हें भी कहीं तो खाना खाना ही होगा!"

"लेकिन ये तो कमाल है! ये डी कैम्ब्रेमर हैं, है ना? मैंने इन्हें देखते ही पहचान लिया। ये एक मार्क्विज़ हैं। और बिल्कुल असली भी। महिलाओं के ज़रिए नहीं।"

"ओह, वह बहुत ही सरल स्वभाव की हैं, आकर्षक हैं, उनमें जरा भी रूखापन नहीं है। मुझे लगा था कि आप हमारे साथ शामिल होने आ रही हैं। मैं आपको इशारे कर रहा था... मैं आपका परिचय करवा देता!" उन्होंने

व्यंग्य के साथ अपने प्रस्ताव की अपार उदारता को व्यक्त किया, ठीक वैसे ही जैसे अहसुएरस एस्तेर से कहता है:

मुझे अपने पूरे राज्य का आधा हिस्सा तुम्हें देना होगा!

"नहीं, नहीं, नहीं, नहीं! हम शर्मीले वायलेट की तरह छिपे रहते हैं।"

"लेकिन आप बिल्कुल गलत थे, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ," खतरे का दौर टल जाने के बाद अब और भी साहसी होकर वकील ने जवाब दिया। "वे आपको खाने वाले नहीं थे। मेरा कहना है, क्या हम अपना बेज़िक का छोटा सा खेल नहीं खेलेंगे?"

"क्यों नहीं, बिल्कुल! हमें यह सुझाव देने में डर लग रहा था, अब जब आप मार्क्विसों का मनोरंजन करने लगे हैं।"

"अरे, जाओ तुम; उनमें कुछ खास बात नहीं है। मैं तो कल वहाँ खाना खाने जा रहा हूँ। क्या तुम मेरी जगह जाना चाहोगे? मैं सच कह रहा हूँ। ईमानदारी से कहूँ तो, मुझे यहीं रहना ज़्यादा अच्छा लगेगा।"

"नहीं, नहीं! मुझे तो प्रतिक्रियावादी कहकर न्यायाधीश पद से हटा देना चाहिए," मुख्य न्यायाधीश अपनी ही बात पर हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। "लेकिन आप भी तो फेटेर्न जाते हैं, है ना?" उन्होंने वकील की ओर मुड़ते हुए कहा।

"ओह, मैं रविवार को वहाँ जाता हूँ—एक दरवाजे से अंदर और दूसरे से बाहर। लेकिन लीडर अखबार की तरह मैं उन्हें दोपहर के भोजन के लिए यहाँ नहीं बुलाता।" उस दिन एम. डी स्टरमारिया बालबेक में नहीं थे, जिसका बैरिस्टर को बहुत अफसोस था। लेकिन उन्होंने समय रहते मुख्य वेटर से एक बात कह दी:

"ऐमे, तुम एम. डी स्टरमारिया को बता देना कि यहाँ आने वाले वह इकलौते रईस नहीं हैं। तुमने उस सज्जन को देखा था जो आज दोपहर के

भोजन पर मेरे साथ थे? हाँ? छोटी सी मूंछें, बिल्कुल फौजी जैसे दिख रहे थे। खैर, वह मार्क्विस डी कैम्ब्रेमर थे!"

"क्या सचमुच ऐसा ही था? यह सुनकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ।"

"इससे उसे पता चलेगा कि उपाधि पाने वाला वह अकेला आदमी नहीं है। इससे उसे सबक मिलेगा! उन रईसों को थोड़ा सबक सिखाना कोई बुरी बात नहीं है। मैं कहता हूँ, ऐमे, अगर तुम्हें ठीक न लगे तो उससे कुछ मत कहना: मेरा मतलब है, यह मेरा काम नहीं है; वैसे भी, वे एक-दूसरे को पहले से ही जानते हैं।"

और अगले दिन एम. डी स्टरमारिया, जिन्हें याद था कि उस बैरिस्टर ने एक बार उनके एक मित्र का केस लड़ा था, आए और अपना परिचय दिया।

"हमारे साझा मित्र, डी कैम्ब्रेमर, चाहते थे कि हम मिलें; लेकिन दिन मेल नहीं खा रहे थे; मुझे ठीक से नहीं पता कि क्या गड़बड़ हुई—" वकील हकलाते हुए बोला, जो अधिकांश झूठे लोगों की तरह यह मानता था कि अन्य लोग एक महत्वहीन विवरण की जांच करने की जहमत नहीं उठाते, जबकि वह विवरण (यदि संयोगवश आपको मामले के मामूली तथ्य पता चल जाएं और वे इसका खंडन करें) झूठे व्यक्ति का असली रूप उजागर करने और स्थायी अविश्वास पैदा करने के लिए पर्याप्त हो सकता है।

फिर, हमेशा की तरह, लेकिन अब और भी आसानी से, क्योंकि उसके पिता उसे छोड़कर बैरिस्टर से बात कर रहे थे, मैं मैडम डी स्टरमारिया को निहार रहा था। उनकी भाव-भंगिमाओं की साहसी और हमेशा ही मनमोहक मौलिकता से कम नहीं, जैसे कि जब उन्होंने अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाकर, दोनों हाथों में गिलास उठाकर अपनी फैली हुई बाहों के ऊपर रखा, तो उनकी निगाहों की सूखी लौ तुरंत बुझ गई, उनकी

आवाज में अंतर्निहित, जन्मजात कठोरता, जो उनके अपने लहजे से मुश्किल से छिपी हुई थी, जिसने मेरी दादी को चौंका दिया था; एक प्रकार का पूर्वज जैसा शुरुआती बिंदु, जहाँ वह हर बार, अपनी नजर या शब्दों से, अपने विचार व्यक्त करने में सफल होने पर लौट आती थीं; ये सभी गुण उन्हें देखने वाले के मन को उनके पूर्वजों की ओर ले जाते थे, जिन्होंने उन्हें मानवीय सहानुभूति की कमी, उनकी संवेदनशीलता में खालीपन, और मानवता की वह अल्पता विरासत में दी थी जो हर पल खत्म हो रही थी। लेकिन एक खास नज़र से, जो एक पल के लिए उसकी आँखों के कुएँ में उमड़ी और पल भर में सूख गई, एक ऐसी नज़र जिसमें मैं वह लगभग चापलूसी भरी विनम्रता देख सकता था जो इंद्रिय सुखों की प्रबल चाहत सबसे अभिमानी महिलाओं को भी दे देती है, जो जल्द ही व्यक्तिगत विशिष्टता का केवल एक ही रूप पहचान लेंगी, यानी वह जो कोई भी पुरुष प्राप्त करता है जो उसे उन सुखों का अनुभव करा सकता है, एक अभिनेता, एक कलाबाज भी, जिसके लिए शायद वह एक दिन अपने पति को छोड़ देगी;—उसके पीले गालों पर छाई एक खास गुलाबी रंगत से, गर्म और कामुक, जो विवोन में सफेद जल लिली के दिलों को रंगने वाले रंग की तरह थी, मुझे लगा कि मैं समझ सकता हूँ कि वह खुशी-खुशी मुझे उसके जीवन में उस कविता और रोमांस का स्वाद खोजने की अनुमति दे देती जो उसने ब्रिटनी में बिताया था, एक ऐसा जीवन जिससे, चाहे अत्यधिक परिचितता से हो या जन्मजात श्रेष्ठता से, या अपने परिवार की दरिद्रता या लालच से घृणा से, वह कोई खास लगाव नहीं रखती थी मूल्य, जिसे उसने अपने शरीर में समाहित रखा था। उसे विरासत में मिली इच्छाशक्ति के सीमित भंडार में, जिसने उसके भावों में कमजोरी का भाव भर दिया था, शायद उसे विरोध करने की शक्ति नहीं मिली होती। और, एक थोड़े पुराने और दिखावटी पंख से सजी, भूरे रंग

की फेल्ट टोपी, जिसे वह हमेशा भोजन के समय पहनती थी, ने उसे मेरे लिए और भी आकर्षक बना दिया, इसलिए नहीं कि वह उसके मोती जैसे या गुलाबी रंग के साथ मेल खाती थी, बल्कि इसलिए कि, मुझे उसे गरीब समझने पर मजबूर करके, वह मुझे अपने करीब ले आई। अपने पिता की उपस्थिति के कारण एक पारंपरिक रवैया अपनाने के लिए बाध्य, लेकिन पहले से ही अपनी आँखों के सामने से गुजरने वाले लोगों के बारे में उनके सिद्धांतों से अलग धारणा और वर्गीकरण करने वाली, शायद उसने मुझमें मेरी विनम्र स्थिति नहीं, बल्कि सही लिंग और उम्र देखी। अगर एक दिन एम. डी स्टरमारिया उसे पीछे छोड़कर चले जाते, अगर, सबसे बढ़कर, श्रीमती... डी विलेपारिसिस के हमारे यहाँ आकर बैठने से उनके मन में मेरे बारे में एक ऐसी राय बन गई थी जिससे शायद मुझे उनसे बात करने की हिम्मत मिली हो, शायद तब हम कुछ बातें कर पाते, मिलने का इंतज़ाम कर पाते, और हमारे बीच एक गहरा रिश्ता बन जाता। और पूरे एक महीने तक, जब वह अपने माता-पिता के बिना, अपने खूबसूरत ब्रेटन महल में अकेली रहतीं, तो शायद हम शाम को अकेले घूम पाते, हम दोनों साथ में उस धुंधलके में, जब अंधेरा होते पानी के ऊपर गुलाबी रंग के गुलाब खिलते, और लहरों के प्रहार से क्षत-विक्षत हो चुके ओक के पेड़ दिखाई देते। हम दोनों साथ में उस द्वीप पर घूमते, जो मेरे लिए इतना आकर्षक था क्योंकि उसमें मैडम डी स्टरमारिया का रोज़मर्रा का जीवन समाया हुआ था और उनकी यादों से भरी आँखों में बसा हुआ था। क्योंकि मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मैं वास्तव में उसे तभी पा सकता था जब मैं उन क्षेत्रों का भ्रमण करता जो उसे इतनी सारी यादों में समेटे हुए थे—एक पर्दा जिसे मेरी इच्छा फाड़ना चाहती थी, उन पर्दों में से एक जिसे प्रकृति स्त्री और उसके चाहने वालों के बीच डालती है (उसी इरादे से जैसे हम सभी के लिए, वह प्रजनन की क्रिया को हमारे और हमारे सबसे तीव्र

आनंद के बीच रखती है, और कीड़ों के लिए, अमृत से पहले पराग रखती है जिसे उन्हें अपने साथ ले जाना होता है) ताकि, उसे इस प्रकार अधिक पूर्ण रूप से पाने के भ्रम से धोखा खाकर, वे पहले उन दृश्यों पर कब्जा करने के लिए विवश हों जिनके बीच वह रहती है, और जो उनकी कल्पना के लिए इंद्रिय सुख से कहीं अधिक उपयोगी हैं, फिर भी उस सुख के बिना उन्हें आकर्षित करने की शक्ति नहीं रखते।

लेकिन मुझे मैडम डी स्टरमारिया से अपनी नज़रें हटानी पड़ीं, क्योंकि यह मानते हुए कि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से परिचय करना एक संक्षिप्त, जिज्ञासु क्रिया थी जो अपने आप में पर्याप्त थी, और उसमें छिपी सारी रुचि को जगाने के लिए केवल एक हाथ मिलाना और एक तीक्ष्ण निगाह ही काफी थी, बिना किसी तत्काल बातचीत या बाद के किसी संबंध के, उनके पिता ने बैरिस्टर से विदा ली और उनके सामने बैठने के लिए वापस आ गए, अपने हाथों को ऐसे मल रहे थे जैसे उन्होंने अभी-अभी कोई मूल्यवान वस्तु प्राप्त की हो। जहाँ तक बैरिस्टर की बात है, इस मुलाकात की शुरुआती भावना शांत होने के बाद, अन्य दिनों की तरह, उन्हें हर मिनट मुख्य वेटर को संबोधित करते हुए सुना जा सकता था:

"पर मैं राजा नहीं हूँ, ऐमे; जाओ और राजा की सेवा करो! मैं कहता हूँ, मुखिया, ये छोटी मछलियाँ देखने में बिल्कुल भी बुरी नहीं लगतीं, है ना? हमें ऐमे से कुछ माँगनी चाहिए। ऐमे, वह छोटी मछली जो तुम्हारे पास है, मुझे बहुत अच्छी लग रही है; क्या तुम हमारे लिए कुछ लाओगे, ऐमे, और उसे देने में कंजूसी मत करना?"

वह दिनभर 'ऐमे' नाम दोहराता रहता था, जिसका नतीजा यह होता था कि जब भी कोई मेहमान उसके घर खाने पर आता, तो वह कहता, "देखा, आप तो यहाँ बिल्कुल सहज हैं।" और वह भी 'ऐमे' कहकर अपनी बात दोहराता रहता। यह उसकी झिझक, अशिष्टता और मूर्खता के मिले-जुले

भावों को दर्शाता था, जो कई लोगों में होता है, कि वे अपने साथ बैठे लोगों की कही हुई बातों को हूबहू दोहराना चतुराई और बुद्धिमत्ता समझते हैं। वकील लगातार मुस्कुराते हुए यह नाम दोहराता रहता था, क्योंकि उसे लगता था कि वह एक साथ मुख्य वेटर के साथ अपने अच्छे संबंधों और अपनी उच्च प्रतिष्ठा को प्रदर्शित कर रहा है। और मुख्य वेटर भी जब अपना नाम सुनता, मुस्कुरा उठता, मानो भावुक और साथ ही गर्वित हो, यह दर्शाता था कि वह इस सम्मान को समझ रहा है और इस सुखद बात की सराहना कर रहा है।

उस विशाल होटल के आम तौर पर भरे रहने वाले रेस्तरां में ये भोजन मुझे हमेशा से ही डरावने लगते थे, लेकिन जब कुछ दिनों के लिए इस 'महल' के ही नहीं, बल्कि फ्रांस के चारों कोनों में स्थित सात-आठ और होटलों के मालिक (या शायद वे निदेशक मंडल द्वारा नियुक्त केवल महाप्रबंधक ही रहे हों) वहाँ आए, तो ये डरावने अनुभव और भी बढ़ गए। वे लगातार यात्रा करते हुए, कभी-कभी हर होटल में एक सप्ताह बिताते थे। फिर, भोजन शुरू होने के ठीक बाद, हर शाम भोजन कक्ष के द्वार पर सफेद बालों और लाल नाक वाला एक छोटा सा आदमी दिखाई देता था, जो आश्चर्यजनक रूप से साफ-सुथरा और भावहीन था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह लंदन और मोंटे-कार्लो दोनों जगह यूरोप के प्रमुख होटल मालिकों में से एक के रूप में जाना जाता था। एक बार जब मैं खाने की शुरुआत में कुछ देर के लिए बाहर गया था, तो वापस आते समय मैं उनके पास से गुजरा और उन्होंने मुझे झुककर प्रणाम किया, लेकिन उनके प्रणाम में एक ऐसी शीतलता थी जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह उस व्यक्ति के संकोच का परिणाम था जो अपनी भूमिका को कभी नहीं भूल सकता था, या फिर एक मामूली ग्राहक के प्रति उनकी अवमानना का। जिन लोगों का महत्व काफी अधिक था, उनके सामने प्रबंध निदेशक उतनी ही शीतलता

से, बल्कि और भी गहराई से, झुकते थे, अपनी पलकें इस आदर से झुका लेते थे मानो मानो उनका सामना किसी अंत्येष्टि में मृतक के पिता या पवित्र संस्कार से हो रहा हो। इन ठंडे और कभी-कभार किए गए अभिवादनों के अलावा, उन्होंने जरा भी हरकत नहीं की, मानो यह दिखाना चाहते हों कि उनकी चमकती आंखें, जो मानो उनके सिर से बाहर निकल रही हों, सब कुछ देख रही हैं, सब कुछ नियंत्रित कर रही हैं, और हमें होटल के खाने में हर छोटी से छोटी बात में पूर्णता और एक समग्र सामंजस्य का आश्वासन दे रही हैं। उन्हें स्पष्ट रूप से ऐसा महसूस हो रहा था कि वे किसी नाटक के निर्माता या ऑर्केस्ट्रा के संचालक से कहीं अधिक, सर्वोच्च कमान संभाल रहे एक सेनापति से कम नहीं हैं। उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि गहन चिंतन से ही उन्हें यह विश्वास हो जाएगा कि सब कुछ तैयार है, कोई ऐसी गलती नहीं हुई है जिससे विपत्ति आ सकती है, यानी उन्हें पूरी जिम्मेदारी सौंपी जा सकेगी। इसलिए उन्होंने न केवल किसी भी प्रकार का हावभाव नहीं किया, बल्कि अपनी आँखों को भी नहीं हिलाया, जो अपनी तीव्र दृष्टि से स्थिर होकर, चल रही हर चीज़ को देख और निर्देशित कर रही थीं। मुझे ऐसा लगा कि मेरी चम्मच की हरकत भी उनकी नज़रों से नहीं बच रही थी, और अगर वे सूप के बाद गायब हो जाते, तो पूरे भोजन के दौरान उनके द्वारा की गई समीक्षा मेरी भूख मिटा देती। उनका अपना भोजन अत्यंत अच्छा था, जैसा कि दोपहर के भोजन के समय देखा जा सकता था, जिसे उन्होंने होटल के एक सामान्य अतिथि की तरह लिया, उसी मेज पर जिस पर कोई भी सार्वजनिक भोजन कक्ष में बैठ सकता था। उनकी मेज में केवल यही एक विशेषता थी कि जब वे भोजन कर रहे थे, तो उनके बगल में दूसरा प्रबंधक, जो वहाँ का स्थायी प्रबंधक था, लगातार बातचीत करने के लिए खड़ा रहा। इस प्रबंध निदेशक के अधीन होने के कारण वह उस व्यक्ति

को प्रसन्न करने के लिए हमेशा उत्सुक रहता था जिससे वह निरंतर भयभीत रहता था। इन दोपहर के भोजन के दौरान मेरा उससे भय कुछ कम हो गया, क्योंकि आगंतुकों की भीड़ में खो जाने के कारण वह एक ऐसे सेनापति की तरह व्यवहार करता था जो किसी रेस्तरां में निजी सैनिकों के बीच बैठा हो और उन पर ध्यान न दे रहा हो। फिर भी, जब कई सेवकों के बीच से कुली ने मुझे बताया: "वह कल सुबह दिनार्ड के लिए रवाना हो रहे हैं। फिर वे बियारित्ज़ जाएंगे और उसके बाद कान्स," तो मैंने राहत की सांस ली।

होटल में मेरा जीवन न केवल इसलिए नीरस हो गया था क्योंकि वहाँ मेरा कोई दोस्त नहीं था, बल्कि इसलिए भी असहज था क्योंकि फ्रांस्वा ने बहुत सारे दोस्त बना लिए थे। ऐसा लग सकता है कि उन्होंने कई मामलों में हमारे लिए चीज़ें आसान कर दी होंगी। लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं था। अगर आम लोग बड़ी मुश्किल से फ्रांस्वा द्वारा परिचित माने जाने में कामयाब भी हो जाते थे, और जब तक वे फ्रांस्वा के प्रति अत्यंत विनम्रता नहीं दिखाते, तब तक वे बिल्कुल भी कामयाब नहीं हो सकते थे, तो दूसरी ओर, एक बार उस मुकाम पर पहुँच जाने के बाद, वही लोग मायने रखते थे। उनके पुराने तौर-तरीकों ने उन्हें सिखाया था कि वे अपने मालिकों के दोस्तों से किसी भी तरह से बंधी नहीं हैं, और अगर वे व्यस्त हों, तो मेरी दादी से मिलने आई किसी महिला के सामने बिना किसी औपचारिकता के दरवाज़ा बंद कर सकती हैं। लेकिन अपने निजी जान-पहचान वालों के प्रति, यानी निचले तबके के उन चुनिंदा लोगों के प्रति, जिनके साथ वे अटूट घनिष्ठता रखती थीं, उनके व्यवहार अत्यंत सूक्ष्म और कठोर नियमों द्वारा नियंत्रित होते थे। इस प्रकार, कॉफ़ी शॉप में काम करने वाले उस आदमी और एक बेल्जियम महिला के लिए कपड़े सिलने वाली एक छोटी नौकरानी से जान-पहचान होने के बाद, फ्रांस्वा अब

दोपहर के भोजन के तुरंत बाद दादी के कपड़े तैयार करने के लिए ऊपर नहीं आती थी, बल्कि एक घंटे बाद आती थी। ऐसा इसलिए होता था क्योंकि कॉफ़ी बेचने वाला उसे अपनी दुकान में एक कप कॉफ़ी या हर्बल चाय पिलाना चाहता था, या नौकरानी ने उसे सिलाई करते देखने के लिए आमंत्रित किया होता था, और उनमें से किसी को भी मना करना असंभव था, और यही एक ऐसी बात थी जो कभी नहीं की जाती थी। इसके अलावा, उस छोटी सिलाई करने वाली नौकरानी पर विशेष ध्यान दिया जाता था, जो अनाथ थी और अजनबियों द्वारा पाली-पोसी गई थी, जिनके पास वह अभी भी कभी-कभी कुछ दिनों की छुट्टी के लिए जाती थी। उसकी असामान्य स्थिति ने फ्रांस्वा के मन में दया और करुणा दोनों जगाई। जिसके पास परिवार था, माता-पिता से मिला एक छोटा सा घर था, और एक खेत था जिसमें उसका भाई अपनी गायें रखता था, वह उस बेघर प्राणी को अपने बराबर कैसे मान सकती थी? और चूंकि यह लड़की स्वर्गारोहण दिवस पर अपने उपकारकों से मिलने की उम्मीद कर रही थी, इसलिए फ्रांस्वा बार-बार दोहराती रही: "वह मुझे हंसाती है! वह कहती है, 'मुझे उम्मीद है कि स्वर्गारोहण दिवस पर मैं घर जाऊंगी।' 'घर!' वह कहती है! बात सिर्फ इतनी नहीं है कि वह उसका अपना घर नहीं है, बल्कि वे लोग हैं जिन्होंने उसे कहीं से भी अपने घर में जगह दी है, और वह बच्ची 'घर' ऐसे कहती है जैसे वह सचमुच उसका घर हो। बेचारी! उसकी कितनी दयनीय स्थिति होगी, उसे पता ही नहीं कि घर होना क्या होता है।" फिर भी, अगर फ्रांस्वा केवल उन नौकरानियों से ही मेलजोल रखतीं जिन्हें दूसरे मेहमानों ने होटल में लाया था और जो उनके साथ सेवा कक्ष में खाना खाती थीं और उनकी भव्य लेस वाली टोपी और सुंदर चेहरे को देखकर शायद उन्हें किसी कुलीन परिवार की महिला समझ बैठी थीं, जो अपनी तंगी या किसी निजी लगाव के कारण मेरी दादी की साथी बनकर सेवा

कर रही थीं, अगर संक्षेप में कहें तो फ्रांस्वा केवल उन लोगों को जानतीं जो होटल से संबंधित नहीं थे, तो कोई बड़ा नुकसान नहीं होता, क्योंकि वह उन्हें हमारी सेवा करने से रोक नहीं सकती थीं, इसका सीधा सा कारण यह था कि किसी भी परिस्थिति में, उनकी जानकारी के बिना भी, उनके लिए हमारी सेवा करना संभव नहीं होता। लेकिन उन्होंने एक शराब परोसने वाले से, रसोई में काम करने वाले एक व्यक्ति से और हमारे बरामदे की मुख्य नौकरानी से भी संबंध बना लिए थे। और इसका हमारे रोजमर्रा के जीवन पर यह असर हुआ कि फ्रांस्वा, जो अपने आगमन के दिन, जब वह किसी को जानती भी नहीं थी, छोटी-छोटी बातों पर सारी घंटियाँ बजा देती थी, उस समय जब मेरी दादी और मैं घंटी बजाने की हिम्मत भी नहीं करते थे, और अगर हम उसे थोड़ा समझाते तो वह जवाब देती: "खैर, हम इसके लिए काफी भुगतान कर रहे हैं, है ना?" मानो भुगतान उसे खुद करना पड़े; आजकल, जब से उसने रसोई के एक व्यक्ति से दोस्ती कर ली थी, जो हमें भविष्य में आराम का संकेत लग रहा था, अगर मेरी दादी या मैं घर में काम करने से हिचकिचाते, तो फ्रांस्वा, सामान्य समय पर भी, घंटी बजाने की हिम्मत नहीं करती थी; वह हमें यकीन दिलाती थी कि इससे उन्हें बुरा लगेगा क्योंकि उन्हें भट्टी फिर से जलानी पड़ेगी, या इससे नौकरों के खाने में खलल पड़ेगा और वे नाराज़ हो जाएँगे। और उसने एक ऐसे सूत्र के साथ अपनी बात समाप्त की, जो भले ही अस्पष्ट ढंग से कहा गया हो, फिर भी स्पष्ट था और हमें साफ तौर पर गलत साबित कर दिया: "असल बात यह है कि..." हमने इस बात पर ज़ोर नहीं दिया, कहीं ऐसा न हो कि हम पर एक और, कहीं अधिक गंभीर मुसीबत आ जाए: "यह एक मामला है...!" तो बात यह थी कि अब हमें गर्म पानी नहीं मिल सकता था क्योंकि फ्रांस्वा उस आदमी की दोस्त बन गई थी जिसे पानी गर्म करना था।

अंत में, हम भी एक दूसरे से जुड़ गए, मेरी दादी के माध्यम से, क्योंकि एक सुबह मेरी दादी और श्रीमती डी विलेपारिसिस एक दरवाजे पर टकरा गईं और उन्हें एक दूसरे से बात करनी पड़ी। पहले तो उन्होंने आश्चर्य और झिझक के भावों का आदान-प्रदान किया, पीछे हटने और अनिश्चितता की हरकतें कीं, और अंत में खुशी और अभिवादन के शब्द कहे, जैसा कि मोलियर के कुछ नाटकों में होता है, जहां मंच के विपरीत किनारों से, कुछ ही फीट की दूरी पर, लंबे एकालाप कर रहे दो अभिनेता एक दूसरे को नहीं देख पाए होते हैं, और फिर अचानक एक दूसरे को देख लेते हैं, अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पाते, अपनी बातें रोक देते हैं और अंत में एक दूसरे से बात करते हैं (इस बीच कोरस संवाद जारी रखता है) और एक दूसरे की बाहों में गिर जाते हैं। डी विलेपारिसिस बहुत ही समझदार थीं और शुरुआती अभिवादन के बाद ऐसा जताने लगीं जैसे दादी को अकेला छोड़ रही हों, लेकिन दादी ने दोपहर के भोजन तक उनसे बात करने के लिए रुकने पर ज़ोर दिया। वह यह जानने के लिए उत्सुक थीं कि उनकी सहेली को हमसे पहले उनके पत्र कैसे मिल जाते थे और उन्हें इतना बढ़िया ग्रिल्ड खाना कैसे मिलता था (क्योंकि श्रीमती डी विलेपारिसिस, जो खाने की बहुत शौकीन थीं, होटल के रसोईघर के बारे में बहुत ही खराब राय रखती थीं, जहाँ हमें ऐसा खाना परोसा जाता था जिसे दादी, श्रीमती डी सेविग्ने के शब्दों को दोहराते हुए, "इतना शानदार कि भूख से मर जाओ" कहती थीं)। और मार्क्विज़ ने हर दिन, अपना खाना तैयार होने तक, भोजन कक्ष में हमारी मेज पर थोड़ी देर बैठने की आदत बना ली थी, और ज़ोर देकर कहती थीं कि हम अपनी कुर्सियों से न उठें और न ही किसी तरह से खुद को परेशान करें। दोपहर का भोजन समाप्त करने के बाद, हम अक्सर कमरे में कुछ देर रुकते थे, उससे बात करने के लिए, उस घिनौने क्षण में जब चाकू मेज़पोश पर बिखरे पड़े होते

थे और नैपकिन भी मुड़े हुए होते थे। जहाँ तक मेरा सवाल है, बालबेक का आनंद लेने के लिए, मैं इस विचार को बनाए रखने के लिए कि मैं पृथ्वी के सबसे दूर के छोर पर हूँ, मैंने खुद को दूर देखने के लिए विवश किया, केवल समुद्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, उसमें बॉडेलेयर द्वारा वर्णित प्रभावों को खोजने के लिए और अपनी नज़र केवल उन दिनों में हमारी मेज पर पड़ने देने के लिए जब उस पर कोई विशाल मछली, कोई समुद्री राक्षस रखा होता था, जो चाकू और कांटों के विपरीत, उन आदिम युगों का समकालीन था जिनमें समुद्र ने पहली बार जीवन से भर दिया था, सिमेरियनों के समय में, एक ऐसी मछली जिसका शरीर अपनी असंख्य कशेरुकाओं, अपनी नीली और लाल नसों के साथ, प्रकृति द्वारा निर्मित किया गया था, लेकिन एक वास्तुशिल्प योजना के अनुसार, गहरे समुद्र के एक बहुरंगी गिरजाघर की तरह।

एक नाई जब देखता है कि उसका अधिकारी, जिसकी वह विशेष आदर और सावधानी से दाढ़ी बनाता है, दुकान में अभी-अभी आए ग्राहक को पहचान लेता है और उससे थोड़ी देर रुककर बात करता है, तो वह इस विचार से प्रसन्न होता है कि ये दोनों एक ही सामाजिक वर्ग के हैं। साबुन का कटोरा लाने जाते समय वह मुस्कुराए बिना नहीं रह पाता, क्योंकि वह जानता है कि उसकी दुकान में, एक साधारण नाई की दुकान की दिनचर्या के साथ-साथ, सामाजिक, बल्कि कहें तो कुलीन सुख भी जुड़ रहे हैं। ठीक इसी प्रकार, ऐमे ने देखा कि श्रीमती डी विलेपारिसिस ने हम पुराने दोस्तों को पा लिया है, और वह हमारे लिए साबुन के कटोरे लाने गया, ठीक उसी मुस्कान के साथ, गर्व से भरी विनम्रता और समझदारी से, जैसे कोई मेज़बान जानती है कि अपने मेहमानों को कब अकेला छोड़ देना चाहिए। उसने एक प्रसन्न और स्नेही पिता का भी चित्रण किया, जो बिना दखल दिए, उस खुशहाल जोड़े को देख रहा है जिसने उसकी

मेहमाननवाज़ी में शादी का वादा किया है। इसके अलावा, ऐमे के लिए किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का नाम लेना ही काफी था, वह प्रसन्न हो जाती थी, फ्रांस्वा के विपरीत, जिसके सामने आप किसी काउंट फलां-फलां का नाम भी नहीं ले सकते थे, क्योंकि उसका चेहरा उतर आता था और उसकी वाणी रूखी और तीखी हो जाती थी। इन सब बातों से यह स्पष्ट होता था कि वह ऐमे से कम नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक कुलीन वर्ग की पूजा करती थी। लेकिन फ्रांस्वा में वह गुण था जिसे वह दूसरों में सबसे बड़ी खामी मानती थी; वह अभिमानी थी। वह ऐमे के समान मिलनसार और हंसमुख स्वभाव की नहीं थी। ऐसे लोग जब आप उन्हें कोई ऐसी खबर सुनाते हैं जो कमोबेश सनसनीखेज हो, लेकिन कम से कम नई हो और अखबारों में न छपी हो, तो वे तीव्र प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और उसे प्रदर्शित करते हैं। फ्रांस्वा ने आश्चर्यचकित होने से इनकार कर दिया। आप उसके सामने यह घोषणा कर सकते थे कि आर्चड्यूक रुडोल्फ—हालांकि उसे उसके अस्तित्व पर जरा भी संदेह नहीं था—जैसा कि आम तौर पर माना जाता था, मरा नहीं है, बल्कि 'जीवित और स्वस्थ' है; वह केवल 'हां' कहती, मानो उसे यह बात हमेशा से पता हो। लेकिन शायद ऐसा इसलिए हुआ होगा कि अगर हमारे ही मुँह से, हम जिन्हें वह इतने विनम्रता से अपना स्वामी कहती थी, जिन्होंने उसे लगभग वश में कर लिया था, किसी कुलीन व्यक्ति का नाम सुनकर वह गुस्से से चौंकने से खुद को रोक नहीं पाती थी, तो इसका कारण यह था कि जिस परिवार से वह आई थी, वह अपने गाँव में एक सुखी और स्वतंत्र स्थिति में था, और उस सम्मान को केवल उन्हीं कुलीनों से ही खतरा था, जिनके घरों में ऐमे अपने बचपन से ही नौकर के रूप में रहता था, या कम से कम उनकी दया से पाला-पोसा जाता था। इसलिए, श्रीमती डी विलेपारिसिस को सबसे पहले फ्रांस्वा की कुलीनता के लिए क्षमा मांगनी चाहिए।

लेकिन (कम से कम फ्रांस में) यही तो हमारे महान सज्जनों और महिलाओं की प्रतिभा है, वास्तव में उनका एकमात्र पेशा है। फ्रांकोइस, नौकरों की आम प्रवृत्ति का अनुसरण करते हुए, जो अपने मालिकों की अन्य लोगों से बातचीत से लगातार अधूरी बातें सुनते रहते हैं और उनसे गलत निष्कर्ष निकालते हैं, जैसा कि मनुष्य आमतौर पर जानवरों की आदतों के बारे में करते हैं, लगातार यह पता लगा रही थी कि किसी ने हमें 'निराश' किया है। इस निष्कर्ष पर वह आसानी से पहुँच जाती थी, शायद हमारे प्रति अपने अत्यधिक प्रेम के कारण नहीं, बल्कि हमें अप्रिय लगने में उसे मिलने वाले आनंद के कारण। लेकिन एक बार जब फ्रांकोइस ने बिना किसी संदेह के यह जान लिया कि श्रीमती डी विलेपारिसिस हम पर और खुद पर भी कितना ध्यान देती हैं, तो उसने उन्हें मार्क्विज़ होने के लिए माफ कर दिया, और चूंकि वह हमेशा से ही मार्क्विज़ होने के कारण उन पर गर्व करती रही थी, इसलिए उसने उन्हें हमारे सभी अन्य दोस्तों से अधिक महत्व दिया। यह भी कहना होगा कि किसी और ने हमारे प्रति इतना निरंतर स्नेह दिखाने का प्रयास नहीं किया। जब भी मेरी दादी श्रीमती डी विलेपारिसिस द्वारा लिखी गई किसी किताब पर टिप्पणी करतीं, तो फ्रांकोइस उन्हें हमारे सभी दोस्तों से अधिक महत्व देतीं। डी विलेपारिसिस पढ़ रही थीं, या उन्होंने कहा कि वह उन फलों की प्रशंसा कर रही थीं जो किसी ने अभी-अभी हमारे दोस्त को भेजे थे, एक घंटे के भीतर नौकर हमारे कमरों में किताब या फल लेकर आ जाता था। और अगली बार जब हम उन्हें देखते, तो हमारे धन्यवाद के जवाब में, वह केवल इतना ही कहतीं, मानो अपने उपहार की कमी के लिए कोई बहाना ढूंढ रही हों, कि इसका कोई विशेष उपयोग कैसे किया जा सकता है: "यह कोई खास बात नहीं है, लेकिन यहाँ अखबार बहुत देर से आते हैं, पढ़ने के लिए कुछ तो होना ही चाहिए।" या, "समुद्र किनारे ऐसे फल

रखना हमेशा बेहतर होता है जिनके बारे में आप पूरी तरह से निश्चित हो सकें।"—"लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैंने आपको कभी सीप खाते देखा है," उन्होंने हमसे कहा, जिससे उस क्षण मेरे मन में व्याप्त घृणा और बढ़ गई, क्योंकि सीप का जीवित मांस मुझे बालबेक के समुद्र तट पर फंसी जेलीफ़िश की चिपचिपाहट से भी अधिक घृणित लगता था; "यहाँ तो ये बहुत स्वादिष्ट हैं! अरे, मैं अपनी नौकरानी से कह दूँ कि जब वो मेरे पत्र लेने जाए तो तुम्हारे पत्र भी ले आए। क्या, तुम्हारी बेटी तो रोज़ लिखती है? पर तुम दोनों एक-दूसरे से बात करने के लिए कुछ ढूंढ ही नहीं पाती?" मेरी दादी चुप रहीं, लेकिन शायद उनकी चुप्पी तिरस्कार के कारण थी, क्योंकि वो माँ को लिखते समय श्रीमती डी सेविग्ने के शब्दों को दोहराती थीं: "जैसे ही मुझे एक पत्र मिलता है, मुझे तुरंत दूसरा चाहिए होता है; जब तक वह नहीं आता, मैं चैन से साँस नहीं ले सकती। बहुत कम लोग हैं जो मेरी बात समझ पाते हैं।" और मुझे डर था कि कहीं वो श्रीमती डी विलेपारिसिस के बारे में भी यही न कह दें: "मैं चुने हुए लोगों को ही चुनती हूँ, बाकी से दूर रहती हूँ।" फिर उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस द्वारा एक दिन पहले भेजे गए फलों की प्रशंसा करना शुरू कर दिया। और यह सचमुच इतना बढ़िया था कि मैनेजर ने, हमारे द्वारा उसके आधिकारिक उपहारों की उपेक्षा से उत्पन्न ईर्ष्या के बावजूद, मुझसे कहा: "मैं तुम्हारी तरह ही हूँ; मुझे बाकी सभी मिठाइयों से ज़्यादा फल पसंद हैं।" मेरी दादी ने अपनी सहेली से कहा कि उन्हें ये फल और भी ज़्यादा पसंद आए क्योंकि होटल में मिलने वाले फल आम तौर पर बहुत खराब होते थे। उन्होंने आगे कहा, "मैं मैडम डी सेविग्ने की तरह यह नहीं कह सकती कि अगर हमें अचानक खराब फल खाने का मन करे तो हमें उसे पेरिस से मंगवाना पड़ेगा।" "अरे हाँ, बिल्कुल, आप मैडम डी सेविग्ने को पढ़ती हैं। मैंने आपको उनके पत्रों के साथ उसी दिन देखा था जिस

दिन आप आई थीं।" (वह भूल गई थीं कि उन्होंने होटल में मेरी दादी को तब तक आधिकारिक तौर पर नहीं देखा था जब तक कि उनकी मुलाकात दरवाज़े पर नहीं हुई।) "क्या आपको उनकी बेटी के बारे में लगातार चिंता कुछ ज़्यादा ही नहीं लगती? वह इसका ज़िक्र इतनी बार करती हैं कि यह सच नहीं लगता। वह स्वाभाविक नहीं हैं।" मेरी दादी को लगा कि कोई भी चर्चा व्यर्थ होगी, और ताकि उन्हें उन चीजों के बारे में किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने के लिए मजबूर न होना पड़े जो उन्हें समझ नहीं सकता, उन्होंने अपने बैग में श्रीमती डी ब्यूसेर्जेंट के संस्मरणों को छिपा लिया।

अगर वह उस समय (जिसे फ्रांस्वा 'दोपहर' कहती थी) फ्रांस्वा से मिलती, जब वह अपनी सुंदर टोपी पहने और पूरे सम्मान के साथ नीचे 'प्रार्थना में भाग लेने' आ रही होती, तो श्रीमती विलेपारिसिस उसे रोककर हमारा हालचाल पूछतीं। और फ्रांस्वा, जब हमें मार्क्विज़ का संदेश दे रही थीं: "उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम उन्हें शुभ दिन कहना मत भूलना,' उन्होंने कहा," तो उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस की आवाज़ की नकल की, जिनके शब्दों को वह अक्षरशः उद्धृत करने का दिखावा कर रही थीं, जबकि वास्तव में वह उन्हें उसी तरह विकृत कर रही थीं जैसे प्लेटो सुकरात के शब्दों को या संत जॉन यीशु के शब्दों को विकृत करते हैं। स्वाभाविक रूप से, फ्रांस्वा इन बातों से बहुत प्रभावित हुईं। लेकिन उन्हें मेरी दादी पर विश्वास नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने सोचा कि वह अपने वर्ग के हित में झूठ बोल रही होंगी (अमीर लोग हमेशा एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए एकजुट होते हैं) जब उन्होंने हमें आश्वासन दिया कि श्रीमती... डी विलेपारिसिस युवावस्था में बेहद खूबसूरत थीं। यह सच था कि उनकी इस खूबसूरती का अब केवल एक हल्का सा अंश ही बचा था, जिसे कोई भी —जब तक कि वह फ्रांकोइस से कहीं अधिक कुशल कलाकार न हो— पुनर्स्थापित नहीं कर सकता था। क्योंकि किसी वृद्ध महिला की सुंदरता

को समझने के लिए न केवल उनके चेहरे की हर रेखा का अध्ययन करना आवश्यक है, बल्कि उसकी हर रेखा का विश्लेषण भी करना पड़ता है।

"मुझे कभी न कभी उससे पूछना ही होगा कि क्या मैं सही तो नहीं हूँ, यह सोचकर कि गुएरमांटे परिवार से कोई संबंध है?" मेरी दादी ने मेरी नाराज़गी के बीच कहा। भला मुझसे यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि मैं उन दो नामों के बीच एक ही मूल को मान लूँ, जो मेरे मन में एक अनुभव के नीच और शर्मनाक द्वार से, और दूसरे कल्पना के सुनहरे द्वार से, प्रवेश कर चुके थे?

पिछले कुछ दिनों में हमने कई बार एक भव्य गाड़ी में प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग को गुजरते देखा था। वह लंबी, सांवली, आकर्षक और उभरी हुई नाक वाली थीं। उनकी गाड़ी कुछ हफ्तों के लिए हमारे पड़ोस में ठहरी हुई थीं। उनकी गाड़ी होटल के बाहर रुकती, एक नौकर अंदर आकर मैनेजर से बात करता, फिर गाड़ी में वापस जाता और फलों से भरी एक अद्भुत टोकरी लेकर लौटता (जो एक ही टोकरी में, खाड़ी की तरह, अलग-अलग मौसमों के फलों का मिश्रण थी)। साथ में एक कार्ड भी था जिस पर पेंसिल से कुछ शब्द लिखे थे: "ला प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग"। भला ये फल भला किसी शाही यात्री के लिए तो नहीं थे जो यहाँ गुप्त रूप से ठहरी हो? ये नीले-हरे बेर, जो उस समय समुद्र की तरह चमकदार और गोल थे, पतझड़ के सुहावने दिन की तरह एक सूखी डंडी पर गुच्छे में लगे पारदर्शी अंगूर, और स्वर्गिक गहरे नीले रंग के नाशपाती। भला प्रिंसेस मेरी दादी की सहेली से मिलने तो नहीं आई होंगी। फिर भी अगली शाम को श्रीमती डी विलेपारिसिस ने हमें अंगूरों का गुच्छा भेजा, ठंडा, रसीला, सुनहरा; बेर और नाशपाती भी, जिन्हें हम याद करते थे, हालांकि बेर हमारे भोजन के समय समुद्र की तरह बदल गए थे, उनका रंग हल्का बैंगनी हो गया था, और नाशपाती की गहरे नीले रंग की सतह पर कुछ

गुलाबी बादलों की आकृतियाँ तैर रही थीं। कुछ दिनों बाद हम श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिले जब हम उस सिम्फनी संगीत कार्यक्रम से लौट रहे थे जो हर सुबह समुद्र तट पर होता था। मुझे विश्वास था कि जिस संगीत को मैं सुन रहा था (लोहेनग्रिन का प्रील्यूड, टैनहॉसर का ओवरचर और इसी तरह के अन्य संगीत) वह सर्वोच्च सत्य को व्यक्त करता है, मैं स्वयं को यथासंभव ऊपर उठाने का प्रयास कर रहा था ताकि उन्हें समझ सकूँ, मैं उन्हें समझने के लिए अपने भीतर से वह सब कुछ निकाल रहा था और उन्हें दे रहा था जो उस समय मेरे अपने स्वभाव में सबसे अच्छा और सबसे गहरा था।

खैर, जब हम कॉन्सर्ट से बाहर निकले और होटल लौटते समय, सड़क के किनारे थोड़ी देर के लिए रुके, मेरी दादी और मैं, श्रीमती डी विलेपारिसिस से कुछ बातें करने के लिए। उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने हमारे लिए होटल में कुछ क्रोक-मोंसियर और क्रीम वाले अंडे मंगवाए हैं। तभी मैंने दूर से, हमारी ओर आती हुई, लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी को देखा। वह एक छाते पर आधा झुकी हुई थीं, इस तरह कि उनके लंबे और खूबसूरत शरीर को एक हल्का सा झुकाव मिल रहा था, मानो वह उस अरबी डिज़ाइन को दर्शा रही हों जो साम्राज्य के अधीन सुंदर महिलाओं को प्रिय थी, और जो झुके हुए कंधों, धनुषाकार पीठ, अवतल कूल्हों और मुड़े हुए अंगों के साथ अपने शरीर को इस तरह कोमल बना लेती थीं जैसे कोई रेशमी दुपट्टा किसी अदृश्य तने की कठोरता के चारों ओर तैर रहा हो, जिसे तिरछे रूप से उनके बीच से गुजारा गया हो। वह लगभग हर सुबह समुद्र तट पर टहलने के लिए निकलती थी, ठीक उसी समय जब बाकी सभी लोग नहाने के बाद दोपहर के भोजन के लिए घर लौट रहे होते थे। चूंकि उसका दोपहर का भोजन डेढ़ बजे होता था, इसलिए वह अपने विला में तब तक नहीं लौटती थी जब तक कि भूखे नहाने वाले लोग चिलचिलाती धूप से

भरे समुद्र तट को वीरान नहीं छोड़ देते थे। श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मेरी दादी का परिचय कराया और मेरा भी परिचय कराना चाहती थीं, लेकिन पहले उन्हें मेरा नाम पूछना पड़ा, जो उन्हें याद नहीं था। शायद उन्हें मेरा नाम कभी पता ही नहीं था, या अगर पता भी था तो वह वर्षों पहले भूल गई होंगी कि मेरी दादी ने अपनी बेटी की शादी किससे की थी। जब उन्होंने मेरा नाम सुना, तो श्रीमती डी विलेपारिसिस काफी प्रभावित हुईं। इसी बीच, लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी ने हमें अपना हाथ दिया और मार्क्विज़ से बातचीत करते हुए बीच-बीच में मेरी दादी और मुझे प्यार भरी नज़रों से देखती रहीं, उस मासूम से प्यार भरे चुंबन के साथ जो हम किसी बच्चे को उसकी 'नाना' कहते समय अपनी मुस्कान में शामिल करते हैं। दरअसल, हमसे ऊंचे दर्जे की न दिखने की चिंता में, शायद उन्होंने हमारे बीच की दूरी का गलत अनुमान लगा लिया था। इसी वजह से उनकी आँखों में इतनी करुणा झलक रही थी कि मुझे वह पल आता हुआ दिखाई दिया जब वह अपना हाथ बढ़ाकर हमें सहलाएंगी, मानो हम दो प्यारे जानवर हों और बगीचे में अपने पिंजरे की सलाखों से झाँककर उन्हें अपना सिर दिखा रहे हों। और, संयोगवश, पिंजरे में बंद जानवरों और बोइस डी बोलोग्ने के इस विचार की पुष्टि होते-होते रह गई। यह दिन का वह समय था जब समुद्र तट पर केक, मिठाई और बिस्कुट बेचने वाले शोरगुल मचाते हुए घूमते-फिरते विक्रेताओं की भीड़ लगी रहती है। हमारे प्रति अपना स्नेह दिखाने के लिए क्या करें, यह न जानते हुए, राजकुमारी ने अगले विक्रेता को आवाज़ दी; उसके पास बत्तखों को खिलाने के लिए रखे जाने वाले एक राई केक के अलावा कुछ नहीं बचा था। राजकुमारी ने उसे लिया और मुझसे कहा: "तुम्हारी दादी के लिए।" फिर भी उसने मुझे ही वह चीज़ देते हुए दोस्ताना मुस्कान के साथ कहा, "तुम इसे खुद उसे दे दोगे!" यह सोचकर कि अगर मेरे और जानवरों के बीच कोई मध्यस्थ न हो तो मुझे

और भी ज़्यादा आनंद मिलेगा। दूसरे विक्रेता भी आ गए; उसने मेरी जेबों में उनके पास जो कुछ भी था, पैकेटों में बंधा हुआ, कुम्हार, स्पंज केक, चीनी की छड़ें, सब भर दिया। उसने मुझसे कहा, "तुम कुछ खुद खा लेना और कुछ अपनी दादी को दे देना।" और उसने लाल साटन के कपड़े पहने उस छोटे नीग्रो सेवक से विक्रेताओं को भुगतान करवाया, जो हर जगह उसके पीछे-पीछे चलता था और समुद्र तट पर नौ दिनों तक एक अजूबा बना रहा। फिर उसने श्रीमती डी विलेपारिसिस को अलविदा कहा और हमारी ओर हाथ बढ़ाया, मानो वह हमारे साथ भी वैसा ही व्यवहार करे जैसा उसने अपनी सहेली के साथ किया था, मानो हम उसे जानते हों, और वह हमारे करीब आना चाहती थी। लेकिन इस बार उन्होंने सृष्टि के पैमाने पर हमारा स्तर उतना नीचा नहीं समझा होगा, क्योंकि राजकुमारी ने मेरी दादी को अपनी और हमारी समानता का संकेत उस कोमल और मातृत्वपूर्ण मुस्कान से दिया, जो एक स्त्री किसी छोटे लड़के को विदाई देते समय देती है, मानो किसी बड़े व्यक्ति को दे रही हो। विकास के एक चमत्कारी चरण से, मेरी दादी अब बत्तख या हिरण नहीं थीं, बल्कि वह बन चुकी थीं जिन्हें अंग्रेज़ी भाषी श्रीमती स्वान 'बच्चा' कहतीं। अंत में, हम सभी से विदा लेकर, राजकुमारी धूप सेंकते हुए 'सामने' की ओर टहलने लगीं, अपने शानदार शरीर को घुमाते हुए, जो किसी छड़ी के चारों ओर लिपटे हुए साँप की तरह, नीले रंग की सफेद छतरी से लिपटा हुआ था, जिसे श्रीमती डी लक्ज़मबर्ग ने अपने हाथ में बंद रखा हुआ था। वह मेरी पहली राजसी हस्ती थीं—मैं उन्हें अपनी पहली इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि सच कहें तो राजकुमारी मैथिल्डे को नहीं गिना जा सकता। दूसरी, जैसा कि हम आगे देखेंगे, अपने स्नेह से मुझे कम आश्चर्यचकित नहीं करने वाली थीं। हमारे महान कुलीन लोग, जो आम लोगों और राजाओं के बीच दयालु मध्यस्थ होते हैं, हमसे किस तरह मित्रता कर सकते हैं,

इसका एक तरीका मुझे अगले दिन पता चला जब श्रीमती डी विलेपारिसिस ने बताया: "उन्हें आप बहुत आकर्षक लगे। वह बहुत ही समझदार और दयालु हृदय वाली महिला हैं। कई रानियों और आम लोगों की तरह नहीं! उनमें सचमुच गुण हैं।" और श्रीमती डी विलेपारिसिस ने पूरे विश्वास के साथ और हमसे यह बात कहते हुए बेहद रोमांचित होकर कहा: "मुझे यकीन है कि वह आपसे दोबारा मिलकर बहुत प्रसन्न होंगी।"

लेकिन पिछली सुबह, प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग से विदा होने के बाद, श्रीमती डी विलेपारिसिस ने एक ऐसी बात कही जिसने मुझे कहीं अधिक प्रभावित किया और यह केवल मैत्रीपूर्ण भावना से प्रेरित नहीं थी।

उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या आप मंत्रालय के स्थायी सचिव के बेटे हैं? जी हाँ! मुझे बताया गया है कि आपके पिता बहुत ही आकर्षक व्यक्ति हैं। वे आजकल शानदार छुट्टियाँ मना रहे हैं।"

कुछ दिन पहले हमें मां के एक पत्र से पता चला था कि मेरे पिता और उनके मित्र एम. डी नॉरपोइस का सामान खो गया है।

“यह मिल गया है; दरअसल, यह कभी खोया ही नहीं था, मैं आपको बता सकती हूँ कि क्या हुआ था,” श्रीमती डी विलेपारिसिस ने समझाया, जो हमें पता नहीं कैसे, मेरे पिता की यात्राओं के बारे में हमसे कहीं अधिक जानकारी रखती थीं। “मुझे लगता है कि आपके पिता अब जल्दी घर लौटने की योजना बना रहे हैं, वास्तव में अगले सप्ताह, क्योंकि वे शायद अल्जेचिरास जाने का विचार छोड़ देंगे। लेकिन वे टोलेडो में एक दिन और बिताना चाहते हैं; ऐसा लगता है कि वे टिटियन के एक शिष्य के प्रशंसक हैं—मुझे नाम याद नहीं है—जिनकी कलाकृतियों को केवल वहीं ठीक से देखा जा सकता है।”

मैंने खुद से पूछा कि किस विचित्र संयोग से, उस निष्पक्ष दर्पण में,

जिसके माध्यम से श्रीमती डी विलेपारिसिस एक सुरक्षित दूरी से, अपने परिचित लोगों की भीड़ की हलचल भरी, छोटी, उद्देश्यहीन हलचल को देख रही थीं, उस स्थान पर एक असाधारण आवर्धक शक्ति का टुकड़ा आ गया था, जिसके माध्यम से वह अपने पिता को देख रही थीं, जिसने उन्हें उनके बारे में हर आकर्षक चीज को इतने स्पष्ट रूप से और पूर्ण विवरण में देखने में सक्षम बनाया - वे परिस्थितियाँ जो उन्हें घर लौटने के लिए विवश कर रही थीं, रीति-रिवाजों के साथ उनकी कठिनाइयाँ, एल ग्रीको के लिए उनकी प्रशंसा, और, उनकी दृष्टि के पैमाने को बदलते हुए, उन्हें इस एक व्यक्ति को बाकी सभी छोटे लोगों के बीच इतना बड़ा दिखाया, ठीक उस बृहस्पति की तरह जिसे गुस्ताव मोरो ने एक कमजोर नश्वर व्यक्ति के बगल में चित्रित करते समय एक अलौकिक कद दिया था।

मेरी दादी ने श्रीमती डी विलेपारिसिस को विदाई दी, ताकि हम होटल के बाहर थोड़ी देर और रुककर ताजी हवा का आनंद ले सकें, जब तक कि कांच की दीवार के पार से हमें यह संकेत न मिल जाए कि हमारा दोपहर का भोजन तैयार है। शोरगुल की आवाजें आ रही थीं। नरभक्षी द्वीप के राजा की युवा प्रेमिका स्नान करने गई थी और अब होटल लौट रही थी।

"सचमुच, यह एक भयानक महामारी है: यह किसी को भी देश छोड़कर पलायन करने का फैसला करने के लिए मजबूर कर सकती है!" उसके रास्ते में संयोगवश आ रहे वकील ने भयंकर क्रोध में चिल्लाते हुए कहा।

इसी बीच, वकील की पत्नी नकली रानी का इस कदर पीछा कर रही थी मानो उसकी आंखें अपनी जगह से बाहर निकल आने वाली हों।

"मैं आपको बता नहीं सकता कि मैडम ब्लैंडाइस मुझे कितना गुस्सा दिलाती हैं जब वह उन लोगों को इस तरह घूरती हैं," वकील ने मुख्य

मजिस्ट्रेट से कहा। "मेरा मन करता है कि उन्हें एक थप्पड़ मार दूं। यही तो उन नीच लोगों को अहमियत दिखाने का तरीका है; और बेशक, वे यही तो चाहते हैं कि लोग उनमें दिलचस्पी लें। उनके पति से कहिए कि उन्हें बताएं कि वह खुद को कितना बेवकूफ बना रही हैं। मैं कसम खाता हूं कि अगर वे उन नकाबपोशों को घूरते हुए रुकेंगे तो मैं उनके साथ दोबारा बाहर नहीं जाऊंगा।"

लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी के आगमन की बात करें, तो जिस दिन उन्होंने फल छोड़े थे, उस दिन उनकी गाड़ी होटल के बाहर आकर रुकी थी। वकीलों, बैरिस्टरों और मजिस्ट्रेटों की पत्नियों के छोटे समूह की नज़र उन पर ज़रूर पड़ी थी। ये सभी महिलाएं कुछ समय से यह जानने के लिए उत्सुक थीं कि क्या वह सचमुच एक मार्क्विज़ हैं या कोई धोखेबाज़ महिला, मैडम डी विलेपारिसिस, जिनका सभी लोग इतना सम्मान करते थे, और यह सुनकर वे सभी बेताब थीं कि वह इस सम्मान की हकदार नहीं हैं। जब भी मैडम डी विलेपारिसिस हॉल से गुज़रतीं, तो मुख्य मजिस्ट्रेट की पत्नी, जिन्हें हर जगह गड़बड़ी का आभास होता था, अपने 'काम' से नज़रें उठाकर उस अजनबी को इस तरह घूरतीं कि उनकी सहेलियां हंसते-हंसते लोटपोट हो जातीं।

"अच्छा, तो आप जानते ही हैं," उसने बड़े ही घमंडी अंदाज़ में समझाया, "मैं हमेशा सबसे बुरे की ही कल्पना करती हूँ। मैं तब तक किसी महिला को विधिवत विवाहित नहीं मानती जब तक वह मुझे अपना जन्म प्रमाण पत्र और विवाह के दस्तावेज न दिखा दे। लेकिन घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है; बस मेरी छोटी-सी जाँच पूरी होने तक इंतज़ार कीजिए।"

और इस तरह, दिन-ब-दिन महिलाएं एक साथ आतीं और हंसते हुए एक-दूसरे से पूछतीं: "कोई खबर है?"

लेकिन लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी के फोन करने के बाद वाली शाम को मजिस्ट्रेट की पत्नी ने अपनी उंगलियों को अपने होठों पर रख लिया।

मैंने कुछ खोज लिया है।

"अरे वाह, श्रीमती पोंसिन कितनी अद्भुत हैं! मैंने तो कभी किसी को नहीं देखा... लेकिन हमें बताइए! आखिर हुआ क्या है?"

"बस इसे सुनो। पीले बालों वाली, चेहरे पर छह इंच मोटा पेंट लगाए और एक ऐसी गाड़ी लिए—जिसकी गंध एक मील दूर से ही आ सकती थी; जिसे रखने की हिम्मत केवल वैसी ही प्राणी कर सकती है—आज मार्क्विज़ से मिलने आई है!"

"ओह–यो–यो! टट–टट–टट–टट। क्या सच में! अरे, ये तो वही औरत होगी जिसे हमने देखा था—आपको याद है ना, नेता जी,—हमने उस समय कहा था कि हमें उसका चेहरा बिल्कुल पसंद नहीं आया, लेकिन हमें नहीं पता था कि वो 'मार्क्विस' से मिलने आई थी। एक औरत जिसके साथ एक नीग्रो लड़का है, आपका मतलब है?"

"यही है।"

"क्या आपका यही मतलब है? क्या आपको उसका नाम पता है?"

"हाँ, मैंने जानबूझकर गलती की; मैंने उसका कार्ड उठा लिया; वह 'प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग' के नाम से कारोबार करती है! क्या उस पर शक करना मेरा सही नहीं था? बैरोनेस डी'एन्ज जैसी महिला के साथ इस तरह बेफिक्र होकर मेलजोल रखना कितना अच्छा लगता है?" बैरिस्टर ने मुख्य मजिस्ट्रेट के सामने मैथुरिन रेग्नियर की मैसेट की कहानी सुनाई।

लेकिन यह नहीं मान लेना चाहिए कि यह गलतफहमी महज़ अस्थायी थी, जैसे किसी प्रहसन के दूसरे अंक में होने वाली गलतफहमियाँ जो अंतिम दृश्य से पहले सुलझ जाती हैं। इंग्लैंड के राजा और ऑस्ट्रिया के सम्राट

की भतीजी, श्रीमती डी लक्ज़मबर्ग और श्रीमती डी विलेपारिसिस, जब एक दूसरे को सैर पर ले जाने के लिए बुलाती थीं, तो वे सचमुच दो ऐसी आवारा औरतों जैसी लगती थीं जिनसे किसी शराबखाने में बचना हमेशा मुश्किल होता है। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के नौ-दसवें पुरुष मध्यम वर्ग के आम आदमी को महज़ शराबी और फिजूलखर्ची करने वाले लगते हैं (जो कि व्यक्तिगत रूप से वे अक्सर होते भी हैं), इसलिए कोई भी सभ्य व्यक्ति उन्हें रात के खाने पर बुलाने का सपना भी नहीं देखेगा। इस मामले में मध्यम वर्ग का मापदंड बहुत ऊँचा है, क्योंकि इन पुरुषों की भावनाएँ उन्हें उन घरों में पूरे सम्मान के साथ स्वागत किए जाने से कभी नहीं रोकेंगी जहाँ मध्यम वर्ग कभी प्रवेश नहीं कर सकता। और वे इतनी ईमानदारी से मानते हैं कि मध्यम वर्ग यह जानता है कि वे अपने मामलों के बारे में बात करते समय सादगी का दिखावा करते हैं और अपने दोस्तों के बारे में तिरस्कारपूर्ण लहजा अपनाते हैं, खासकर जब वे 'समुद्र तट पर' होते हैं, जिससे गलतफहमी पूरी तरह से पैदा हो जाती है। यदि किसी भी तरह, फैशनेबल दुनिया का कोई व्यक्ति 'व्यापारियों' के संपर्क में रहता है, क्योंकि उसके पास इतना पैसा है कि वह समझ नहीं पाता कि उसका क्या करे, और वह खुद को कई महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थानों का अध्यक्ष पाता है, तो वह व्यापारी जो अंततः एक ऐसे रईस को देखता है जिसे वह 'बड़े व्यवसायी' के बराबर मानता है, कसम खाएगा कि ऐसे व्यक्ति का जुए में बर्बाद हुए मार्क्विस से कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए, जिसके बारे में उक्त व्यापारी का मानना है कि वह जितना अधिक दोस्ताना व्यवहार करता है, उतना ही अधिक वह दोस्तों से वंचित हो जाता है। और वह तब आश्चर्यचकित रह जाता है जब ड्यूक, उस विशाल परियोजना के निदेशक मंडल के अध्यक्ष, अपने बेटे का विवाह उसी मार्क्विस की पुत्री से तय कर देते हैं, जो भले ही जुआरी हो, लेकिन फ्रांस में सबसे पुराना नाम

धारण करता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई सम्राट अपने बेटे का विवाह किसी पदच्युत राजा की पुत्री से करवाना पसंद करेगा, बजाय किसी वर्तमान राष्ट्रपति की पुत्री से। कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों दुनियाएँ एक-दूसरे को उतनी ही विचित्र दृष्टि से देखती हैं जितनी बालबेक खाड़ी के एक छोर पर स्थित कस्बे के निवासी दूसरे छोर पर स्थित कस्बे को देखते हैं: रिवेबेल से आप मार्कोविल ल'ऑर्गुइल्यूज़ को देख सकते हैं; लेकिन यह भी भ्रामक है, क्योंकि आप कल्पना करते हैं कि आपको मार्कोविल से देखा जा रहा है, जबकि वास्तव में रिवेबेल की भव्यता वहाँ लगभग पूरी तरह से अदृश्य है।

भाग II

जगह के नाम

वह स्थान (जारी)

बालबेक के डॉक्टर, जिन्हें अचानक बुखार आने पर बुलाया गया था, ने सलाह दी कि मुझे पूरे दिन समुद्र तट पर चिलचिलाती धूप में बिना किसी आश्रय के नहीं रहना चाहिए। उन्होंने मेरे लिए कई दवाइयां भी लिखीं। मेरी दादी ने बड़ी श्रद्धा से उनकी दवाइयां लीं, जिनमें मुझे तुरंत उनकी दृढ़ इच्छा समझ आ गई कि वे कोई भी दवाई 'बनावटी' नहीं बनवाएंगी। हालांकि, उन्होंने स्वच्छता संबंधी उनकी सलाह पर ध्यान दिया और

श्रीमती डी विलेपारिसिस के हमें अपनी गाड़ी में घुमाने ले जाने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इसके बाद मैं दोपहर के भोजन तक सुबह का समय अपने कमरे और दादी के कमरे के बीच आने-जाने में बिताता था। उसका कमरा सीधे समुद्र की ओर नहीं खुलता था, जैसा कि मेरा था, लेकिन उसकी चार में से तीन तरफ से रोशनी आती थी - जिसमें 'सामने' की एक पट्टी, इमारत के अंदर एक कुआँ और अंतर्देशीय ग्रामीण क्षेत्र के दृश्य दिखाई देते थे, और उसका फर्नीचर मेरे कमरे से अलग था, जिसमें लाल फूलों वाले धातुई कपड़े से गद्दीदार आर्मचेयर थीं, जिनसे एक ठंडी और सुखद सुगंध निकलती हुई प्रतीत होती थी जिसने कमरे में प्रवेश करते ही मेरा स्वागत किया। और उस समय जब सूर्य की किरणें, विभिन्न दिशाओं से और मानो दिन के अलग-अलग समय से आती हुई, दीवार के कोनों को भेदती हुई, समुद्र तट का प्रतिबिंब उसमें समाहित करती हुई, दराजों की पेटी को एक उत्सवपूर्ण वेदी में बदल देती थीं, जो जंगली फूलों के समूह की तरह रंग-बिरंगी थी, दीवार से पंख जुड़े हुए थे, मुड़े हुए, कांपते हुए, गर्म, एक ऐसी चमक के साथ जो किसी भी क्षण अपनी उड़ान फिर से शुरू कर देगी, कुएं की ओर देखने वाली खिड़की के सामने प्रांतीय कालीन के एक वर्ग को स्नान की तरह गर्म कर देती थीं, जिसे सूर्य एक चढ़ने वाली बेल की तरह सजाता और पैटर्न बनाता था, कुर्सियों पर रेशमी फूलों की पंखुड़ियों को तोड़कर बिखेरते हुए और उनके चांदी के धागों को कपड़े से अलग दिखाते हुए कमरे के फर्नीचर के आकर्षण और जटिलता को बढ़ा देता था, यह कमरा जिसमें मैं अपनी ड्राइव के लिए तैयार होने से पहले एक पल के लिए रुका था, एक प्रिज्म का आभास देता था जिसमें बाहर चमकने वाले प्रकाश के रंग टूट गए थे, या एक छत्ते का जिसमें दिन के मीठे रस, जिनका स्वाद मैं लेने वाला था, आसुत होकर बिखरे हुए थे। मदहोश कर देने वाला, दृश्यमान, आशा का एक

बगीचा जो चांदी के धागों और गुलाब की पत्तियों की कांपती धुंध में घुल गया। लेकिन इन सबसे पहले मैंने अपने पर्दे हटा दिए थे, यह जानने के लिए बेचैन थी कि उस सुबह किनारे पर कौन सा सागर खेल रहा था, मानो कोई देवी हो। क्योंकि इनमें से कोई भी सागर हमारे साथ एक दिन से अधिक नहीं रहता था। अगले दिन कोई दूसरा सागर होता, जो कभी-कभी अपने पहले वाले सागर जैसा ही होता। लेकिन मैंने कभी भी एक ही सागर को दोबारा नहीं देखा।

कुछ ऐसी थीं जिनकी सुंदरता इतनी दुर्लभ थी कि उन्हें देखकर मुझे जो आनंद मिला, वह आश्चर्य से और भी बढ़ गया। किस सौभाग्य से, एक सुबह, दूसरी सुबह की तुलना में, खिड़की से पर्दा हटते ही मेरी विस्मयकारी आँखों के सामने अप्सरा ग्लौकोनोम प्रकट हुई, जिसकी सुस्त सुंदरता, कोमल साँसों के साथ, एक वाष्पशील पन्ना की तरह पारदर्शी थी, जिसके नीचे मैं उन गहन तत्वों को देख सकता था जो उसे रंग देते थे? उसने सूर्य को भी अपने खेल में शामिल कर लिया, एक अदृश्य धुंध से मंद मुस्कान के साथ, जो उसकी पारदर्शी सतह के चारों ओर खाली छोड़ी गई जगह के अलावा कुछ नहीं थी, जो इस प्रकार संकुचित होकर और भी आकर्षक हो गई, उन देवियों की तरह जिन्हें मूर्तिकार संगमरमर के एक ब्लॉक पर उभरा हुआ उकेरता है, बाकी को वह बिना तराशे छोड़ देता है। इस प्रकार, अपने अद्वितीय रंग में, उसने हमें उन ऊबड़-खाबड़ सांसारिक सड़कों पर बाहर आने का निमंत्रण दिया, जहाँ से, श्रीमती के बगल में बैठे हुए... डी विलेपारिसिस को उनकी बरोच गाड़ी में, हमें पूरे दिन, और कभी भी उस तक पहुंचे बिना, उनकी कोमल धड़कन की शीतलता को देखना चाहिए।

श्रीमती डी विलेपारिसिस अपनी गाड़ी जल्दी मंगवाती थीं, ताकि हमें सेंट-मार्स-ले-वेतु, या क्वेटहोल्म की चट्टानों, या किसी अन्य गंतव्य तक पहुँचने

का समय मिल सके, जो एक भारी-भरकम गाड़ी के लिए इतना दूर होता था कि उसमें पूरा दिन लग जाता था। लंबी यात्रा की खुशी में मैं श्रीमती डी विलेपारिसिस के तैयार होने तक इधर-उधर टहलते हुए हाल ही में सुनी कोई धुन गुनगुनाता रहता था। अगर रविवार होता तो होटल के बाहर केवल उनकी ही गाड़ी नहीं खड़ी होती; कई किराए की गाड़ियाँ वहाँ इंतज़ार कर रही होतीं, न केवल उन लोगों के लिए जिन्हें श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने फेटेर्न में आमंत्रित किया था, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो पूरे दिन घर पर शर्मिंदा बच्चों की तरह बैठने के बजाय यह कहते थे कि बालबेक में रविवार हमेशा असंभव होता है और दोपहर के भोजन के तुरंत बाद किसी पास के बार में छिपने या जिले के किसी दर्शनीय स्थल को देखने के लिए निकल पड़ते थे। और वास्तव में जब भी (जो अक्सर होता था) कोई श्रीमती डी विलेपारिसिस से पूछता... अगर ब्लैंडाइस कैम्ब्रेमर्स के यहाँ गई होती, तो वह दृढ़ता से जवाब देती: "नहीं; हम मधुमक्खी के झरने गए थे," मानो यही एकमात्र कारण हो कि उसने पूरा दिन फेटेर्न में नहीं बिताया। और बैरिस्टर दयालुता दिखाते हुए कहते:

मुझे आपसे ईर्ष्या हो रही है। काश मैं भी वहाँ गया होता; वे देखने लायक जगहें होंगी।

गाड़ियों की कतार के बगल में, उस बरामदे के सामने जहाँ मैं इंतज़ार कर रहा था, एक युवा सेवक किसी दुर्लभ प्रजाति की झाड़ी की तरह बैठा था, जो अपने असामान्य और आकर्षक बालों के रंग के साथ-साथ अपनी पौधे जैसी त्वचा से भी सबका ध्यान खींच रहा था। अंदर, हॉल में, जो किसी प्राचीन बेसिलिका में नार्थेक्स या कैटेक्यूमेन्स के चर्च के समान था, जहाँ से होटल में न ठहरने वाले लोग भी गुज़र सकते थे, इस 'बाहरी' सेवक के साथी उससे ज़्यादा मेहनत तो नहीं कर रहे थे, लेकिन कम से कम कुछ प्रशिक्षित गतिविधियाँ तो कर ही रहे थे। संभव है कि सुबह-सुबह वे सफ़ाई

में मदद करते हों। लेकिन दोपहर में वे वहाँ ऐसे खड़े रहते थे जैसे कोई गायक मंडली हो, जो कुछ न होने पर भी कलाकारों को मज़बूत करने के लिए मंच पर मौजूद रहती है। महाप्रबंधक, वही जिसने मुझे इतना डरा दिया था, अगले साल उनकी संख्या में काफ़ी बढ़ोतरी करने की योजना बना रहा था, क्योंकि उसके 'बड़े-बड़े सपने' थे। और इस बात से होटल का मैनेजर बहुत परेशान था, क्योंकि उसे लगता था कि ये सारे लड़के सिर्फ़ 'परेशानी' पैदा कर रहे हैं, यानी वे मेहमानों के रास्ते में आ रहे हैं और किसी के काम के नहीं हैं। लेकिन दोपहर के खाने और रात के खाने के बीच, मेहमानों के आने-जाने के समय में, वे खाली मंच को भर देते थे, ठीक वैसे ही जैसे मैडम डी मेनटेनॉन के वे शिष्य, जो युवा इस्राएलियों के वेश में एस्तेर या योआद के जाने पर नाटक को आगे बढ़ाते थे। लेकिन बाहर खड़ा सेवक, अपने कोमल रंग, लंबे, पतले, नाज़ुक शरीर के साथ, जिसके पास मैं मार्क्विज़ के नीचे आने का इंतज़ार कर रहा था, एक ऐसी स्थिरता बनाए हुए था जिसमें एक उदासी झलक रही थी, क्योंकि उसके बड़े भाई कहीं और बेहतर करियर बनाने के लिए होटल छोड़ चुके थे, और वह इस अनजान धरती पर अपने अकेलेपन को बहुत महसूस कर रहा था। आख़िरकार मैडम डी विलेपारिसिस आईं। उनकी गाड़ी के पास खड़े रहना और उन्हें उसमें बिठाना शायद उस युवा सेवक के कर्तव्यों का हिस्सा होना चाहिए था। लेकिन वह एक ओर तो यह जानता था कि जो महिला अपने नौकरों को होटल में लाती है, वह उनसे सेवा की अपेक्षा रखती है और आम तौर पर उन्हें टिप देने में कंजूसी नहीं करती। साथ ही, यह बात पुराने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के कुलीन वर्ग पर भी आम थी। श्रीमती डी विलेपारिसिस इन दोनों श्रेणियों में आती थीं। इसलिए उस तगड़े सेवक ने यह निष्कर्ष निकाला कि उसे उनसे कुछ भी उम्मीद नहीं करनी चाहिए, और अपनी नौकरानी और नौकर को अपना सामान गाड़ी में रखने के लिए

छोड़कर, वह अपने भाइयों के सौभाग्यशाली जीवन के बारे में उदास मन से सपने देखता रहा और अपनी निष्क्रियता बनाए रखी।

हमने अपनी यात्रा शुरू की; रेलवे स्टेशन का चक्कर लगाने के कुछ समय बाद, हम एक ग्रामीण सड़क पर आ गए जो जल्द ही मुझे कॉम्ब्रे के आसपास की सड़कों की तरह परिचित हो गई, उस मोड़ से जहाँ मछली पकड़ने के कांटे की तरह सुंदर बाग लगे थे, उस मोड़ तक जहाँ से हमने सड़क छोड़ी, जिसके दोनों ओर जुते हुए खेत थे। इनमें से हमें कहीं-कहीं सेब के पेड़ दिखाई देते थे, जो सचमुच अपने फूलों से रहित थे, और अब उन पर केवल कुछ ही परागकोष थे, लेकिन फिर भी मुझे मोहित करने के लिए पर्याप्त थे क्योंकि मैं उन अद्वितीय पत्तियों को देखकर कल्पना कर सकता था कि कैसे उनका विस्तृत फैलाव, किसी संपन्न विवाह के लिए बिछाए गए औपचारिक कालीन की तरह, कुछ ही दिन पहले उनके गुलाबी फूलों की सफेद रेशमी लटों से ढका हुआ था।

अगले वर्ष मई के महीने में, पेरिस में मैं कितनी बार फूलवाले से सेब के फूलों की एक शाखा घर लाता था, और पूरी रात उसके फूलों के सामने बैठा रहता था, जिनमें वही मलाईदार सुगंध खिलती थी जो हरे खिलते पत्तों पर भी फैलकर उन्हें सफेद कर देती थी, उन बर्फीले प्यालों के बीच ऐसा लगता था मानो विक्रेता ने ही, मुझ पर अपनी उदारता दिखाते हुए, अपनी रचनात्मकता के धन से और एक प्रभावी विरोधाभास के रूप में, दोनों ओर एक सुंदर लाल कली जोड़ दी हो: मैं उन्हें निहारता रहता था, मैं उन्हें अपने दीपक की रोशनी में समूहबद्ध करता था—इतनी देर तक कि अक्सर मैं वहीं बैठा रहता था जब भोर की किरणें उनकी सफेदी को वही लालिमा देती थीं जिससे वह उस क्षण बालबेक सड़क पर उनकी बहनों को रंग रही होगी—और मैं उन्हें अपनी कल्पना में उस सड़क के किनारे वापस ले जाने की कोशिश करता था, उन्हें गुणा करने की, उन्हें फैलाने

की, ताकि उनके लिए तैयार फ्रेम को भर सकें, उस कैनवास पर, जो पूरी तरह से तैयार था, उन गलियों की रूपरेखा के साथ जिनकी रूपरेखा मुझे मुंह जुबानी याद थी, जिन्हें मैं देखने के लिए तरसता था—जिन्हें एक दिन मैं उस पल को फिर से देखना चाहिए, जब प्रतिभा के उत्कृष्ट उत्साह के साथ, वसंत ऋतु अपने रंगों से उनके कैनवास को ढक रही थी।

गाड़ी में बैठने से पहले मैंने उस समुद्री दृश्य की कल्पना कर ली थी जिसे मैं देखने जा रहा था, जिसे मैं 'चमकते सूरज' के साथ देखना चाहता था, और जिसे बालबेक में मैं बहुत ही खंडित रूप में ही देख पाया था, जो मेरे सपने में न होने वाली कई भद्दी चीजों, जैसे नहाने वाले लोग, कपड़े बदलने के कमरे, और आनंद नौकाओं से टूटा हुआ था। लेकिन जब श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी ऊँची जगह पर पहुँची और मैंने पेड़ों की घनी शाखाओं के बीच से समुद्र की एक झलक देखी, तो निस्संदेह इतनी दूरी से वे क्षणिक विवरण गायब हो गए जिन्होंने समुद्र को, मानो, प्रकृति और इतिहास से अलग कर दिया था, और जब मैंने उसकी लहरों की ओर देखा तो मुझे एहसास हुआ कि वे वही लहरें थीं जिनका वर्णन लेकोंटे डी लिस्ले ने अपनी ओरेस्टी में किया है, जहाँ "भोर से पहले शिकारी पक्षियों के झुंड की तरह" वीर हेलास के लंबे बालों वाले योद्धा "लाखों चप्पूओं के साथ विशाल, गूंजते समुद्र में गोता लगाते हैं।" लेकिन दूसरी ओर, मैं अब समुद्र के उतना करीब नहीं था, जो मुझे अब एक जीवित वस्तु नहीं, बल्कि स्थिर प्रतीत होता था; मुझे अब उसके रंगों के नीचे कोई शक्ति महसूस नहीं होती थी, जो पत्तियों के बीच एक चित्र की तरह फैले हुए थे, जिनके माध्यम से यह आकाश की तरह असंगत और केवल अधिक तीव्र नीले रंग का दिखाई देता था।

श्रीमती डी विलेपारिसिस ने देखा कि मुझे गिरजाघरों से बहुत लगाव था, इसलिए उन्होंने मुझसे वादा किया कि हम एक दिन एक गिरजाघर और

दूसरे दिन दूसरा गिरजाघर ज़रूर देखेंगे, और विशेष रूप से कार्केविले के गिरजाघर को, जो 'अपनी पुरानी लताओं से पूरी तरह ढका हुआ' था, जैसा कि उन्होंने हाथ हिलाते हुए कहा, मानो हाथ से इमारत के सामने के हिस्से को पत्तियों के एक अदृश्य और नाजुक पर्दे से ढक रही हों। श्रीमती डी विलेपारिसिस अक्सर इस छोटे से वर्णनात्मक इशारे से किसी ऐतिहासिक इमारत के आकर्षण और विशिष्ट विशेषताओं को परिभाषित करने के लिए सही शब्द ढूंढ लेती थीं, तकनीकी शब्दों से हमेशा बचती थीं, लेकिन जिस विषय का वे जिक्र करती थीं, उसकी अपनी गहरी समझ को छिपा नहीं पाती थीं। ऐसा लगता था कि वे अपनी इस विद्वत्ता का बहाना इस तथ्य में ढूंढ रही थीं कि उनके पिता के ग्रामीण घरों में से एक, जिसमें वे बचपन में रहती थीं, एक ऐसे जिले में स्थित था जहाँ बालबेक के आसपास के घरों के समान शैली के गिरजाघर थे, इसलिए यह समझ से परे होता कि उन्हें वास्तुकला में रुचि न होती, संयोग से, यह घर पुनर्जागरण काल की वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक था। लेकिन चूंकि यह एक नियमित संग्रहालय भी था, और चोपिन और लिस्ज़्ट भी यहाँ प्रस्तुति दे चुके थे, लामार्टिन कविता पाठ करते थे, लगभग एक सदी के सभी प्रसिद्ध कलाकारों ने यहाँ 'भावनाएँ' लिखीं, धुनें बनाईं, पारिवारिक एल्बम में रेखाचित्र बनाए। श्रीमती डी विलेपारिसिस ने, चाहे कोमलता, अच्छे संस्कार, सच्ची विनम्रता या बुद्धि की कमी के कारण, कलाओं के प्रति अपने इस विशुद्ध भौतिक ज्ञान का श्रेय केवल भौतिक ज्ञान को ही दिया, और ऐसा प्रतीत होता है कि वे चित्रकला, संगीत, साहित्य और दर्शन को एक ऐसी युवती का हिस्सा मानती थीं, जिसका पालन-पोषण एक ऐतिहासिक इमारत में, जो सूचीबद्ध और प्रतिष्ठित थी, अत्यंत कुलीन परिवेश में हुआ था। उनकी बातें सुनकर ऐसा लगता था मानो उन्हें कोई भी चित्र विरासत में न मिला हो। उन्हें इस बात

की खुशी थी कि मेरी दादी को उनका पहना हुआ हार पसंद था, जो उनकी पोशाक पर लटकता था। यह हार टिटियन द्वारा बनाई गई उनकी अपनी एक पूर्वज की तस्वीर में दिखाई देता था, जो कभी परिवार से बाहर नहीं गई थी। इसलिए, इसके असली होने की पुष्टि की जा सकती थी। वो उन चित्रों के बारे में एक शब्द भी नहीं सुनती थीं जो न जाने कहाँ से खरीदे गए थे; उन्हें यकीन था कि वे नकली हैं, और उन्हें देखने की उनकी बहुत इच्छा थी। हम जानते थे कि वो खुद जलरंग में फूल बनाती थीं, और मेरी दादी, जिन्होंने उनकी प्रशंसा सुनी थी, ने उनसे इस बारे में बात की। श्रीमती डी विलेपारिसिस ने विनम्रता से विषय बदल दिया, लेकिन उन्होंने आश्चर्य या खुशी का कोई प्रदर्शन नहीं किया, ठीक वैसे ही जैसे एक स्थापित कलाकार करता है जिसके लिए प्रशंसा का कोई महत्व नहीं होता। उन्होंने बस इतना कहा कि यह एक आनंददायक शौक है क्योंकि, भले ही ब्रश से निकले फूल कोई अद्भुत न हों, कम से कम काम आपको असली फूलों की संगति में रखता है, जिनकी सुंदरता से, खासकर जब आपको उन्हें बनाने के लिए बारीकी से अध्ययन करना पड़ता है, तो आप कभी नहीं थक सकते। लेकिन बालबेक में श्रीमती डी विलेपारिसिस अपनी आँखों को आराम देने के लिए छुट्टी पर थीं।

मेरी दादी और मैं यह देखकर दंग रह गए कि वह मध्य वर्ग के अधिकांश लोगों से भी कहीं अधिक उदार थीं। उन्हें समझ नहीं आता था कि जेसुइट्स के निष्कासन से कोई इतना आहत कैसे हो सकता है, उनका कहना था कि ऐसा तो हमेशा से होता आया है, राजशाही के समय में भी, स्पेन में भी। उन्होंने गणतंत्र का बचाव किया और उसके पादरी-विरोधी रवैये के विरुद्ध उन्होंने बस इतना ही कहा: "चाहे मुझे मेरी इच्छा से प्रार्थना में शामिल होने से रोका जाए या मेरी इच्छा के विरुद्ध भी मुझे जबरदस्ती प्रार्थना में शामिल किया जाए, मुझे उतनी ही नाराजगी होगी!" और यहाँ

तक कि उन्होंने हमें ऐसे कथनों से चौंका दिया: "अरे! आजकल का अभिजात वर्ग, उसका क्या महत्व है?" "मेरी नज़र में, जो आदमी काम नहीं करता, उसकी कोई अहमियत नहीं!"—शायद इसलिए क्योंकि उन्हें लगता था कि उनके ये कथन उनके मुख से निकलने पर अर्थपूर्ण और प्रभावशाली बन जाते हैं।

जब हमने इन प्रगतिशील विचारों को सुना—हालाँकि ये कभी भी समाजवाद की हद तक नहीं पहुँचे, जिससे श्रीमती डी विलेपारिसिस घृणा करती थीं—और इन्हें इतनी बार और इतनी स्पष्टता से व्यक्त होते हुए सुना, ठीक उन्हीं लोगों में से एक से जिनकी बुद्धिमत्ता को ध्यान में रखते हुए हमारी संशयपूर्ण और संकोची निष्पक्षता रूढ़िवादियों के विचारों की सीधे निंदा करने से इनकार करती थी, तो मेरी दादी और मैं लगभग इस बात पर विश्वास करने लगे थे कि हमारी यात्राओं की सुखद साथी में ही हर चीज़ में सत्य का मापदंड और आदर्श पाया जा सकता है। हमने उनकी बात पर विश्वास किया जब उन्होंने अपने टिटियन चित्रों, अपने देश के घर के स्तंभों और लुई-फिलिप की वार्तालाप प्रतिभा की प्रशंसा की। लेकिन —उन ज्ञान के भंडारों की तरह जो हमें मिस्र की चित्रकला या एट्रस्कन शिलालेखों पर मंत्रमुग्ध कर देते हैं, और फिर भी आधुनिक कार्यों के बारे में इतनी उबाऊ बातें करते हैं कि हम खुद से पूछते हैं कि क्या हमने उन विज्ञानों के महत्व को ज़रूरत से ज़्यादा तो नहीं आंक लिया है जिनमें वे पारंगत हैं, क्योंकि उनके द्वारा इन विषयों पर किए गए व्यवहार में वह औसत दर्जे की मानसिकता स्पष्ट नहीं होती जो उन्होंने बॉडेलेयर पर अपने बेतुके निबंधों के साथ-साथ इन अध्ययनों में भी दिखाई होगी—मैडम। जब मैंने डी विलेपारिसिस से शैतोब्रिएंड, बाल्ज़ाक और विक्टर ह्यूगो के बारे में पूछा, जो अपने समय में उनके माता-पिता के मेहमान रह चुके थे और जिनसे वह मिल चुकी थीं, तो उन्होंने मेरे आदर भाव को देखकर

मुस्कुराया और उनके बारे में मनोरंजक किस्से सुनाए, जैसे कि कुछ देर पहले वह हमें ड्यूकों और राजनेताओं के बारे में सुना रही थीं। उन्होंने उन लेखकों की कड़ी आलोचना सिर्फ इसलिए की क्योंकि उनमें वह विनम्रता, वह आत्म-त्याग, वह संयमित कला नहीं थी जो एक सीधी-सादी पंक्ति से संतुष्ट हो जाती है और उस पर कोई जोर नहीं देती, जो आडंबर की निरर्थकता से सबसे ज्यादा बचती है, वह अवसरवादिता, संयम, विवेक और सादगी के वे गुण नहीं थे, जिन्हें उन्हें सिखाया गया था कि सच्ची महानता उन्हीं गुणों से प्रेरित होती है और प्राप्त करती है। यह स्पष्ट था कि उन्हें उन लोगों से ऊपर रखने में कोई संकोच नहीं था, जो शायद उन्हीं गुणों के बल पर ड्राइंग रूम, अकादमी या कैबिनेट परिषद में बाल्ज़ाक, ह्यूगो या विग्नी जैसे लोगों से आगे निकल सकते थे। मोले, फॉन्टानेस, विट्रोल्स, बेर्सोट, पास्क्विवयर, लेब्रून, साल्वंडी या दारू।

"स्टेंडहल के उन उपन्यासों की तरह, जिनकी आप प्रशंसा करते प्रतीत होते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, अगर आपने उनसे उस लहजे में बात की होती, तो उन्हें बहुत आश्चर्य होता। मेरे पिता, जो एम. मेरिमी के यहाँ उनसे मिलने जाया करते थे—वैसे, वे वाकई एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे—अक्सर मुझे बताते थे कि बेयले (यह उनका असली नाम था) बेहद अशिष्ट थे, लेकिन भोजन के समय उनकी संगति बहुत अच्छी होती थी, और वे अपनी किताबों को लेकर कभी भी घमंडी नहीं थे। आप स्वयं देख सकते हैं कि एम. डी बाल्ज़ाक की बेतुकी और अतिरंजित प्रशंसाओं पर उन्होंने कैसे बस अपने कंधे उचका दिए। कम से कम वहाँ तो उन्होंने दिखाया कि उन्हें एक सज्जन व्यक्ति की तरह व्यवहार करना आता था।" उनके पास इन सभी महान पुरुषों के हस्तलेख थे, और जब उन्होंने अपने परिवार के साथ उनके व्यक्तिगत संबंधों का जिक्र किया, तो ऐसा लगा जैसे वे यह मान रही हों कि उनके बारे में उनका निर्णय उन युवाओं की

तुलना में कहीं अधिक ठोस है, जिन्हें, मेरी तरह, उनसे मिलने का अवसर नहीं मिला था। "मुझे पूरा यकीन है कि मुझे बोलने का अधिकार है, क्योंकि वे मेरे पिता के घर आया करते थे; और जैसा कि एम. सैंट-ब्यूव, जो एक अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति थे, कहा करते थे, किसी का आकलन करते समय आपको उन लोगों की बात माननी चाहिए जिन्होंने उन्हें करीब से देखा हो, और जो उनके वास्तविक मूल्य का अधिक सटीक आकलन करने में सक्षम हों।"

कभी-कभी जब गाड़ी खेतों से गुज़रते हुए एक खड़ी सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ती थी, तो खेत और भी ज़्यादा वास्तविक लगने लगते थे, मानो उनमें एक ऐसी प्रामाणिकता झलकती हो जैसे कुछ पुराने उस्ताद अपनी तस्वीरों पर जिस कीमती फूल से हस्ताक्षर किया करते थे, उसी तरह कुछ झिझकते हुए कॉर्नफ्लावर, कॉम्ब्रे कॉर्नफ्लावर की तरह, हमारे पीछे-पीछे लहराते हुए दिखाई देते थे। थोड़ी देर में घोड़े उनसे आगे निकल जाते थे, लेकिन थोड़ी दूर आगे हमें एक और फूल दिखाई देता था जो हमारे आने पर रुकते ही घास के बीच में खिलकर हमारा स्वागत करता था, मानो उसका नीला तारा हो; कुछ फूल इतने साहसी होते थे कि आकर सड़क के किनारे जम जाते थे, और मेरे मन में धुंधली सी छाप रह जाती थी - दूर की यादें और पालतू बन चुके जंगली फूलों का मिश्रण।

हम ढलान से नीचे उतरने लगे; और फिर हमें पैदल, साइकिल पर, बैलगाड़ी या रथ में सवार होकर चढ़ती हुई, उन प्राणियों में से एक मिली —सुंदर दिन के फूलों की तरह, लेकिन खेत के फूलों से अलग, क्योंकि उनमें से प्रत्येक में कुछ ऐसा छिपा होता है जो दूसरे में नहीं पाया जाता, जिसके परिणामस्वरूप हम उसके साथियों में से किसी को भी उस इच्छा को संतुष्ट नहीं कर सकते जो उसने हमारे भीतर जन्म दी है—एक खेत में काम करने वाली लड़की अपनी गाय हांक रही थी या आधी लेटी हुई गाड़ी

पर, एक दुकानदार की बेटी सैर कर रही थी, एक फैशनेबल युवती लैंडौ की पिछली सीट पर अपने माता-पिता की ओर मुंह करके बैठी थी। निःसंदेह ब्लोच ने एक नए युग का द्वार खोला था और मेरे लिए जीवन का मूल्य उस दिन बदल दिया था जब उन्होंने मुझसे कहा था कि मेसेग्लिस मार्ग पर अकेले टहलते हुए मैं जो सपने देखता था, जब मैं आशा करता था कि कोई ग्रामीण लड़की मिल जाए जिसे मैं अपनी बाहों में भर सकूँ, वे केवल एक कल्पना मात्र नहीं थे जो मेरे अलावा किसी और चीज़ से मेल नहीं खाती थी, बल्कि हर लड़की, चाहे वह गाँव की हो या युवतियाँ, ऐसी प्रार्थनाओं को सुनने के लिए समान रूप से तत्पर और इच्छुक थी। और भले ही अब, बीमार होने के कारण और अकेले बाहर न जा पाने के कारण, मेरा भाग्य उन्हें कभी प्रेम करने में असमर्थ होना था, फिर भी मैं उतना ही खुश था, जैसे जेल या अस्पताल में पैदा हुआ कोई बच्चा, जिसने हमेशा यही माना हो कि मानव शरीर केवल सूखी रोटी और दवाइयाँ ही पचा सकता है, अचानक यह जान गया हो कि आड़ू, खुबानी और अंगूर केवल ग्रामीण दृश्य की शोभा नहीं हैं, बल्कि स्वादिष्ट और आसानी से पचने वाला भोजन हैं। भले ही उसका जेलर या उसकी नर्स उसे उन लुभावने फलों को तोड़ने न दें, फिर भी दुनिया उसे बेहतर जगह और उसमें जीवन अधिक सुखद लगता है। क्योंकि कोई इच्छा हमें अधिक आकर्षक लगती है, हम उस पर अधिक विश्वास करते हैं, जब हम जानते हैं कि हमारे बाहर एक ऐसी वास्तविकता है जो उससे मेल खाती है, भले ही वह हमारे लिए साकार न हो सके। और हम उस जीवन के बारे में अधिक आनंद से सोचते हैं जिसमें (इस शर्त पर कि हम क्षण भर के लिए उस छोटी सी, आकस्मिक और विशेष बाधा को अपने मन से हटा दें जो हमें व्यक्तिगत रूप से ऐसा करने से रोकती है) हम स्वयं को उस इच्छा को शांत करते हुए कल्पना कर सकते हैं। जहाँ तक उन सुंदर लड़कियों

की बात है जो गुजर रही थीं, जिस दिन से मुझे पहली बार पता चला कि उनके गालों को चूमा जा सकता है, मैं उनकी आत्माओं के बारे में उत्सुक हो गया था। और ब्रह्मांड मुझे अधिक रोचक लगने लगा था।

श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी तेज़ी से चल रही थी। मुझे हमारी ओर आ रही लड़की को देखने का भी समय नहीं मिला; फिर भी—चूंकि मनुष्यों की सुंदरता वस्तुओं की सुंदरता जैसी नहीं होती, क्योंकि हम महसूस करते हैं कि यह एक अद्वितीय प्राणी की सुंदरता है, जो चेतना और स्वतंत्र इच्छा से संपन्न है—जैसे ही उसकी व्यक्तित्व, एक अस्पष्ट आत्मा, एक अज्ञात इच्छा, ने उसकी उदासीन आँखों की गहराई में अपना एक छोटा सा चित्र प्रस्तुत किया, अत्यंत संकुचित लेकिन पूर्ण, मेरे भीतर मौजूद परागकणों की एक रहस्यमय प्रतिक्रिया से, जो उसे ग्रहण करने के लिए तैयार थे, मेरे भीतर एक गर्भाधान का भ्रूण उमड़ पड़ा, उतना ही अस्पष्ट, उतना ही सूक्ष्म, उस इच्छा का कि मैं इस लड़की को जाने न दूं, उसके मन को अपने प्रति सचेत किए बिना, उसकी इच्छाओं को किसी और की ओर भटकने से रोके बिना, उसके सपनों में बसे बिना और उसके दिल पर कब्जा किए बिना। इसी बीच हमारी गाड़ी उससे दूर चली गई, वह सुंदर लड़की पहले ही पीछे छूट गई थी, और चूंकि उसके मन में मेरे बारे में कोई धारणा नहीं थी, इसलिए उसकी आँखें, जिन्होंने मुझे मुश्किल से देखा था, मुझे पहले ही भूल चुकी थीं। क्या यह इसलिए था कि मैंने उसे बस एक पल के लिए ही देखा था, इसलिए वह मुझे इतनी आकर्षक लगी? शायद यही कारण था। पहली बात तो यह कि जब मैं उसके पास पहुँचा तो रुकने की असमर्थता, और अगले दिन उससे दोबारा न मिलने का जोखिम, ऐसी लड़की को वही आकर्षण प्रदान करते हैं जो किसी स्थान को उस बीमारी या गरीबी से मिलता है जो हमें वहाँ जाने से रोकती है, या उन नीरस दिनों से जो हमें अन्यथा उस युद्ध से जीने पड़ते जिसमें

हम निस्संदेह मारे जाएँगे। इसलिए, यदि आदत जैसी कोई चीज न होती, तो जीवन उन लोगों के लिए आनंददायक प्रतीत होता जो हर पल मृत्यु के खतरे में होते हैं—अर्थात, समस्त मानव जाति के लिए। फिर, यदि हमारी कल्पना उस चीज़ की लालसा से प्रेरित होती है जो हमारे पास नहीं है, तो उसकी उड़ान पूरी तरह से अनुभव की गई वास्तविकता से सीमित नहीं होती, इन आकस्मिक मुलाकातों में जहाँ राहगीर अजनबी का आकर्षण आमतौर पर हमारे गुजरने की गति के सीधे अनुपात में होता है। चाहे रात ढल रही हो और गाड़ी तेज़ी से चल रही हो, चाहे शहर हो या गाँव, कोई स्त्री का धड़, जो हमें दूर ले जाने वाली गति और उसे डुबो देने वाले अंधकार से किसी प्राचीन संगमरमर की मूर्ति की तरह क्षत-विक्षत हो गया हो, सड़क के हर मोड़ से, हर दुकान के रोशन अंदरूनी हिस्से से, सौंदर्य के तीर हमारे दिल पर निशाना साधते हैं, उस सौंदर्य पर जिसके बारे में हम कभी-कभी खुद से यह पूछने के लिए प्रलोभित होते हैं कि क्या यह इस दुनिया में, पछतावे से अति-उत्तेजित हमारी कल्पना द्वारा एक खंडित और क्षणभंगुर अजनबी में जोड़े गए पूरक भाग से अधिक कुछ है।

अगर मुझे रुकने, गाड़ी से उतरने और उस लड़की से बात करने की आज़ादी होती, जिसके पास से हम गुज़र रहे थे, तो क्या मैं शायद उसके रंग-रूप की किसी ऐसी खामी को देखकर निराश हो जाता, जिसे मैंने गाड़ी से नहीं देखा था? (उसके बाद उसके जीवन में झाँकने का हर प्रयास अचानक असंभव सा लगने लगता। क्योंकि सुंदरता परिकल्पनाओं की एक श्रृंखला है जिसे कुरूपता तब रोक देती है जब वह उस रास्ते को अवरुद्ध कर देती है जो हमें अज्ञात की ओर खुलता हुआ दिखाई दे रहा होता है।) शायद उसका एक शब्द, एक मुस्कान, मुझे एक कुंजी, एक सुराग दे देती, जिसकी मैंने उम्मीद नहीं की थी, उसके चेहरे के भाव को पढ़ने के लिए, उसके हाव-भाव को समझने के लिए, जो तुरंत ही मेरे लिए

कोई मायने नहीं रखता। यह संभव है, क्योंकि मैंने वास्तविक जीवन में कभी ऐसी लड़कियों से मुलाकात नहीं की जो उन दिनों की तरह आकर्षक हों जब मैं किसी गंभीर व्यक्ति के साथ होता था, जिससे मैं, चाहे मैंने कितने ही बहाने बनाए हों, खुद को अलग नहीं कर पाता था: बालबेक की अपनी पहली यात्रा के कुछ वर्षों बाद, जब मैं अपने पिता के एक मित्र के साथ पेरिस से गाड़ी चला रहा था, और अंधेरी सड़क पर तेजी से चलती हुई एक महिला को देखकर, मुझे लगा कि केवल एक पारंपरिक संकोच के लिए, इस जीवन में अपनी खुशी का हिस्सा खोना अनुचित होगा, जो शायद इस दुनिया का एकमात्र जीवन है। बिना एक शब्द भी माफी मांगे, मैं गाड़ी से कूदकर उस अजनबी की तलाश में उसके पीछे चल पड़ा; दो सड़कों के चौराहे पर वह मुझसे बिछड़ गई; तीसरी सड़क पर फिर से मिल गई, और अंत में, हांफते हुए, एक स्ट्रीट लैंप के नीचे, बूढ़ी श्रीमती वर्दुरिन के सामने आ गया, जिनसे मैं वर्षों से सावधानीपूर्वक बचता आ रहा था, और जिन्होंने अपनी खुशी और आश्चर्य में कहा: "आप इतनी दूर दौड़कर सिर्फ मुझसे मिलने आए हैं, यह कितनी अच्छी बात है!"

उस साल बालबेक में, ऐसी मुलाकातों के दौरान, मैं अपनी दादी और श्रीमती डी विलेपारिसिस को यकीन दिलाता था कि मुझे इतना तेज सिरदर्द है कि मेरे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं अकेले पैदल घर जाऊं। लेकिन वे मुझे गाड़ी से उतरने ही नहीं देती थीं। और मुझे उस खूबसूरत लड़की (जिसे दोबारा ढूंढना किसी ऐतिहासिक इमारत से कहीं ज्यादा मुश्किल है, क्योंकि उसका कोई नाम नहीं था और वह चलने-फिरने में माहिर थी) को भी उन सभी लोगों की सूची में शामिल करना होगा, जिनसे मैंने वादा किया था कि मैं बाद में और करीब से मिलूंगा। हालांकि, उनमें से एक लड़की कई बार मेरी आंखों के सामने से गुजरी,

ऐसी परिस्थितियों में जिनसे मुझे लगा कि मैं जब चाहूं उससे मिल सकता हूं। यह एक दूधवाली थी जो एक फार्म से होटल के लिए अतिरिक्त मलाई लेकर आती थी। मुझे लगा कि उसने भी मुझे पहचान लिया है; और वास्तव में, उसने मुझे बड़ी ध्यान से देखा, शायद इसलिए क्योंकि मेरी इस ध्यान देने की वजह से वह हैरान थी। अगले दिन, जिस दिन मैं सुबह से आराम कर रही थी, दोपहर के करीब जब फ्रांस्वा मेरे पर्दे खींचने आई, तो उसने मुझे एक पत्र दिया जो मेरे लिए नीचे छोड़ा गया था। मैं बालबेक में किसी को नहीं जानती थी। मुझे पूरा यकीन था कि यह पत्र दूधवाली का ही होगा। अफसोस, यह तो बर्गोट का ही था, जो संयोगवश वहाँ से गुजर रहा था और मुझसे मिलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जब उसे पता चला कि मैं सो रही हूँ, तो उसने कुछ प्यारी-प्यारी पंक्तियाँ लिख दीं, जिन्हें लिफ्ट वाले लड़के ने एक लिफाफे पर भेज दिया था, जिसे मैंने दूधवाली का लिखा हुआ समझ लिया था। मैं बहुत निराश हुई, और यह सोचकर कि बर्गोट का पत्र पाना इतना मुश्किल और मेरे लिए इतना बड़ा सम्मान था, मुझे इस बात से ज़रा भी तसल्ली नहीं मिली कि यह पत्र उसका नहीं था। जहाँ तक उस लड़की की बात है, मैं उससे फिर कभी नहीं मिली, ठीक वैसे ही जैसे मैं उन लोगों से कभी नहीं मिली जिन्हें मैंने केवल श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी से देखा था। उन सबको देखने और फिर खो देने से मेरी बेचैनी और बढ़ गई, और मुझे उन दार्शनिकों की बातों में कुछ ज्ञान मिला जो हमें अपनी इच्छाओं पर सीमा लगाने की सलाह देते हैं (यदि उनका तात्पर्य लोगों के प्रति हमारी इच्छा से है, क्योंकि यही एकमात्र ऐसी इच्छा है जो चिंता में परिणत होती है, जिसका लक्ष्य एक ऐसा प्राणी होता है जो एक साथ अज्ञात और अचेतन होता है। यह सोचना मूर्खतापूर्ण होगा कि दर्शन का संबंध धन की इच्छा से हो सकता है)। साथ ही, मुझे यह ज्ञान अपूर्ण लगने लगा, क्योंकि मैंने स्वयं

से कहा कि इन मुलाकातों ने मुझे उस दुनिया को और भी सुंदर बना दिया जिसने देश की सभी सड़कों पर दुर्लभ और सामान्य, क्षणभंगुर खजाने, यात्रा के अप्रत्याशित उपहारों जैसे फूलों को जन्म दिया, जिनका लाभ शायद कभी न उठाने वाली आकस्मिक परिस्थितियों ने ही मुझे उठाने से रोका था, और जिन्होंने जीवन में एक नया उत्साह भर दिया।

लेकिन शायद इस उम्मीद में कि एक दिन, अधिक स्वतंत्रता के साथ, मैं अन्य रास्तों पर भी वैसी ही लड़कियाँ पा सकूँगा, मैं पहले से ही उस चीज़ को मिथ्या और भ्रष्ट करना शुरू कर रहा था जो किसी आकर्षक महिला के साथ रहने की इच्छा में निहित विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत होती है, और इस तथ्य मात्र से कि मैंने इस इच्छा को कृत्रिम रूप से बढ़ाने की संभावना को स्वीकार किया, मैंने अप्रत्यक्ष रूप से अपने संकेत को स्वीकार कर लिया था।

जिस दिन श्रीमती डी विलेपारिसिस हमें कार्केविले ले गईं, जहाँ वह गिरजाघर था, जो लताओं से ढका हुआ था, जिसके बारे में उन्होंने हमसे बात की थी, एक ऐसा गिरजाघर जो ऊँची ज़मीन पर बना था और अपने गाँव और उसके नीचे बहने वाली नदी दोनों पर अपना प्रभुत्व जमाए हुए था, और जिसने मध्य युग से अपना छोटा पुल भी सहेज रखा था, मेरी दादी ने सोचा कि मैं इमारत को अपने खाली समय में अकेले देखना पसंद करूँगा, इसलिए उन्होंने अपनी सहेली से सुझाव दिया कि वे आगे जाकर गाँव के चौक में पेस्ट्री बनाने वाले की दुकान पर मेरा इंतज़ार करें, जो जहाँ हम थे वहाँ से साफ़ दिखाई दे रहा था और धूप में अपनी कोमल हरियाली में, एक ऐसे पूरे मध्ययुगीन हिस्से जैसा लग रहा था। यह तय किया गया कि मैं बाद में वहाँ उनसे मिलूँगा। हरियाली के उस विशाल क्षेत्र में, जिसके सामने मैं खड़ा रह गया था, अगर मुझे गिरजाघर को खोजना था, तो मुझे एक मानसिक प्रयास करना पड़ा जिसमें मुझे 'गिरोह' की

अवधारणा को और अधिक गहराई से समझना था; दरअसल, जैसा कि स्कूली बच्चों के साथ होता है, जो किसी वाक्य का अर्थ तब और भी अच्छी तरह समझ पाते हैं जब अनुवाद या व्याख्या करके उसे उनके परिचित स्वरूपों से अलग किया जाता है, 'चर्च' की यह धारणा, जिसकी मुझे आमतौर पर तब शायद ही ज़रूरत पड़ती थी जब मैं ऐसे गिरजाघरों के नीचे खड़ा होता था जिन्हें पहचानना अपने आप में आसान था, मुझे बार-बार याद करनी पड़ती थी ताकि मैं भूल न जाऊं, जैसे कि यहाँ आइवी लता के इस गुच्छे में मेहराब एक नुकीली खिड़की की थी, वहाँ पत्तियों का उभरा हुआ भाग एक स्तंभ के नीचे की ओर फैले उभार के कारण था। फिर हवा का एक झोंका आया और चलते-फिरते बरामदे में कंपन पैदा कर दिया, जो प्रकाश की बाढ़ की तरह उछलते और कांपते भंवरों से भर गया; नुकीली पत्तियाँ एक-दूसरे से टकराकर खुल गईं; और कांपते हुए, वृक्षों से घिरा अग्रभाग अपने पीछे लहराते, सहलाते और क्षणभंगुर हरे खंभों को खींच ले गया।

चर्च से निकलते ही मैंने पुराने पुल के पास गाँव की कुछ लड़कियों का एक समूह देखा, जो शायद रविवार होने के कारण अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने खड़ी थीं और वहाँ से गुज़रने वाले युवकों को अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। उनमें से एक लंबी लड़की, जो बाकी लड़कियों जितनी सजी-धजी नहीं थी, लेकिन उन पर कुछ हद तक अपना दबदबा बनाए हुए थी—क्योंकि जब वे उससे बात करती थीं तो वह मुश्किल से ही जवाब देती थी—अधिक गंभीर और दृढ़ भाव से पुल की मुंडेर पर खड़ी थी, उसके पैर नीचे लटके हुए थे और उसकी गोद में मछलियों से भरा एक छोटा बर्तन था, जिसे उसने शायद अभी-अभी पकड़ा था। उसका रंग सांवला था, आँखें कोमल थीं लेकिन उनमें अपने आस-पास के माहौल के प्रति तिरस्कार का भाव था, उसकी नाक छोटी और नाजुक और आकर्षक

थी। मेरी नज़र उसकी त्वचा पर टिक गई; और अगर ज़रूरत पड़ती तो मेरे होंठ भी मेरी आँखों का अनुसरण कर सकते थे। लेकिन मैं केवल उसके शरीर को ही प्राप्त नहीं करना चाहता था, बल्कि उसके भीतर निवास करने वाले उसके व्यक्तित्व को भी प्राप्त करना चाहता था, जिसके साथ संपर्क का केवल एक ही तरीका है, अर्थात् उसका ध्यान आकर्षित करना, और उसके भीतर एक विचार को जागृत करना।

और उस मनमोहक मछुआरे-लड़की का यह अंतर्मन मेरे लिए अभी भी रहस्य बना हुआ था। मुझे संदेह था कि क्या मैं उसमें प्रवेश कर पाया था, यहाँ तक कि उसकी निगाहों के दोहरे दर्पणों में अपनी ही छवि को चुपके से प्रतिबिंबित होते हुए देखने के बाद भी, एक ऐसे अपवर्तनांक का अनुसरण करते हुए जो मेरे लिए उतना ही अज्ञात था मानो मुझे किसी हिरण की दृष्टि में रख दिया गया हो। लेकिन जिस प्रकार मेरे होठों को उसके होठों में आनंद मिलना ही पर्याप्त नहीं होता, उसे भी आनंद देना आवश्यक था, उसी प्रकार मैं चाहता था कि मेरे बारे में जो विचार इस प्राणी में प्रवेश करे, वह उसमें समा जाए, न केवल उसका ध्यान आकर्षित करे बल्कि उसकी प्रशंसा, उसकी इच्छा को भी आकर्षित करे और उसे मुझे अपनी स्मृति में तब तक रखने के लिए विवश करे जब तक कि मैं उससे दोबारा न मिल सकूँ। इस बीच, मैं कुछ ही दूरी पर वह चौक देख सकता था जहाँ श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी मेरा इंतजार कर रही होगी। मेरे पास एक पल भी गंवाने का समय नहीं था; और मैं पहले ही महसूस कर सकता था कि लड़कियाँ मुझे इस प्रकार अपने सामने लटका हुआ देखकर हँसने लगी थीं। मेरी जेब में पाँच फ़्रैंक का सिक्का था। मैंने उसे निकाला और लड़की को अपना काम समझाने से पहले, ताकि वह मेरी बात ध्यान से सुने, मैंने सिक्के को कुछ पल के लिए उसकी आँखों के सामने रखा।

मैंने उससे कहा, "चूंकि आप यहीं की लगती हैं, तो क्या आप मेरे लिए एक संदेश पहुंचा देंगी? मैं चाहती हूं कि आप एक पेस्ट्री बनाने वाले के पास जाएं—जो शायद एक चौक में है, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह कहां है—जहां मेरे लिए एक घोड़ागाड़ी इंतज़ार कर रही है। एक पल रुकिए! पूरी तरह से सुनिश्चित करने के लिए, क्या आप पूछ लेंगी कि घोड़ागाड़ी मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस की है? वैसे, आप उसे पहचान ही लेंगी; वह घोड़ागाड़ी है।"

मैं यही चाहता था कि वह यह बात जान ले, ताकि वह मुझे एक महत्वपूर्ण व्यक्ति समझे। लेकिन जैसे ही मैंने 'मार्क्विस' और 'गाड़ी और जोड़ी' शब्द कहे, अचानक मुझे एक गहरी शांति का अनुभव हुआ। मुझे लगा कि मछुआरे की बेटी मुझे याद रखेगी, और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं गायब हो रहा हूँ, उससे दोबारा न मिल पाने के डर के साथ-साथ उससे मिलने की मेरी इच्छा भी गायब हो रही है। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अदृश्य होठों से उसके शरीर को छूने में सफल हो गया हूँ, और मैंने उसे प्रसन्न कर दिया है। और उसके मन पर यह आक्रमण और कब्जा, यह अमूर्त अधिकार, उसके रहस्य का एक हिस्सा उससे छीन रहा था, ठीक वैसे ही जैसे भौतिक अधिकार छीन लेता है।

हम हुडिमेस्निल की ओर नीचे आ रहे थे; अचानक मैं उस गहरी खुशी से भर गया जो मैंने कॉम्ब्रे के बाद से शायद ही कभी महसूस की थी; वैसी ही खुशी जैसी मुझे मार्टिनविले के चर्चों ने दी थी। लेकिन इस बार यह अधूरी रह गई। मैंने अभी-अभी, जिस खड़ी पहाड़ी से हम गुजर रहे थे, उससे थोड़ी दूर पीछे खड़े होकर, तीन पेड़ देखे थे, जो शायद किसी छायादार रास्ते के प्रवेश द्वार को चिह्नित कर रहे थे, और एक ऐसा पैटर्न बना रहे थे जिसे मैं अब पहली बार नहीं देख रहा था; मैं उस जगह को फिर से याद नहीं कर सका जहाँ से वे, मानो, अलग हो गए थे, लेकिन मुझे लगा कि

वह जगह कभी मेरे लिए जानी-पहचानी थी; इस तरह मेरा मन किसी दूर के वर्ष और वर्तमान क्षण के बीच डगमगाता रहा, बालबेक और उसके आसपास का इलाका धुंधला होने लगा और मैंने खुद से पूछा कि क्या यह पूरी यात्रा एक कल्पना मात्र तो नहीं है, बालबेक एक ऐसी जगह है जहाँ मैं कल्पना के अलावा कभी नहीं गया, मैडम। डी विलेपारिस एक कहानी का पात्र है और तीन पुराने पेड़ उस वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे कोई व्यक्ति उस किताब से अपनी निगाहें उठाने पर पुनः प्राप्त करता है जिसे वह पढ़ रहा होता है और जो एक ऐसे वातावरण का वर्णन करती है जिसमें व्यक्ति को यह विश्वास हो जाता है कि उसे शारीरिक रूप से स्थानांतरित कर दिया गया है।

मैंने तीनों पेड़ों को देखा; वे मुझे साफ़ दिखाई दे रहे थे, लेकिन मेरे मन को लगा कि वे कुछ छिपा रहे हैं जिसे वह समझ नहीं पा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे कोई चीज़ हमारी पहुँच से दूर रखी हो, जिससे हमारी उंगलियाँ, जब हम उन्हें पूरी लंबाई तक फैलाते हैं, तो केवल एक पल के लिए उनकी बाहरी सतह को छू पाती हैं और कुछ भी पकड़ नहीं पातीं। फिर हम थोड़ी देर आराम करते हैं, और फिर नई ऊर्जा के साथ अपना हाथ आगे बढ़ाते हैं, और एक-दो इंच और आगे पहुँचने की कोशिश करते हैं। लेकिन अगर मेरे मन को इस तरह खुद को समेटना था, शक्ति जुटानी थी, तो मुझे अकेले रहना होगा। काश मैं वैसे ही भाग पाता जैसे मैं गुएरमांटेस मार्ग पर सैर करते समय अपने माता-पिता से अलग होकर भागता था! ऐसा लग रहा था कि मुझे अब ऐसा ही करना चाहिए। मैंने उस तरह के आनंद को पहचाना जिसके लिए, यह सच है कि मन को कुछ प्रयास करना पड़ता है, लेकिन जिसकी तुलना में उस निष्क्रियता का आकर्षण बहुत कम लगता है जो हमें उस आनंद को त्यागने के लिए प्रेरित करती है। वह आनंद, जिसका एहसास मुझे धुंधला सा ही हो रहा था, वह आनंद जिसे मुझे खुद

पैदा करना था, मुझे कभी-कभार ही मिलता था, लेकिन हर बार मुझे ऐसा लगता था कि इस बीच जो कुछ भी हुआ वह नगण्य था, और केवल उस आनंद की वास्तविकता से जुड़कर ही मैं अंततः एक नया जीवन शुरू कर सकता था। मैंने एक पल के लिए अपनी आँखों पर हाथ रखा, ताकि श्रीमती डी विलेपारिसिस को पता न चले। मैं वहाँ बैठा रहा, कुछ सोचे बिना, फिर अपने विचारों को समेटकर, संकुचित और मजबूत करके मैं पेड़ों की दिशा में, या यूँ कहें कि उस विपरीत दिशा में, जहाँ मैं उन्हें अपने भीतर उगते हुए देख सकता था, आगे बढ़ा। मुझे उनके पीछे फिर से वही वस्तु दिखाई दी, जो मुझे ज्ञात थी फिर भी अस्पष्ट थी, जिसे मैं निकट नहीं ला सकता था। और फिर भी, जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ी, वे तीनों मुझे अपनी ओर आते हुए दिखाई दिए। मैंने उन्हें पहले कहाँ देखा था? कॉम्ब्रे के पास ऐसी कोई जगह नहीं थी जहाँ सड़क से इस तरह कोई रास्ता खुलता हो। जिस जगह की याद मुझे आई, जर्मनी के उस इलाके के नज़ारे में भी उसका कोई स्थान नहीं था, जहाँ मैं एक साल अपनी दादी के साथ जलपान करने गया था। तो क्या मुझे यह मान लेना चाहिए कि वे मेरे जीवन के इतने पुराने वर्षों से आए थे कि उनसे जुड़ा परिदृश्य मेरी स्मृति से पूरी तरह मिट गया था, और ठीक वैसे ही जैसे किसी किताब के पन्ने, जिन्हें हमने कभी पढ़ा ही नहीं था, अचानक भावनाओं से भर कर पहचान लेते हैं, वे मेरे बचपन के भूले हुए अध्याय से अपने आप उभर आए थे? क्या वे उन स्वप्नलोकों में गिने जाने योग्य नहीं थे, जो हमेशा एक जैसे ही रहते थे, कम से कम मेरे लिए, जिनके अपरिचित स्वरूप मेरे सपनों में उस प्रयास का वस्तुनिष्ठ रूप मात्र थे जो मैं जागते हुए कर रहा था, या तो उस स्थान के रहस्य को भेदने के लिए जिसके बाहरी स्वरूप के नीचे मुझे अस्पष्ट रूप से कुछ और होने का आभास था, जैसा कि मेरे साथ अक्सर गुएरमांटेस मार्ग पर हुआ था, या उस स्थान में रहस्य को

वापस लाने में सफल होने के लिए जिसे मैं जानने के लिए तरस रहा था और जो, जिस दिन से मैंने इसे जाना था, मुझे बालबेक की तरह पूरी तरह से सतही प्रतीत होता था? या वे पिछली रात के सपने से ताज़ा निकाली गई एक छवि मात्र थे, लेकिन इतनी घिसी-पिटी, इतनी परिवर्तित कि मुझे ऐसा लगता था कि वे कहीं बहुत दूर से आई हैं? या वास्तव में मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था? क्या उन्होंने अपनी सतह के नीचे, पेड़ों की तरह, घास के उन गुच्छों की तरह जिन्हें मैंने गुएरमांटेस मार्ग के किनारे देखा था, कोई ऐसा अर्थ छिपा रखा था जो उतना ही अस्पष्ट, उतना ही कठिन था जितना कि दूर का अतीत, कि जहाँ वे मुझसे एक नए विचार को आत्मसात करने की विनती कर रहे थे, वहीं मुझे लगा कि मुझे अपनी स्मृति में कुछ पहचानना होगा? या फिर वे कोई छिपा हुआ विचार नहीं छिपा रहे थे, और क्या यह केवल मेरी कमजोर दृष्टि थी जिसने मुझे उन्हें समय में दोहरा दिखाया, जैसे कभी-कभी कोई चीज़ अंतरिक्ष में दोहरा दिखाई देती है? मैं बता नहीं सकता था। और फिर भी हर समय वे मेरी ओर आ रहे थे; शायद कोई काल्पनिक प्रेत, चुड़ैलों या अप्सराओं का एक समूह जो मुझे अपने भविष्यवाणियाँ सुना रहे थे। मैंने यह मानना बेहतर समझा कि वे अतीत के प्रेत थे, मेरे बचपन के प्यारे साथी, बिछड़े हुए दोस्त जो हमारी साझा यादों को याद दिला रहे थे। भूतों की तरह वे मुझसे उन्हें अपने साथ ले जाने, उन्हें फिर से जीवित करने की अपील कर रहे थे। उनकी सरल, भावपूर्ण भाव-भंगिमाओं में मैं एक प्रिय व्यक्ति की असहाय पीड़ा को देख सकता था, जिसने बोलने की शक्ति खो दी थी, और महसूस करता था कि वह हमसे कभी भी वह नहीं कह पाएगा जो वह कहना चाहता है और हम कभी भी उसका अनुमान नहीं लगा सकते। तभी, एक चौराहे पर, गाड़ी उन्हें छोड़कर चली गई। वह मुझे उस चीज़ से दूर ले जा रही थी जिसे मैं अकेला सत्य मानता था, जो मुझे वास्तव में

खुश कर सकती थी; वह मेरे जीवन के समान थी।

मैंने पेड़ों को धीरे-धीरे पीछे हटते देखा, मानो वे अपनी निराशा भरी भुजाएँ लहरा रहे हों, मुझसे कह रहे हों: "जो तुम आज हमसे नहीं सीख पाए, वह तुम कभी नहीं जान पाओगे। यदि तुम हमें उस सड़क के खोखलेपन में वापस गिरने दोगे जहाँ से हम तुम्हारे पास आने की कोशिश कर रहे थे, तो तुम्हारा वह हिस्सा जो हम तुम्हारे लिए ला रहे थे, हमेशा के लिए खाई में गिर जाएगा।" और सचमुच, यदि समय के साथ, मुझे फिर से वही सुख और बेचैनी का अनुभव हो जाए जो मैंने अभी महसूस किया था, और यदि एक शाम—बहुत देर हो चुकी हो, लेकिन हमेशा के लिए—मैं उससे जुड़ जाऊँ, तो भी मैं उन पेड़ों के बारे में कभी नहीं जान पाऊँगा कि वे मुझे क्या देने की कोशिश कर रहे थे और मैंने उन्हें और कहाँ देखा था। और जब सड़क दो भागों में बँट गई और गाड़ी भी, मैंने उनसे मुँह मोड़ लिया और उन्हें देखना बंद कर दिया, और श्रीमती डी विलेपारिसिस मुझसे पूछ रही थीं कि मैं क्या सपना देख रहा हूँ, तो मैं इतना दुखी था मानो मैंने अभी-अभी किसी मित्र को खो दिया हो, खुद मर गया हो, मृतकों के प्रति आस्था तोड़ दी हो या अपने ईश्वर को नकार दिया हो।

घर की याद आने का समय आ गया था। श्रीमती डी विलेपारिसिस, जिन्हें प्रकृति से विशेष लगाव था, मेरी दादी की तुलना में कुछ अधिक उदासीन, लेकिन संग्रहालयों और रईसों के घरों के बाहर भी, कुछ पुरानी और पूजनीय चीजों की सरल और भव्य सुंदरता को पहचानने में सक्षम थीं, उन्होंने अपने कोचवान को हमें पुराने बालबेक मार्ग से वापस ले जाने के लिए कहा, एक ऐसा मार्ग जिसका उपयोग कम होता था लेकिन पुराने एल्म के पेड़ों से भरा हुआ था - जो हमें काफी प्रशंसनीय लगे।

एक बार जब हम इस रास्ते से परिचित हो गए, तो बदलाव के लिए हम वापस उसी रास्ते से लौटते—यदि हमने जाते समय यह रास्ता न लिया

होता—जो चैंटेरीन और कैंटेलूप के जंगलों से होकर गुजरता था। पेड़ों पर हमारे ठीक बगल में एक-दूसरे का गीत गाते अनगिनत पक्षियों की अदृश्यता ने मुझे वही शांति का अनुभव कराया जो आँखें बंद करने पर होता है। प्रोमेथियस की तरह अपनी चट्टान पर जकड़ा हुआ, मैं अपनी कार की पिछली सीट से बंधा हुआ ओशनिड्स का गीत सुन रहा था। और जब कभी मैंने उनमें से एक पक्षी को एक पत्ते से दूसरे पत्ते पर जाते हुए देखा, तो उसका उन गीतों से इतना कम संबंध था कि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं उस नन्हे से शरीर में, फड़फड़ाते हुए, चौंकते हुए और कुछ न देख पाने की अवस्था में, उन गीतों के पीछे छिपे अर्थ को देख रहा हूँ।

यह सड़क फ्रांस में पाई जाने वाली इसी तरह की कई अन्य सड़कों जैसी थी, जो शिखर तक काफी खड़ी ढलान पर चढ़ती थी और फिर बाकी रास्ते में धीरे-धीरे नीचे उतरती थी। उस समय, मुझे इसमें कोई खास आकर्षण नहीं लगा, मैं बस घर जाने की खुशी महसूस कर रहा था। लेकिन बाद में यह मेरे लिए खुशी का एक लगातार स्रोत बन गई, क्योंकि यह मेरी स्मृति में एक चुंबक की तरह बसी रही, जिससे मेरे द्वारा तय की जाने वाली सभी समान सड़कें, चाहे पैदल यात्रा हो, गाड़ी चलाना हो या सफर, बिना किसी रुकावट के जुड़ जाती थीं और इसके कारण सीधे मेरे दिल से संवाद कर पाती थीं। क्योंकि जैसे ही गाड़ी या मोटर-कार इनमें से किसी एक सड़क पर मुड़ती थी, जो मुझे उस सड़क का ही विस्तार लगती थी जिस पर मैं श्रीमती के साथ यात्रा कर रहा था... डी विलेपारिसिस, जिस विषय पर मेरी चेतना सीधे तौर पर ध्यान केंद्रित कर रही थी, वह मेरे अतीत की सबसे हाल की घटना थी (बीच के सभी वर्षों को चुपचाप मिटाते हुए) बालबेक के आसपास गाड़ी चलाते हुए उन चमकदार गर्मी की दोपहरों और शामों की छाप, जब पत्तियों से मनमोहक खुशबू आती थी,

जमीन से धुंध उठती थी, और पास के गांव के परे पेड़ों के बीच से सूरज को डूबते हुए देखा जा सकता था मानो वह सड़क पर कहीं दूर, एक जंगल में हो, जहां उस शाम हमारे पास पहुंचने का समय नहीं था। अब मैं एक दूसरी जगह पर, एक ऐसी ही सड़क पर, गहरी साँसें लेने, जिज्ञासा, आलस्य, भूख, मन की हल्कापन जैसी सभी सहायक संवेदनाओं से घिरा हुआ था, जो उन दोनों में समान थीं, और बाकी सभी को छोड़कर, मैं जो महसूस कर रहा था, उससे सामंजस्य बिठाते हुए, ये छापें और मजबूत हो जातीं, एक विशेष प्रकार के आनंद की निरंतरता ले लेतीं, और लगभग जीवन के एक ऐसे परिवेश का रूप ले लेतीं, जिससे संयोगवश मुझे शायद ही कभी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो, लेकिन जिसमें ये जागृत स्मृतियाँ, मेरी इंद्रियों द्वारा अनुभव की जा सकने वाली वास्तविकता के बीच, एक ऐसी वास्तविकता का एक बड़ा हिस्सा रखती हैं, जिसे सुझाया गया हो, स्वप्न देखा गया हो, अकल्पनीय हो, जो मुझे उन क्षेत्रों के बीच, जिनसे मैं गुजर रहा था, एक सौंदर्यबोध से कहीं अधिक, वहाँ रहने और हमेशा के लिए वहाँ जीने की एक क्षणिक लेकिन उदात्त महत्वाकांक्षा प्रदान करती है। तब से कितनी बार, केवल इसलिए कि मैं हरी पत्तियों की गंध महसूस कर सकता था, श्रीमती के सामने पिछली सीट पर बैठे रहना... डी विलेपारिसिस का प्रिंसेस डी लक्जमबर्ग से मिलना, जिन्होंने अपनी गाड़ी से उन्हें अभिवादन किया, और फिर ग्रैंड होटल में रात के खाने के लिए वापस आना, मुझे उन अवर्णनीय खुशियों में से एक प्रतीत हुआ, जिन्हें न तो वर्तमान और न ही भविष्य हमें वापस दे सकता है, जिनका स्वाद हम जीवन में केवल एक बार ही ले सकते हैं।

अक्सर होटल पहुँचने से पहले ही शाम हो जाती थी। मैं दबे स्वर में श्रीमती डी विलेपारिसिस को आकाश में चाँद की ओर इशारा करते हुए, शैतोब्रिआंड, विग्नी या विक्टर ह्यूगो की कुछ यादगार पंक्तियाँ सुनाता था:

'उदासी के उस प्राचीन रहस्य को बिखेरते हुए' या 'अपनी नदियों के किनारे डायना की तरह रोते हुए' या 'विवाह की, गंभीर और भव्य छायाएँ'।

"तो आपको लगता है कि यह अच्छा है, है ना?" वह पूछती, "प्रेरित, जैसा कि आप इसे कहते हैं। मुझे स्वीकार करना होगा कि आजकल लोगों को उन चीजों को गंभीरता से लेते देखकर मुझे हमेशा आश्चर्य होता है, जिन पर उन सज्जनों के मित्र, उनकी खूबियों के साथ पूरा न्याय करते हुए भी, सबसे पहले हँसते थे। लोग तब 'प्रेरित' शब्द का इतना खुलकर इस्तेमाल नहीं करते थे जितना अब करते हैं, जब अगर आप किसी लेखक से कहें कि उसमें केवल प्रतिभा है तो वह सोचता है कि आप उसका अपमान कर रहे हैं। आपने मुझे एम. डी. चैटोब्रिएंड की चांदनी के बारे में एक सुंदर रचना सुनाई। आप देखेंगे कि मेरे अड़ियल होने के अपने कारण हैं। एम. डी. चैटोब्रिएंड अक्सर मेरे पिता से मिलने आते थे। जब आप उनके साथ अकेले होते थे तो वह काफी सुखद व्यक्ति होते थे, क्योंकि तब वह सरल और मनोरंजक होते थे, लेकिन जैसे ही उन्हें कोई सुनने वाला मिलता, वह दिखावा करने लगते और फिर हास्यास्पद हो जाते; जब मेरे पिता कमरे में होते, तो वह ऐसा नाटक करते कि उन्होंने राजा के मुंह पर अपना इस्तीफा फेंक दिया है और उन्होंने कॉन्क्लेव में मतदान को नियंत्रित किया है, यह भूलकर कि यह मेरे पिता ही थे जिनसे उन्होंने राजा से उन्हें वापस लेने की विनती करने को कहा था। और मेरे पिता ने उन्हें पोप चुनाव के बारे में सबसे बेवकूफी भरी भविष्यवाणियाँ करते सुना था। आपको उस प्रसिद्ध कॉन्क्लेव में एम. डी ब्लाकास को सुनना चाहिए था; वे एम. डी चेटोब्रिएंड से बिल्कुल अलग तरह के इंसान थे। जहाँ तक चाँद के बारे में उनके सुंदर वाक्यों की बात है, वे हमारे मेहमानों के मनोरंजन के नियमित कार्यक्रम का हिस्सा बन गए थे। जब भी घर में चाँदनी होती, अगर कोई पहली बार हमारे यहाँ ठहरता, तो उसे रात के खाने के बाद एम. डी चेटोब्रिएंड को

टहलने के लिए ले जाने को कहा जाता। जब वे वापस आते, तो मेरे पिता अपने मेहमान को एक तरफ ले जाकर कहते: 'अच्छा, और क्या एम. डी चेटोब्रिएंड बहुत वाक्पटु थे?' - 'हाँ, बिल्कुल।' 'क्या वो चाँद के बारे में बात कर रहे थे?'—'हाँ, आपको कैसे पता चला?'—'एक पल रुकिए, क्या उन्होंने ये नहीं कहा था—' और फिर मेरे पिताजी उस अंश को दोहराते। 'उन्होंने कहा था; लेकिन कैसे...?'—'और उन्होंने आपसे रोमन कैम्पाग्ना पर चाँदनी के बारे में बात की थी?'—'लेकिन, मेरे प्रिय महोदय, आप तो जादूगर हैं।' मेरे पिताजी कोई जादूगर नहीं थे, लेकिन एम. डी. चेटोब्रियांड के पास चाँद के बारे में वही छोटा सा भाषण होता था जो वे हर बार सुनाते थे।

विग्नी का नाम सुनते ही वह हंस पड़ीं: "वह आदमी जिसने कहा था: 'मैं कॉम्टे अल्फ्रेड डी विग्नी हूँ!' कोई या तो कॉम्टे होता है या नहीं होता; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।" और फिर शायद उन्हें एहसास हुआ कि यह कुछ हद तक महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन्होंने आगे कहा: "एक बात तो यह है कि मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि वह कॉम्टे थे, और वैसे भी वह सबसे साधारण परिवार से थे, वह सज्जन जो अपनी कविताओं में अपने 'एस्क्वायर के प्रतीक चिन्ह' की बात करते हैं। कितना आकर्षक अंदाज है, है ना, और उनके पाठकों के लिए कितना दिलचस्प! मुसेट की तरह, एक साधारण पेरिसवासी, जिसने 'मेरे हेलमेट पर विराजमान सुनहरे बाज़' पर इतना ज़ोर दिया था।" मानो आप कभी किसी सच्चे सज्जन को ऐसी बात कहते हुए सुनेंगे! फिर भी, मुसेट में कवि के रूप में कुछ प्रतिभा तो थी। लेकिन 'सिंक-मार्स' को छोड़कर मैं एम. डी विग्नी की कोई रचना पढ़ ही नहीं पाई। मैं इतनी ऊब जाती हूँ कि किताब मेरे हाथों से गिर जाती है। एम. मोल, जिनमें एम. डी विग्नी की सारी चतुराई और सूझबूझ थी, ने अकादमी में उनका स्वागत करते हुए उन्हें उनकी औकात दिखा दी। क्या

आपका मतलब है कि आप वह भाषण नहीं जानते? वह व्यंग्य और धृष्टता की उत्कृष्ट कृति है। उन्होंने बाल्ज़ाक की आलोचना की, जिन्हें देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनके भतीजे उनकी प्रशंसा करते हैं, क्योंकि उन्होंने एक ऐसे समाज का वर्णन करने का दिखावा किया था 'जिसमें उन्हें कभी स्वीकार नहीं किया गया' और जिसके बारे में उनके वर्णन पूरी तरह से अविश्वसनीय थे। विक्टर ह्यूगो के बारे में उन्होंने हमें बताया कि उनके पिता एम. डी. बौइलन, जिनके रोमांटिक आंदोलन के युवा नेताओं में मित्र थे, उनमें से कुछ लोगों द्वारा हरनानी के पहले प्रदर्शन में ले जाए गए थे, लेकिन वे इसे पूरा नहीं देख पाए थे, क्योंकि उन्हें उस प्रतिभाशाली लेकिन अतिरंजित लेखक की पंक्तियाँ इतनी हास्यास्पद लगी थीं, जिसने केवल एक सौदे के कारण और समाजवादियों की खतरनाक गलतियों के प्रति दिखाए गए निस्वार्थ समर्थन के पुरस्कार के रूप में 'प्रमुख कवि' की उपाधि प्राप्त की थी।

अब हम होटल के नज़दीक आ गए थे, जिसकी रोशनी, जो पहली शाम हमारे आगमन पर इतनी शत्रुतापूर्ण लग रही थी, अब सुरक्षात्मक और दयालु लग रही थी, मानो हमें घर की याद दिला रही हो। और जब गाड़ी दरवाज़े के बाहर आकर रुकी, तो कुली, नौकर, लिफ्ट-बॉय - चौकस, अनाड़ी, हमारी देरी से थोड़ा असहज - अब परिचित हो चुके थे, और उन लोगों में गिने जाने लगे थे जो हमारे जीवन में कई बार बदलते हैं, जैसे हम स्वयं बदलते हैं, लेकिन जब वे कुछ समय के लिए हमारी आदतों का दर्पण होते हैं, तो हमें यह एहसास आकर्षक लगता है कि हम ईमानदारी से और मैत्रीपूर्ण भाव से प्रतिबिंबित हो रहे हैं। हम उन्हें उन दोस्तों से ज़्यादा पसंद करते हैं जिनसे हम कुछ समय से नहीं मिले हैं, क्योंकि उनमें हमारे वास्तविक स्वरूप की झलक मिलती है। केवल बाहर का वह व्यक्ति, जो दिन भर धूप में रहता था, उसे ठंडी रात की हवा से बचाने के

लिए अंदर लाया गया था और मोटे ऊनी वस्त्रों में लपेटा गया था। उसके नारंगी रंग के बालों और गालों की अनोखी लालिमा के साथ, उसे हॉल के कांच के सामने से देखने पर ऐसा लगता था मानो किसी ग्रीनहाउस में रखे पौधे को पाले से बचाने के लिए लपेट दिया गया हो। हम गाड़ी से उतरे, आवश्यकता से कहीं अधिक नौकरों की मदद से, लेकिन वे इस दृश्य के महत्व से अवगत थे और प्रत्येक ने इसमें कुछ न कुछ भूमिका निभाने का दायित्व महसूस किया। मुझे हमेशा बहुत भूख लगती थी। इसलिए, अक्सर, भोजन का इंतज़ार न कराने के लिए, मैं पहले ऊपर उस कमरे में नहीं जाता था जो वास्तव में मेरा हो गया था, जहाँ उसके लंबे बैंगनी पर्दों और नीची किताबों की अलमारियों को देखते ही मैं फिर से उस स्वयं के साथ अकेला हो जाता था जिसकी छवि, लोगों की तरह, मुझे दिखाई देती थी; बल्कि हम सभी हॉल में तब तक एक साथ इंतज़ार करते थे जब तक कि मुख्य वेटर आकर हमें यह न बता दे कि हमारा भोजन तैयार है। और इससे हमें श्रीमती की बातें सुनने का एक और अवसर मिल जाता था। डी विलेपारिसिस।

"लेकिन अब तक तो तुम हमसे तंग आ चुके होगे," मेरी दादी ने विरोध करते हुए कहा।

"बिल्कुल नहीं! मैं तो बहुत खुश हूँ, इससे बेहतर और क्या हो सकता है?" उसकी सहेली ने मनमोहक मुस्कान के साथ जवाब दिया, और अपने शब्दों को इस तरह से खींचकर बोला, मानो स्वर में कह रही हो, जो उसकी बोलने की सामान्य सरलता से बिल्कुल विपरीत था।

और सचमुच ऐसे क्षणों में वह स्वाभाविक नहीं रहती थी, उसका मन अपनी प्रारंभिक शिक्षा की ओर लौट जाता था, उस कुलीन शिष्टाचार की ओर जिसमें एक उच्च महिला से अपेक्षा की जाती है कि वह आम लोगों को यह दिखाए कि वह उनसे मिलकर प्रसन्न है, कि वह बिल्कुल भी

रूढ़िवादी नहीं है। और सच्ची शिष्टता में उसकी एकमात्र विफलता इसी अतिशय शिष्टता में निहित थी; जिसे फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की एक महिला की पेशेवर 'कमजोरी' के रूप में आसानी से पहचाना जा सकता था, जो हमेशा अपने साधारण मित्रों में उस अंतर्निहित असंतोष को देखती है जिसे वह एक दिन उनके मन में जगाएगी, और लालच से हर उस अवसर का लाभ उठाती है जिसमें वह अपने सामाजिक खाते में उनके साथ अपने संबंधों का हिसाब रखते हुए, एक क्रेडिट बैलेंस लिख सके जिससे वह तुरंत उस रात्रिभोज या स्वागत समारोह का उल्लेख कर सके जिसमें वह उन्हें आमंत्रित नहीं करेगी। और इसलिए, बहुत पहले ही उन पर अपना प्रभाव डाल चुकीं, और इस तथ्य को अनदेखा करते हुए कि अब परिस्थितियाँ और संबंधित लोग दोनों अलग थे, कि पेरिस में उन्हें उम्मीद थी कि हम अक्सर उनके घर आएंगे, उनकी जाति की भावना श्रीमती डी विलेपारिसिस को अत्यधिक उत्साह से प्रेरित कर रही थी, और मानो हमारे प्रति दयालु होने के लिए उन्हें दिया गया समय सीमित था, कि जब तक हम बालबेक में थे, तब तक वे गुलाब और खरबूजे के उपहार, पुस्तकों के उधार, अपनी गाड़ी में सैर और स्नेहपूर्ण बातों की प्रचुरता को बढ़ाती रहें। और इसी कारण से, समुद्र तट की चकाचौंध भरी सुंदरता, कमरों की बहुरंगी भव्यता और जलमग्न प्रकाश, यहाँ तक कि घुड़सवारी के वे पाठ जिनसे व्यापारियों के बेटों को मैसेडोन के सिकंदर की तरह देवता का दर्जा प्राप्त होता था, श्रीमती डी विलेपारिसिस द्वारा हम पर दिखाई गई दैनिक दयालुता और साथ ही वह असामान्य, क्षणिक, अवकाशकालीन सहजता जिसके साथ मेरी दादी ने उन्हें स्वीकार किया, मेरी स्मृति में एक जलपान-स्थल के जीवन के विशिष्ट उदाहरण के रूप में बने हुए हैं।

"अपने लबादे उन्हें दे दो ताकि वे उन्हें ऊपर ले जा सकें।"

मेरी दादी ने अपना सामान मैनेजर को दे दिया, और क्योंकि वह मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार कर रहा था, इसलिए मुझे उसकी इस उपेक्षा से दुख हुआ, जिससे उसे भी दुख हुआ।

"मुझे लगता है तुमने उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई है," मार्क्विज़ ने कहा। "शायद वह खुद को इतना बड़ा सज्जन समझते हैं कि तुम्हारे कपड़े ढोना उन्हें गवारा नहीं। मुझे ड्यूक डी नेमर्स अच्छी तरह याद हैं, जब मैं बहुत छोटी थी, तब वह मेरे पिता से मिलने आए थे, जो उस समय बौइलन हाउस की सबसे ऊपरी मंजिल पर रहते थे, और उनके हाथ में पत्रों और अखबारों से भरा एक मोटा सा पार्सल था। मैं राजकुमार को अभी भी देख सकती हूँ, अपने नीले कोट में, हमारे दरवाजे पर खड़े, जिसके चारों ओर बहुत सुंदर लकड़ी का काम था—मुझे लगता है कि यह बगार्ड ने बनाया था—तुम्हें पता है ना, वे महीन पट्टियाँ जो वे काटते थे, इतनी लचीली कि बढ़ई कभी-कभी उन्हें मोड़कर छोटे-छोटे गोले और फूल बना देता था, जैसे गुलदस्ते के चारों ओर रिबन। 'लो, साइरस,' उन्होंने मेरे पिता से कहा, 'देखो, तुम्हारे कुली ने तुम्हारे लिए क्या लाया है।' उन्होंने मुझसे कहा: "चूँकि तुम काउंट से मिलने जा रही हो, तो मेरे लिए उन सारी सीढ़ियों पर चढ़ना व्यर्थ है; लेकिन ध्यान रखना कि रस्सी न टूट जाए। अब जब तुमने अपना सामान हटा दिया है, तो बैठ जाओ; देखो, इस सीट पर बैठो," उसने मेरी दादी का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"ओह, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो उसमें नहीं! उसमें दो लोगों के लिए जगह नहीं है, और वह मेरे लिए अकेले बहुत बड़ा है; मुझे उसमें आराम नहीं मिलेगा।"

"आप मुझे याद दिला रही हैं, क्योंकि यह बिल्कुल ऐसा ही था, एक कुर्सी जो मेरे पास कई वर्षों तक रही, जब तक कि अंत में मैं उसे और नहीं रख सकी क्योंकि वह मेरी माँ को बेचारी डचेस डी प्रास्लिन ने दे दी थी। मेरी

माँ, हालाँकि वह दुनिया की सबसे सरल इंसान थीं, वास्तव में, उनके विचार एक अलग पीढ़ी के थे, जिन्हें मैं उन दिनों भी मुश्किल से समझ पाती थी; और पहले तो वह मैडम डी प्रास्लिन से मिलने को बिल्कुल भी तैयार नहीं थीं, जो कि साधारण मैडम सेबेस्टियानी थीं, जबकि वह, एक डचेस होने के नाते, महसूस करती थीं कि मेरी माँ से उनका परिचय कराना उनके लिए उचित नहीं है। और सच में, आप जानती हैं," मैडम... डी विलेपारिसिस यह भूलकर बोलती रहीं कि उन्हें स्वयं इन सूक्ष्म भेदों की समझ नहीं थी, "भले ही वह केवल श्रीमती डी चोइसुल ही क्यों न होतीं, फिर भी उनके दावे में बहुत कुछ कहा जा सकता था। चोइसुल परिवार वह सब कुछ है जो आप चाह सकते हैं; वे लुई द फैट की बहन की संतान हैं; वे बासिग्नी में शासक राजकुमार थे। मैं मानती हूँ कि विवाह और प्रतिष्ठा के मामले में हम उनसे आगे हैं, लेकिन वरीयता लगभग समान ही है। इस छोटी सी कठिनाई ने कई मनोरंजक घटनाओं को जन्म दिया, जैसे कि एक दोपहर के भोजन की पार्टी जिसमें एक महिला को दूसरी से परिचय कराने का निर्णय लेने में पूरे एक घंटे या उससे अधिक समय लग गया। इसके बावजूद वे बहुत अच्छी दोस्त बन गईं, और उन्होंने मेरी माँ को एक ऐसी सीट दी, जिस पर लोग हमेशा बैठने से मना कर देते थे, ठीक वैसे ही जैसे आपने किया, जब तक कि एक दिन मेरी माँ ने आँगन में एक गाड़ी के आने की आवाज़ नहीं सुनी। उन्होंने हमारे एक युवा नौकर से पूछा कि कौन है। 'मैडम, डचेस डी ला रोशेफौकॉल्ड।' 'ठीक है, कहो कि मैं घर पर हूँ।' पंद्रह मिनट बीत गए; कोई नहीं आया। 'डचेस डी ला रोशेफौकॉल्ड कहाँ हैं?' मेरी माँ ने पूछा। 'वह कहाँ हैं?' 'वह सीढ़ियों पर हैं, महोदया, साँस ले रही हैं,' युवा नौकर ने कहा, जो हाल ही में गाँव से आई थी, जहाँ से मेरी माँ अपने सभी नौकरों को लाने की बेहतरीन आदत रखती थीं। अक्सर उन्होंने नौकरों को जन्म लेते देखा था। अच्छे नौकर

पाने का यही एकमात्र तरीका है। और वे सबसे दुर्लभ विलासिता हैं। और सचमुच डचेस डी ला रोशेफौकॉल्ड को ऊपर जाने में बहुत कठिनाई हुई, क्योंकि वह एक विशालकाय महिला थीं, इतनी विशालकाय कि जब वह कमरे में आईं तो मेरी माँ एक पल के लिए समझ नहीं पाईं कि उन्हें कहाँ बैठाएँ। और फिर श्रीमती डी प्रस्लिन द्वारा दी गई कुर्सी पर उनकी नज़र पड़ी। 'क्या आप बैठेंगी?' उसने उसे आगे बढ़ाते हुए कहा। और डचेस उसे पूरी तरह से भर बैठी। अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद वह काफी मिलनसार महिला थीं। हमारे एक दोस्त ने एक बार कहा था, 'जब वह आती हैं तो आज भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं।' मेरी माँ, जो आजकल के हिसाब से कहीं ज़्यादा बेबाक बोलती थीं, ने कहा, 'जब वह जाती हैं तो भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं।' यहाँ तक कि श्रीमती डी ला रोशेफौकॉल्ड के ड्राइंग रूम में भी लोग उनके भारी-भरकम शरीर का मज़ाक उड़ाने से नहीं हिचकिचाते थे (जिस पर वह हमेशा सबसे पहले हँसती थीं)। एक बार मेरी दादी ने श्री डी ला रोशेफौकॉल्ड से पूछा, 'क्या आप अकेले हैं?' जब वह डचेस से मिलने आई थीं और दरवाज़े पर उनसे मिलने पर उन्हें उनकी पत्नी नहीं दिखीं, जो कमरे के दूसरे छोर पर थीं। 'क्या श्रीमती डी ला रोशेफौकॉल्ड घर पर नहीं हैं? मुझे तो वह दिख नहीं रही हैं।' - 'कितनी प्यारी बात है!' ड्यूक ने उत्तर दिया, "मेरी जानकारी में जितने भी लोग हैं, उनमें से ड्यूक का निर्णय सबसे खराब था, लेकिन उनमें हास्य की कमी बिल्कुल नहीं थी।"

रात के खाने के बाद, जब मैं अपनी दादी के साथ ऊपर चला गया, तो मैंने उनसे कहा कि श्रीमती डी विलेपारिसिस में जिन गुणों ने हमें आकर्षित किया, उनकी चतुराई, उनकी समझदारी, उनका विवेक, और खुद का ज़िक्र न करने की उनकी विनम्रता, शायद बहुत मायने नहीं रखतीं, क्योंकि ये गुण तो मोले और लोमेनी जैसे लोगों में ही सबसे ज़्यादा थे, और अगर

इनकी कमी से हमारे सामाजिक संबंध अप्रिय हो सकते हैं, तो भी इससे हमें शैतोब्रिएंड, विग्नी, ह्यूगो, बाल्ज़ाक जैसे मूर्ख, विवेकहीन लोगों जैसा बनने से नहीं रोका जा सका, जिन पर मज़ाक उड़ाना आसान था, जैसे ब्लोच... लेकिन ब्लोच का नाम सुनते ही मेरी दादी ने विरोध में आवाज़ उठाई। और उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस की प्रशंसा करना शुरू कर दिया। जैसा कि हमें बताया जाता है कि प्रजाति का संरक्षण ही प्रेम में हमारी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का मार्गदर्शन करता है, और ताकि बच्चे का सबसे सामान्य रूप से विकास हो सके, मोटे पुरुषों को दुबली महिलाओं की ओर और दुबली महिलाओं को मोटे पुरुषों की ओर आकर्षित करता है, उसी प्रकार किसी अस्पष्ट रूप में मेरी अव्यवस्थित नसों, उदासी और एकांत की ओर मेरी रोगग्रस्त प्रवृत्ति से खतरे में पड़ी मेरी खुशी की आवश्यकताओं ने ही उन्हें संतुलन और विवेक के गुणों को सर्वोच्च स्थान देने के लिए प्रेरित किया, जो न केवल श्रीमती डी विलेपारिसिस की विशेषता थी, बल्कि उस समाज की भी विशेषता थी जिसमें हमारे पूर्वजों ने डूडन, एम. डी रेमुसैट, ब्यूसेर्जेंट, जौबर्ट, सेविग्ने जैसे विद्वानों के दिमाग को विकसित होते देखा, एक ऐसा दिमाग जो जीवन को अधिक खुशी और अधिक गरिमा प्रदान करता है, उन विपरीत परिष्कारों की तुलना में जिन्होंने बॉडेलेयर, पो, वर्लेन, रिम्बो को कष्टों और बदनामी की ओर धकेल दिया, ऐसी बदनामी जो मेरी दादी अपनी बेटी के बच्चे के लिए नहीं चाहती थीं। मैंने उन्हें चुंबन देकर बीच में ही रोक दिया और उनसे पूछा कि क्या उन्होंने श्रीमती डी विलेपारिसिस के उस हावभाव पर ध्यान दिया था, जो एक ऐसी महिला की ओर इशारा करता था जो अपने कुलीन जन्म को जितना स्वीकार करती थी, उससे कहीं अधिक महत्व देती थी। इस तरह मैं अपने जीवन के अनुभवों को अपनी दादी के सामने रखती थी, क्योंकि जब तक वह मुझे बताती नहीं थीं, तब तक मुझे

यह निश्चित नहीं होता था कि किसी के प्रति कितना सम्मान दिखाना चाहिए। हर शाम मैं उनके पास उन सभी काल्पनिक लोगों की तस्वीरें लेकर आती थी जो उनके अलावा कोई और थे। एक बार मैंने उनसे कहा: "मैं आपके बिना जी नहीं सकती।" "लेकिन तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए," उनकी आवाज़ में चिंता थी। "हमें अपने दिल को इससे भी ज़्यादा कठोर बनाना होगा, तुम्हें पता है। वरना अगर मैं यात्रा पर चली जाऊं तो तुम्हारा क्या होगा? लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम समझदार और खुश रहोगी।"

"अगर तुम कुछ दिनों के लिए चले जाओ तो मैं समझदारी से काम ले सकता हूँ, लेकिन मुझे घंटों का हिसाब रखना होगा।"

"लेकिन अगर मैं महीनों के लिए दूर चला जाऊं..." (इस तरह की बात का ख्याल आते ही मेरा दिल दुख से भर गया) "...सालों के लिए..."

हम दोनों चुप रहे। हम एक-दूसरे की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। फिर भी, मैं अपनी पीड़ा से कहीं अधिक उसकी पीड़ा से पीड़ित था। इसलिए मैं खिड़की के पास गया और उससे जानबूझकर स्पष्ट स्वर में, लेकिन नज़रें झुकाए हुए कहा:

"आप जानते हैं कि मैं आदतों का कितना गुलाम हूँ। जिन लोगों से मैं सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ, उनसे बिछड़ने के बाद पहले कुछ दिन तो मैं बहुत दुखी रहता हूँ। लेकिन फिर भी मैं उनसे उतना ही प्यार करता रहता हूँ, उनकी अनुपस्थिति की मुझे आदत पड़ जाती है; जीवन शांत, सहनीय और सुखद हो जाता है; मैं महीनों, सालों तक उनसे बिछड़ने का दर्द सह सकता हूँ..."

मुझे रुकना पड़ा और मैंने सीधे खिड़की से बाहर देखा। मेरी दादी किसी काम से कमरे से बाहर गई थीं। लेकिन अगले दिन मैंने उनसे दर्शनशास्त्र के बारे में बात करना शुरू किया और पूरी तरह से उदासीनता भरे लहजे में

बोलते हुए, लेकिन साथ ही इस बात का भी ध्यान रखते हुए कि मेरी दादी मेरी बातों पर ध्यान दें, मैंने कहा कि यह कितनी विचित्र बात है कि नवीनतम वैज्ञानिक खोजों के अनुसार, भौतिकवादी विचारधारा ध्वस्त होती दिख रही है, और सबसे अधिक संभावना यही है कि आत्मा का अस्तित्व फिर से कायम रहेगा और शाश्वत जीवन में उसका पुनर्मिलन होगा।

श्रीमती डी विलेपारिसिस ने हमें आगाह किया कि फिलहाल वह हमसे ज्यादा मिल नहीं पाएंगी। उनका एक युवा भतीजा, जो सौमुर में दाखिले की तैयारी कर रहा था और इस बीच पास के ही डोनसिएरेस में तैनात था, कुछ हफ्तों की छुट्टी पर उनके पास आने वाला था, और वह अपना अधिकांश समय उसी को देंगी। साथ में गाड़ी चलाते समय उन्होंने हमें उसकी असाधारण बुद्धिमत्ता और सबसे बढ़कर उसके नेक दिल की तारीफ की थी; मैं पहले से ही कल्पना कर रहा था कि उसके मन में मेरे लिए एक सहज लगाव होगा, कि मैं उसका सबसे अच्छा दोस्त बनूंगा; और जब, उसके आने से पहले, उसकी चाची ने मेरी दादी को बताया कि दुर्भाग्य से वह एक भयानक महिला के चंगुल में फंस गया है, जिससे वह पूरी तरह मोहित था और जो उसे कभी जाने नहीं देगी, तो चूंकि मेरा मानना था कि इस तरह का प्यार मानसिक विकृति, अपराध और आत्महत्या में ही समाप्त होता है, यह सोचकर कि हमारी दोस्ती के लिए कितना कम समय बचा था, जो मेरे दिल में पहले से ही बहुत गहरी थी, हालांकि मैंने अभी तक उसे देखा भी नहीं था, मैं उस दोस्ती और उसके लिए आने वाली विपत्तियों के लिए रोई, जैसे हम किसी ऐसे व्यक्ति के लिए रोते हैं जिसे हम प्यार करते हैं जब कोई हमें बताता है कि वह गंभीर रूप से बीमार है और उसके दिन गिने-चुने हैं।

एक दोपहर चिलचिलाती धूप में मैं होटल के भोजन कक्ष में था, जिसे धूप

से बचाने के लिए अर्ध-अंधेरा कर दिया गया था। सूरज की सुनहरी रोशनी से जगमगाते पर्दों से कमरे को धूप से बचाया जा रहा था। पर्दों के बीच से मुझे नीले समुद्र की झलक दिखाई दे रही थी। तभी समुद्र तट से मुख्य सड़क की ओर जाने वाले केंद्रीय गलियारे पर मैंने एक लंबे, पतले, सिर को गर्व से लहराते हुए, उछलती गर्दन वाले युवक को खोजती निगाहों से गुजरते देखा। उसकी त्वचा इतनी गोरी और बाल इतने सुनहरे थे मानो उन्होंने सूरज की सारी किरणें सोख ली हों। उसने लगभग सफेद रंग का ऐसा कपड़ा पहना था जिसे पहनने की हिम्मत कोई भी पुरुष कर सकता है, और उसकी पतली बनावट भोजन कक्ष की ठंडक के साथ-साथ बाहर के शानदार दिन की गर्मी और चमक का भी स्पष्ट संकेत दे रही थी। वह तेजी से चल रहा था। उसकी आंखें, जिनमें से एक से उसका मोनोकल बार-बार गिर रहा था, समुद्र के रंग की थीं। जब वह गुजरा तो सभी ने उसे उत्सुकता से देखा, क्योंकि सभी जानते थे कि युवा मार्क्विस डी सेंट-लूप-एन-ब्रे अपने परिधानों की शान-शौकत के लिए प्रसिद्ध था। सभी समाचार पत्रों में उस सूट का वर्णन था जिसे पहनकर उसने हाल ही में युवा ड्यूक डी उज़ेस के साथ द्वंद्वयुद्ध में भाग लिया था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके बालों, आँखों, त्वचा और कद-काठी की यह विशिष्टता, जो उसे भीड़ में एक कीमती ओपल की नस की तरह अलग पहचान देती, नीले रंग से जगमगाती और चमकीली, अन्य पुरुषों के जीवन से भिन्न जीवन का संकेत देती थी। इसलिए जब श्रीमती डी विलेपारिसिस के उस लगाव के सामने, जिसका वह जिक्र कर रही थीं, समाज की सबसे खूबसूरत महिलाओं ने उसके लिए होड़ लगाई, तो किसी बार में, उदाहरण के लिए, उस समय की सबसे खूबसूरत महिला के साथ, जिससे वह प्रेम निवेदन कर रहा था, उसकी उपस्थिति ने न केवल उसे सबका ध्यान आकर्षित किया, बल्कि सभी की निगाहें उसकी ओर भी उतनी ही आकर्षित कर

लीं। उनकी लहजे, एक युवा 'शेर' के अनुरूप उनकी उद्दंडता और विशेष रूप से उनके अद्भुत रूप-रंग के कारण, कुछ लोग उन्हें स्त्री-समान भी समझते थे, हालांकि बिना किसी कलंक के, क्योंकि हर कोई जानता था कि वे कितने मर्दाना थे और कितने जोशीले 'औरतों के दीवाने' थे। ये श्रीमती डी विलेपारिसिस के भतीजे थे जिनके बारे में उन्होंने हमसे बात की थी। यह सोचकर मैं अत्यंत प्रसन्न हो गई कि मैं उन्हें जान पाऊंगी और कई हफ्तों तक उनसे मिल पाऊंगी, और मुझे पूरा विश्वास था कि वे मुझ पर अपना सारा स्नेह बरसाएंगे। वे होटल में तेजी से चल रहे थे, मानो अपने एकतरफा चश्मे का पीछा कर रहे हों, जो तितली की तरह उनके सामने बार-बार उड़ रहा था। वह समुद्र तट से आ रहा था, और हॉल के कांच के सामने के निचले आधे हिस्से में फैला समुद्र उसे एक पृष्ठभूमि प्रदान कर रहा था जिसके सामने उसे पूर्ण लंबाई में चित्रित किया गया था, जैसा कि कुछ चित्रों में होता है जिनके चित्रकार समकालीन जीवन के सबसे सटीक अवलोकन को किसी भी तरह से गलत साबित किए बिना, अपने चित्र के लिए उपयुक्त परिवेश, जैसे पोलो ग्राउंड, गोल्फ लिंक, रेसकोर्स, नौका का पुल, चुनकर उन कैनवस का आधुनिक समकक्ष प्रदान करने का प्रयास करते हैं जिन पर पुराने उस्ताद मानव आकृति को परिदृश्य के अग्रभाग में प्रस्तुत करते थे। दरवाजे पर एक घोड़ागाड़ी और एक जोड़ा उसका इंतजार कर रहा था; और, जब उसका मोनोकल धूप से जगमगाती सड़क की हवा में फिर से उछलने लगा, उसी लालित्य और निपुणता के साथ जो एक महान पियानोवादक सबसे सरल प्रस्तुति में भी प्रदर्शित करता है, जहाँ यह संभव नहीं लगता कि वह द्वितीय श्रेणी के कलाकार से भी श्रेष्ठ हो सकता है, श्रीमती... डी विलेपारिसिस के भतीजे ने, दूल्हे द्वारा सौंपी गई लगाम को लेकर, उसके बगल में स्थित बॉक्स सीट पर छलांग लगाई और, होटल के प्रबंधक द्वारा उसके लिए भेजे गए

एक पत्र को खोलते हुए, अपने घोड़ों को दौड़ाना शुरू कर दिया।

उसके बाद के दिनों में मुझे कितनी निराशा हुई, जब भी मैं उससे बाहर या होटल में मिलता—उसका सिर सीधा खड़ा रहता, मानो वह अपने अंगों को उस चंचल और नाचते हुए मोनोकल के चारों ओर संतुलित करता रहता, जो मानो उनका गुरुत्वाकर्षण केंद्र हो—मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि स्पष्ट रूप से उसकी हमसे जान-पहचान करने की कोई इच्छा नहीं थी, और मैंने देखा कि उसने हमें प्रणाम भी नहीं किया, जबकि वह जानता होगा कि हम उसकी चाची के मित्र थे। और श्रीमती डी विलेपारिसिस और उनसे पहले श्री डी नॉरपोइस द्वारा दिखाई गई मित्रता को याद करते हुए, मैंने सोचा कि शायद वे केवल दिखावटी कुलीनता के थे, और शायद कुलीन वर्ग को नियंत्रित करने वाले कानूनों में कोई गुप्त प्रावधान था जो महिलाओं और कुछ राजनयिकों को आम लोगों के साथ अपने संबंधों में, किसी ऐसे कारण से जो मेरी समझ से परे था, उस कठोरता को छोड़ने की अनुमति देता था, जिसे दूसरी ओर एक युवा मार्क्विस को निर्दयतापूर्वक बनाए रखना पड़ता था। मेरी बुद्धि शायद इसके विपरीत कहती। लेकिन उस मूर्खतापूर्ण दौर की विशेषता, जिससे मैं गुज़र रहा था—जो कि किसी भी तरह से निष्क्रिय नहीं था, बल्कि बेहद ज्ञानवर्धक था—यह थी कि हम अपनी बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करते थे और दूसरों के सबसे मामूली गुण भी हमें उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग लगते थे। राक्षसों और देवताओं से भरी दुनिया में, हमें शांति का एहसास बहुत कम होता था। उस दौर में हमने जो भी काम किए, उनमें से शायद ही कोई ऐसा काम हो जिसे हम बाद में अपनी याददाश्त से मिटाने के लिए कुछ भी देने को तैयार हों। जबकि हमें इस बात का अफसोस होना चाहिए कि अब हमारे पास वह सहजता नहीं रही जिसने हमें वे काम करने के लिए प्रेरित किया था। बाद में हम चीजों को अधिक व्यावहारिक तरीके

से देखते हैं, समाज के बाकी लोगों के साथ पूरी तरह से तालमेल बिठाते हुए, लेकिन जवानी ही वह समय था जब हमने कुछ सीखा था।

एम. डी सेंट-लूप में मैंने जिस उद्दंडता का अनुमान लगाया था, और उसमें निहित कठोरता की हर झलक, जब भी वह हमारे पास से गुजरता था, उसके हावभाव से पुष्ट हो जाती थी; उसका शरीर उतना ही अकड़ा हुआ सीधा, उसका सिर हमेशा उतना ही ऊंचा, उसकी निगाहें उतनी ही भावहीन, या यूं कहूं कि उतनी ही कठोर, दूसरों के अधिकारों के प्रति उस अस्पष्ट सम्मान से रहित, भले ही वे मेरी चाची को न जानते हों; जिसका एक उदाहरण यह था कि मैं एक बूढ़ी औरत को उसी तरह नहीं देखता था जैसे एक गैस लैंप को देखता था। ये ठंडे व्यवहार उन मनमोहक पत्रों से उतने ही अलग थे, जिनके बारे में कुछ ही दिन पहले तक मैं कल्पना कर रही थी कि वे मुझे मेरे प्रति अपने स्नेह का इज़हार करने के लिए लिख रहे थे, जितना कि सदन और जनता के उस उत्साह से अलग, जिसे वे अपने अमर भाषण से जगाने का दावा कर रहे थे, उस स्वप्नद्रष्टा की विनम्र, नीरस, गुमनाम स्थिति से, जो स्वयं के लिए, ज़ोर से, इस तरह चिंतन करने के बाद, काल्पनिक प्रशंसा के थम जाने पर, खुद को पहले जैसा ही टॉम, डिक या हैरी पाता है। जब श्रीमती... डी विलेपारिसिस ने, निस्संदेह एक अभिमानी और दुष्ट स्वभाव के बाहरी रूप से हम पर बनी बुरी धारणा को दूर करने के प्रयास में, अपने परपोते (जो उनकी एक भतीजी का पुत्र था और मुझसे थोड़ा बड़ा था) की असीम अच्छाई के बारे में हमसे फिर से बात की। मुझे आश्चर्य हुआ कि दुनिया, सच्चाई की पूरी तरह से अनदेखी करते हुए, उन लोगों को कोमल हृदय का मान लेती है जिनके हृदय वास्तव में इतने कठोर और रूखे होते हैं, बशर्ते कि वे अपने ही समूह के प्रतिभाशाली सदस्यों के साथ सामान्य शिष्टाचार का व्यवहार करें। श्रीमती डी विलेपारिसिस ने स्वयं, हालांकि अप्रत्यक्ष रूप से, मेरे उस निदान की

पुष्टि की, जो पहले से ही एक दृढ़ विश्वास था, उनके भतीजे के चरित्र के मूल बिंदुओं के बारे में, एक दिन जब मैं उन दोनों को एक इतने संकरे रास्ते से आते हुए देखा कि मेरे अलावा उनसे परिचय कराने के अलावा कोई चारा नहीं था। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन्हें किसी व्यक्ति का नाम दोहराया जा रहा हो, उनके चेहरे की एक भी मांसपेशी नहीं हिली; उसकी आँखों में मानवीय सहानुभूति की कोई झलक नहीं थी, उनकी दृष्टि की संवेदनहीनता और निरर्थकता में केवल अतिशयोक्ति झलक रही थी, जिसके बिना वे निर्जीव दर्पणों से अलग नहीं दिखतीं। फिर, मानो वह मेरे अभिवादन का उत्तर देने से पहले मुझे आश्वस्त करना चाहता हो, उसने अपनी कठोर निगाहें मुझ पर टिका दीं, और इच्छाशक्ति के बजाय मांसपेशियों की सहज प्रतिक्रिया के कारण अचानक अपनी निगाहें हटा लीं, मेरे और अपने बीच यथासंभव अधिक से अधिक दूरी बनाए रखते हुए, उसने अपना हाथ पूरी तरह फैलाया और अंत में मुझे अपना हाथ बढ़ाया। मैंने सोचा कि अगले दिन जब उसने मुझे अपना कार्ड भेजा, तो इसका मतलब कम से कम द्वंद्वयुद्ध तो जरूर होगा। लेकिन उसने मुझसे केवल साहित्य के बारे में बात की, और लंबी बातचीत के बाद कहा कि वह हर दिन मेरे साथ कई घंटे बिताना चाहता है। इस मुलाकात में उसने न केवल आध्यात्मिक विषयों के प्रति अपनी प्रबल रुचि का प्रमाण दिया, बल्कि मेरे प्रति ऐसा सम्मान भी दिखाया जो एक दिन पहले मेरे अभिवादन से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। जब मैंने उसे हर बार किसी से परिचय कराते समय वही प्रक्रिया दोहराते देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह उसके परिवार की एक विशेष सामाजिक परंपरा थी, जिसे उसकी माँ ने, जिसने उसका उत्तम पालन-पोषण सुनिश्चित किया था, ने उसे सिखाया था; वह बिना सोचे-समझे ये क्रियाएँ करता था, ठीक वैसे ही जैसे वह अपने सुंदर कपड़ों या बालों के बारे में नहीं सोचता था; ये ऐसी

चीज़ें थीं जिनमें वह नैतिक महत्व नहीं था जो मैंने पहले उनमें निहित समझा था, एक ऐसी चीज़ जो विशुद्ध रूप से अर्जित थी, ठीक उसी तरह जैसे उसकी वह दूसरी आदत थी कि वह किसी भी परिचित व्यक्ति से तुरंत परिवार से परिचय कराने की माँग करता था, जो उसमें इतनी सहज हो गई थी कि हमारी बातचीत के अगले दिन मुझे फिर से देखकर, वह मुझ पर टूट पड़ा और बिना यह पूछे कि मैं कैसी हूँ, मुझसे विनती करने लगा कि मैं उसे मेरी दादी से मिलवा दूँ, जो मेरे साथ थीं, उसी बेचैनी से जैसे यह अनुरोध आत्मरक्षा की किसी सहज प्रवृत्ति के कारण हो, जैसे किसी प्रहार को रोकना या उबलते पानी की धारा से बचने के लिए आँखें बंद करना, जिसके बिना वहाँ एक पल भी रहना खतरनाक हो सकता था।

भूत भगाने की पहली रस्म पूरी होते ही, जैसे कोई दुष्ट परी अपना बाहरी रूप त्यागकर सबसे मनमोहक गुणों को धारण करती है, मैंने देखा कि यह घमंडी प्राणी अब तक मिले सबसे मिलनसार और विचारशील युवक में बदल गया। मैंने मन ही मन कहा, "अच्छा हुआ, मैं उसके बारे में एक बार गलत समझ चुकी थी; मैं एक भ्रम में पड़ गई थी; लेकिन मैंने पहली गलती सुधार ली है और दूसरी में फंस गई हूँ, क्योंकि वह ज़रूर कोई महान सज्जन होगा जो अपनी कुलीनता से तंग आ चुका है और उसे छिपाने की कोशिश कर रहा है।" वास्तव में, सेंट-लूप के सभी उत्कृष्ट संस्कार और मित्रता ने मुझे एक और प्राणी से मिलवाया, जो मेरे अनुमान से बिल्कुल अलग था।

यह युवक, जो एक घमंडी, दिखावटी अभिजात वर्ग का प्रतीत होता था, वास्तव में आध्यात्मिक मामलों के अलावा किसी और चीज़ में रुचि नहीं रखता था, और विशेष रूप से साहित्य और कला की उन आधुनिक अभिव्यक्तियों में, जो उसकी चाची को हास्यास्पद लगती थीं; वह समाजवादी विचारों से ओतप्रोत था, जिन्हें उसकी चाची 'समाजवादी उद्गार'

कहती थीं; वह अपनी जाति के प्रति गहरी घृणा से भरा हुआ था और नीत्शे और प्राउडॉन के अध्ययन में घंटों व्यतीत करता था। वह उन बुद्धिजीवियों में से एक था, जो अच्छाई की प्रशंसा करने में तत्पर रहते हैं, जो खुद को किताबों में बंद कर लेते हैं और केवल शुद्ध विचारों में रुचि रखते हैं। वास्तव में, सेंट-लूप में इस अत्यंत अमूर्त प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति, जिसने उसे मेरी सामान्य रुचियों से बहुत दूर कर दिया, मुझे मार्मिक तो लगी, लेकिन साथ ही मुझे काफी परेशान भी किया। मैं कह सकता हूँ कि जब मुझे ठीक से पता चला कि उनके पिता कौन थे, उन दिनों जब मैं उस प्रसिद्ध कॉम्टे डी मार्सेंट्स के किस्सों से भरपूर संस्मरण पढ़ रहा था, जिनमें एक बीते हुए युग की विशेष खूबियाँ समाहित थीं, एक ऐसा मन जो चिंतन से भरा था—एम. डी मार्सेंट्स के जीवन के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक था—तो मुझे यह बात बहुत खटकती थी कि रॉबर्ट डी सेंट-लूप, अपने पिता के पुत्र होने से संतुष्ट होने के बजाय, मुझे उनके पिता के जीवन के पुराने जमाने के रोमांस से परिचित कराने के बजाय, नीत्शे और प्राउडॉन का आनंद लेने में लगे रहे। उनके पिता को मेरी इस निराशा का एहसास नहीं होता। वे स्वयं एक बुद्धिमान व्यक्ति थे, जिन्होंने एक सांसारिक व्यक्ति के रूप में अपने जीवन की संकीर्ण सीमाओं को पार कर लिया था। उन्हें अपने पुत्र को जानने का शायद ही समय मिला था, लेकिन उन्हें आशा थी कि उनका पुत्र उनसे बेहतर इंसान साबित होगा। और मुझे पूरा विश्वास है कि परिवार के बाकी सदस्यों के विपरीत, वह अपने बेटे की प्रशंसा करते, उसके द्वारा अपने छोटे-मोटे मनोरंजन को छोड़कर गंभीर ध्यान में लीन होने पर प्रसन्न होते, और एक शब्द भी कहे बिना, एक महान बुद्धिमान सज्जन के रूप में अपनी विनम्रता के कारण, वह चुपके से अपने बेटे के पसंदीदा लेखकों की रचनाएँ पढ़ते ताकि यह समझ सकें कि रॉबर्ट उनसे कितना श्रेष्ठ था।

लेकिन एक बात काफी दुखद थी: अगर एम. डी मार्सेंट्स, अपने बेहद खुले विचारों के साथ, अपने से इतने अलग बेटे की सराहना करते, तो रॉबर्ट डी सेंट-लूप, जो उन लोगों में से थे जो मानते थे कि कला और जीवन में गुण केवल कुछ खास रूपों से ही जुड़ा होता है, अपने पिता की स्नेहपूर्ण लेकिन थोड़ी तिरस्कारपूर्ण यादें रखते थे, जिन्होंने अपना सारा समय शिकार और घुड़दौड़ में बिताया, जो वैगनर को सुनकर उबासी लेते थे और ऑफेनबैक की प्रशंसा करते थे। सेंट-लूप में यह समझने की बुद्धि नहीं थी कि बौद्धिक योग्यता का किसी एक सौंदर्यवादी सूत्र के पालन से कोई लेना-देना नहीं है, और एम. डी मार्सेंट्स की बौद्धिकता के प्रति उनके मन में वैसी ही घृणा थी जैसी बोइल्डियू या लाबिचे के किसी ऐसे बेटे के मन में हो सकती थी जो सबसे प्रतीकात्मक साहित्य और सबसे जटिल संगीत में पारंगत हो गया हो। "मैं अपने पिता को मुश्किल से ही जानता था," वे अक्सर कहते थे। "वह एक आकर्षक व्यक्ति प्रतीत होते थे। उनकी त्रासदी वह दयनीय युग था जिसमें वे रहते थे। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में जन्म लेना और ला बेले हेलेन के दौर में जीना किसी भी जीवन को बर्बाद करने के लिए काफी होता। शायद अगर वे रिंग के दीवाने कोई छोटे दुकानदार होते तो उनका जीवन बिलकुल अलग होता। वास्तव में, मुझे बताया जाता है कि उन्हें साहित्य से प्रेम था। लेकिन यह कभी सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि उनके लिए साहित्य का अर्थ ऐसी निरर्थक और निरर्थक पुस्तकें थीं।" और मेरे मामले में, अगर मुझे सेंट-लूप थोड़ा गंभीर लगता था, तो वे यह नहीं समझ पाते थे कि मैं उनसे भी अधिक गंभीर क्यों नहीं था। किसी भी चीज़ का मूल्यांकन केवल उसमें निहित बुद्धिमत्ता के आधार पर करने वाले, कल्पना के उस जादुई आकर्षण को न समझने वाले जो मुझे उन चीज़ों में मिलता था जिन्हें वे तुच्छ मानते थे, वे इस बात से चकित थे कि मैं—मैं, जिसे वे अपने आप को इतना ही हीन समझते थे

—उनमें रुचि कैसे ले सकता हूँ।

शुरुआत से ही सेंट-लूप ने मेरी दादी का दिल जीत लिया, न केवल अपनी निरंतर दयालुता से, जो उन्होंने हम दोनों के प्रति दिखाई, बल्कि उस सहजता से भी जो उन्होंने हर चीज़ में डाली। सहजता—निःसंदेह इसलिए क्योंकि मनुष्य की कलात्मकता के कारण ही प्रकृति का अहसास होता है —वह गुण था जिसे मेरी दादी सभी गुणों से अधिक पसंद करती थीं, चाहे वह बाग-बगीचे हों, जहाँ उन्हें हमारे कॉम्ब्रे गार्डन की तरह बहुत औपचारिक क्यारियाँ पसंद नहीं थीं, या भोजन की मेज, जहाँ उन्हें वे सजी-धजी व्यंजन नापसंद थे जिनमें सामग्री का पता लगाना मुश्किल था, या पियानो वादन, जो उन्हें बहुत अधिक जटिल और श्रमसाध्य नहीं लगता था, वास्तव में उन्हें रुबिनस्टीन के बेमेल सुरों से विशेष लगाव था। यह सहजता उन्हें सेंट-लूप के कपड़ों में भी मिली और पसंद आई, जो लचीले और सुरुचिपूर्ण थे, जिनमें कोई दिखावा नहीं था, कोई औपचारिकता नहीं थी, कोई अकड़ या रूखापन नहीं था। वह इस धनी युवक की और भी अधिक प्रशंसा करती थी, क्योंकि वह विलासितापूर्ण जीवन को बिना किसी दिखावे या आडंबर के स्वतंत्र और बेफिक्र होकर जीता था। उसे सेंट-लूप की उस सहजता में भी आकर्षण नज़र आता था, जो आमतौर पर बचपन के साथ ही खत्म हो जाती है, और उस दौर की कुछ शारीरिक विशेषताओं के कारण भी, उसके चेहरे पर हर भावना को तुरंत प्रकट नहीं होने देती थी। उदाहरण के लिए, कोई ऐसी बात जो वह चाहता था लेकिन उसे उम्मीद नहीं थी कि वह महज़ एक तारीफ होगी, उसके भीतर इतनी तीव्र, इतनी तीव्र, इतनी अस्थिर और इतनी व्यापक खुशी का विस्फोट पैदा करती थी कि उसके लिए उसे संभालना और छुपाना असंभव था; उसके चेहरे पर खुशी की एक बेकाबू मुस्कान छा जाती थी; उसके गालों की कोमल त्वचा से एक जीवंत चमक निकलती थी, उसकी आँखें उलझन

और खुशी से चमक उठती थीं; और मेरी दादी इस मासूमियत और खुलेपन के मनमोहक प्रदर्शन से बेहद प्रभावित हुईं, जो संयोगवश, सेंट-लूप में - कम से कम हमारी पहली दोस्ती के समय - भ्रामक नहीं था। लेकिन मैं एक और व्यक्ति को जानती हूँ, और ऐसे कई लोग हैं, जिनमें उस क्षणिक शर्मिंदगी की शारीरिक सच्चाई किसी भी तरह से नैतिक कपट को नहीं नकारती; अक्सर यह आनंद की जीवंतता से अधिक कुछ साबित नहीं होता—इतना कि यह उन्हें निहत्था कर देता है और वे इसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने के लिए विवश हो जाते हैं—उन स्वभावों द्वारा जो घोर विश्वासघात करने में सक्षम हैं। लेकिन मेरी दादी सेंट-लूप की सहजता की वास्तव में इसलिए प्रशंसा करती थीं क्योंकि वह बिना किसी लाग-लपेट के मेरे प्रति अपने स्नेह को स्वीकार करते थे, जिसे व्यक्त करने के लिए उन्हें ऐसे शब्द मिले जिनसे अधिक उपयुक्त, अधिक सच्चे प्रेमपूर्ण शब्द उनकी दादी भी नहीं सोच सकती थीं, जैसा कि उन्होंने मुझे बताया था। वह मेरी कमियों का मज़ाक उड़ाने से नहीं डरता था—जिन्हें उसने इतनी बारीकी से पहचान लिया था कि मेरी दादी मुस्कुरा उठती थीं—लेकिन ठीक वैसे ही जैसे मेरी दादी करतीं, प्यार से, साथ ही साथ मेरी खूबियों की भी प्रशंसा करता था। उसके अंदर एक ऐसी गर्मजोशी और सहज स्वतंत्रता थी जो उस संकोच या ठंडेपन का कोई संकेत नहीं देती थी जिसके ज़रिए उसकी उम्र के नौजवान खुद को महत्वपूर्ण समझते हैं। और वह हर छोटी-मोटी परेशानी को पहले से ही दूर करने में, अगर दिन अचानक ठंडा हो जाता और मुझे पता भी नहीं चलता, तो मेरे पैरों को ढकने में, और अगर उसे लगता कि मैं उदास या अस्वस्थ हूँ, तो (बिना बताए) शाम को मेरे साथ देर तक रुकने का इंतज़ाम करने में भी अपनी सतर्कता दिखाता था। मेरी सेहत के लिहाज़ से, जिसके लिए शायद ज़्यादा सख्त अनुशासन बेहतर होता, मेरी दादी को यह सतर्कता

कुछ ज़्यादा ही लगती थी, हालाँकि मेरे प्रति उसके स्नेह के प्रमाण के रूप में वह इससे बहुत प्रभावित होती थीं।

हमारे बीच तुरंत यह तय हो गया कि हम दोनों हमेशा के लिए गहरे दोस्त रहेंगे, और वह 'हमारी दोस्ती' ऐसे कहता था मानो किसी महत्वपूर्ण और आनंददायक चीज़ की बात कर रहा हो जिसका अस्तित्व हमसे स्वतंत्र हो, और जिसे उसने जल्द ही - अपनी प्रेमिका के प्रति प्रेम को छोड़कर - अपने जीवन का सबसे बड़ा आनंद कहा। ये शब्द मुझे कुछ असहज कर देते थे और मैं जवाब देने में असमर्थ था, क्योंकि जब मैं उसके साथ होता और उससे बात करता, तो मुझे वह खुशी महसूस नहीं होती थी - और निस्संदेह यह सबके साथ ऐसा ही होता - जो मुझे अकेले होने पर मिलती थी। क्योंकि अकेले में, कभी-कभी, मेरे भीतर से ऐसी भावनाएँ उमड़ती थीं जो मुझे एक सुखद सुकून देती थीं। लेकिन जैसे ही मैं किसी और के साथ होता, जब मैं किसी दोस्त से बात करना शुरू करता, मेरा मन तुरंत 'पलट जाता', वह सुनने वाले की ओर मुड़ जाता, न कि मेरी ओर, और जब वे इस बाहरी दिशा में जाते, तो मुझे कोई आनंद नहीं मिलता। सेंट-लूप से विदा लेने के बाद, मैंने शब्दों की सहायता से उनके साथ बिताए उन उलझे हुए पलों को किसी तरह व्यवस्थित किया; मैंने खुद से कहा कि मुझे एक अच्छा दोस्त मिला है, कि एक अच्छा दोस्त मिलना दुर्लभ है, और जब मैंने खुद को उन 'वस्तुओं' से घिरा पाया जिन्हें प्राप्त करना कठिन था, तो मुझे उस आनंद का ठीक विपरीत अनुभव हुआ जो मुझे स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता था, उस आनंद का विपरीत जो मुझे अपने भीतर के अंधकार में छिपी किसी चीज को उजागर करने से मिलता था। अगर मैंने सेंट-लूप के साथ दो-तीन घंटे बातचीत में बिताए होते, और उन्होंने मेरी बातों की प्रशंसा की होती, तो मुझे एक तरह का पछतावा, अफसोस या थकान महसूस होती कि मुझे अकेला नहीं छोड़ा गया और मैं

आखिरकार अपना काम शुरू करने के लिए तैयार नहीं था। लेकिन मैंने खुद से कहा कि बुद्धि केवल अपने लाभ के लिए नहीं दी जाती, कि महानतम पुरुषों ने भी प्रशंसा की लालसा की है, कि मैं उन घंटों को व्यर्थ नहीं मान सकता जिनमें मैंने अपने मित्र के मन में अपनी एक उच्च छवि बनाई थी; मुझे यह समझाने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि मुझे इसके फलस्वरूप प्रसन्न होना चाहिए, और मैं और भी अधिक उत्सुकता से आशा करता था कि यह प्रसन्नता मुझसे कभी न छिन जाए, मात्र इसलिए कि मैं अभी तक इसके प्रति सचेत नहीं था। हम हर चीज़ के खोने से कहीं अधिक उन 'वस्तुओं' के लुप्त होने से भयभीत होते हैं जो हमारी पहुँच से बाहर रही हैं, क्योंकि हमारे हृदय ने उन्हें अपना नहीं माना है। मुझे लगा कि मैं अधिकांश लोगों की तुलना में मित्रता के गुणों का बेहतर उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूँ (क्योंकि मैं हमेशा अपने मित्रों की भलाई को उन व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखूँगा जिनके प्रति अन्य लोग समर्पित थे लेकिन जो मेरे लिए मायने नहीं रखते थे), लेकिन उस भावना में प्रसन्नता प्राप्त करने में असमर्थ था जो मेरे और अन्य लोगों के स्वभाव के बीच मौजूद अंतरों को बढ़ाने के बजाय—जैसा कि हम सभी में होता है—उन्हें समाप्त कर देगी। उसी समय मेरा मन सेंट-लूप में उनके स्वयं के व्यक्तित्व से कहीं अधिक सामूहिक व्यक्तित्व, 'महान' व्यक्तित्व को पहचान रहा था; जो एक अंतर्जात आत्मा की तरह उनके अंगों को गति देता था, उनके हाव-भाव और कार्यों को निर्देशित करता था; तब, ऐसे क्षणों में, यद्यपि मैं उसकी संगति में था, फिर भी उतना ही अकेला था जितना कि किसी ऐसे परिदृश्य को निहारते हुए होना चाहिए था जिसकी सामंजस्यता को मैं समझ सकता था। वह तब मेरे लिए एक वस्तु मात्र था, जिसके गुणों का मैं अपने गहन चिंतन में अन्वेषण करने का प्रयास करता था। उसमें इस पूर्व-अस्तित्व वाले, इस शाश्वत प्राणी, इस अभिजात वर्ग की निरंतर

खोज, जो बिल्कुल वैसा ही था जैसा रॉबर्ट बनना नहीं चाहता था, मुझे एक तीव्र आनंद प्रदान करती थी, लेकिन वह आनंद बौद्धिक था, सामाजिक नहीं। उनकी नैतिक और शारीरिक चपलता में, जिसने उनकी दयालुता को इतनी गरिमा प्रदान की, जिस सहजता से उन्होंने मेरी दादी को अपनी गाड़ी दी और उन्हें उसमें बिठाया, जिस तत्परता से वे बक्से से कूद पड़े, जब उन्हें डर था कि मुझे ठंड लग सकती है, तो उन्होंने अपना लबादा मेरे कंधों पर डाल दिया, मैंने न केवल उन शक्तिशाली शिकारियों की विरासत में मिली फुर्ती को महसूस किया, जो पीढ़ियों से इस युवक के पूर्वज रहे थे, जिसने बौद्धिकता के अलावा कोई दिखावा नहीं किया, बल्कि धन के प्रति उनकी अवहेलना को भी महसूस किया, जो उनके भीतर धन के आनंद के साथ-साथ विद्यमान थी, क्योंकि इससे उन्हें अपने मित्रों का अधिक भव्य तरीके से मनोरंजन करने में मदद मिलती थी, और इसी वजह से वे लापरवाही से अपना धन उनके चरणों में लुटा देते थे; मुझे उनमें विशेष रूप से उन महान सामंतों के मन में व्याप्त 'अन्य लोगों से श्रेष्ठ' होने का आत्मविश्वास या भ्रम दिखाई दिया, जिसके कारण वे सेंट-लूप को यह साबित करने की चिंता नहीं दे पाए कि वे भी "उतने ही अच्छे" हैं, हीन दिखने का वह भय, जिससे वे वास्तव में पूरी तरह अनभिज्ञ थे, लेकिन जो एक आम आदमी के सबसे सच्चे प्रयासों को भी अत्यंत कुरूपता और अनाड़ीपन से बिगाड़ देता है। कभी-कभी मुझे अपने आप पर दोष आता था कि मैं अपने मित्र में इस प्रकार आनंद ले रहा था जैसे किसी कलाकृति में, अर्थात् उनके व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को एक सामान्य विचार द्वारा सामंजस्यपूर्ण रूप से व्यवस्थित मान रहा था, जिस पर वे निर्भर थे लेकिन जिसे वे स्वयं नहीं जानते थे, जिससे उनके स्वयं के अच्छे गुणों, उनके व्यक्तिगत बौद्धिक और नैतिक मूल्य में कोई वृद्धि नहीं होती थी, जिसे वे इतना महत्व देते थे।

फिर भी, वह विचार कुछ हद तक उनका निर्णायक कारण था। क्योंकि वह एक सज्जन व्यक्ति थे, इसलिए उनकी वह मानसिक सक्रियता, उनकी समाजवादी आकांक्षाएँ, जिन्होंने उन्हें अभिमानी और भद्दे वस्त्र पहने युवा छात्रों की संगति में रहने के लिए प्रेरित किया, उनमें कुछ ऐसी शुद्धता और निस्वार्थता का भाव दर्शाती थीं जो उनमें नहीं पाई जाती थी। स्वयं को एक अज्ञानी और स्वार्थी जाति का वंशज मानते हुए, वह वास्तव में चिंतित थे कि वे उनके उस कुलीन मूल को क्षमा कर दें, जिसे वे इसके विपरीत, बेहद आकर्षक पाते थे और जिसके कारण वे उनसे मिलना चाहते थे, भले ही उनके प्रति उदासीनता और वास्तव में उद्दंडता का दिखावा करते हुए। इस प्रकार, उन्होंने उन लोगों से संबंध बनाने की कोशिश की, जिनसे मेरे माता-पिता, जो कॉम्ब्रे के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान थे, उनके घृणापूर्वक मुंह न मोड़ने पर स्तब्ध रह जाते। एक दिन जब हम, सेंट-लूप और मैं, रेत पर बैठे थे, तो हमने उस तंबू से, जिसके सहारे हम टिके हुए थे, बालबेक में फैले इस्राएलियों के झुंड के विरुद्ध शापों की बौछार सुनी। “एक कदम भी मत चलो, उनसे मुलाकात हो ही जाती है,” आवाज ने कहा। “मैं सिद्धांत रूप से यहूदी राष्ट्र का घोर विरोधी नहीं हूँ, लेकिन यहाँ तो उनकी भरमार है। आपको बस यही सुनने को मिलता है, ‘हे अब्राहम, मैंने तुम्हें चाकोप को चूम लिया है।’ ऐसा लगता है मानो आप रुए डी'अबूकिर में हों।” इस प्रकार इस्राएल के विरुद्ध बोलने वाला व्यक्ति अंततः तम्बू से बाहर निकला; हमने आँखें उठाकर इस यहूदी-विरोधी को देखा। यह मेरा पुराना मित्र ब्लोच था। सेंट-लूप ने तुरंत मुझसे विनती की कि मैं उसे याद दिलाऊँ कि वे परीक्षा बोर्ड के सामने मिले थे, जब ब्लोच ने सम्मान का पुरस्कार जीता था, और उसके बाद एक लोकप्रिय विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में भी मिले थे।

अधिक से अधिक, मैं कभी-कभार मुस्कुरा देता था, रॉबर्ट में उसकी

जेसुइट शिक्षा के निशान देखकर, उस असहजता में जो लोगों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के डर से उसमें पैदा हो जाती थी, जब भी उसका कोई बौद्धिक मित्र कोई सामाजिक गलती कर बैठता था, या कोई ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकत कर बैठता था जिसे सेंट-लूप स्वयं महत्व नहीं देता था, लेकिन उसे लगता था कि अगर किसी ने उसे देखा होता तो दूसरा शर्म से लाल हो जाता। और रॉबर्ट ही शर्म से लाल हो जाता था मानो गलती उसी की हो, उदाहरण के लिए उस दिन जब ब्लोच ने होटल में उससे मिलने आने का वादा करने के बाद आगे बढ़ गया:

"चूंकि मैं इन भव्य कारवां सराय की सारी झूठी शान-शौकत के बीच इंतजार करना बर्दाश्त नहीं कर सकता, और हंगेरियन बैंड मुझे बीमार कर देगा, इसलिए आपको 'लाइट-बॉय' से कहना होगा कि वह उन्हें बंद करवा दे और आपको तुरंत सूचित करे।"

व्यक्तिगत तौर पर, मुझे ब्लोच के होटल आने की कोई खास चिंता नहीं थी। दुर्भाग्य से, वह बालबेक में अकेले नहीं थे, बल्कि अपनी बहनों के साथ थे, और उनके भी अनगिनत रिश्तेदार और दोस्त वहाँ ठहरे हुए थे। यह यहूदी बस्ती देखने में जितनी सुंदर थी, उतनी सुखद नहीं थी। इस लिहाज से बालबेक रूस या रोमानिया जैसे देशों जैसा था, जहाँ भूगोल की किताबों में बताया जाता है कि इस्राइली आबादी को उतना सम्मान नहीं मिलता और न ही वे पेरिस जैसी सभ्यताओं में घुल-मिल पाए हैं। ब्लोच के चचेरे भाई-बहन और चाचा या उनके सहधर्मी पुरुष या महिला जब भी कैसिनो जाते थे, महिलाएं नाचने के लिए और सज्जन बैकरेट टेबल की ओर अलग-अलग दिशाओं में चले जाते थे, तो वे हमेशा एक साथ, बिना किसी अन्य तत्व के मिश्रण के, एक ठोस समूह बनाते थे, जो अपने आप में एकरूप था, और उन लोगों से बिल्कुल अलग था जो उन्हें आते-जाते देखते थे और हर साल उन्हें फिर से वहीं पाते थे, बिना उनसे एक शब्द या

संकेत का आदान-प्रदान किए, चाहे वे कैम्ब्रेमर्स की सूची में हों, या पीठासीन मजिस्ट्रेट का छोटा समूह, पेशेवर या 'व्यापार' करने वाले लोग हों, या पेरिस के साधारण अनाज व्यापारी भी हों, जिनकी बेटियां, सुंदर, गर्वित, उपहासपूर्ण और रीम्स की मूर्तियों की तरह फ्रांसीसी, बदतमीज टॉमबॉय की उस भीड़ के साथ घुलना-मिलना पसंद नहीं करती थीं, जो 'समुद्री फैशन' के प्रति अपने उत्साह को इस हद तक ले जाती थीं कि वे हमेशा झींगा पकड़ने से घर लौटती हुई या टैंगो नृत्य करने के लिए बाहर जाती हुई दिखाई देती थीं। पुरुषों की बात करें तो, उनके शानदार डिनर जैकेट और पेटेंट लेदर के जूतों के बावजूद, उनके रूप-रंग की अतिशयोक्ति देखकर चित्रकारों की 'बुद्धिमान शोध' की याद आती है, जो सुसमाचार या अरेबियन नाइट्स का चित्रण करते समय उस देश पर विचार करते हैं जहाँ दृश्य घटित होते हैं, और सेंट पीटर या अली-बाबा को बालबेक के रेस्तरां में बैठे सबसे भारी-भरकम व्यक्ति के समान रूप-रंग दे देते हैं। ब्लोच ने अपनी बहनों का परिचय कराया, जो, हालांकि उन्होंने उनकी बकबक को अत्यंत अशिष्टता से चुप करा दिया, अपने इस भाई, जिसे वे अंधाधुंध पूजते थे, की हल्की-फुल्की बातों पर भी खिलखिलाकर हंस पड़ीं। इसलिए यह संभव है कि लोगों के इस समूह में, अन्य सभी समूहों की तरह, शायद किसी भी अन्य समूह से अधिक, बहुत सारे आकर्षण, गुण और सद्गुण थे। लेकिन इनका अनुभव करने के लिए, पहले इसके घेरे में प्रवेश करना आवश्यक था। अब यह लोकप्रिय नहीं था; यह इसे महसूस कर सकता था; इसने अपनी अलोकप्रियता में यहूदी-विरोधी भावना का एक निशान देखा, जिसके खिलाफ इसने एक मजबूत और बंद घेरे में एक साहसी मोर्चा पेश किया, जिसमें संयोगवश, किसी ने भी कभी अपना रास्ता बनाने की कोशिश करने का सपना नहीं देखा।

उनके द्वारा 'लाइट' शब्द के प्रयोग पर मुझे आश्चर्य होने का कोई कारण

नहीं था, क्योंकि कुछ दिन पहले ही ब्लोच ने मुझसे पूछा था कि मैं बालबेक क्यों आया हूँ (हालाँकि उन्हें स्वयं वहाँ होना बिल्कुल स्वाभाविक लग रहा था) और क्या मैं "बड़े दोस्त बनाने की आशा में" आया हूँ। जब मैंने उन्हें समझाया कि यह यात्रा मेरी सबसे पुरानी इच्छाओं में से एक की पूर्ति है, हालाँकि यह वेनिस देखने की मेरी इच्छा जितनी गहरी नहीं थी, तो उन्होंने उत्तर दिया था: "हाँ, बिल्कुल, सुंदर महिलाओं के साथ ठंडे पेय पीने के लिए, जबकि आप लॉर्ड जॉन रस्किन द्वारा लिखित 'स्टोन्स ऑफ वेनिस' पढ़ने का नाटक कर रहे हों, जो एक नीरस व्यक्ति हैं, वास्तव में सबसे बातूनी बूढ़े नाई में से एक हैं।" इससे स्पष्ट है कि ब्लोच को लगता था कि इंग्लैंड में न केवल सभी पुरुषों को 'लॉर्ड' कहा जाता है, बल्कि 'i' अक्षर का उच्चारण हमेशा 'igh' ही होता है। सेंट-लूप के लिए, उच्चारण की यह गलती उन्हें उतनी गंभीर नहीं लगी, क्योंकि उन्हें इसमें मुख्य रूप से उन लगभग 'समाजवादी' धारणाओं की कमी दिखाई दी, जिनसे मेरा नया मित्र उतना ही घृणा करता था जितना कि वह उनमें पारंगत था। लेकिन इस डर से कि ब्लोच को एक दिन पता चल जाए कि 'वेनिस' कहा जाता है और रस्किन कोई लॉर्ड नहीं थे, तो कहीं वह बाद में यह न सोचे कि रॉबर्ट उस पर हँस रहा था, ब्लोच को उतना ही दोषी महसूस हुआ मानो वह उस उदारता में कमी कर बैठा हो, जिसके साथ, जैसा कि हमने देखा है, वह लबालब भरा हुआ था। इसलिए, अपनी गलती का पता चलने पर ब्लोच के गालों पर जो शर्मिंदगी छा जाएगी, रॉबर्ट उसे पहले से ही पूर्वाभास और सहज प्रतिक्रिया से अपने गालों पर बढ़ते हुए महसूस कर सकता था। क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि ब्लोच इस गलती को उससे कहीं अधिक महत्व देता है। ब्लोच ने कुछ समय बाद इसे सच साबित कर दिया, जब उसने मुझे 'लिफ्ट' शब्द का उच्चारण करते हुए सुना, तो उसने बीच में ही टोकते हुए कहा:

"ओह, आप 'उठाना' कहते हैं, है ना?" और फिर, एक रूखे और घमंडी लहजे में: "ऐसा नहीं है कि यह ज़रा भी महत्वपूर्ण है।" यह वाक्य शरीर की सहज प्रतिक्रिया की तरह है, उन सभी पुरुषों में समान है जिनका आत्मसम्मान बहुत ऊँचा होता है, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी गंभीर हों या तुच्छ, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इस अवसर पर भी, वह व्यक्ति जिसके बारे में यह कहा जाता है कि यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है, उसके लिए यह बात कितनी महत्वपूर्ण है; कभी-कभी यह एक दुखद वाक्य होता है, जो हर उस स्वाभिमानी व्यक्ति के होंठों से सबसे पहले निकलता है (और फिर कितना दिल दहला देने वाला होता है) जिससे हमने उसकी आखिरी उम्मीद भी छीन ली है, क्योंकि हमने उसकी मदद करने से इनकार कर दिया है। "अच्छा, ठीक है, यह ज़रा भी महत्वपूर्ण नहीं है; मैं कोई और व्यवस्था कर लूँगा:" और वह व्यवस्था जिसे अपनाने के लिए वह मजबूर हो जाता है, अक्सर आत्महत्या होती है।

इसके अलावा, ब्लोच ने मुझे बड़ी खूबसूरती से भाषण दिए। वह निश्चित रूप से मेरे साथ अच्छे संबंध रखना चाहते थे। फिर भी उन्होंने मुझसे पूछा: "क्या तुम खुद को कुलीन वर्ग में शामिल करने के चक्कर में डी सेंट-लूप-एन-ब्रे के पीछे पड़े हो? लगता है तुम घमंड के दौर से गुजर रहे हो। बताओ, क्या तुम घमंडी हो? मुझे तो ऐसा ही लगता है, क्या?" ऐसा नहीं था कि उनकी दोस्ती करने की इच्छा अचानक बदल गई थी। लेकिन जिसे, सही भाषा में नहीं, 'बुरे संस्कार' कहा जाता है, वह उनकी कमी थी, और इसलिए वह कमी जिसे वे नजरअंदाज करने के लिए बाध्य थे, खासकर वह कमी जिससे उन्हें विश्वास नहीं था कि दूसरे लोग आहत हो सकते हैं। मानव जाति में हम सभी में समान गुणों की बहुतायत, हममें से प्रत्येक में मौजूद दोषों की बहुलता से कहीं अधिक आश्चर्यजनक नहीं है। निस्संदेह, सामान्य ज्ञान "दुनिया की सबसे आम चीज" नहीं है; बल्कि

मानवीय दयालुता है। पृथ्वी के सुदूरतम, निर्जनतम छोरों में भी, हम इसे अपने आप खिलते देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं, मानो किसी एकांत घाटी में अफीम का फूल, ठीक वैसे ही जैसे परलोक में खिले अफीम के फूल, जिन्हें इसने कभी देखा तक नहीं, जैसे इसने हवा के सिवा कुछ जाना ही नहीं, जो कभी-कभी इसके लाल आवरण की तहों को हिलाकर इसके एकांत को भंग कर देती है। भले ही स्वार्थ से पंगु हो चुकी यह मानवीय दयालुता प्रयोग में न आए, फिर भी यह विद्यमान रहती है, और जब भी कोई स्वार्थी व्यक्ति इसके प्रभाव को नियंत्रित नहीं करता, उदाहरण के लिए, जब वह कोई उपन्यास या अखबार पढ़ रहा होता है, तो यह अंकुरित होती है, खिलती है, बढ़ती है, यहाँ तक कि उस व्यक्ति के हृदय में भी जो वास्तविक जीवन में निर्मम है, लेकिन कल्पनाओं का प्रेमी होने के नाते कमजोरों, धर्मी और सताए हुए लोगों के प्रति कोमल हृदय रखता है। लेकिन हमारे दोषों की विविधता हमारे गुणों की समानता से कम उल्लेखनीय नहीं है। हम सभी में कुछ न कुछ कमियां होती हैं, इतनी अधिक कि किसी से प्रेम बनाए रखने के लिए हमें उन्हें ध्यान में न रखकर, केवल उसके चरित्र के अन्य पहलुओं पर ध्यान देना पड़ता है। दुनिया के सबसे परिपूर्ण व्यक्ति में भी कोई न कोई कमी होती है जो हमें चौंका देती है या हमें क्रोधित कर देती है। एक व्यक्ति असाधारण बुद्धि का धनी होता है, हर चीज को एक ऊंचे नजरिए से देखता है, कभी किसी की बुराई नहीं करता, लेकिन वह अत्यंत महत्वपूर्ण पत्रों को अपनी जेब में रख लेता है और भूल जाता है, जबकि उसने स्वयं आपसे उन्हें डाक से भेजने के लिए कहा था। फिर वह बिना कोई बहाना बनाए, मुस्कुराते हुए, किसी महत्वपूर्ण कार्यक्रम में नहीं पहुंचता, क्योंकि उसे समय का पाबंद न होने पर गर्व होता है। दूसरा व्यक्ति इतना सभ्य, इतना सौम्य और इतना कोमल व्यवहार वाला होता है कि वह आपके सामने आपके बारे में वही

कहता है जो आपको सुनकर खुशी होती है; लेकिन आप महसूस करते हैं कि वह अपने मन में दबी हुई, कड़वी, भिन्न राय को छिपाए रखता है, और आपको देखकर उसे इतना आनंद मिलता है कि वह आपको अकेला छोड़ने के बजाय आपको थकान से बेहाल होने देना पसंद करेगा। तीसरे व्यक्ति में अधिक ईमानदारी है, लेकिन वह इसे इस हद तक ले जाता है कि जब आप उससे मिलने न आने के लिए अपनी खराब सेहत का बहाना बनाते हैं, तो वह आपको यह बताना अपना फर्ज समझता है कि आपको थिएटर जाते हुए देखा गया था और आप ठीक-ठाक लग रहे थे, या फिर यह कि आपके द्वारा उसके लिए किए गए कार्य से उसे पूरा लाभ नहीं हुआ है, जो कि उसके तीन अन्य दोस्तों ने पहले ही करने की पेशकश की थी, इसलिए वह आपका केवल मामूली ऋणी है। ऐसी ही परिस्थितियों में, पहला दोस्त यह दिखावा करता कि उसे पता ही नहीं था कि आप थिएटर गए थे, या यह कि अन्य लोग भी उसकी वही सेवा कर सकते थे। लेकिन यह आखिरी दोस्त खुद को उस बात को दोहराने या किसी को बताने के लिए बाध्य महसूस करता है जिससे सबसे ज्यादा ठेस पहुँचने की संभावना होती है; वह अपनी स्पष्टवादिता से खुश होता है और आपको जोर देकर कहता है: "मैं ऐसा ही हूँ।" जबकि अन्य लोग अपनी अतिरंजित जिज्ञासा से या जिज्ञासा की इतनी कमी से आपको क्रोधित कर देते हैं कि आप उनसे सबसे सनसनीखेज घटनाओं के बारे में बात कर सकते हैं और वे यह नहीं समझ पाते कि यह सब क्या है; और कुछ लोग तो महीनों तक जवाब देने में देरी करते हैं, खासकर तब जब आपका पत्र किसी ऐसे विषय पर हो जो आपसे संबंधित हो, न कि उनसे। या फिर, अगर वे आपसे कुछ मांगने आ रहे हों और आप उन्हें न मिलने के डर से घर से बाहर न निकलें, तो वे आते ही नहीं, बल्कि आपको हफ्तों तक असमंजस में रखते हैं क्योंकि उन्हें आपसे वह जवाब नहीं मिलता जिसकी

उनके पत्र में ज़रा भी 'उम्मीद' नहीं थी, और वे यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि आप उनसे नाराज़ हैं। और कुछ लोग, अपनी इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए, आपसे बात करते रहते हैं, भले ही वे अच्छे मूड में हों और आपसे मिलना चाहते हों, चाहे आपका काम कितना भी ज़रूरी क्यों न हो, लेकिन अगर वे मौसम की वजह से थके हुए हों या उनका मूड खराब हो, तो आप उनसे एक शब्द भी नहीं निकलवा पाते। वे आपकी कोशिशों का जवाब सुस्ती से देते हैं और एक शब्द में भी जवाब देने की जहमत नहीं उठाते, मानो उन्होंने आपको सुना ही न हो। हमारे प्रत्येक मित्र में कुछ न कुछ कमियाँ इतनी स्पष्ट होती हैं कि उनसे प्रेम बनाए रखने के लिए हमें उन कमियों के लिए सांत्वना ढूँढनी पड़ती है—उनकी प्रतिभा, उनकी अच्छाई, हमारे प्रति उनके स्नेह के विचार में—या यों कहें कि उन्हें अनदेखा करना पड़ता है, और इसके लिए हमें अपनी पूरी सद्भावना दिखानी पड़ती है। दुर्भाग्य से, मित्र की कमियों को अनदेखा करने की हमारी विनम्रतापूर्ण हठधर्मिता उस हठधर्मिता के आगे फीकी पड़ जाती है जिसके साथ वह स्वयं उस कमी को अनदेखा करता है या दूसरों पर उस कमी का आरोप लगाता है। क्योंकि वह स्वयं उस कमी को नहीं देखता, या उसे लगता है कि कोई उसे नहीं देखता। चूंकि ठेस पहुँचाने का जोखिम मुख्य रूप से इस बात को समझने की कठिनाई से उत्पन्न होता है कि क्या अनदेखा रह जाता है और क्या नहीं, इसलिए हमें कम से कम विवेकवश अपने बारे में कभी बात नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसा विषय है जिस पर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि दूसरों के विचार कभी भी हमारे विचारों से मेल नहीं खाते। यदि हमें किसी साधारण दिखने वाले घर में प्रवेश करने पर उतने ही आश्चर्य होते हैं, जितने कि किसी छिपे हुए खजाने, यातना कक्षों और कंकालों से भरे घर में, जब हम दूसरों के वास्तविक जीवन, उनके बाहरी दिखावे के पीछे छिपी सच्चाई को

खोजते हैं। तो हमें कम आश्चर्य नहीं होगा यदि, लोगों द्वारा कही गई बातों के आधार पर हमने अपनी जो छवि बनाई है, उसके स्थान पर हम उनकी बातों से यह जान लें कि वे हमारे और हमारे जीवन के बारे में अपने मन में कितनी अलग छवि रखते हैं। इसलिए, जब भी हमने अपने बारे में कुछ कहा है, तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हमारे सीधे-सादे और विवेकपूर्ण शब्द, जिन्हें ऊपरी तौर पर विनम्रता और दिखावटी स्वीकृति के साथ सुना गया, बाद में सबसे उग्र या सबसे हास्यास्पद, लेकिन दोनों ही मामलों में सबसे प्रतिकूल आलोचना को जन्म देते हैं। सबसे कम जोखिम जो हम उठाते हैं, वह है अपने बारे में हमारी धारणा और हमारे द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के बीच के असंतुलन से लोगों को चिढ़ाने का। यह असंतुलन आमतौर पर लोगों की अपने बारे में की गई बातों को उतना ही हास्यास्पद बना देता है जितना कि उन स्वघोषित संगीत प्रेमियों का प्रदर्शन, जो अपनी पसंदीदा धुन गुनगुनाने की ज़रूरत महसूस होने पर, अपनी अस्पष्ट गुनगुनाहट की अपर्याप्तता को ज़बरदस्त नकल और प्रशंसा भरी नज़र से पूरा करने की कोशिश करते हैं, जो उनके द्वारा सुनाई गई बातों से शायद ही उचित होती है। और अपने बारे में और अपनी कमियों के बारे में बोलने की इस बुरी आदत में, उसी के हिस्से के रूप में, दूसरों में ठीक वैसी ही कमियों की निंदा करने की आदत भी जुड़ जाती है जैसी खुद में होती हैं। क्योंकि लोग हमेशा उन्हीं कमियों के बारे में बात करते हैं, मानो यह अपने बारे में अप्रत्यक्ष रूप से बोलने का एक तरीका हो, जो क्षमादान के आनंद के साथ-साथ स्वीकारोक्ति का आनंद भी देता है। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि हमारा ध्यान, जो हमेशा हमारी विशेषताओं की ओर आकर्षित होता है, दूसरों में सबसे ज़्यादा उन्हीं पर केंद्रित होता है। एक कमज़ोर नज़र वाला व्यक्ति दूसरे के बारे में कहता है: "लेकिन वह अपनी आँखें मुश्किल से खोल पाता है!"; एक तपेदिक

रोगी सबसे स्वस्थ व्यक्ति के फेफड़ों की सेहत पर संदेह करता है; एक गंदा आदमी केवल उन स्नानों की बात करता है जो दूसरे लोग नहीं करते; एक बदबूदार आदमी ज़ोर देकर कहता है कि दूसरे लोग बदबूदार हैं; एक व्यभिचारी पति को हर जगह व्यभिचारी ही नज़र आते हैं, एक गोरी महिला को गोरी महिलाएं, एक घमंडी को घमंडी। फिर, हर बुराई, हर पेशे की तरह, एक विशेष ज्ञान की मांग करती है और उसे प्रशिक्षित करती है जिसे प्रदर्शित करने में हम कभी संकोच नहीं करते। व्यभिचारी व्यभिचारियों को पहचानता है और उनकी निंदा करता है; भोजन पर बुलाया गया दर्जी, आपसे बात शुरू करने से पहले ही, आपके कोट के कपड़े पर अपनी राय दे देता है, जिसे छूने के लिए उसकी उंगलियां खुजली कर रही होती हैं, और अगर कुछ शब्दों की बातचीत के बाद आप किसी दंत चिकित्सक से पूछें कि वह वास्तव में आपके बारे में क्या सोचता है, तो वह आपको बताएगा कि आपके कितने दांतों में फिलिंग की ज़रूरत है। उसके लिए इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है, और न ही आपके लिए, जिसने उसकी अपनी कमियों को देखा है, इससे ज़्यादा बेतुका कुछ है। और ऐसा केवल तभी नहीं होता जब हम अपने बारे में बात करते हैं कि हम दूसरों को अंधा समझते हैं; हम ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वे हों। हममें से प्रत्येक पर एक विशेष देवता विराजमान है जो उससे उसकी कमी को छुपाता है या उसे अन्य लोगों से छुपाने का वादा करता है, ठीक वैसे ही जैसे वह उन लोगों की आँखों और नाक को बंद कर देता है जो नहाते नहीं हैं, उनके कानों में जमी गंदगी और बगलों से आने वाली पसीने की गंध को छुपाने के लिए, और उन्हें आश्वस्त करता है कि वे इन दोनों को बिना किसी दंड के ऐसी दुनिया में ले जा सकते हैं जिसे कुछ भी पता नहीं चलेगा। और जो लोग कृत्रिम मोती पहनते हैं या उपहार में देते हैं, वे सोचते हैं कि लोग उन्हें असली मान लेंगे। ब्लोच बदतमीज़, विक्षिप्त,

घमंडी था, और, क्योंकि वह एक कम प्रतिष्ठित परिवार से था, उसे समुद्र की तलहटी की तरह, उस अथाह दबाव को सहना पड़ा जो उस पर न केवल सतह पर मौजूद ईसाइयों द्वारा बल्कि उससे श्रेष्ठ यहूदी जातियों की सभी मध्यवर्ती परतों द्वारा डाला गया था, जिनमें से प्रत्येक अपने ठीक नीचे वाली को अपने तिरस्कार से कुचल रही थी। यहूदी परिवार दर यहूदी परिवार से होते हुए खुले आसमान के नीचे अपना रास्ता बनाने में ब्लोच को हजारों साल लग जाते। उसके लिए बेहतर यही था कि वह कोई दूसरा रास्ता खोजे।

जब ब्लोच ने मुझसे उस घमंड के संकट के बारे में बात की जिससे मैं गुजर रहा था, और मुझसे यह स्वीकार करने को कहा कि मैं भी घमंडी हूँ, तो मैं शायद यही कह सकता था: "अगर मैं होता, तो मैं तुम्हारे साथ नहीं घूम रहा होता।" मैंने बस इतना कहा कि वह बहुत शिष्ट नहीं थे। फिर उन्होंने माफ़ी मांगने की कोशिश की, लेकिन उस बदतमीज़ आदमी के अंदाज़ में जो मौका मिलते ही अपनी गलती को और बढ़ा-चढ़ाकर बताने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाता। "मुझे माफ़ कर दो," वह अब हर बार मिलने पर गिड़गिड़ाते थे, "मैंने तुम्हें परेशान किया है, सताया है; मैंने जानबूझकर शरारत की है। फिर भी—इंसान आम तौर पर और तुम्हारा दोस्त खास तौर पर कितना अनोखा प्राणी है—तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैं, जो तुम्हें इतनी बेरहमी से चिढ़ाता हूँ, तुम्हारे लिए कितना स्नेह रखता हूँ। जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, मेरी आँखों में अक्सर आँसू आ जाते हैं।" और फिर वह ज़ोर से सिसकते थे।

ब्लोच के बुरे व्यवहार से भी ज़्यादा मुझे उनकी बातचीत के लहजे में आए बदलाव ने चौंकाया। यह युवक, जिसे खुश करना इतना मुश्किल था कि प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचे लेखकों के बारे में भी कहता था, "वह एक उदास मूर्ख है; वह बिलकुल बेवकूफ है।" वह कभी-कभी बड़े उत्साह से

ऐसी कहानियाँ सुनाता था जो बिल्कुल भी मज़ेदार नहीं होती थीं, या किसी ऐसे व्यक्ति को 'सचमुच उल्लेखनीय व्यक्ति' बता देता था जो बिल्कुल महत्वहीन होता था। लोगों की बुद्धि, योग्यता और रुचि को मापने का यह दोहरा पैमाना मुझे तब तक उलझन में डालता रहा जब तक मेरी मुलाकात एम. ब्लोच सीनियर से नहीं हुई।

मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि हमें उनसे मिलने का मौका मिलेगा, क्योंकि ब्लोच जूनियर ने सेंट-लूप से मेरी और सेंट-लूप से मेरी बुराई की थी। खासकर, उन्होंने रॉबर्ट से कहा था कि मैं (हमेशा से) एक बहुत बड़ा घमंडी हूँ। "हाँ, सच में, वह एम. एलएलएललेग्रैंडिन को जानकर बहुत खुश हैं।" शब्द को अलग-थलग करने की यह तरकीब, ब्लोच के लिए व्यंग्य और ज्ञान दोनों का प्रतीक थी। सेंट-लूप, जिसने लेग्रैंडिन का नाम कभी नहीं सुना था, हैरान रह गया। "लेकिन वह कौन है?" "ओह, वह तो कमाल का आदमी है!" ब्लोच हँसा, अपने हाथों को जेब में ऐसे डाल लिया जैसे ठंड से बचने के लिए, उसे यकीन था कि वह उस पल एक असाधारण देहाती सज्जन के आकर्षक रूप का आनंद ले रहा था, जिसके सामने बार्बे डी'ऑरेविली का रूप कुछ भी नहीं था। एम. लेग्रैंडिन का सटीक चित्रण करने में अपनी असमर्थता के लिए उसने उनके नाम में बड़े अक्षरों में 'L' लिखकर उन्हें तड़पाया, मानो किसी दूर के गोदाम से लाई गई शराब का स्वाद चख रहा हो। लेकिन ये व्यक्तिगत आनंद दूसरों से छिपे रहे। अगर उसने सेंट-लूप से मेरी बुराई की, तो उसने सेंट-लूप से भी उतनी ही बुरी बातें कहकर इसकी भरपाई की। अगले दिन हम दोनों को इन निंदाओं के बारे में विस्तार से पता चला, ऐसा नहीं कि हमने उन्हें एक-दूसरे को दोहराया, जो हमें बहुत गलत लगता, लेकिन ब्लोच को यह इतना स्वाभाविक और लगभग अपरिहार्य लगा कि अपनी स्वाभाविक चिंता में, और इस निश्चितता में भी कि वह हमें वही बता रहा होगा जो

हममें से प्रत्येक को देर-सवेर पता चलना ही था, उसने खुलासा करने से पहले ही यह बात कह दी और सेंट-लूप को एक तरफ ले जाकर स्वीकार किया कि उसने जानबूझकर उसकी बुराई की थी, ताकि उसे भी यह बात बताई जा सके, और "शपथों के बंधक ज़्यूस क्रोनियन की कसम" खाकर कहा कि वह उससे बहुत प्यार करता है, और उसके लिए अपनी जान भी दे देगा; और उसने एक आंसू पोंछा। उसी दिन, उसने मुझसे अकेले में मिलने का प्रबंध किया, अपना गुनाह कबूल किया, और कहा कि उसने मेरे हित में ऐसा किया था, क्योंकि उसे लगता था कि एक खास तरह का सामाजिक मेलजोल मेरे लिए घातक था और मैं 'बेहतर चीजों के लायक' थी। फिर, एक शराबी की भावुकता के साथ मेरा हाथ थामते हुए, हालांकि उसका नशा केवल घबराहट भरा था: "मान लो," उसने कहा, "और अगर कल, जब मैंने तुम्हारे बारे में, कॉम्ब्रे के बारे में, तुम्हारे लिए अपने असीम स्नेह के बारे में, कक्षा में बिताए उन दोपहर के पलों के बारे में सोचा, जिन्हें तुम याद भी नहीं करतीं, तो मैं पूरी रात जागकर रोता नहीं रहा। हाँ, पूरी रात, मैं कसम खाता हूँ, और अफसोस, मैं जानता हूँ - क्योंकि मैं इंसानी आत्मा को जानता हूँ - तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगी।" मुझे सचमुच उस पर विश्वास नहीं था, और उसकी बातें, जो मुझे लगता था कि वह तात्कालिक भाव से गढ़ रहा था और बोलते-बोलते बढ़ा रहा था, उन पर 'केर की कसम' का कोई खास असर नहीं था, क्योंकि ब्लोच में यूनानी पंथ केवल साहित्यिक था। इसके अलावा, जब भी वह भावुक होने लगता और चाहता कि सुनने वाला भी किसी झूठ पर भावुक हो जाए, तो वह कहता: "मैं कसम खाता हूँ," झूठ बोलने की सनकी संतुष्टि के लिए, न कि लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह सच बोल रहा है। मुझे उसकी बातों पर विश्वास नहीं था, लेकिन इसके लिए मेरे मन में उसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी, क्योंकि मैंने अपनी माँ और

दादी से यह आदत विरासत में पाई थी कि वे कहीं अधिक बुरे अपराधियों के प्रति भी आक्रोश नहीं रखती थीं और किसी की निंदा नहीं करती थीं।

इसके अलावा, यह ब्लोच पूरी तरह से बुरा युवक नहीं था; वह कभी-कभी बेहद आकर्षक हो सकता था, और होता भी था। और अब जबकि कॉम्ब्रे की नस्ल, वह नस्ल जिससे मेरी दादी और माँ जैसी बिल्कुल शुद्ध और निर्मल हस्तियाँ निकलीं, लगभग विलुप्त प्रतीत होती है, और मेरे पास अब केवल दो ही विकल्प बचे हैं: एक तरफ ईमानदार और वफादार लोग, जिनकी आवाज़ से ही पता चल जाता है कि उन्हें किसी के जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं है, और दूसरी तरफ ऐसे लोग जो साथ रहने पर समझते हैं, प्यार करते हैं, भावुक होकर आँसू बहाते हैं, कुछ घंटों बाद किसी क्रूर मज़ाक से अपना बदला लेते हैं, लेकिन फिर लौट आते हैं, हमेशा की तरह समझदार, आकर्षक और उस पल के लिए मेरे साथ घुलमिल जाते हैं। ऐसे में मुझे लगता है कि नैतिक मूल्यों के मामले में भले ही न हो, लेकिन मुझे इसी दूसरी तरह के लोग ज़्यादा पसंद हैं, क्योंकि उनका साथ मुझे नैतिक मूल्यों के मामले में तो पसंद है।

"जब मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ तो तुम मेरे दुख की कल्पना भी नहीं कर सकते," ब्लोच ने आगे कहा। "जब तुम इस बारे में सोचते हो, तो यह मेरे स्वभाव का एक यहूदी पहलू है," उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, अपनी पुतलियों को सिकोड़ते हुए मानो उन्हें सूक्ष्मदर्शी से अपने 'यहूदी रक्त' की एक अत्यंत सूक्ष्म मात्रा की जाँच करनी हो, और जैसे कोई महान फ्रांसीसी रईस कहता (लेकिन कभी नहीं कहता) जिसके पूर्वज सभी ईसाई थे, फिर भी उनमें सैमुअल बर्नार्ड या उससे भी आगे, धन्य वर्जिन मैरी शामिल हो सकती थीं, जिनसे कहा जाता है कि लेवी परिवार अपना वंश मानता है, "यह सामने आ रहा है। मुझे अच्छा लगता है," उन्होंने आगे कहा, "अपनी भावनाओं में उस हिस्से के लिए जगह बनाना (हालांकि यह बहुत

छोटा हिस्सा है) जो मेरे यहूदी मूल से जुड़ा हो सकता है।" उन्होंने यह बयान इसलिए दिया क्योंकि उन्हें अपनी जाति के बारे में सच बोलना एक साथ चतुराई और साहस का काम लगा, एक ऐसा सच जिसे उन्होंने उसी समय उल्लेखनीय हद तक कम कर दिया, उन कंजूसों की तरह जो अपना कर्ज चुकाने का फैसला तो करते हैं लेकिन आधे से ज्यादा चुकाने का साहस नहीं रखते। इस तरह का छल, जिसमें सत्य को प्रकट करने का साहस तो किया जाता है, लेकिन उसमें पर्याप्त मात्रा में झूठ मिलाकर उसे विकृत कर दिया जाता है, लोगों की सोच से कहीं अधिक आम है, और यहां तक कि जो लोग इसे आदतन नहीं अपनाते हैं, जीवन में कुछ संकट, विशेषकर वे जिनमें प्रेम दांव पर लगा होता है, उन्हें इसे अपनाने का अवसर प्रदान करते हैं।

ब्लोच द्वारा सेंट-लूप के प्रति मेरे और मेरे द्वारा सेंट-लूप के प्रति की गई ये सभी गोपनीय कटु आलोचनाएँ अंततः रात्रिभोज के निमंत्रण में परिणत हुईं। मुझे इस बात का ज़रा भी यकीन नहीं है कि उसने पहले स्वयं सेंट-लूप को अपने पक्ष में करने का प्रयास नहीं किया होगा। ब्लोच के स्वभाव के अनुसार ऐसा करना स्वाभाविक ही था, और संभवतः उसने ऐसा किया भी होगा; परन्तु यदि ऐसा था भी, तो उसका प्रयास सफल नहीं हुआ, क्योंकि एक दिन ब्लोच ने मुझसे और सेंट-लूप से कहा: "प्रिय स्वामी, और आप, हे एरेस के प्रिय घुड़सवार, सेंट-लूप-एन-ब्रे, घोड़ों के प्रशिक्षक, जब से मेरी मुलाक़ात एम्फ़िट्राइट के किनारे, झाग से गूंजते समुद्र में, तेज़ गति से चलने वाले मेनियर्स के तम्बुओं के पास हुई है, क्या आप दोनों इस सप्ताह किसी भी दिन मेरे प्रख्यात, निष्कलंक हृदय वाले स्वामी के साथ रात्रिभोज पर आएँगे?" उसने यह निमंत्रण इसलिए दिया क्योंकि वह सेंट-लूप के साथ और अधिक घनिष्ठ संबंध स्थापित करना चाहता था, जिससे उसे आशा थी कि वह उसे कुलीन वर्ग में प्रवेश दिलाएगा। मेरे द्वारा

अपने लिए बनाई गई यह महत्वाकांक्षा ब्लोच को घोर अहंकार की निशानी लगती, जो मेरे स्वभाव के उस पहलू के बारे में उनकी पहले से बनी राय के बिल्कुल अनुरूप थी, जिसे वे मेरा सबसे महत्वपूर्ण पहलू नहीं मानते थे—या कम से कम अब तक नहीं मानते थे; लेकिन स्वयं में यही महत्वाकांक्षा उन्हें एक ऐसे मन की सूक्ष्म रूप से विकसित जिज्ञासा का प्रमाण प्रतीत हुई, जो कुछ सामाजिक अन्वेषण करने के लिए उत्सुक था, जिससे शायद उन्हें कुछ साहित्यिक लाभ मिल सके। एम. ब्लोच सीनियर, जब उनके बेटे ने उन्हें बताया कि वह अपने एक मित्र को रात के खाने पर ला रहे हैं, और व्यंग्यपूर्ण लेकिन संतुष्ट स्वर में उस मित्र का नाम और उपाधि बताई: "मार्क्विस डी सेंट-लूप-एन-ब्रे," तो वे बहुत परेशान हो गए। "मार्क्विस डी सेंट-लूप-एन-ब्रे! मैं हैरान हूँ!" उन्होंने सामाजिक सम्मान के प्रतीक के रूप में शपथ का प्रयोग करते हुए कहा। और उन्होंने अपने उस बेटे पर, जो इतनी अच्छी जान-पहचान बना सकता था, प्रशंसा भरी नज़र डाली, मानो कह रहे हों: "सचमुच, यह तो आश्चर्यजनक है। क्या यह विलक्षण प्रतिभा वाला बच्चा सचमुच मेरा ही है?" यह देखकर मेरे मित्र को उतनी ही खुशी हुई, मानो उसका मासिक भत्ता पचास फ्रैंक बढ़ गया हो। क्योंकि ब्लोच घर पर सहज महसूस नहीं करते थे और उन्हें लगता था कि उनके पिता उन्हें एक खोई हुई भेड़ की तरह मानते हैं, क्योंकि वे जीवन भर लेकोंटे डी लिस्ले, हेरेडिया और अन्य 'बोहेमियन' लोगों के प्रशंसक रहे थे। लेकिन सेंट-लूप-एन-ब्रे से जान-पहचान होना, जिनके पिता स्वेज नहर बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके थे ('मैं तो हैरान रह गया!'), एक निर्विवाद उपलब्धि थी। वास्तव में, यह कितना अफ़सोस की बात थी कि वे यात्रा में टूटने के डर से स्टीरियोस्कोप को पेरिस में ही छोड़ आए थे। पुरुषों में अकेले श्री ब्लोच सीनियर के पास ही यह कला थी, या कम से कम इसे प्रदर्शित करने का अधिकार तो था ही। इसके अलावा, वह ऐसा

बहुत कम ही करते थे, और वह भी अच्छे उद्देश्य से, उन शामों में जब कोई भव्य समारोह होता था और किराए पर वेटर रखे होते थे। इस प्रकार, स्टीरियोस्कोप के इन प्रदर्शनों से, उपस्थित लोगों के लिए मानो एक विशेष सम्मान, एक विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति उत्पन्न होती थी, और घर के मालिक को, जिसने उन्हें ऐसी प्रतिष्ठा दिलाई जो प्रतिभा से ही मिलती है—जो इससे अधिक नहीं हो सकती थी यदि तस्वीरें स्वयं एम. ब्लोच द्वारा ली गई होतीं और मशीन उनका स्वयं का आविष्कार होती। परिवार का एक सदस्य दूसरे से पूछता, "कल सोलोमन के यहाँ तुम्हें आमंत्रित नहीं किया गया था?" "नहीं! मैं आमंत्रित लोगों में से नहीं था। क्या कार्यक्रम था?" "अरे वाह, बहुत बढ़िया कार्यक्रम था, स्टीरियोस्कोप, सारे करतब!" "सचमुच! अगर वहाँ स्टीरियोस्कोप था तो मुझे खेद है कि मैं वहाँ नहीं था; लोग कहते हैं कि सोलोमन जब इसे चलाता है तो वह कमाल का होता है।"—"कुछ नहीं किया जा सकता;" एम. ब्लोच ने अपने बेटे से कहा, "उसे एक साथ सब कुछ दे देना गलती होगी; इससे उसके पास आगे देखने के लिए कुछ नहीं बचेगा।" दरअसल, अपने पिता के स्नेह और बेटे के दिल को छूने की उम्मीद में, उन्होंने यंत्र मंगवाने का सोचा था। लेकिन समय नहीं था, या यूँ कहें कि उन्हें लगा था कि समय नहीं होगा; क्योंकि हमें रात का खाना टालना पड़ा क्योंकि सेंट-लूप होटल से बाहर नहीं निकल सकते थे, जहाँ वे अपने एक चाचा का इंतज़ार कर रहे थे जो श्रीमती डी विलेपारिसिस के साथ कुछ दिन बिताने आ रहे थे। चूंकि—उन्हें शारीरिक व्यायाम, और विशेष रूप से लंबी पैदल यात्रा का बहुत शौक था —वे अपने ठहरने वाले ग्रामीण घर से पैदल ही यात्रा करने वाले थे और रास्ते में पड़ने वाले खेतों में रात बिताने वाले थे, इसलिए बालबेक में उनके आगमन की सही तारीख निश्चित नहीं थी। और सेंट-लूप, घर से बाहर निकलने से डरते हुए, यहाँ तक कि उन्होंने मुझे ही अपनी प्रेमिका

को प्रतिदिन भेजे जाने वाले संदेशों को इनकाविल ले जाने का काम सौंपा था, जहाँ निकटतम टेलीग्राफ कार्यालय था। जिस चाचा का हम इंतजार कर रहे थे, उनका नाम पलामेडे था, यह नाम उन्हें उनके पूर्वजों, सिसिली के राजकुमारों से विरासत में मिला था। और बाद में जब मैंने इतिहास पढ़ते हुए पाया कि किसी पोडेस्टा या चर्च के राजकुमार से संबंधित, एक ही ईसाई नाम वाला, एक सुंदर पुनर्जागरण पदक—कुछ लोगों ने इसे असली प्राचीन वस्तु कहा—जो हमेशा परिवार में ही रहा था, पीढ़ी दर पीढ़ी, वेटिकन कैबिनेट से मेरे मित्र के चाचा तक, तब मुझे वह आनंद प्राप्त हुआ जो उन लोगों को मिलता है जो साधनों की कमी के कारण पदक संग्रह या चित्र गैलरी शुरू करने में असमर्थ होने के कारण पुराने नामों (स्थानों के नाम, जो एक पुराने नक्शे, एक पक्षी की नज़र से देखे गए दृश्य, एक साइनबोर्ड या रीति-रिवाजों की वापसी की तरह शिक्षाप्रद और सुरम्य होते हैं; बपतिस्मा के नाम, जिनमें उनके सुंदर फ्रांसीसी अंत में, उच्चारण की खामी, एक नस्लीय अशिष्टता का स्वर, वह विकृत उच्चारण जो हमारे पूर्वजों ने लैटिन और सैक्सन शब्दों को स्थायी रूप से विकृत कर दिया था और जो समय के साथ हमारी व्याकरण की पुस्तकों के महान नियम-निर्माता बन गए) की खोज करते हैं और संक्षेप में, प्राचीन और मधुर शब्दों के अपने संग्रह का उपयोग करके, स्वयं को संगीतमय प्रस्तुति देते हैं। वे लोग जो पुराने जमाने के वाद्ययंत्रों पर पुराने जमाने का संगीत बजाने के लिए वायल दा गाम्बा और वायल डी'अमोर खरीदते हैं। सेंट-लूप ने मुझे बताया कि सबसे विशिष्ट कुलीन समाज में भी उनके चाचा पलामेडे की एक और खासियत यह थी कि उनसे मिलना बेहद मुश्किल था, वे तिरस्कारपूर्ण थे, अपनी कुलीनता में पक्के थे, और अपने भाई की पत्नी और कुछ अन्य चुनिंदा लोगों के साथ मिलकर उन्होंने एक समूह बनाया था जिसे फीनिक्स क्लब के नाम से जाना जाता था। वहाँ

भी उनकी धृष्टता से इतना खौफ था कि कई बार ऐसा हुआ था कि अच्छे ओहदे वाले लोग जो उनसे मिलने के लिए उत्सुक थे और उनके भाई से परिचय कराने के लिए गुहार लगाई थी, उन्हें इनकार का सामना करना पड़ा था: "सच में, आपको मुझसे अपने भाई पलामेडे से परिचय कराने के लिए नहीं कहना चाहिए। मैं और मेरी पत्नी, हम सब आपके लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं होगा। इसके अलावा, हमेशा यह खतरा रहता है कि वे आपके साथ बदतमीजी करेंगे, और मैं ऐसा नहीं चाहूंगा।" जॉकी क्लब में उन्होंने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर दो सौ सदस्यों की एक सूची बनाई थी, जिनसे वे कभी किसी को मिलने नहीं देते थे। और कॉम्टे डी पेरिस के करीबी लोगों में उन्हें उनकी विशिष्टता और गर्व के कारण 'राजकुमार' उपनाम से जाना जाता था।

सेंट-लूप ने मुझे अपने चाचा के शुरुआती जीवन के बारे में बताया, जो अब काफी समय पहले की बात है। वह हर दिन महिलाओं को एक कुंवारे लोगों के अड्डे पर ले जाया करते थे, जिसे वह अपने दो दोस्तों के साथ साझा करते थे, जो उन्हीं की तरह सुंदर थे, जिसके कारण उन्हें 'तीन सुंदरियाँ' के नाम से जाना जाता था।

एक दिन, एक आदमी, जो आजकल, जैसा कि बाल्ज़ाक कहते, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की नज़रों में छाया हुआ है, लेकिन जिसने अपने शुरुआती जीवन के एक अजीब दौर में विचित्र रुचियाँ दिखाई थीं, ने मेरे चाचा से इस जगह आने की अनुमति माँगी। लेकिन जैसे ही वह पहुँचा, उसने महिलाओं से नहीं, बल्कि मेरे चाचा पालामेडे से ही संबंध बनाने की कोशिश शुरू कर दी। मेरे चाचा ने अनसुना करने का नाटक किया और अपने दो दोस्तों को बुलाने का बहाना बनाया; वे मौके पर पहुँचे, अपराधी को पकड़ा, उसके कपड़े उतार दिए, उसे तब तक पीटा जब तक खून नहीं बहने लगा, और फिर बाहर कड़ाके की ठंड में उसे सड़क पर लात मारकर

फेंक दिया जहाँ वह लगभग मृत अवस्था में मिला; हालत इतनी खराब थी कि पुलिस ने जाँच शुरू कर दी, जिसे उस बेचारे को पुलिस से बंद करवाने में बहुत मुश्किल हुई। मेरे चाचा अब कभी ऐसे कठोर तरीके नहीं अपनाएँगे, वास्तव में आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि समाज में इतना घमंड दिखाने वाले उन्होंने कितने साधारण लोगों के प्रति स्नेह दिखाया है, उन्हें अपने संरक्षण में लिया है, भले ही इसके बदले उन्हें कृतघ्नता ही क्यों न मिली हो। चाहे वह कोई नौकर हो जिसने होटल में उसकी सेवा की हो, जिसके लिए वह पेरिस में नौकरी दिलाएगा, या कोई खेत मजदूर जिसे वह कोई हुनर सिखाने के लिए पैसे देगा। यह वास्तव में उसके चरित्र का काफी अच्छा पहलू है, उसके सामाजिक पहलू के विपरीत। सेंट-लूप वास्तव में उस तरह के फैशनेबल नौजवानों में से एक था, जो ऐसी स्थिति में था जहाँ "उसके बारे में वास्तव में क्या अच्छा है," "उसका काफी अच्छा पहलू" जैसे भावों को विकसित करना संभव था, ये अनमोल बीज बहुत तेजी से चीजों को देखने का एक ऐसा तरीका पैदा करते हैं जिसमें व्यक्ति खुद को कुछ भी नहीं और 'लोगों' को सब कुछ समझता है; संक्षेप में, यह आम लोगों के गर्व के ठीक विपरीत है। ऐसा लगता है कि यह कल्पना करना बिल्कुल असंभव है कि युवावस्था में उन्होंने कैसे समाज के लिए दिशा-निर्देश तय किए, कैसे नियम बनाए। वे पूरी तरह से अपने लिए काम करते थे; किसी भी परिस्थिति में वे वही करते थे जो उन्हें भाता था, जो सबसे सुविधाजनक होता था, लेकिन तुरंत ही संभ्रांत लोग उनकी नकल करने लगते थे। अगर नाटक के दौरान उन्हें प्यास लगती और वे अपने बॉक्स से पानी मंगवाते, तो एक हफ्ते बाद सभी बॉक्स के पीछे बने छोटे बैठक कक्ष जलपान से भर जाते। एक बरसाती गर्मी में, जब उन्हें गठिया का हल्का सा दर्द था, तो उन्होंने ढीले लेकिन गर्म विकुना ऊन का एक अल्स्टर बनवाया, जिसका उपयोग केवल

यात्रा के लिए इस्तेमाल होने वाले गलीचों में किया जाता है, और उस पर नीली और नारंगी धारियाँ दिखाई देने दीं। बड़े दर्ज़ियों को तुरंत ही उनके सभी ग्राहकों से खुरदुरे ऊन के नीले और नारंगी अल्स्टर के ऑर्डर मिलने लगे। अगर किसी कारणवश वे किसी ग्रामीण घर में, जहाँ वे दिन बिता रहे थे, रात्रिभोज में औपचारिकता का कोई नामोनिशान न रखना चाहते और यह दर्शाना चाहते कि वे शाम के कपड़े पहने बिना आए हैं और उसी सूट में मेज पर बैठ गए हैं जो उन्होंने उस दोपहर पहना था, तो यह चलन बन गया, जब आप देहात में भोजन कर रहे थे, न कि सजने-संवरने के लिए। अगर वह कोई खास मिठाई खा रहा होता और चम्मच की जगह चाकू, या अपने खुद के बनाए किसी खास औजार (जो उसने किसी सुनार से बनवाया होता) या अपनी उंगलियों का इस्तेमाल करता, तो उसे किसी और तरीके से खाना तुरंत गलत हो जाता। वह एक बार फिर बीथोवेन के कुछ चौकड़ी संगीत सुनना चाहता था (क्योंकि अपने तमाम बेतुके विचारों के बावजूद वह मूर्ख नहीं है, बल्कि उसमें अद्भुत प्रतिभा है) और उसने कुछ संगीतकारों को बुलाया जो सप्ताह में एक बार आकर उसे और उसके कुछ दोस्तों को ये संगीत सुनाते थे। उस मौसम में बहुत ही फैशनेबल चलन था चैंबर संगीत के साथ छोटी-छोटी पार्टियां देना। मुझे कहना चाहिए कि उसने जीवन में कुछ भी बुरा नहीं किया। अपने रूप-रंग के कारण, उसके पास कई स्त्रियां रही होंगी! मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बता सकती कि कौन-कौन, क्योंकि वह बहुत ही गोपनीय है। लेकिन मैं इतना जरूर जानती हूं कि वह मेरी बेचारी चाची के प्रति पूरी तरह से बेवफा था। हालांकि इससे यह नहीं रुका कि वह हमेशा उसके प्रति बेहद आकर्षक बना रहा और वह उसे प्यार करती रही; वह कई वर्षों तक उसके लिए शोक मनाता रहा। जब वह पेरिस में होता है, तो वह अब भी जाता है। लगभग हर दिन कब्रिस्तान जाता हूँ।

रॉबर्ट ने मुझे अपने चाचा के बारे में ये सब बातें बताई थीं, उसके अगले दिन सुबह जब मैं उनका इंतज़ार कर रहा था (और जैसा कि हुआ, उसका इंतज़ार व्यर्थ ही गया), मैं अकेले कैसिनो के पास से होटल लौट रहा था। तभी मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे देख रहा हो, जो ज़्यादा दूर नहीं था। मैंने अपना सिर घुमाया और देखा कि लगभग चालीस साल का एक आदमी, बहुत लंबा और मोटा, घनी काली मूंछों वाला, अपनी पतलून के पाँव पर बेतहाशा मारते हुए, मुझे घूर रहा था। उसकी आँखें हर थोड़ी देर में तीव्र हो जाती थीं, जैसे किसी अनजान व्यक्ति को देखकर, जो किसी भी कारण से, ऐसे विचार उत्पन्न करता है जो किसी और के मन में नहीं आते—जैसे पागल या जासूस। उसने मुझे एक ऐसी सर्वोच्च निगाह से देखा जो एक साथ साहसी, विवेकपूर्ण, तीव्र और गहन थी, मानो कोई व्यक्ति दुश्मन पर उस क्षण आखिरी गोली चला रहा हो जब वह भागने के लिए मुड़ता है। पहले उसने अपने चारों ओर देखा, फिर अचानक एक उदासीन और उदात्त भाव अपनाते हुए, अपने पूरे शरीर को अचानक घुमाकर दीवार पर लगे एक नाटक के विज्ञापन को देखने लगा, जिसे पढ़ने में वह मग्न हो गया, साथ ही वह एक धुन गुनगुना रहा था और अपने बटनहोल में लगे काई-गुलाब को उंगलियों से सहला रहा था। उसने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली जिसमें वह घोषित कार्यक्रम का शीर्षक लिख रहा था, अपनी घड़ी पर दो-तीन बार नज़र डाली, अपनी आँखों पर एक काली भूसे की टोपी खींच ली, जिसका किनारा उसने हाथ से ढककर फैला दिया, मानो यह देखने के लिए कि कोई आ रहा है या नहीं, झुंझलाहट का वह औपचारिक इशारा किया जिससे लोग यह जताना चाहते हैं कि वे बहुत देर से इंतज़ार कर रहे हैं, हालाँकि वास्तव में इंतज़ार करते समय वे ऐसा कभी नहीं करते, फिर अपनी टोपी को पीछे धकेलकर अपने सिर के बालों को दिखाया जो किनारों को छोड़कर छोटे-छोटे कटे

हुए थे जहाँ उसने कबूतर के पंखों जैसे लहराते हुए बाल काफी लंबे बढ़ा रखे थे, और ज़ोर-ज़ोर से हाँफने लगा, जैसा कि वे लोग करते हैं जो बीमार तो नहीं होते लेकिन दिखाना चाहते हैं कि वे बीमार हैं। उसने मुझे एक ऐसे 'होटल चोर' की तरह दिखाया जो कुछ दिनों से मेरी दादी और मुझ पर नज़र रख रहा था, और हमें लूटने की योजना बनाते समय उसे पता चल गया था कि मैंने उसे जासूसी करते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया है; मुझे गुमराह करने के लिए, शायद वह अपने इस नए रवैये से केवल ऊब और अलगाव व्यक्त करना चाहता था, लेकिन उसने इसे इतने आक्रामक ढंग से अतिरंजित किया कि ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका उद्देश्य—कम से कम मेरे मन में उसके प्रति जो संदेह थे उन्हें दूर करने के साथ-साथ—उस अपमान का बदला लेना भी था जो मैंने अनजाने में उसे पहुँचाया होगा। वह मुझे यह जताना चाहता था कि उसने मुझे देखा नहीं, बल्कि मैं उसके लिए इतना महत्वहीन था कि उसने मेरा ध्यान आकर्षित नहीं किया। उसने अपने कंधे उचकाए, होंठ काटे, मूंछें ऊपर कीं और अपनी आँखों में कुछ ऐसा भाव प्रकट किया जो उदासीन, कठोर और लगभग अपमानजनक था। उसने इतनी प्रभावी ढंग से अपने चेहरे के भाव की विलक्षणता से मुझे एक पल के लिए वह चोर और दूसरे पल के लिए पागल लगा। फिर भी, उनका सावधानीपूर्वक व्यवस्थित पहनावा बालबेक में देखे गए सभी ग्रीष्मकालीन आगंतुकों की तुलना में कहीं अधिक संयमित और सरल था, और मेरे अपने सूट को आश्वस्त कर रहा था, जो अक्सर उनके चकाचौंध भरे और साधारण सफेद परिधानों से अपमानित महसूस करता था। लेकिन मेरी दादी मेरी ओर आ रही थीं, हम एक साथ मुड़े, और एक घंटे बाद, मैं उस होटल के बाहर उनका इंतजार कर रहा था जिसमें वह कुछ देर के लिए गई थीं, तभी मैंने देखा कि श्रीमती डी विलेपारिसिस रॉबर्ट डी सेंट-लूप और उस अजनबी के साथ बाहर निकलीं, जिसने कैसिनो के

बाहर मुझे इतनी उत्सुकता से देखा था। बिजली की चमक की तरह उसकी निगाहें मुझ पर टिक गईं, ठीक वैसे ही जैसे पहली बार मैंने उसे देखा था, और फिर मानो उसने मुझे देखा ही न हो, उसकी आँखों के सामने थोड़ी झुकी हुई, मंद-मंद, उस तटस्थ निगाह की तरह जो बाहर कुछ भी न देखने का दिखावा करती है और भीतर के मन को कुछ भी बताने में असमर्थ होती है, वह निगाह जो केवल अपने चारों ओर की पलकों को महसूस करने की संतुष्टि को व्यक्त करती है, वह भक्तिपूर्ण, गहन निगाह जो हम कुछ पाखंडियों के चेहरों पर देखते हैं, कुछ मूर्खों के चेहरों पर वह आत्मसंतुष्ट निगाह। मैंने देखा कि उसने अपने कपड़े बदल लिए थे। उसने जो सूट पहना था वह दूसरे सूट से भी गहरा था; और निस्संदेह ऐसा इसलिए था क्योंकि पहनावे में सच्चा अंतर दिखावे से कहीं अधिक सादगी में निहित होता है; लेकिन कुछ और भी था; जब कोई उसके पास आता था तो महसूस होता था कि अगर इन कपड़ों से रंग लगभग पूरी तरह गायब था तो यह इसलिए नहीं था कि जिसने इसे इनसे हटा दिया था वह इसके प्रति उदासीन था बल्कि इसलिए था कि किसी कारण से उसने खुद को इसके आनंद से वंचित कर दिया था। और उनके द्वारा प्रदर्शित संयम भूख की कमी के बजाय आहार संबंधी नियमों के पालन से उत्पन्न होने वाले संयम जैसा प्रतीत होता था। उनकी पतलून के कपड़े में गहरे हरे रंग का धागा, उनके मोजों पर बनी घड़ी के साथ सामंजस्य बिठा रहा था, एक ऐसी परिष्कृतता के साथ जो उनके उस जीवंत स्वाद को दर्शाती थी जिसे उन्होंने हर जगह पर परास्त कर लिया था, और इस कमजोरी के प्रति सहनशीलता के कारण ही उन्होंने यह एकमात्र रियायत दी थी। वहीं, उनकी टाई पर लाल रंग का धब्बा इतना सूक्ष्म था मानो कोई ऐसी स्वतंत्रता हो जिसे लेने की हिम्मत कोई नहीं करता।

"आप कैसे हैं? चलिए, मैं आपको अपने भतीजे, बैरन डी गुएरमांटेस से मिलवाती हूँ," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मेरा अभिवादन किया, जबकि अजनबी ने मेरी ओर देखे बिना, अस्पष्ट रूप से "आपसे मिलकर खुशी हुई!" बुदबुदाया, जिसके बाद उसने "हम्म, हम्म, हम्म" कहकर अपनी विनम्रता को बनावटी दिखाने की कोशिश की, और अपनी छोटी उंगली, तर्जनी और अंगूठे को मोड़कर अपनी मध्यमा और अनामिका उंगलियाँ मेरी ओर बढ़ाईं, अनामिका पर कोई अंगूठी नहीं थी, जिसे मैंने उसके मखमली दस्ताने के माध्यम से पकड़ लिया; फिर, मेरी ओर देखे बिना, वह श्रीमती डी विलेपारिसिस की ओर मुड़ गया।

"हे भगवान! कहीं मैं अपना नाम ही न भूल जाऊं!" वह बोली। "मैं आपको बैरन डी गुएरमांटेस कह रही हूं। चलिए, मैं आपको बैरन डी चार्लस से मिलवाती हूं। आखिर यह कोई बहुत बड़ी गलती तो नहीं है," वह आगे बोली, "क्योंकि आप चाहे जो भी हों, आप पक्के गुएरमांटेस हैं।"

तब तक मेरी दादी वापस आ चुकी थीं, और हम सब एक साथ चल पड़े। सेंट-लूप के चाचा ने मुझे न केवल एक शब्द कहा, बल्कि मेरी ओर एक नज़र भी नहीं डाली। अगर वह अजनबियों को घूरते थे (और इस छोटी सी यात्रा के दौरान उन्होंने दो-तीन बार अपनी तीखी और भेदक निगाहों से उन साधारण लोगों को देखा जो संयोग से वहाँ से गुज़र रहे थे), तो इसकी भरपाई के लिए, अगर मैं खुद यह कहूँ तो, उन्होंने एक पल के लिए भी उन लोगों की ओर नहीं देखा जिन्हें वह जानते थे, ठीक वैसे ही जैसे कोई विशेष ड्यूटी पर तैनात जासूस अपने निजी दोस्तों को अपनी पेशेवर निगरानी से अलग रखता है। उन्हें—मेरी दादी, श्रीमती डी विलेपारिसिस और उन्हें—आपस में बात करते हुए छोड़कर, मैं सेंट-लूप के साथ पीछे रह गया।

"मुझे बताइए, क्या मैं सही सोच रहा हूँ कि मैंने अभी-अभी श्रीमती डी

विलेपारिसिस को आपके चाचा से यह कहते हुए सुना कि वह एक गुएरमांटेस थे?"

"बेशक वह है; पलामेडे डी गुएरमांटेस।"

"क्या ये वही गुएरमांटेस नहीं हैं जिनका कॉम्ब्रे के पास एक घर है, और जो जेनेवीव डी ब्राबेंट से वंशज होने का दावा करते हैं?"

“बिल्कुल: मेरे चाचा, जो वंश-प्रणाली और इस तरह की सभी चीजों के विशेषज्ञ हैं, आपको बताएंगे कि हमारा ‘घोष’, यानी हमारा युद्धघोष, जिसे बाद में ‘पासावंत’ कर दिया गया, मूल रूप से ‘कॉम्ब्रेसिस’ था,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा ताकि ऐसा न लगे कि वे इस ‘घोष’ के विशेषाधिकार पर गर्व कर रहे हैं, जो केवल अर्ध-शाही घरानों, सामंती दलों के महान सरदारों को प्राप्त था। “अब यह पद उनके भाई के पास है।”

और इस प्रकार, श्रीमती डी विलेपारिसिस, जो वास्तव में मेरे लिए वह महिला थीं जिन्होंने मुझे बचपन में चॉकलेट से भरी एक बत्तख दी थी, गुएरमांटे परिवार से काफी करीबी रिश्तेदार थीं। वह गुएरमांटे परिवार से इतनी दूर थीं मानो उन्हें मेसेग्लिस में कहीं बंद कर दिया गया हो, वह कम प्रतिभाशाली थीं, मेरे लिए कॉम्ब्रे के ऑप्टिशियन से कम प्रतिष्ठित थीं, और अब अचानक उनके मूल्य में एक ऐसी आश्चर्यजनक वृद्धि हुई, जो हमारे पास मौजूद अन्य वस्तुओं के अप्रत्याशित अवमूल्यन के समानांतर थी, जो - उतार-चढ़ाव दोनों - हमारी युवावस्था में और हमारे जीवन के उन कालखंडों में, जिनमें युवावस्था का अंश शेष रहता है, ओविड के मेटामोर्फोसिस की तरह असंख्य परिवर्तन लाते हैं।

"क्या वहाँ नीचे, गुएरमांटेस के सभी पुराने सरदारों की प्रतिमाएँ नहीं हैं?"

"हाँ; और वे वाकई देखने लायक हैं!" सेंट-लूप व्यंग्यात्मक लहजे में बोले। "सच कहूँ तो, मैं इस तरह की सभी चीजों को एक मज़ाक की तरह

देखता हूँ। लेकिन उन्होंने गुएरमांटेस पर कुछ ज़्यादा दिलचस्प चीज़ बनाई है, और वह है कैरिएर द्वारा बनाया गया मेरी चाची का एक बेहद मार्मिक चित्र। यह व्हिस्लर या वेलास्केज़ जितना ही बढ़िया है," सेंट-लूप ने आगे कहा, जो अपनी शुरुआती उत्साह में महानता के स्तर को लेकर हमेशा सटीक नहीं होते थे। "गुस्ताव मोरो की कुछ दिल को छू लेने वाली तस्वीरें भी हैं। मेरी चाची आपकी दोस्त श्रीमती डी विलेपारिसिस की भतीजी हैं; उनका पालन-पोषण उन्होंने ही किया था, और उनकी शादी उनके चचेरे भाई से हुई थी, जो मेरी चाची विलेपारिसिस, वर्तमान ड्यूक डी गुएरमांटेस के भतीजे भी थे।"

"तो फिर ये चाचा कौन हैं?"

"उनके पास बैरन डी चार्लस की उपाधि है। सही मायने में, जब मेरे परदादा का निधन हुआ, तो मेरे चाचा पालामेडे को प्रिंस डेस लाउम्स की उपाधि धारण करनी चाहिए थी, जो उनके भाई ड्यूक डी गुएरमांटेस बनने से पहले धारण करते थे, क्योंकि उस परिवार में लोग नाम ऐसे बदलते हैं जैसे आप अपनी कमीज़ बदलते हैं। लेकिन मेरे चाचा के इन सब बातों को लेकर कुछ अजीब विचार हैं। और चूंकि उन्हें लगता है कि आजकल लोग इटैलियन प्रिंस और ग्रैंडी ऑफ स्पेन की उपाधियों को कुछ ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, हालांकि उनके पास चुनने के लिए आधा दर्जन 'प्रिंस' उपाधियाँ थीं, फिर भी उन्होंने विरोध के तौर पर बैरन डी चार्लस ही बने रहना चुना, और एक स्पष्ट सादगी के साथ जो वास्तव में बहुत गर्व को छुपाती है। 'आजकल,' वे कहते हैं, 'हर कोई कुछ न कुछ प्रिंस है; वास्तव में एक ऐसी उपाधि होनी चाहिए जो किसी को अलग पहचान दे; मैं खुद को प्रिंस तभी कहूँगा जब मैं छुपकर यात्रा करना चाहूँगा।' उनके अनुसार चार्लस बैरोनी से पुरानी कोई उपाधि नहीं है; यह साबित करने के लिए कि यह मोंटमोरेंसी उपाधि से भी पुरानी है, हालांकि वे खुद को फ्रांस का

सबसे बड़ा बैरन होने का दावा करते थे, जो पूरी तरह गलत था, जबकि वे केवल हे डे फ्रांस में ही सबसे बड़े बैरन थे, जहां उनकी जागीर थी, मेरे चाचा आपको घंटों तक समझाते रहेंगे और उन्हें इसमें मज़ा भी आएगा, क्योंकि हालांकि वे एक बहुत ही बुद्धिमान और प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं, फिर भी वे इस तरह की बातों को चर्चा का एक जीवंत विषय मानते हैं," सेंट-लूप फिर मुस्कुराए। "लेकिन चूंकि मैं उनके जैसा नहीं हूं, इसलिए आपको मुझसे वंश-परंपराओं के बारे में बात करने के लिए नहीं कहना चाहिए; मुझे इससे ज्यादा घातक, इससे ज्यादा विनाशकारी कुछ नहीं पता; सच में, जीवन इतना लंबा नहीं है।"

अब मुझे उस कठोर नजर में वही नजर दिखाई दी, जिसने मुझे उस सुबह कैसिनो के बाहर मुड़ने पर मजबूर कर दिया था, वही नजर जो मैंने टैनसनविले में मुझ पर टिकी हुई देखी थी, उस समय जब श्रीमती स्वान ने गिलबर्ट को अपने साथ बुलाया था।

"लेकिन, मैं कहता हूँ, आपने मुझे बताया था कि आपके चाचा एम. डी चार्लस की जितनी भी रखैलें थीं, क्या उनमें से एक मैडम स्वान नहीं थीं?"

"हे भगवान! नहीं! कहने का तात्पर्य यह है कि मेरे चाचा स्वान के बहुत अच्छे दोस्त हैं और हमेशा उनका समर्थन करते रहे हैं। लेकिन किसी ने कभी यह सुझाव नहीं दिया कि वह उनकी पत्नी के प्रेमी थे। अगर लोगों को यह पता चल जाए कि आप ऐसा मानते हैं, तो पेरिस के समाज में बहुत बड़ा हंगामा मच जाएगा।"

मैंने यह कहने की हिम्मत नहीं की कि अगर लोगों को लगता कि मैं इस पर विश्वास नहीं करता, तो कॉम्ब्रे समाज में और भी अधिक सनसनी फैल जाती।

मेरी दादी एम. डी. चार्लस से बहुत प्रसन्न थीं। निःसंदेह, वे जन्म और सामाजिक स्थिति के सभी मामलों को अत्यधिक महत्व देते थे, और मेरी दादी ने इस बात पर ध्यान भी दिया था, लेकिन उस कठोरता के बिना जो आमतौर पर गुप्त ईर्ष्या और किसी और को उस लाभ का आनंद लेते देखकर होने वाली झुंझलाहट को दर्शाती है जिसे कोई पाना तो चाहता है लेकिन स्वयं प्राप्त नहीं कर सकता। दूसरी ओर, मेरी दादी अपनी स्थिति से संतुष्ट थीं और उन्हें कभी इस बात का अफसोस नहीं था कि वे अधिक समृद्ध जीवन नहीं जी पाईं। उन्होंने एम. डी. चार्लस की विलक्षणताओं का अवलोकन करने में केवल अपनी बुद्धि का प्रयोग किया। उन्होंने सेंट-लूप के चाचा के बारे में उस तटस्थ, मुस्कुराते हुए, लगभग स्नेहपूर्ण दयालुता के साथ बात की, जिसके साथ हम अपने निस्वार्थ अध्ययन के विषय को उससे मिलने वाले आनंद के लिए पुरस्कृत करते हैं। इस बार विषय एक ऐसा व्यक्ति था जिसके बारे में उन्हें लगा कि यदि उसके दावे वैध नहीं भी थे, तो भी कम से कम आकर्षक थे, जो उसे उन लोगों से बिल्कुल अलग दिखाते थे जिनसे वह आमतौर पर मिलती थीं। लेकिन मेरी दादी ने उनकी बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए ही उनके अभिजात्य पूर्वाग्रह को इतनी आसानी से क्षमा कर दिया था। ये ऐसे गुण थे जो स्पष्ट रूप से एम. डी. चार्लस में प्रचुर मात्रा में मौजूद थे, जबकि सेंट-लूप समाज के कई लोगों का उपहास करते थे। फिर भी, चाचा ने अपने भतीजे की तरह इन गुणों को उच्चतर गुणों के लिए नहीं त्यागा था। बल्कि, एम. डी. चार्लस ने इन्हें अपने पूर्वाग्रहों के साथ सामंजस्य बिठा लिया था। ड्यूक्स डी नेमर्स और प्रिंसेस डी लैम्बेल के वंशज होने के नाते, उनके पास राफेल, वेलास्क्वेज़ और बूचर द्वारा उनके पूर्वजों के लिए बनाए गए दस्तावेज़, फर्नीचर, टेपेस्ट्री और चित्र थे। घर पर अपने पारिवारिक अवशेषों को देखते हुए भी, वे यह कहने में सक्षम थे कि वे

किसी संग्रहालय और अद्वितीय पुस्तकालय का दौरा कर रहे हैं। उन्होंने अभिजात्य वर्ग की पूरी विरासत को उसी श्रेणी में रखा, जिस श्रेणी से उनके भतीजे ने उन्हें गिरा दिया था। शायद सेंट-लूप की तुलना में कम आध्यात्मिक, शब्दों से कम संतुष्ट और मनुष्यों के अध्ययन में अधिक यथार्थवादी होने के कारण, उन्होंने उस कारक की उपेक्षा नहीं की जो उनकी नज़रों में उनकी प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक था और यदि इससे उनकी कल्पना को कुछ निस्वार्थ सुख प्राप्त होते थे, तो यह अक्सर उनके उपयोगितावादी कार्यों में एक शक्तिशाली सहायक साबित हो सकता था। उनके जैसे लोगों और उन लोगों के बीच कभी कोई सहमति नहीं हो सकती जो अपने भीतर के उस आदर्श का पालन करते हैं जो उन्हें ऐसे लाभों से खुद को पूरी तरह से मुक्त करने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे केवल उस आदर्श को साकार करने का प्रयास कर सकें। इस संबंध में, यह उन चित्रकारों, लेखकों के समान है जो अपनी कलात्मकता का त्याग करते हैं, उन कलात्मक राष्ट्रों के समान है जो स्वयं को आधुनिक बनाते हैं, उन योद्धा राष्ट्रों के समान है जो सार्वभौमिक निरस्त्रीकरण के लिए पहल करते हैं, उन निरंकुश सरकारों के समान है जो लोकतांत्रिक बन जाती हैं और अपने कठोर कानूनों को निरस्त कर देती हैं, हालांकि अक्सर परिणाम उनके महान प्रयास को पुरस्कृत करने में विफल रहता है; क्योंकि मनुष्य अपनी प्रतिभा खो देते हैं, राष्ट्र अपना धर्मनिरपेक्ष प्रभुत्व खो देते हैं; 'शांतिवाद' अक्सर युद्धों को बढ़ाता है और भोग-विलास अपराध को। यदि सेंट-लूप के ईमानदारी और मुक्ति के प्रयासों को केवल उनके प्रत्यक्ष परिणाम के आधार पर ही अत्यंत प्रशंसनीय माना जाए, तो भी इस बात के लिए आभारी हुआ जा सकता है कि वे एम. डी चार्लस के मामले में फलदायी नहीं हुए, जिन्होंने अपने भतीजे की तरह लेबोर्ग या गुइलाउमिन को नियुक्त करके सजावट की 'आधुनिक शैली' अपनाने के बजाय,

गुएरमांटेस के घर से कई प्रशंसनीय पैनलिंग को अपने घर में स्थानांतरित कर दिया था। यह भी उतना ही सच था कि एम. डी चार्लस का आदर्श अत्यधिक कृत्रिम था, और यदि आदर्श शब्द पर यह विशेषण लागू किया जा सकता है, तो यह कलात्मक होने के साथ-साथ सामाजिक भी था। कुछ बेहद खूबसूरत और दुर्लभ संस्कृति वाली महिलाओं में, जिनकी पूर्वजों ने दो शताब्दी पहले पुरानी व्यवस्था की सारी महिमा और गरिमा में हिस्सा लिया था, उन्हें एक ऐसा अंतर मिला जिसने उन्हें केवल उनकी संगति में ही आनंद लेने के लिए प्रेरित किया, और निस्संदेह उनके प्रति उनकी प्रशंसा, जिसका उन्होंने दावा किया था, सच्ची थी, लेकिन अनगिनत यादें; अपने नामों से पुकारे जाने वाले ऐतिहासिक और कलात्मक तत्व, इसमें समाहित होकर इसका एक बड़ा हिस्सा बन गए, ठीक वैसे ही जैसे शास्त्रीय प्राचीनता के संकेत एक पुस्तक प्रेमी को होरेस की कविता पढ़ने में मिलने वाले आनंद का एक कारण होते हैं, जो शायद आज के समय की उन कविताओं से कमतर हो जो उसी पुस्तक प्रेमी को नीरस लगें। किसी सुंदर आम आदमी के साथ खड़ी ये महिलाएं उसके लिए वैसी ही थीं, जैसे किसी जुलूस या शादी को दर्शाने वाले समकालीन कैनवास के बगल में टंगी वे पुरानी तस्वीरें, जिनका इतिहास हम जानते हैं - पोप या राजा से, जिन्होंने उन्हें बनवाया था, उन लोगों के हाथों से जिन्होंने उन्हें उपहार, खरीद, विजय या विरासत के माध्यम से प्राप्त किया था - हमें किसी ऐतिहासिक महत्व की घटना या कम से कम किसी ऐतिहासिक गठबंधन की याद दिलाता है, और परिणामस्वरूप हमारे द्वारा अर्जित कुछ ज्ञान इसे एक नई उपयोगिता प्रदान करता है, हमारी स्मृति या हमारे ज्ञान की समृद्धि के प्रति हमारी भावना को बढ़ाता है। एम. डी चार्लस शायद इस बात के लिए आभारी होंगे कि उनके अपने जैसे पूर्वाग्रह ने, इन कई महान महिलाओं को कम शुद्ध रक्त वाली महिलाओं के साथ

मेलजोल करने से रोककर, उन्हें उनकी श्रद्धा के लिए उनकी अपरिवर्तित कुलीनता में, अठारहवीं शताब्दी के गुलाबी संगमरमर के सपाट स्तंभों पर टिके एक घर के अग्रभाग की तरह प्रस्तुत किया, जिसमें समय का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

एम. डी चार्लस ने इन महिलाओं के मन और हृदय की सच्ची 'कुलीनता' की प्रशंसा की, शब्द का दोहरा अर्थ में प्रयोग करते हुए, जिससे वे स्वयं भी प्रभावित हुए थे, और जिसमें अभिजात वर्ग, उदारता और कला के इस मिश्रण की इस नाजायज धारणा का झूठ छिपा था, साथ ही इसकी मोहकता भी, जो मेरी दादी जैसी लोगों के लिए खतरनाक थी, जिनके लिए एक ऐसे कुलीन व्यक्ति का कम परिष्कृत लेकिन अधिक निर्दोष पूर्वाग्रह, जो केवल रहने-सहने की परवाह करता था और इसके अलावा किसी और चीज के बारे में नहीं सोचता था, शब्दों से परे मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता था, जबकि वह मानसिक श्रेष्ठता के बाहरी आवरण के तहत किसी भी चीज के सामने आते ही रक्षाहीन हो जाती थीं, इतना अधिक कि वह राजकुमारों को अन्य सभी पुरुषों से अधिक ईर्ष्या के योग्य मानती थीं क्योंकि वे लैब्रूयेर, फेनेलोन जैसे गुरुओं को अपने शिक्षक के रूप में प्राप्त करने में सक्षम थे। ग्रैंड होटल के बाहर तीनों गुएरमांटे हमें छोड़कर चले गए; वे लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी के साथ दोपहर के भोजन के लिए जा रहे थे। जब मेरी दादी श्रीमती को अलविदा कह रही थीं... डी विलेपारिसिस और सेंट-लूप से मेरी दादी, एम. डी चार्लस, जिन्होंने अब तक मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा था, समूह से थोड़ा पीछे हट गए और जब वे मेरे पास पहुँचे तो बोले: "मैं आज शाम खाने के बाद अपनी चाची विलेपारिसिस के कमरे में चाय पीऊँगा; मुझे आशा है कि आपको और आपकी दादी को वहाँ देखकर मुझे खुशी होगी।" इसके साथ ही वे मार्क्विज़ के पास वापस चले गए।

रविवार होने के बावजूद, होटल के बाहर अब उतनी ही कम गाड़ियाँ खड़ी थीं जितनी सीज़न की शुरुआत में होती थीं। वकील की पत्नी ने विशेष रूप से यह तय कर लिया था कि हर बार गाड़ी किराए पर लेना खर्च के लायक नहीं है, सिर्फ इसलिए कि वह कैम्ब्रेमर के घर नहीं जा रही थी, और उसने अपने कमरे में ही रहने का फैसला किया।

"क्या श्रीमती ब्लैंडाइस की तबीयत ठीक नहीं है?" उनके पति से पूछा गया। "हमने उन्हें पूरे दिन नहीं देखा है।"

"उसे हल्का सिरदर्द है; गर्मी की वजह से है, और बिजली कड़कने वाली है। छोटी-छोटी बातों से भी वह परेशान हो जाती है; लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप आज शाम उससे मिलेंगे; मैंने उससे कहा है कि उसे नीचे आ जाना चाहिए। इससे उसे कोई नुकसान नहीं होगा।"

मुझे लगा था कि एम. डी चार्लस ने हमें अपनी चाची के साथ चाय पीने के लिए आमंत्रित करके, जिनके बारे में मुझे पूरा यकीन था कि उन्होंने हमारे आने की सूचना उन्हें जरूर दी होगी, उस सुबह की सैर के दौरान मेरे साथ किए गए असभ्य व्यवहार का प्रायश्चित करना चाहा होगा। लेकिन जब हम श्रीमती डी विलेपारिसिस के कमरे में दाखिल हुए और मैंने उनके भतीजे को नमस्कार करने की कोशिश की, भले ही मैं उनके चारों ओर घूमकर ही क्यों न गई, जबकि वह अपने किसी रिश्तेदार के बारे में तीखी आवाज में कोई कहानी सुना रहे थे, मैं उनकी नजरें अपनी ओर खींचने में कामयाब नहीं हुई; मैंने उन्हें अपनी उपस्थिति का आगाह करने के लिए काफी जोर से "शुभ संध्या" कहने का फैसला किया; लेकिन मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने इसे देख लिया था, क्योंकि मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला था, जैसे ही मैंने उन्हें झुककर प्रणाम करना शुरू किया, मैंने देखा कि उन्होंने बिना मेरी ओर देखे या अपनी कहानी रोके, मुझसे हाथ मिलाने के लिए अपनी दो उंगलियां बढ़ा दीं। उन्होंने मुझे देख लिया था, हालांकि

उन्होंने ऐसा जताने नहीं दिया। तभी मैंने गौर किया कि उनकी आंखें, जो कभी भी उस व्यक्ति पर नहीं टिकती थीं जिससे वे बात कर रहे थे, लगातार चारों दिशाओं में भटकती रहती थीं, ठीक वैसे ही जैसे कुछ जानवर डरने पर भटकते हैं, या फिर सड़क पर सामान बेचने वाले जो चिल्लाते हुए और अपना अवैध सामान दिखाते हुए, बिना सिर घुमाए, क्षितिज के विभिन्न बिंदुओं पर पैनी नजर रखते हैं, जहां से अचानक पुलिस प्रकट हो सकती है। उसी समय मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि श्रीमती डी विलेपारिसिस हमें देखकर खुश तो थीं, लेकिन ऐसा नहीं लग रहा था कि उन्हें हमारी उम्मीद थी। और मुझे उससे भी ज्यादा आश्चर्य हुआ जब मैंने श्री डी चार्लस को मेरी दादी से कहते सुना: "अहा! आपका यहां आकर हमसे मिलना बहुत अच्छा विचार था; कितना प्यारा है, है ना, मेरी प्यारी चाची?" इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने हमारी मौजूदगी पर अपनी चाची के आश्चर्य को देखा होगा और माहौल बनाने और सही ताल मिलाने के आदी व्यक्ति के तौर पर उन्होंने सोचा होगा कि अगर वे यह दिखा दें कि उन्हें भी ऐसा ही महसूस हो रहा है, यानी कि हमारे आने से वास्तव में यही भावना उत्पन्न होनी चाहिए थी, तो उनकी यह हैरानी खुशी में बदल जाएगी। उनका अनुमान बुद्धिमानी भरा था; क्योंकि श्रीमती डी विलेपारिसिस, जो अपने भतीजे के बारे में उच्च राय रखती थीं और जानती थीं कि उन्हें प्रसन्न करना कितना मुश्किल है, अचानक मेरी दादी में एक नया आकर्षण पा गईं और उनकी बहुत प्रशंसा करने लगीं। लेकिन मैं यह समझ नहीं पाया कि श्री डी चार्लस कुछ ही घंटों में उस निमंत्रण को कैसे भूल गए—जो इतना संक्षिप्त था लेकिन स्पष्ट रूप से इतना जानबूझकर और सोची-समझी योजना के तहत दिया गया था—जो उन्होंने उसी सुबह मुझे भेजा था, या उन्होंने मेरी दादी के एक विचार को 'शानदार विचार' क्यों कहा, जबकि वह विचार पूरी तरह से उनका अपना

था। मैंने सटीकता के प्रति एक विशेष सावधानी बरती, जो उस उम्र तक बनी रही जब मुझे यह एहसास हुआ कि किसी से सवाल पूछकर उसके मन की सच्चाई का पता नहीं चलता, और यह कि किसी अनसुनी गलतफहमी का खतरा, जो शायद किसी का ध्यान न खींचे, एक अनभिज्ञ ज़िद से होने वाले खतरे से कम है: "लेकिन, महोदय," मैंने उन्हें याद दिलाया, "आपको याद होगा ना कि आपने ही मुझसे पूछा था कि क्या हम आज शाम अंदर आ सकते हैं?" न तो कोई आवाज़ आई, न ही कोई हरकत हुई जिससे पता चले कि श्रीमान डी चार्लस ने मेरा सवाल सुना भी है। यह देखकर मैंने उसे दोहराया, एक कूटनीतिज्ञ की तरह, या उन नौजवानों की तरह जो किसी गलतफहमी के बाद अथक और व्यर्थ प्रयास से उस स्पष्टीकरण को पाने की कोशिश करते हैं जिसे उनका विरोधी देने को तैयार नहीं होता। फिर भी श्रीमान डी चार्लस ने मुझे एक शब्द भी नहीं कहा। मुझे ऐसा लगा जैसे उनके होठों पर उन लोगों की मुस्कान मंडरा रही हो जो ऊँचाई से अपने से नीचे वालों के चरित्र और परवरिश का आकलन करते हैं।

चूंकि उन्होंने कोई स्पष्टीकरण देने से इनकार कर दिया, इसलिए मैंने खुद ही एक स्पष्टीकरण देने की कोशिश की, लेकिन मैं कई स्पष्टीकरणों के बीच ही उलझती रही, जिनमें से कोई भी सही नहीं हो सकता था। शायद उन्हें याद नहीं था, या शायद मैं ही वह बात समझने में नाकाम रही जो उन्होंने उस सुबह मुझसे कही थी... ज़्यादा संभावना यही है कि अपने अहंकार में, वह उन लोगों को आकर्षित करने की कोशिश करते हुए दिखना नहीं चाहते थे जिन्हें वह तुच्छ समझते थे, और उन्होंने उनके दखल का दोष उन पर डालना बेहतर समझा। लेकिन फिर, अगर वह हमें तुच्छ समझते थे, तो वह इतने उत्सुक क्यों थे कि हम आएं, या यूं कहें कि मेरी दादी आएं, क्योंकि हम दोनों में से उन्होंने उस शाम सिर्फ उन्हीं से बात की

थी, मुझसे एक बार भी नहीं। वह उनसे और श्रीमती से भी अत्यंत उत्साह से बात कर रहे थे। डी विलेपारिसिस, मानो उनके पीछे छिपकर, जैसे कि वह किसी थिएटर के पिछले हिस्से में बैठा हो, खुद को संतुष्ट रखता था, बीच-बीच में अपनी भेदक निगाहों से उन्हें झकझोरता हुआ, और फिर उसी गंभीरता, उसी चिंता भरे भाव से मेरे चेहरे पर टिका देता था, मानो मेरा चेहरा कोई ऐसी पांडुलिपि हो जिसे समझना मुश्किल हो।

निःसंदेह, यदि उनकी वे आँखें न होतीं, तो एम. डी चार्लस का चेहरा कई सुंदर पुरुषों के चेहरों जैसा ही होता। और जब सेंट-लूप ने बाद में कई अन्य गुएरमांटेस के बारे में मुझसे बात करते हुए कहा: "अरे, उनमें वह शुद्ध शिष्टता, वह सज्जनता का भाव नहीं है, जो चाचा पालामेडे में है!" जिससे मेरा यह संदेह पुष्ट हो गया कि शुद्ध शिष्टता और अभिजात वर्ग की विशिष्टता कोई रहस्यमय या नई बात नहीं थी, बल्कि उन तत्वों में निहित थी जिन्हें मैंने बिना किसी कठिनाई के और उनसे कोई विशेष प्रभाव प्राप्त किए बिना पहचान लिया था, तो मुझे लगा कि मेरा एक और भ्रम चकनाचूर हो गया है। लेकिन वह चेहरा, जिस पर पाउडर की एक हल्की परत ने लगभग मंच पर एक चेहरे का रूप दे दिया था, एम. डी चार्लस द्वारा उसकी अभिव्यक्ति को पूरी तरह से छुपाने का प्रयास व्यर्थ था; उसकी आँखें दो दरारों, दो छेदों जैसी थीं जिन्हें वह खुद बंद करने में नाकाम रहा था, और जिनके ज़रिए, उसके आस-पास की स्थिति के अनुसार, अचानक किसी आंतरिक शक्ति की चमक दिखाई देती थी जो उसे भी कोई दिलासा नहीं देती थी, जबकि वह उस पर पूरी तरह से नियंत्रण न होते हुए भी उसे अपने भीतर एक अस्थिर संतुलन में, हमेशा विस्फोट के कगार पर लिए घूमता रहता था; और उन आँखों का सतर्क और निरंतर बेचैन भाव, थकावट के सभी संकेतों के साथ, जो उसकी आँखों से लेकर उसके गालों पर बने गहरे घेरों तक फैले हुए थे, उसके

चेहरे पर अंकित थे, चाहे वह कितनी भी सावधानी से खुद को संवार कर रखे, किसी गुप्त रूप, किसी खतरे में पड़े शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा अपनाए गए भेस, या किसी खतरनाक—लेकिन दुखद—व्यक्ति के बारे में सोचने पर मजबूर कर देते थे। मैं यह जानना चाहता था कि वह कौन सा रहस्य था जो अन्य लोग अपने हृदय में नहीं रखते थे और जिसने एम. डी चार्लस की निगाहों को मेरे लिए इतना रहस्यमय बना दिया था जब मैंने उसे उस सुबह कैसिनो के बाहर देखा था। लेकिन अब जब मुझे उसके परिवार के बारे में पता चल गया था, तो मैं यह नहीं मान सकता था कि वे किसी चोर की नज़रें थीं, और न ही उसकी बातचीत सुनने के बाद मैं कह सकता था कि वे किसी पागल की नज़रें थीं। अगर वह मेरे साथ ठंडा व्यवहार करता था, जबकि मेरी दादी के साथ अच्छा व्यवहार करता था, तो शायद यह किसी व्यक्तिगत घृणा के कारण नहीं था, क्योंकि आम तौर पर वह महिलाओं के प्रति दयालु था, जिनकी कमियों के बारे में वह बिना किसी संकोच के, अपनी व्यापक सहनशीलता को बनाए रखता था, ठीक वैसे ही वह पुरुषों, और विशेष रूप से युवा पुरुषों के प्रति इतनी तीव्र घृणा दिखाता था कि कुछ कट्टर स्त्री-द्वेषियों की महिलाओं के प्रति घृणा की याद दिलाती थी। सेंट-लूप के दो-तीन रिश्तेदार या घनिष्ठ मित्र, जिनके नाम उसने बताए, उन्हें देखकर एम. डी चार्लस ने अपने सामान्य ठंडेपन के बिल्कुल विपरीत, लगभग उग्र भाव से कहा: "छोटे बदमाश!" मुझे समझ आया कि उस दौर के युवा पुरुषों में उसे जो खास कमी नज़र आती थी, वह थी उनकी अत्यधिक स्त्रीत्व। उसने तिरस्कार से कहा, "वे तो बिलकुल औरतें हैं।" लेकिन उनके अनुसार एक पुरुष से जिस तरह के जीवन की अपेक्षा की जाती थी, और जिसे वे कभी भी पर्याप्त ऊर्जावान या पौरुषमय नहीं पाते थे, उसके सामने कौन सा जीवन स्त्री-समान प्रतीत नहीं होता? (वे स्वयं, जब देश भर में पैदल यात्रा करते थे, तो सड़क पर

लंबे घंटों के बाद अपने गर्म शरीर को जमी हुई धाराओं में डुबो देते थे।) वे किसी पुरुष को एक अंगूठी भी पहनने की अनुमति नहीं देते थे। लेकिन पौरुषता का यह दावा उनकी अत्यंत कोमल भावनाओं को भी नहीं रोक पाया। जब श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उनसे मेरी दादी को उस ग्रामीण घर का वर्णन करने के लिए कहा जिसमें श्रीमती डी सेविग्ने ठहरी थीं, और यह भी कहा कि उन्हें यह महसूस किए बिना नहीं रह सका कि "उस थकाऊ श्रीमती डी ग्रिगनन" से बिछड़ने पर उस महिला की पीड़ा में कुछ 'साहित्यिक' सा भाव था:

“इसके विपरीत,” उन्होंने जवाब दिया, “मुझे इससे ज़्यादा सच कुछ नहीं लगता। वैसे भी, यह वह दौर था जब इस तरह की भावनाओं को पूरी तरह समझा जाता था। लाफोंटेन के मोनोमोटपा का निवासी, अपने उस दोस्त को देखने के लिए दौड़ता है जो उसे सपने में दिखाई दिया था और उदास लग रहा था, और वह कबूतर जिसे पता चलता है कि सबसे बड़ी बुराई दूसरे कबूतर की अनुपस्थिति है, शायद आपको मेरी प्यारी चाची, उतना ही अतिशयोक्तिपूर्ण लगे जितना कि श्रीमती डी सेविग्ने की उस पल के लिए बेचैनी जब वह अपनी बेटी के साथ अकेली होंगी। जब वह अपनी बेटी को छोड़कर जाती हैं तो वह जो कहती हैं वह कितना सुंदर है: 'यह बिछड़ना मेरी आत्मा को ऐसा दर्द देता है जो मेरे शरीर में दर्द की तरह महसूस होता है। अनुपस्थिति में समय का भरपूर उपयोग होता है। हम उस समय की प्रतीक्षा करते हैं जिसके लिए हम तरस रहे होते हैं।'” मेरी दादी उन पत्रों के बारे में इस तरह सुनकर भावविभोर हो गईं, ठीक वैसे ही जैसे वह खुद उनके बारे में कहतीं। उन्हें आश्चर्य हुआ कि एक पुरुष उन्हें इतनी गहराई से समझ सकता है। उन्हें एम. डी. चार्लस में एक ऐसी कोमलता और संवेदनशीलता दिखी जो बिल्कुल स्त्रीत्वपूर्ण थी। बाद में, जब हम अकेले थे और उनके बारे में चर्चा करने लगे, तो हमने आपस में

कहा कि उन पर किसी स्त्री का, उनकी माँ का, या बाद के जीवन में उनकी पुत्री का (यदि उनके बच्चे थे) गहरा प्रभाव रहा होगा। "शायद कोई प्रेमिका रही होगी," मैंने मन ही मन सोचा, सेंट-लूप के उन पर पड़े प्रभाव को याद करते हुए, जिससे मुझे यह एहसास हुआ कि पुरुष अपने साथ रहने वाली महिलाओं से किस हद तक प्रभावित हो सकते हैं।

"अपनी बेटी के साथ होने के बाद, शायद उसके पास उससे कहने के लिए कुछ नहीं बचा था," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कहा।

“निश्चित रूप से उसने ऐसा किया होगा: भले ही वह केवल वही बातें हों जिन्हें वह ‘इतनी मामूली चीजें कहती है कि उन पर तुम्हारे और मेरे अलावा किसी और का ध्यान नहीं जाता।’ और वैसे भी वह उसके साथ थी। और लैब्रूयेर हमें बताते हैं कि यही सब कुछ है। ‘जिन लोगों से प्यार करते हैं, उनके साथ रहना, उनसे बात करना, उनसे बात न करना, सब एक समान है।’ वह सही हैं; यही एकमात्र सुख है,” एम. डी चार्लस ने उदास स्वर में कहा, “और वह सुख—अफ़सोस, जीवन इतना अव्यवस्थित है कि इसका स्वाद बहुत कम ही मिलता है; श्रीमती डी सेविग्ने आखिरकार हममें से अधिकांश लोगों की तुलना में कम दयनीय थीं। उन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा उस व्यक्ति के साथ बिताया जिससे वह प्यार करती थीं।”

"आप भूल जाते हैं कि उसके मामले में यह 'प्यार' नहीं था; वह व्यक्ति उसकी बेटी थी।"

“लेकिन जीवन में मायने यह नहीं रखता कि कोई किसे या किस चीज से प्यार करता है,” उन्होंने निर्णायक, दृढ़ और लगभग तीखे लहजे में कहा; “महत्व तो प्रेम करने का तथ्य रखता है। श्रीमती डी सेविग्ने का अपनी बेटी के लिए जो प्रेम था, वह रेसीन द्वारा एंड्रोमैक या फ्रेड्रे में वर्णित प्रेम से

कहीं अधिक श्रेष्ठ है, बजाय इसके कि युवा सेविग्ने का अपनी प्रेमिकाओं के साथ सामान्य संबंध था। यही बात एक रहस्यवादी के ईश्वर के प्रति प्रेम पर भी लागू होती है। प्रेम को परिभाषित करने वाली कठोर और निश्चित सीमाएँ केवल जीवन के प्रति हमारी पूर्ण अज्ञानता से उत्पन्न होती हैं।"

"क्या आप एंड्रोमैक और फ्रेड्रे के बारे में इतना ही सोचते हैं?" सेंट-लूप ने अपने चाचा से हल्के से तिरस्कार भरे लहजे में पूछा। "विक्टर ह्यूगो की सभी नाट्य रचनाओं से कहीं अधिक सत्य रैसीन की एक त्रासदी में समाया है," एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया। "लोग सचमुच बहुत प्रभावशाली हैं," सेंट-लूप ने मेरे कान में फुसफुसाया। "विक्टर ह्यूगो की जगह रैसीन को पसंद करना, आप जो चाहें कहें, यह युग-प्रवर्तक है!" वह अपने चाचा के शब्दों से सचमुच दुखी था, लेकिन "आप जो चाहें कहें" और उससे भी बेहतर, "युग-प्रवर्तक" कहने की संतुष्टि ने उसे सांत्वना दी।

अपने प्रिय व्यक्ति से बिछड़ने के दुख पर इन चिंतनों में (जिनके कारण मेरी दादी ने मुझसे कहा था कि श्रीमती डी विलेपारिसिस का भतीजा कुछ बातों को अपनी चाची की तरह ही समझता था, लेकिन एक अलग तरीके से, और इसके अलावा उसमें कुछ ऐसा था जो उसे औसत क्लब सदस्य से कहीं ऊपर रखता था) एम. डी चार्लस ने न केवल ऐसी सूक्ष्म भावनाओं को प्रकट होने दिया जो पुरुष शायद ही कभी दिखाते हैं; बल्कि उनकी आवाज भी, कुछ ऐसी कॉन्ट्राल्टो आवाजों की तरह जिन्हें सही स्वर में ठीक से प्रशिक्षित नहीं किया गया है, जिससे गाते समय ऐसा लगता है जैसे कोई युवक और युवती बारी-बारी से गा रहे हों, इन कोमल भावनाओं को व्यक्त करते समय अपने उच्च स्वरों तक पहुँचती है, एक अप्रत्याशित मिठास धारण करती है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे मंगेतर युवतियों, बहनों के समूह अपने प्रेम के खजाने को उड़ेल रहे हों। लेकिन युवा

लड़कियों का वह समूह, जिनके बारे में यह जानकर एम. डी. चार्लस को बहुत दुख होता कि वे हर तरह की स्त्रीत्वता से घृणा करते हुए अपनी आवाज़ में उसे पनाह दे रहे हैं, केवल भावों के टुकड़ों की व्याख्या और उतार-चढ़ाव तक ही सीमित नहीं रहा। अक्सर एम. डी. चार्लस के बोलते समय उनकी हंसी सुनाई देती थी, स्कूल की छात्राओं या चंचल लड़कियों की तीखी, ताज़गी भरी हंसी, जो अपने साथियों से चतुराई और चतुराई से सवाल-जवाब करती थीं।

उन्होंने हमें बताया कि कैसे उनके परिवार का एक घर, जिसमें मैरी एंटोनेट सोई थीं, और ले नोत्रे द्वारा डिज़ाइन किया गया एक पार्क, अब धनी फाइनेंसरों, इज़राइल परिवार के हाथों में है, जिन्होंने इसे खरीद लिया है। "इज़राइल—कम से कम यही नाम है जिससे ये लोग जाने जाते हैं, जो मुझे एक सामान्य, एक नस्लीय शब्द लगता है, न कि कोई विशेष नाम। कुछ कहा नहीं जा सकता; शायद इस तरह के लोगों के नाम नहीं होते, और उन्हें केवल उस जनजाति के सामूहिक नाम से जाना जाता है जिससे वे संबंधित हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता! लेकिन सोचिए, गुएरमांटे परिवार का घर होने के बाद, अब इज़राइल परिवार का घर!!!" उनकी आवाज़ तेज़ हो गई। "यह मुझे ब्लोइस के शैतो के एक कमरे की याद दिलाता है, जहाँ मुझे कमरा दिखाते हुए केयरटेकर ने कहा था: 'यहाँ मैरी स्टुअर्ट प्रार्थना करती थीं; मैं इसे अपनी झाड़ू रखने के लिए इस्तेमाल करता हूँ।'" स्वाभाविक रूप से, मैं इस घर के बारे में और कुछ नहीं जानना चाहती, जिसने खुद को अपमानित होने दिया है, ठीक वैसे ही जैसे मैं अपनी चचेरी बहन क्लारा डी चिमे के बारे में उसके पति को छोड़ने के बाद नहीं जानना चाहती थी। लेकिन मैंने उस घर की एक तस्वीर संभाल कर रखी है, जब वह अभी भी सही सलामत था, ठीक वैसे ही जैसे मैंने राजकुमारी की एक तस्वीर संभाल कर रखी है, जब उसकी बड़ी-बड़ी

आँखें मेरी चचेरी बहन के अलावा किसी और को देखना नहीं सीख पाई थीं। एक तस्वीर में वह गरिमा आ जाती है जो आमतौर पर उसमें नहीं होती, जब वह वास्तविकता की प्रतिकृति नहीं रहती और हमें ऐसी चीजें दिखाती है जो अब मौजूद नहीं हैं। "मैं आपको इसकी एक प्रति दे सकता हूँ, क्योंकि आपको उस वास्तुकला शैली में रुचि है," उन्होंने मेरी दादी से कहा। उसी क्षण, यह देखकर कि उनकी जेब में रखा कढ़ाई वाला रूमाल कुछ रंगीन धागों से दिखाई दे रहा था, उन्होंने उसे एक संकोची, लेकिन भोली-भाली महिला के गुस्से भरे अंदाज में तेज़ी से नीचे कर दिया, मानो वह उन आकर्षणों को छुपा रही हो जिन्हें वह अत्यधिक सावधानी के कारण अशोभनीय मानती है। “क्या आप विश्वास करेंगे,” उन्होंने आगे कहा, “कि उन प्राणियों ने सबसे पहले ले नोत्रे के पार्क को नष्ट किया, जो पॉसिन की पेंटिंग को फाड़ने जितना ही बुरा है? सिर्फ़ इसी बात के लिए इन इस्राएलियों को जेल में डाल देना चाहिए। यह सच है,” उन्होंने एक पल की चुप्पी के बाद मुस्कुराते हुए कहा, “कि शायद और भी कई कारण होंगे जिनकी वजह से उन्हें जेल में होना चाहिए! खैर, आप कल्पना कर सकते हैं कि उस वास्तुकला के साथ, यह एक अंग्रेजी उद्यान जैसा दिखता होगा।”

"लेकिन यह घर पेटिट ट्रायनॉन की ही शैली में बना है," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने कहा, "और मैरी-एंटोनेट ने वहां एक अंग्रेजी शैली का बगीचा बनवाया था।"

“फिर भी, इससे गैब्रियल का गौरव भंग हो जाता है,” एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया। “स्पष्ट रूप से, अब हैमो को नष्ट करना बर्बरता का कार्य होगा। लेकिन युग की भावना चाहे जो भी हो, मुझे संदेह है कि इस संदर्भ में, श्रीमती इज़राइल की एक सनक का उतना महत्व है जितना कि रानी की स्मृति का।”

इस बीच, मेरी दादी मुझे बिस्तर पर जाने के लिए इशारे कर रही थीं, सेंट-लूप की बार-बार की अपीलों के बावजूद, जिन्होंने मुझे पूरी तरह से भ्रमित करते हुए, एम. डी चार्लस के सामने उस उदासी का जिक्र किया था जो अक्सर मुझे रात को सोने से पहले घेर लेती थी, जिसे उनके चाचा पौरुषहीनता का संकेत मानते होंगे। मैं कुछ पल और रुका रहा, फिर ऊपर गया, और थोड़ी देर बाद जब मैंने अपने शयनकक्ष के दरवाजे पर दस्तक सुनी और पूछा कि कौन है, तो मुझे एम. डी चार्लस की आवाज रूखेपन से सुनाई दी, जिससे मैं बहुत आश्चर्यचकित हुआ:

"मैं चार्लस हूँ। क्या मैं अंदर आ सकता हूँ, महोदय?" दरवाजा बंद करते ही उसने उसी लहजे में फिर कहना शुरू किया, "मेरे भतीजे ने अभी-अभी बताया कि आपको रात को सोने से पहले चिंता होने लगती है, और आप बर्गोट की किताबों के प्रशंसक हैं। मेरे सामान में एक किताब थी जिसके बारे में शायद आपको पता नहीं होगा, इसलिए मैं इसे आपके लिए लाया हूँ ताकि आप इन पलों को अच्छे से बिता सकें जब आप असहज महसूस कर रहे हों।"

मैंने एम. डी चार्लस को कुछ स्नेह के साथ धन्यवाद दिया और उनसे कहा कि इसके विपरीत, मुझे डर था कि रात होने पर मेरी बेचैनी के बारे में सेंट-लूप ने उनसे जो कहा था, उससे मैं उनकी नजरों में जितना मूर्ख था, उससे भी ज्यादा मूर्ख प्रतीत होऊंगा।

"नहीं; क्यों?" उसने नरम स्वर में उत्तर दिया। "शायद आपमें कोई व्यक्तिगत गुण नहीं है; हममें से बहुत कम लोगों में होते हैं! लेकिन कम से कम कुछ समय के लिए आपमें जवानी तो है, और यह हमेशा एक आकर्षण होता है। इसके अलावा, महोदय, सबसे बड़ी मूर्खता तो दूसरों में उस बात का मज़ाक उड़ाना या उसकी निंदा करना है जिसे आप स्वयं महसूस नहीं करते। मुझे रात से प्यार है, और आप कहते हैं कि आपको

उससे डर लगता है। मुझे गुलाबों की खुशबू पसंद है, और मेरा एक दोस्त है जिसे यह खुशबू बुखार कर देती है। क्या आपको लगता है कि मैं इस वजह से उसे खुद से कमतर समझता हूँ? मैं हर बात को समझने की कोशिश करता हूँ और किसी भी बात की निंदा नहीं करता। आखिरकार, आपको अपने लिए इतना दुखी नहीं होना चाहिए; मैं यह नहीं कहता कि ये उदासी के दौर कष्टदायी नहीं होते, मैं जानता हूँ कि ऐसी चीजें भी इंसान को पीड़ा पहुँचा सकती हैं जिन्हें दुनिया नहीं समझ सकती। लेकिन कम से कम आपने अपना स्नेह सही जगह लगाया है, अपनी दादी के प्रति। आप उनसे बहुत मिलते हैं। और इसके अलावा, यह एक जायज़ स्नेह है, मेरा मतलब है कि ऐसा स्नेह जिसका प्रतिफल मिलता है। ऐसे बहुत से स्नेह हैं जिनके बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।"

वह कमरे में इधर-उधर घूमने लगा, कभी किसी चीज़ को देखता तो कभी दूसरी चीज़ उठा लेता। मुझे ऐसा लगा जैसे वह मुझसे कुछ कहना चाहता हो, लेकिन उसे व्यक्त करने के लिए सही शब्द नहीं मिल रहे थे।

“मेरे पास बर्गोट की एक और किताब है; मैं उसे आपके लिए लाता हूँ,” उन्होंने आगे कहा और घंटी बजा दी। थोड़ी देर में एक सेवक आया। “जाओ और अपने मुख्य सेवक को बुलाओ। वही यहाँ एकमात्र व्यक्ति है जो समझदारी से आदेश का पालन कर सकता है,” एम. डी चार्लस ने सख्ती से कहा। “महाशय ऐमे?” सेवक ने पूछा। “मैं आपको उनका नाम नहीं बता सकता; हाँ, मुझे अब याद आया, मैंने उन्हें ऐमे कहते सुना था। जाइए, मुझे जल्दी है।” “एक मिनट भी नहीं लगेगा, महोदय, मैंने उन्हें अभी नीचे देखा था,” सेवक ने कुशलता दिखाने की कोशिश करते हुए कहा। कुछ देर सन्नाटा रहा। सेवक लौटा। “महोदय, एम. ऐमे सोने चले गए हैं। लेकिन मैं आपका संदेश ले जा सकता हूँ।” “नहीं, आपको बस उन्हें बिस्तर से उठाना है।” “लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता, महोदय; वह

यहाँ नहीं सोते।” “तो आप हमें अकेला छोड़ दीजिए।” "लेकिन, महोदय," मैंने पृष्ठ के चले जाने के बाद कहा, "आप बहुत दयालु हैं; बर्गोट की एक ही पुस्तक पर्याप्त होगी।" "मैं भी यही सोच रहा था।" एम. डी चार्लस कमरे में इधर-उधर घूमने लगे। इस तरह कई मिनट बीत गए, फिर एक लंबे संकोच और कई बार गलत शुरुआत के बाद, वे अचानक मुड़े और एक बार फिर चुभती हुई आवाज़ में मुझसे बोले: "शुभ रात्रि, महोदय!" और कमरे से चले गए। उस शाम, उनके प्रस्थान के दिन, अगले दिन, दोपहर से पहले, समुद्र तट पर, जब मैं नहाने जा रहा था और एम. डी चार्लस ने आकर मुझे बताया था कि पानी से बाहर आते ही मेरी दादी मेरा इंतज़ार कर रही हैं, तो मैंने उनसे जो ऊंचे विचार व्यक्त करवाए थे, उन सबके बाद, मुझे यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मेरी गर्दन को चुटकी काटते हुए, एक ऐसी आत्मीयता और हंसी के साथ कहा जो स्पष्ट रूप से अश्लील थी:

"लेकिन उसे अपनी बूढ़ी दादी की ज़रा भी परवाह नहीं है, है ना? बड़ा बदमाश!"

"क्या बात है! मैं तो उसे बहुत पसंद करता हूँ!"

"महोदय," उसने एक कदम पीछे हटते हुए और ठंडे स्वर में कहा, "आप अभी भी युवा हैं; आपको अपनी जवानी का लाभ उठाकर दो बातें सीखनी चाहिए; पहली, उन भावनाओं को व्यक्त करने से बचना जो इतनी स्वाभाविक हैं कि उन्हें स्वाभाविक मान लिया जाए; और दूसरी, कही गई बातों का अर्थ समझने से पहले ही तुरंत जवाब न देना। यदि आपने यह सावधानी अभी बरती होती, तो आप बहरे व्यक्ति की तरह बेतुकी बातें करने से बच जाते, जिससे आपके स्विमिंग ड्रेस पर लंगर की कढ़ाई वाली बेतुकी बात के बाद एक और बेतुकी बात जुड़ जाती। मैंने आपको बर्गोट की एक किताब उधार दी है जिसकी मुझे आवश्यकता है।

सुनिश्चित करें कि वह अगले एक घंटे के भीतर उस हेड वेटर द्वारा मेरे पास लाई जाए जिसका नाम मूर्खतापूर्ण और अनुपयुक्त है, जो मुझे लगता है कि दिन के इस समय बिस्तर पर नहीं होगा। आपने मुझे यह एहसास दिलाया कि कल रात आपसे जवानी के आकर्षण के बारे में बात करना मेरी जल्दबाजी थी; अगर मैंने आपको इसकी विचारहीनता, इसके महत्वहीनता और इसकी समझ की कमी के बारे में बताया होता तो मैं आपकी बेहतर सेवा करता। मुझे आशा है, महोदय, कि यह छोटा सा शॉवर आपके लिए नहाने जितना ही फायदेमंद होगा। लेकिन मुझे आपको ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रखना है: आपको सर्दी लग सकती है। आपका दिन शुभ हो, महोदय।

इस भाषण के लिए उन्हें बाद में खेद अवश्य हुआ होगा, क्योंकि कुछ समय बाद मुझे वह पुस्तक प्राप्त हुई जो उन्होंने मुझे उधार दी थी और जिसे मैंने उन्हें वापस भेज दिया था। यह पुस्तक मोरक्को की जिल्द में थी, जिसके अग्रभाग पर नक्काशीदार चमड़े का एक पैनल जड़ा हुआ था, जिसमें अर्ध-राहत में फॉरगेट-मी-नॉट फूलों की एक टहनी बनी हुई थी। यह पुस्तक ऐमे द्वारा नहीं, जो जाहिर तौर पर 'ड्यूटी से बाहर' थे, बल्कि लिफ्ट-बॉय द्वारा वापस भेजी गई थी।

एम. डी चार्लस के चले जाने के बाद, रॉबर्ट और मैं आखिरकार ब्लोच के साथ भोजन करने के लिए स्वतंत्र हो गए। और इस छोटी सी दावत के दौरान मुझे एहसास हुआ कि हमारे मित्र द्वारा आसानी से हास्यास्पद मानी जाने वाली कहानियाँ एम. ब्लोच सीनियर की पसंदीदा कहानियाँ थीं, और बेटे के लिए 'वास्तव में उल्लेखनीय व्यक्ति' हमेशा उसके पिता के उन दोस्तों में से एक था जिन्हें उसने इस श्रेणी में रखा था। कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनकी हम अपने बचपन में प्रशंसा करते हैं, एक पिता जो परिवार के बाकी सदस्यों से कहीं अधिक बुद्धिमान होता है, एक शिक्षक जो हमें

दर्शनशास्त्र का ज्ञान देकर हमारी नज़रों में सम्मान अर्जित करता है, एक सहपाठी जो हमसे अधिक उन्नत होता है (जो ब्लोच मेरे लिए थे), जो एस्पोइर एन डियू के मुसेट को तुच्छ समझता है जबकि हम अभी भी उसकी प्रशंसा करते हैं, और जब हम लेकोंटे या क्लाउडेल के स्तर तक पहुँच जाते हैं तो केवल उन्हीं की प्रशंसा करते हैं:

सेंट-ब्लेज़ में, ज़ुएका में
आप बहुत सहज थे:

जिसमें वह निम्नलिखित को शामिल करेगा:

पडुआ एक बहुत ही खूबसूरत जगह है।
जहां कानून के बहुत ही प्रतिष्ठित डॉक्टरेट छात्र हैं...
लेकिन मुझे पोलेंटा ज्यादा पसंद है...
मेरे काले डोमिनो से गुजरो
ला टोपेट के लिए

और नुइट्स को केवल यही याद रहेगा:

ले हावरे में, अटलांटिक महासागर के सामने।
वेनिस में, भयानक लिडो में।
किसी मकबरे की घास कहाँ देखने को मिलती है?
एड्रियाटिक सागर के शांत वातावरण में मरना।

इसलिए, जब भी हम आत्मविश्वास से किसी की प्रशंसा करते हैं, तो हम उससे ऐसी बातें एकत्र करते हैं, प्रशंसा के साथ उद्धृत करते हैं जो उन बातों से कहीं अधिक निम्न स्तर की होती हैं जिन्हें यदि हमारे विवेक पर छोड़ दिया जाए तो हम दृढ़ता से अस्वीकार कर देंगे, ठीक वैसे ही जैसे कोई उपन्यासकार उन्हें सत्य बताकर उपन्यास में डाल देता है, जबकि वे बातें वास्तव में लोगों द्वारा कही गई होती हैं, जो जीवंत संदर्भ में एक बोझ

की तरह होती हैं, कृति का नीरस भाग होती हैं। सेंट-साइमन द्वारा स्वयं रचित (और संभवतः स्वयं उनकी प्रशंसा किए बिना) चित्र प्रशंसनीय हैं, जबकि उनके चतुर मित्रों की जिन बातों को वे आकर्षक हास्य-व्यंग्य के रूप में उद्धृत करते हैं, वे स्पष्ट रूप से नीरस हैं जहाँ तक कि वे अर्थहीन नहीं हो गई हैं। वे मैडम द्वारा कही गई उन बातों को गढ़ने से घृणा करते जिन्हें वे इतना तीखा या इतना रंगीन बताते हैं। कॉर्न्यूएल हो या लुई XIV, यह एक ऐसा बिंदु है जिस पर कई अन्य लेखकों में भी ध्यान दिया जाना चाहिए, और जिसकी विभिन्न व्याख्याएं संभव हैं, जिनमें से फिलहाल केवल एक का उल्लेख करना ही पर्याप्त है: अर्थात्, जिस मानसिक स्थिति में हम 'अवलोकन' करते हैं, उस स्थिति में हम उस स्तर से बहुत नीचे होते हैं जिस स्तर तक हम सृजन करते समय पहुंचते हैं।

मेरे मित्र ब्लोच के भीतर एक पिता ब्लोच भी समाया हुआ था, जो अपने पुत्र से चालीस वर्ष पीछे था, अविश्वसनीय कहानियाँ सुनाता था और उन पर उतनी ही ज़ोर से हँसता था जितना कि उसका वास्तविक, प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष पिता ब्लोच हँसता था। क्योंकि पिता ब्लोच की हँसी में, जो वह कहानी का पूरा सार समझाने के लिए अंतिम शब्द को कई बार दोहराता था, वह कर्कश हँसी भी जुड़ जाती थी जिससे पुत्र भोजन के समय अपने पिता के किस्सों का स्वागत करता था। इस प्रकार, युवा ब्लोच, अपने परिवार से विरासत में मिली बुद्धिमत्ता को दर्शाते हुए, अत्यंत बुद्धिमानी भरी बातें कहने के बाद, हमें तीसवीं बार कुछ ऐसे अनमोल किस्से सुनाता था जो पिता ब्लोच केवल (अपने कोट के साथ) उन विशेष अवसरों पर सुनाता था जब वह किसी ऐसे व्यक्ति को घर लाता था जिस पर प्रभाव डालना सार्थक होता था; जैसे कि उसका कोई गुरु, कोई ऐसा मित्र जिसने सभी पुरस्कार जीते हों, या आज शाम, सेंट-लूप और मैं। उदाहरण के लिए: "एक असाधारण अंतर्दृष्टि वाला सैन्य आलोचक, जिसने बड़ी

कुशलता से, प्रमाणों के साथ, उन कारणों को समझाया था जिनके आधार पर रूस-जापान युद्ध में जापानियों की हार और रूसियों की जीत निश्चित थी," या फिर: "वह एक प्रतिष्ठित सज्जन हैं जो राजनीतिक हलकों में एक महान वित्तपोषक और वित्तपोषकों के बीच एक महान राजनीतिज्ञ माने जाते हैं।" ये कहानियां बैरन डी रॉथ्सचाइल्ड और सर रूफस इसराइल्स के बारे में कही जाने वाली कहानियों से मिलती-जुलती थीं, जिनका जिक्र बातचीत में इस तरह अस्पष्ट ढंग से किया गया था कि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि एम. ब्लोच उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते थे।

मैं खुद भी बहकावे में आ गया, और जिस तरह से एम. ब्लोच ने बर्गोट के बारे में बात की, उससे मुझे लगा कि वह भी उनका पुराना दोस्त है। लेकिन सभी मशहूर हस्तियों की तरह, एम. ब्लोच उन्हें सिर्फ 'बिना जाने' ही जानते थे, थिएटर या सड़क पर दूर से देखकर। इसके अलावा, उन्हें लगता था कि उनका रूप, उनका नाम, उनका व्यक्तित्व उनसे अनजान नहीं था, और जब वे उन्हें देखते थे तो अक्सर झुकने की दबी हुई इच्छा को दबा लेते थे। समाज में रहने वाले लोग, क्योंकि वे प्रतिभाशाली, अनोखे व्यक्तित्व वाले लोगों को जानते हैं और उन्हें अपने घरों में दावत देते हैं, इसलिए उन्हें बेहतर ढंग से नहीं समझ पाते। लेकिन जब कोई समाज में कुछ हद तक रह लेता है, तो वहां के लोगों की मूर्खता उसे उन अस्पष्ट मंडलों में रहने के लिए बहुत चिंतित कर देती है, जहां लोग सिर्फ 'बिना जाने' ही जानते हैं, और बुद्धि के बहुत ऊंचे मानक की उम्मीद करने लगता है। बर्गोट का विषय उठाते ही मुझे इसका एहसास हुआ। एम. ब्लोच अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो अपने घर में सामाजिक रूप से सफल थे। मेरा दोस्त तो अपनी बहनों के साथ और भी ज़्यादा ऐसा ही करता था। वह लगातार धमकाने वाले लहजे में उनसे सवाल पूछता रहता

था, अपना चेहरा थाली में छुपाए रखता था, और ये सब देखकर वे हंसते-हंसते लोटपोट हो जाती थीं। उन्होंने अपने भाई की भाषा अपना ली थी और उसे धाराप्रवाह बोलती थीं, मानो यह अनिवार्य हो और बुद्धिमान लोगों के लिए बोलने का एकमात्र तरीका हो। जब हम पहुँचे, तो सबसे बड़ी बहन ने छोटी बहनों में से एक से कहा: "जाओ, हमारे ज्ञानी पिता और हमारी आदरणीय माता को बताओ!" "प्यारे बच्चों," ब्लोच ने कहा, "मैं तुम्हें भाला फेंकने वाले घुड़सवार सेंट-लूप से मिलवाता हूँ, जो कुछ दिनों के लिए डोंसिएरेस से घोड़ों से भरे पॉलिश किए हुए पत्थर के घरों में आया है।" और, क्योंकि वह जितना साहित्यिक था उतना ही अशिष्ट भी था, इसलिए उसकी बातें अक्सर होमर की शैली से थोड़ी अलग तरह की हंसी-मजाक में खत्म होती थीं: "देखो, अपने सुंदर क्लिप से अपने पेपला को पास लाओ, यह सब क्या है जो मैं देख रहा हूँ? क्या तुम्हारी माँ जानती है कि तुम बाहर हो?" और मिस ब्लोच हंसी के तूफान में डूब गईं। मैंने उनके भाई को बताया कि उन्होंने मुझे बर्गोट की किताबें पढ़ने की सलाह देकर कितना आनंद दिया, जिनकी किताबें मुझे बेहद पसंद थीं।

एम. ब्लोच सीनियर, जो बर्गोट को केवल देखकर जानते थे और उनके जीवन के बारे में केवल आम गपशप से ही जानते थे, ने उनकी पुस्तकों से परिचित होने का तरीका भी उतना ही अप्रत्यक्ष रखा, और इसके लिए उन्होंने साहित्यिक आलोचनाओं का सहारा लिया। वे "बहुत करीबी" लोगों की दुनिया में रहते थे, जहाँ लोग खोखले रवैयों को सलाम करते हैं और गलत राय बना लेते हैं। उनकी अनिश्चितता और अक्षमता उनके आत्मविश्वास को कम नहीं करती, बल्कि इसके विपरीत करती है। यह आत्मसम्मान का एक चमत्कारी पहलू है कि हममें से कुछ ही लोग प्रतिष्ठित लोगों की संगति का आनंद ले पाते हैं या बौद्धिक मित्रता बना पाते हैं, फिर भी जिन्हें यह अवसर नहीं मिलता, वे स्वयं को सबसे श्रेष्ठ

मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे सामाजिक दृष्टिकोण के कारण समाज का हर वर्ग उसमें रहने वाले व्यक्ति को सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होता है, और वह महान लोगों को, जिन्हें वह बिना जाने नाम लेकर बदनाम करता है, बिना समझे उनका न्याय करता है और उन्हें तुच्छ समझता है, स्वयं से कम भाग्यशाली और इसलिए दया का पात्र समझता है। यहां तक कि उन मामलों में भी जहां किसी व्यक्ति के मामूली व्यक्तिगत लाभों और आत्मसम्मान के गुणन से भी उसे वह सुख नहीं मिल पाता जो दूसरों से कहीं अधिक उसके लिए आवश्यक है, ईर्ष्या हमेशा उस कमी को पूरा करने के लिए मौजूद रहती है। यह सच है कि यदि ईर्ष्या तिरस्कारपूर्ण शब्दों में व्यक्त होती है, तो हमें 'मैं उसे जानना नहीं चाहता' का अर्थ 'मेरे पास उसे जानने का कोई साधन नहीं है' समझना होगा। यह बौद्धिक अर्थ है। लेकिन भावनात्मक अर्थ वास्तव में यही है, 'मैं उसे जानना नहीं चाहता।' वक्ता जानता है कि यह सच नहीं है, फिर भी वह इसे केवल धोखा देने के लिए नहीं कहता; वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि वह ऐसा महसूस करता है, और यही उनके बीच की खाई को पाटने के लिए पर्याप्त है, यानी उसे खुश करने के लिए।

इस प्रकार स्वार्थ से ग्रस्त होकर प्रत्येक मनुष्य ब्रह्मांड को अपने स्वामी के नीचे घटते क्रम में फैला हुआ देखता है। एम. ब्लोच ने सुबह चॉकलेट पीते हुए, अखबार के एक लेख के नीचे बर्गोट के हस्ताक्षर देखकर, जिसे उन्होंने अभी मुश्किल से खोला ही था, निर्दयी होने का आनंद उठाया। उन्होंने लेखक को तिरस्कारपूर्वक एक संक्षिप्त मुलाकात दी, उसे फटकार लगाई और हर घूंट के बाद यह दोहराते हुए सुकून का अनुभव किया: "वह बर्गोट तो बिल्कुल ही समझ से परे हो गया है। हे भगवान, वह कितना उबाऊ है। मुझे अपनी सदस्यता बंद करनी ही होगी। कितना उलझा हुआ है यह सब, रोटी-पानी का बकवास!" और उन्होंने एक और टुकड़ा उठा

लिया।

एम. ब्लोच सीनियर का यह भ्रामक महत्व, उनकी अपनी धारणाओं की सीमा से कुछ हद तक आगे तक फैला हुआ था। सबसे पहले तो उनके बच्चे उन्हें श्रेष्ठ व्यक्ति मानते थे। बच्चों में हमेशा अपने माता-पिता को या तो कम आंकने या उनकी प्रशंसा करने की प्रवृत्ति होती है, और एक अच्छे बेटे के लिए उसका पिता हमेशा सर्वश्रेष्ठ पिता होता है, चाहे उसकी प्रशंसा करने का कोई वस्तुनिष्ठ कारण हो या न हो। अब, एम. ब्लोच के मामले में ऐसे कारण पूरी तरह से अनुपस्थित नहीं थे, जो एक शिक्षित, चतुर और अपने परिवार के प्रति स्नेही व्यक्ति थे। उनके सबसे करीबी लोगों को उन पर और भी गर्व था क्योंकि, यदि 'समाज' में लोगों का मूल्यांकन एक मानक (जो संयोगवश बेतुका है) और झूठे लेकिन निश्चित नियमों के अनुसार, अन्य सभी फैशनेबल लोगों के समूह की तुलना में किया जाता है, तो दूसरी ओर, मध्यम वर्ग के जीवन के उपखंडों में, रात्रिभोज, पारिवारिक पार्टियाँ कुछ ऐसे लोगों पर केंद्रित होती हैं जिन्हें अच्छी संगति, मनोरंजक माना जाता है, और जो 'समाज' में दूसरी शाम भी नहीं टिक पाते। इसके अलावा, ऐसे वातावरण में जहाँ अभिजात वर्ग के कृत्रिम मूल्यों का कोई अस्तित्व नहीं है, वहाँ उनकी जगह और भी मूर्खतापूर्ण भेद ले लेते हैं। इसी कारण उनके पारिवारिक दायरे में, और यहाँ तक कि परिवार के सबसे दूर के सदस्यों के बीच भी, उनकी मूंछें रखने के तरीके और नाक की बनावट में कथित समानता के कारण एम. ब्लोच को "ड्यूक डी'औमाले का हमशक्ल" कहा जाने लगा। (क्लब के सेवकों की दुनिया में, जो व्यक्ति अपनी टोपी एक तरफ करके और जैकेट के बटन कसकर बंद करके, खुद को एक विदेशी अधिकारी जैसा दिखाने की कोशिश करता है, क्या वह अपने साथियों के लिए एक तरह का विशिष्ट व्यक्ति नहीं होता?)

शक्ल बहुत हल्की थी, फिर भी ऐसा लगता था मानो उसे कोई उपाधि मिल गई हो। जब भी उसका ज़िक्र होता, लोग हमेशा पूछते: "ब्लोच? कौन? ड्यूक डी'औमाले?" जैसे लोग कहते हैं, "राजकुमारी मूरत? कौन? नेपल्स की रानी?" और कुछ अन्य छोटी-छोटी बातें भी थीं, जिनसे मिलकर चचेरे भाइयों की नज़र में उसे एक विशिष्ट दर्जा प्राप्त हो गया था। अपनी खुद की गाड़ी न रखते हुए, एम. ब्लोच विशेष अवसरों पर कंपनी से दो घोड़ों के साथ एक खुली विक्टोरिया कार किराए पर लेते थे और बोइस डी बोलोग्ने से गुज़रते थे, उनका शरीर बेजान सा इधर-उधर फैला रहता था, दो उंगलियां माथे पर और दो ठुड्डी पर टिकी होती थीं। अगर कोई अनजान व्यक्ति उन्हें 'बुजुर्ग झंझट' समझता था, तो परिवार में सभी इस बात से सहमत थे कि चतुराई के मामले में चाचा सोलोमन ग्रामोंट-कैडरूस को भी मात दे सकते थे। वह उन लोगों में से एक थे, जिनकी मृत्यु के बाद, वर्षों तक बुलेवार्ड के एक रेस्तरां में उसके समाचार संपादक के साथ एक ही मेज पर बैठने के कारण, रेडिकल के सामाजिक कॉलम में उन्हें "पेरिस की जानी-मानी हस्ती" के रूप में वर्णित किया जाता है। एम. ब्लोच ने सेंट-लूप और मुझे बताया कि बर्गोट को यह अच्छी तरह से पता था कि एम. ब्लोच उन्हें हमेशा क्यों नजरअंदाज करते थे, इसलिए जैसे ही उनकी नजर थिएटर या क्लब में पड़ती, वह उनसे नजरें चुरा लेते थे। सेंट-लूप शर्म से लाल हो गए, क्योंकि उनके मन में यह ख्याल आया कि यह क्लब जॉकी नहीं हो सकता, जिसके उनके पिता अध्यक्ष रह चुके थे। दूसरी ओर, यह एक काफी विशिष्ट क्लब होना चाहिए, क्योंकि एम. ब्लोच ने कहा था कि अगर बर्गोट आज के दौर में आते, तो उन्हें कभी भी इसमें प्रवेश नहीं मिलता। इसलिए, इस डर से कि कहीं वह अपने प्रतिद्वंद्वी को कम न आंक रहे हों, सेंट-लूप ने पूछा कि क्या यह वही क्लब है जिसे उनके परिवार द्वारा 'नीचा' माना जाता था, और

जिसके बारे में उन्हें पता था कि कुछ इजरायली लोगों को इसमें प्रवेश दिया गया था। “नहीं,” एम. ब्लोच ने बेपरवाह, गर्वित और शर्मिंदा लहजे में जवाब दिया, “यह एक छोटा क्लब है, लेकिन गनाचेस जैसे बड़े क्लब से कहीं ज़्यादा सुखद है। हम वहाँ बहुत सख्त हैं, क्या आपको पता नहीं?” “क्या सर रूफस इसराइल्स अध्यक्ष नहीं हैं?” ब्लोच जूनियर ने अपने पिता से पूछा, ताकि उन्हें एक शानदार झूठ बोलने का मौका मिल सके, उन्हें ज़रा भी शक नहीं था कि सेंट-लूप की नज़रों में उस फाइनेंसर का उतना ही रुतबा नहीं था जितना उनका। असल बात यह थी कि गनाचेस क्लब के अध्यक्ष सर रूफस इसराइल्स नहीं, बल्कि उनका एक कर्मचारी था। लेकिन चूंकि उस व्यक्ति के अपने मालिक के साथ अच्छे संबंध थे, इसलिए उसके पास फाइनेंसर के कार्डों का भंडार था, और जब भी एम. ब्लोच किसी ऐसी लाइन पर यात्रा करना चाहते थे जिसमें सर रूफस निदेशक थे, तो वह उन्हें एक कार्ड दे देता था। नतीजा यह होता था कि बूढ़ा ब्लोच कहता था: “मैं अभी क्लब जा रहा हूँ सर रूफस से कंपनी के लिए एक लाइन माँगने।” और उस कार्ड की बदौलत वह ट्रेनों के गार्डों को चकित कर देता था। मिस ब्लोच को बर्गोट में ज़्यादा दिलचस्पी थी और गनाचेस के विषय को आगे बढ़ाने के बजाय, सबसे छोटी बहन ने अपने भाई से बेहद गंभीर स्वर में पूछा, क्योंकि उसका मानना था कि प्रतिभावान पुरुषों को पहचानने के लिए दुनिया में उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के अलावा कोई और शब्द नहीं हैं: "क्या यह बर्गोट सचमुच एक अद्भुत नेक इंसान है? क्या वह विलियर्स और कैटुलस जैसे महान प्रतिभाशाली लोगों की श्रेणी में आता है?" "मैं उससे रिहर्सल में कई बार मिल चुका हूँ," एम. निसिम बर्नार्ड ने कहा। "वह एक असभ्य प्राणी है, एक तरह का श्लेमिहल।" चामिसो की कहानी के इस संदर्भ में कुछ भी गंभीर नहीं था, लेकिन 'श्लेमिहल' उपनाम उस बोली का हिस्सा था,

जो आधी जर्मन और आधी यहूदी थी। परिवार में इस बोली का प्रयोग देखकर एम. ब्लोच को खुशी होती थी, लेकिन अजनबियों के सामने यह उन्हें भद्दा और बेतुका लगता था। इसलिए उन्होंने अपने चाचा की ओर तिरस्कार भरी नज़र डाली। ब्लोच ने कहा, "उसमें प्रतिभा है।" "आह!" उनकी बहन ने गहरी आह भरी, मानो यह जता रही हो कि इस मामले में मेरे लिए कुछ बहाना है। एम. ब्लोच ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा, "सभी लेखकों में प्रतिभा होती है।" उनके बेटे ने अपना कांटा उठाते हुए और शरारती व्यंग्य से आँखें सिकोड़ते हुए कहा, "दरअसल, ऐसा लगता है कि वह अकादमी के लिए आवेदन करने जा रहा है।" "बताओ। उसके पास उन्हें दिखाने के लिए पर्याप्त नहीं है," उनके पिता ने जवाब दिया, जो अकादमी के प्रति अपने बेटे और बेटियों जैसा तिरस्कार नहीं रखते थे। "वह इतना बड़ा लेखक नहीं है।" "इसके अलावा, अकादमी एक सैलून है, और बर्गोट में कोई शिष्टाचार नहीं है," चाचा (जिनकी उत्तराधिकारी श्रीमती ब्लोच थीं) ने कहा, जो एक सौम्य और सौम्य व्यक्ति थे, जिनका उपनाम, बर्नार्ड, शायद अकेले ही मेरे दादाजी की निदान क्षमता को बढ़ा देता, लेकिन उस चेहरे के साथ बहुत कम मेल खाता जो ऐसा प्रतीत होता था मानो उसे डेरियस के महल से वापस लाया गया हो और श्रीमती डियूलफॉय द्वारा पुनर्स्थापित किया गया हो, यदि (सूसा की इस मूर्ति को प्राच्यवाद का अंतिम स्पर्श देने की इच्छा रखने वाले किसी संग्राहक द्वारा चुना गया) उनका पहला नाम, निस्सिम, उसके ऊपर खोरसाबाद के नर-सिर वाले बैल के पंखों की तरह फैला हुआ न होता। लेकिन एम. ब्लोच ने अपने चाचा का अपमान करना कभी बंद नहीं किया, चाहे वह उनके लगातार अच्छे व्यवहार से उत्तेजित होना हो, या विला का किराया लाभार्थी एम. निसिम बर्नार्ड द्वारा चुकाया जाना, जिससे वह अपनी स्वतंत्रता दिखाना चाहते थे, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह

चापलूसी करके आने वाली समृद्ध विरासत को सुनिश्चित करने की कोशिश नहीं कर रहे थे। बूढ़े व्यक्ति को सबसे अधिक दुख इस बात से हुआ कि नौकर के सामने उनके साथ इतना बुरा बर्ताव किया गया। उन्होंने कुछ अस्पष्ट वाक्य बुदबुदाया, जिसका केवल इतना ही अर्थ समझ में आया: "जब मेस्कोरेस कमरे में हों।" बाइबल में 'मेस्कोरेस' का अर्थ है 'ईश्वर का सेवक'। परिवार में ब्लोच परिवार अपने नौकरों के लिए इस शब्द का प्रयोग करते थे और इससे हमेशा प्रसन्न होते थे, क्योंकि ईसाइयों या नौकरों द्वारा न समझे जाने का उनका विश्वास एम. निसिम बर्नार्ड और एम. ब्लोच के दोहरे गौरव को और बढ़ा देता था: 'मालिक' और साथ ही 'यहूदी' होना। लेकिन संतुष्टि का यह स्रोत मेहमानों के आने पर असंतोष का कारण बन गया। ऐसे समय में, अपने चाचा को 'मेस्कोरेस' कहते सुनकर एम. ब्लोच को लगा कि वह अपने पूर्वी पक्ष को कुछ ज़्यादा ही ज़ाहिर कर रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई प्रेमिका अपनी कुछ बहनों को अपने सम्मानित दोस्तों से मिलवाने के लिए बुलाती है और अगर वे उनके पेशे का ज़िक्र करें या ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करें जो सुनने में अच्छे न लगें, तो उसे बुरा लगता है। इसलिए, अपने चाचा के अनुरोध का एम. ब्लोच पर कोई असर नहीं हुआ, बल्कि वह गुस्से से आग बबूला हो गए और खुद को रोक नहीं पाए। उन्होंने अपने बेचारे चाचा को चिढ़ाने का कोई मौका नहीं छोड़ा। "बेशक, जब भी कुछ बेवकूफी भरी बात कहने का मौका मिलता है, तो आप उसे ज़रूर चूकते हैं। अगर वह कमरे में होते, तो आप सबसे पहले उनके जूते चाटते!" एम. ब्लोच चिल्लाए, जबकि एम. निस्सिम बर्नार्ड ने दुख से राजा सरगोन की घुंघराली दाढ़ी अपनी थाली पर रख दी। जब मेरे दोस्त ने अपनी दाढ़ी बढ़ाना शुरू किया, जो नीली-काली और घुंघराली थी, तो वह अपने परदादा की तरह दिखने लगा।

“क्या! क्या आप मार्क्विस डी मार्सैंट्स के बेटे हैं? अरे, मैं तो उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता था,” श्री निस्सिम बर्नार्ड ने सेंट-लूप से कहा। मुझे लगा कि उनका मतलब 'जानता था' उसी अर्थ में था जिस अर्थ में ब्लोच के पिता ने बर्गोट को जानने की बात कही थी, यानी उन्हें देखकर। लेकिन उन्होंने आगे कहा: “आपके पिता मेरे सबसे अच्छे दोस्तों में से एक थे।” इस बीच ब्लोच का चेहरा लाल हो गया था, उनके पिता बेहद नाराज़ दिख रहे थे, और ब्लोच की बेटियाँ दबी हुई हँसी से लोटपोट हो रही थीं। असल बात यह थी कि श्री निस्सिम बर्नार्ड में दिखावे का वही शौक था जो श्री ब्लोच और उनके बच्चों में खुलेआम दिखता था, और इसी शौक ने उन्हें लगातार झूठ बोलने की आदत डाल दी थी। उदाहरण के लिए, अगर वे किसी होटल में ठहरते, तो श्री निस्सिम बर्नार्ड, श्री ब्लोच की तरह ही, अपने अखबार हमेशा अपने नौकर से भोजन कक्ष में, दोपहर के भोजन के बीच में, जब सब लोग मौजूद होते थे, मंगवाते थे, ताकि सब लोग देख सकें कि वे नौकर के साथ यात्रा कर रहे हैं। लेकिन होटल में जिन लोगों से चाचा की दोस्ती हुई थी, उनसे चाचा वो बात कहा करते थे जो भतीजा कभी नहीं कहता, कि वो एक सीनेटर हैं। शायद उन्हें अच्छी तरह पता था कि देर-सवेर उन्हें पता चल ही जाएगा कि ये उपाधि उन्होंने हथिया ली है; लेकिन नाजुक समय पर वो इसे स्वीकार करने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सके। एम. ब्लोच अपने चाचा के झूठ और उनसे होने वाली तमाम शर्मिंदगी से बहुत परेशान थे। "उनकी बातों पर ध्यान मत दो, वो बहुत बकवास करते हैं," उन्होंने सेंट-लूप से फुसफुसाते हुए कहा, जिनकी दिलचस्पी और भी बढ़ गई थी, क्योंकि वो झूठ बोलने वालों के मनोविज्ञान को समझने के लिए उत्सुक थे। "इथाका के ओडीसियस से भी बड़ा झूठा, भले ही एथेंस ने उन्हें मनुष्यों में सबसे बड़ा झूठा कहा हो," उनके बेटे ने आरोप पूरा किया। "वाह, मेरी कसम!" श्री निस्सिम बर्नार्ड

रोते हुए बोले, "काश मुझे पता होता कि मैं अपने पुराने दोस्त के बेटे के साथ रात का खाना खाने जा रहा हूँ! अरे, मेरे पास तो पेरिस में आपके पिता की एक तस्वीर अभी भी है, और उनके लिखे अनगिनत पत्र भी। वो हमेशा मुझे 'चाचा' कहकर बुलाते थे, पता नहीं क्यों। वो एक आकर्षक और जोशीले इंसान थे। मुझे नीस में दी गई अपनी एक दावत अच्छी तरह याद है; वहाँ साईं, लैबिचे, औगियर आए थे।" श्री ब्लोच ने व्यंग्य करते हुए कहा, "मोलियर, रेसीन, कॉर्नेल," और उनके बेटे ने मेहमानों की सूची पूरी करते हुए कहा, "प्लॉटस, मेनेंडर, कालिदास।" श्री निस्सिम बर्नार्ड को गहरा आहत हुआ और वे अपनी यादों को बीच में ही रोककर, एक बड़े सुख से खुद को वंचित करते हुए, भोजन समाप्त होने तक चुप रहे।

"कांस्य के हेलमेट वाले सेंट-लूप," ब्लोच ने कहा, "इस बत्तख का एक और टुकड़ा लीजिए जिसकी जांघें चर्बी से भरी हुई हैं, जिस पर पक्षियों के इस प्रख्यात बलिदाता ने लाल शराब की कई भेंटें चढ़ाई हैं।"

आम तौर पर, किसी खास मेहमान के मनोरंजन के लिए सर रूफस इसराइल्स और अन्य लोगों के किस्से सुनाने के बाद, श्री ब्लोच यह महसूस करते हुए कि वे अपने बेटे का दिल जीतने में कामयाब हो गए हैं, वहाँ से चले जाते थे ताकि बड़े लोगों की नज़र में उनका प्रभाव कम न हो। लेकिन अगर कोई बेहद ज़रूरी वजह होती, जैसे कि उस रात जब उनके बेटे को फेलोशिप मिली, तो श्री ब्लोच आम किस्सों के साथ एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी जोड़ देते थे, जो वे आमतौर पर अपने निजी दोस्तों के लिए ही रखते थे। युवा ब्लोच को यह टिप्पणी अपने बेटे के सामने सुनकर बहुत गर्व हुआ: "सरकार ने अक्षम्य काम किया है। वे श्री कोक्वेलिन से सलाह लेना भूल गए! श्री कोक्वेलिन ने यह ज़ाहिर कर दिया है कि वे नाराज़ हैं।" (श्री ब्लोच खुद को एक प्रतिक्रियावादी मानते थे और नाटकीय लोगों से घृणा करते थे।)

लेकिन मिस ब्लोच और उनके भाई शर्म से लाल हो गए, क्योंकि वे बहुत प्रभावित हुए जब ब्लोच सीनियर ने अपने बेटे के दो 'दोस्तों' के स्वागत में अपनी शाही अदाकारी दिखाने के लिए शैंपेन मंगवाया और अनायास ही घोषणा की कि हमारे लिए एक विशेष भेंट के रूप में उन्होंने उस शाम कैसिनो में ओपेरा-कॉमिक की एक मंडली के प्रदर्शन के लिए तीन सीटें बुक की हैं। उन्हें खेद था कि उन्हें बॉक्स नहीं मिल पाया। सभी सीटें बुक हो चुकी थीं। हालांकि, वे अक्सर बॉक्स में बैठते थे, और सच में ऑर्केस्ट्रा के पास से देखना और सुनना बेहतर होता है। सब ठीक था, लेकिन अगर उनके बेटे की कमी, यानी वह कमी जिसे उनका बेटा दूसरों को दिखाई नहीं देता मानता था, अशिष्टता थी, तो पिता की कमी लालच थी। और इस तरह हमें एक डिकैंटर में, शैंपेन के नाम पर, एक हल्की स्पार्कलिंग वाइन परोसी गई, जबकि ऑर्केस्ट्रा स्टॉल्स के डिकैंटर के नीचे उन्होंने पिट में तीन और बोतलें रखी थीं, जिनकी कीमत आधी थी। उन्हें अपने इस शारीरिक दोष पर ईश्वरीय कृपा का विश्वास था कि न तो मेज पर और न ही थिएटर में (जहाँ सभी सीटें खाली थीं) इस दोष पर किसी का ध्यान जाएगा। जब एम. ब्लोच ने हमें अपने होठों को उन चपटे गिलासों में भिगोने दिया, जिन्हें उनके बेटे ने 'गहरे खोखले किनारों वाले गड्ढे' का नाम दिया था, तो उन्होंने हमें एक ऐसी तस्वीर दिखाई जिससे उन्हें इतना लगाव था कि वे उसे अपने साथ बालबेक ले आए थे। उन्होंने हमें बताया कि यह रूबेंस की पेंटिंग है। सेंट-लूप ने मासूमियत से पूछा कि क्या इस पर हस्ताक्षर हैं। एम. ब्लोच ने शरमाते हुए उत्तर दिया कि उन्होंने फ्रेम में फिट करने के लिए हस्ताक्षर कटवा दिए थे, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि उनका तस्वीर बेचने का कोई इरादा नहीं था। फिर उसने जल्दी से हमें शुभ रात्रि कहा और खुद को जर्नल ऑफिशिएल में डुबो दिया, जिसकी पुरानी प्रतियां घर में बिखरी पड़ी थीं। उसने हमें बताया कि

उसे अपने 'संसदीय पद' के कारण इसे ध्यान से पढ़ना पड़ता है, लेकिन उसने हमें इसके सटीक स्वरूप के बारे में कुछ नहीं बताया। ब्लोच ने कहा, "मैं एक मफलर ले लेता हूँ, क्योंकि ज़ेफिरस और बोरियास इस बात पर बहस कर रहे हैं कि मछलियों से भरे समुद्र पर किसका अधिकार होगा, और अगर हम तमाशा खत्म होने के बाद थोड़ी देर भी रुके तो हम गुलाबी उंगलियों वाली देवी ईओस के पहले उफान से पहले घर नहीं पहुँच पाएंगे। वैसे," जब हम बाहर थे, उसने सेंट-लूप से पूछा, और मैं कांप उठा, क्योंकि मैं तुरंत समझ गया कि ब्लोच व्यंग्य भरे लहजे में एम. डी चार्लस के बारे में बात कर रहा था, "वह शानदार बूढ़ा आदमी कौन था जिसके साथ मैंने तुम्हें परसों समुद्र तट पर काले कपड़े पहने चलते देखा था?" "वह मेरे चाचा थे।" सेंट-लूप घबरा गया। दुर्भाग्य से, ब्लोच के लिए 'फ्लोटर' कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिससे बचा जाना चाहिए। वह हँसी से लोटपोट हो गया। "बहुत-बहुत बधाई; मुझे यही अनुमान लगाना चाहिए था; उसकी शैली उत्कृष्ट है, एक प्राचीन 'गागा' का सबसे अनमोल डायल, जो उच्चतम वंश का है।" "आप बिल्कुल गलत हैं; वह एक बेहद चतुर व्यक्ति है," सेंट-लूप ने गुस्से में जवाब दिया। "मुझे इस बात का खेद है; इससे उनकी शख्सियत अधूरी लगती है। फिर भी, मैं उन्हें जानना बहुत पसंद करूंगा, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं उनके जैसे बूढ़े लोगों के बारे में कुछ बेहतरीन लेख लिख सकता हूं। बस उन्हें आते-जाते देखना ही कितना मजेदार है। लेकिन मुझे उनके उस मजाकिया पहलू को नजरअंदाज करना चाहिए, जो शब्दों की कलात्मक सुंदरता से मोहित कलाकार के लिए शायद ही उचित है, उनके चेहरे को देखकर (आप मुझे माफ करेंगे) मैं एक पल के लिए खुशी से लोटपोट हो गया था, और मुझे आपके चाचा के कुलीन पक्ष पर जोर देना चाहिए, जिनका एक अलग ही बैल जैसा प्रभाव है, और हंसने के बाद भी वे अपने शानदार अंदाज से प्रभावित करते हैं।

लेकिन," उन्होंने इस बार मुझसे बात करते हुए कहा, "एक बिल्कुल अलग मामला भी है जिसके बारे में मैं आपसे पूछना चाहता था, और हर बार जब हम साथ होते हैं, तो कोई देवता, ओलंपस का कोई प्रिय निवासी, मुझे वह जानकारी पूछना पूरी तरह से भुला देता है जो पहले मेरे लिए बहुत उपयोगी हो सकती थी और निश्चित रूप से किसी दिन होगी। मुझे बताइए," "वह प्यारी महिला कौन थी जिसके साथ मैंने आपको गार्डन डी'एक्लिमेटेशन में देखा था? उनके साथ एक सज्जन थे जिन्हें मैं जानता हुआ प्रतीत होता हूँ और एक छोटी लड़की थी जिसके लंबे बाल थे?" उस समय मुझे यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया था कि श्रीमती स्वान को ब्लोच का नाम याद नहीं था, क्योंकि उन्होंने उनके बारे में किसी और नाम से बात की थी, और मेरे मित्र को किसी मंत्रालय के कर्मचारी के रूप में बताया था, जिसके बारे में मैंने तब से यह पता लगाने की कोशिश नहीं की कि क्या वह उसमें शामिल हुए थे। लेकिन यह कैसे हो सकता है कि ब्लोच, जिन्होंने, जैसा कि उन्होंने मुझे तब बताया था, उनसे परिचय करवाया था, उनका नाम नहीं जानते थे? मैं इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उत्तर देने से पहले एक पल के लिए रुक गया। “जो भी हो,” उसने आगे कहा, “आपको हार्दिक बधाई; आप उससे ऊबे नहीं होंगे। मैंने उसे कुछ दिन पहले ज़ोन रेलवे पर उठाया था, जहाँ ज़ोन की बात करें तो, उसने आपके विनम्र सेवक के लिए अपनी ज़ोन खोल दी थी; मैंने अपने जीवन में ऐसा आनंद कभी नहीं लिया था, और हम फिर से मिलने की व्यवस्था करने ही वाले थे कि उसके किसी परिचित ने आखिरी स्टेशन से एक पहले वाले स्टेशन पर चढ़ने की बदतमीज़ी कर दी।” मेरी लगातार चुप्पी ब्लोच को पसंद नहीं आई। “मैं आशा कर रहा था,” उसने कहा, “आपकी बदौलत, उसका पता जान लूँ, ताकि सप्ताह में कई बार वहाँ जाकर उसकी बाहों में देवताओं को प्रिय कामुकता का आनंद ले सकूँ; लेकिन मैं ज़िद नहीं कर

रहा हूँ क्योंकि आप उस पेशेवर के प्रति गोपनीयता बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध प्रतीत होते हैं जिसने पेरिस और प्वाइंट-डू-जॉर के बीच लगातार तीन बार, और अत्यंत शालीनता से, स्वयं को मेरे हवाले कर दिया। मैं उससे किसी रात फिर मिलूँगा।"

इस डिनर के बाद मैंने ब्लोच से मिलने की कोशिश की; उन्होंने मुझे वापस फोन किया, लेकिन मैं बाहर था और उन्हें मेरे बारे में पूछते हुए फ्रांस्वा ने देख लिया। संयोग से, हालांकि ब्लोच कॉम्ब्रे में हमसे मिलने आए थे, लेकिन उन्होंने तब तक उन्हें देखा तक नहीं था। इसलिए उन्हें केवल इतना पता था कि मेरे कुछ दोस्तों में से एक सज्जन मुझसे मिलने आए थे, उन्हें यह नहीं पता था कि 'किस उद्देश्य से', और उन्होंने साधारण कपड़े पहने थे, जिससे उन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा था। अब हालांकि मैं अच्छी तरह जानता था कि फ्रांस्वा के कुछ सामाजिक विचार मेरे लिए हमेशा के लिए समझ से परे रहेंगे, ऐसे विचार जो शायद शब्दों और नामों के बीच भ्रम पर आधारित थे, जिन्हें उन्होंने हमेशा के लिए एक-दूसरे के लिए गलत समझा था, फिर भी मैं खुद को रोक नहीं पाया, जिसने ऐसे मामलों में ज्ञान की खोज को बहुत पहले ही छोड़ दिया था, यह जानने की कोशिश करने से - और वह भी व्यर्थ - कि फ्रांस्वा के लिए ब्लोच के नाम का इतना गहरा महत्व क्या हो सकता है। जैसे ही मैंने उसे बताया कि उसने जिस युवक को देखा था वह एम. ब्लोच थे, वह आश्चर्य और निराशा से कुछ कदम पीछे हट गई। "क्या! क्या वह एम. ब्लोच हैं?" वह स्तब्ध होकर चिल्लाई, मानो इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति का रूप ऐसा होना चाहिए था कि उसे देखते ही पता चल जाए कि वह पृथ्वी के महानतम व्यक्तियों में से एक के सामने है; और, जैसे किसी को पता चल गया हो कि कोई ऐतिहासिक चरित्र अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं है, उसने प्रभावित स्वर में दोहराया, जिसमें मुझे भविष्य में पनपने वाले व्यापक संदेह के बीज

दिखाई दिए: "क्या! क्या वह एम. ब्लोच हैं? सच में, उन्हें देखकर तो ऐसा लगता ही नहीं।" ऐसा लग रहा था मानो वह मुझसे नाराज़ भी हो, मानो मैंने हमेशा उसके सामने ब्लोच की प्रशंसा कुछ ज़्यादा ही कर दी हो। साथ ही उन्होंने बड़ी विनम्रता से यह भी कहा: "खैर, वह एम. ब्लोच हो सकते हैं, और सब कुछ। मुझे यकीन है कि मास्टर कह सकते हैं कि वह उतने ही अच्छे हैं।"

सेंट-लूप के प्रति, जिनकी वह पूजा करती थी, उसे फिलहाल एक अलग तरह की और कम गंभीर निराशा हुई: उसे पता चला कि वह एक रिपब्लिकन था। अब, उदाहरण के लिए, जब वह पुर्तगाल की रानी के बारे में बात करती, तो वह उस अनादर के साथ कहती, जिसे आम लोगों के बीच सम्मान का सर्वोच्च रूप माना जाता है: "फिलिप की बहन एमिली," फ्रांस्वा एक राजशाही समर्थक थी। लेकिन जब बात एक मार्क्विस की आती; एक ऐसा मार्क्विस जिसने उसे पहली नज़र में चकाचौंध कर दिया था, और जो गणतंत्र का समर्थक था, तो वह अब वास्तविक नहीं लगता था। और उसने वही चिड़चिड़ापन दिखाया जैसे कि मैंने उसे एक डिब्बा दिया हो जिसे उसने सोने का समझा था, जिसके लिए उसने मेरा बहुत धन्यवाद किया था, और फिर एक जौहरी ने उसे बताया कि वह केवल सोने की परत चढ़ा हुआ था। उसने तुरंत सेंट-लूप के प्रति अपना सम्मान वापस ले लिया, लेकिन कुछ समय बाद ही उसने उसे फिर से उसके प्रति सम्मान प्रकट कर दिया, क्योंकि उसे लगा कि मार्क्विस डी सेंट-लूप होने के नाते वह गणतंत्रवादी नहीं हो सकता, वह केवल अपने स्वार्थ के लिए दिखावा कर रहा था, क्योंकि हमारी मौजूदा सरकार में उसे बहुत लाभ हो सकता था। उसी क्षण से उसके प्रति उसकी शीतलता और मेरे प्रति उसकी नाराजगी समाप्त हो गई। और जब वह सेंट-लूप के बारे में बात करती, तो वह कहती: "वह एक पाखंडी है," एक व्यापक और मैत्रीपूर्ण

मुस्कान के साथ, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह उसे फिर से उतना ही महत्व देती है जितना कि पहली बार जानने पर देती थी, और उसने उसे क्षमा कर दिया था।

वास्तव में, सेंट-लूप पूरी तरह से ईमानदार और निस्वार्थ थे, और यह उनकी गहन नैतिक पवित्रता ही थी, जो प्रेम जैसी स्वार्थी भावना में पूर्ण संतुष्टि न पा सकने के कारण, और दूसरी ओर उनमें (उदाहरण के लिए मुझमें मौजूद) स्वयं के अलावा कहीं और आध्यात्मिक पोषण न पा सकने की असंभवता का सामना करने के कारण, उन्हें वास्तव में मित्रता के योग्य बनाती थी (ठीक वैसे ही जैसे मैं अयोग्य था)।

फ्रांस्वा सेंट-लूप के बारे में भी उतनी ही गलत थी जब उसने शिकायत की कि उसका रवैया कुछ ऐसा था, मानो वह आम लोगों को नीचा नहीं समझता हो, बल्कि यह सब दिखावा था, और उसे बस तब देखना चाहिए था जब वह अपने नौकर से नाराज़ होता था। वास्तव में, कभी-कभी ऐसा होता था कि रॉबर्ट अपने नौकर को कुछ हद तक बेरहमी से डांटता था, जिससे यह साबित होता था कि वह वर्गों और आम लोगों के बीच अंतर की नहीं, बल्कि समानता की भावना रखता था। "लेकिन," उसने उस आदमी के साथ कठोर व्यवहार करने पर मेरी फटकार के जवाब में कहा, "मुझे उससे विनम्रता से बात करने की क्या ज़रूरत है? क्या वह मेरे बराबर नहीं है? क्या वह मेरे चाचाओं और चचेरे भाइयों जितना ही मेरे करीब नहीं है? तुम्हें लगता है कि मुझे उसके साथ सम्मान से, एक हीन व्यक्ति की तरह व्यवहार करना चाहिए। तुम तो एक कुलीन की तरह बात करती हो!" उसने तिरस्कारपूर्वक कहा।

और वास्तव में, अगर कोई ऐसा वर्ग था जिसके प्रति उन्होंने पूर्वाग्रह और शत्रुता दिखाई, तो वह अभिजात वर्ग था, इतना अधिक कि उन्हें समाज के किसी व्यक्ति के श्रेष्ठ गुणों पर विश्वास करना उतना ही कठिन लगता था

जितना कि आम आदमी के गुणों पर विश्वास करना आसान। जब मैंने प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग का जिक्र किया, जिनसे मैं उनकी चाची के साथ मिला था:

"एक बूढ़ी ट्राउट," उसने टिप्पणी की। "उन सभी की तरह। वैसे, वह मेरी एक तरह की चचेरी बहन है।"

वहाँ आने-जाने वाले लोगों के प्रति गहरी नफरत होने के कारण, वह 'सोसाइटी' में बहुत कम जाता था। उसके प्रति उसका तिरस्कारपूर्ण या शत्रुतापूर्ण रवैया उसके सभी करीबी रिश्तेदारों के बीच मंच पर काम करने वाली एक महिला के साथ उसकी घनिष्ठता से पैदा हुई पीड़ादायक छाप को और बढ़ा देता था। वे कहते थे कि यह संबंध उसके विनाश का कारण बनेगा, और विशेष रूप से इस संबंध को उसके भीतर अपमान की भावना, उस बुरी भावना को जन्म देने और उसे गुमराह करने का कारण मानते थे, जिसके बाद उसका पूरी तरह से समाज से अलग हो जाना तय था। इसलिए, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के कई बेफिक्र लोग रॉबर्ट की प्रेमिका के बारे में बात करते समय संकोच नहीं करते थे। वे कहते थे, "ये लड़कियाँ अपना काम करती हैं, वे किसी और की तरह ही अच्छी हैं। लेकिन वह; नहीं, धन्यवाद! हम उसे माफ नहीं कर सकते। उसने हमारे प्रिय साथी को बहुत नुकसान पहुँचाया है।" बेशक, वह इस जाल में फँसने वाला पहला व्यक्ति नहीं था। लेकिन बाकी लोग दुनियादारी में मशगूल रहे, राजनीति और हर चीज़ के बारे में दुनियादारी में मशगूल रहे। जहाँ तक उसकी बात है, उसके परिवार को वह 'उदास' लगा। वे यह भूल गए कि फैशनपरस्त कई नौजवान, जो मानसिक रूप से अविकसित, दोस्ती में रूखे, और शिष्टाचारहीन रह जाते हैं, उनके लिए अक्सर उनकी प्रेमिका ही उनकी असली गुरु होती है, और इस तरह के संबंध ही नैतिकता का एकमात्र विद्यालय होते हैं जहाँ उन्हें उच्च संस्कृति की शिक्षा मिलती है

और वे निस्वार्थ संबंधों का महत्व सीखते हैं। यहाँ तक कि निम्न वर्ग में भी (जो अशिष्टता के मामले में अक्सर फैशन की दुनिया की याद दिलाते हैं) स्त्री, जो अधिक संवेदनशील, अधिक सौम्य और अधिक फुर्सत वाली होती है, जिज्ञासावश कुछ शिष्टाचार अपनाती है, भावनाओं और कला की कुछ सुंदरताओं का सम्मान करती है, जिन्हें भले ही वह न समझ पाए, फिर भी वह उन्हें पुरुष के लिए सबसे वांछनीय लगने वाली चीज़ों, धन या पद से ऊपर रखती है। अब चाहे प्रेमिका किसी युवा पुरुष की हो (जैसे सेंट-लूप) या किसी युवा कारीगर की (उदाहरण के लिए, बिजली मिस्त्री भी हमारे सच्चे शूरवीरता के मापदंड में शामिल होने चाहिए), उसके प्रेमी के मन में उसके लिए इतना सम्मान और आदर होता है कि वह स्वयं भी उसका सम्मान और आदर करता है; और इस प्रकार उसके लिए मूल्यों का पैमाना उलट जाता है। केवल स्त्रीत्व ही उसे कमजोर बनाता है; वह तंत्रिका संबंधी समस्याओं से ग्रस्त रहती है, ऐसी अकथनीय चीजें जो किसी पुरुष में, या यहाँ तक कि किसी अन्य स्त्री में—जिसका वह भतीजा या चचेरा भाई हो—इस बलवान युवक के चेहरे पर मुस्कान ला देतीं। लेकिन वह जिसे प्यार करता है उसे इस पीड़ा में नहीं देख सकता। वह नौजवान रईस, जिसकी सेंट-लूप की तरह एक प्रेमिका है, जब उसे खाने पर ले जाता है, तो अपनी जेब में वैलेरियन की कुछ बूँदें रखता है जिनकी उसे ज़रूरत पड़ सकती है। वह वेटर को सख्ती से और बिना किसी व्यंग्य के आदेश देता है कि वह दरवाज़े को धीरे से बंद करे और मेज़ पर कोई गीली काई न रखे, ताकि उसकी साथी उन असुविधाओं से बच सके जिन्हें उसने खुद कभी महसूस नहीं किया। ये असुविधाएँ उसके लिए एक रहस्यमयी दुनिया बनाती हैं, जिसकी वास्तविकता में उसकी प्रेमिका ने उसे विश्वास करना सिखाया है। ये असुविधाएँ ऐसी हैं जिनके लिए अब उसे दया आती है, भले ही वह उन्हें समझना न चाहे। और जब

दूसरी औरतें इन कष्टों को सहेंगी, तब भी उसे दया आएगी। सेंट-लूप की प्रेमिका ने—जैसा कि मध्य युग के पहले भिक्षुओं ने ईसाई धर्म को सिखाया था—उसे जानवरों के प्रति दयालु होना सिखाया था, जिनसे उसे बहुत लगाव था। वह अपने कुत्ते, कैनरी और लवबर्ड्स के बिना कभी बाहर नहीं निकलती थी। सेंट-लूप उनकी देखभाल माँ जैसी ममता से करता था और उन लोगों को जानवर समझता था जो मूक प्राणियों के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। दूसरी ओर, एक अभिनेत्री, या तथाकथित अभिनेत्री, जैसे कि यह जो उसके साथ रह रही थी—चाहे वह बुद्धिमान थी या नहीं, और इस बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी—ने उसे फैशनेबल महिलाओं की संगति उबाऊ लगने और पार्टी में जाना एक कष्टदायक कर्तव्य समझने पर मजबूर करके, उसे घमंड से बचाया और उसकी तुच्छता को दूर किया। यदि उसकी बदौलत उसके युवा प्रेमी के जीवन में सामाजिक कार्यक्रमों का महत्व कम हो गया था, वहीं दूसरी ओर, यदि वह केवल ड्राइंग रूम में रहने वाला व्यक्ति होता, तो घमंड या स्वार्थ उसके मित्रों के चयन को निर्धारित करता और उनके प्रति उसका व्यवहार असभ्य होता, उसकी प्रेमिका ने उसे अपनी मित्रता में गरिमा और परिष्कार लाना सिखाया था। अपनी नारीवादी सहज प्रवृत्ति से, पुरुषों में संवेदनशीलता के कुछ गुणों की गहरी समझ से, जिन्हें शायद उसका प्रेमी उसके मार्गदर्शन के बिना गलत समझ लेता और उनका मजाक उड़ाता, वह हमेशा सेंट-लूप के बाकी दोस्तों में से उस व्यक्ति को तुरंत पहचान लेती थी जिसे उससे सच्चा स्नेह था, और उसे अपना प्रिय बना लेती थी। वह जानती थी कि उसे ऐसे मित्र के प्रति कृतज्ञ कैसे महसूस कराया जाए, उसकी कृतज्ञता कैसे प्रकट की जाए, और यह कैसे समझा जाए कि किन चीजों से उसके मित्र को सुख मिलता है और किनसे दुख। और जल्द ही, सेंट-लूप को अब उसकी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं रही, वह

स्वयं ही इन सब बातों के बारे में सोचने लगा, और बालबेक में, जहाँ वह उसके साथ नहीं थी, मेरे लिए, जिसे उसने कभी नहीं देखा था, जिसका शायद उसने अपने पत्रों में अभी तक उल्लेख भी नहीं किया था, वह अपनी मर्जी से उस गाड़ी की खिड़की खोल देता जिसमें मैं बैठी होती, कमरे से वे फूल निकाल लेता जिनसे मुझे अस्वस्थता महसूस होती थी, और जब उसे एक साथ कई लोगों को अलविदा कहना होता, तो वह जाने के समय से पहले ही ऐसा कर लेता, ताकि वह मेरे साथ अकेला रह सके और मेरे साथ अंतिम समय बिता सके, ताकि वह उनमें और मुझमें अंतर कर सके, मुझे बाकियों से अलग व्यवहार कर सके। उसकी प्रेमिका ने उसके मन को अदृश्य के प्रति खोल दिया था, उसके जीवन में गंभीरता का तत्व ला दिया था, उसके हृदय में कोमलता भर दी थी, लेकिन यह सब उसके दुखी परिवार की समझ से परे था, जो बार-बार कहता था: "वह प्राणी उसकी मृत्यु का कारण बनेगी; इस बीच वह उसे बदनाम करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।" यह सच है कि वह उससे वह सब कुछ हासिल करने में सफल हो गया था जो वह उसके लिए कर सकती थी; और अब वह उसे केवल निरंतर पीड़ा दे रही थी, क्योंकि वह उससे तीव्र घृणा करती थी और हर संभव तरीके से उसे सताती थी। एक दिन, उसने उसे मूर्ख और बेतुका समझना शुरू कर दिया, क्योंकि उसके युवा लेखकों और अभिनेताओं में से उसके मित्रों ने उसे यही बताया था, और उसने उनकी कही बातों को उसी जोश और संकोच के साथ दोहराया, जो हम तब दिखाते हैं जब हम बाहर से कुछ सुनते हैं और उन विचारों या रीति-रिवाजों को अपना लेते हैं जिनके बारे में हमें पहले कुछ भी पता नहीं होता। उसने अपने अभिनेता मित्रों की तरह ही सहजता से स्वीकार किया कि सेंट-लूप और उसके बीच एक गहरी खाई है, जिसे पार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे अलग-अलग नस्लों के थे, क्योंकि वह एक बुद्धिजीवी

थी और वह, चाहे वह कितना भी दावा करे, बुद्धि का जन्मजात शत्रु था। उसके प्रति उसका यह दृष्टिकोण उसे गहरा लगा, और उसने अपने प्रेमी के सबसे तुच्छ शब्दों, सबसे मामूली कार्यों में इसकी पुष्टि खोजने की कोशिश की। लेकिन जब उन्हीं दोस्तों ने उसे और भी यकीन दिलाया कि वह ऐसे लोगों के साथ रहकर अपनी उन बड़ी उम्मीदों को तोड़ रही है जो उसने, उनके कहे अनुसार, अपने प्रेमी के साथ रहकर उस पर अपनी छाप छोड़ने की उम्मीदों को जगाया था, और उसके साथ रहकर वह एक कलाकार के रूप में अपने भविष्य को बर्बाद कर रही है; तो सेंट-लूप के प्रति उसकी घृणा में वही नफरत जुड़ गई जो उसे तब होती जब वह उसे किसी घातक कीटाणु से संक्रमित करने पर जोर देता। वह उससे जितना हो सके कम मिलती थी, और साथ ही साथ उससे पूरी तरह अलग होने के पल को टालती रहती थी, जो मुझे एक बहुत ही असंभव घटना लगती थी। सेंट-लूप ने उसके लिए इतने बलिदान दिए थे कि जब तक वह बेहद खूबसूरत न हो (लेकिन उसने हमेशा मुझे उसकी तस्वीर दिखाने से इनकार कर दिया था, यह कहते हुए: "एक तो वह खूबसूरत नहीं है, और दूसरी बात, उसकी तस्वीरें हमेशा खराब आती हैं। ये तो बस कुछ तस्वीरें हैं जो मैंने खुद अपने कैमरे से ली हैं; इनसे आपको उसकी गलत छवि मिलेगी।"), उसके लिए ऐसा दूसरा आदमी मिलना निश्चित रूप से मुश्किल होगा जो इस तरह के किसी भी रिश्ते के लिए राजी हो। मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि नाम कमाने की एक खास सनक, भले ही किसी में कोई प्रतिभा न हो, और उन लोगों की प्रशंसा, जो किसी पर हावी होने की कोशिश कर रहे हों, (हालांकि शायद सेंट-लूप की प्रेमिका के मामले में ऐसा नहीं था), एक छोटी वेश्या के लिए भी, पैसा कमाने के सुख से कहीं अधिक निर्णायक प्रेरणा हो सकती है। सेंट-लूप, जो अपनी प्रेमिका के मन में चल रही बातों को पूरी तरह से समझ नहीं पा रहा था, न तो उसके अनुचित

आरोपों में और न ही उसके अमर प्रेम के वादों में पूरी तरह से ईमानदार था, फिर भी कुछ क्षणों में उसे यह आभास होता था कि जब भी मौका मिलेगा वह उससे संबंध तोड़ लेगी। इसी के अनुरूप, निस्संदेह आत्मरक्षा की प्रवृत्ति से प्रेरित होकर, जो उसके प्रेम का एक हिस्सा थी - एक ऐसा प्रेम जो संभवतः सेंट-लूप से भी अधिक दूरदर्शी था - और साथ ही व्यवसाय के लिए उसकी व्यावहारिक क्षमता का उपयोग करते हुए, जो उसके हृदय की सबसे ऊँची और अंधी उड़ान के अनुकूल थी - उसने उसे कोई पूंजी देने से इनकार कर दिया था, एक बहुत बड़ी राशि उधार ली थी ताकि उसे किसी चीज की कमी न हो, और उसे केवल प्रतिदिन के हिसाब से ही भुगतान करता था। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि, अगर वह सचमुच उसे छोड़ने के बारे में सोच रही थी, तो वह शांति से तब तक इंतजार कर रही थी जब तक कि वह अपना घर बसा न ले, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें सेंट-लूप द्वारा दिए गए पैसे से शायद बहुत समय नहीं लगेगा, लेकिन फिर भी इसमें कुछ समय लगेगा जो मेरे नए दोस्त की खुशी - या उसके दुख - को बढ़ाने के लिए देना ही होगा।

उनके संबंधों का यह नाटकीय दौर, जो अब अपने सबसे तीव्र चरण पर पहुँच चुका था, सेंट-लूप के लिए सबसे क्रूर, क्योंकि उसने उसे पेरिस में रहने से मना कर दिया था, जहाँ उसकी उपस्थिति उसे चिढ़ाती थी, और उसे अपनी छुट्टी बालबेक में बिताने के लिए मजबूर कर दिया था, जो उसकी रेजिमेंट के आसानी से पहुँच में था—एक शाम सेंट-लूप की एक चाची के घर पर शुरू हुआ, जिसे उसने अपने दोस्त को वहाँ आने की अनुमति देने के लिए राजी कर लिया था, एक बड़े समूह के सामने, एक प्रतीकात्मक नाटक के कुछ भाषणों का पाठ करने के लिए जिसमें वह एक बार एक 'उन्नत' थिएटर में दिखाई दी थी, और जिसके लिए उसने उसे उस प्रशंसा में भागीदार बनाया था जो वह स्वयं व्यक्त करती थी।

लेकिन जब वह हाथ में एक बड़ा सा लिली का फूल लिए और एन्सिला डोमिनी की नकल की हुई पोशाक पहने कमरे में दाखिल हुई, जिसे उसने सेंट-लूप को यह कहकर आश्वस्त किया था कि वह सौंदर्य की एक पूर्ण मिसाल है, तो क्लब के सदस्यों और डचेस की उस सभा में उसके प्रवेश का स्वागत मुस्कानों से हुआ, लेकिन उसके गायन की नीरसता, कुछ शब्दों की विचित्रता और उनके बार-बार दोहराए जाने ने हंसी के ठहाकों में बदल दिया, जो पहले तो दबी हुई थी, लेकिन जल्द ही इतनी बेकाबू हो गई कि बेचारी गायिका आगे नहीं गा सकी। अगले दिन सेंट-लूप की चाची की इस बात के लिए सर्वत्र निंदा की गई कि उन्होंने इतनी भद्दी अभिनेत्री को अपने ड्राइंग रूम में आने की अनुमति क्यों दी। एक प्रसिद्ध ड्यूक ने उन्हें साफ-साफ कह दिया कि अगर उनकी आलोचना होती है तो इसके लिए वे स्वयं ही जिम्मेदार हैं। "धिक्कार है, लोग सचमुच ऐसे करतब देखने नहीं आते! अगर उस औरत में प्रतिभा होती, तो भी ठीक था; लेकिन उसमें न तो कोई प्रतिभा है और न कभी होगी। कसम से, पेरिस उतना मूर्ख नहीं है जितना लोग समझते हैं। समाज में सिर्फ मूर्ख ही नहीं होते। इस छोटी सी लड़की को शायद लगा था कि वह पेरिस को चौंका देगी। लेकिन पेरिस इतना आसानी से हैरान नहीं होता, और कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें वे हमें मनवा नहीं सकते।"

जहां तक अभिनेत्री की बात है, वह सेंट-लूप के साथ घर से यह कहते हुए निकली: "उन बेवकूफों, उन अनपढ़ औरतों, उन गंदे आवारा लड़कों के लिए मुझे अंदर आने देने का क्या मतलब है? मैं आपको बता दूं, कमरे में ऐसा कोई आदमी नहीं था जिसने मुझे घूरा न हो या मेरा पैर न दबाया हो, और यह इसलिए था क्योंकि मैंने उनकी तरफ नहीं देखा, इसलिए वे मुझसे बदला लेने के लिए निकले थे।"

वे शब्द जिन्होंने समाज के लोगों के प्रति रॉबर्ट की घृणा को एक गहरे

और कष्टदायक भय में बदल दिया था, और जो उसे सबसे अधिक उन लोगों के कारण भड़काया था जो इसके सबसे कम पात्र थे - उसके समर्पित रिश्तेदार जिन्होंने परिवार की ओर से सेंट-लूप की पत्नी को उससे संबंध तोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की थी, जिसे उसने उसके सामने उनके प्रेम से प्रेरित कदम बताया था। हालाँकि रॉबर्ट ने उनसे मिलना बंद कर दिया था, लेकिन जब वह अपनी प्रेमिका से अलग होता था, जैसा कि अब था, तो वह कल्पना करता था कि वे या उनके जैसे अन्य लोग उसकी अनुपस्थिति का फायदा उठाकर उसके पास वापस आ रहे हैं और संभवतः उस पर हावी हो गए हैं। और जब वह उन कामुक लोगों के बारे में बात करता था जो अपने दोस्तों के प्रति बेवफा थे, जो अपने दोस्तों की पत्नियों को बहकाने की कोशिश करते थे, उन्हें गुप्तचरों के घरों में लाने का प्रयास करते थे, तो उसका पूरा चेहरा पीड़ा और घृणा से चमक उठता था।

"मैं उन्हें मारने में उतना ही कम संकोच करूँगा जितना कि एक कुत्ते को मारने में, जो कम से कम एक सभ्य, वफादार और निष्ठावान जानवर तो है। अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि कुछ लोग गिलोटिन के लायक हैं, उन बेचारे लोगों से कहीं ज़्यादा जो गरीबी और अमीरों की क्रूरता के कारण अपराध करने पर मजबूर हो गए हैं।"

वह अपना अधिकांश समय अपनी प्रेमिका को पत्र और टेलीग्राम भेजने में व्यतीत करता था। जब भी वह उसे पेरिस लौटने से रोकते हुए, डाक द्वारा उससे झगड़ा करने का कोई बहाना ढूंढती, तो मैं उसकी स्पष्ट बेचैनी से यह खबर तुरंत समझ जाता था। चूंकि उसकी प्रेमिका ने उसे कभी नहीं बताया कि उसे उसमें क्या दोष नज़र आता है, और उसे संदेह था कि शायद अगर वह उसे नहीं बता रही है तो इसका कारण यह है कि वह खुद नहीं जानती और बस उससे तंग आ चुकी है, फिर भी वह स्पष्टीकरण

चाहता होगा और उसे लिखा करता था: "मुझे बताओ मैंने क्या गलती की है। मैं अपनी गलती स्वीकार करने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ।" उस पर हावी दुख का प्रभाव उसे यह विश्वास दिलाने में होता था कि उसने बुरा व्यवहार किया है।

लेकिन वह उसे अपने जवाबों के लिए अनिश्चित काल तक इंतज़ार करवाती रही, और जब जवाब आते भी थे तो वे अर्थहीन होते थे। इसलिए मैं सेंट-लूप को अक्सर डाकघर से लौटते हुए देखता था, जहाँ वह और फ्रांस्वा होटल में अकेले ही चिट्ठियाँ लेने या देने जाते थे, वह प्रेमी की बेसब्री से, और वह नौकर के अविश्वास से। (उनके टेलीग्राम भेजने के लिए उन्हें काफी लंबा सफर तय करना पड़ता था।)

ब्लोच परिवार के साथ रात्रिभोज के कुछ दिनों बाद, जब मेरी दादी ने मुझे प्रसन्नतापूर्वक बताया कि सेंट-लूप ने उनसे पूछा था कि क्या बालबेक छोड़ने से पहले वह उनकी एक तस्वीर लेना चाहेंगी, और जब मैंने देखा कि उन्होंने जानबूझकर अपनी सबसे सुंदर पोशाक पहनी थी और अपनी कई बेहतरीन टोपियों के बीच दुविधा में थीं, तो मुझे उनकी इस बचकानी हरकत पर थोड़ी झुंझलाहट हुई, जो मुझे उनसे सुनकर आश्चर्य हुआ। मैंने तो यहाँ तक सोच लिया कि क्या मैंने अपनी दादी को समझने में कोई गलती तो नहीं की, क्या मैं उनका ज़रूरत से ज़्यादा सम्मान तो नहीं करती, क्या वह अपने पहनावे के प्रति उतनी ही लापरवाह तो नहीं थीं जितना मैंने हमेशा सोचा था, क्या उनमें वास्तव में वही कमजोरी तो नहीं थी जो मुझे उनके स्वभाव के लिए सबसे पराई लगती थी, यानी नखरे।

दुर्भाग्यवश, फोटो खिंचवाने की संभावना से मुझे जो असंतोष हुआ, और विशेष रूप से मेरी दादी जिस संतुष्टि के साथ इसका इंतजार कर रही थीं, उससे जो असंतोष हुआ, उसे मैंने इस कदर स्पष्ट कर दिया कि फ्रांस्वा ने इसे देख लिया और अनजाने में ही इसे और बढ़ाने की पूरी कोशिश की,

जब उसने मुझे एक भावुक, अतिउत्साहपूर्ण भाषण दिया, जिससे मैं विचलित होने से इनकार करता रहा।

"ओह, स्वामी जी; मेरी बेचारी मैडम अपनी तस्वीर खिंचवाकर बहुत खुश होंगी, वह वही टोपी पहनने वाली हैं जिसे उनकी बूढ़ी फ्रांस्वा ने उनके लिए सजाया है, स्वामी जी, आपको उन्हें इसकी अनुमति देनी होगी।"

मुझे यह विश्वास हो गया कि फ्रांस्वा की संवेदनशीलता पर हंसना क्रूरता नहीं थी, क्योंकि मैंने खुद को याद दिलाया कि मेरी माँ और दादी, जो हर चीज में मेरी आदर्श थीं, अक्सर ऐसा ही करती थीं। लेकिन मेरी दादी ने देखा कि मैं नाराज़ लग रही थी, तो उन्होंने कहा कि अगर उनकी तस्वीर खिंचवाने की यह योजना मुझे किसी भी तरह से बुरी लगी तो वह इसे छोड़ देंगी। मैंने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया; मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मुझे इसमें कोई बुराई नहीं दिखती, और उन्हें खुद को सजाने-संवारने दिया, लेकिन यह सोचकर कि मैंने अपनी दूरदर्शिता और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया है, मैंने व्यंग्य के कुछ चुभने वाले शब्द जोड़ दिए, जिनका उद्देश्य तस्वीर खिंचवाने में उन्हें मिल रही खुशी को बेअसर करना था, ताकि अगर मुझे मेरी दादी की शानदार टोपी देखनी ही पड़े, तो कम से कम मैं उनके चेहरे से उस आनंदमय भाव को मिटाने में सफल हो जाऊं, जिसे देखकर मुझे खुशी होनी चाहिए थी; लेकिन अफसोस, अक्सर ऐसा होता है कि जब हमारे सबसे प्रिय लोग जीवित होते हैं, तो ऐसी अभिव्यक्तियाँ हमें किसी तुच्छ कल्पना की निराशाजनक अभिव्यक्ति लगती हैं, न कि उस अनमोल खुशी का रूप जो हम उनके लिए पाना चाहते हैं। मेरा खराब मूड विशेष रूप से इस बात से उपजा कि पिछले सप्ताह मेरी दादी मुझसे दूर रहने लगी थीं, और मैं रात-दिन एक पल भी उनके साथ अकेले नहीं रह पाई थी। जब मैं दोपहर में उनके साथ कुछ देर अकेले रहने के लिए लौटी, तो मुझे बताया गया कि वह होटल में नहीं हैं;

या फिर वह फ्रांस्वा के साथ अंतहीन बातें करने के लिए कमरे में बंद हो जातीं, जिनमें मुझे दखल देने की अनुमति नहीं थी। और जब सेंट-लूप के साथ पूरी शाम बाहर बिताने के बाद, मैं घर लौटते समय उस पल के बारे में सोच रही थी जब मैं अपनी दादी के पास जाकर उन्हें चूम सकूँ, तो व्यर्थ ही मैं उनके हमारे बीच के पर्दे पर दस्तक देने का इंतजार करती रही, जो मुझे अंदर जाकर उन्हें शुभ रात्रि कहने का संकेत देती; मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया; अंततः मैं बिस्तर पर चली जाती, उसके प्रति थोड़ा नाराज़ होती क्योंकि उसने अपनी उस नई और अजीब उदासीनता से मुझे उस खुशी से वंचित कर दिया था जिस पर मैं बहुत भरोसा करती थी। मैं कुछ देर तक चुपचाप लेटी रहती, मेरा दिल बचपन की तरह धड़कता रहता, दीवार की खामोशी सुनती रहती, जब तक कि रोते-रोते मुझे नींद नहीं आ जाती।

समुद्र का दृश्य, लड़कियों की आकृति वाली पट्टी के साथ

उस दिन, और पिछले कुछ दिनों की तरह, सेंट-लूप को डोनसिएरेस जाना पड़ा था, जहाँ छुट्टी समाप्त होने तक उन्हें हर दोपहर देर तक ड्यूटी करनी पड़ती थी। मुझे दुख था कि वे बालबेक में नहीं थे। मैंने कुछ युवतियों को गाड़ियों से उतरते और कैसिनो के बॉलरूम में जाते देखा, तो कुछ को आइसक्रीम की दुकान में। दूर से देखने पर वे युवतियाँ मुझे बहुत सुंदर लगती थीं। मैं जवानी के उन दौरों में से एक से गुज़र रहा था, जब कोई निश्चित प्रेम नहीं होता, मन खाली होता है, और हर समय और हर जगह

—जैसे कोई प्रेमी किसी स्त्री के आकर्षण में खो जाता है—हम सुंदरता की चाह रखते हैं, उसे खोजते हैं, उसे देखते हैं। किसी स्त्री की दूर से या पीछे से देखी गई कोई एक वास्तविक विशेषता—वह थोड़ी सी झलक जो हमें उसकी सुंदरता का प्रतिबिंब दिखाती है—हमें ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमने उसे पहले भी देखा हो, हमारा दिल ज़ोर से धड़कने लगता है, हम उसकी तलाश में दौड़ पड़ते हैं, और हमेशा इस बात पर आधे-अधूरे यकीन के साथ तल्लीन रहते हैं कि वह वही स्त्री थी, बशर्ते कि वह स्त्री गायब हो गई हो: हमें अपनी गलती का एहसास तभी होता है जब हम उसे पकड़ने में कामयाब हो जाते हैं।

इसके अलावा, जैसे-जैसे मैं अधिकाधिक कमज़ोर होता गया, वैसे-वैसे साधारण सुखों को भी ज़रूरत से ज़्यादा महत्व देने लगा, क्योंकि उन्हें पाने में कई कठिनाइयाँ आने लगी थीं। मुझे चारों ओर आकर्षक महिलाएँ ही दिखाई देती थीं, क्योंकि मैं समुद्र तट पर बहुत थका हुआ होता था, और कैसीनो या किसी पेस्ट्री की दुकान पर बहुत शर्मीला होता था, इसलिए उनके पास जाने की हिम्मत नहीं होती थी। फिर भी, अगर मेरी मृत्यु निकट ही होती, तो मैं सबसे पहले जीवन की सबसे सुंदर लड़कियों को करीब से, असलियत में देखना चाहता, भले ही यह अवसर मुझे न मिलता या कोई और न ही उसका लाभ उठाता। (वास्तव में, मैं अपनी जिज्ञासा के पीछे छिपी अधिकार की लालसा को नहीं समझता था।) अगर सेंट-लूप मेरे साथ होता, तो मुझमें डांस फ्लोर में प्रवेश करने का साहस होता। मैं अकेला रह गया था और ग्रैंड होटल के सामने यूँ ही घूम रहा था, जब तक कि मेरी दादी के पास जाने का समय नहीं हो गया। तभी, पक्की सड़क के लगभग आखिरी छोर पर, जहाँ वे रंग के एक बेमेल धब्बे की तरह दिख रही थीं, मैंने पाँच-छह युवतियों को अपनी ओर आते देखा। वे दिखने और व्यवहार में बालबेक में आमतौर पर दिखने वाले

सभी लोगों से बिल्कुल अलग थीं। ऐसा लग रहा था मानो वे कहीं से वहाँ आ गई हों। फिर अचानक, समुद्री पक्षियों का एक झुंड रेत पर सधे कदमों से चलने लगा - धीमी गति से चलने वाली लड़कियाँ बाकियों को पीछे छोड़ते हुए अपने पंखों का इस्तेमाल कर रही थीं - इस गतिविधि का उद्देश्य उन इंसानों के लिए उतना ही अस्पष्ट प्रतीत होता है, जिन्हें वे देख नहीं पा रही थीं, जितना कि उनके अपने पक्षी जैसे दिमाग में स्पष्ट रूप से निर्धारित था।

इन अजनबियों में से एक हाथ से अपनी साइकिल को धकेलते हुए आ रही थी; दो अन्य गोल्फ क्लब लिए हुए थीं; और उनकी पोशाक आम तौर पर बालबेक की अन्य लड़कियों की पोशाक से अलग थी, जिनमें से कुछ, यह सच था, खेलों में भाग लेती थीं, लेकिन कोई विशेष पोशाक नहीं अपनाती थीं।

यह वह समय था जब महिलाएं और पुरुष प्रतिदिन 'मुखपृष्ठ' पर अपनी बारी लेने के लिए बाहर आते थे, उन पर टंगी लंबी-लंबी दूरबीनों की निर्मम रोशनी में, मानो उनमें से प्रत्येक ने कोई ऐसी विकृति सहन कर ली हो जिसे मुख्य मजिस्ट्रेट की पत्नी, जो गर्व से बैंड-स्टैंड की ओर पीठ करके बैठी थी, कुर्सियों की उस भयानक कतार के बीच में, जहाँ कुछ ही देर में वे भी, अभिनेता से आलोचक बने लोग, आकर बैठेंगे और अपनी बारी में उन अन्य लोगों की जांच करेंगे जो तब उनके सामने से गुजर रहे होंगे। ये सभी लोग जो 'सामने' की ओर इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे, मानो किसी जहाज़ का डेक हो (क्योंकि वे एक पैर भी बिना हाथ हिलाए, सिर और आँखें घुमाए, कंधे हिलाए, एक तरफ संतुलन बनाकर दूसरी तरफ की गई हरकत की भरपाई करते हुए और चेहरे फुलाए बिना नहीं रह सकते थे), और जो अनदेखा करने का नाटक कर रहे थे ताकि लगे कि उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है, लेकिन चुपके से देख रहे थे, क्योंकि उन्हें

अपने बगल से चल रहे या अपनी ओर आ रहे लोगों से टकराने का डर था, फिर भी वे उनसे टकरा जाते थे, उनमें उलझ जाते थे, क्योंकि हर कोई एक ही गुप्त ध्यान का शिकार था जो उसी स्पष्ट तिरस्कार के नीचे छिपा था; भीड़ के प्रति उनका प्रेम—और परिणामस्वरूप उनका भय—सभी मनुष्यों में सबसे शक्तिशाली प्रेरणाओं में से एक है, चाहे वे दूसरों को प्रसन्न करना चाहें, उन्हें आश्चर्यचकित करना चाहें, या उन्हें यह दिखाना चाहें कि वे उनसे घृणा करते हैं। एकांतप्रिय व्यक्ति के मामले में, उसका एकांत, भले ही वह पूर्ण हो और केवल जीवन के साथ ही समाप्त हो, अक्सर भीड़ के प्रति एक अव्यवस्थित प्रेम से प्रेरित होता है, जो अन्य सभी भावनाओं पर इतना हावी हो जाता है कि जब वह बाहर जाता है, तो अपने हॉल-पोर्टर, राहगीरों, या जिस कैब ड्राइवर को वह बुलाता है, उनकी प्रशंसा प्राप्त करने में असमर्थ होने के कारण, वह उनके द्वारा देखे जाने से पूरी तरह बचना पसंद करता है, और इस उद्देश्य से वह हर उस गतिविधि को त्याग देता है जो उसे घर से बाहर जाने के लिए बाध्य करती है।

इन सभी लोगों के बीच, जिनमें से कुछ किसी विचार में मग्न थे, लेकिन यदि ऐसा था भी तो उनकी अस्थिरता उनके अटपटे हाव-भाव और इधर-उधर भटकती निगाहों से ज़ाहिर हो रही थी, जो उनके पड़ोसियों की सतर्क तुतलाहट से बिल्कुल मेल नहीं खा रही थी, वे लड़कियाँ जिन्हें मैंने देखा था, अपने अंगों पर उस पूर्ण नियंत्रण के साथ जो परिपूर्ण शारीरिक स्थिति और बाकी मानवता के प्रति सच्चे तिरस्कार से आता है, बिना किसी झिझक या अकड़न के सीधे आगे बढ़ रही थीं, ठीक वही हरकतें कर रही थीं जो वे करना चाहती थीं, उनके शरीर का प्रत्येक अंग बाकी सभी अंगों से पूरी तरह स्वतंत्र था, उनके शरीर का अधिकांश भाग उस स्थिरता को बनाए हुए था जो एक कुशल वाल्ट्ज़र में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे अब मेरे बिल्कुल करीब थीं। यद्यपि प्रत्येक एक दूसरे से

बिल्कुल अलग थी, फिर भी वे सभी सुंदर थीं; लेकिन सच कहूँ तो मैंने उन्हें बहुत कम समय के लिए देखा था, और उनके चेहरे पर सीधे देखने का साहस भी नहीं किया था, इसलिए मैं उनमें से किसी को भी अभी तक अलग-अलग नहीं पहचान पाया था। एक को छोड़कर, जिसकी सीधी नाक और सांवला रंग बाकियों से अलग दिखता था, मानो (पुनर्जागरण काल के एपिफेनी के चित्र में) कोई अरब मूल का राजा हो, बाकी सभी को मैं केवल एक को उसकी कठोर, स्थिर और उपहास भरी आँखों से; दूसरी को उसके गालों से पहचानता था, जिनमें गुलाबी रंग में तांबे जैसी आभा थी जो गेरानियम के फूलों की याद दिलाती थी; और इन विशेषताओं के आधार पर भी मैं अभी तक किसी एक को दूसरी से अलग नहीं मान पाया था। और जब (जिस क्रम में उनकी श्रृंखला मेरी नज़र में आई, वह अद्भुत था क्योंकि सबसे अलग-अलग पहलू एक के बाद एक सामने आए, क्योंकि उसमें रंगों के सभी पैमाने समाहित थे, लेकिन संगीत के एक टुकड़े की तरह उलझा हुआ था जिसमें मैं उनके गुजरने के क्षण में क्रमिक वाक्यांशों को अलग और पहचान नहीं कर पाता, पहचानते ही भूल जाता) मैंने एक पीला अंडाकार आकृति उभरती देखी, काली आँखें, हरी आँखें, मुझे नहीं पता था कि ये वही थीं जिन्होंने मुझे कुछ क्षण पहले मोहित कर लिया था, मैं उन्हें किसी एक लड़की से नहीं जोड़ सका जिसे मैं बाकी से अलग करके पहचान सकूँ। और मेरी दृष्टि में, उनके बीच जो सीमांकन मैं अभी स्थापित कर सकता था, उसकी इस कमी ने समूह पर सामंजस्य की एक लहर, एक सौंदर्य तरल का निरंतर संचार, सामूहिक और गतिशील प्रवाह को जन्म दिया।

शायद हमारे इस जीवन में यह महज संयोग नहीं था कि मित्रों के इस समूह का चयन करते समय उन सभी का इतना सुंदर होना; शायद ये लड़कियाँ (जिनका रवैया ही उनके स्वभाव को प्रकट करने के लिए काफी

था - साहसी, चंचल और कठोर), हर हास्यास्पद या कुरूप चीज़ के प्रति अत्यंत संवेदनशील, बौद्धिक या नैतिक आकर्षण के आगे न झुकने में असमर्थ, अपनी हमउम्र साथियों के बीच स्वाभाविक रूप से उन सभी से विमुख हो गई थीं जिनमें एक गंभीर या संवेदनशील स्वभाव शर्म, अनाड़ीपन, संकोच, या उन चीजों से प्रकट होता था जो उन्हें 'पसंद नहीं' थीं, और ऐसे लोगों से वे दूरी बनाए रखती थीं; जबकि दूसरी ओर, वे उन लोगों से जुड़ जाती थीं जो शालीनता, कोमलता और शारीरिक स्वच्छता के एक विशेष मिश्रण से आकर्षित होते थे, यही एकमात्र रूप था जिसमें वे एक मोहक चरित्र की स्पष्टता और एक-दूसरे की संगति में सुखद क्षणों के वादे की कल्पना कर पाती थीं। शायद, जिस वर्ग से वे संबंधित थे, एक ऐसा वर्ग जिसे परिभाषित करना मेरे लिए आसान नहीं होता, वह अपने विकास के उस चरण में था, जहाँ बढ़ती हुई संपत्ति और फुर्सत के कारण, या नई खेलकूद की आदतों के कारण, अब कुछ आम लोगों तक भी पहुँच गई थी, और शारीरिक संस्कृति की एक ऐसी आदत जिसमें अभी तक बौद्धिक संस्कृति शामिल नहीं हुई थी, एक ऐसा सामाजिक वातावरण, जो मूर्तिकला के उन निपुण और फलदायी स्कूलों के समान था, जिन्होंने अभी तक जटिल भावों को नहीं अपनाया था, स्वाभाविक रूप से और प्रचुर मात्रा में सुंदर शरीर, सुंदर टांगें, सुडौल कूल्हे, स्वस्थ और शांत चेहरे, चपलता और धूर्तता का भाव पैदा करता था। और क्या वे मानव सौंदर्य के महान और शांत आदर्श नहीं थे जिन्हें मैंने वहाँ समुद्र के किनारे देखा, मानो किसी यूनानी तट पर सूर्य की रोशनी में रखी मूर्तियाँ हों?

मानो, उनके समूह के मध्य में, जो एक चमकदार धूमकेतु की तरह 'अग्रणी' रूप से आगे बढ़ रहा था, उन्होंने यह तय कर लिया हो कि आसपास की भीड़ किसी दूसरी जाति के प्राणियों से बनी है, जिनके दुख भी उनमें भाईचारे की भावना नहीं जगा सकते। वे उन्हें अनदेखा करते हुए

प्रतीत हुए, और जो लोग उनसे बात करने के लिए रुके थे, उन्हें किनारे हटने के लिए मजबूर किया, मानो किसी मशीन के रास्ते से हट रहे हों जो अपने आप चलने लगी हो, ताकि उसके हटने का इंतज़ार करना व्यर्थ हो। उनकी चेतना का सबसे बड़ा संकेत तब मिलता था जब कोई बूढ़ा सज्जन, जिसके अस्तित्व को वे स्वीकार नहीं करते थे और जिससे वे संपर्क तोड़ देते थे, भयभीत या क्रोधित होकर, लेकिन बेतहाशा या हास्यास्पद ढंग से भाग जाता था, तो वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते थे। उनके समूह के बाहर के किसी भी व्यक्ति के लिए उनमें तिरस्कार का कोई दिखावा नहीं था; उनका वास्तविक तिरस्कार ही काफी था। लेकिन वे किसी भी बाधा को देखे बिना उसे पार करने का प्रयास किए बिना नहीं रह सकते थे, चाहे दौड़कर कूदकर या दोनों पैरों को एक साथ मिलाकर, क्योंकि वे सभी उस युवावस्था से लबालब भरे हुए थे, जिसे हम इतनी शिद्दत से खर्च करना चाहते हैं कि दुखी या अस्वस्थ होने पर भी, दिन के मिजाज की बजाय अपनी उम्र की ज़रूरतों के प्रति अधिक आज्ञाकारी होकर, हम किसी भी ऐसी चीज़ को पार नहीं कर सकते जिस पर से कूदा जा सके या फिसला जा सके, बिना खुद को पूरी तरह से आनंदित किए, अपनी धीमी प्रगति को बाधित किए, बीच-बीच में—जैसा कि चोपिन ने अपने सबसे उदास वाक्यांश में कहा है—मनमोहक मोड़ों के साथ जिसमें सनक और निपुणता का मिश्रण होता है। एक बुजुर्ग बैंकर की पत्नी ने अपने पति के लिए विभिन्न संभावित प्रदर्शन विकल्पों पर विचार करने के बाद, उन्हें एक तह कुर्सी पर बिठा दिया, जो 'सामने' की ओर थी, और बैंड स्टैंड द्वारा हवा और धूप से सुरक्षित थी। उसे वहाँ आराम से बैठा देखकर, वह एक अखबार खरीदने गई थी जिसे वह उसे पढ़कर सुनाएगी, ताकि उसका ध्यान बँट जाए—यह उसकी छोटी-छोटी अनुपस्थितियों में से एक थी जिसे वह कभी पाँच मिनट से अधिक नहीं बढ़ाती थी, जो उसे पर्याप्त

लगता था, लेकिन वह इसे बार-बार दोहराती थी ताकि इस बूढ़े पति को, जिस पर वह अपना स्नेह बरसाती थी जिसे वह छुपाने का पूरा ध्यान रखती थी, यह आभास हो कि वह अभी भी पूरी तरह से जीवित है और अन्य लोगों की तरह है और उसे किसी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है। बैंड स्टैंड का मंच, उसके सिर के ऊपर, एक प्राकृतिक और आकर्षक स्प्रिंगबोर्ड प्रदान करता था, जिस पर, बिना एक पल की भी झिझक के, छोटे समूह का सबसे बड़ा सदस्य दौड़ने लगा; वह डरे हुए बूढ़े आदमी के ऊपर से कूद गई, जिसकी नौका विहार टोपी उसके फुर्तीले पैरों से छू गई। बाकी लड़कियाँ, खासकर एक चुलबुले चेहरे वाली हरी आँखों वाली लड़की, बहुत खुश हुईं। उस लड़की के चेहरे पर उस साहसी कार्य के लिए प्रशंसा और उल्लास का भाव था, जिसमें मुझे थोड़ी सी झिझक, एक शर्मिंदगी भरी और दिखावटी झिझक दिखाई दी, जो बाकी लड़कियों में नहीं थी। "ओह, बेचारा बूढ़ा आदमी; उसे देखकर मुझे घिन आती है; वह आधा मरा हुआ लगता है," एक लड़की ने कर्कश आवाज में कहा, लेकिन सहानुभूति से ज्यादा व्यंग्य के साथ। वे थोड़ी दूर चलीं, फिर सड़क के बीच में एक पल के लिए रुक गईं, इस बात की परवाह किए बिना कि वे दूसरे लोगों के रास्ते में रुकावट डाल रही हैं या नहीं, और आपस में बातचीत करने लगीं। अनियमित आकार का एक ठोस समूह, सघन, असामान्य और तीखा, जैसे पक्षी उड़ने के समय जमीन पर इकट्ठा होते हैं; फिर वे समुद्र की पृष्ठभूमि में सड़क के किनारे अपनी इत्मीनान से सैर पर निकल पड़ीं।

इस समय तक उनके मनमोहक चेहरे अब अस्पष्ट और निर्जीव नहीं रह गए थे। मैंने उन्हें ताश के पत्तों की तरह कई ढेरों में बाँटकर (उनके नामों के अभाव में, जिनके बारे में मुझे अभी भी जानकारी नहीं थी) एक बड़ी वाली को चित्रित किया था जिसने बूढ़े बैंकर के ऊपर से छलांग लगाई

थी; एक छोटी वाली जो अपने गोल-मटोल और गुलाबी गालों, हरी आँखों के साथ समुद्र के क्षितिज के सामने खड़ी थी; एक सीधी नाक और सांवले रंग वाली, जो बाकी सभी से बिलकुल अलग थी; एक और, जिसका चेहरा अंडे की तरह सफेद था जिस पर एक छोटी सी नाक मुर्गी की चोंच की तरह एक वृत्त का चाप बनाती थी; एक और लड़की, जिसने हुड वाला केप पहन रखा था (जिससे वह इतनी गरीब दिख रही थी, और उसके नीचे की उसकी आकर्षक आकृति से इतनी विरोधाभासी थी कि जो व्याख्या सामने आई वह यह थी कि इस लड़की के माता-पिता उच्च पदस्थ होंगे जो बालबेक आने वाले आगंतुकों और अपने बच्चों की वेशभूषा की सुंदरता से कहीं अधिक अपने आत्मसम्मान को महत्व देते थे कि उनके लिए यह बिल्कुल भी मायने नहीं रखता था कि उनकी बेटी 'फ्रंट' पर ऐसे कपड़े पहनकर घूमे जिसे विनम्र लोग बहुत ही शालीन मानते); एक लड़की, जिसकी आँखें चमकीली और हँसमुख थीं, और गाल गोल-मटोल और फीके थे, उसने अपने चेहरे पर काली पोलो टोपी खींच रखी थी। वह अपनी कमर को इतने नाटकीय ढंग से हिलाते हुए साइकिल चला रही थी, और उसकी भाषा भी वैसी ही थी, जो गली-मोहल्ले की थी और इतनी ज़ोर से चिल्लाकर बोली जा रही थी कि जब मैं उसके पास से गुज़रा (हालाँकि उसके हाव-भाव में मुझे वह चिढ़ाने वाला वाक्य 'अपनी ज़िंदगी खुद जियो' भी सुनाई दिया), तो मैंने उसकी सहेली के हुड वाले केप से बने अनुमान को त्याग दिया और इसके बजाय यह निष्कर्ष निकाला कि ये सभी लड़कियाँ रेसिंग ट्रैक पर आने-जाने वाली आबादी की थीं, और पेशेवर साइकिल चालकों की किशोर रखैलें ही होंगी। किसी भी हालत में, मेरे किसी भी अनुमान में उनके सद्गुणी होने की कोई संभावना नहीं थी। पहली नज़र में ही—जिस तरह से वे एक-दूसरे को देख रही थीं और मुस्कुरा रही थीं, और फीके गालों वाली लड़की की लगातार घूरती नज़र

से—मैं समझ गया था कि वे सद्गुणी नहीं थीं। इसके अलावा, मेरी दादी हमेशा मुझ पर इतनी कोमलता से नज़र रखती थीं कि मैं यह मानने से खुद को रोक नहीं पाती थी कि जिन चीजों को नहीं करना चाहिए उनका कुल योग अविभाज्य है या जो लड़कियां अपने बड़ों का सम्मान नहीं करतीं, वे अचानक उस समय संकोच से रुक जाएंगी जब अस्सी साल के बुजुर्ग के ऊपर से कूदने से कहीं अधिक आकर्षक सुख दांव पर लगा होगा।

यद्यपि अब उन्हें अलग-अलग पहचाना जा सकता था, फिर भी उनकी आँखों में आत्मनिर्भरता और सौहार्द की भावना से भरी परस्पर प्रतिक्रिया थी, जिसमें हर पल उनकी आँखों में रुचि और उद्दंड उदासीनता झलकती थी, जब उनकी नज़र अपने किसी मित्र या राहगीर अजनबी पर पड़ती थी। इसके अलावा, एक-दूसरे को इतनी गहराई से जानने की चेतना कि वे हमेशा साथ-साथ चल सकें, उनके स्वतंत्र और अलग-अलग शरीरों के बीच एक 'अलग समूह' बना देती थी, जैसे-जैसे वे धीरे-धीरे आगे बढ़ते थे, एक अदृश्य लेकिन सामंजस्यपूर्ण बंधन, एक गर्म छाया की तरह, एक ऐसा वातावरण जो उन्हें एक संपूर्ण इकाई बनाता था, जो अपने भागों में उतना ही समरूप था जितना कि उस भीड़ से भिन्न था जिसके बीच से उनका जुलूस धीरे-धीरे गुजर रहा था।

एक पल के लिए, जब मैं साइकिल चला रही मोटे गालों वाली सांवली लड़की के पास से गुज़री, तो मेरी नज़र उसकी मुस्कुराती हुई, तिरछी नज़र पर पड़ी, जो उस अमानवीय दुनिया के केंद्र से आ रही थी जिसमें इस छोटे से कबीले का जीवन समाया हुआ था - एक दुर्गम, अज्ञात दुनिया जिसमें मेरे अस्तित्व का विचार कभी पहुँच ही नहीं सकता था और न ही उसमें कोई स्थान पा सकता था। अपने साथियों की बातों में पूरी तरह मग्न, पोलो टोपी पहने, जिसे उसने अपने माथे पर बहुत नीचे तक

खींच रखा था, क्या उसने मुझे उस क्षण देखा था जब उसकी आँखों से निकलती काली किरण मुझ पर पड़ी थी? किस ब्रह्मांड के हृदय में उसने मुझे पहचाना? यह कहना मेरे लिए उतना ही कठिन होता जितना कि किसी पड़ोसी ग्रह पर दूरबीन की मदद से कुछ विशेष चीज़ें दिखाई देने पर यह निष्कर्ष निकालना कठिन होता है कि वहाँ मनुष्य निवास करते हैं, कि वे हमें देख सकते हैं, या यह कहना कि हमें देखकर उनके मन में क्या विचार उत्पन्न हुए होंगे।

अगर हम यह सोचते कि उस जैसी लड़की की आँखें महज़ अभ्रक के दो चमकते हुए मोतियों जैसी हैं, तो हम उसे जानने और उसके साथ जीवन बिताने के लिए इतने उत्सुक नहीं होते। लेकिन हम महसूस करते हैं कि उन चमकती आँखों में जो चमक है, वह केवल उनकी भौतिक बनावट के कारण नहीं है; बल्कि यह, हमारी जानकारी के बिना, उन विचारों की गहरी छाया है जो वह प्राणी अपने परिचित लोगों और स्थानों के संदर्भ में संजो रही है—रेसकोर्स का मैदान, साइकिल ट्रैक की रेत, जिस पर खेतों और जंगलों से गुज़रते हुए, वह मुझे अपने पीछे खींच लाती, वह छोटी सी परी, जो मुझे फ़ारसी स्वर्ग से भी ज़्यादा मोहक लगती—उस घर की छाया भी जहाँ वह जल्द ही लौटेगी, उन योजनाओं की जो वह बना रही है या जो दूसरों ने उसके लिए बनाई हैं; और सबसे बढ़कर, वह स्वयं है, अपनी इच्छाओं, अपनी भावनाओं, अपनी घृणाओं, अपनी अस्पष्ट और निरंतर इच्छाशक्ति के साथ। मैं जानता था कि अगर मैं उसकी आँखों में जो कुछ है, उसे नहीं पाऊँगा, तो मैं इस युवा साइकिल चालक को कभी नहीं पा सकूँगा। और इसी वजह से उसका पूरा जीवन ही मेरे मन में लालसा जगाता था; एक दुखभरी लालसा, क्योंकि मुझे लगता था कि यह पूरी नहीं हो पाएगी, लेकिन साथ ही उत्साहवर्धक भी, क्योंकि जो अब तक मेरा जीवन था, अचानक मेरा पूरा जीवन न रहकर, मेरे सामने फैले

उस विशाल क्षेत्र का एक छोटा सा हिस्सा मात्र रह गया था, जिसे मैं पूरी तरह से जीना चाहता था और जो इन लड़कियों के जीवन से बना था, और यही मुझे वह विस्तार, वह संभव विस्तार प्रदान करता था जो सुख है। और निस्संदेह, इन लड़कियों और मुझमें एक भी आदत—या एक भी विचार—समान न होने के कारण, मेरे लिए उनसे दोस्ती करना और उन्हें प्रसन्न करना और भी कठिन हो गया था। लेकिन शायद, इन्हीं भिन्नताओं के कारण, मेरी इस चेतना के कारण कि इन लड़कियों के स्वभाव और कार्यों की संरचना में मेरे ज्ञान या अनुभव का कोई भी तत्व शामिल नहीं था, मेरी तृप्ति के स्थान पर एक प्यास उत्पन्न हुई - वैसी ही प्यास जिससे सूखी भूमि जलती है - एक ऐसे जीवन के लिए जिसे मेरी आत्मा, क्योंकि उसने अब तक उसका एक कतरा भी प्राप्त नहीं किया था, अधिक लालच से, लंबे घूंटों में, अधिक पूर्ण रूप से आत्मसात करने को तैयार थी।

मैंने उस सांवली साइकिल सवार को, जिसकी आंखें चमकीली थीं, इतनी गौर से देखा कि मानो उसने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया हो, और उसने सबसे बड़ी लड़की से कुछ कहा जो मैं सुन नहीं सका। सच कहूँ तो, यह सांवली लड़की मुझे सबसे ज्यादा पसंद नहीं आई, सिर्फ इसलिए कि वह सांवली थी और इसलिए भी कि (जिस दिन मैंने टैनसनविले के छोटे रास्ते से गिलबर्ट को देखा था) लाल बालों और सुनहरी त्वचा वाली लड़की मेरे लिए एक पहुंच से बाहर का आदर्श बनी हुई थी। लेकिन गिलबर्ट को, क्या मैंने उससे मुख्य रूप से इसलिए प्यार नहीं किया था क्योंकि वह मुझे बर्गोट की दोस्त होने और उसके साथ पुराने गिरजाघरों को देखने जाने के उस आभामंडल से घिरी हुई दिखाई दी थी? और क्या मैं इस सांवली लड़की को मेरी ओर देखते हुए देखकर प्रसन्न नहीं हो सकता था (जिससे मुझे आशा हुई कि उससे पहले जान-पहचान करना मेरे लिए आसान होगा), क्योंकि वह मुझे दूसरों से मिलवाएगी, उस

निर्दयी से जिसने बूढ़े आदमी के सिर पर छलांग लगाई थी, उस क्रूर से जिसने कहा था "वह मुझे बीमार कर देता है, बेचारा बूढ़ा आदमी!"—उन सभी से बारी-बारी से, जिनके बीच वह उनकी अविभाज्य साथी होने का गौरव रखती थी? फिर भी, यह कल्पना कि मैं किसी दिन इन लड़कियों में से किसी एक की मित्र बन जाऊँगी, कि उनकी आँखें, जिनकी बोधहीन निगाहें बार-बार मुझे झकझोर देती थीं, मुझ पर अनजाने में ऐसे खेलती थीं जैसे किसी दीवार पर सूर्य की किरणें खेलती हैं, कि किसी चमत्कारिक प्रक्रिया से, उनके अवर्णनीय कणों में मेरे अस्तित्व का विचार, मेरे प्रति कुछ स्नेह समाहित हो जाए, कि मैं स्वयं किसी दिन समुद्र के किनारे उनके मार्ग के विकास में उनके बीच अपना स्थान पा सकूँगी—यह कल्पना मुझे एक ऐसे अनसुलझे विरोधाभास से भरी प्रतीत होती थी मानो किसी शास्त्रीय भित्तिचित्र या जुलूस को दर्शाने वाले भित्तिचित्र के सामने खड़े होकर, मैं यह मान लूँ कि मेरे लिए, दर्शक के रूप में, उनके प्रिय बनकर, उन देवदूतों के बीच अपना स्थान पाना संभव है।

इन लड़कियों को जानने की खुशी, तब साकार नहीं हो सकी। निश्चित रूप से यह पहली बार नहीं था जब मैंने किसी को त्यागा था। मुझे बस उन अनगिनत अजनबियों की याद आ गई, जिन्हें बालबेक में भी, तेज रफ्तार से भागती गाड़ी ने हमेशा के लिए छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। और वास्तव में, उस छोटे से समूह से मुझे जो आनंद मिला, जो मानो यूनानी कुंवारी कन्याओं से बना हो, वह इस आभास से आया था कि उसमें सड़क पर गुजरते लोगों की उड़ान का आभास था। जिन लोगों को हम नहीं जानते, उनकी यह क्षणभंगुरता, जो हमें जीवन के बंदरगाह से बाहर निकलने पर मजबूर करती है, जहाँ जिन महिलाओं के साथ हम अक्सर मिलते हैं, वे समय के साथ अपनी कमियों को उजागर कर देती हैं, हमें उस खोज की अवस्था में धकेल देती है जिसमें कल्पना को आकर्षित

करने के लिए कुछ भी नहीं बचता। लेकिन कल्पना से अपने सुखों को अलग करना उन्हें उनके अपने आयामों तक सीमित करना है, यानी उन्हें शून्य कर देना है। उन दलालों में से एक द्वारा मुझे पेश की गई (जिनकी सेवाओं का मैंने ज़रा भी तिरस्कार नहीं किया, जैसा कि पाठक देख चुके हैं), अगर उन्हें उस तत्व से अलग कर दिया जाता जिसने उन्हें इतने सूक्ष्म रंग और अस्पष्टता प्रदान की थी, तो ये लड़कियाँ मुझे कम मोहित करतीं। हमें कल्पना शक्ति की आवश्यकता होती है, जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की अनिश्चितता से जागृत होकर एक ऐसा लक्ष्य बनाती है जो हमारे दूसरे लक्ष्य को हमसे छुपा देता है, और इंद्रिय सुखों के स्थान पर जीवन में प्रवेश करने के विचार को प्रतिस्थापित करके हमें उस सुख को पहचानने से, उसके सच्चे स्वाद को चखने से, उसे उसकी सीमा में सीमित करने से रोकती है।

हमारे और उस मछली के बीच, जिसे अगर हम पहली बार पकाकर मेज पर परोसा हुआ देखें, तो उसे पकड़ने के लिए आवश्यक अंतहीन मेहनत, कौशल और रणनीति शायद सार्थक न लगे, अवश्य ही कोई बाधा होगी। दोपहर में जब हम मछली पकड़ने के लिए छड़ी लेकर बैठे होते हैं, तो सतह पर लहरें उठती हैं, जिनके साथ हम क्या करने वाले हैं, यह जाने बिना ही, मांस की चमकदार चमक, एक आकृति की अनिश्चितता, पारदर्शी और बहते नीले रंग की तरलता में समा जाती है।

समुद्रतटीय जीवन की विशेषता वाले सामाजिक मूल्यों में आए उस परिवर्तन से इन लड़कियों को भी लाभ हुआ। हमारे सामान्य परिवेश में जो लाभ हमारी महत्ता को बढ़ाते और मजबूत करते हैं, वे वहाँ अदृश्य हो जाते हैं, बल्कि मानो समाप्त हो जाते हैं; वहीं दूसरी ओर, जिन लोगों को हम बिना किसी कारण के समान लाभ प्राप्त करने वाला मान लेते हैं, वे हमें कृत्रिम रूप से बढ़े हुए दिखाई देते हैं। इससे अजनबी महिलाओं के

लिए, और विशेष रूप से आज इन लड़कियों के लिए, मेरी नज़रों में अत्यधिक महत्व प्राप्त करना आसान हो गया, और उन्हें उस महत्व का एहसास कराना असंभव हो गया जो स्वयं मेरे पास हो सकता है।

लेकिन अगर उस छोटे समूह के भ्रमण के बारे में यह कहा जा सकता था कि यह गुजरती हुई अनगिनत महिलाओं के पलायन का एक अंश मात्र था, जिसने मुझे हमेशा विचलित किया था, तो यहाँ उनका पलायन इतनी धीमी गति में सिमट गया था कि मानो गतिहीनता के करीब था। अब, ठीक इसी कारण से कि, एक ऐसे चरण में जो तीव्र गति से बहुत दूर था, चेहरे अब बवंडर की तरह मेरे सामने से नहीं गुजर रहे थे, बल्कि शांत और स्पष्ट रूप से अभी भी सुंदर दिखाई दे रहे थे, मैं यह सोचने से बच गया जैसा कि मैंने अक्सर तब सोचा था जब श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी मुझे ले जा रही थी कि, करीब से देखने पर, अगर मैं एक पल के लिए रुक जाता, तो कुछ विवरण, जैसे कि खुरदरी त्वचा, झुकी हुई नाक, एक मूर्खतापूर्ण खुलापन, एक बनावटी मुस्कान, एक बदसूरत आकृति, उस महिला के चेहरे और शरीर में उन आकृतियों की जगह ले सकती थी जिनकी मैंने निस्संदेह कल्पना की थी; क्योंकि मेरे लिए एक सुंदर रूपरेखा, एक ताज़ा रंगत की झलक ही काफी थी, जिससे मैं पूरी ईमानदारी से एक आकर्षक कंधे को जोड़ सकूँ, एक ऐसी मनमोहक झलक जिसकी स्मृति या पूर्वकल्पित विचार मैंने अपने मन में हमेशा के लिए संजो कर रखा था। गतिमान व्यक्ति के इन त्वरित विश्लेषणों से हम उसी प्रकार की त्रुटियों के शिकार हो जाते हैं जैसे उन त्वरित पठनों में होते हैं जिनमें, एक ही अक्षर पर और शेष अक्षरों को पहचानने की प्रतीक्षा किए बिना, हम पाठ में मौजूद शब्द के स्थान पर एक पूर्णतः भिन्न शब्द का प्रयोग कर लेते हैं जो हमारी स्मृति हमें प्रदान करती है। अब मेरे साथ ऐसा नहीं हो सकता था। मैंने उन सभी को अच्छी तरह से

देखा था; मैंने उनमें से प्रत्येक को देखा था, हर कोण से नहीं और शायद ही कभी पूरे चेहरे से, लेकिन फिर भी दो या तीन ऐसे पहलुओं से जो मुझे या तो सुधार करने या सत्यापन करने में सक्षम बनाते थे, रेखा और रंग की विभिन्न संभावनाओं का प्रमाण लेने में सक्षम बनाते थे जो पहली नज़र में दिखाई देती हैं, और भावों की एक श्रृंखला के माध्यम से उनमें कुछ अपरिवर्तनीय रूप से ठोस चीज़ को निरंतर बने रहने में सक्षम बनाते थे। मैं पूरे विश्वास के साथ अपने मन में कह सकता था कि न तो पेरिस में और न ही बालबेक में, जो कुछ भी संभव हो सकता था, उसके सबसे अनुकूल अनुमानों में भी, भले ही मैं रुककर उन राहगीर महिलाओं से बात कर पाता, जिन्होंने मेरा ध्यान खींचा था, कभी कोई ऐसी महिला नहीं थी जिसका प्रकट होना और फिर बिना मुझे उससे जान-पहचान किए गायब हो जाना, मुझे इतना अफसोस देता जितना इन महिलाओं ने दिया था, जिसने मुझे यह एहसास दिलाया था कि उसकी दोस्ती इतनी मदहोश कर देने वाली हो सकती है। अभिनेत्रियों में, किसानों में, या किसी मठ की लड़कियों में, मैंने कभी भी इतनी खूबसूरत, इतनी अनजानी बातों से भरी, इतनी अनमोल, इतनी पहुंच से बाहर दिखने वाली कोई चीज नहीं देखी थी। वे जीवन के अज्ञात और संभावित सुख का इतना सुंदर और परिपूर्ण चित्रण थीं कि बौद्धिक कारणों से ही मैं इस भय से व्याकुल हो गया था कि कहीं मैं उन अद्वितीय परिस्थितियों में, जहाँ त्रुटि की कोई गुंजाइश नहीं थी, उस सबसे रहस्यमय वस्तु का उचित परीक्षण न कर पाऊँ जो हमें उस सुंदरता द्वारा प्रदान की जाती है जिसे हम चाहते हैं और जिसे कभी न पाने पर स्वयं को दिलासा देते हैं, उन महिलाओं से सुख की माँग करके—जैसा कि स्वान ने ओडेट के समय से पहले कभी नहीं किया था—जिनकी हमने कभी इच्छा नहीं की, और इस प्रकार हम उस दूसरे सुख को जाने बिना ही मर जाते हैं। निस्संदेह यह संभव था कि वास्तव में वह एक

अज्ञात सुख न हो, कि गहन निरीक्षण करने पर उसका रहस्य मिट जाए और लुप्त हो जाए, कि वह केवल एक प्रक्षेपण हो, इच्छा का एक मृगतृष्णा हो। लेकिन उस स्थिति में मैं केवल प्रकृति के नियम की बाध्यता को दोष दे सकता था—जो यदि इन लड़कियों पर लागू होता तो सभी पर लागू होता—न कि वस्तु की अपूर्णता को। क्योंकि यही वह चीज़ थी जिसे मुझे बाकी सभी चीज़ों से ऊपर चुनना चाहिए था, एक वनस्पति विज्ञानी की संतुष्टि के साथ पूरी तरह आश्वस्त होकर कि इन नन्हे फूलों से ज़्यादा दुर्लभ नमूने कहीं और नहीं मिल सकते, जो इस समय मेरी आँखों के सामने समुद्र की रेखा को अपनी पतली बाड़ से बाधित कर रहे थे, मानो किसी चट्टान के किनारे पर बने बगीचे को सजाते हुए पेंसिल्वेनिया के गुलाबों का एक मंडप हो, जिसके बीच में समुद्र का पूरा क्षेत्र समाहित है, जिसे कोई स्टीमर पार कर रहा है, जो नीली और क्षैतिज रेखा पर इतनी धीमी गति से सरक रहा है जो एक तने से दूसरे तने तक फैली हुई है कि एक आलसी तितली, जो उस फूल के प्याले में सुस्ती कर रही है जिसे चलता हुआ जहाज बहुत पहले पार कर चुका है, यदि उसे उड़ना है और जहाज से पहले पहुँचने का आश्वासन चाहिए, तो वह तब तक प्रतीक्षा कर सकती है जब तक कि नीले रंग की सबसे छोटी सी पट्टी ही खोज करते हुए जहाज के अगले हिस्से और उस फूल की पहली पंखुड़ी के बीच न रह जाए जिसकी ओर वह बढ़ रहा है।

मैं घर के अंदर चली गई क्योंकि मुझे रॉबर्ट के साथ रिवेबेल में रात का खाना खाना था, और मेरी दादी ने जोर देकर कहा कि उन शामों को बाहर जाने से पहले, मुझे एक घंटे के लिए अपने बिस्तर पर लेटना चाहिए, एक ऐसा आराम जिसे बालबेक के डॉक्टर ने मुझे बाद में अन्य शामों तक भी बढ़ाने का आदेश दिया।

हालांकि, अंदर जाते समय सामने का रास्ता छोड़कर पीछे से होटल में

प्रवेश करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। घड़ी में हुए बदलाव ने मुझे उन शनिवारों की याद दिला दी जब कॉम्ब्रे में हम दोपहर का भोजन एक घंटा पहले कर लेते थे। अब गर्मियों के चरम पर होने के कारण दिन इतने लंबे हो गए थे कि सूरज अभी भी आसमान में काफी ऊपर था, मानो चाय का समय हो, जबकि ग्रैंड होटल में रात के खाने के लिए मेजें लगाई जा रही थीं। इसलिए बड़ी स्लाइडिंग खिड़कियाँ नीचे से खुली रखी जाती थीं। मुझे बस एक नीची लकड़ी की चौखट पार करनी थी और मैं भोजन कक्ष में पहुँच जाता था, जहाँ से होते हुए मैं सीधे लिफ्ट तक पहुँच जाता था।

जब मैं दफ्तर के पास से गुज़रा, तो मैंने मैनेजर को देखकर मुस्कुराया, और घृणा की कोई भावना लिए बिना, उसके चेहरे से भी वैसी ही मुस्कान बटोर ली, जिसे बालबेक में रहने के दौरान, मेरे व्यापक अध्ययन ने धीरे-धीरे, एक प्राकृतिक इतिहास की तैयारी की तरह, बदल दिया था। उसके चेहरे के भाव मेरे लिए परिचित हो गए थे, एक ऐसे अर्थ से भरे हुए जो महत्वहीन था लेकिन फिर भी समझने योग्य था, जैसे कोई लिपि जिसे पढ़ा जा सकता है, और अब उन विचित्र, असहनीय भावों से बिल्कुल अलग हो गए थे जो उसके चेहरे ने मुझे उस पहले दिन दिखाए थे, जब मैंने अपने सामने एक ऐसे व्यक्ति को देखा था जिसे अब भुला दिया गया था, या, अगर मैं उसे याद करने में सफल भी हुआ, तो पहचानने योग्य नहीं था, उस तुच्छ और विनम्र व्यक्तित्व से पहचानना मुश्किल था जिसका दूसरा रूप मात्र एक व्यंग्यचित्र, एक भद्दा और त्वरित रेखाचित्र था। अपने आगमन की शाम की शर्म या उदासी के बिना, मैंने परिचारक को बुलाया, जो अब चुपचाप खड़ा नहीं रहा जब मैं लिफ्ट में उसके बगल में एक चलते-फिरते सीने के पिंजरे की तरह ऊपर की ओर धकेला जा रहा था, बल्कि उसने दोहराया:

“अब उतने लोग नहीं हैं जितने एक महीने पहले थे। लोग अब जाने लगे

हैं; दिन ढलते जा रहे हैं।" उन्होंने यह बात इसलिए नहीं कही क्योंकि इसमें कोई सच्चाई थी, बल्कि इसलिए कि तट के एक गर्म इलाके में उनका जल्द ही एक कार्यक्रम तय था, इसलिए वे चाहते थे कि हम सब चले जाएं, ताकि होटल बंद हो जाए और उन्हें अपने नए स्थान पर फिर से मिलने से पहले कुछ दिन अकेले बिताने का समय मिल जाए। वैसे, 'फिर से मिलना' और 'नया' शब्द एक-दूसरे के विपरीत नहीं थे, क्योंकि लिफ्ट वाले लड़के के लिए 'मिलना' क्रिया का सामान्य रूप 'फिर से मिलना' ही था। मुझे केवल इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने 'स्थान' शब्द का प्रयोग किया, क्योंकि वे उस आधुनिक सर्वहारा वर्ग से थे जो हमारी भाषा से घरेलू जीवन के हर निशान को मिटाना चाहता है। कुछ देर बाद ही उसने मुझे बताया कि जिस 'कार्यक्रम' में वह 'दोबारा शामिल' होने वाला है, उसमें उसे एक बेहतर 'वर्दी' और ज़्यादा 'वेतन' मिलेगा, क्योंकि 'वर्दी' और 'वेतन' जैसे शब्द उसे पुराने और बेमानी लगते थे। और एक अजीब विरोधाभास के कारण, हम 'मालिकों' के बीच असमानता की अवधारणा हमेशा बनी रही है, इसलिए मुझे लिफ्ट वाले लड़के की बात हमेशा समझ नहीं आती थी। उदाहरण के लिए, मेरी दिलचस्पी सिर्फ़ यह जानने में थी कि क्या मेरी दादी होटल में हैं। अब, मेरे सवालों से पहले ही, लिफ्ट वाला लड़का मुझसे कहता: "वह महिला अभी-अभी आपके कमरे से निकली हैं।" मैं हमेशा उसकी बातों में आ जाता; मुझे लगता था कि उसका मतलब मेरी दादी से है। "नहीं, वह महिला; मुझे लगता है कि वह आपकी कर्मचारी हैं।" मध्यम वर्ग की पुरानी बोलचाल की भाषा की तरह, जिसे वास्तव में समाप्त कर देना चाहिए, रसोइए को कर्मचारी नहीं कहा जाता, मैंने एक पल के लिए सोचा: "लेकिन वह ज़रूर गलत समझ रहा होगा। हमारे पास कोई कारखाना नहीं है; हमारे पास कोई कर्मचारी नहीं हैं।" अचानक मुझे याद आया कि 'कर्मचारी' की उपाधि, वेटरों द्वारा मूंछ रखने

की तरह, नौकरों को दिए जाने वाले उनके आत्मसम्मान को संतुष्ट करने का एक तरीका है, और मुझे एहसास हुआ कि जो महिला अभी बाहर गई थी, वह फ्रांस्वा ही होगी (शायद कॉफी बनाने वाली के पास गई होगी, या बेल्जियम की महिला की छोटी नौकरानी को सिलाई करते देखने गई होगी), हालांकि यह संतुष्टि भी लिफ्टवाले को संतुष्ट नहीं कर पाई, क्योंकि वह अपने ही वर्ग के प्रति दया भाव से बोलते हुए स्वाभाविक रूप से कहता, 'मजदूर के साथ' या 'आम आदमी', उसी एकवचन रूप का प्रयोग करते हुए जैसे रेसीन 'गरीबों' के लिए करते समय करते हैं। लेकिन नियम के अनुसार, क्योंकि पहली शाम का मेरा उत्साह और झिझक अब अतीत की बात हो चुकी थी, मैंने लिफ्टवाले से बात करना बंद कर दिया। अब वही वहाँ खड़ा था और उस छोटी सी यात्रा के दौरान उसे कोई जवाब नहीं मिला, जिस पर वह होटल के अंदर से खोखले खिलौने की तरह रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा। होटल हमारे चारों ओर, मंजिल दर मंजिल, फैला हुआ था, जिसके गलियारों की शाखाओं में प्रकाश मखमली हो गया था, अपना रंग खो बैठा था, आपस में जुड़े दरवाजों को धुंधला कर दिया था, सेवा सीढ़ियों के कदमों को उस सुनहरे धुंध में बदल दिया था, जो गोधूलि की तरह अस्पष्ट और रहस्यमय था, जिसमें रेम्ब्रांट कहीं-कहीं खिड़की की चौखट या कुएँ के मुहाने को चुनता है। और हर मंजिल पर कालीन से परावर्तित सुनहरी रोशनी डूबते सूरज और शौचालय की खिड़की का संकेत दे रही थी।

मैंने खुद से पूछा कि क्या मैंने अभी जिन लड़कियों को देखा था, वे बालबेक में रहती थीं, और वे कौन हो सकती थीं। जब हमारी इच्छा किसी छोटे से समूह पर केंद्रित हो जाती है, जिसे वह बाकियों से अलग कर देती है, तो उस समूह से जुड़ी हर चीज़ भावनाओं का स्रोत बन जाती है और फिर चिंतन का। मैंने एक महिला को 'फ्रंट' पर यह कहते सुना: "वह छोटी

साइमोनेट लड़की की दोस्त है," उसी आत्म-प्रशंसा वाले अंदाज़ में जैसे कोई कहे: "वह युवा ला रोशेफौकॉल्ड का अविभाज्य साथी है।" और उसने तुरंत उस व्यक्ति के चेहरे पर यह जानकारी देख ली, जिसे उसने यह सूचना दी थी, कि वह उस खास व्यक्ति को और देखना चाहता है जो 'छोटी साइमोनेट की दोस्त' थी। जाहिर है, यह एक ऐसा विशेषाधिकार था जो हर किसी को नहीं मिलता था। क्योंकि कुलीनता एक सापेक्ष स्थिति है। और ऐसे बहुत से सस्ते छोटे-छोटे ठिकाने और कोने हैं जहाँ एक गद्दीकार का बेटा फैशन का निर्णायक होता है और किसी युवा वेल्स के राजकुमार की तरह दरबार पर राज करता है। तब से मैंने अक्सर यह याद करने की कोशिश की है कि समुद्र तट पर मुझे वह नाम, साइमोनेट, पहली बार कैसा लगा था, जिसका रूप अभी भी पूरी तरह अस्पष्ट था, जिसे मैं पहचान नहीं पाया था, और न ही उसका अर्थ, कि वह नाम किसी खास व्यक्ति को, या शायद किसी और को दर्शाता था; वास्तव में, उस अस्पष्टता, उस नवीनता के साथ अंकित था जो हमें बाद में बहुत प्रभावित करती है, जब वह नाम जिसके अक्षर हमारे निरंतर चिंतन से हर पल हमारे दिलों में गहराई से अंकित होते जाते हैं, (हालांकि 'छोटी साइमोनेट' के नाम के साथ ऐसा कई वर्षों बाद हुआ) हमारे होठों से निकलने वाली पहली सुसंगत ध्वनि बन जाता है, चाहे नींद से जागने पर हो या बेहोशी से उबरने पर, यहां तक कि यह विचार आने से पहले कि क्या हो रहा है या हम कहां हैं, लगभग 'मैं' शब्द से भी पहले, मानो जिसका नाम लिया जा रहा है वह हम से भी अधिक 'हम' हो, और मानो बेहोशी के एक संक्षिप्त दौर के बाद सबसे पहले जो अवस्था विलीन होती है वह वह अवस्था है जिसमें हम उसके बारे में नहीं सोच रहे थे। मुझे नहीं पता क्यों मैंने शुरू से ही अपने मन में यह बात रखी कि साइमोनेट नाम उन लड़कियों के समूह में से किसी एक का ही होगा; उस पल से मैं लगातार खुद से यही सवाल

पूछती रही कि मैं साइमोनेट परिवार को कैसे जानूँ, उन्हें कैसे जानूँ, वो भी उन लोगों के ज़रिए जिन्हें वे खुद से बेहतर समझते हैं (जो मुश्किल नहीं होना चाहिए था अगर वो लड़कियाँ सिर्फ़ आम सी 'बदमाश' होतीं) ताकि वे मेरे बारे में कोई तिरस्कारपूर्ण विचार न बना लें। क्योंकि किसी को पूरी तरह से जानना संभव नहीं है, किसी ऐसे व्यक्ति को पूरी तरह से आत्मसात करना संभव नहीं है जो आपको तिरस्कार करता है, जब तक कि आप उसके तिरस्कार को दूर न कर लें। और चूंकि, जब भी हमारे मन में हमसे इतनी भिन्न महिलाओं का विचार आता है, तो जब तक हम उसे भुला नहीं देते या अन्य विचारों की प्रतिस्पर्धा उसे समाप्त नहीं कर देती, तब तक हमें चैन नहीं मिलता जब तक हम उन परदेसियों को अपने अनुरूप नहीं बना लेते। इस मामले में हमारा हृदय भी उसी प्रकार की प्रतिक्रिया और सक्रियता से भरा होता है जैसे हमारा शरीर, जो किसी भी पराये शरीर को अपनी नसों में समाहित होने से रोक नहीं पाता और उसे तुरंत पचाने और आत्मसात करने का प्रयास करता है: छोटी साइमोनेट उन सब में सबसे सुंदर होनी चाहिए—वह, जिसके बारे में मुझे लगा, मेरी प्रेमिका भी बन सकती है, क्योंकि वह अकेली थी जिसने दो-तीन बार अपना सिर आधा घुमाकर मेरी टकटकी को महसूस किया था। मैंने लिफ्ट वाले लड़के से पूछा कि क्या वह बालबेक में साइमोनेट नाम के किसी व्यक्ति को जानता है। यह स्वीकार न करते हुए कि उसे कुछ भी नहीं पता, उसने उत्तर दिया कि उसने यह नाम कहीं सुना है। जैसे ही हम सबसे ऊपरी मंजिल पर पहुँचे, मैंने उससे कहा कि वह आगंतुकों की नवीनतम सूची मुझे भेज दे।

मैं लिफ्ट से बाहर निकला, लेकिन अपने कमरे में जाने के बजाय मैं गलियारे में आगे बढ़ गया, क्योंकि मेरे आने से पहले लैंडिंग के प्रभारी वैलेट ने, ठंडी हवाओं के बावजूद, आखिरी छोर की खिड़की खोल दी थी।

यह खिड़की समुद्र की ओर नहीं खुलती थी, बल्कि अंदर की ओर पहाड़ी और घाटी की ओर खुलती थी, लेकिन उन्हें कभी दिखने नहीं देती थी, क्योंकि इसके धुंधले शीशे आमतौर पर बंद रहते थे। मैं उसके सामने थोड़ी देर रुका, बस इतना ही समय था कि उस दृश्य को निहार सकूँ जो पहली बार होटल के पीछे वाली पहाड़ी के ऊपर से दिखाई दे रहा था। उस दृश्य में केवल एक अकेला घर था, जो थोड़ी दूरी पर स्थित था। हालाँकि, जिस परिप्रेक्ष्य और शाम की रोशनी में मैंने उसे देखा, उसने उसके आकार को बरकरार रखते हुए, उसे एक मूर्तिकला जैसी सुंदरता और मखमली पृष्ठभूमि प्रदान की, मानो वह सोने और तामचीनी से बने उन लघु वास्तुशिल्पों में से एक हो, जो अवशेषों के रूप में कार्य करते हैं और केवल दुर्लभ और विशेष दिनों में श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए खोले जाते हैं। लेकिन श्रद्धा का यह क्षण बहुत लंबा खिंच चुका था, क्योंकि नौकर, जिसके एक हाथ में चाबियों का गुच्छा था और दूसरे हाथ से उसने अपनी टोपी को छूकर मुझे प्रणाम किया, हालांकि ठंडी और शुद्ध शाम की हवा के कारण उसने टोपी को ऊपर नहीं उठाया, आया और खिड़की के दोनों किनारों को मंदिर की तरह सटा दिया, और इस तरह उस छोटी सी इमारत, उस चमकती हुई कलाकृति को मेरी श्रद्धा भरी निगाहों से छिपा दिया। मैं अपने कमरे में चला गया। जैसे-जैसे मौसम बदलता, मेरी खिड़की में लगी तस्वीर भी बदलती रहती। पहले तो उजाला रहता था, और अंधेरा केवल खराब मौसम में ही होता था: और फिर, हरे रंग के कांच में, जो इसकी गोल लहरों के वक्र से फैला हुआ था, समुद्र, मेरी खिड़की के लोहे के सीधे खंभों के बीच, रंगीन कांच के टुकड़े की तरह, खाड़ी की गहरी चट्टानी सीमा पर फैला हुआ था, स्थिर फुहार के छोटे-छोटे पंखों वाले त्रिकोणों की तरह, जिन्हें पिसानेलो की पेंसिल से पंख या कोमल स्तन की कोमलता से चित्रित किया गया था, और उस सफेद,

अपरिवर्तनीय, मलाईदार तामचीनी में स्थिर किया गया था जिसका उपयोग गैले के कांच में गिरी हुई बर्फ को दर्शाने के लिए किया जाता है।

अब दिन छोटे होते जा रहे थे और जिस क्षण मैं अपने कमरे में दाखिल हुआ, बैंगनी आकाश में सूर्य की कठोर, ज्यामितीय, गतिशील, तेजस्वी आकृति अंकित प्रतीत हो रही थी (जैसे किसी चमत्कारिक चिन्ह, किसी रहस्यमयी दृश्य का चित्रण हो), जो क्षितिज के मोड़ से समुद्र पर इस प्रकार झुकी हुई थी मानो कोई पवित्र चित्र किसी ऊंचे वेदी पर झुका हो। वहीं, दीवारों के साथ बनी नीची महोगनी की किताबों की अलमारियों के काँच में पश्चिमी आकाश के विभिन्न भाग दिखाई दे रहे थे, जिन्हें देखकर मुझे उस अद्भुत चित्र की याद आ गई जिससे उन्हें अलग किया गया था। वे दृश्य किसी प्राचीन कलाकार द्वारा बहुत पहले किसी मंदिर पर किसी समूह के लिए बनाए गए दृश्यों की तरह लग रहे थे, जिनके अलग-अलग पैनल अब एक संग्रहालय की गैलरी की दीवार पर अगल-बगल प्रदर्शित हैं, ताकि आगंतुक की कल्पना ही उन्हें वेदी के शीर्ष पर उनके स्थान पर पुनः स्थापित कर सके। कुछ सप्ताह बाद, जब मैं ऊपर गया, तो सूर्य अस्त हो चुका था। ठीक वैसे ही जैसे मैं कॉम्ब्रे में, कलवरी के पीछे, जब मैं टहलने के बाद घर लौटता था और रात के खाने से पहले रसोई में जाने का इंतज़ार करता था, समुद्र के ऊपर लाल आसमान की एक पट्टी, मांस पर एस्पिक की परत की तरह घनी और साफ, फिर थोड़ी देर बाद, पहले से ही ठंडे और नीले समुद्र के ऊपर, भूरे रंग की मछली की तरह गुलाबी आसमान, जिसे हम अभी रिवेबेल में ऑर्डर करने वाले थे, ने रात के खाने के लिए तैयार होने की क्रिया से मिलने वाले आनंद को फिर से जगा दिया। समुद्र के ऊपर, तट के बिल्कुल पास, एक के ऊपर एक, बढ़ती दूरी पर, गहरे काले रंग की, लेकिन साथ ही अगेट की तरह चमकदार और ठोस, भारी धुंध उठती जा रही थी। इतनी भारी कि उनमें से सबसे ऊँची,

अपने मुड़े हुए तने के सिरे पर टिकी हुई और अब तक उसे सहारा दे रहे खंभे के गुरुत्वाकर्षण केंद्र से भी ऊपर उठती हुई, ऐसा लग रहा था मानो वह आसमान की आधी ऊँचाई तक पहुँच चुकी इस विशाल संरचना को ध्वस्त कर देगी और समुद्र में गिरा देगी। रात के यात्री की तरह दूर जाते हुए जहाज को देखकर मुझे वही अहसास हुआ जो मुझे ट्रेन में नींद की मजबूरी और कमरे की कैद से मुक्ति मिलने पर हुआ था। ऐसा नहीं था कि मैं खुद को उस कमरे में कैदी महसूस कर रहा था जिसमें मैं अभी था, क्योंकि एक घंटे में मैं इसे छोड़कर गाड़ी में बैठ रहा होता। मैंने खुद को बिस्तर पर गिरा दिया; और, मानो मैं उन स्टीमरों में से किसी एक पर बर्थ में लेटा हुआ था, जिन्हें मैं अपने काफी करीब देख सकता था और जिन्हें रात होने पर अंधेरे में धीरे-धीरे सरकते हुए देखना अजीब लगता था, छायादार और शांत लेकिन बिना सोए हंसों की तरह, मैं चारों ओर से समुद्र के चित्रों से घिरा हुआ था।

लेकिन अक्सर वे महज़ तस्वीरें ही होती थीं; मैं भूल जाता था कि उनके रंगीन विस्तार के नीचे समुद्र तट की उदास वीरानगी छिपी थी, जहाँ बेचैन शाम की हवा बहती थी, जिसकी साँस मैंने बालबेक पहुँचते ही बड़ी बेचैनी से महसूस की थी; इसके अलावा, अपने कमरे में भी, उन लड़कियों के विचारों में डूबा हुआ, जिन्हें मैंने आते-जाते देखा था, मैं अब इतना शांत या तटस्थ नहीं था कि सुंदरता की कोई गहरी छाप छोड़ सकूँ। रिवेबेल में रात के खाने की उम्मीद ने मेरे मूड को और भी चंचल बना दिया था, और मेरा मन, ऐसे क्षणों में उस शरीर की सतह पर अटका रहता था जिसे मैं सजाने वाला था ताकि उस जगमगाते रेस्तरां में मुझे निहारने वाली महिलाओं की निगाहों में जितना हो सके उतना आकर्षक दिख सकूँ, रंगों के पीछे कोई गहराई नहीं देख पाता था। और अगर मेरी खिड़की के नीचे, समुद्री मार्टिन और अबाबीलों की अथक, कोमल उड़ान किसी फव्वारे की तरह, जीवंत

आतिशबाजी की तरह न उठती, जो उनके उड़ते रॉकेटों के बीच के अंतराल को झाग की लंबी क्षैतिज सफेद धाराओं से जोड़ती, और इस प्राकृतिक और स्थानीय घटना के मनमोहक चमत्कार के बिना, जो मेरी आँखों के सामने के दृश्यों को वास्तविकता से जोड़ता, तो मैं आसानी से मान लेता कि वे केवल कुछ चित्रों का चयन मात्र हैं, जो हर दिन नए सिरे से चुने जाते हैं, और जिन्हें उस स्थान पर मनमाने ढंग से प्रदर्शित किया जाता है जहाँ मैं मौजूद होता हूँ और जिनका उस स्थान से कोई आवश्यक संबंध नहीं होता। एक समय यह जापानी रंगीन प्रिंटों की एक प्रदर्शनी थी: सूर्य की साफ-सुथरी डिस्क के बगल में, चंद्रमा की तरह लाल और गोल, एक पीला बादल एक झील जैसा प्रतीत होता था जिसके सामने काली तलवारें उसके किनारे के पेड़ों की तरह दिखाई देती थीं; एक कोमल गुलाबी रंग की पट्टी, जिसे मैंने अपने पहले पेंट बॉक्स के बाद फिर कभी नहीं देखा था, एक नदी की तरह फैल गई, जिसके दोनों किनारों पर नावें मानो सूखी और सूखी जगह पर किसी के द्वारा धकेल कर पानी में उतारने का इंतज़ार कर रही थीं। और एक शौकिया चित्रकार या दो सामाजिक कार्यक्रमों के बीच किसी चित्र दीर्घा से जल्दी-जल्दी गुज़र रही महिला की तिरस्कारपूर्ण, ऊबी हुई, बेपरवाह नज़र से मैं खुद से कहती: "यह अजीब सूर्यास्त है; यह आम सूर्यास्तों से अलग है, लेकिन आखिरकार मैंने इससे भी सुंदर, इससे भी अद्भुत सूर्यास्त देखे हैं।" मुझे उन शामों में ज़्यादा आनंद आता था जब कोई जहाज़, क्षितिज में इस कदर समाया और घुलमिल गया कि मानो वह उसी पदार्थ का बना हो (इस बार एक प्रभाववादी प्रदर्शनी), मानो किसी ने कैंची से उसके धनुष और रस्सियों को काटकर आसमान के धुंधले नीले रंग से एक पतली नक्काशी बना दी हो। कभी-कभी समुद्र मेरी खिड़की के लगभग पूरे हिस्से को भर देता था, जब आसमान की एक पट्टी उसे और बड़ा और विस्तृत बना देती थी,

जिसके ऊपरी किनारे पर समुद्र के समान नीले रंग की एक रेखा होती थी, जिससे मुझे लगता था कि यह सब शांत समुद्र है, और रंग में परिवर्तन केवल प्रकाश और छाया के प्रभाव के कारण है। एक और दिन, खिड़की के निचले हिस्से में ही समुद्र चित्रित था, बाकी का पूरा हिस्सा अनगिनत बादलों से भरा हुआ था, जो क्षैतिज पट्टियों में एक दूसरे से सटे हुए थे, ऐसा लगता था मानो उसके शीशे किसी विशेष उद्देश्य से या कलाकार की विशेष प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए 'बादलों का अध्ययन' प्रस्तुत करने के लिए बनाए गए हों। वहीं, विभिन्न किताबों की अलमारियों के सामने के हिस्से, जिनमें क्षितिज के दूसरे हिस्से में और प्रकाश के कारण अलग-अलग रंगों वाले समान बादल दिखाई दे रहे थे, ऐसा प्रतीत होता था मानो एक ही प्रभाव की पुनरावृत्ति कर रहे हों—जिसका हमारे कुछ समकालीनों को बहुत शौक है—जो हमेशा अलग-अलग समय पर देखा जाता था, लेकिन अब कला की स्थिरता में एक ही कमरे में एक साथ देखा जा सकता है, पेस्टल में चित्रित और कांच के नीचे जड़ा हुआ। और कभी-कभी एकसमान धूसर आकाश और समुद्र में एक गुलाबी रंग बड़ी नज़ाकत से समा जाता था, जबकि खिड़की के नीचे सोई हुई एक छोटी तितली अपने पंखों से व्हिस्लर की शैली में बने इस 'धूसर और गुलाबी रंग के सामंजस्य' के कोने से चिपकी हुई प्रतीत होती थी - जो चेल्सी के उस्ताद की पसंदीदा शैली थी। गुलाबी रंग गायब हो गया; अब देखने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। मैं एक पल के लिए उठा और फिर लेटने से पहले भीतरी पर्दे खींच दिए। उनके ऊपर से मैं अपने बिस्तर से बची हुई प्रकाश की किरण को देख सकता था, जो धीरे-धीरे धुंधली और पतली होती जा रही थी, लेकिन बिना किसी उदासी के, बिना उसके बीत जाने के किसी अफसोस के, मैंने इस तरह पर्दों के ऊपर उस समय को मिटने दिया, जिस समय मैं आमतौर पर मेज पर बैठता था, क्योंकि मैं जानता

था कि यह दिन सामान्य दिनों से अलग था, लंबा, उन बर्फीले दिनों की तरह जिन्हें रात केवल कुछ मिनटों के लिए ही रोकती है; मैं जानता था कि गोधूलि के कोकून से एक चमकदार रूपांतरण द्वारा रिवबेल रेस्तरां का चकाचौंध भरा प्रकाश उभरने की तैयारी कर रहा था। मैंने मन ही मन कहा: "अब समय आ गया है"; मैं बिस्तर पर लेट गया, उठा और कपड़े पहने; और मुझे इन खाली पलों में एक अलग ही आनंद मिला, जो हर भौतिक बोझ से मुक्त थे, जिनमें नीचे बाकी लोग भोजन कर रहे थे और मैं दिन के इस आखिरी घंटे की निष्क्रियता के दौरान संचित ऊर्जा का उपयोग केवल अपने धुले हुए शरीर को सुखाने, डिनर जैकेट पहनने, अपनी टाई बांधने और उन सभी हाव-भावों को करने में कर रहा था जो उस महिला को फिर से देखने की अपेक्षित खुशी से प्रेरित थे, जिसे मैंने पिछली बार रिवेबेल में देखा था, जो मुझे देखती हुई प्रतीत हो रही थी, शायद कुछ पल के लिए ही मेज से उठी थी इस उम्मीद में कि मैं उसका पीछा करूंगा; मैंने इन सभी आकर्षणों से खुद को भरपूर आनंदित किया, ताकि मैं एक नए, स्वतंत्र और चिंतामुक्त जीवन के लिए पूरी तरह से तैयार, सजग और तत्पर हो सकूँ। इस जीवन में मैं अपनी झिझक को सेंट-लूप की शांत शक्ति पर टिका दूँगा और प्रकृति की विभिन्न प्रजातियों और हर देश की उपज में से उन चीजों का चुनाव करूँगा जो मेरे साथी द्वारा तुरंत मंगाए जाने वाले अपरिचित व्यंजनों में शामिल होकर मेरी भूख या कल्पना को लुभा सकें। और फिर मौसम के अंत में वे दिन आ गए जब मैं अब भोजन कक्ष से होकर 'सामने' के रास्ते अंदर नहीं जा सकता था; उसकी खिड़कियाँ अब खुली नहीं रहती थीं, क्योंकि बाहर रात हो चुकी थी और गरीब लोगों और जिज्ञासु आवारा लोगों की भीड़, उस चकाचौंध भरी कांच की दीवार से चिपकी रहती थी, जहाँ तक वे नहीं पहुँच सकते थे। उत्तर की ठंडी हवा से ठंडी हुई काली भीड़ उस चकाचौंध

भरी कांच की दीवार से चिपकी रहती थी।

मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई; ऐमे खुद ऊपर आई थी और अपने साथ आने वाले लोगों की नई सूचियां लेकर आई थी।

ऐमे मुझसे यह कहे बिना नहीं जा सकी कि ड्रेफस हजार गुना अधिक दोषी था। “सब कुछ सामने आ जाएगा,” उसने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, “इस साल नहीं, बल्कि अगले साल। मुझे एक सज्जन ने बताया जो जनरल स्टाफ के बहुत करीबी हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे साल खत्म होने से पहले ही सब कुछ एक साथ उजागर करने का फैसला नहीं करेंगे। उन्होंने अपनी सिगरेट नीचे रख दी,” ऐमे ने मेरे लिए अभिनय करते हुए आगे बताया, और अपने मुखबिर की तरह सिर और तर्जनी उंगली हिलाते हुए, मानो कह रहे हों: “हमें बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं रखनी चाहिए!” — “'इस साल नहीं, ऐमे,' ठीक यही उनके शब्द थे, उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'यह संभव नहीं है। लेकिन अगले ईस्टर पर, हाँ!'” और ऐमे ने मेरे कंधे पर धीरे से थपथपाते हुए कहा, “देखो, मैं तुम्हें ठीक वही बता रहा हूँ जो उन्होंने मुझे बताया था,” चाहे इसलिए कि वे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के इस आत्मीय व्यवहार से प्रसन्न हुए थे या इसलिए कि मैं तथ्यों की पूरी जानकारी के साथ, तर्कों के महत्व और हमारी आशा के आधार को बेहतर ढंग से समझ सकूँ।

सूची के पहले पृष्ठ पर 'साइमोनेट और परिवार' शब्द देखते ही मेरा दिल हल्का सा धड़क उठा। मेरे भीतर बचपन की यादों का भंडार था, जिनमें एक ऐसी शख्सियत की कोमल भावनाएँ समाई हुई थीं (वह कोमलता जो मेरे दिल में तो थी, लेकिन जब मेरा दिल उसे महसूस करता था, तो वह किसी और चीज़ से अलग नहीं लगती थी)। ये कोमल भावनाएँ मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिलीं जो मुझसे बिलकुल अलग था। मैंने एक बार फिर उस शख्सियत की कल्पना की, इसके लिए मैंने साइमोनेट नाम और उन

युवा शरीरों के बीच व्याप्त सामंजस्य की स्मृति का सहारा लिया, जिन्हें मैंने समुद्र तट पर ग्रीक कला या गियोटो की कृतियों के योग्य एक चंचल जुलूस में खुद को प्रदर्शित करते देखा था। मुझे नहीं पता था कि इन लड़कियों में से कौन मैडम साइमोनेट थीं, या वास्तव में उनमें से किसी का नाम ऐसा था भी या नहीं, लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता था कि मैडम साइमोनेट मुझसे प्यार करती थीं और मैं सेंट-लूप की मदद से उन्हें जानने की कोशिश करने जा रहा था। दुर्भाग्यवश, उस शर्त पर ही उन्हें छुट्टी की अवधि बढ़ाई गई थी, इसलिए उन्हें डोनसिएरेस में प्रतिदिन ड्यूटी पर उपस्थित होना पड़ता था। लेकिन उन्हें सैन्य कर्तव्य छोड़ने के लिए, मुझे लगा कि मैं उनकी मित्रता से भी अधिक, एक मानव प्रकृतिवादी के रूप में उनकी उसी जिज्ञासा का लाभ उठा सकती हूँ, जो मैंने स्वयं अक्सर महसूस की थी—यहाँ तक कि उस व्यक्ति को देखे बिना भी, और केवल किसी को यह कहते हुए सुनकर कि किसी फल विक्रेता की दुकान पर एक सुंदर कैशियर है—कि मैं स्त्री सौंदर्य की नई किस्मों से परिचित हो जाऊँ। लेकिन सेंट-लूप में अपनी लड़कियों के समूह के बारे में उनसे बात करके उस जिज्ञासा को जगाने की मेरी उम्मीद गलत साबित हुई। क्योंकि वह जिज्ञासा उस अभिनेत्री के प्रति उनके प्रेम से दबी हुई थी और लंबे समय तक दबी ही रहेगी, जिसके वे प्रेमी थे। और अगर उन्हें यह जिज्ञासा थोड़ी सी भी जागृत होती, तो भी वे इसे दबा देते, इस लगभग अंधविश्वासपूर्ण विश्वास से कि उनकी अपनी वफादारी उनकी प्रेमिका की वफादारी पर निर्भर हो सकती है। और इसलिए, उनसे इस बात का कोई वादा लिए बिना कि वह मेरी बेटियों में सक्रिय रुचि लेंगे, हम रिवेबेल में भोजन करने के लिए निकल पड़े।

जब हम वहाँ पहुँचे, तो पहले सूरज डूब चुका था, लेकिन फिर भी उजाला था; रेस्तरां के बाहर बगीचे में, जहाँ अभी तक दीपक नहीं जलाए गए थे,

दिन की गर्मी ऐसे ढल रही थी मानो किसी फूलदान में समाई हो, जिसके किनारों पर हवा की पारदर्शी, धुंधली जेली जैसी स्थिरता प्रतीत होती थी, कि धुंधली दीवार से सटा एक लंबा गुलाब का पेड़, जिस पर गुलाबी नसें उभरी थीं, किसी गोमेद के हृदय में दिखने वाले वृक्षों के समूह जैसा दिखता था। जब हम गाड़ी से उतरते थे, तब तक रात हो चुकी होती थी, अक्सर तो बालबेक से निकलने से पहले ही, अगर शाम बारिश वाली होती और हम मौसम के सुधरने की उम्मीद में गाड़ी को बुलाने में देरी कर देते। लेकिन उन दिनों मैं बिना किसी उदासी के हवा की गर्जना सुनता था, मैं जानता था कि इसका मतलब मेरी योजनाओं का परित्याग या मेरे शयनकक्ष में कैद होना नहीं है; मुझे पता था कि रेस्तरां के विशाल भोजन कक्ष में, जहाँ हम जिप्सी बैंड के संगीत की धुन पर प्रवेश करेंगे, अनगिनत दीपक अपनी पिघली हुई सोने की चौड़ी लकीरों से अंधेरे और ठंड पर आसानी से विजय प्राप्त कर लेंगे, और मैं सेंट-लूप के पीछे खुशी-खुशी उस बंद गाड़ी में कूद गया जो बारिश में हमारा इंतजार कर रही थी। कुछ समय से बर्गोट के शब्द, जब उन्होंने दृढ़ता से कहा था कि मैं चाहे जो भी कहूँ, मुझे मुख्य रूप से मन के सुखों का आनंद लेने के लिए बनाया गया है, ने मुझे भविष्य में जो कुछ भी हासिल कर सकता हूँ, उसके बारे में एक उम्मीद जगा दी थी, जो हर दिन लेखन-मेज के सामने बैठकर एक आलोचनात्मक निबंध या उपन्यास लिखने की शुरुआत करने पर महसूस होने वाली ऊब से फिर से टूट जाती थी। “आखिरकार,” मैंने मन ही मन कहा, “शायद किसी रचनाकार को उसे लिखने में जो आनंद मिला हो, वही उसके साहित्यिक मूल्य का अचूक मापदंड नहीं है; यह महज़ एक सहायक तत्व हो सकता है, जो अक्सर उसके मूल्य में जुड़ जाता है, लेकिन इसके अभाव का उस पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। शायद कुछ महानतम कृतियाँ उबासी लेते हुए ही लिखी गई हों।” मेरी

दादी ने मुझे यह कहकर मेरी शंकाओं को दूर किया कि स्वास्थ्य सुधरते ही मैं काम कर पाऊँगी और काम का आनंद भी उठाऊँगी। और, हमारे डॉक्टर ने मेरी सेहत से जुड़े गंभीर जोखिमों के बारे में मुझे आगाह करना उचित समझा और दुर्घटना से बचने के लिए मुझे बरती जाने वाली सभी स्वच्छता संबंधी सावधानियों के बारे में बताया—मैंने अपने सभी सुखों को एक ऐसे लक्ष्य के अधीन कर दिया जिसे मैंने उनसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण समझा, वह था इतना मजबूत होना कि मैं अपने भीतर छिपी प्रतिभा को साकार कर सकूँ; बालबेक आने के बाद से ही मैं अपने ऊपर एक सावधानीपूर्वक और निरंतर नियंत्रण रख रही थी। वहाँ, मैं कॉफ़ी का प्याला छूने की हिम्मत भी नहीं कर पाता, क्योंकि इससे मेरी रात की नींद टूट जाती, जो अगले दिन थकान से बचने के लिए ज़रूरी थी। लेकिन जैसे ही हम रिवेबेल पहुँचे, एक नए सुख के उत्साह में, और जीवन के उस नियम के अपवाद के कारण, जो हमें ज्ञान की ओर ले जाने वाले उस धागे को काट देता है, जो कई दिनों से धैर्यपूर्वक बुना गया था, तुरंत ही एक अलग ही दुनिया में पहुँच गया—जैसे कि अब कल जैसी कोई चीज़ ही न हो, न ही कोई ऊँचे लक्ष्य हों जिन्हें पूरा करना हो—और उन सभी सावधानियों और स्वच्छता उपायों की सटीक व्यवस्था गायब हो गई जो उन्हें सुरक्षित रखने के लिए काम कर रही थी। एक वेटर मेरा कोट लेने के लिए आगे आया, जिस पर सेंट-लूप ने पूछा: "क्या आपको यकीन है कि आपको ठंड नहीं लगेगी? शायद बेहतर होगा कि आप इसे अपने पास ही रखें: यहाँ ज़्यादा गर्मी नहीं है।"

"नहीं, नहीं," मैंने उसे आश्वस्त किया; और शायद मुझे ठंड नहीं लग रही थी; लेकिन चाहे जो भी हो, अब मुझे बीमार पड़ने का डर, मरने से बचने की ज़रूरत, काम का महत्व कुछ भी नहीं लगता था। मैंने अपना कोट उतार दिया; हम खाना खाने के कमरे में जिप्सियों द्वारा बजाए जा रहे

किसी युद्ध संगीत की धुन पर दाखिल हुए, हम रात के खाने के लिए सजी मेजों की दो पंक्तियों के बीच से ऐसे आगे बढ़े जैसे किसी विजय पथ पर चल रहे हों, और ऑर्केस्ट्रा की लय से हमारे शरीर में एक सुखद आभा दौड़ गई, जिसने हमें अपना सैन्य सम्मान दिया, हमें यह अयोग्य विजय दिलाई, हमने इसे एक गंभीर और स्थिर चेहरे के नीचे, एक सुस्त, लापरवाह चाल के नीचे छिपा लिया, ताकि हम उन संगीत-हॉल के 'मशर्माने वालों' की तरह न दिखें जो एक अश्लील कविता को देशभक्ति की धुन से जोड़कर, एक विजयी सेनापति के वीर भाव के साथ मंच पर दौड़ पड़ते हैं।

उस पल से मैं एक नया इंसान बन गया, जो अब अपनी दादी का पोता नहीं था और उन्हें केवल तभी याद करता था जब उठकर जाने का समय होता था, बल्कि उस समय के लिए उन वेटरों का भाई था जो हमें हमारा खाना लाने वाले थे।

बीयर की वह खुराक—और उससे भी ज़्यादा शैम्पेन की—जिसे मैं बालबेक में एक हफ्ते में भी पीने की हिम्मत नहीं करता, हालाँकि मेरी शांत और स्पष्ट चेतना में उन पेय पदार्थों का स्वाद स्पष्ट रूप से आनंददायक था, क्योंकि यह ऐसा आनंद था जिसे आसानी से त्यागा जा सकता था, मैंने अब एक ही बार में पी ली, साथ में पोर्ट वाइन की कुछ बूँदें भी मिला लीं, इतना विचलित था कि उसका स्वाद भी नहीं ले पाया, और मैंने वायलिन वादक को, जो अभी-अभी वायलिन बजा रहा था, दो लुई दे दिए जो मैंने पिछले महीने से कुछ खरीदने के इरादे से बचाए थे, मुझे याद नहीं क्या। कई वेटर मेजों के बीच दौड़ते हुए पूरी गति से भाग रहे थे, प्रत्येक अपने फैले हुए हाथों में एक व्यंजन लिए हुए था जिसे इस तरह की दौड़ का उद्देश्य मानो गिरने से बचाना था। और सचमुच, चॉकलेट सूफ़्ले बिना गिरे अपनी मंज़िल तक पहुँच गए, और आलू (इंग्लिश पोटैटो)

इतनी तेज़ी से परोसे जाने के बावजूद, जैसे शुरुआत में पौइल्हाक मेमने के चारों ओर रखे थे, वैसे ही सजे-धजे आए। मैंने एक नौकर को देखा, जो बहुत लंबा था, उसके घने काले बाल थे, उसका चेहरा किसी दुर्लभ पक्षी की प्रजाति जैसा लग रहा था, न कि किसी इंसान जैसा। वह कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक बिना रुके (और, यूँ कहें कि बिना किसी उद्देश्य के) दौड़ रहा था, जिससे मुझे चिड़ियाघरों के बड़े-बड़े चिड़ियों के पिंजरों में सजे उन तोतों की याद आ गई, जो अपने खूबसूरत रंग और समझ से परे बेचैनी से चिड़ियाघरों को भर देते हैं। कुछ ही देर में, मेरी नज़र में, यह नज़ारा व्यवस्थित हो गया, और साथ ही साथ अधिक गरिमामय और शांत होता चला गया। यह सारी चहल-पहल एक शांत सामंजस्य में स्थिर हो गई। मैंने गोल मेज़ों को देखा, जिन पर अनगिनत मेज़ें रेस्तरां में इस तरह सजी हुई थीं जैसे पुराने प्रतीकात्मक चित्रों में ग्रहों को दर्शाया जाता है। इसके अलावा, ऐसा प्रतीत होता था कि इन विविध तारों के बीच कोई अप्रतिरोध्य आकर्षण शक्ति काम कर रही थी, और प्रत्येक मेज पर भोजन करने वालों की निगाहें केवल उन मेजों पर टिकी थीं जहाँ वे नहीं बैठे थे, सिवाय शायद किसी धनी व्यक्ति के, जिसने किसी प्रसिद्ध लेखक को अपने साथ बिठा लिया था और उस घूमती हुई मेज के जादुई गुणों का उपयोग करके उससे कुछ मामूली टिप्पणियाँ निकलवाने का प्रयास कर रहा था, जिन पर महिलाएं आश्चर्यचकित हो रही थीं। इन खगोलीय मेजों की सामंजस्यता अनगिनत नौकरों के निरंतर चक्करों को नहीं रोक पा रही थी, जो भोजन करने वालों की तरह बैठे होने के बजाय खड़े थे, और अपनी कलाबाजियां एक ऊंचे स्तर पर कर रहे थे। निस्संदेह वे दौड़ रहे थे, कोई ऐपेटाइज़र लाने के लिए, कोई शराब बदलने के लिए या साफ गिलास लाने के लिए। लेकिन इन विशेष कारणों के बावजूद, गोल मेजों के बीच उनका निरंतर चक्कर कुछ समय बाद

देखने वाले को उनके चक्करदार लेकिन व्यवस्थित संचालन के नियम के प्रति सचेत कर देता था। फूलों की एक कतार के पीछे बैठी, दो भयानक कैशियर, अंतहीन गणनाओं में व्यस्त, दो चुड़ैलों की तरह लग रही थीं जो ज्योतिषीय संकेतों के आधार पर उन आपदाओं की भविष्यवाणी करने में लगी हुई थीं जो मध्य युग की वैज्ञानिक अवधारणाओं के अनुसार निर्मित इस आकाशीय कक्ष में समय-समय पर घटित हो सकती हैं।

और मुझे उन सभी भोजन करने वालों पर दया आ रही थी क्योंकि मुझे लगा कि उनके लिए गोल मेजें कोई ग्रह नहीं थीं और वे चीजों की उस योजना में से एक भी ऐसा हिस्सा नहीं ढूंढ पाई थीं जो हमें दिखावे के बंधन से मुक्त करके समानताएं समझने में सक्षम बनाती हैं। वे सोच रहे थे कि वे इस या उस व्यक्ति के साथ भोजन कर रहे हैं, भोजन का खर्च लगभग इतना होगा, और कल वे फिर से यही सब शुरू करेंगे। और वे युवा सहायकों के एक समूह के उनके बीच से गुजरने से बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए, जिनके पास शायद उस समय कोई जरूरी काम नहीं था, फिर भी वे टोकरियों में रोटी के रोल लेकर जुलूस की तरह आगे बढ़ रहे थे। उनमें से कुछ, सबसे कम उम्र के, मुख्य वेटर द्वारा उनके पास से गुजरते समय मारी गई हथकड़ियों से स्तब्ध रह गए, और एक दूर के सपने में उदास निगाहें गड़ाए रहे। उन्हें तभी सांत्वना मिली जब बालबेक होटल से, जहाँ वे कभी काम करते थे, कोई आगंतुक उन्हें पहचान कर उनसे कुछ शब्द बोला और उन्हें व्यक्तिगत रूप से कहा कि जो शैम्पेन पीने योग्य नहीं है उसे ले जाएं, एक ऐसा आदेश जिसने उन्हें गर्व से भर दिया।

मैं अपनी नसों में झनझनाहट सुन सकता था, जिसमें एक प्रकार का सुकून था जो बाहरी वस्तुओं से स्वतंत्र था, एक ऐसा सुकून जिसे मेरे शरीर या ध्यान के थोड़े से हिलने-डुलने से ही महसूस किया जा सकता

था, ठीक वैसे ही जैसे बंद आँखों पर हल्का सा दबाव डालने से रंग का आभास होता है। मैं पहले ही काफी पोर्ट वाइन पी चुका था, और अगर अब मैं और मांगता तो यह अतिरिक्त गिलासों से मिलने वाले सुकून के लिए उतना नहीं था जितना कि पहले पिए गए गिलासों से मिले सुकून के प्रभाव के कारण था। मैंने संगीत को ही अपने आनंद को उसके प्रत्येक स्वर तक ले जाने दिया, जो विनम्रतापूर्वक उसका अनुसरण करते हुए बारी-बारी से प्रत्येक स्वर पर टिका रहा। यदि, उन रासायनिक उद्योगों की तरह, जिनके माध्यम से बड़ी मात्रा में ऐसे पदार्थ तैयार किए जाते हैं जो प्राकृतिक अवस्था में केवल संयोग से और बहुत कम ही एक साथ आते हैं, तो रिवेबेल का यह रेस्तरां एक ही क्षण में इतनी महिलाओं को एक साथ लाकर मुझे सुख के लुभावने दृश्यों से आकर्षित कर रहा था, जितना कि पैदल चलने और गाड़ी चलाने के जोखिम से भी मुझे एक साल में नहीं मिल पाता; दूसरी ओर, यह संगीत जो हमारे कानों को सुकून दे रहा था —वाल्ट्ज़, जर्मन ओपेरा, संगीत-हॉल के गीतों की धुनें, जो मेरे लिए बिल्कुल नई थीं—स्वयं एक अलौकिक आनंद का स्रोत था, जो एक दूसरे पर आरोपित होकर और भी अधिक मादक था। क्योंकि ये धुनें, जिनमें से प्रत्येक एक स्त्री की तरह अनूठी थी, किसी विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति की तरह अपने भीतर छिपे कामुक रहस्य को छुपा नहीं रही थीं: वे मुझे अपने रहस्य बता रही थीं, मुझे घूर रही थीं, बनावटी या भद्दी हरकतों से मेरे पास आ रही थीं, मुझे छू रही थीं, मुझे ऐसे सहला रही थीं मानो मैं अचानक अधिक मोहक, अधिक शक्तिशाली और अधिक धनी हो गई हूँ; वास्तव में मुझे इन धुनों में क्रूरता का एक तत्व मिला; क्योंकि सौंदर्य के प्रति निस्वार्थ भाव, बुद्धिमत्ता की एक झलक जैसी कोई भी चीज उनके लिए अज्ञात थी; उनके लिए केवल शारीरिक सुख ही अस्तित्व में थे। और वे सबसे निर्दयी नरक हैं, सबसे द्वारहीन और उस ईर्ष्यालु दुष्ट के लिए

सबसे कैदखाना हैं, जिसे वे वह सुख प्रस्तुत करते हैं—वह सुख जो उसकी प्रेमिका किसी और के साथ भोग रही है—और उसे लगता है कि यही दुनिया में एकमात्र वस्तु है, उस स्त्री के लिए जो उसके लिए पूरी दुनिया है। लेकिन जब मैं इस धुन के सुर गुनगुना रहा था और इसके चुंबन का जवाब दे रहा था, तो इससे उत्पन्न होने वाला अनूठा सुख मुझे इतना प्रिय हो गया कि मैं अपने माता-पिता को छोड़कर उस अनोखे संसार में उसका अनुसरण करने को तैयार था, जिसे उसने अदृश्य में रचा था, ऐसी पंक्तियों में जो बारी-बारी से सुस्ती और जीवंतता से भरी हुई थीं। हालांकि इस तरह का आनंद उस व्यक्ति के मूल्य को नहीं बढ़ाता जिसे यह प्राप्त होता है, क्योंकि इसे केवल वही अनुभव कर सकता है, और हालांकि जीवन में जब भी हम किसी स्त्री को आकर्षित करने में असफल रहे हैं जिसने हमें देखा है, वह यह नहीं जान सकती कि उस क्षण हमारे भीतर यह आंतरिक और आत्मिक आनंद था या नहीं, जो परिणामस्वरूप उसके हमारे बारे में दिए गए निर्णय को किसी भी तरह से नहीं बदल सकता था, फिर भी मैंने स्वयं को अधिक शक्तिशाली, लगभग अजेय महसूस किया। मुझे ऐसा लगा कि मेरा प्रेम अब कोई अनाकर्षक चीज नहीं थी जिस पर लोग मुस्कुरा सकते थे, बल्कि उसमें ठीक वही मार्मिक सुंदरता, वही मोहकता थी जो इस संगीत में थी, जो स्वयं एक ऐसे मैत्रीपूर्ण वातावरण के समान थी जिसमें मेरी प्रेमिका और मैं मिलने वाले थे और अचानक अंतरंग हो गए थे।

यह रेस्तरां केवल संभ्रांत महिलाओं का ही अड्डा नहीं था; यहाँ समाज के उच्च वर्ग के लोग भी अक्सर आते थे, जो दोपहर की चाय के लिए या बड़े रात्रिभोज आयोजित करने के लिए आते थे। चाय पार्टियाँ एक लंबी, कांच से ढकी और संकरी गैलरी में आयोजित की जाती थीं, जिसका आकार फ़नल जैसा था। यह गैलरी प्रवेश कक्ष से भोजन कक्ष तक जाती थी और

एक तरफ बगीचे से घिरी हुई थी, जिससे (कुछ पत्थर के खंभों को छोड़कर) केवल इसकी कांच की दीवार ही इसे अलग करती थी, जिसमें जगह-जगह कांच के शीशे खुले रहते थे। इसके परिणामस्वरूप, सर्वव्यापी ठंडी हवाओं के अलावा, अचानक और रुक-रुक कर धूप की तेज किरणें निकलती थीं, एक ऐसी चकाचौंध भरी रोशनी जिससे चाय पीने वालों को देखना लगभग असंभव हो जाता था। इसलिए जब वे संकरी घाटी में एक के बाद एक मेजों पर बैठे होते थे, तो चाय पीते समय या एक-दूसरे का अभिवादन करते समय उनकी हर हरकत रंगों से सराबोर हो जाती थी। ऐसे में, आप इसे एक जलाशय, एक ऐसा तालाब कह सकते थे जिसमें मछुआरे ने अपनी सारी चमकदार मछलियाँ इकट्ठा कर ली हों, और मछलियाँ, आधी पानी से बाहर और धूप में नहाई हुई, अपनी निरंतर बदलती इंद्रधनुषी चमक से आँखों को चकाचौंध कर देती हों।

कुछ घंटों बाद, भोजन कक्ष में परोसे जाने वाले रात्रि भोज के दौरान, बत्तियाँ जला दी गईं, हालाँकि बाहर अभी भी काफी उजाला था, जिससे आँखों के सामने, बगीचे में, गोधूलि बेला में टिमटिमाते ग्रीष्मकालीन घरों के बीच, शाम के धुंधले प्रेतों की तरह, गलियाँ दिखाई देने लगीं, जिनकी धूसर हरियाली डूबते सूरज की अंतिम किरणों से छन रही थी और जिस दीपक से रोशन कमरे में हम भोजन कर रहे थे, वहाँ से कांच के पार दिखाई दे रही थी—अब वैसी नहीं जैसी दोपहर में वहाँ चाय पी रही महिलाओं के बारे में कहा जा सकता था, नीले और सुनहरे गलियारे में, एक चमकदार और टपकते जाल में फंसी हुई—बल्कि एक अलौकिक प्रकाश द्वारा देखे गए विशाल आकार के फीके और हरे रंग के एक्वेरियम की वनस्पति की तरह। लोग मेज से उठने लगे; और यदि प्रत्येक समूह अपने भोजन के दौरान, भले ही उन्होंने पूरा समय बगल की मेज पर बैठे समूह को परखने, पहचानने और नाम बताने में बिताया हो, अपने-अपने

समूह के बारे में पूरी तरह एकजुट रहा हो, तो भी वह आकर्षण शक्ति जो उन्हें शाम के मेजबान के चारों ओर खींचे रखती थी, उस क्षण कमजोर पड़ जाती थी जब वे कॉफी के लिए उसी गलियारे में जाते थे जिसका उपयोग चाय-पार्टियों के लिए किया गया था; अक्सर ऐसा होता था कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते समय, यात्रा कर रहे किसी समूह के एक या अधिक सदस्य गिर जाते थे, जो प्रतिद्वंद्वी समूह के अप्रतिरोध्य आकर्षण में आकर, क्षण भर के लिए अपने समूह से अलग हो जाते थे, और उनकी जगह उन महिलाओं या पुरुषों ने ले ली जो दोस्तों से बात करने के बाद जल्दी से यह कहकर चले जाते थे, "मुझे सच में जाना है: मैं श्रीमान फलां-फलां के साथ भोजन कर रहा हूँ।" और उस क्षण के लिए, उन्हें देखकर आपको दो अलग-अलग गुलदस्तों की याद आती, जिन्होंने अपने कुछ फूल आपस में बदल लिए हों। फिर गलियारा भी खाली होने लगा। अक्सर, रात के खाने के बाद भी बाहर थोड़ी रोशनी बची रहती थी, इसलिए वे इस लंबे गलियारे को रोशन नहीं करते थे। कांच के दूसरी ओर झुके पेड़ों से घिरा यह गलियारा किसी घने और छायादार बगीचे की घुमावदार गली जैसा लगता था। इस धुंधलेपन में कहीं-कहीं कोई सुंदर महिला भोजन करने के लिए रुकती थी। एक शाम जब मैं बाहर जाते हुए इस गलियारे से गुज़रा, तो मैंने अजनबियों के एक समूह के बीच सुंदर राजकुमारी डी लक्ज़मबर्ग को बैठे देखा। मैंने बिना रुके अपनी टोपी उठाई। उन्होंने मुझे पहचान लिया और मुस्कुराते हुए सिर झुकाया; उनके झुके हुए सिर के ऊपर, लेकिन उनकी हरकत से ही, मधुरता से मेरे लिए कुछ शब्द सुनाई दिए, जो शायद एक ज़ोरदार 'शुभ संध्या' थे, जिसका उद्देश्य मुझे रोकना नहीं था, बल्कि केवल उस हावभाव को पूरा करना था, उसे एक मौखिक अभिवादन बनाना था। लेकिन उसके शब्द इतने अस्पष्ट रहे और जो थोड़ी-बहुत आवाज़ मुझे सुनाई दी, वह इतनी मधुर और

संगीतमय थी कि मानो पेड़ों की धुंधली शाखाओं के बीच कोई बुलबुल गाने लगी हो। अगर ऐसा होता कि सेंट-लूप अपने उन दोस्तों के साथ शाम बिताने के लिए, जिनसे हम मिले थे, पास के किसी गाँव के कैसिनो में जाने का फैसला करता और उन्हें अपने साथ ले जाकर मुझे अकेले एक गाड़ी में बिठा देता, तो मैं ड्राइवर से कहता कि वह जितनी तेज़ी से हो सके गाड़ी चलाए, ताकि वे मिनट जल्दी बीत जाएँ जो मुझे अकेले बिताने पड़ रहे थे, क्योंकि मेरे पास कोई ऐसा नहीं था जो मुझे अपनी संवेदनशीलता को स्वयं ही जगाने के दायित्व से मुक्त कर सके—यानी, इंजन को उल्टा घुमाकर, उस निष्क्रियता से बाहर निकाल सके जिसमें मैं एक मशीन की तरह फंसा हुआ था—उन बदलावों के साथ जो मुझे रिवेबेल पहुँचने के बाद से दूसरे लोगों से मिल रहे थे। उन गलियों में, जहाँ मुश्किल से एक गाड़ी के लिए जगह थी और घना अंधेरा था, सामने से आ रही गाड़ी से टक्कर का खतरा, चट्टान के किनारे की जगह-जगह से टूटती हुई ज़मीन की अस्थिरता, समुद्र से उसकी सीधी ढलान की निकटता - इनमें से किसी भी चीज़ ने मुझ पर वह हल्का सा भी प्रभाव नहीं डाला जो खतरे के डर और दृष्टि को मेरी तर्कशक्ति के दायरे में लाने के लिए आवश्यक होता। क्योंकि जिस प्रकार प्रसिद्धि पाने की इच्छा नहीं, बल्कि परिश्रम करने की आदत ही हमें एक पूर्ण कृति का निर्माण करने में सक्षम बनाती है, उसी प्रकार वर्तमान क्षण की सक्रियता नहीं, बल्कि अतीत के ज्ञानपूर्ण चिंतन ही हमें भविष्य की रक्षा करने में मदद करते हैं। लेकिन अगर इससे पहले ही, रिवेबेल पहुँचने पर, मैंने तर्क और आत्म-नियंत्रण के उन सहारे को हमेशा के लिए त्याग दिया था जो हमारी कमजोरी को सही रास्ते पर चलने में मदद करते हैं, अगर अब मैं खुद को एक तरह के नैतिक गतिरोध का शिकार पा रहा था, तो जो शराब मैंने पी थी, उसने मेरी नसों पर अनावश्यक दबाव डालकर, गुजरते हुए पलों को एक ऐसी गुणवत्ता,

एक ऐसा आकर्षण दे दिया था जिसका परिणाम यह नहीं था कि मैं उन्हें रोकने या उनके आने को रोकने के लिए अधिक तैयार या अधिक दृढ़ हो जाऊँ; क्योंकि इसने मुझे अपने जीवन में किसी भी चीज़ से हज़ार गुना अधिक उन्हें पसंद करने पर मजबूर कर दिया, लेकिन मेरे उत्साह ने मुझे उन्हें बाकी सब चीज़ों से अलग कर दिया; मैं वर्तमान में सिमट गया था, जैसे नायक या शराबी होते हैं; क्षण भर के लिए ग्रहण लग गया था, मेरा अतीत अब मेरे सामने अपनी वह छाया नहीं दिखा रहा था जिसे हम अपना भविष्य कहते हैं; अपने जीवन का लक्ष्य अब उस अतीत के सपनों को साकार करने में नहीं, बल्कि वर्तमान क्षण की खुशी में रखते हुए, मैं अब इसके आगे क्या है, कुछ भी नहीं देख पा रहा था। इसलिए, एक विरोधाभास के कारण, जो हालांकि केवल दिखावटी था, ठीक उसी क्षण जब मैं एक अपरिचित आनंद का अनुभव कर रहा था, यह महसूस कर रहा था कि मेरा जीवन अभी भी सुखी हो सकता है, तभी यह मेरी दृष्टि में अधिक मूल्यवान हो जाना चाहिए था; ठीक इसी क्षण, उन चिंताओं से मुक्त होकर जो मेरे जीवन ने अब तक मुझे दी थीं, मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के इसे एक संयोग के भरोसे छोड़ दिया। आखिरकार, मैं तो बस एक शाम में उस लापरवाही को समेट रहा था जो अधिकांश लोगों के जीवन भर बिखरी रहती है, जिसमें वे हर दिन अनावश्यक रूप से समुद्री यात्रा, हवाई जहाज या मोटर-कार की यात्रा के खतरों का सामना करते हैं, जबकि घर पर उनका इंतज़ार वह प्राणी कर रहा होता है जिसका जीवन उनकी मृत्यु चकनाचूर कर देगी, या जब उनके मस्तिष्क के नाज़ुक भंडार में अभी भी वह पुस्तक संग्रहित होती है जिसका आगामी प्रकाशन ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। और ऐसा ही रिवेबेल रेस्तरां में भी होता था, उन शामों में जब हम रात के खाने के बाद वहीं रुक जाते थे, अगर कोई मुझे जान से मारने के इरादे से आता, क्योंकि अब मुझे कुछ

भी दिखाई नहीं देता था, सिवाय एक दूर के दृश्य के जो वास्तविकता से परे था - मेरी दादी, मेरा आने वाला जीवन, वे किताबें जो मैं लिखने वाली थी, क्योंकि अब मैं तन और मन से पूरी तरह बगल की मेज पर बैठी महिला की खुशबू, वेटरों की विनम्रता, बैंड द्वारा बजाए जा रहे वाल्ट्ज की धुन से चिपकी हुई थी, क्योंकि मैं अपनी तात्कालिक अनुभूति से चिपकी हुई थी, जिसकी सीमाओं से परे कोई विस्तार नहीं था, और न ही उससे अलग न होने के अलावा कोई और उद्देश्य था, तो मैं उस अनुभूति में और उसके साथ मर जाती, मैं बिना किसी प्रतिरोध के, बिना किसी हरकत के खुद को गला घोंटने देती, एक मधुमक्खी जो तंबाकू के धुएं से मदहोश हो गई हो और जिसने अपने श्रम के संचय और अपने छत्ते की आशाओं को संरक्षित करने के बारे में सोचना बंद कर दिया हो।

मुझे यहाँ यह जोड़ना चाहिए कि मेरी उमंग की तीव्रता के विपरीत, जिस तुच्छता में सबसे गंभीर मामले समाहित हो गए थे, उसमें अंततः मैडम सिमोनट और उनकी सहेलियाँ भी शामिल हो गईं। उन्हें जानने का प्रयास अब मुझे आसान लग रहा था, लेकिन शायद ही इसके लिए प्रयास करना उचित था, क्योंकि मेरी तात्कालिक अनुभूति ही, अपनी असाधारण तीव्रता के कारण, अपने मामूली बदलावों से उत्पन्न आनंद के कारण, अपनी निरंतरता के कारण, मेरे लिए महत्वपूर्ण थी; बाकी सब कुछ—माता-पिता, काम, सुख, बालबेक की लड़कियाँ—मेरे लिए उतनी ही महत्वहीन थीं जितनी तेज़ हवा में झाग का एक कण, जो उसे कहीं टिकने नहीं देता—इस आंतरिक शक्ति के संबंध के अलावा अस्तित्वहीन थीं: नशा एक या दो घंटे के लिए एक व्यक्तिपरक आदर्शवाद, शुद्ध घटनावाद को वास्तविक बना देता है; अब केवल दिखावे ही रह जाते हैं, हमारे उदात्त स्व के कार्य के रूप में ही अस्तित्व में रहते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि हमारे पास सच्चा प्रेम है, तो वह ऐसी परिस्थितियों में जीवित नहीं रह

सकता। लेकिन हम इतनी स्पष्टता से महसूस करते हैं, मानो किसी नए वातावरण में हों, कि अज्ञात दबावों ने उस भावना के आयामों को इस कदर बदल दिया है कि हम अब उसे पुराने तरीके से नहीं समझ सकते। वह वास्तव में अभी भी मौजूद है और हम उसे पा लेंगे, लेकिन एक अलग स्थान पर, अब हम पर बोझ नहीं, वर्तमान की अनुभूति से संतुष्ट, एक ऐसी अनुभूति जो हमारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि जो वास्तव में मौजूद नहीं है, उसके बारे में हम सोचते भी नहीं। दुर्भाग्य से, जो गुणांक हमारे मूल्यों को इस प्रकार बदलता है, वह केवल नशे की अवस्था में ही बदलता है। जिन लोगों ने अपना सारा महत्व खो दिया था, जिन्हें हमने अपनी सांसों से साबुन के बुलबुलों की तरह बिखेर दिया था, वे कल फिर से अपना महत्व प्राप्त कर लेंगे; हमें उस काम में फिर से मन लगाने की कोशिश करनी होगी जिसका आज शाम कोई महत्व नहीं रह गया था। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि कल के ये गणित, ठीक वैसे ही जैसे कल के थे, जिनकी समस्याओं में हम स्वयं को अविभाज्य रूप से उलझा हुआ पाएंगे, वे ही इन क्षणों में भी हम पर हावी हैं, और केवल हम ही उनके शासन से अनभिज्ञ हैं। यदि हमारे आस-पास कोई स्त्री हो, चाहे वह नेक हो या शत्रुतापूर्ण, तो एक घंटे पहले जो प्रश्न इतना कठिन लग रहा था—कि क्या हम उसका दिल जीत पाएंगे—वह अब हमें लाखों गुना आसान लगता है, हालांकि वास्तव में वह आसान नहीं हुआ है, क्योंकि केवल हमारी अपनी दृष्टि में, हमारे अंतर्मन में ही परिवर्तन आया है। और वह इस समय हमसे उतनी ही नाराज़ है जितनी हम कल इस बात से नाराज़ होंगे कि हमने दूत को सौ फ्रैंक दे दिए, और उसी कारण से जो हमारे मामले में केवल विलंबित हुआ है, अर्थात् नशे की अनुपस्थिति।

रिवेबेल में मौजूद महिलाओं में से मैं किसी को नहीं जानता था, और वे मेरे नशे का हिस्सा थीं, ठीक वैसे ही जैसे दर्पण में उनकी परछाईं होती है।

इसलिए वे मुझे अब मैडम साइमोनेट से हज़ार गुना ज़्यादा आकर्षक लग रही थीं, जो अब लगभग गायब हो चुकी थीं। उनमें से एक, युवा, गोरी, अकेली, उदास चेहरे के साथ, जिसके सिर पर जंगली फूलों से सजी भूसे की टोपी थी, ने एक पल के लिए स्वप्निल भाव से मेरी ओर देखा और मुझे वह आकर्षक लगी। फिर दूसरी की बारी आई, फिर तीसरी की; और अंत में दमकते गालों वाली एक सांवली महिला की। उनमें से लगभग सभी को, अगर मैं नहीं तो, सेंट-लूप जानता था।

दरअसल, अपनी वर्तमान प्रेमिका से मिलने से पहले, वह प्रेम-संबंधों की सीमित दुनिया में ही इतना डूबा रहता था कि रिवेबेल में उन शामों को भोजन करने वाली सभी महिलाओं में से, जिनमें से कई संयोगवश वहाँ पहुँच गई थीं - कुछ अपने प्रेमियों से मिलने के लिए, तो कुछ नए प्रेमी की तलाश में - शायद ही कोई ऐसी महिला थी जिसे वह न जानता हो, क्योंकि उसने या उसके किसी मित्र ने कम से कम एक रात उनके साथ बिताई थी। यदि वे पुरुषों के साथ होतीं तो वह उन्हें प्रणाम नहीं करता था, और वे, यद्यपि वे उसे दूसरों की तुलना में अधिक देखती थीं, क्योंकि उसकी प्रेमिका के अलावा हर महिला के प्रति उसकी उदासीनता ने उसे उनकी नज़रों में एक विशेष आकर्षण दे दिया था, फिर भी ऐसा प्रतीत होता था मानो उसे जानती ही न हों। लेकिन आप उन्हें फुसफुसाते हुए सुन सकते थे: "ये तो जवान सेंट-लूप है। लगता है वो अब भी अपनी उस लड़की के प्यार में पागल है। बुरी तरह से दीवाना है। कितना प्यारा लड़का है! मुझे लगता है वो कमाल का है; और क्या स्टाइल है! कुछ लड़कियों की किस्मत कितनी अच्छी होती है, है ना? और वो हर तरह से बहुत अच्छा है। मैंने उसे डी'ऑरलियन्स के साथ रहते हुए बहुत देखा था। वो दोनों बिल्कुल inseparable थे। उस समय वो खूब मौज-मस्ती कर रहा था। लेकिन अब उसने सब कुछ छोड़ दिया है, वो शिकायत नहीं कर

सकती। उसकी किस्मत अच्छी चल रही है, ये वो कह सकती है। और मैं आपसे पूछती हूँ, आखिर उसे उसमें क्या दिखता है? आखिर वो थोड़ा बेवकूफ ही होगा। उसके पैर नाव जैसे हैं, मूंछें किसी अमेरिकी जैसी हैं, और उसकी अंडरवियर गंदी हैं। मैं आपको बता सकती हूँ, एक छोटी सी दुकान की लड़की भी अपनी निकर में दिखने में शर्म महसूस करेगी। बस एक पल के लिए उसकी आँखों में देखो; आप उसके जैसे आदमी के लिए आग में कूद जाएँगे।" चुप रहो, एक शब्द भी मत बोलो; उसने मुझे देख लिया है; देखो, वह मुस्कुरा रहा है। ओह, उसे मैं अच्छी तरह याद हूँ। बस तुम मेरा नाम उससे ले लो, और देखो वह क्या कहता है!" इन लड़कियों और उसके बीच मुझे आपसी समझ की एक झलक दिखाई दी। मैं चाहती थी कि वह मुझे उनसे मिलवा दे, ताकि मैं उनसे मिलने का प्रस्ताव रख सकूँ और वे मुझे मिलवा दें, भले ही मैं उन्हें निभा न पाऊँ। क्योंकि अन्यथा, उनकी छवि मेरी स्मृति में हमेशा के लिए उस पहलू से रहित रहेगी—जैसे कि वह किसी पर्दे से ढकी हो—जो हर स्त्री में भिन्न होता है, जिसकी हम किसी स्त्री में कल्पना तब तक नहीं कर सकते जब तक हम उसे वास्तव में देख न लें, और जो केवल उसकी उस नज़र में प्रकट होता है जो हमारी इच्छा को स्वीकार करती है और उसे पूरा करने का वादा करती है। फिर भी, इस प्रकार सिमट जाने पर भी, उनका स्वरूप मेरे लिए उन महिलाओं से कहीं अधिक था जिन्हें मैं गुणी मानता था, और मुझे ऐसा नहीं लगा कि उनका स्वरूप उनके स्वरूप की तरह सपाट, भावहीन, ठोस रूप से गढ़ा हुआ था। बेशक, यह मेरे लिए वैसा नहीं था जैसा सेंट-लूप के लिए रहा होगा, जो स्मृति के बल पर, उन भावहीन चेहरों की उदासीनता के नीचे, जो उन्हें पहचानने का दिखावा नहीं कर रहे थे, या उस नीरस औपचारिक अभिवादन के नीचे, जो किसी और को भी संबोधित किया जा सकता था, बिखरे बालों के बीच से एक बेहोश मुँह,

आधी बंद आँखों की एक जोड़ी, एक पूरी खामोश तस्वीर देख सका, ठीक वैसे ही जैसे चित्रकार अपने दर्शकों की इंद्रियों को धोखा देने के लिए एक शालीन आवरण से ढक देते हैं। निःसंदेह, मेरे लिए, जिसे लगता था कि मेरे व्यक्तित्व का कोई अंश इस या उस महिला की सतह में प्रवेश नहीं कर पाया है, या जीवन के उन अज्ञात रास्तों पर उनके द्वारा धारण नहीं किया जाएगा, वे चेहरे भावहीन ही रहे। लेकिन इतना जानना ही काफी था कि वे खुलते हैं, ताकि मुझे वे इतने कीमती लगें जितना मैं उन्हें तब नहीं समझता जब वे प्रेम की यादों से भरे लॉकेट के बजाय कीमती पदक होते। जहाँ तक रॉबर्ट की बात है, जो मेज पर मुश्किल से अपनी जगह पर टिक पाता था, दरबारी की मुस्कान के पीछे अपने योद्धा के कर्मठ प्रेम को छुपाए हुए था—जब मैंने उसे गौर से देखा तो मुझे समझ आया कि उसके त्रिकोणीय चेहरे की मजबूत बनावट उसके पूर्वजों के चेहरों से कितनी मिलती-जुलती थी, एक ऐसा चेहरा जो किसी कोमल विद्यार्थी की बजाय किसी उत्साही धनुर्धर के लिए बना था। उसकी कोमल त्वचा के नीचे उसकी मजबूत बनावट, सामंती वास्तुकला स्पष्ट थी। उसका चेहरा उन पुराने तहखानों की याद दिलाता था जिनकी अप्रयुक्त प्राचीरें आज भी दिखाई देती हैं, हालाँकि अंदर उन्हें पुस्तकालयों में बदल दिया गया है।

बालबेक लौटते समय, जिन खूबसूरत अजनबियों से उसने मेरा परिचय कराया था, उनमें से एक के बारे में मैं बार-बार बिना रुके, लगभग अनजाने में ही दोहराता रहता था: "कितनी मनमोहक स्त्री है!" जैसे कोई गीत की धुन में गुनगुनाता है। मैं मानता हूँ कि ये शब्द किसी सोच-समझकर लिए गए निर्णय से ज़्यादा मेरी घबराहट के कारण निकले थे। फिर भी यह सच था कि अगर मेरे पास एक हज़ार फ़्रैंक होते और उस समय कोई जौहरी की दुकान खुली होती, तो मैं उस महिला के लिए एक अंगूठी ज़रूर खरीद लेता। जब हमारे जीवन के पल इतने अलग-अलग

परिवेशों में घटित होते हैं, तो हम पाते हैं कि हम अपने बारे में बहुत कुछ ऐसे लोगों को बता देते हैं जिनमें अगले दिन हमारी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं रहती। लेकिन हम महसूस करते हैं कि हमने रात भर उनसे जो कहा, उसके लिए हम अभी भी ज़िम्मेदार हैं और हमें अपने वादे निभाने ही होंगे।

इन शामों को जब मैं होटल में सामान्य से देर से लौटता था, तो मुझे उस कमरे में बिस्तर को पहचानकर खुशी होती थी, जो अब मुझे शत्रुतापूर्ण नहीं लगता था। जिस बिस्तर पर, मेरे आगमन के दिन, मैंने सोचा था कि मुझे कभी आराम नहीं मिलेगा, जबकि अब मेरे थके हुए अंग उस पर सहारा ढूंढ रहे थे; इस प्रकार, मेरी जांघें, कूल्हे, कंधे बारी-बारी से उस गद्दे पर बिछी चादरों में धंस रहे थे, मानो मेरी थकान, एक मूर्तिकार की तरह, पूरे मानव शरीर का सांचा बनाना चाहती हो। लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी; मुझे सुबह होने का आभास हो रहा था; मन की शांति, शरीर का स्वास्थ्य, अब मेरे हाथ से निकल चुके थे। मेरी पीड़ा में ऐसा लग रहा था कि मैं उन्हें कभी वापस नहीं पा सकूंगा। अगर मुझे उन्हें पाना था, तो मुझे बहुत देर तक सोना पड़ता। लेकिन फिर, अगर मैं ऊंघने लगता, तो किसी भी हालत में दो घंटे में समुद्र तट पर होने वाले संगीत कार्यक्रम से जाग जाता। अचानक मुझे नींद आ गई, मैं उस गहरी नींद में डूब गया जिसमें हमारे लिए बचपन की यादें, बीते वर्षों की यादें, खोई हुई भावनाएं, देहहीनता, आत्मा का पुनर्जन्म, मृतकों का आह्वान, पागलपन के भ्रम, प्राकृतिक जगत के सबसे मूलभूत स्तर की ओर वापसी (क्योंकि हम कहते हैं कि हम अक्सर अपने सपनों में जानवर देखते हैं, लेकिन हम लगभग हमेशा यह भूल जाते हैं कि तब हम स्वयं एक जानवर होते हैं जो उस तर्क शक्ति से वंचित होता है जो चीजों पर निश्चितता का प्रकाश डालती है; इसके विपरीत हम जीवन के तमाशे के सामने केवल एक संदिग्ध दृष्टि प्रस्तुत करते हैं, जो हर पल विस्मृति द्वारा नए सिरे से नष्ट हो

जाती है, पिछली वास्तविकता अगली वास्तविकता के सामने फीकी पड़ जाती है जैसे मैजिक लैंटर्न का एक प्रक्षेपण अगले के सामने फीका पड़ जाता है जब हम स्लाइड बदलते हैं), वे सभी रहस्य जिन्हें हम स्वयं को न जानने का भ्रम करते हैं और जिनमें वास्तव में हम लगभग हर रात प्रवेश करते हैं, जैसे हम विनाश और पुनरुत्थान के दूसरे महान रहस्य में प्रवेश करते हैं। रिवेबेल में खाए गए भोजन को पचाने में कठिनाई के कारण मैं और भी अधिक आवारा बन गया था, मेरे अतीत के धुंधले क्षेत्रों के क्रमिक और टिमटिमाते प्रकाश ने मुझे एक ऐसा प्राणी बना दिया जिसकी परम खुशी लेग्रैंडिन से मिलने की होती, जिससे मैं अभी-अभी अपने सपने में बात कर रहा था।

और फिर, एक नए परिवेश में मेरा अपना जीवन भी मुझसे पूरी तरह छिप गया, मानो मंच के ठीक सामने एक बूंद डाली गई हो, जिसके पीछे दृश्य निहारने वाले लोग व्यस्त हों और अभिनेता एक नए रूप में प्रकट हों। जिस भूमिका के लिए मुझे चुना गया था, वह किसी प्राच्य परीकथा जैसी थी; इस अंतर्निहित दृश्य के अत्यधिक निकट होने के कारण मुझे अपने अतीत या स्वयं के बारे में कोई जानकारी नहीं थी; मैं बस एक ऐसा व्यक्ति था जिसे बेंत से पीटा गया था और एक ऐसे अपराध के लिए विभिन्न दंड भुगतने पड़े थे जिसकी प्रकृति मैं समझ नहीं पा रहा था, हालाँकि वास्तव में वह अपराध बहुत अधिक पोर्ट वाइन पीना था। अचानक मैं जागा और पाया कि लंबी नींद के कारण मैंने संगीत की एक भी धुन नहीं सुनी थी। दोपहर हो चुकी थी; मैंने कई बार बिस्तर पर उठने की कोशिश की, जो पहले तो व्यर्थ रही और बार-बार तकिए पर गिरती रही, लेकिन ये छोटी-छोटी गिरावटें नींद और अन्य प्रकार के नशे का परिणाम होती हैं, चाहे वह शराब के कारण हो या बीमारी से उबरने के कारण। इसके अलावा, समय देखे बिना ही मुझे यकीन हो गया था कि

दोपहर हो चुकी है। पिछली रात मैं एक खाली बर्तन की तरह था, बिना वज़न के, और (चूंकि स्थिर रहने के लिए मुझे पहले बिस्तर पर जाना पड़ा था, और चुप रहने के लिए सोना पड़ा था) मैं हिलने-डुलने और बात करने से खुद को रोक नहीं पा रहा था; मुझमें अब कोई स्थिरता नहीं थी, कोई गुरुत्वाकर्षण केंद्र नहीं था, मैं गति में था और ऐसा लग रहा था कि मैं अपने नीरस रास्ते पर तब तक चलता रहूंगा जब तक चांद तक न पहुंच जाऊं। लेकिन अगर सोते समय मेरी आंखों ने समय नहीं देखा, तो भी मेरे शरीर ने समय की गणना कर ली थी, घंटों को माप लिया था; किसी सतही रूप से चिह्नित और अंकों वाले डायल पर नहीं, बल्कि मेरी सारी पुनर्जीवित शक्तियों के लगातार बढ़ते भार से, जो एक शक्तिशाली घड़ी की तरह, मेरे मस्तिष्क से मेरे शरीर के बाकी हिस्सों में धीरे-धीरे उतर रही थीं, जहां अब उनकी अटूट प्रचुरता मेरे घुटनों से ऊपर तक पहुंच गई थी। यदि यह सच है कि एक समय समुद्र हमारा मूल तत्व था, जिसमें हमें अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करने के लिए अपने ठंडे रक्त को डुबोना पड़ता था, तो यही बात नींद की मानसिक अनुपस्थिति, विस्मृति के साथ भी है; ऐसा लगता है कि हम कुछ घंटों के लिए समय से विमुख हो जाते हैं, लेकिन उस अंतराल में बिना खर्च किए एकत्रित की गई शक्तियाँ समय को घड़ी के पेंडुलम या रेतघड़ी के टूटते पिरामिड की तरह सटीक रूप से मापती हैं। ऐसी नींद से जागना उतना ही कठिन होता है जितना कि लंबे समय तक जागते रहना, क्योंकि सब कुछ इतना दृढ़ता से बना रहता है; और यदि यह सच है कि कुछ मादक पदार्थ हमें सुलाते हैं, तो कुछ समय के लिए सोना उससे भी अधिक शक्तिशाली मादक पदार्थ है, जिसके बाद हमें जागने में बहुत कठिनाई होती है। एक नाविक की तरह जो अपने जहाज को, जो अभी भी लहरों से हिल रहा है, बंदरगाह को स्पष्ट रूप से देख सकता है जहाँ वह उसे बांध सकता है, मुझे समय देखने और उठने

का बिल्कुल स्पष्ट विचार था, लेकिन मेरा शरीर हर क्षण नींद की लहरों में वापस खींच लिया जाता था; उतरना मुश्किल था, और इससे पहले कि मैं ऐसी स्थिति में पहुँच पाता जहाँ मैं अपनी घड़ी तक पहुँच सकूँ और अपने अकड़े हुए अंगों में जमा हुई भारी सामग्री द्वारा दर्शाए गए समय का मिलान कर सकूँ, मैं दो-तीन बार और अपने तकिये पर गिर पड़ा।

आखिरकार मैं उस तक पहुँच सका और उसे पढ़ सका: "दोपहर के दो बज रहे हैं!" मैंने घंटी बजाई; लेकिन तुरंत ही मैं फिर से गहरी नींद में डूब गया, जो इस बार अनंत काल तक चली होगी, अगर मैं जागने पर मिली ताजगी और बीते हुए विशाल रात्रि के दृश्य को देखकर अंदाजा लगाऊं। फिर भी, चूंकि मेरी नींद फ्रांस्वा के आने से खुली थी, और उसका आना मेरी घंटी बजाने के कारण हुआ था, इसलिए यह दूसरी नींद, जो मुझे पहली नींद से लंबी लगी और जिसने मुझे इतना सुकून और विस्मृति दी, आधे मिनट से ज्यादा नहीं चली होगी।

मेरी दादी ने मेरे बेडरूम का दरवाजा खोला; मैंने उनसे लेग्रैंडिन परिवार के बारे में कई सवाल पूछे।

यह कहना पर्याप्त नहीं होगा कि मैं शांति और स्वास्थ्य में लौट आया था, क्योंकि कल तक उनके और मेरे बीच का फासला महज़ दूरी का नहीं था। पूरी रात मैंने विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए बिताई थी, और अब न केवल मैं फिर से उनकी उपस्थिति में था, बल्कि वे एक बार फिर मेरे भीतर समा गए थे। मेरे खाली दिमाग की सतह के नीचे कुछ निश्चित और अभी भी कुछ हद तक दर्दनाक बिंदुओं पर, जो एक दिन टूट जाएगा और मेरे विचारों को हमेशा के लिए मुक्त कर देगा, उन विचारों ने एक बार फिर अपना उचित स्थान ग्रहण कर लिया था और उस अस्तित्व को फिर से प्राप्त कर लिया था जिससे अब तक, अफसोस, उन्हें कोई लाभ नहीं मिल पाया था।

एक बार फिर मैं नींद न आने की असंभवता से, उस प्रलय से, अपने मानसिक तूफानों के उस भयानक अंत से बच निकला था। अब मुझे उन खतरों का ज़रा भी डर नहीं था जो पिछली शाम मुझ पर मंडरा रहे थे, जब मेरी शांति भंग हो गई थी। मेरे सामने एक नया जीवन खुल रहा था; बिना एक भी हरकत किए, क्योंकि मैं अभी भी टूटा हुआ था, हालांकि पूरी तरह से सचेत और स्वस्थ था, मैंने अपनी थकान को हल्के मन से महसूस किया; इसने मेरे पैरों और हाथों की हड्डियों को अलग-अलग कर दिया था, जिन्हें मैं अपने सामने इकट्ठा होते हुए महसूस कर सकता था, एक साथ जुड़ने के लिए तैयार, और जिन्हें मैं केवल गाकर, कहानी के निर्माता की तरह, जीवन में वापस लाना चाहता था।

अचानक मुझे उस उदास चेहरे वाली गोरी लड़की की याद आ गई जिसे मैंने रिवेबेल में देखा था, जहाँ उसने एक पल के लिए मेरी ओर देखा था। शाम के दौरान कई अन्य लोग भी मुझे आकर्षक लगे थे; अब केवल वही मेरी यादों के धुंधले कोनों से उभरी। मुझे लगा था कि उसने मुझे देखा है, मुझे उम्मीद थी कि कोई वेटर फुसफुसाकर उसका संदेश लेकर मेरे पास आएगा। सेंट-लूप उसे नहीं जानता था और सोचता था कि वह संभ्रांत परिवार से है। उसे देखना, उसे लगातार देखना बहुत मुश्किल होगा। लेकिन मैं कोई भी त्याग करने को तैयार था, अब मैं केवल उसी के बारे में सोच रहा था। दर्शनशास्त्र अक्सर स्वतंत्र और अनिवार्य कार्यों में अंतर करता है। शायद ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है जिसके हम इतने पूर्णतः अधीन हों, जितनी वह आवश्यकता जो क्रिया के दौरान नियंत्रित रहने वाली एक बढ़ती हुई शक्ति के बल पर, (एक बार जब हमारा मन शांत हो जाता है) उस स्मृति को सर्वथा उभरने देती है जो हमारी उदासीनता के वितरित दबाव के कारण अन्य स्मृतियों के साथ घुलमिल गई थी, और सतह पर आ जाती है, क्योंकि हमें अज्ञात ही उसमें अन्य सभी स्मृतियों से

कहीं अधिक एक ऐसा आकर्षण होता है जिसका हमें अगले दिन तक एहसास नहीं होता। और शायद कोई क्रिया इतनी स्वतंत्र भी नहीं है, क्योंकि यह अभी भी आदत से प्रेरित नहीं है, उस प्रकार के मानसिक भ्रम से नहीं जो प्रेम में होने पर किसी विशेष व्यक्ति की छवि के बार-बार प्रकट होने को सुगम बनाता है।

यह उस दिन के ठीक बाद का दिन था जब मैंने समुद्र की पृष्ठभूमि में सुंदर युवतियों का जुलूस गुजरते देखा था। मैंने होटल में ठहरे कई आगंतुकों से उनके बारे में सवाल किए, जो लगभग हर साल बालबेक आते थे। वे मुझे कुछ भी नहीं बता सके। बाद में, एक तस्वीर ने मुझे इसका कारण समझाया। अब कौन उनमें, जो अभी भी पूरी तरह से बदल चुकी उम्र से बड़ी हैं, उस आकारहीन, मनमोहक समूह को पहचान सकता है, जो अभी भी पूरी तरह से शिशुवत है, उन छोटी लड़कियों का समूह जो कुछ साल पहले तक एक तंबू के चारों ओर रेत पर घेरा बनाकर बैठी हुई दिखाई देती थीं; एक तरह का सफेद और धुंधला तारामंडल जिसमें कोई बाकियों से ज्यादा चमकती आँखों की एक जोड़ी, एक शरारती चेहरा, सुनहरे बाल देख सकता था, और फिर उन्हें धुंधले और दूधिया बादल में लगभग तुरंत ही खो देता था।

निःसंदेह, उन शुरुआती वर्षों में, जो अभी हाल ही के थे, यह समूह के बारे में मेरी धारणा नहीं थी, बल्कि स्वयं समूह ही अस्पष्ट था। तब वे बच्चे, बिल्कुल शिशु, अपने विकास के उस प्रारंभिक चरण में थे जब व्यक्तित्व ने हर चेहरे पर अपनी छाप नहीं छोड़ी थी। उन आदिम जीवों की तरह जिनमें व्यक्ति मुश्किल से ही अपने आप में विद्यमान होता है, जो प्रवाल भित्ति में समाहित होता है न कि उसे बनाने वाले प्रवाल कीटों में, वे अभी भी एक-दूसरे से चिपके हुए थे। कभी-कभी एक अपने पड़ोसी को धक्का दे देती, और फिर एक बेकाबू हंसी, जो उनके निजी जीवन की एकमात्र

अभिव्यक्ति प्रतीत होती थी, उन सभी को एक साथ झकझोर देती, उन अनिश्चित, मुस्कुराते चेहरों को एक ही समूह के जमने में, झिलमिलाते और कांपते हुए, धुंधला कर देती। उनकी एक पुरानी तस्वीर में, जो उन्होंने एक दिन मुझे दी थी, और जिसे मैंने तब से संभाल कर रखा है, उनके शिशु समूह में पहले से ही उतने ही प्रतिभागी मौजूद हैं जितने बाद में उनके स्त्री जुलूस में; इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय भी उनकी उपस्थिति ने समुद्र तट पर एक असामान्य छाप छोड़ी होगी जिसने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया होगा; लेकिन तर्क-वितर्क की प्रक्रिया के बिना उनमें से प्रत्येक को पहचानना संभव नहीं है, जिससे बचपन के दौरान होने वाले सभी संभावित परिवर्तनों के लिए एक स्पष्ट क्षेत्र बन जाता है, उस बिंदु तक जहां एक पुनर्निर्मित रूप दूसरे व्यक्तित्व पर हावी होने लगता है, जिसकी पहचान भी आवश्यक है, और जिसका सुंदर चेहरा, बड़े कद और घुंघराले बालों के कारण, संभवतः कभी वह झुर्रीदार और शरारती सी मुस्कान रहा होगा जो फोटो एल्बम हमें दिखाता है; और इन लड़कियों की शारीरिक विशेषताओं द्वारा थोड़े समय में तय की गई दूरी ने उन्हें एक ऐसे मानदंड के रूप में स्थापित कर दिया जो किसी काम का नहीं था, जबकि उनमें जो समानताएँ थीं और, एक तरह से, सामूहिक रूप से, जो उस प्रारंभिक अवस्था में स्पष्ट रूप से दिखाई देती थीं, कभी-कभी ऐसा होता था कि इस तस्वीर में उनके सबसे करीबी दोस्त भी एक-दूसरे को गलत समझ बैठते थे, यहाँ तक कि अंततः इस प्रश्न का समाधान केवल पोशाक के किसी ऐसे विवरण से ही हो पाता था जिसके बारे में उनमें से कोई एक निश्चित रूप से कह सकती थी कि उसने खुद पहनी है, न कि किसी और ने। उन दिनों से, जो उस दिन से बहुत अलग थे जिस दिन मैंने उन्हें 'फ्रंट' पर टहलते देखा था, इतना अलग और फिर भी समय में इतना करीब, वे अब भी ठहाकों के बीच आ जाती थीं, जैसा

कि मैंने उस दोपहर देखा था, लेकिन उस तरह की हंसी जो अब बचपन की रुक-रुक कर और लगभग स्वचालित हंसी नहीं थी, एक आवेगी हंसी जो उन दिनों लगातार उनके सिर को घेरे से बाहर झुका देती थी, जैसे विवोन में छोटी मछलियों के झुंड बिखरते और गायब हो जाते थे और एक पल बाद फिर से इकट्ठा हो जाते थे; अब हर चेहरा अपने आप पर नियंत्रण रखता था, उनकी निगाहें उस लक्ष्य पर टिकी थीं जिसकी ओर वे बढ़ रहे थे; और कल, मेरी पहली छाप की अनिश्चितता और कंपकंपी ने मुझे अस्पष्ट रूप से भ्रमित कर दिया था (जैसे उनकी बचकानी हंसी और पुरानी तस्वीर ने मुझे भ्रमित कर दिया था) उन बीजाणुओं को जो अब अलग-अलग और बिखरे हुए थे, पीले मैड्रेपोर के।

मैं कह सकता हूँ कि कई बार, जब सुंदर लड़कियाँ मेरे सामने से गुज़रती थीं, तो मैं खुद से वादा करता था कि मैं उन्हें फिर देखूँगा। आम तौर पर, लोग दोबारा प्रकट नहीं होते; इसके अलावा, हमारी स्मृति, जो उनकी मौजूदगी को जल्दी भूल जाती है, उनके रूप को याद करने में मुश्किल महसूस करती है; हमारी आँखें शायद उन्हें पहचान न पाएँ, और इस बीच हम नई लड़कियों को गुज़रते हुए देख लेते हैं, जिन्हें हम फिर कभी नहीं देखेंगे। लेकिन कभी-कभी, और यही बालबेक की उस चंचल छोटी टोली के साथ हुआ, संयोग उन्हें बार-बार हमारी आँखों के सामने ले आता है। तब संयोग हमें एक अच्छी और उपयोगी चीज़ लगती है, क्योंकि हम उसमें संगठन के मूल तत्व, अपने जीवन को व्यवस्थित करने का प्रयास देखते हैं; और यह हमारे लिए उन छवियों को मन में बनाए रखना आसान, अपरिहार्य और कभी-कभी—उन रुकावटों के बाद जिनसे हमें उम्मीद होती है कि हम उन्हें भूल जाएँगे—क्रूर बना देता है, जिनके लिए हम समय के साथ यह विश्वास करने लगते हैं कि वे हमारे भाग्य में लिखी थीं, और जिन्हें संयोग के बिना हम बहुत से अन्य लोगों की तरह, बहुत

आसानी से भूल जाते।

कुछ ही देर में सेंट-लूप का दौरा समाप्त हो गया। मैंने उन लड़कियों के समूह को फिर कभी समुद्र तट पर नहीं देखा। दोपहर में बालबेक में उनके पास इतना कम समय होता था कि वे उन लड़कियों के बारे में सोचने या मेरे हित में उनसे जान-पहचान करने की कोशिश भी नहीं कर पाते थे। शाम को वे ज़्यादा खाली रहते थे और मुझे नियमित रूप से रिवेबेल ले जाते थे। उन रेस्तरांओं में, जैसे सार्वजनिक उद्यानों और रेलगाड़ियों में, ऐसे लोग होते हैं जो देखने में बिल्कुल साधारण लगते हैं, लेकिन जब हम उनसे उनका नाम पूछते हैं, तो हमें आश्चर्य होता है कि वे कोई साधारण अजनबी नहीं हैं, बल्कि कोई मंत्री या ड्यूक हैं जिनके बारे में हमने अक्सर सुना है। रिवेबेल रेस्तरां में, सेंट-लूप और मैंने दो-तीन बार देखा था कि जब बाकी सब जाने की तैयारी कर रहे थे, तब एक लंबा-चौड़ा, गठीला, सुडौल चेहरे वाला, सफ़ेद दाढ़ी वाला आदमी एकटक खाली हवा में टकटकी लगाए बैठा था। एक शाम, जब हमने मकान मालिक से पूछा कि यह गुमनाम, अकेला और देर से आया मेहमान कौन है, तो वह चौंक उठा, "क्या! आपका मतलब है कि आप प्रसिद्ध चित्रकार एल्स्टिर को नहीं जानते?" स्वान ने एक बार उनका नाम मुझसे लिया था, मैं पूरी तरह भूल गया था कि किस संदर्भ में; लेकिन किसी विशेष स्मृति का भूल जाना, जैसे पढ़ते समय वाक्य के किसी भाग का भूल जाना, कभी-कभी अनिश्चितता की ओर नहीं, बल्कि एक अधूरी निश्चितता की ओर ले जाता है। "वह स्वान के मित्र हैं, एक बहुत प्रसिद्ध कलाकार, बेहद प्रतिभाशाली," मैंने सेंट-लूप को बताया। तभी हम दोनों पर भावनाओं की एक लहर दौड़ गई, कि एल्स्टिर एक महान कलाकार थे, एक विख्यात व्यक्ति थे, और हमें बाकी मेहमानों से अलग करके, उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनकी प्रतिभा के विचार से हम कितने

आनंदित थे। निस्संदेह, अगर हम समुद्र तट पर न होते, तो हमारी प्रशंसा और स्वान से हमारी जान-पहचान के बारे में उनकी अनभिज्ञता हमें परेशान नहीं करती। लेकिन चूंकि हम अभी भी उस उम्र में थे जब उत्साह को चुप रखना असंभव था, और हम एक ऐसे जीवन में प्रवेश कर चुके थे जिसमें गुमनाम रहना असहनीय था, इसलिए हमने अपने दोनों के हस्ताक्षरों से एक पत्र लिखा, जिसमें हमने एल्स्टिर को, जो उनसे कुछ ही फीट की दूरी पर बैठे दो रेस्तरां में थे, यह बताया कि हम उनकी प्रतिभा के दो उत्साही प्रशंसक हैं, उनके महान मित्र स्वान के दो मित्र हैं, और उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने की अनुमति मांगी। एक वेटर ने यह पत्र उस प्रसिद्ध व्यक्ति तक पहुंचाने का जिम्मा उठाया।

शायद उस समय एल्स्टिर उतने प्रसिद्ध नहीं थे जितना मकान मालिक दावा करता था, हालांकि कुछ ही वर्षों में वे प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचने वाले थे। लेकिन जब यह रेस्तरां एक साधारण सा फार्महाउस हुआ करता था, तब वे यहाँ आने वाले पहले लोगों में से एक थे और अपने साथ कलाकारों की एक पूरी बस्ती लेकर आए थे (जो संयोगवश, जैसे ही वह फार्म-यार्ड, जहाँ वे खुली हवा में, एक छप्पर वाली छत के नीचे भोजन करते थे, एक फैशनेबल केंद्र बन गया, वे सभी कहीं और चले गए थे)। एल्स्टिर स्वयं आज शाम रिवेबेल में केवल अपनी पत्नी की अस्थायी अनुपस्थिति के कारण लौटे थे, जो पड़ोस में स्थित उनके किराए के घर से बाहर थीं। लेकिन महान प्रतिभा, भले ही उसे अभी तक पहचान न मिली हो, अनिवार्य रूप से प्रशंसा की भावना को जन्म देती है, जैसा कि मकान मालिक ने एल्स्टिर के जीवन के बारे में जानकारी पाने के लिए उत्सुक कई अंग्रेज़ महिला आगंतुकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों या विदेशों से प्राप्त पत्रों की संख्या से पता लगाया था। फिर मकान मालिक ने आगे टिप्पणी की कि एल्स्टिर को काम करते समय परेशान होना पसंद नहीं था, कि वह

आधी रात को उठकर एक छोटी मॉडल को पानी के किनारे ले जाता था ताकि वह उसके लिए नग्न अवस्था में पोज़ दे सके, अगर चाँद चमक रहा हो; और उसने मन ही मन सोचा कि इतनी मेहनत व्यर्थ नहीं गई, और पर्यटकों की प्रशंसा अनुचित नहीं थी, जब उसने एल्स्टिर की एक तस्वीर में एक लकड़ी का क्रॉस पहचाना जो रिवेबेल में प्रवेश करते समय सड़क के किनारे खड़ा था।

"सब ठीक है!" वह अचंभित होकर दोहराता, "चारों बीम मौजूद हैं! अरे, वह तो वाकई बहुत मेहनत करता है!"

और उसे यह भी नहीं पता था कि एल्स्टिर द्वारा उसे दी गई समुद्र के ऊपर सूर्योदय की छोटी सी पेंटिंग कहीं एक बड़ी दौलत के बराबर न हो।

हमने उसे हमारा पत्र पढ़ते, उसे अपनी जेब में रखते, अपना खाना खत्म करते, अपना सामान माँगते और उठकर जाते हुए देखा; और हमें इतना यकीन हो गया था कि हमने उसे अपने इस प्रयास से चौंका दिया है कि अब हम (जितना पहले डर रहे थे, उतनी ही शिद्दत से) बिना उसकी नज़र में आए वहाँ से निकल जाने की उम्मीद कर रहे थे। हमने एक पल के लिए भी उस बात पर ध्यान नहीं दिया जो हमें सबसे ज़्यादा ज़रूरी लगनी चाहिए थी, यानी एल्स्टिर के प्रति हमारा उत्साह, जिसकी सच्चाई पर हमें ज़रा भी शक नहीं होना चाहिए था, जिसका सबूत हमारी साँसों का थम जाना और उस महान कलाकार के लिए चाहे जो भी मुश्किल या वीरतापूर्ण हो, कुछ भी करने की हमारी इच्छा थी, वह हमारी कल्पना के मुताबिक प्रशंसा नहीं थी, क्योंकि हममें से किसी ने भी उसकी कोई पेंटिंग नहीं देखी थी; हमारी भावना का आधार शायद एक 'महान कलाकार' का खोखला विचार हो सकता था, लेकिन उसका ऐसा काम नहीं जो हमारे लिए अनजान था। यह ज़्यादा से ज़्यादा अमूर्त प्रशंसा थी, एक बेचैन आवरण, एक सारहीन प्रशंसा की भावुक संरचना, यानी बचपन से इस

कदर जुड़ी हुई कोई चीज़ जैसे वयस्क व्यक्ति के कुछ अंग जो अब मौजूद नहीं हैं; हम अभी भी लड़के थे। इसी बीच एल्स्टिर दरवाज़े तक पहुँच रहा था कि अचानक वह मुड़ा और हमारी ओर आया। मैं भय के एक ऐसे रोमांच से भर गया जैसा मैं कुछ वर्षों बाद महसूस नहीं कर सकता था, क्योंकि उम्र हमारी क्षमता को कम कर देती है, वहीं दुनिया से परिचित होने के कारण हमारे भीतर इस तरह की अजीब मुलाकातों को उकसाने, उस तरह की भावना को महसूस करने की कोई प्रवृत्ति नहीं रह जाती।

एल्स्टिर ने हमारे पास आकर जो कुछ शब्द कहे, और हमारी मेज पर बैठ गए, उन दौरान मैंने उनसे स्वान के बारे में कई बार पूछा, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मुझे लगने लगा कि वे उन्हें जानते ही नहीं थे। फिर भी, उन्होंने मुझे अपने बालबेक स्टूडियो में उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया, एक ऐसा निमंत्रण जो उन्होंने सेंट-लूप को नहीं दिया था, और यह निमंत्रण मैंने (शायद स्वान की सिफारिश से मुझे नहीं मिलता, अगर एल्स्टिर उनके साथ घनिष्ठ संबंध रखते, क्योंकि लोगों के जीवन में निस्वार्थ उद्देश्यों की भूमिका हमारी सोच से कहीं अधिक होती है) कुछ शब्दों के माध्यम से अर्जित किया था, जिससे उन्हें लगा कि मैं कला के प्रति समर्पित हूँ। उन्होंने मुझ पर ऐसी मित्रता दिखाई जो सेंट-लूप की मित्रता से कहीं अधिक थी, ठीक वैसे ही जैसे किसी साधारण व्यापारी की मित्रता से कहीं अधिक। एक महान कलाकार की मित्रता की तुलना में, एक महान सज्जन की मित्रता, चाहे वह कितनी भी आकर्षक क्यों न हो, एक अभिनेता द्वारा अभिनय करने, बनावटी होने का प्रभाव डालती है। सेंट-लूप खुश करने की कोशिश करते थे; एल्स्टिर को देना बेहद पसंद था, खुद को भी दे देना। उसके पास जो कुछ भी था, विचार, काम और बाकी सब कुछ जिसे वह बहुत कम महत्व देता था, वह खुशी-खुशी किसी भी ऐसे व्यक्ति को दे देता जो उसे समझ सके। लेकिन, समाज में रहने

की असमर्थता के कारण, वह एकांत में रहता था, एक ऐसी क्रूरता के साथ जिसे फैशनेबल लोग दिखावा और बदतमीजी कहते थे, सार्वजनिक अधिकारी एक अड़ियल स्वभाव, उसके पड़ोसी पागलपन और उसका परिवार स्वार्थ और अहंकार।

और निःसंदेह, शुरुआत में उन्होंने अपने एकांत में भी इस बात का आनंद लिया होगा कि अपने काम के माध्यम से, दूरी के बावजूद, वे उन लोगों को संबोधित कर रहे थे जिन्होंने उन्हें गलत समझा था या उन्हें आहत किया था। शायद, उन दिनों वे उदासीनता से नहीं बल्कि अपने साथियों के प्रेम से अकेले रहते थे, और जिस प्रकार मैंने गिलबर्टे को त्याग दिया था ताकि एक दिन और अधिक आकर्षक रंगों में उसके सामने फिर से प्रकट हो सकूँ, उसी प्रकार उन्होंने अपना काम कुछ लोगों को समर्पित किया ताकि वे उनसे फिर से जुड़ सकें, जिसके द्वारा उन्हें देखे बिना ही वे उनसे प्रेम करने, उनकी प्रशंसा करने और उनके बारे में बात करने के लिए प्रेरित हों; त्याग हमेशा शुरुआत से ही पूर्ण नहीं होता, जब हम अपनी मूल मानसिकता में इसका निर्णय लेते हैं और इससे पहले कि यह हम पर प्रतिक्रिया करे, चाहे वह किसी बीमार व्यक्ति का त्याग हो, किसी भिक्षु का हो, किसी कलाकार का हो या किसी नायक का। लेकिन यदि उन्होंने कुछ लोगों को ध्यान में रखकर रचना करने की इच्छा रखी थी, तो रचना करते समय वे अपने लिए ही जी रहे थे, उस समाज से दूर जिसके प्रति वे उदासीन हो गए थे; एकांत के अभ्यास ने उसके मन में इसके प्रति प्रेम जगा दिया, जैसा कि हर उस बड़ी चीज़ के साथ होता है जिससे हम पहले डरते थे, क्योंकि हम जानते थे कि यह उन छोटी चीज़ों के साथ मेल नहीं खाती जिनसे हम जुड़े रहते थे, और जिनसे यह हमें वंचित तो नहीं करती, लेकिन उनसे अलग कर देती है। इसका अनुभव करने से पहले, हमारी सारी चिंता यही जानने में लगी रहती है कि हम इसे कुछ ऐसे सुखों के

साथ किस हद तक सामंजस्य बिठा सकते हैं जो इसका अनुभव करते ही सुख नहीं रह जाते।

एल्स्टिर ने हमसे ज्यादा देर बात नहीं की। मैंने मन बना लिया कि अगले कुछ दिनों में मैं उनके स्टूडियो जाऊँगा, लेकिन अगली दोपहर, जब मैं अपनी दादी के साथ कैनैपविले की चट्टानों के पास, जहाँ 'मोर्चा' खत्म होता था, वहाँ तक गया, और वापस लौटते समय, समुद्र तट की ओर जाने वाली छोटी गलियों में से एक के अंत में, हमारी मुलाकात एक लड़की से हुई, जिसका सिर किसी जानवर की तरह झुका हुआ था, जिसे अनिच्छा से उसके बाड़े में ले जाया जा रहा हो। उसके हाथों में गोल्फ क्लब थे और वह एक अधिकारी के आगे चल रही थी, जो शायद उसकी या उसकी सहेलियों की 'मिस' थी। वह लड़की हॉगार्थ द्वारा बनाए गए जेफ्रीज़ के चित्र जैसी लग रही थी, जिसका चेहरा इतना लाल था मानो उसका पसंदीदा पेय चाय की जगह जिन हो, और उसके मुँह के कोने पर तंबाकू का सूखा धब्बा उसकी घनी, लेकिन सफ़ेद मूंछों को और भी उभार रहा था। उससे आगे चल रही लड़की उस छोटे समूह की उस लड़की जैसी थी, जिसने काली पोलो टोपी के नीचे, भावहीन गोल-मटोल चेहरे पर हँसती हुई आँखें दिखाई थीं। अब, जो लड़की मेरे पास से गुज़र रही थी, उसने भी काली पोलो टोपी पहन रखी थी, लेकिन वह मुझे दूसरी लड़की से भी ज़्यादा सुंदर लगी। उसकी नाक सीधी थी, और नथुनों का निचला हिस्सा ज़्यादा भरा हुआ और मांसल था। इसके अलावा, दूसरी लड़की घमंडी और पीली सी लग रही थी, जबकि यह लड़की अनुशासित और गुलाबी रंगत वाली बच्ची लग रही थी। फिर भी, चूंकि वह भी दूसरी लड़की की तरह साइकिल चला रही थी और उसने भी वही बारहसिंगे के दस्ताने पहन रखे थे, तो मैंने सोचा कि शायद ये अंतर देखने के कोण और परिस्थितियों के कारण थे, क्योंकि बालबेक में दूसरी लड़की का होना

लगभग असंभव था, जिसका चेहरा इतना मिलता-जुलता हो और उसके पहनावे में भी वही बारीकियां हों। उसने मेरी तरफ एक नज़र डाली; अगले कुछ दिनों तक, जब मैंने उस छोटे समूह को फिर से समुद्र तट पर देखा, और वास्तव में बहुत बाद में जब मैं उस समूह की सभी लड़कियों को जान गया, तब भी मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सका कि उनमें से कोई भी - यहाँ तक कि वह लड़की जो उन सभी में सबसे ज़्यादा उसके जैसी दिखती थी, साइकिल वाली लड़की - वास्तव में वही थी जिसे मैंने उस शाम 'मोर्चे' के अंत में देखा था, जहाँ एक सड़क समुद्र तट की ओर जाती थी, एक ऐसी लड़की जो उससे बहुत कम अलग थी, लेकिन फिर भी जुलूस में मैंने जिसे देखा था उससे थोड़ी अलग थी।

उस क्षण से, जबकि पिछले कुछ दिनों से मेरा ध्यान मुख्य रूप से उस लंबी महिला पर केंद्रित था, गोल्फ क्लब लिए खड़ी महिला, जिसे मैडम साइमोनेट समझा जा रहा था, ने एक बार फिर मेरा ध्यान आकर्षित करना शुरू कर दिया। जब वह दूसरों के साथ चल रही होती, तो अक्सर रुक जाती, और अपने दोस्तों को भी रुकने के लिए मजबूर कर देती, जो उसका बहुत सम्मान करते प्रतीत होते थे। इस प्रकार, रुकते हुए, पोलो टोपी के नीचे चमकती आँखों के साथ, मैं उसे आज फिर से देख रहा हूँ, उसके पीछे फैले समुद्र के पर्दे के सामने, और मेरे बीच एक पारदर्शी, नीले रंग के अंतराल से अलग, जो समय बीत चुका है। मेरी स्मृति में एक पहली छाप, धुंधली और सूक्ष्म, जिसकी चाहत थी, जिसका पीछा किया गया, फिर भुला दिया गया, फिर से पाया गया, एक ऐसे चेहरे की जिसे मैंने अतीत के बादल पर कई बार उकेरा है ताकि मैं खुद से कह सकूँ, एक लड़की जो वास्तव में मेरे कमरे में थी: "यह वही है!" लेकिन शायद कोई और थी, गुलाबी गालों और हरी आँखों वाली, जिसे मैं सबसे ज्यादा जानना चाहता था। फिर भी, चाहे मैं किसी भी दिन उनमें से जिसे देखना

पसंद करता, उसके बिना भी बाकी लोग मेरी इच्छा को जगाने के लिए काफी थे, जो कभी एक पर, कभी दूसरे पर केंद्रित होती, और पहले दिन की तरह ही, मेरी धुंधली दृष्टि की तरह, उन्हें आपस में जोड़ती और मिलाती रहती, उन्हें एक अलग छोटी सी दुनिया में बदल देती, जो एक साझा जीवन से जीवंत होती, जिसे वे निस्संदेह स्वयं ही बनाते थे; और मैं उनमें से किसी एक का मित्र बनकर—एक सुसंस्कृत मूर्तिपूजक या एक सजग ईसाई की तरह जो बर्बरों के बीच जाता है—एक ऐसे कायाकल्प करने वाले समाज में प्रवेश कर जाता, जिसमें स्वास्थ्य, दूसरों के प्रति अनभिज्ञता, इंद्रिय सुख, क्रूरता, बौद्धिकता की कमी और आनंद का राज होता।

मेरी दादी को एल्स्टिर से मेरी मुलाकात के बारे में पता चल गया था और वे इस बात से बहुत खुश थीं कि मुझे उनकी दोस्ती से कितना बौद्धिक लाभ मिल सकता है। उन्हें यह बात अजीब और असभ्य लगी कि मैं अभी तक उनसे मिलने नहीं गया था। लेकिन मैं सिर्फ उस छोटे से समूह के बारे में सोच रहा था और लड़कियों के मोर्चे से गुजरने का समय पता न होने के कारण मैं जाने से बच नहीं पाया। मेरी दादी मेरे पहनावे की सजगता देखकर भी हैरान थीं, क्योंकि मुझे अचानक अपने सूट याद आ गए थे जो इतने समय से मेरे ट्रंक के नीचे पड़े थे। मैं हर दिन एक अलग सूट पहनता था और मैंने पेरिस को नए हैट और टाई मंगवाने के लिए पत्र भी लिखा था।

बालबेक जैसे शांत स्थान पर जीवन में एक अलग ही आकर्षण जुड़ जाता है जब हमारे मन में हर सुबह से ही सीप, केक या फूल बेचने वाली किसी सुंदर लड़की का चेहरा, जो चटख रंगों में रंगी हो, उन सभी सुखद और आनंदमय दिनों का केंद्र बन जाता है जो हम समुद्र तट पर बिताते हैं। वे तब, और इसी कारण से, भले ही किसी काम में व्यस्त न हों, कामकाजी

दिनों की तरह ही सजग, अभिव्यक्त, आकर्षित, आने वाले क्षण का सामना करने के लिए थोड़ा ऊपर उठी हुई, वह क्षण बन जाती हैं जिसमें, जब हम रेत के केक, गुलाब, अमोनाइट खरीदते हैं, तो हम एक स्त्री के चेहरे पर उसके रंगों को फूल की तरह शुद्ध रूप से प्रदर्शित होते देखकर आनंदित होते हैं। लेकिन कम से कम, इन छोटी-छोटी विक्रेताओं से, सबसे पहले तो हम बात कर सकते हैं, जिससे हमें अपनी कल्पना से उनके उन पहलुओं को गढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती जो केवल उनके दृश्य अवलोकन से हमें प्राप्त होते हैं, और उनके जीवन को फिर से जीवंत करने, उसके आकर्षण को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जैसे हम किसी चित्र के सामने खड़े होते हैं; इसके अलावा, उनसे बात करने मात्र से ही हमें पता चल जाता है कि उन्हें दोबारा कहाँ और किस समय देखा जा सकता है। लेकिन उस छोटे से समूह के संबंध में मुझे इनमें से कोई भी लाभ नहीं मिला। उनकी आदतें मुझे अज्ञात थीं; जब कुछ दिनों मैं उन्हें देख नहीं पाता था, तो उनकी अनुपस्थिति का कारण न जानते हुए मैं यह जानने की कोशिश करता था कि क्या यह कोई निश्चित और नियमित बात थी, क्या वे केवल हर दूसरे दिन या मौसम की कुछ खास स्थितियों में ही दिखाई देते थे, या क्या ऐसे भी दिन थे जब उन्हें कोई नहीं देखता था। मैं कल्पना करता था कि मैं उनसे दोस्ती कर चुका हूँ और कहता था: "लेकिन तुम उस दिन तो वहाँ नहीं थे?" "क्या हम नहीं थे? ओह, नहीं, बिलकुल नहीं; ऐसा इसलिए था क्योंकि वह शनिवार था। शनिवार को हम कभी नहीं आते, क्योंकि..." काश, बात इतनी ही सरल होती, कि यह जानना कि उस काले शनिवार को खुद को सताना व्यर्थ है, कि कोई समुद्र तट पर एक छोर से दूसरे छोर तक घूम सकता है, पेस्ट्री की दुकान के बाहर बैठकर एक्लेयर खाने का नाटक कर सकता है, अनोखी चीज़ों की दुकान में झाँक सकता है, नहाने के समय का इंतज़ार कर सकता है,

संगीत कार्यक्रम का, ज्वार का, सूर्यास्त का, रात का, और यह सब उस प्यारे से बैंड को देखे बिना। लेकिन वह मनहूस दिन शायद हफ्ते में एक बार नहीं आता था। शायद वह ज़रूरी नहीं कि शनिवार को ही पड़े। शायद कुछ खास मौसम की स्थितियाँ इसे प्रभावित करती थीं या इससे पूरी तरह से अलग थीं। उन अज्ञात नक्षत्रों की अनियमित गतियों का कितने ही धैर्यपूर्वक, लेकिन अविचलित अवलोकन करना पड़ता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि महज़ संयोग से कोई भटकाव तो नहीं हुआ, उसकी भविष्यवाणियाँ गलत साबित नहीं होंगी, और उस गहन खगोल विज्ञान के उन निश्चित नियमों को समझ सके, जो इतने कष्टदायी अनुभवों से प्राप्त हुए हैं। यह याद करते हुए कि मैंने उन्हें सप्ताह के किसी विशेष दिन नहीं देखा था, मैंने खुद को आश्वस्त किया कि वे नहीं आएँगे, और समुद्र तट पर इंतज़ार करना व्यर्थ है। और ठीक उसी क्षण मैंने उन्हें देख लिया। फिर भी, एक और दिन, जो मेरे अनुमान के अनुसार उन नक्षत्रों की वापसी को निर्देशित करने वाले नियमों के कारण शुभ होना चाहिए था, वे नहीं आए। लेकिन उस दिन मैं उन्हें देख पाऊँगा या नहीं, इस प्राथमिक अनिश्चितता के साथ एक और अधिक बेचैन करने वाली बात जुड़ गई: क्या मैं उन्हें फिर कभी देख पाऊँगा, क्योंकि मेरे पास यह जानने का कोई कारण नहीं था कि वे अमेरिका के लिए रवाना नहीं होने वाले थे, या पेरिस लौटने वाले थे। यही बात मुझे उनसे प्यार करने के लिए प्रेरित करने के लिए काफी थी। कोई व्यक्ति किसी विशेष व्यक्ति के प्रति आकर्षित हो सकता है। लेकिन उस दुख के स्रोत को, उस अपूरणीयता की भावना को, उन पीड़ाओं को जो प्रेम का मार्ग प्रशस्त करती हैं, मुक्त करने के लिए—और शायद यही वह चीज़ है जो कोई व्यक्ति नहीं हो सकता, वह वास्तविक वस्तु जिसे हमारा जुनून इतनी बेसब्री से गले लगाना चाहता है—असंभव का जोखिम होना चाहिए। इस प्रकार, मुझ पर पहले से ही वे प्रभाव पड़

रहे थे जो हमारे क्रमिक प्रेम-संबंधों के दौरान बार-बार आते हैं, जो (लेकिन तब शहरों के जीवन में अधिक) उन छोटी कामकाजी लड़कियों के विचार से भी उत्पन्न हो सकते हैं जिनकी आधी छुट्टी किस दिन है, यह हम नहीं जानते, और जिन्हें हम कारखाने से निकलते समय खो देने से डरते हैं; या कम से कम मेरे जीवन में तो बार-बार आए हैं। शायद वे प्रेम से अविभाज्य हैं; शायद हमारे पहले प्रेम की हर वो विशेषता जो उसे विशिष्ट बनाती है, बाद के प्रेमों से स्मृति, सुझाव, आदत के माध्यम से जुड़ जाती है और जीवन के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए उसके विभिन्न पहलुओं को एक सामान्य स्वरूप प्रदान करती है।

मैं उन्हें वहाँ पाने की उम्मीद में हर बहाने से समुद्र तट पर जाने का प्रयास करता था। दोपहर के भोजन के दौरान एक बार उन्हें देख लेने के बाद, मैं हमेशा देर से आता था और उनके गुजरने का इंतज़ार करता रहता था; भोजन कक्ष में बिताए थोड़े से समय को भी मैं उसकी नीली कांच की दीवार को निहारने में लगाता था; मिठाई से बहुत पहले उठ जाता था ताकि अगर वे किसी और समय पर बाहर गए हों तो उन्हें देखने से न चूकूँ, और अपनी दादी पर चिढ़ जाता था, जब अनजाने में ही सही, वह मुझे उस समय के बाद भी अपने साथ रोक लेती थीं जो मुझे उचित लगता था। मैं अपनी कुर्सी को तिरछा करके क्षितिज को लंबा करने की कोशिश करता था; अगर संयोगवश भी मेरी नज़र उन लड़कियों में से किसी एक पर पड़ जाती, क्योंकि उन सभी में एक ही विशेष सार था, तो ऐसा लगता मानो मैंने अपने सामने एक बदलते, शैतानी मतिभ्रम में उस अप्रिय और फिर भी बेहद प्रशंसित सपने का एक अंश देखा हो, जो क्षण भर पहले तक केवल मेरे मस्तिष्क में ही मौजूद था—जहाँ वह हमेशा के लिए स्थिर पड़ा था।

मैं उनमें से किसी से भी प्रेम नहीं करता था, उन सभी से प्रेम करता था,

फिर भी उनसे मिलने की संभावना ही मेरे दैनिक जीवन में आनंद का एकमात्र स्रोत थी, एकमात्र ऐसी चीज जो मुझमें उन उच्च आशाओं को जन्म देती थी जिनसे हर बाधा पार हो जाती है, और अगर मैं उनसे न मिल पाता तो अक्सर ये आशाएं क्रोध में तब्दील हो जाती थीं। उस क्षण, ये लड़कियां मेरे स्नेह में मेरी दादी से भी आगे निकल गई थीं; अगर वह यात्रा ऐसी जगह की होती जहां वे मिल सकतीं, तो सबसे लंबी यात्रा भी मुझे आकर्षक लगती। जब मैं किसी और चीज के बारे में या कुछ भी न सोचने का नाटक करता, तो मेरे विचार सुकून से उन्हीं से जुड़े रहते थे। लेकिन जब, अनजाने में भी, मैं उनके बारे में सोचता, तो वे, और भी अचेतन रूप से, मेरे लिए समुद्र की पर्वतीय नीली लहरों की तरह थीं, लहरों के बीच से गुजरती हुई एक परछाईं जैसी। किसी व्यक्ति के लिए हमारा सबसे गहन प्रेम वास्तव में किसी और चीज का भी प्रेम होता है।

इसी बीच मेरी दादी नाराज़ थीं, क्योंकि अब मुझे गोल्फ़ और लॉन टेनिस में गहरी दिलचस्पी हो गई थी और मैं एक ऐसे कलाकार को काम करते देखने और उनकी बातें सुनने का मौका गँवा रहा था, जिन्हें वह अपने समय के महानतम कलाकारों में से एक मानती थीं। मेरी यह नाराज़गी मुझे कुछ संकीर्ण सोच पर आधारित लग रही थी। मैंने बहुत पहले ही चैंप्स-एलिसी में यह समझ लिया था, और बाद में अपनी संतुष्टि के लिए इसे साबित भी कर लिया था, कि जब हम किसी स्त्री से प्रेम करते हैं, तो हम बस उसमें अपनी आत्मा की अवस्था को प्रकट करते हैं; इसलिए महत्वपूर्ण स्त्री का गुण नहीं, बल्कि प्रेम की गहराई है; और एक साधारण सी युवती के प्रति हमारे मन में उठने वाली भावनाएँ हमें अपने अस्तित्व के कुछ सबसे अंतरंग हिस्सों को, जो किसी महान व्यक्ति की बातचीत या यहाँ तक कि उसके काम की प्रशंसा करने से मिलने वाले आनंद से भी कहीं अधिक व्यक्तिगत, अधिक दूरस्थ और अधिक आवश्यक होते हैं,

चेतना की सतह पर लाने में सक्षम बनाती हैं।

मुझे अपनी दादी की इच्छाओं का पालन करना ही था, और यह और भी अनिच्छा से करना पड़ा क्योंकि एल्स्टिर बालबेक की सबसे नई गलियों में से एक में, मुख्य इलाके से कुछ दूरी पर रहता था। दिन की गर्मी के कारण मुझे रुए डे ला प्लाज से गुजरने वाली ट्राम लेनी पड़ी, और मैंने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया (ताकि मुझे अभी भी विश्वास रहे कि मैं सिमेरियनों के प्राचीन साम्राज्य में हूँ, शायद राजा मार्क के देश में, या ब्रोसेलियंडे के जंगल की जगह पर) कि मैं दोनों ओर फैली इमारतों की दिखावटी भव्यता को न देखूँ, जिनमें एल्स्टिर का विला शायद सबसे भव्य और भद्दा था, फिर भी उसने इसे ले लिया था, क्योंकि बालबेक में उपलब्ध सभी घरों में से, यह एकमात्र ऐसा घर था जिसमें उसे वास्तव में एक बड़ा स्टूडियो मिलता था।

मैंने निगाहें झुकाए बगीचे को पार किया, जिसमें एक छोटा सा लॉन था—पेरिस के आसपास के किसी भी छोटे उपनगरीय विला की तरह—एक प्रेममय माली की मूर्ति, कांच की गेंदें जिनमें अपना विकृत प्रतिबिंब दिखाई देता था, बेगोनिया के फूलों की क्यारियाँ और एक छोटा सा मंडप, जिसके नीचे लोहे की मेज के चारों ओर झूलती कुर्सियाँ लगी थीं। लेकिन इन सभी भद्दी और साधारण दिखने वाली चीजों के बाद, स्टूडियो में पहुँचते ही मैंने चबूतरे पर बनी चॉकलेट की नक्काशी पर ध्यान नहीं दिया; मैं पूरी तरह से खुश था, क्योंकि मेरे चारों ओर मौजूद सभी रेखाचित्रों और अध्ययनों की मदद से, मैंने खुद को एक ऐसी काव्यात्मक समझ तक पहुँचाने की संभावना देखी, जो आनंद से भरपूर थी, उन अनेक रूपों की जिन्हें मैंने अब तक वास्तविकता के सामान्य दृश्य से अलग नहीं किया था। और एल्स्टिर का स्टूडियो मुझे एक तरह से दुनिया की नई रचना की प्रयोगशाला जैसा लगा, जिसमें हमारे सामने मौजूद सभी चीजों की

अराजकता से, उन्होंने कमरे में जगह-जगह टंगे हुए विभिन्न आयताकार कैनवास पर चित्र बनाकर, कुछ चीजें निकाली थीं: कहीं समुद्र की लहर रेत पर अपने बैंगनी झाग को उग्रता से टकरा रही है, कहीं सफेद लिनेन के सूट में एक युवक जहाज की रेलिंग पर झुका हुआ है। उसकी जैकेट और छलकती लहर ने इस तथ्य से एक नई गरिमा प्राप्त कर ली थी कि वे अभी भी मौजूद हैं, भले ही वे उन गुणों से वंचित हो गए हों जिनसे उन्हें युक्त माना जा सकता था, क्योंकि लहर अब न तो छलक सकती थी और न ही जैकेट किसी को ढक सकती थी।

जिस समय मैं अंदर आया, उस समय कलाकार अपने हाथ में मौजूद ब्रश से डूबते सूरज की आकृति को अंतिम रूप दे रहा था।

स्टूडियो के चारों ओर लगभग सभी शटर बंद थे। स्टूडियो काफी ठंडा था और एक जगह को छोड़कर, जहाँ दिन का प्रकाश दीवार पर अपनी चमक बिखेर रहा था, बाकी जगह अँधेरी थी। केवल एक छोटी आयताकार खिड़की खुली थी, जो हनीसकल से घिरी हुई थी और बगीचे की एक पट्टी के ऊपर से एक रास्ते की ओर खुलती थी। इस प्रकार स्टूडियो के अधिकांश भाग का वातावरण धुंधला, पारदर्शी और सघन था, लेकिन जहाँ सूर्य की सुनहरी किरणें पड़ रही थीं, वहाँ वह तरल और चमकीला लग रहा था, मानो किसी चट्टानी क्रिस्टल का एक टुकड़ा हो, जिसकी एक सतह, जो पहले से ही कटी और पॉलिश की हुई है, कहीं-कहीं इंद्रधनुषी किरणों के साथ दर्पण की तरह चमक रही हो। जब एल्स्टिर, मेरे अनुरोध पर, पेंटिंग करते रहे, तो मैं अर्ध-अंधेरे में इधर-उधर घूमता रहा, पहले एक चित्र को, फिर दूसरे को ध्यान से देखता रहा।

दीवारों पर लगी अधिकांश पेंटिंगें वो नहीं थीं जिन्हें मैं मुख्य रूप से उनकी रचना के रूप में देखना चाहता था। ग्रैंड होटल के रीडिंग रूम की मेज पर पड़ी एक अंग्रेजी कला पत्रिका में उनकी पहली और दूसरी शैली का जिक्र

था - पौराणिक शैली और जापानी प्रभाव की झलक दिखाने वाली शैली। लेख के अनुसार, इन दोनों शैलियों का बेहतरीन उदाहरण मैडम डी गुएरमांटेस के संग्रह में मिलता है। स्वाभाविक रूप से, उनके स्टूडियो में लगभग सभी समुद्री दृश्य थे जो उन्होंने बालबेक में बनाए थे। लेकिन मैं इन चित्रों से यह समझ पाया कि प्रत्येक चित्र का आकर्षण उसमें चित्रित वस्तुओं के एक प्रकार के रूपांतरण में निहित था, जो कविता में रूपक की तरह था। और यदि ईश्वर ने वस्तुओं को नाम देकर बनाया था, तो एल्स्टिर ने उनके नाम हटाकर या उन्हें दूसरे नाम देकर उन्हें नया रूप दिया था। वस्तुओं को दर्शाने वाले नाम हमेशा एक बौद्धिक धारणा से मेल खाते हैं, जो हमारी वास्तविक धारणाओं से भिन्न होती है, और हमें उनमें से हर उस चीज़ को हटाने के लिए बाध्य करती है जो उनसे मेल नहीं खाती।

कभी-कभी बालबेक के होटल में मेरी खिड़की से, सुबह जब फ्रांस्वा रोशनी रोकने वाले पर्दों के हुक खोलती थी, और शाम को जब मैं सेंट-लूप के साथ बाहर जाने का इंतज़ार कर रहा होता था, तो सूरज की रोशनी के किसी प्रभाव से मैं समुद्र के गहरे हिस्से को दूर की तटरेखा समझ बैठता था, या नीले रंग की पट्टी को निहारता रहता था कि वह समुद्र है या आकाश। लेकिन तुरंत ही मेरी बुद्धि उन तत्वों के बीच उस अंतर को फिर से स्थापित कर देती थी जिसे मैंने पहली बार में नज़रअंदाज़ कर दिया था। ठीक इसी तरह, पेरिस में, अपने बेडरूम में, मैं नीचे सड़क पर एक झगड़ा, लगभग दंगा, सुनता था, जब तक कि मैं उसके कारण का पता नहीं लगा लेता था—उदाहरण के लिए, एक घोड़ागाड़ी जो मेरी ओर खड़खड़ाती हुई आ रही थी—यह शोर, जिसमें से मैंने उन तीखी और बेमेल आवाज़ों को हटा दिया था जिन्हें मेरे कानों ने वास्तव में सुना था, लेकिन मेरी बुद्धि जानती थी कि पहिए ऐसी आवाज़ें नहीं पैदा करते। लेकिन प्रकृति को उसके वास्तविक स्वरूप में, काव्यात्मक दृष्टि से देखने के वे दुर्लभ क्षण ही

थे जिनसे एल्स्टिर की रचनाएँ प्रेरित हुईं। उनके द्वारा चित्रित समुद्री दृश्यों में सबसे अधिक बार प्रयोग किया जाने वाला उनका एक रूपक, भूमि और समुद्र की तुलना करते हुए, उनके बीच की हर सीमा रेखा को मिटा देना था। एक ही कैनवास पर बार-बार दोहराई जाने वाली यह तुलना ही थी जिसने इसे वह बहुआयामी और शक्तिशाली एकता प्रदान की, जो (स्वयं द्वारा स्पष्ट रूप से न समझी जाने वाली) एल्स्टिर की रचनाओं के प्रति कुछ संग्राहकों में उत्साह का कारण बनी।

उदाहरण के लिए, कार्केथुइट के बंदरगाह के एक चित्र में, जो उन्होंने कुछ दिन पहले ही पूरा किया था और जिसे मैं अब पूरी तरह से निहार रहा था, इसी तरह के एक रूपक के लिए एल्स्टिर ने दर्शक के मन को तैयार किया था, जिसमें उन्होंने छोटे शहर के लिए केवल समुद्री शब्दों का और समुद्र के लिए शहरी शब्दों का प्रयोग किया था। चाहे इसके घरों ने बंदरगाह के एक हिस्से, एक ड्राई डॉक, या शायद स्वयं समुद्र को छिपा रखा हो, जैसा कि बालबेक तट पर लगातार होता था, उस प्रायद्वीप के दूसरी ओर जिस पर शहर बसा हुआ था, छतों के ऊपर (जैसे चक्की की चिमनियों या चर्च के शिखरों के ऊपर) मस्तूल बने हुए थे, जिससे ऐसा लगता था कि वे जहाज शहर में ही बने हैं, जमीन पर निर्मित हैं, यह धारणा अन्य नावों को देखकर और भी मजबूत हो जाती थी, जो घाट के किनारे बंधी हुई थीं, लेकिन इतनी घनी पंक्तियों में कि आप लोगों को एक डेक से दूसरे डेक पर बात करते हुए देख सकते थे, लेकिन उनके बीच की विभाजन रेखा, पानी की दरार को पहचानना संभव नहीं था, इसलिए यह मछली पकड़ने वाला बेड़ा पानी से उतना संबंधित नहीं लगता था जितना कि, उदाहरण के लिए, क्रिकेबेक के चर्च, जो दूर से, चारों ओर से पानी से घिरे हुए थे क्योंकि आप उन्हें शहर को देखे बिना देख सकते थे, सूर्य के प्रकाश और टूटती लहरों के धुंधले आवरण में, पानी से निकलते हुए प्रतीत होते थे,

जैसे संगमरमर या समुद्री झाग में बने हों। और, बहुरंगी इंद्रधनुष की पट्टी में घिरे हुए, एक अवास्तविक, एक रहस्यमय चित्र का निर्माण करते हैं। अग्रभूमि में समुद्र तट पर चित्रकार ने इस प्रकार व्यवस्था की थी कि आँख को कोई निश्चित सीमा, पृथ्वी और महासागर के बीच कोई स्पष्ट विभाजन रेखा दिखाई न दे। जो लोग अपनी नावों को समुद्र में धकेल रहे थे, वे लहरों के बीच से उतना ही दौड़ रहे थे जितना रेत पर, जो गीली होने के कारण उनकी नावों के ढाँचे को इस प्रकार प्रतिबिंबित कर रही थी मानो वे पहले से ही पानी में हों। समुद्र स्वयं एक सीधी रेखा में नहीं आ रहा था बल्कि तट की अनियमितताओं का अनुसरण कर रहा था, जिसे चित्र के परिप्रेक्ष्य ने और भी बढ़ा दिया था, जिससे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वास्तव में समुद्र में मौजूद एक जहाज, शस्त्रागार की उभरी हुई संरचनाओं द्वारा आधा छिपा हुआ, शहर के बीचोंबीच से गुजर रहा है; चट्टानों के बीच झींगे इकट्ठा कर रही महिलाओं को, पानी से घिरे होने और चट्टानों की गोलाकार बाधा के बाद समुद्र तट (भूमि के सबसे निकट की ओर) को समुद्र तल तक नीचे लाने वाले गड्ढे के कारण, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे जहाजों और लहरों से घिरी एक समुद्री गुफा में हों, जो चमत्कारिक रूप से पलटी हुई ज्वार के मार्ग में खुली हुई हो फिर भी अछूती हो। यदि पूरा दृश्य ऐसे बंदरगाहों का आभास देता है जिनमें समुद्र भूमि में प्रवेश करता है, जिनमें भूमि पहले से ही जलमग्न है और आबादी उभयचर है, तो समुद्री तत्व की शक्ति हर जगह स्पष्ट थी; और चट्टानों के चारों ओर, बंदरगाह के मुहाने पर, जहाँ समुद्र उबड़-खाबड़ था, मछुआरों के शारीरिक परिश्रम और एक तीखे कोण पर झुकी हुई नावों के झुकाव को देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो वे पानी पर नंगे बदन सवारी कर रहे हों, मानो कोई तेज़ और उग्र जानवर हो, जिसका उछलना, उनकी कुशलता के बिना, उन्हें गिरा सकता था। छुट्टियाँ मनाने वालों का एक

समूह एक नाव में खुशी-खुशी समुद्र में जा रहा था जो किसी उबड़-खाबड़ सड़क पर चलती कार की तरह उछल रही थी; उनका नाविक, प्रसन्न और अपने काम के प्रति सचेत, फूले हुए पाल को ठीक कर रहा था, हर कोई अपनी जगह पर बैठा था, ताकि सारा भार नाव के एक तरफ न पड़े, जिससे नाव पलट सकती थी, और इस तरह वे धूप से जगमगाते खेतों से होते हुए छायादार स्थानों की ओर दौड़ते हुए लहरों के गर्तों में जा गिरे। हाल ही में आए तूफान के बावजूद सुबह सुहावनी थी। वास्तव में, उन शक्तिशाली हलचलों को अभी भी महसूस किया जा सकता था जिन्हें पहले शांत करना आवश्यक था ताकि उन नावों का सहज संतुलन प्राप्त किया जा सके जो स्थिर पड़ी थीं, धूप और हवा का आनंद ले रही थीं। समुद्र के कुछ हिस्से इतने शांत थे कि उनकी परछाइयाँ तैरते हुए ढाँचों से कहीं अधिक ठोस और वास्तविक लग रही थीं, जो सूर्य के प्रकाश के प्रभाव से धुंधली हो गई थीं। ये वे हिस्से थे जिनमें तस्वीर का परिप्रेक्ष्य अन्य हिस्सों के साथ समाहित हो जाता था। या यूँ कहें कि आप उन्हें समुद्र के अन्य हिस्से नहीं कह सकते थे। क्योंकि उन हिस्सों के बीच उतना ही अंतर था जितना कि उनमें से एक और पानी से उठते हुए गिरजाघर या शहर के पीछे खड़े जहाजों के बीच था। फिर आपकी बुद्धि ने काम करना शुरू किया और यहाँ के एक तत्व को, जो घने तूफान के नीचे काला था, थोड़ा आगे जाकर आकाश के समान एक ही रंग का और उतना ही चमकीला दिखाई दिया, और कहीं और धूप, धुंध और झाग से इतना फीका, इतना सघन, इतना स्थलीय, घरों से इतना घिरा हुआ कि आपको किसी सफेद पत्थर के पुल या बर्फ के मैदान की याद आ गई, जिसकी सतह पर किसी जहाज को ऊँचाई पर चढ़ते हुए देखना काफी डरावना था, जैसे कोई गाड़ी नदी पार करते समय टपकती हुई ऊपर चढ़ती है, लेकिन एक क्षण बाद, जब आपने ठोस मैदान की उठी हुई और

टूटी हुई सतह पर नावों को मदहोश होकर हिलते हुए देखा, तो आप समझ गए कि इन सभी विभिन्न रूपों में एक समान, यह अभी भी समुद्र ही है।

हालांकि यह कहना उचित है कि कला में कोई प्रगति या खोज नहीं हो सकती, केवल विज्ञान में ही हो सकती है, और जो कलाकार अपने दम पर एक नया प्रयास शुरू करता है, उसे दूसरों के प्रयासों से न तो कोई मदद मिलती है और न ही कोई बाधा आती है, फिर भी हमें यह स्वीकार करना होगा कि कला कुछ नियमों को प्रमुखता देती है, लेकिन एक बार जब कोई उद्योग उन नियमों को अपना लेता है और उन्हें सामान्य बना देता है, तो उस क्षेत्र में सबसे पहले मौजूद कला अपनी मौलिकता का कुछ अंश खो देती है। एल्स्टिर के चित्रकारी शुरू करने के बाद से, हम दृश्यों और शहरों की तथाकथित 'प्रशंसनीय' तस्वीरों से परिचित हो गए हैं। यदि हम यह जानने की कोशिश करें कि उनके प्रशंसक इस विशेषण से क्या तात्पर्य रखते हैं, तो हम पाएंगे कि यह आम तौर पर किसी परिचित वस्तु के किसी असामान्य चित्र पर लागू होता है, एक ऐसा चित्र जो उन चित्रों से भिन्न होता है जिन्हें हम देखने के आदी हैं, असामान्य होते हुए भी प्रकृति के अनुरूप होता है, और इसी कारण से हमारे लिए दोगुना प्रभावशाली होता है क्योंकि यह हमें चौंका देता है, हमें अपनी आदतों से बाहर निकालता है और साथ ही साथ हमें किसी पुरानी छाप को याद दिलाकर हमें स्वयं से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, इन 'शानदार' तस्वीरों में से एक परिप्रेक्ष्य के नियम को दर्शाएगी, हमें किसी गिरजाघर को दिखाएगी जिसे हम आमतौर पर शहर के बीचोंबीच देखते हैं, लेकिन एक विशेष दृष्टिकोण से ली गई तस्वीर में वह घरों की ऊँचाई से तीस गुना ऊँचा और नदी के किनारे से निकला हुआ प्रतीत होगा, जबकि वास्तव में वह नदी से बहुत दूर है। एल्स्टर ने चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में

नहीं, बल्कि उन प्रकाशीय भ्रमों के अनुसार चित्रित करने का प्रयास किया जिनसे हमारी पहली दृष्टि बनती है, और इसी प्रयास ने उन्हें इस बिंदु तक पहुँचाया; उन्होंने परिप्रेक्ष्य के कुछ नियमों पर विशेष बल दिया, जो उनकी कला द्वारा सर्वप्रथम व्याख्या किए जाने के कारण और भी अधिक प्रभावशाली हो गए। नदी, अपने घुमावदार प्रवाह के कारण, खाड़ी, अपने दोनों ओर की चट्टानों के स्पष्ट संपर्क के कारण, ऐसी प्रतीत होगी मानो मैदान या पहाड़ों के हृदय में एक झील खोदी गई हो जो चारों ओर से पूरी तरह से भूमि से घिरी हो। बालबेक से लिए गए एक दृश्य की तस्वीर में, जो गर्मी के चिलचिलाते दिन खींची गई थी, समुद्र की एक खाड़ी गुलाबी ग्रेनाइट की दीवारों से घिरी हुई प्रतीत हो रही थी, मानो वह समुद्र न हो, जो वास्तव में आगे जाकर शुरू होता था। समुद्र की निरंतरता का आभास केवल उन समुद्री पक्षियों से हो रहा था, जो तस्वीर में ठोस चट्टान प्रतीत होने वाली सतह पर चक्कर लगा रहे थे, जबकि वास्तव में वे बदलते ज्वार की नम भाप को अंदर ले रहे थे। उसी कैनवास में अन्य नियम भी स्पष्ट थे, जैसे विशाल चट्टानों के नीचे, नीले दर्पण जैसी सतह पर सफेद पाल की नन्ही सी सुंदरता, जिस पर वे सोई हुई तितलियों की तरह दिख रही थीं, और छाया की गहराई और प्रकाश की फीकीपन के बीच कुछ विरोधाभास। प्रकाश और छाया का यह खेल, जिसे फोटोग्राफी ने आम बना दिया है, एल्स्टिर को इतना आकर्षित करता था कि एक समय उन्होंने लगभग मृगतृष्णा जैसे चित्र बनाए थे, जिनमें एक मीनार से सुशोभित महल एक पूर्ण वृत्त के रूप में दिखाई देता था, जिसके शिखर पर एक और मीनार थी और तल पर एक उल्टी मीनार थी। ऐसा शायद इसलिए था क्योंकि सुहावने दिन के वातावरण की असाधारण शुद्धता ने पानी में प्रतिबिंबित छाया को पत्थर जैसी कठोरता और चमक प्रदान की थी, या इसलिए कि सुबह की धुंध ने पत्थर को छाया की तरह वाष्पशील

बना दिया था। और इसी तरह, समुद्र के पार, जंगलों की एक श्रृंखला के पीछे, एक और समुद्र शुरू होता था जो डूबते सूरज के प्रकाश से गुलाबी हो रहा था, जो वास्तव में आकाश था। प्रकाश, मानो नए ठोस पिंडों को अवक्षेपित कर रहा हो, उस नाव के पतवार को पीछे धकेल देता था जिस पर वह पड़ रहा था, उस पतवार के पीछे जो अभी भी छाया में थी, और एक क्रिस्टल सीढ़ी के चरणों की तरह पुनर्व्यवस्थित कर देता था जो भौतिक रूप से एक समतल सतह थी, लेकिन सुबह के समुद्र पर प्रकाश और छाया के खेल से खंडित हो गई थी। एक कस्बे के पुलों के नीचे बहती नदी को एक विशेष दृष्टिकोण से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था मानो वह पूरी तरह से विस्थापित हो गई हो; कहीं झील की तरह चौड़ी, कहीं छोटी नदी की तरह संकरी; कहीं पेड़ों से ढकी पहाड़ियों के बीच बिखरी हुई, जहाँ शाम को नागरिक ताज़ी हवा का आनंद लेने के लिए इकट्ठा होते थे। इस बिखरे हुए कस्बे की लय केवल मीनारों की अटल ऊँचाई से ही बनी हुई थी, जो ऊपर नहीं उठती थीं, बल्कि मानो किसी विजययात्रा में तालबद्ध झूले की सीधी रेखा का अनुसरण करते हुए, अपने नीचे धुंध में अस्पष्ट रूप से उभरे घरों के समूह को थामे हुए प्रतीत होती थीं, जो नदी के किनारे बिखरी हुई, टूटी-फूटी धारा के साथ बने हुए थे। और (चूँकि एल्स्टिर का सबसे प्रारंभिक कार्य उस समय का था जब चित्रकार अपने परिदृश्य को आकर्षक बनाने के लिए उसमें मानव आकृति जोड़ते थे), चट्टान के किनारे या पहाड़ों के बीच, सड़क, प्रकृति का वह आधा मानव भाग, नदी या सागर की तरह, परिप्रेक्ष्य के ग्रहण से गुज़रती थी। और चाहे पहाड़ की खड़ी दीवार हो, या जलप्रपात से उठी धुंध हो, या समुद्र हो, जो राहगीर को दिखाई देने वाले मार्ग की निरंतरता को देखने से रोकते हों, जो हमें दिखाई नहीं देता, पुराने जमाने के वस्त्रों में लिपटा वह छोटा सा इंसान अक्सर किसी खाई के किनारे पर रुका हुआ प्रतीत होता

था, जिस रास्ते पर वह चल रहा था वह वहीं समाप्त हो जाता था, जबकि उससे एक हजार फीट ऊपर उन चीड़ के जंगलों में, पिघलती आँखों और सुकून भरे दिल से हम उसकी धूल भरी सतह की धागे जैसी सफेदी को फिर से प्रकट होते हुए देखते थे, जो राहगीर के कदमों का स्वागत करती थी, जबकि हमसे पहाड़ की ढलान ने, जहाँ वह झरने या नाले से बचने के लिए मुड़ती थी, बीच के मोड़ों को छिपा लिया था।

वास्तविकता का सामना करते हुए, एल्स्टिर ने स्वयं को हर बौद्धिक अवधारणा से मुक्त करने का जो प्रयास किया, वह और भी प्रशंसनीय था, क्योंकि यह व्यक्ति, जो चित्रकारी करने से पहले जानबूझकर खुद को अज्ञानी बना लेता था, अपने उद्देश्य की ईमानदारी में वह सब कुछ भूल जाता था जो वह जानता था, क्योंकि ज्ञान अपने आप में अस्तित्वहीन हो जाता है, वास्तव में एक असाधारण रूप से विकसित बुद्धि वाला व्यक्ति था। जब मैंने उनसे बालबेक के बरामदे को देखकर अपनी निराशा व्यक्त की, तो वे बोले, "क्या!" "आप बरामदे से निराश हो गए! अरे, यह तो लोगों के पास अब तक की सबसे सुंदर सचित्र बाइबिल है। वह वर्जिन मैरी, और उनके जीवन की कहानी बताने वाली सभी नक्काशी, उस अंतहीन आराधना और प्रशंसा की कविता की सबसे प्रेमपूर्ण, सबसे प्रेरणादायक अभिव्यक्ति हैं जिसमें मध्य युग ने मैडोना की महिमा का गुणगान किया था। अगर आप जानते, पवित्र ग्रंथ को अत्यंत सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने के साथ-साथ, उस पुराने मूर्तिकार के कितने उत्कृष्ट विचार थे, कितने गहन चिंतन थे, कितनी मधुर कविता थी!"

"यह एक अद्भुत विचार है, वह विशाल चादर जिसमें स्वर्गदूत कुंवारी मरियम के शरीर को ले जा रहे हैं, जो इतना पवित्र है कि वे उसे अपने हाथों से छूने का साहस नहीं करते"; (मैंने उनसे कहा कि इस विषय पर सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स में भी चर्चा हुई थी; उन्होंने वहाँ के बरामदे की तस्वीरें

देखी थीं और सहमत हुए, लेकिन उन्होंने बताया कि उन छोटे किसान आकृतियों की हलचल भरी गतिविधि, जो सभी एक साथ वर्जिन मैरी की ओर दौड़ रही थीं, उन दो महान देवदूतों की गंभीरता के समान नहीं थी, जो लगभग इतालवी थे, इतने उछलते हुए, इतने कोमल) "वह देवदूत जो वर्जिन मैरी की आत्मा को उनके शरीर से मिलाने के लिए ले जा रहा है; वर्जिन मैरी और एलिजाबेथ की मुलाकात में, एलिजाबेथ का हावभाव जब वह वर्जिन मैरी के गर्भ को छूती है और यह महसूस करके आश्चर्यचकित होती है कि वह बच्चे से भरा हुआ है; और दाई का पट्टी बंधा हुआ हाथ जिसने बिना छुए निष्कलंक गर्भाधान पर विश्वास करने से इनकार कर दिया था; और वर्जिन मैरी द्वारा संत थॉमस को पुनरुत्थान का प्रमाण देने के लिए फेंका गया लिनेन का कपड़ा; वह घूंघट भी, जिसे वर्जिन मैरी अपने ही सीने से फाड़कर अपने पुत्र के नग्न शरीर को ढकती हैं, जिसकी बगल से चर्च एक प्याले में संस्कार की शराब ग्रहण करता है, जबकि, उनकी दूसरी तरफ..." सिनेगॉग, जिसका राज्य समाप्त हो चुका है, उसकी आँखों पर पट्टियाँ बंधी हैं, वह आधा टूटा हुआ राजदंड पकड़े हुए है और अपने सिर से फिसलते हुए मुकुट के साथ पुराने कानून की पट्टियों को गिरा रहा है; और वह पति जो न्याय के दिन, अपनी युवा पत्नी को उसकी कब्र से उठने में मदद करते हुए, उसे आश्वस्त करने के लिए, यह साबित करने के लिए कि उसका दिल वास्तव में धड़क रहा है, अपना हाथ अपने दिल पर रखता है, क्या आपको लगता है कि यह इतना तुच्छ विचार है, इतना बासी और सामान्य? और वह देवदूत जो सूर्य और चंद्रमा को ले जा रहा है, जो अब से बेकार हैं, क्योंकि यह लिखा है कि क्रूस का प्रकाश आकाश के प्रकाश से सात गुना अधिक चमकीला होगा; और वह जो बच्चे के स्नान के पानी में अपना हाथ डुबो रहा है, यह देखने के लिए कि क्या यह पर्याप्त गर्म है; और वह जो बादलों से निकलकर कुंवारी के माथे पर

मुकुट रखता है, और वे सभी देवदूत जो नए यरूशलेम के बलस्टरों के बीच, स्वर्ग के गुंबद से झुके हुए हैं, और भय या आनंद से अपनी बाहें ऊपर उठा रहे हैं। दुष्टों की पीड़ाओं या चुने हुए लोगों के आनंद को देखकर आप मंत्रमुग्ध हो जाएंगे! क्योंकि यह स्वर्ग के सभी चक्र हैं, धर्मशास्त्र और प्रतीकों से भरी एक विशाल कविता है जो आपके सामने है। यह अद्भुत, अद्भुत, दिव्य है, इटली में आप जो कुछ भी देखेंगे उससे हज़ार गुना बेहतर है, जहाँ इस टिम्पेनम की नकल कम प्रतिभा वाले मूर्तिकारों ने बड़ी सावधानी से की है। प्रतिभा कभी सार्वभौमिक नहीं थी; यह सब बकवास है; यह स्वर्ण युग से भी आगे की बात होगी। जिस व्यक्ति ने उस अग्रभाग को तराशा है, आप यह मान सकते हैं कि वह उतना ही महान था, उसके विचार उतने ही गहन थे जितने कि आज के समय में आप जिन लोगों की प्रशंसा करते हैं। अगर हम साथ चलें तो मैं आपको समझा सकता हूँ कि मेरा क्या मतलब है। 'ऑफिस ऑफ द असम्प्शन' के कुछ अंश ऐसे हैं जिन्हें अभिव्यक्ति की ऐसी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया गया है जिसकी बराबरी रेडॉन भी कभी नहीं कर पाए।

जिस विशाल दिव्य दर्शन के बारे में उन्होंने मुझसे बात की थी, वह विशाल धार्मिक कविता, जिसे मैंने समझा था कि वहाँ पत्थर पर उकेरा गया था, फिर भी जब मेरी आँखें, लालसा से भरी हुई, बालबेक चर्च के सामने खुलीं, तो मैंने ये चीजें नहीं देखीं। मैंने उनसे संतों की उन विशाल मूर्तियों के बारे में बात की, जो मचानों पर स्थापित होकर दोनों ओर एक तरह का मार्ग बनाती थीं।

उन्होंने समझाया, “यह प्राचीन काल के धुंध से शुरू होकर यीशु मसीह पर समाप्त होता है। एक तरफ आप उनके आत्मिक पूर्वजों को देखते हैं, दूसरी तरफ यहूदा के राजाओं को, जो उनके शारीरिक पूर्वज थे। सभी युगों का ज़िक्र है। और अगर आपने उन आकृतियों को और करीब से देखा

होता जिन्हें आपने फांसी के तख्ते समझा था, तो आप उन पर खड़ी आकृतियों के नाम बता पाते। मूसा के चरणों में आप सोने के बछड़े को, अब्राहम के चरणों में मेढ़े को और यूसुफ के चरणों में पोटिफ़र की पत्नी को सलाह देते हुए दुष्ट आत्मा को पहचान लेते।"

मैंने उन्हें यह भी बताया कि मैं वहाँ लगभग फ़ारसी शैली की इमारत देखने की उम्मीद से गया था, और निस्संदेह यही मेरी निराशा का एक मुख्य कारण था। "बिल्कुल नहीं," उन्होंने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, "यह बिल्कुल सच है। इसके कुछ हिस्से पूरी तरह से प्राच्य शैली के हैं; एक स्तंभ पर फ़ारसी विषय को इतनी सटीकता से उकेरा गया है कि इसे प्राच्य परंपराओं के निरंतर प्रभाव से नहीं समझाया जा सकता। नक्काशी करने वाले ने शायद खोजकर्ताओं द्वारा पूर्व से लाए गए किसी संदूक की नकल की होगी।" और उन्होंने वास्तव में बाद में मुझे उस स्तंभ की तस्वीर दिखाई जिस पर मुझे लगभग चीनी शैली के अजगर एक-दूसरे को खाते हुए दिखाई दिए, लेकिन बालबेक में यह छोटी सी नक्काशी मेरी नज़र से ओझल हो गई क्योंकि इमारत का समग्र स्वरूप 'लगभग फ़ारसी चर्च' शब्दों से मेरे मन में बनी छवि से मेल नहीं खाता था।

इस स्टूडियो में मुझे जो बौद्धिक सुख प्राप्त हुए, वे मुझे उस स्थान की गर्म चमक, उस जगह की झिलमिलाती उदासी और उस छोटी सी खिड़की से, जो हनीसकल से घिरी हुई थी और उस देहाती रास्ते में, जहाँ धूप से तपती धरती थी, उसकी निर्मल शुष्कता को महसूस करने से जरा भी नहीं रोक पाए। शायद इस गर्मी के दिन मुझे जो असीम सुकून मिल रहा था, वह एल्स्टिर के कार्केथुइट बंदरगाह को देखकर मेरे भीतर उमड़ी खुशी की बाढ़ को और बढ़ा रहा था।

मैंने एल्स्टिर को एक विनम्र व्यक्ति समझा था, लेकिन जब मैंने धन्यवाद के छोटे से भाषण में 'प्रसिद्धि' शब्द का उच्चारण किया, तो उनके चेहरे पर

उदासी छा गई, यह देखकर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। जो लोग यह मानते हैं कि उनका काम अमर रहेगा—जैसा कि एल्स्टिर के मामले में था—वे उस काम को ऐसे समय में रखने की आदत बना लेते हैं जब वे स्वयं धूल में मिल चुके होंगे। और इस प्रकार, उन्हें अपने अंत के बारे में सोचने पर मजबूर करके, प्रसिद्धि का विचार उन्हें दुखी कर देता है क्योंकि यह मृत्यु के विचार से अविभाज्य है। मैंने अनजाने में एल्स्टिर के माथे पर छाई महत्वाकांक्षा की उदासी के बादल को दूर करने की उम्मीद में बातचीत का विषय बदल दिया। "किसी ने मुझे एक बार सलाह दी थी," मैंने कॉम्ब्रे में लेग्रैंडिन के साथ हुई हमारी बातचीत के बारे में सोचते हुए कहा, जिसके बारे में एल्स्टिर के विचार जानने का अवसर पाकर मैं खुश था, "ब्रिटनी न जाऊं, क्योंकि यह स्वप्निल प्रवृत्ति वाले मन के लिए अच्छा नहीं होगा।" "बिल्कुल नहीं," उन्होंने उत्तर दिया। जब मन में सपने देखने की प्रवृत्ति होती है, तो उसे सपनों से दूर रखना, सपनों को सीमित करना एक गलती है। जब तक आप अपने मन को सपनों से विचलित करते रहेंगे, तब तक वह उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में नहीं जान पाएगा; आप हमेशा चीजों के बाहरी दिखावे से ही भ्रमित होते रहेंगे, क्योंकि आप उनके वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाएंगे। यदि थोड़ा सा सपना देखना खतरनाक है, तो इसका इलाज कम सपने देखना नहीं, बल्कि अधिक सपने देखना, हर समय सपने देखना है। यदि आप अपने सपनों से परेशान नहीं होना चाहते हैं, तो आपको अपने सपनों को पूरी तरह से समझना होगा; सपनों को अपने जीवन से अलग करने का एक तरीका है जो अक्सर अच्छे परिणाम देता है, इसलिए मैं खुद से पूछता हूं कि क्या हमें इसे हर कीमत पर, केवल एक निवारक उपाय के रूप में, नहीं आजमाना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे कुछ सर्जन कहते हैं कि हमें बाद में अपेंडिसाइटिस के खतरे से बचने के लिए, बचपन में ही अपने सभी

अपेंडिक्स निकलवा लेने चाहिए।

इस बीच, एल्स्टिर और मैं स्टूडियो में टहल रहे थे और उस खिड़की तक पहुँच गए थे जो बगीचे के उस पार एक संकरी गली, लगभग देहाती सड़क की ओर खुलती थी। हम वहाँ शाम की ठंडी हवा में साँस लेने गए थे। मुझे लगा कि मैं उस छोटे से समूह की लड़कियों से बहुत दूर हूँ, और उन्हें देखने की उम्मीद को एक बार के लिए त्यागकर ही मैंने अपनी दादी की प्रार्थनाओं को मानकर एल्स्टिर से मिलने का फैसला किया था। क्योंकि जिस चीज़ को हम खोज रहे होते हैं, वह कहाँ मिलेगी, यह हम कभी नहीं जानते, और अक्सर हम लंबे समय तक उस जगह से बचते रहते हैं जहाँ अलग-अलग कारणों से हर कोई हमें जाने के लिए कहता रहता है। लेकिन हमें कभी शक नहीं होता कि हम वहाँ उसी व्यक्ति को देखेंगे जिसके बारे में हम सोच रहे होते हैं। मैंने स्टूडियो के बाहर से गुजरने वाली देहाती सड़क पर नज़र डाली, जो स्टूडियो के बिल्कुल पास से गुजरती थी, लेकिन एल्स्टिर की नहीं थी। अचानक उस पर तेज़ी से आती हुई, उस छोटे समूह की युवा साइकिल सवार दिखाई दी, जिसके काले बाल थे और पोलो टोपी उसके गोल-मटोल गालों तक नीचे खींची हुई थी, उसकी आँखें प्रसन्न और लगभग आग्रहपूर्ण थीं; और उस शुभ मार्ग पर, जो चमत्कारिक रूप से आनंद की उम्मीदों से भरा था, मैंने उसे पेड़ों के नीचे एल्स्टर को एक मित्र की तरह मुस्कुराते हुए अभिवादन करते देखा, एक इंद्रधनुष जिसने हमारे सांसारिक जगत और उन क्षेत्रों के बीच की खाई को पाट दिया जिन्हें मैंने अब तक दुर्गम माना था। वह चित्रकार से हाथ मिलाने के लिए भी आगे आई, हालांकि बिना रुके, और मैंने देखा कि उसकी ठोड़ी पर एक छोटा सा तिल था। "क्या आप उस लड़की को जानते हैं, महोदय?" मैंने एल्स्टर से पूछा, यह समझते हुए कि यदि वह चाहे तो मुझे उससे मिलवा सकता है, हम दोनों को घर आमंत्रित कर

सकता है। और ग्रामीण परिवेश से घिरे इस शांत स्टूडियो में अचानक एक बच्चे जैसी उमंग भर गई, मानो वह अपने घर में पहले से ही खुशी से खेल रहा हो, और उसे पता चले कि उसके लिए भी एक भव्य भोज तैयार किया जा रहा है, उसी उदारता के कारण जो सुंदर वस्तुओं और नेक मेजबानों को अपने उपहारों को बेहिसाब बढ़ाने में सक्षम बनाती है। एल्स्टिर ने मुझे बताया कि उसका नाम अल्बर्टीन सिमोनट था, और उसने मुझे अपने दोस्तों के नाम भी बताए, जिनका मैंने उसे इतनी सटीकता से वर्णन किया कि उसने लगभग बिना किसी झिझक के उन्हें पहचान लिया। मैंने उनकी सामाजिक स्थिति के बारे में एक गलती की थी, लेकिन वह गलती नहीं जो मैं अक्सर बालबेक में करता था। मैं हमेशा दुकानदारों के बेटों को घोड़े पर सवार देखकर राजकुमार समझ बैठता था। इस बार मैंने उद्योग और व्यापार जगत से जुड़े बेहद अमीर, सम्मानित लोगों के एक समूह की बेटियों को एक अलग ही वर्ग में रख दिया था। यह वह वर्ग था जिसमें मुझे पहली बार में सबसे कम दिलचस्पी थी, क्योंकि इसमें न तो निचले तबके का रहस्य था और न ही उस समाज का, जिसमें गुएरमांटे परिवार अक्सर आता-जाता था। और निस्संदेह, यदि उनमें एक अंतर्निहित गुण, एक ऐसा पद न होता जिसे वे कभी खो नहीं सकती थीं, तो मेरे चकाचौंध भरे नेत्रों में, उनके चारों ओर के समुद्रतटीय जीवन की चकाचौंध से, शायद मैं इस विचार का विरोध करने और उस पर विजय पाने में सफल न हो पाता कि वे समृद्ध व्यापारियों की बेटियाँ थीं। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका कि फ्रांसीसी मध्यम वर्ग किस प्रकार की उत्कृष्ट और विविध मूर्तियों से भरा एक अद्भुत स्टूडियो था। उनके चेहरों के भावों में कितनी अकल्पनीय विविधता, कितनी दृढ़ता, कितनी ताजगी, कितनी सादगी थी। वे चतुर पुराने साहूकार, जिनकी कोख से ये डायनें और अप्सराएँ उत्पन्न हुई थीं, मुझे मूर्तिकारों में सबसे

महान प्रतीत होते थे। इन लड़कियों के सामाजिक परिवर्तन को समझने से पहले ही—ये गलतियाँ और किसी व्यक्ति के बारे में हमारी धारणा में होने वाले बदलाव किसी रासायनिक संयोजन की तरह क्षणिक होते हैं—उनके चेहरों के पीछे, जो इतने देहाती और सीधे-सादे थे कि मैंने उन्हें रेसिंग साइकिल चालकों या मुक्केबाज़ों की रखैलें समझ लिया था, यह विचार बैठ गया था कि शायद उनका संबंध किसी ऐसे वकील के परिवार से हो जिसे हम जानते हों। मुझे अल्बर्टीन सिमोनट के नाम का अर्थ मुश्किल से ही समझ आया था; उन्हें तो यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि एक दिन वह मेरे लिए क्या मायने रखेंगी। यहाँ तक कि सिमोनट नाम, जिसे मैंने समुद्र तट पर सुना था, अगर मुझे इसे लिखने को कहा जाता तो मैं इसे दो 'n' के साथ लिखता, सपने में भी नहीं सोचा था कि इस परिवार के लिए अपने नाम में केवल एक 'n' होना कितना महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे हम सामाजिक स्तर में नीचे उतरते हैं, हमारा घमंड तुच्छ बातों पर केंद्रित होता जाता है, जो शायद अभिजात वर्ग द्वारा माने जाने वाले भेदों से अधिक महत्वहीन नहीं होतीं, लेकिन अधिक अस्पष्ट और व्यक्तिगत होने के कारण हमें अधिक आश्चर्यचकित करती हैं। संभवतः कुछ साइमोनेट्स ऐसे भी रहे होंगे जिनका व्यापार ठप रहा हो, या इससे भी बुरी स्थिति रही हो। तथ्य यह है कि साइमोनेट्स परिवार को हमेशा इस बात से चिढ़ होती थी कि कोई उनके नाम में दो बार 'n' का प्रयोग करे। वे इस बात का दिखावा करते थे कि वे दुनिया के इकलौते साइमोनेट्स हैं जिनके नाम में दो की जगह एक ही 'n' है, और शायद उन्हें इस बात पर उतना ही गर्व था जितना मोंटमोरेंसी परिवार को फ्रांस के प्रमुख बैरन होने पर था। मैंने एल्स्टिर से पूछा कि क्या ये लड़कियां बालबेक में रहती थीं; हाँ, उन्होंने मुझे बताया, उनमें से कुछ तो रहती ही थीं। जिस विला में उनमें से एक रहती थी, वह ठीक उसी स्थान पर था, समुद्र तट के बिल्कुल अंत में, जहाँ

से कैनापविले की चट्टानें शुरू होती थीं। चूंकि यह लड़की अल्बर्टीन सिमोनट की बहुत अच्छी दोस्त थी, इसलिए मेरे लिए यह मानने का एक और कारण था कि वास्तव में वही लड़की थी जिससे मैं उस दिन अपनी दादी के साथ रहते हुए मिली थी। बेशक, समुद्र तट की ओर जाने वाली इतनी सारी छोटी-छोटी गलियाँ थीं, और सभी एक ही कोण पर थीं, कि मैं ठीक-ठीक यह नहीं बता सकती थी कि वह कौन सी गली थी। हर कोई किसी बात को सटीक रूप से याद रखना चाहता है, लेकिन उस समय दृष्टि धुंधली थी। फिर भी, यह लगभग निश्चित था कि अल्बर्टीन और वह लड़की जिसे मैंने उसकी सहेली के घर जाते देखा था, एक ही व्यक्ति थीं। इसके बावजूद, उस सांवली युवा गोल्फर द्वारा मुझे दी गई अनगिनत छवियां, चाहे वे एक-दूसरे से कितनी ही भिन्न क्यों न रही हों, एक-दूसरे पर समाहित हो गई हैं (क्योंकि अब मैं जानती हूं कि वे सभी उसी की हैं), और यदि मैं अपनी यादों के धागे को पीछे की ओर ले जाऊं, तो उस पहचान की आड़ में, और मानो किसी सुरंगनुमा रास्ते से गुजरते हुए, मैं उन सभी छवियों से बारी-बारी से गुजर सकती हूं, बिना उन सभी के पीछे एक ही व्यक्ति की चेतना खोए। दूसरी ओर, यदि मैं उस लड़की के पास लौटना चाहूं, जिसे मैंने उस दिन अपनी दादी के साथ देखा था, तो मुझे पहले मुक्त वातावरण में निकलना होगा। मुझे विश्वास है कि वहां मुझे अल्बर्टीन ही मिलती है, वही लड़की जो अक्सर अपने चलते-फिरते साथियों के बीच समुद्र के किनारे टहलते हुए थम जाती थी; लेकिन वे सभी हाल की छवियां उस पुरानी छवि से अलग रहती हैं क्योंकि मैं उसे उस समय वह पहचान नहीं दे सकती जो उसने मुझे उस क्षण नहीं दी थी जब उसने मेरा ध्यान खींचा था। संभावनाओं के नियम से मुझे जो भी आश्वासन मिल सकता है, वह गोल-मटोल गालों वाली लड़की, जिसने छोटी सी गली और समुद्र तट के कोने से मुझे इतनी बेबाकी से घूरा था,

और जिसके द्वारा मुझे लगता है कि उसने मुझसे प्यार किया होगा, उसे मैंने शब्दों के सख्त अर्थों में फिर कभी नहीं देखा है।

उस छोटे से समूह की अलग-अलग लड़कियों के बीच मेरी झिझक, जिनमें से हर एक में वह सामूहिक आकर्षण बरकरार था जिसने मुझे पहले परेशान किया था, और उन कारणों के साथ मिलकर, जो मुझे बाद में, यहाँ तक कि अल्बर्टीन के लिए मेरे दूसरे और बड़े प्रेम के समय भी, उसे प्यार करने से परहेज करने की एक तरह की रुक-रुक कर और बहुत ही संक्षिप्त स्वतंत्रता प्रदान करते थे। उसके सभी दोस्तों के बीच भटकने के बाद अंततः उस पर केंद्रित होने से पहले, मेरा प्यार, कभी-कभी, अपने और अल्बर्टीन की छवि के बीच प्रकाश और छाया का एक निश्चित 'खेल' बनाए रखता था, जिसने इसे, एक खराब ढंग से फिट किए गए लैंप की तरह, उस पर ध्यान केंद्रित करने से पहले एक-दूसरे की सतह पर मंडराने में सक्षम बनाया; मेरे दिल में महसूस होने वाले दर्द और अल्बर्टीन की स्मृति के बीच का संबंध मुझे आवश्यक नहीं लगा; शायद मैं इसे किसी दूसरे व्यक्ति की छवि के साथ समन्वयित करने में कामयाब हो गया था, जिसने मुझे क्षण भर के लिए वास्तविकता को पूरी तरह से भुलाने में सक्षम बनाया, न केवल बाहरी वास्तविकता को, जैसे कि गिल्बर्ट के लिए मेरा प्यार (जिसे मैंने एक आंतरिक अवस्था के रूप में पहचाना था जिसमें मैंने अपने आप से ही उस व्यक्ति के विशेष गुण, विशेष चरित्र को ग्रहण किया था जिससे मैं प्यार करता था, वह सब कुछ जो उसे मेरी खुशी के लिए अपरिहार्य बनाता था), बल्कि दूसरी वास्तविकता को भी, जो आंतरिक और विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक थी।

"ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता जब उनमें से कोई न कोई यहाँ न आता हो और एक-दो मिनट के लिए अंदर देखता हो," एल्स्टिर ने मुझे बताया, जिससे मैं निराशा में डूब गया क्योंकि मैंने सोचा कि अगर मैं दादी की

विनती पर तुरंत उससे मिलने गया होता, तो शायद मैं बहुत पहले ही अल्बर्टीन से परिचित हो चुका होता।

वह गुजर चुकी थी; स्टूडियो से उसका कोई अता-पता नहीं था। मैंने सोचा कि वह मोर्चे पर अपने दोस्तों के पास चली गई होगी। अगर मैं एल्स्टिर के साथ अचानक वहाँ पहुँच जाती, तो मैं उन सभी को जान लेती। मैंने उसे समुद्र तट पर मेरे साथ घूमने के लिए मनाने के अनगिनत बहाने सोचे। उस छोटी सी खिड़की के फ्रेम में उस लड़की के दिखने से पहले मुझे जो मन की शांति थी, वह अब नहीं रही; वह खिड़की हनीसकल की झालरों से घिरी हुई इतनी मनमोहक थी, और अब इतनी सूनी और खाली थी। एल्स्टिर ने मुझे एक ऐसी खुशी दी जो साथ ही पीड़ादायक भी थी, जब उसने कहा कि वह मेरे साथ थोड़ी दूर चलेगा, लेकिन उसे पहले अपना काम पूरा करना होगा। यह फूलों का अध्ययन था, लेकिन उन फूलों का नहीं, जिनके चित्र मैं उससे बनवाना चाहती थी, न कि किसी व्यक्ति का, ताकि मैं उसकी प्रतिभा के प्रकटीकरण से वह सीख सकूँ जो मैंने अक्सर फूलों से व्यर्थ ही पाने की कोशिश की थी—सफेद और गुलाबी हॉथोर्न, कॉर्नफ्लावर, सेब के फूल। एल्स्टिर काम करते हुए मुझसे वनस्पति विज्ञान के बारे में बातें कर रहा था, लेकिन मैंने शायद ही कभी सुना; वह अब अपने आप में पर्याप्त नहीं था, वह अब केवल इन लड़कियों और मेरे बीच एक आवश्यक मध्यस्थ बनकर रह गया था; कुछ ही क्षण पहले तक उसकी प्रतिभा ने मेरी नज़रों में उसे जो विशिष्टता प्रदान की थी, वह अब केवल इस हद तक ही मायने रखती थी कि वह मुझे भी उन कुछ लड़कियों की नज़रों में थोड़ी सी प्रतिष्ठा दिला सके, जिनके सामने वह मुझे पेश करने वाला था।

मैं कमरे में बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था, उसके काम खत्म होने का इंतज़ार कर रहा था; मैंने दीवारों के सहारे रखे कई रेखाचित्रों को उठाकर

देखा। इसी दौरान मेरी नज़र एक जलरंग चित्र पर पड़ी जो स्पष्ट रूप से एल्स्टिर के जीवन के बहुत पुराने दौर का था, और इसने मुझे एक विशेष प्रकार का आकर्षण दिया जो कलाकृतियों में होता है, न केवल वे अत्यंत कुशलता से बनाई गई हों बल्कि उनका विषय इतना अनूठा और मोहक हो कि हम उनके आकर्षण का एक बड़ा हिस्सा उसी विषय को समर्पित करते हैं, मानो वह आकर्षण चित्रकार को केवल प्रकृति द्वारा भौतिक रूप में पहले से ही मौजूद हो, उसे खोज निकालना हो, देखना हो और कला में उसे पुन: प्रस्तुत करना हो। ऐसी वस्तुओं का अस्तित्व, चित्रकार की व्याख्या से परे भी सुंदर हो सकता है, यह हमारे भीतर के एक प्रकार के सहज भौतिकवाद को संतुष्ट करता है, जिसके विरुद्ध हमारी बुद्धि संघर्ष करती है और सौंदर्यशास्त्र के अमूर्त विचारों के लिए एक प्रतिसंतुलन का काम करती है। यह जलरंग चित्र एक युवती का था, जो न तो बेहद खूबसूरत थी और न ही एक विचित्र प्रकार की। उसने एक चुस्त-दुरुस्त टोपी पहन रखी थी, जो 'बिली-कॉक' टोपी जैसी थी और चेरी रंग के रेशमी रिबन से सजी थी। उसके दस्ताने पहने एक हाथ में जलती हुई सिगरेट थी, जबकि दूसरे हाथ में, घुटने के स्तर तक, एक चौड़ी किनारी वाली बगीचे की टोपी थी, जो धूप से बचने के लिए बुनी हुई घास की एक साधारण सी पट्टी मात्र थी। उसके बगल में मेज पर गुलाबी कार्नेशन से भरा एक लंबा फूलदान रखा था। अक्सर (और यहाँ भी यही स्थिति थी) ऐसी कृतियों की विलक्षणता मुख्य रूप से उन विशेष परिस्थितियों में उनके निष्पादन के कारण होती है, जिन्हें हम पहली नज़र में ठीक से समझ नहीं पाते। उदाहरण के लिए, यदि किसी महिला मॉडल का अजीब पहनावा किसी नकाबपोश नृत्य-नाट्य के लिए उसकी पोशाक हो, या इसके विपरीत, एक बुजुर्ग व्यक्ति का लाल लबादा, जिसे उसने चित्रकार की किसी सनक को पूरा करने के लिए पहना हो, किसी प्रोफेसर या

पार्षद का गाउन हो या कार्डिनल का चोगा हो। मेरे सामने मौजूद चित्र में दिख रही शख्सियत का अस्पष्ट स्वरूप, मेरी समझ के बिना ही, इस तथ्य से उत्पन्न हुआ कि वह पिछली पीढ़ी की एक युवा अभिनेत्री थी, जो किसी भूमिका के लिए अधनंगी पोशाक में थी। लेकिन टोपी या हैट, जिसके नीचे से बाल बाहर निकले हुए थे लेकिन छोटे कटे हुए थे, और सफेद कमीज के ऊपर बिना कॉलर वाला मखमली कोट, इन सबने मुझे कपड़ों के काल और मॉडल के लिंग के बारे में संशय में डाल दिया, जिससे मुझे ठीक से पता नहीं चल पा रहा था कि मेरी आंखों के सामने वास्तव में क्या है, सिवाय इसके कि यह पेंटिंग के इन टुकड़ों में सबसे चमकीले रंग का नमूना था। और इससे मिलने वाला आनंद केवल इस डर से भंग हो गया कि एल्स्टिर और देरी करके मुझे लड़कियों को देखने से रोक देगा, क्योंकि सूरज अब ढल रहा था और छोटी खिड़की में नीचे लटका हुआ था। इस जलरंग चित्र में कुछ भी केवल एक तथ्य के रूप में नहीं दर्शाया गया था और न ही रचना के लिए उसकी उपयोगिता के कारण चित्रित किया गया था, न ही पोशाक इसलिए क्योंकि युवती को कुछ पहनना ही था, और न ही फूलदान इसलिए क्योंकि उसमें फूल रखे जाने थे। फूलदान का कांच, जिसे उसकी अपनी सुंदरता के लिए संजोया गया था, ऐसा प्रतीत होता था मानो उसमें वह पानी समाया हो जिसमें कार्नेशन के डंठल डूबे हुए थे, मानो वह पानी स्वयं फूलदान की तरह ही निर्मल और लगभग तरल हो; महिला की पोशाक ने उसे इस प्रकार लपेटा था जिसमें एक स्वतंत्र, एक भाईचारे वाला आकर्षण था, और यदि मनुष्य की रचनाएँ प्रकृति के चमत्कारों के आकर्षण से प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं, तो वह उतनी ही कोमल, आँखों को उतनी ही भाने वाली, उतनी ही ताज़ी रंगी हुई थी जितनी बिल्ली की खाल, फूल की पंखुड़ियाँ, कबूतर के पंख। सफेद रंग की कमीज़ का सामने का हिस्सा, बरसती बारिश की तरह

महीन, जिसमें घाटी की लिली की तरह छोटी घंटियों में सिमटी हुई रंगीन सिलवटें थीं, कमरे से आती तेज रोशनी की किरणों से जगमगा रहा था, मानो बुने हुए लॉन पर सिले हुए फूलों के गुच्छे हों। कोट का मखमली कपड़ा, दूधिया चमक से जगमगाता हुआ, जगह-जगह खुरदुरा, खरोंचदार और झबरा था, जो फूलदान में खिले मुरझाए कार्नेशन फूलों की चमक की याद दिलाता था। लेकिन सबसे बढ़कर, ऐसा लगता था कि एल्स्टिर, एक युवा अभिनेत्री के इस वेश में छिपी किसी भी अनैतिक भावना के प्रति पूर्णतः उदासीन थे, जिसके लिए मंच पर अपनी भूमिका निभाने की प्रतिभा निस्संदेह कुछ दर्शकों की थकी हुई या पतित इंद्रियों को आकर्षित करने वाले उत्तेजक आकर्षण से कम महत्वपूर्ण थी। इसके विपरीत, उन्होंने उन अस्पष्ट बिंदुओं को एक ऐसे कलात्मक तत्व के रूप में उजागर किया था जिसे प्रमुखता दी जानी चाहिए थी, और जिसे बल देने के लिए उन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी। चेहरे की रेखाओं के साथ, अंतर्निहित लिंग स्वयं को एक लड़के जैसी लड़की के रूप में स्वीकार करने ही वाला प्रतीत होता था, फिर गायब हो जाता था और आगे चलकर एक स्त्री-समान, दुष्ट और चिंतनशील युवक के आभास के साथ पुनः प्रकट होता था, फिर एक बार फिर से गायब हो जाता था और पकड़ में नहीं आता था। उसकी आँखों में जो स्वप्निल उदासी झलक रही थी, वह प्रेम-प्रसंग और अभिनय की दुनिया से जुड़ी चीज़ों के विपरीत होने के कारण, चित्र में ज़रा भी विचलित करने वाली नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो यह भाव बनावटी हो, और इस उत्तेजक पोशाक में दुलार सहने को तैयार दिखने वाली इस युवती ने शायद किसी गुप्त लालसा, किसी अनकहे दुख की इस रोमांटिक अभिव्यक्ति से उत्तेजना को और बढ़ाने का सोचा होगा। चित्र के नीचे लिखा था, "मिस सैक्रिपेंट: अक्टूबर, 1872।" मैं अपनी प्रशंसा रोक नहीं पाई। "अरे, ये तो कुछ नहीं, बस एक मोटा-

मोटा खाका है जो मैंने बचपन में बनाया था; ये एक वैरायटी शो के लिए पोशाक थी। अब तो बहुत समय हो गया है।" "और उस मॉडल का क्या हुआ?" मेरे शब्दों से उत्पन्न हैरानी के बाद एल्स्टिर के चेहरे पर वही उदासीन, खोई हुई सी भावभंगिमा दिखाई दी जो कुछ ही क्षण बाद उसके चेहरे पर आ गई। "जल्दी, मुझे दो!" वह रोते हुए बोला, "मुझे मैडम एल्स्टर के आने की आहट सुनाई दे रही है, और मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि टोपी पहने उस नौजवान ने मेरी ज़िंदगी में कभी कोई भूमिका नहीं निभाई, फिर भी मेरी पत्नी के आने और उसे इस तरह घूरते हुए देखने का कोई मतलब नहीं है। मैंने इसे उन दिनों के रंगमंच की एक मनोरंजक झलक के तौर पर ही रखा है।" और, ढेर के पीछे उसे रखने से पहले, एल्स्टर, जिसने शायद सालों से उस रेखाचित्र को नहीं देखा था, ने उसका ध्यान से निरीक्षण किया। "मुझे सिर्फ़ सिर रखना होगा," उसने बुदबुदाते हुए कहा, "निचला हिस्सा तो सचमुच बहुत ही खराब है, हाथ तो किसी नौसिखिए का काम हैं।" मैडम एल्स्टर के आने से मैं बहुत दुखी था, क्योंकि वह हमें और भी देर कर रही थीं। खिड़की की चौखट पहले से ही चमक रही थी। हमारा यह भ्रमण समय की सरासर बर्बादी होगा। लड़कियों से मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि मैडम एल्स्टर हमें कितनी जल्दी छोड़कर जाती हैं या कितनी देर रुकती हैं। ऐसा नहीं था कि वह लंबे समय तक रुकी। मुझे वह बेहद उबाऊ लगी; बीस साल की उम्र में रोमन कैम्पाग्ना में बैलगाड़ी चलाते समय वह शायद कभी खूबसूरत रही होगी, लेकिन उसके काले बालों में सफ़ेदी आ गई थी और वह साधारण होते हुए भी सरल नहीं थी, क्योंकि उसका मानना था कि उसकी प्रतिमा जैसी सुंदरता के लिए आडंबरपूर्ण व्यवहार और राजसी मुद्रा आवश्यक है, जिसे बढ़ती उम्र ने अपना सारा आकर्षण खो दिया था। वह अत्यंत सादगी से सजी रहती

थी। और यह मार्मिक था, लेकिन साथ ही आश्चर्यजनक भी, जब भी एल्स्टिर अपना मुंह खोलते, और आदरपूर्ण कोमलता से, मानो केवल शब्दों को बोलने मात्र से ही वह कोमलता और श्रद्धा से भर जाते, बार-बार कहते: "मेरी सुंदर गैब्रिएल!" बाद में, जब मैं एल्स्टिर के पौराणिक चित्रों से परिचित हो गया, तो श्रीमती एल्स्टिर मेरी नजरों में भी सुंदर हो गईं। तब मुझे समझ आया कि एक निश्चित आदर्श रूप, जिसे कुछ रेखाओं, कुछ अलंकृत आकृतियों द्वारा दर्शाया गया था जो उनके पूरे काम में लगातार दिखाई देती थीं, कला के एक निश्चित मानदंड को उन्होंने लगभग दैवीय चरित्र प्रदान किया था, क्योंकि उन्होंने अपना पूरा समय, अपनी सारी मानसिक शक्ति, संक्षेप में कहें तो अपना पूरा जीवन उन रेखाओं को स्पष्ट रूप से पहचानने और उन्हें यथासंभव ईमानदारी से पुन: प्रस्तुत करने के कार्य में समर्पित कर दिया था। इस आदर्श ने एल्स्टिर में वास्तव में एक ऐसा गंभीर, इतना कठोर अनुष्ठान प्रेरित किया कि इसने उन्हें कभी भी अपनी उपलब्धि से संतुष्ट नहीं होने दिया; यह उनके स्वयं का सबसे अंतरंग हिस्सा था, और इसलिए वे इसे कभी भी एक तटस्थ दृष्टिकोण से नहीं देख पाए, इससे भावना को नहीं निकाल पाए, जब तक कि एक दिन उन्होंने इसे अपने से अलग, बाहर, एक महिला के शरीर में साकार होते हुए नहीं देखा, उस महिला के शरीर में जो समय के साथ श्रीमती एल्स्टिर बनीं और जिसमें वे (जैसा कि कोई केवल किसी ऐसी चीज के साथ कर सकता है जो स्वयं नहीं है) इसे प्रशंसनीय, मार्मिक, ईश्वरीय पा सके। इसके अलावा, उस सौंदर्य को अपने होठों पर स्पर्श करने का अवसर मिलना कितना सुखद था, जिसे अब तक उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने भीतर से निकाला था, जबकि अब वह रहस्यमय ढंग से साकार होकर मुक्तिदायक कृपा से परिपूर्ण अनेक मिलन के माध्यम से उनके समक्ष प्रकट हो रही थी। इस समय एल्स्टर उस प्रारंभिक युवावस्था में नहीं थे,

जिसमें हम अपने आदर्शों की प्राप्ति के लिए केवल अपने मन की शक्ति पर ही निर्भर रहते हैं। वह उस उम्र के करीब पहुँच रहे थे जब हम शारीरिक सुखों को मस्तिष्क की शक्ति को उत्तेजित करने के लिए सहारा मानते हैं, जब मस्तिष्क की थकावट हमें भौतिकवाद की ओर ले जाती है और हमारी सक्रियता निष्क्रिय रूप से ग्रहण किए गए प्रभावों तक सीमित हो जाती है, और हमें यह स्वीकार करने पर मजबूर करती है कि वास्तव में कुछ शरीर, कुछ पेशे, कुछ लय ऐसे हो सकते हैं जो विशेषाधिकार प्राप्त हों, जो हमारे आदर्श को इतनी सहजता से साकार करते हों कि प्रतिभा के बिना भी, केवल कंधे की गति, गले के तनाव की नकल करके, हम एक उत्कृष्ट कृति बना सकते हैं। यह वह उम्र है जब हम सुंदरता को वस्तुनिष्ठ रूप से, अपने से बाहर, अपनी आँखों से निहारना पसंद करते हैं, उसे अपने पास रखना चाहते हैं, किसी टेपेस्ट्री में, किसी पुरानी दुकान से खरीदी गई टिटियन की किसी सुंदर रेखाचित्र में, या टिटियन के रेखाचित्र जितनी ही सुंदर किसी प्रेमिका में। जब मुझे यह समझ आया, तो मैं श्रीमती एल्स्टिर को बिना आनंद के नहीं देख सका, और उनका शरीर अपना भारीपन खोने लगा, क्योंकि मैंने उसे एक विचार से भर दिया, यह विचार कि वह एक निराकार प्राणी थीं, एल्स्टिर द्वारा बनाया गया एक चित्र। वह मेरे लिए एक थीं, और मैं कह सकता हूँ कि उनके लिए भी। जीवन के तथ्य कलाकार के लिए कोई मायने नहीं रखते, वे उनके लिए केवल उनकी प्रतिभा की अपार चमक को प्रकट करने का अवसर मात्र हैं। एल्स्टर द्वारा चित्रित विभिन्न लोगों के दस चित्रों को एक साथ देखने पर यह स्पष्ट रूप से महसूस होता है कि वे सभी, सर्वप्रथम और सर्वोपरि, एल्स्टर की कृतियाँ हैं। केवल, प्रतिभा की इस बढ़ती लहर के बाद, जो मनुष्य के जीवन को बहा ले जाती है और उसमें समा जाती है, जब मस्तिष्क थकने लगता है, तो धीरे-धीरे संतुलन बिगड़ जाता है और, जैसे

कोई नदी वसंत ऋतु के विपरीत प्रवाह के बाद अपना मार्ग पुनः प्राप्त करती है, वैसे ही जीवन एक बार फिर हावी हो जाता है। प्रथम काल के दौरान, कलाकार ने धीरे-धीरे अपनी अवचेतन प्रतिभा के नियम, सूत्र को विकसित किया है। वह जानता है कि कौन सी परिस्थितियाँ, यदि वह उपन्यासकार हो तो—यदि चित्रकार हो तो—उसे विषय वस्तु प्रदान करती हैं, जो दुनिया में कुछ भी हो सकती है, लेकिन जो भी हो, वह उसके शोध के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी एक प्रयोगशाला एक कार्यशाला के लिए होती है। वह जानता है कि उसने अपनी उत्कृष्ट कृतियों का सृजन क्षीण प्रकाश के प्रभावों, अपराधबोध पर पश्चाताप की क्रिया, वृक्षों के नीचे या पानी में अर्ध-डूबी हुई, प्रतिमाओं जैसी स्तुति करती स्त्रियों से किया है। एक दिन आएगा जब, मस्तिष्क की थकावट के कारण, उसके पास उन सामग्रियों के उपलब्ध होने पर भी, जिनका उपयोग उसकी प्रतिभा करती थी, वह बौद्धिक प्रयास करने की शक्ति नहीं रहेगी जो केवल उसकी रचना को जन्म दे सकती है, फिर भी वह उन्हें खोजता रहेगा, उनकी उपस्थिति में प्रसन्न होगा, क्योंकि वे उसे आध्यात्मिक आनंद और काम करने की प्रेरणा प्रदान करती हैं; और, उन्हें अंधविश्वास के एक आवरण से घेरकर, मानो वे सभी चीजों से श्रेष्ठ हों, मानो उनमें पहले से ही कलाकृति का एक बड़ा हिस्सा विद्यमान हो, वह स्वयं को अपने आदर्शों की संगति और आराधना तक सीमित रखेगा। वह पश्चातापी अपराधियों के साथ अंतहीन वार्तालाप करेगा, जिनका पश्चाताप, जिनका पुनर्जन्म, जब वह अभी भी लिख रहा था, उसके उपन्यासों का विषय था; वह एक ऐसे इलाके में एक देहाती घर खरीदेगा जहाँ कोहरे के कारण रोशनी कम हो जाती है; वह घंटों नहाती हुई महिलाओं के अंगों को निहारता रहेगा; वह कीमती सामान इकट्ठा करेगा। और इस प्रकार जीवन की सुंदरता, एक ऐसा चरण जिसने कुछ हद तक अपना अर्थ खो दिया है,

कला की सीमाओं से परे एक ऐसा स्तर जहाँ मैंने स्वान को पहले ही पहुँचते देखा था, वही है जो रचनात्मक उत्साह में कमी, उसे प्रेरित करने वाले रूपों की अंधभक्ति, और प्रयास से बचने की इच्छा के कारण अंततः एल्स्टर की प्रगति को रोक देती है।

अंततः उसने अपने फूलों पर आखिरी ब्रश स्ट्रोक लगा दिया; मैंने उन्हें देखने के लिए एक मिनट का समय दिया; इस कार्य से मुझे कोई पुण्य नहीं मिला, क्योंकि मैं जानता था कि अब समुद्र तट पर लड़कियों के मिलने की कोई संभावना नहीं थी; फिर भी, अगर मुझे विश्वास होता कि वे अभी भी वहीं हैं, और ये व्यर्थ क्षण मुझे उनकी याद दिलाएंगे, तो भी मैं उन्हें देखने के लिए रुकता, क्योंकि मैं खुद से कहता कि एल्स्टर को लड़कियों से मेरी मुलाकात से ज्यादा अपने फूलों में दिलचस्पी थी। मेरी दादी का स्वभाव, जो मेरे पूर्ण स्वार्थ का ठीक विपरीत था, फिर भी मेरे अपने कुछ पहलुओं में झलकता था। ऐसी परिस्थितियों में जब कोई व्यक्ति, जिसके प्रति मैं उदासीन था, जिसके प्रति मैंने हमेशा स्नेह या सम्मान का दिखावा किया था, केवल किसी अप्रिय घटना के जोखिम में था जबकि मैं वास्तव में खतरे में था, तो मैं उसके झुंझलाहट पर उसके साथ सहानुभूति जताने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था मानो यह कोई महत्वपूर्ण बात हो, और अपने खतरे को कुछ भी नहीं समझता, क्योंकि मुझे लगता कि उसे चीजों को इसी अनुपात में देखना चाहिए। सच कहूँ तो, मैं इससे भी आगे बढ़कर न केवल अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे की शिकायत नहीं करूँगा, बल्कि उसका सामना करने के लिए आधा रास्ता भी तय करूँगा, और इसके विपरीत, अगर मेरे पकड़े जाने का खतरा बढ़ भी जाए, तो मैं दूसरों को उससे बचाने की कोशिश करूँगा। इसके कई कारण हैं, जिनमें से कोई भी मुझे जरा भी श्रेय नहीं देता। एक कारण यह है कि जब तक केवल मेरी बुद्धि का प्रयोग हो रहा है, मैंने

हमेशा आत्मरक्षा में विश्वास किया है। अपने जीवन में जब भी मैं नैतिक चिंताओं या मात्र मानसिक दुविधाओं से ग्रस्त हुआ हूँ, जो इतनी बचकानी होती हैं कि मैं उन्हें यहाँ गिनने की हिम्मत भी नहीं करता, और फिर कोई अप्रत्याशित परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसमें मेरे लिए जान का खतरा होता है, तो यह नई चिंता बाकी चिंताओं की तुलना में इतनी मामूली होती है कि मैं इसे राहत की भावना से, लगभग खुशी से, स्वीकार करता हूँ। इस प्रकार, यद्यपि मैं सबसे कम साहसी व्यक्ति हूँ, फिर भी मैंने उस भावना का अनुभव किया है जो मुझे हमेशा से, मेरे तार्किक मन में, मेरे स्वभाव से बिल्कुल विपरीत, अकल्पनीय प्रतीत होती रही है - खतरे का नशा। लेकिन भले ही मैं किसी भी खतरे, यहाँ तक कि जानलेवा खतरे के समय भी, पूरी तरह शांत और सुखद अवस्था में होता, तब भी, यदि मैं किसी दूसरे व्यक्ति के साथ होता, तो मैं उसे अपने पीछे सुरक्षित रखने और स्वयं खतरे का सामना करने से खुद को नहीं रोक पाता। जब पर्याप्त अनुभव ने मुझे यह सिखाया कि मैं हमेशा ऐसा ही करता हूँ और ऐसा करने में मुझे आनंद आता है, तब मुझे पता चला - और इस खोज से मुझे गहरी शर्मिंदगी हुई - कि ऐसा इसलिए था क्योंकि, मेरे हमेशा से माने और कहे गए विश्वासों के विपरीत, मैं दूसरों की राय के प्रति अत्यधिक संवेदनशील था। ऐसा नहीं है कि इस प्रकार का अस्वीकृत आत्म-सम्मान किसी भी अर्थ में घमंड या अहंकार है। क्योंकि जो कुछ भी इन कमियों में से किसी एक को संतुष्ट कर सकता है, वह मुझे कोई आनंद नहीं देगा, और मैंने हमेशा इनसे परहेज किया है। लेकिन जिन लोगों के बीच मैंने अपने उन मामूली फायदों को बड़ी कुशलता से छिपाया है, जिनके बारे में जानकर वे मेरे बारे में कम नकारात्मक सोचते, उनके सामने मैं हमेशा इस बात का आनंद लेने से खुद को रोक नहीं पाया कि मैं उनकी जान बचाने के लिए अपनी जान बचाने से कहीं ज़्यादा सावधानी बरतता हूँ। चूंकि मेरा

मकसद आत्मसम्मान है, न कि वीरता, इसलिए मुझे यह स्वाभाविक लगता है कि किसी भी संकट की स्थिति में वे अलग तरह से व्यवहार करें। मैं इसके लिए उन्हें दोष नहीं देता, जैसा कि शायद मैं तब देता जब मैं कर्तव्य की भावना से प्रेरित होता, एक ऐसा कर्तव्य जो उस स्थिति में मुझे उन पर उतना ही लागू लगता जितना मुझ पर। इसके विपरीत, मुझे लगता है कि अपनी जान की रक्षा करना उनका अत्यंत बुद्धिमानी भरा कदम है, हालांकि साथ ही मैं अपनी सुरक्षा को नज़रअंदाज़ होने से नहीं रोक सकता, जो विशेष रूप से मूर्खतापूर्ण और निंदनीय है क्योंकि मुझे यह एहसास हो गया है कि बम विस्फोट के समय जिन लोगों के सामने मैं खड़ा होता हूँ, उनमें से कई लोगों की जान मेरी जान से भी ज़्यादा कीमती होती है। हालांकि, एल्स्टिर की इस पहली यात्रा के दिन, वह समय अभी दूर था जब मुझे मूल्यों के इस अंतर का एहसास होना था, और खतरे का तो कोई सवाल ही नहीं था, बल्कि बस—उस हानिकारक आत्मसम्मान का संकेत—यह सवाल था कि मैं जिस आनंद की इतनी तीव्र इच्छा रखता था, उसे चित्रकार के अधूरे काम से अधिक महत्व न दे रहा हूँ। आखिरकार वह काम पूरा हो गया। और, जैसे ही हम बाहर निकले, मैंने पाया कि—इस मौसम में दिन अभी भी इतने लंबे होते हैं—उतना देर नहीं हुई थी जितना मैंने सोचा था; हम टहलते हुए 'सामने' की ओर चल दिए। मैंने एल्स्टिर को उस जगह पर रोके रखने के लिए क्या-क्या तरकीबें अपनाईं जहाँ मुझे लगा कि लड़कियाँ अभी भी आ सकती हैं। हमारे बगल में खड़ी ऊँची चट्टानों की ओर इशारा करते हुए, मैं उससे उनके बारे में बताने के लिए कहता रहा, ताकि वह समय को भूल जाए और थोड़ी देर और वहीं रुक जाए। मुझे लगा कि अगर हम समुद्र तट के छोर की ओर बढ़ें तो उस छोटे समूह को रास्ते में रोकने का हमारा बेहतर मौका होगा। “मैं आपके साथ उन चट्टानों को थोड़ा और पास से देखना चाहूँगी,” मैंने

उससे कहा, क्योंकि मैंने देखा था कि लड़कियों में से एक उस दिशा में जाने की आदी थी। “और चलते-चलते मुझे कार्केथुइट के बारे में ज़रूर बताना। मैं कार्केथुइट देखना चाहती हूँ,” मैंने आगे कहा, यह सोचे बिना कि एल्स्टिर के कार्केथुइट बंदरगाह में जो इतना अनूठा चरित्र इतनी शक्ति से प्रकट हुआ है, वह शायद चित्रकार की कल्पना का परिणाम हो, न कि उस स्थान की किसी विशेष विशेषता का। “जब से मैंने आपका चित्र देखा है, मुझे लगता है कि मैं सबसे ज़्यादा वहीं जाना चाहूँगी, वहाँ और प्वाइंट डू राज़ पर, लेकिन ज़ाहिर है कि यहाँ से यह काफ़ी दूर होगा।” “हाँ, और वैसे भी, अगर यह पास न भी होता, तो भी मैं आपको कार्केथुइट घूमने की सलाह ज़रूर देता,” उसने उत्तर दिया। "पॉइंट डू राज़ शानदार है, लेकिन आखिरकार यह नॉर्मंडी या ब्रिटनी की वही ऊँची चट्टान है जिसे आप पहले से जानते हैं। कार्केथुइट बिल्कुल अलग है, जहाँ समतल तट से चट्टानें फूटती हुई दिखाई देती हैं। फ्रांस में मुझे इसके जैसा कुछ और नहीं पता, यह मुझे फ्लोरिडा के कुछ हिस्सों की याद दिलाता है। यह बेहद दिलचस्प है, और साथ ही बेहद जंगली भी। यह क्लिटोर्प्स और नेहोम के बीच स्थित है; आप जानते हैं कि वे इलाके कितने सुनसान हैं; तटरेखा का विस्तार मनमोहक है। यहाँ की तटरेखा अन्य जगहों जैसी ही है; लेकिन वहाँ की सुंदरता और कोमलता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।"

रात ढल रही थी; घर लौटने का समय हो गया था; मैं एल्स्टिर को उसके विला की ओर ले जा रहा था कि अचानक, मानो मेफिस्टोफेल्स फाउस्ट के सामने प्रकट हो गया हो, सड़क के अंत में—जैसे किसी वस्तु का साकार रूप, अवास्तविक, शैतानी, मेरे स्वभाव के बिल्कुल विपरीत, उस अर्ध-बर्बर और क्रूर जीवंतता का, जिससे मैं अपनी कमजोरी, अपनी अति-पीड़ित संवेदनशीलता और बौद्धिकता के कारण वंचित था—कुछ ऐसे सार

के अंश प्रकट हुए जिन्हें दुनिया में किसी और चीज़ से भ्रमित करना असंभव था, उन लड़कियों के झुंड के कुछ अंश, जो ऐसा दिखावा कर रही थीं जैसे उन्होंने मुझे देखा ही न हो, लेकिन निस्संदेह, आगे बढ़ते हुए वे व्यंग्यपूर्ण लहजे में मुझ पर फैसला सुनाने के लिए ही आ रही थीं। यह महसूस करते हुए कि अब उनके और हमारे बीच टकराव अपरिहार्य है, और एल्स्टिर निश्चित रूप से मुझे बुलाएगा, मैंने अपनी पीठ फेर ली, जैसे कोई स्नान करने वाला लहर के झटके का सामना करने के लिए तैयार हो रहा हो; मैं एकदम रुक गया और अपने प्रतिष्ठित साथी को उसके रास्ते पर जाने देकर वहीं खड़ा रहा, मानो अचानक उसमें मग्न हो गया हो, और उस अनोखी दुकान की खिड़की की ओर झुक गया जिसके पास से हम उस समय गुजर रहे थे। मुझे इन लड़कियों के अलावा किसी और चीज़ के बारे में सोचने का दिखावा करने में कोई हिचक नहीं थी, और मुझे पहले से ही हल्का-फुल्का एहसास था कि जब एल्स्टर मुझे उनसे मिलवाने के लिए बुलाएगा, तो मैं एक चुनौती भरा भाव धारण करूँगा जो आश्चर्य नहीं बल्कि आश्चर्य का दिखावा करने की इच्छा को दर्शाता है—हममें से हर कोई इतना बुरा अभिनेता है या इतना अच्छा विचार-पाठक;—यहाँ तक कि मैं अपनी छाती पर उंगली रखकर पूछूँगा, "क्या सच में आप मुझे ही चाहते हैं?" और फिर आज्ञाकारिता और विनम्रता में सिर झुकाकर उसके पास दौड़ूँगा, और अपने चेहरे पर पुराने मिट्टी के बर्तनों के अध्ययन से अलग किए जाने पर अपनी झुंझलाहट को ठंडेपन से छुपाऊँगा, क्योंकि मुझे उन लोगों से मिलवाया जा रहा था जिन्हें मैं जानना नहीं चाहता था। इस बीच, मैं खिड़की से बाहर झाँक रहा था और उस पल का इंतज़ार कर रहा था जब एल्स्टिर द्वारा पुकारा गया मेरा नाम, एक अप्रत्याशित और हानिरहित गोली की तरह मुझ पर वार करेगा। इन लड़कियों से परिचय होने की निश्चितता ने मुझे न केवल उनके प्रति पूर्ण उदासीनता का

दिखावा करने पर मजबूर किया, बल्कि वास्तव में ऐसा महसूस करने पर भी। इस बिंदु से अपरिहार्य रूप से, उन्हें जानने का आनंद तुरंत कम होने लगा, मेरे लिए सेंट-लूप से बात करने, अपनी दादी के साथ भोजन करने, बालबेक के आसपास घूमने-फिरने के आनंद से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया, जिन यात्राओं को मुझे बाद में बीच में ही छोड़ना पड़ सकता था, क्योंकि मुझे ऐसे लोगों के साथ रहना पड़ रहा था जिन्हें पुरानी इमारतों में शायद ही कोई दिलचस्पी हो। इसके अलावा, जिस आनंद को मैं महसूस करने वाला था, उसे कम करने वाली बात केवल उसकी निकटता ही नहीं थी, बल्कि उसकी वास्तविकता की असंगति भी थी। जलस्थैतिकी जैसे सटीक नियम भी हमारे द्वारा बनाई गई छवियों की सापेक्ष स्थिति को एक निश्चित क्रम में बनाए रखते हैं, जिसे आने वाली घटना तुरंत उलट देती है। एल्स्टिर मुझे पुकारने ही वाला था। यह बिल्कुल वैसा नहीं था जैसा मैंने अक्सर समुद्र तट पर, अपने बेडरूम में, इन लड़कियों से मिलने की कल्पना की थी। जो होने वाला था वह एक अलग ही घटना थी, जिसके लिए मैं तैयार नहीं थी। मैं न तो अपनी इच्छा को पहचान पा रही थी और न ही उसके लक्ष्य को; मुझे लगभग इस बात का पछतावा हो रहा था कि मैं एल्स्टिर के साथ बाहर आई थी। लेकिन, सबसे बढ़कर, जिस आनंद की मुझे उम्मीद थी, वह कम हो गया था क्योंकि मुझे यह पक्का यकीन था कि अब कोई भी उस आनंद को मुझसे छीन नहीं सकता। और जैसे ही वह आनंद उस निश्चितता के दबाव से मुक्त हुआ, मानो अपने भीतर छिपी किसी लचीलेपन के कारण, वह फिर से पूरी तरह से प्रकट हो गया। उस पल, जब मैंने अपना सिर घुमाने का फैसला किया, तो मैंने एल्स्टिर को वहीं खड़े देखा जहाँ वह कुछ ही फीट दूर लड़कियों के साथ रुका था, उन्हें अलविदा कह रहा था। उसके सबसे करीब खड़ी लड़की का चेहरा, गोल-मटोल और आँखों में चमक से दमकता हुआ, मुझे एक ऐसे केक की याद

दिला रहा था जिसके ऊपर नीले आकाश का एक टुकड़ा रखा हो। उसकी आँखें, किसी वस्तु पर टिकी होने पर भी, गति का आभास देती थीं, ठीक वैसे ही जैसे तेज़ हवा वाले दिनों में हवा, अदृश्य होते हुए भी, हमें उस गति का एहसास कराती है जिससे वह हमारे और स्थिर नीले आकाश के बीच बहती है। एक पल के लिए उसकी निगाहें मेरी निगाहों से मिलीं, ठीक वैसे ही जैसे तूफ़ानी दिनों में उड़ते हुए आकाश के बादल जो उनसे धीमी गति से चलने वाले बारिश के बादल का पीछा करते हैं, उसे पकड़ते हैं, छूते हैं, ढक लेते हैं, पार करते हैं और गायब हो जाते हैं; लेकिन वे एक-दूसरे को नहीं पहचानते और जल्द ही दूर हो जाते हैं। ठीक वैसे ही हमारी आँखें एक पल के लिए आमने-सामने थीं, न तो हम जानते थे कि हमारी निगाहों के सामने फैला आकाशीय महाद्वीप भविष्य में क्या आशीर्वाद या विपत्ति लेकर आएगा। केवल उसी क्षण जब उसकी निगाहें सीधे मेरी निगाहों से मिलीं, बिना गति धीमी किए ही उसकी चमक स्पष्ट रूप से कम हो गई। ठीक वैसे ही जैसे तारों भरी रात में हवा से लहराता चाँद एक बादल के पीछे छिप जाता है और एक पल के लिए अपनी चमक छुपा लेता है, लेकिन जल्द ही फिर से चमक उठती है। लेकिन एल्स्टिर लड़कियों को पहले ही अलविदा कह चुका था और उसने मुझे बुलाया ही नहीं था। वे एक चौराहे पर गायब हो गईं; वह मेरी ओर आया। मेरी सारी योजना धरी की धरी रह गई।

मैंने कहा था कि उस दिन अल्बर्टीन मुझे पहले के दिनों जैसी नहीं लगी थी और उसके बाद, जब भी मैं उसे देखता, वह अलग ही दिखाई देती। लेकिन उस क्षण मुझे यह एहसास हुआ कि किसी व्यक्ति के रूप, महत्व और कद में होने वाले कुछ बदलाव, उस व्यक्ति और हमारे बीच मौजूद चेतना की कुछ अवस्थाओं के परिवर्तनशील होने के कारण भी हो सकते हैं। ऐसे परिवर्तनों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली चीज है

विश्वास; उस शाम मेरा यह विश्वास, और फिर उस विश्वास का लुप्त हो जाना कि मैं अल्बर्टीन को जानने वाला हूँ, केवल कुछ ही सेकंड के अंतराल में उसे मेरी दृष्टि में लगभग महत्वहीन, फिर असीम रूप से अनमोल बना दिया था; कुछ वर्षों बाद, यह विश्वास, और फिर उस विश्वास का लुप्त हो जाना कि अल्बर्टीन मेरे प्रति वफादार थी, ने भी इसी तरह के परिवर्तन लाए।

बेशक, बहुत समय पहले, कॉम्ब्रे में, मैंने दिन के समय के अनुसार, सिकुड़ते या फैलते हुए देखा था, इस बात पर निर्भर करता था कि मैं अपनी संवेदनशीलता को नियंत्रित करने वाली दो प्रमुख मनोदशाओं में से किसी एक में प्रवेश कर रहा था - मेरी माँ के मेरे साथ न होने का मेरा दुख, जो दोपहर भर उतना ही अगोचर होता था जितना कि सूरज की रोशनी में चंद्रमा का प्रकाश, और फिर, जब रात हो जाती थी, तो मेरे चिंतित हृदय में हाल की उन यादों की जगह पर अकेला राज करता था जो अब मिट चुकी थीं। लेकिन बालबेक में उस दिन, जब मैंने देखा कि एल्स्टिर लड़कियों को छोड़कर जा रही थी और उसने मुझे नहीं बुलाया, तब मुझे पहली बार पता चला कि हमारी नज़र में सुख या दुख के महत्व में होने वाले बदलाव केवल दो मनोदशाओं के इस परिवर्तन पर ही निर्भर नहीं करते, बल्कि अदृश्य विश्वासों के विस्थापन पर भी निर्भर करते हैं, जैसे कि वे विश्वास जो मृत्यु को अवास्तविकता के प्रकाश में नहला देते हैं, और इस प्रकार हमें किसी शाम की पार्टी में शामिल होने को महत्व देने में सक्षम बनाते हैं, जबकि यदि गिलोटिन द्वारा मृत्युदंड की घोषणा होते ही पार्टी को अपनी गर्मजोशी से सराबोर करने वाला विश्वास तुरंत चकनाचूर हो जाता, तो उस पार्टी का आकर्षण काफी हद तक खत्म हो जाता; और यह विश्वास जो भूमिका निभाता है, यह सच है कि मेरे भीतर कुछ ऐसा था जो इससे अवगत था; यह मेरी इच्छा थी; लेकिन इसका ज्ञान व्यर्थ है

यदि मन और हृदय अज्ञान में बने रहें; ये अंतिम लोग सद्भावना से कार्य करते हैं जब वे मानते हैं कि हम उस प्रेमिका को छोड़ने के लिए उत्सुक हैं जिससे केवल हमारी इच्छा ही जानती है कि हम अभी भी जुड़े हुए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे इस विश्वास से घिरे हुए हैं कि हम उसे किसी भी क्षण फिर से देखेंगे। लेकिन अगर यह धारणा चकनाचूर हो जाए, अगर उन्हें अचानक यह एहसास हो जाए कि यह प्रेमिका हमेशा के लिए हमसे दूर चली गई है, तो मन और हृदय, अपना ध्यान खोकर, पागलों की तरह व्यवहार करने लगते हैं, और तुच्छतम सुख भी असीम रूप से महान लगने लगता है।

विश्वास में बदलाव, प्रेम का निरस्त होना, जो पूर्व-अस्तित्व और परिवर्तनशीलता के बावजूद किसी एक स्त्री की छवि पर आकर ठहर जाता है, क्योंकि उस स्त्री को पाना लगभग असंभव होता है। इसके बाद हम उस स्त्री के बारे में उतना नहीं सोचते, जिसकी सटीक छवि बनाना हमारे लिए कठिन होता है, जितना कि उसे जानने के साधनों के बारे में सोचते हैं। पीड़ाओं की एक पूरी श्रृंखला विकसित होती है और हमारे प्रेम को उस स्त्री पर निश्चित रूप से केंद्रित करने के लिए पर्याप्त होती है, जो लगभग अज्ञात ही होती है। हमारा प्रेम विशाल हो जाता है; हम कभी सपने में भी नहीं सोचते कि उसमें वास्तविक स्त्री का स्थान कितना छोटा है। और यदि अचानक, जैसा कि उस क्षण हुआ जब मैंने एल्स्टिर को लड़कियों से बात करने के लिए रुकते देखा, हमारी बेचैनी और पीड़ा समाप्त हो जाती है, क्योंकि यही पीड़ा हमारे प्रेम का सार है, तो हमें ऐसा लगता है मानो प्रेम अचानक गायब हो गया हो, उस क्षण जब अंततः हम उस शिकार को पकड़ लेते हैं जिसके मूल्य पर हमने पहले पर्याप्त विचार नहीं किया था। मैं अल्बर्टीन के बारे में क्या जानता था? समुद्र के किनारे बस एक-दो झलकियाँ, जो निश्चित रूप से वेरोनीज़ की उन महिलाओं से

कम सुंदर थीं, जिन्हें अगर मैं विशुद्ध सौंदर्यबोध से प्रेरित होता, तो उससे ज़्यादा पसंद करता। और किस कारण से मैं प्रेरित हो सकता था, क्योंकि मेरी चिंता शांत हो जाने के बाद, मैं केवल उन मूक आकृतियों को ही याद कर पा रहा था; उसके अलावा मेरे पास उसका कुछ भी नहीं था। अल्बर्टीन को पहली बार देखने के बाद से मैं प्रतिदिन उसके बारे में हज़ार बार सोचता रहा था, मैं उसके नाम से एक अंतहीन अनकहा संवाद करता रहा था, जिसमें मैं उससे प्रश्न पूछता, उत्तर देता, सोचता और कार्य करता था, और मेरी कल्पना में घंटों-घंटों आने वाली अनगिनत काल्पनिक अल्बर्टीनों की श्रृंखला में, असली अल्बर्टीन, समुद्र तट पर बस एक झलक, केवल शीर्ष पर ही दिखाई देती थी, ठीक वैसे ही जैसे कोई अभिनेत्री किसी भूमिका को जीवंत करती है, कोई स्टार, कई प्रदर्शनों के बाद, केवल पहले कुछ प्रदर्शनों में ही दिखाई देती है। अल्बर्टीन तो बस एक परछाई मात्र थी, उस पर जो कुछ भी उभरा हुआ था वह सब मेरी अपनी ही रचना थी। प्रेम में हम अक्सर अपने योगदान को—भले ही हम केवल मात्रा पर ही विचार करें—प्रियजन से मिलने वाले योगदान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण पाते हैं। और यही बात उस प्रेम पर भी लागू होती है जो अपने पूर्ण स्वरूप में प्रकट होता है। कुछ प्रेम ऐसे होते हैं जो न केवल आकार लेते हैं बल्कि एक छोटे से केंद्र के इर्द-गिर्द भी विद्यमान रहते हैं—यहाँ तक कि उन लोगों में भी जिनकी शारीरिक प्रार्थना पूरी हो चुकी होती है। मेरी दादी को चित्र सिखाने वाले एक पुराने शिक्षक को किसी अज्ञात महिला ने एक पुत्री भेंट की थी। बच्चे के जन्म के कुछ ही समय बाद माँ का निधन हो गया, और शिक्षक इतने दुखी हुए कि वे भी जल्द ही जीवित नहीं रह सके। अपने जीवन के अंतिम महीनों में मेरी दादी और कॉम्ब्रे की कुछ महिलाओं ने, जो ड्राइंग मास्टर की उपस्थिति में उस महिला का ज़िक्र करना कभी पसंद नहीं करती थीं, जिसके साथ उनका आधिकारिक

तौर पर कोई 'संबंध' नहीं था और जिनके साथ उनके अपेक्षाकृत मामूली रिश्ते थे, उस छोटी बच्ची के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए मिलकर उसके लिए एक वार्षिकी योजना बनाने का फैसला किया। यह सुझाव मेरी दादी ने दिया था; उनकी कई सहेलियों ने आपत्ति जताई; आखिर क्या वह बच्ची वाकई इतनी दिलचस्प थी, क्या वह अपने कथित पिता की ही संतान थी? ऐसी महिलाओं के बारे में कुछ भी कहना सुरक्षित नहीं होता था। आखिरकार, सब कुछ तय हो गया। बच्ची उन महिलाओं को धन्यवाद देने आई। वह सादी थी, और बूढ़े ड्राइंग मास्टर से इतनी मिलती-जुलती थी कि संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी; उसके बाल ही उसकी एकमात्र अच्छी बात थी, यह देखकर उसके साथ आए पिता से एक महिला ने कहा: "उसके बाल कितने सुंदर हैं!" और यह सोचकर कि अब, पाप करने वाली स्त्री मर चुकी है और बूढ़ा आदमी अधमरा है, उस अतीत की ओर एक सूक्ष्म संकेत देना, जिसके बारे में वे हमेशा अनजान होने का दिखावा करते रहे थे, कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, मेरी दादी ने आगे कहा: "यह खानदानी बात है। क्या उसकी माँ के बाल भी ऐसे ही सुंदर थे?" "मुझे नहीं पता," बूढ़े आदमी का विचित्र उत्तर था। "मैंने उसे कभी टोपी के अलावा किसी और रूप में नहीं देखा।"

लेकिन मुझे एल्स्टिर को इंतज़ार नहीं करवाना चाहिए। मैंने शीशे में खुद को देखा। लड़कियों से परिचय न होने की मुसीबत में एक और बात जुड़ गई, मैंने देखा कि मेरी टाई टेढ़ी थी, टोपी से मेरे बाल बाहर दिख रहे थे, जो मुझ पर जंच नहीं रहे थे; लेकिन फिर भी यह मेरी किस्मत ही थी कि उन्होंने मुझे एल्स्टिर के साथ इस हालत में भी देख लिया और इसलिए वे मुझे भूल नहीं पाईं; और यह भी कि मैंने उस सुबह अपनी दादी के कहने पर अपनी स्मार्ट जैकेट पहन ली थी, जबकि मैं आसानी से एक भद्दी जैकेट पहनकर अपना सबसे अच्छा डंडा साथ रख सकता था। क्योंकि

जिस घटना की हम बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं, वह कभी भी हमारी उम्मीदों के मुताबिक नहीं होती, और जिन फायदों की हम उम्मीद कर रहे थे, वे हमें नहीं मिलते, तो दूसरी ऐसी घटनाएं सामने आ जाती हैं जिनकी हमने कभी उम्मीद नहीं की थी, और हमारी निराशा को दूर कर देती हैं; और हम सबसे बुरे की आशंका में इतने डूबे रहते हैं कि अंत में हमें लगता है कि सब कुछ देखते हुए, किस्मत कुल मिलाकर हम पर मेहरबान रही है।

एल्स्टिर पहुँचते ही मैंने कहा, "मैं उनसे मिलना तो बहुत चाहता था।" "तो फिर तुम इतनी दूर क्यों खड़े रहे?" ये उसके असल शब्द थे, हालाँकि ये उसके मन की बात नहीं कह रहे थे, क्योंकि अगर उसकी इच्छा मेरी इच्छा पूरी करने की होती, तो मुझे बुलाना उसके लिए बहुत आसान होता। लेकिन शायद उसने इस तरह के मुहावरे सुने थे, जो आम लोगों में गलती होने पर अक्सर इस्तेमाल होते हैं, और क्योंकि बड़े-बड़े लोग भी कुछ मायनों में आम लोगों जैसे ही होते हैं, वे भी रोज़ाना एक ही स्रोत से बहाने बनाते हैं, जैसे वे अपनी रोटी एक ही बेकर से लेते हैं; या हो सकता है कि ऐसे भाव (जिन्हें लगभग 'उल्टा' पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि उनका शाब्दिक अर्थ सत्य के विपरीत है) एक तात्कालिक प्रभाव हों, एक सहज प्रतिक्रिया का नकारात्मक प्रकटीकरण हों। "वे जल्दी में थे।" मुझे लगा कि ज़ाहिर है उन्होंने उसे ऐसे व्यक्ति को बुलाने से रोका होगा जो उन्हें ज़्यादा आकर्षित नहीं करता था। अन्यथा, मेरे द्वारा उनसे पूछे गए सभी प्रश्नों और उनमें मेरी रुचि को देखते हुए, वह मुझे फोन करने में असफल नहीं होते। "अभी हम कार्केथुइट के बारे में बात कर रहे थे," उन्होंने अपने विला की ओर चलते हुए कहा। "मैंने एक छोटा सा रेखाचित्र बनाया है, जिसमें आप समुद्र तट के घुमाव को बेहतर ढंग से देख सकते हैं। पेंटिंग बुरी नहीं है, लेकिन अलग है। यदि आप अनुमति दें, तो हमारी मित्रता को और मजबूत करने के लिए, मैं आपको रेखाचित्र देना चाहूंगा," उन्होंने आगे

कहा, क्योंकि जो लोग हमारी इच्छा की वस्तु को अस्वीकार करते हैं, वे हमेशा हमें कुछ और देने के लिए तैयार रहते हैं।

"अगर आपके पास मिस सैक्रिपेंट की छोटी सी तस्वीर हो, तो मुझे बहुत खुशी होगी।" "सैक्रिपेंट"—यह तो कोई असली नाम नहीं है, है ना?" "यह उस किरदार का नाम है जिसे उस महिला ने एक छोटी सी हास्यास्पद म्यूजिकल कॉमेडी में निभाया था।" "लेकिन, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, महोदय, मैंने उन्हें कभी नहीं देखा; आप ऐसे देख रहे हैं जैसे आपको लगता है कि मैं उन्हें जानता हूँ।" एल्स्टिर चुप रहे। "क्या यह मैडम स्वान हैं, शादी से पहले की?" मैंने अचानक सच्चाई का पता लगाने की कोशिश की, जो कि बहुत कम होता है, लेकिन अंततः पूर्वाभास के सिद्धांत को कुछ हद तक पुख्ता करता है, बशर्ते कि उन सभी गलत अनुमानों को भुला दिया जाए जो इसे गलत साबित कर सकते हैं। एल्स्टिर ने कोई जवाब नहीं दिया। वह तस्वीर वाकई ओडेट डी क्रेसी की थी। उन्होंने कई कारणों से इसे अपने पास नहीं रखना चाहा था, जिनमें से कुछ तो स्पष्ट थे, लेकिन कुछ अन्य कारण भी थे जो इतने स्पष्ट नहीं थे। यह चित्र उस समय से पहले का है जब ओडेट ने अपने चेहरे और आकृति को संवारते हुए, अपने चेहरे और शरीर को उस व्यापक रूपरेखा में ढाल दिया था, जिसका उसके हेयरड्रेसर, ड्रेसमेकर और स्वयं वह—अपने खड़े होने, बोलने, मुस्कुराने, हाथों, आँखों और सोचने के तरीके से—आने वाले वर्षों तक सम्मान करती रहीं। एक अति तृप्त प्रेमी की विकृत रुचियों को ही यह दर्शा सकता है कि स्वान ने अपनी आकर्षक पत्नी ओडेट की अनगिनत तस्वीरों के बजाय अपने कमरे में रखी उन छोटी तस्वीरों को प्राथमिकता दी, जिनमें पैंसी के फूलों से सजी भूसे की टोपी के नीचे एक दुबली-पतली, दिखने में भी साधारण सी युवती, गुच्छेदार बालों और मुरझाए चेहरे के साथ दिखाई देती थी।

लेकिन इसके अलावा, अगर यह चित्र स्वान की पसंदीदा तस्वीर की तरह, ओडेट के चेहरे की विशेषताओं को एक नए, राजसी और आकर्षक रूप में व्यवस्थित करने से पहले का न होकर बाद का होता, तो एल्स्टिर की दृष्टि ही उस व्यवस्था को अव्यवस्थित करने के लिए पर्याप्त होती। कलात्मक प्रतिभा की प्रतिक्रियाएँ उन अत्यधिक उच्च तापमानों के समान होती हैं जिनमें परमाणुओं के संयोजनों को विघटित करने की शक्ति होती है, और फिर उन्हें एक बिल्कुल विपरीत क्रम में, एक अलग प्रकार से, नए सिरे से संयोजित करने की शक्ति होती है। वह कृत्रिम रूप से सामंजस्यपूर्ण समग्रता जिसमें एक स्त्री अपने अंगों और चेहरे को लाने में सफल होती है, जिसकी निरंतरता को वह हर दिन बाहर जाने से पहले अपने शीशे में देखती है, अपनी टोपी का कोण बदलती है, अपने बालों को संवारती है, अपनी आँखों की चपलता का अभ्यास करती है, ताकि उसकी निरंतरता सुनिश्चित हो सके, उस सामंजस्य को महान चित्रकार की तीक्ष्ण दृष्टि तुरंत नष्ट कर देती है, और उसके स्थान पर स्त्री के चेहरे की विशेषताओं का ऐसा पुनर्व्यवस्थापन कर देती है जो उसके मन में मौजूद नारीत्व के एक निश्चित चित्रात्मक आदर्श को संतुष्ट कर सके। इसी प्रकार अक्सर ऐसा होता है कि एक निश्चित आयु के बाद, सत्य की खोज करने वाले एक महान व्यक्ति की दृष्टि हर जगह उन तत्वों को पा लेती है जो केवल उन्हीं संबंधों को स्थापित करने के लिए आवश्यक होते हैं जिनमें उसकी रुचि होती है। उन शिल्पकारों या वादकों की तरह, जो शोर मचाने और जो उनके पास नहीं है उसे मांगने के बजाय, जो वाद्य यंत्र उनके हाथ में आता है उसी से संतुष्ट हो जाते हैं, कलाकार किसी भी चीज़ के बारे में, चाहे वह कुछ भी हो, कह सकता है कि वह उसके उद्देश्य की पूर्ति करेगी। उदाहरण के लिए, लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी की एक चचेरी बहन, जो अत्यंत सुंदर और शाही स्वभाव की थी, उस समय की एक नई कला शैली से प्रभावित

होकर, प्रकृतिवादी शैली के अग्रणी चित्रकार से अपना चित्र बनाने का अनुरोध किया। कलाकार की दृष्टि ने तुरंत वह पा लिया जिसकी उसे जीवन में हर जगह तलाश थी। और उसके कैनवास पर, उस अभिमानी महिला के स्थान पर, एक गली का लड़का दिखाई दिया, और उसके पीछे एक विशाल, ढलानदार, बैंगनी पृष्ठभूमि थी जो प्लेस पिगाले की याद दिलाती थी। लेकिन इतना आगे बढ़े बिना भी, एक महान कलाकार द्वारा किसी महिला का चित्र बनाते समय न केवल उस महिला की विभिन्न मांगों को पूरा करने का प्रयास नहीं किया जाएगा—उदाहरण के लिए, जब वह बूढ़ी होने लगती है, तो उसे लगभग एक युवा लड़की के कपड़ों में फोटो खिंचवाने के लिए कहना, जो उसकी अभी भी युवा आकृति को उभारते हैं और उसे अपनी ही बेटी की बहन, या यहां तक कि बेटी की तरह दिखाते हैं, जिसे जरूरत पड़ने पर उसके बगल में 'भयानक' रूप में सजाया जाता है—बल्कि, इसके विपरीत, यह उन कमियों पर जोर देगा जिन्हें वह छिपाने की कोशिश करती है, और जो (उदाहरण के लिए, एक बुखार से ग्रस्त, यानी एक पीला पड़ा हुआ चेहरा) उसके लिए और भी अधिक आकर्षक होते हैं क्योंकि वे उसके चित्र को 'चरित्र' प्रदान करते हैं; हालांकि, ये आम आदमी के सभी भ्रमों को चकनाचूर करने के लिए काफी हैं, जो इस तस्वीर को देखकर उस आदर्श को धूल में मिल जाते हुए देखता है जिसे उस स्त्री ने स्वयं उसके लिए इतने गर्व से संजोकर रखा था, जिसने उसे उसके अद्वितीय, उसके अपरिवर्तनीय रूप में बाकी मानवता से इतना अलग, इतना ऊपर स्थापित किया था। अब पतित होकर, अपने उस स्वरूप से भिन्न रूप में चित्रित होकर जिसमें वह अजेय रूप से विराजमान थी, वह महज़ एक साधारण स्त्री बनकर रह गई है, जिसकी श्रेष्ठता की किंवदंती में हमारा सारा विश्वास खो गया है। इस स्वरूप में हम न केवल ओडेट की सुंदरता बल्कि उसके व्यक्तित्व, उसकी

पहचान को भी समाहित मानने के इतने आदी हो गए हैं कि उस चित्र के सामने खड़े होकर, जिसने उसे इस स्वरूप से पूरी तरह अलग कर दिया है, हम न केवल यह कहते हैं, "उसने उसे कितना साधारण बना दिया है!" बल्कि यह भी कहते हैं, "अरे, यह तो उसके जैसी बिल्कुल भी नहीं है!" हमें विश्वास करना कठिन लगता है कि यह वही हो सकती है। हम उसे पहचान नहीं पाते। फिर भी कैनवास पर एक ऐसा व्यक्ति है जिसे हमने पहले देखा है, यह बात हम भली-भांति जानते हैं। लेकिन वह व्यक्ति ओडेट नहीं है; उस व्यक्ति का चेहरा, उसका शरीर, उसकी सामान्य दिखावट जानी-पहचानी सी लगती है। ये हमें उस खास महिला की याद नहीं दिलातीं, जिसने कभी खुद को इस तरह नहीं रखा, जिसकी स्वाभाविक मुद्रा में किसी भी तरह के विचित्र और चंचल अरबी डिज़ाइन का कोई संकेत नहीं था, बल्कि दूसरी महिलाओं की याद दिलाती हैं, उन सभी महिलाओं की जिन्हें एल्स्टिर ने कभी चित्रित किया है, वे महिलाएं जिन्हें, चाहे वे एक-दूसरे से कितनी भी भिन्न क्यों न हों, उन्होंने हमेशा अपने कैनवास पर इस तरह चित्रित किया है, मानो उनका चेहरा आपकी ओर मुख किए हुए हो, स्कर्ट के नीचे से एक पैर बाहर निकला हुआ हो, एक हाथ में एक बड़ी गोल टोपी हो, जो घुटने के स्तर पर, जिसे वह छुपाती है, चित्र में ऊपर की ओर एक डिस्क के रूप में दिखाई देने वाले हिस्से से समरूप रूप से मेल खाती हो: चेहरा। और इतना ही नहीं, एक प्रतिभाशाली कलाकार द्वारा बनाया गया चित्र न केवल एक महिला के उस स्वरूप को तोड़ता और नष्ट करता है, जिसे उसके नखरे और सुंदरता की स्वार्थी धारणा ने परिभाषित किया है, बल्कि यदि वह पुराना भी है, तो वह मूल चित्र को उसी तरह बूढ़ा दिखाने से संतुष्ट नहीं होता, जैसे एक तस्वीर अपने मॉडल को पुराने फैशन के कपड़ों में दिखाकर बूढ़ा कर देती है। किसी चित्र में, केवल महिला के उस समय के पहनावे से ही उसकी

पहचान नहीं होती, बल्कि कलाकार की चित्रकला शैली से भी उसकी तारीख का पता चलता है। और एल्स्टिर की यही प्रारंभिक शैली, ओडेट के लिए सबसे अधिक नुकसानदायक साबित हुई, क्योंकि इससे न केवल उसकी पहचान, उसी काल की उसकी तस्वीरों की तरह, विभिन्न प्रतिष्ठित वेश्याओं की छोटी बहन के रूप में स्थापित हुई, बल्कि उसके चित्र को उन अनगिनत चित्रों के समकालीन बना दिया जो मानेट या व्हिस्लर ने उन सभी लुप्त हो चुकी मॉडलों के बनाए थे, जो या तो विस्मृति में खो चुकी थीं या इतिहास का हिस्सा बन चुकी थीं।

एल्स्टिर के साथ चुपचाप बैठकर, जब मैं उन्हें उनके दरवाजे तक छोड़ने गया, तो इन्हीं विचारों में खोया रहा। तभी मुझे उनके मॉडल की पहचान का पता चला। इस खोज ने मुझे एक और, कहीं अधिक परेशान करने वाली खोज की ओर प्रेरित किया, जो कलाकार की पहचान से जुड़ी थी। उन्होंने ओडेट डी क्रेसी का चित्र बनाया था। क्या यह संभव है कि यह प्रतिभाशाली व्यक्ति, यह ज्ञानी, यह एकांतप्रिय, यह दार्शनिक, अपनी अद्भुत वाक्पटुता के लिए जाना जाने वाला, जो हर किसी और हर चीज़ से ऊपर था, वही मूर्ख, भ्रष्ट छोटा चित्रकार था जिसे कभी वर्दुरिन परिवार ने अपना लिया था? मैंने उनसे पूछा कि क्या वे उन्हें जानते थे, क्या संयोग से वही थे जिन्हें वे एम. बिचे कहते थे? उन्होंने बिना किसी झिझक के हाँ में उत्तर दिया, मानो मेरा प्रश्न उनके जीवन के उस दौर से संबंधित हो जो समाप्त हो चुका था और अब कुछ दूर हो चुका था, उन्हें इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि उनके शब्द मेरे मन में बसे एक प्यारे भ्रम को कैसे तोड़ रहे थे, जब तक कि उन्होंने ऊपर देखकर मेरे चेहरे पर निराशा नहीं पढ़ ली। उनके चेहरे पर झुंझलाहट के भाव उभर आए। और, चूंकि हम अब लगभग उनके घर के द्वार पर पहुँच चुके थे, एक कम प्रतिष्ठित व्यक्ति, हृदय और बुद्धि से, शायद मुझे बस 'अलविदा' कह देता, थोड़ी

रूखी आवाज़ में, और फिर मुझसे दोबारा मिलने से बचता। लेकिन एल्स्टर का मेरे प्रति यह रवैया नहीं था; एक गुरु होने के नाते—और शायद विशुद्ध रचनात्मक प्रतिभा के दृष्टिकोण से, यही उनकी एकमात्र कमी थी कि वे उस अर्थ में गुरु थे, क्योंकि एक कलाकार को यदि आध्यात्मिक जीवन को पूर्ण रूप से जीना है, तो उसे एकांत में रहना चाहिए और अपने शिष्यों पर भी अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए—वे हर परिस्थिति से, चाहे वह स्वयं से संबंधित हो या अन्य लोगों से, युवाओं के बेहतर ज्ञानवर्धन के लिए उसमें निहित सत्य के तत्व को निकालने का प्रयास करते थे। इसलिए उन्होंने अपने स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने वाली कोई बात कहने के बजाय, वह कहना चुना जो उन्हें लगा कि मेरे लिए शिक्षाप्रद होगा। उन्होंने कहना शुरू किया, "ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, चाहे वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, जिसने अपनी जवानी में कभी न कभी ऐसी बातें न कही हों या ऐसा जीवन न जिया हो जिसका एहसास उसे बाद में इतना अप्रिय लगता हो कि अगर संभव हो तो वह उसे अपनी स्मृति से मिटाना चाहे। फिर भी उसे पूरी तरह पछतावा नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह निश्चित नहीं हो सकता कि वह वास्तव में एक बुद्धिमान व्यक्ति बन गया है —जहां तक हममें से किसी के लिए बुद्धिमान होना संभव है—जब तक कि वह उन सभी निरर्थक या अस्वस्थ जन्मों से न गुजर जाए जिनसे उस अंतिम अवस्था तक पहुंचने के लिए गुजरना आवश्यक है। मैं जानता हूं कि कुछ युवा हैं, प्रसिद्ध पुरुषों के पुत्र और पोते, जिनके शिक्षकों ने उन्हें स्कूली दिनों में ही उच्च कोटि की बुद्धि और नैतिक परिष्कार का ज्ञान दिया है। शायद, जब वे अपने बीते जीवन को देखते हैं, तो उनके पास वापस लेने के लिए कुछ भी नहीं होता; वे चाहें तो अपने द्वारा कहे या किए गए हर काम का हस्ताक्षरित विवरण प्रकाशित कर सकते हैं; लेकिन वे बेचारे प्राणी हैं, सिद्धांतवादियों के कमजोर वंशज हैं, और उनकी बुद्धि

नकारात्मक और बांझ है। हमें बुद्धि जन्मजात नहीं मिलती, हमें इसे स्वयं खोजना पड़ता है।" हम स्वयं, उस निर्जन यात्रा के बाद, जो कोई और हमारे लिए नहीं कर सकता, उस प्रयास से जो कोई हमें नहीं बचा सकता, क्योंकि हमारी बुद्धि ही वह दृष्टिकोण है जिससे हम अंततः दुनिया को देखते हैं। जिन जीवन की आप प्रशंसा करते हैं, जिन मनोवृत्तियों को आप महान मानते हैं, वे घर पर पिता द्वारा या विद्यालय में शिक्षकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण का परिणाम नहीं हैं, बल्कि वे एक बहुत ही अलग तरह की शुरुआत से उत्पन्न हुए हैं, अपने आस-पास व्याप्त हर बुराई या सामान्यता के प्रभाव की प्रतिक्रिया से। वे एक संघर्ष और एक विजय का प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं देख सकता हूँ कि हम युवावस्था में जो थे, उसकी छवि शायद पहचानी न जा सके और निश्चित रूप से बाद के जीवन में उस पर विचार करना सुखद न हो। लेकिन हमें इसकी सच्चाई से इनकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह इस बात का प्रमाण है कि हमने वास्तव में जीवन जिया है, कि यह जीवन और मन के नियमों के अनुसार ही है कि हमने जीवन के सामान्य तत्वों से, स्टूडियो के जीवन से, कलात्मक समूहों से - यह मानते हुए कि कोई चित्रकार है - कुछ ऐसा निकाला है जो उनसे परे है। इसी बीच हम उसके दरवाजे पर पहुँच गए थे। लड़कियों से न मिल पाने से मुझे निराशा हुई। लेकिन अब उनसे दोबारा मिलने की संभावना थी; वे बस उस क्षितिज से ओझल हो गई थीं, जिसके बारे में मैंने मान लिया था कि मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। उनके चारों ओर अब वह बड़ा भंवर नहीं था जिसने मुझे उनसे अलग कर रखा था, जो केवल उस निरंतर सक्रिय इच्छा की अभिव्यक्ति थी, गतिशील, बाध्यकारी, जो नई चिंताओं से पोषित होती थी, और जो उनकी पहुँच से बाहर होने, मुझसे हमेशा के लिए दूर चले जाने से मेरे भीतर जागृत होती थी। उनके लिए अपनी इच्छा को अब मैं शांत कर सकता था, उसे सुरक्षित रख

सकता था, उन सभी अन्य इच्छाओं के बीच, जिनकी पूर्ति को, जैसे ही मुझे पता चलता कि यह संभव है, मैं खुशी-खुशी स्थगित कर देता। मैंने एल्स्टिर से विदा ली; मैं एक बार फिर अकेला था। फिर अचानक, अपनी हाल की निराशा के बावजूद, मैंने अपने मन में संयोगों की वह सारी श्रृंखला देखी जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा हो सकता है। एल्स्टिर उन्हीं लड़कियों का दोस्त था, वे लड़कियाँ जो उस सुबह तक मेरे लिए समुद्र की पृष्ठभूमि में बनी किसी तस्वीर की मात्र आकृतियाँ थीं, उन्होंने मुझे देखा था, मुझे एक महान चित्रकार के साथ दोस्ताना अंतरंगता से चलते हुए देखा था, जिसे अब मेरी गुप्त इच्छा का पता चल गया था और वह निस्संदेह उसे शांत करने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। यह सब मेरे लिए आनंद का स्रोत था, लेकिन वह आनंद छिपा रहा; यह उन आगंतुकों में से एक था जो हमें तब तक अपने होने का एहसास नहीं कराते जब तक कि सभी चले नहीं जाते और हम अकेले नहीं रह जाते। तभी हम उन्हें देख पाते हैं, और उनसे कह पाते हैं, "मैं आपकी सेवा में हूँ," और उनकी बातें सुन पाते हैं। कभी-कभी इन सुखों के हमारे मन में आने और उनके आनंद को महसूस करने के बीच इतने घंटे बीत जाते हैं, इतने लोगों को हम देख चुके होते हैं कि हमें डर लगता है कि कहीं वे इंतज़ार करते-करते थक न गए हों। लेकिन वे धैर्यवान होते हैं, वे थकते नहीं, और भीड़ के जाते ही हम उन्हें वहाँ हमारा इंतज़ार करते हुए पाते हैं। कभी-कभी हम इतने थक जाते हैं कि ऐसा लगता है मानो हमारे थके हुए मन में उन यादों, उन छापों को पकड़ने और सहेजने की शक्ति ही नहीं बची है, जिनके लिए हमारा कमज़ोर अस्तित्व ही एकमात्र निवास स्थान है, एकमात्र बोध का साधन है। और हमें उस असफलता पर अफ़सोस होना चाहिए, क्योंकि हमारे लिए जीवन शायद ही कभी रोचक होता है, सिवाय उन दिनों के जब वास्तविकता की धूल जादुई रेत से भर जाती है, जब

जीवन की कोई मामूली घटना रोमांस का स्रोत बन जाती है। तब अगम्य संसार का एक पूरा हिस्सा हमारे सपने के प्रकाश में स्पष्ट हो उठता है, और हमारे जीवन में प्रवेश करता है, हमारे उस जीवन में जिसमें, जागते हुए सोए हुए व्यक्ति की तरह, हम वास्तव में उन लोगों को देखते हैं जिनके बारे में हम इतने उत्सुकता से सपने देखते रहे हैं कि हमें विश्वास हो गया था कि हम उन्हें केवल अपने सपनों में ही देख पाएंगे।

जब भी मैं चाहूँ, उस छोटे समूह से मिल पाने की संभावना से मुझे जो सुकून मिला, वह मेरे लिए और भी अनमोल था क्योंकि अगले कुछ दिनों तक मैं उनकी निगरानी नहीं कर पाऊँगी, क्योंकि वे दिन सेंट-लूप के प्रस्थान की तैयारियों में ही बीतने वाले थे। मेरी दादी मेरे मित्र को उनके द्वारा मुझ पर और उन पर दिखाई गई सभी दयालुताओं के लिए अपनी कृतज्ञता का प्रमाण देना चाहती थीं। मैंने उन्हें बताया कि वह प्राउडॉन के बहुत बड़े प्रशंसक थे, और इससे उनके मन में उस दार्शनिक के हस्तलिखित पत्रों का संग्रह मंगवाने का विचार आया, जिसे उन्होंने कभी खरीदा था; सेंट-लूप उनके आने वाले दिन उन्हें देखने के लिए उनके कमरे में आए, जो बालबेक में उनका आखिरी दिन भी था। उन्होंने उन्हें उत्सुकता से पढ़ा, प्रत्येक पृष्ठ को श्रद्धापूर्वक छुआ, वाक्यों को याद करने की कोशिश की; और फिर, मेज से उठते हुए, वह मेरी दादी से इतनी देर तक रुकने के लिए माफी मांगने ही वाला था, तभी उसने उन्हें यह कहते हुए सुना: "नहीं, नहीं; इन्हें अपने साथ ले जाओ; ये तुम्हारे रखने के लिए हैं; मैंने इन्हें इसीलिए मंगवाया था, ताकि मैं इन्हें तुम्हें दे सकूँ।"

वह ऐसी खुशी से अभिभूत था जिसे वह उसी तरह नियंत्रित नहीं कर पा रहा था जैसे हम बिना इच्छा के उत्पन्न होने वाली शारीरिक अवस्था को नियंत्रित नहीं कर पाते। उसका चेहरा लाल हो गया, मानो किसी बच्चे को कोड़े मारे गए हों। मेरी दादी उसे अपनी खुशी को काबू में करने के लिए

किए जा रहे तमाम प्रयासों (जो सफल नहीं हो रहे थे) को देखकर इतनी भावुक हो गईं, जितनी कि उसके धन्यवाद के शब्दों को सुनकर भी नहीं होतीं। लेकिन, यह सोचकर कि वह अपना आभार ठीक से व्यक्त नहीं कर पाया, उसने अगले दिन स्थानीय रेलवे कंपनी की छोटी ट्रेन की खिड़की से झुककर मुझसे फिर से दादी से माफी मांगने का अनुरोध किया। यह ट्रेन उसे उसकी रेजिमेंट में वापस ले जाने वाली थी। दूरी वास्तव में नगण्य थी। उसने सोचा था कि वह सड़क मार्ग से जाएगा, जैसा कि उसने उस गर्मी में अक्सर किया था, जब उसे उसी शाम वापस लौटना होता था और उस पर सामान का बोझ नहीं होता था। लेकिन इस बार उसे अपना सारा भारी सामान ट्रेन में रखना ही था। और उसने खुद ट्रेन से जाना ही आसान समझा, मैनेजर की सलाह मानते हुए, जिसने पूछे जाने पर जवाब दिया कि "गाड़ी हो या डिब्बा, बात लगभग एक जैसी ही है।" उसका मतलब था कि हम समझें कि दोनों बराबर हैं (दरअसल, बिल्कुल वैसा ही जैसा फ्रांस्वा कहती, "लगभग ऐसा हो गया कि कोई फर्क ही नहीं पड़ता")। "ठीक है," सेंट-लूप ने तय किया, "मैं 'छोटी ट्रेन' से जाऊंगा।" अगर मैं थका हुआ न होता तो मैं भी उसी से जाता और अपने दोस्त के साथ डोनसिएरेस चला जाता; लेकिन अगर ऐसा नहीं हो पाता तो मैं बालबेक स्टेशन पर इंतज़ार करते हुए, यानी उस समय में जब छोटी ट्रेन का ड्राइवर अपने उन दोस्तों का इंतज़ार कर रहा था जो समय पर नहीं आते थे और जिनके बिना वह ट्रेन शुरू नहीं करता था, और साथ ही अपने लिए कुछ खाने-पीने का इंतज़ाम कर रहा था, हर हफ्ते कई बार उससे मिलने जाने का वादा करता रहा। चूंकि ब्लोच भी स्टेशन पर आ गया था —जिससे सेंट-लूप को बहुत गुस्सा आया—तो सेंट-लूप ने देखा कि हमारा साथी उसे मुझे दोपहर के भोजन, रात के खाने और डोनसिएरेस में ही रुकने के लिए विनती करते हुए सुन सकता है, इसलिए वह अंततः

उसकी ओर मुड़ा और अत्यंत कठोर स्वर में, निमंत्रण की बनावटी विनम्रता को बेअसर करने और ब्लोच को इसे गंभीरता से लेने से रोकने के इरादे से बोला: "यदि आप कभी किसी दोपहर डोनसिएरेस से गुजरें जब मैं ड्यूटी पर न होऊं, तो आप बैरक में मुझसे मिल सकते हैं; लेकिन मैं शायद ही कभी ड्यूटी से छुट्टी पर होता हूं।" शायद रॉबर्ट को यह भी डर था कि अगर मुझे अकेला छोड़ दिया जाए तो मैं शायद न आऊं, और यह सोचकर कि मैं ब्लोच से जितना दिखाता हूं उससे कहीं अधिक घनिष्ठ हूं, वह मुझे इस तरह एक यात्रा साथी प्रदान कर रहा था, जो मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

मुझे डर था कि यह लहजा, किसी को आने से मना करते हुए आमंत्रित करने का यह तरीका, ब्लोच को आहत कर सकता है, और मुझे लगा कि सेंट-लूप को चुप रहना चाहिए था। लेकिन मैं गलत था, क्योंकि ट्रेन जाने के बाद, जब हम साथ-साथ उस चौराहे तक वापस चल रहे थे जहाँ हमें अलग होना था, एक रास्ता होटल की ओर और दूसरा ब्लोच के विला की ओर, तब भी वह मुझसे लगातार पूछता रहा कि हम किस दिन डोनसिएरेस चलें, क्योंकि सेंट-लूप ने उसके प्रति जो शिष्टाचार दिखाया था, उसके बाद निमंत्रण स्वीकार न करना उसके लिए 'बहुत असभ्य' होता। मुझे खुशी थी कि उसने ध्यान नहीं दिया, या इतना कम नाराज़ था कि वह यह दिखाना चाहता था कि निमंत्रण कितना हल्का और कम विनम्र था। साथ ही, मैं चाहता था कि ब्लोच अपनी भलाई के लिए डोनसिएरेस जाकर खुद को मूर्ख न बनाए। लेकिन मैंने ऐसी सलाह देने की हिम्मत नहीं की जिससे उन्हें ठेस पहुँच सकती थी, क्योंकि उसमें यह संकेत था कि सेंट-लूप ने उतना दबाव नहीं डाला था जितना उन्होंने खुद को बताया था। वे तुरंत जवाब देने के लिए बहुत तत्पर रहते थे, और भले ही इस तरह की उनकी सारी कमियाँ उन असाधारण गुणों से ढकी हों जो

उनसे अधिक संयमी लोगों में नहीं होते, फिर भी वे अपनी अविवेकी प्रवृत्ति को लगभग पागलपन की हद तक ले जाते थे। उनके अनुसार, सप्ताह का कोई भी दिन डोंसिएरेस जाए बिना नहीं बीत सकता (उन्होंने 'हमारा' इसलिए कहा क्योंकि मुझे लगता है कि वे वहाँ मेरी उपस्थिति को अपने जाने के बहाने के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे)। घर लौटते समय, व्यायामशाला के सामने, पेड़ों के झुरमुट में, लॉन-टेनिस कोर्ट के सामने, मेयर के कार्यालय के सामने, सीपियों की दुकान के सामने, वे मुझे रोकते और एक दिन तय करने की विनती करते, और जब मैंने ऐसा नहीं किया, तो वे भयंकर क्रोध में मुझे छोड़कर चले गए और बोले: "जैसा महाराज। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे जाना ही पड़ेगा क्योंकि उन्होंने मुझे आमंत्रित किया है।"

सेंट-लूप को अब भी इस बात का बहुत डर था कि उन्होंने मेरी दादी को ठीक से धन्यवाद नहीं दिया था, इसलिए उन्होंने मुझे एक-दो दिन बाद एक पत्र में उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का निर्देश दिया। यह पत्र मुझे उस कस्बे से मिला जहाँ वे ठहरे हुए थे। लिफाफे पर जहाँ डाक टिकट लगा था, ऐसा लग रहा था मानो वह कस्बा मुझसे मिलने के लिए देश भर में तेजी से आ रहा हो, यह बताने के लिए कि उसकी दीवारों के भीतर, लुई सोलहवें घुड़सवार सेना के बैरक में, वे मेरे बारे में सोच रहे हैं। कागज पर मार्सैंट्स का प्रतीक चिन्ह उभरा हुआ था, जिसमें मैं एक शेर को देख पा रहा था, जिसके ऊपर फ्रांस के एक कुलीन व्यक्ति की टोपी से बना मुकुट था।

“एक यात्रा के बाद,” उन्होंने लिखा, “जो स्टेशन पर खरीदी गई अरवेडे बैरिन (एक रूसी लेखक, मुझे लगता है; एक विदेशी के लिए यह उल्लेखनीय रूप से अच्छी तरह से लिखी गई प्रतीत हुई, लेकिन आप मुझे अपनी आलोचनात्मक राय देंगे, आप इसके बारे में सब कुछ जानते होंगे,

आप ज्ञान के भंडार हैं जिन्होंने सब कुछ पढ़ा है) की एक किताब के साथ काफी सुखद ढंग से गुजरी, मैं फिर से इस पतित जीवन के बीच में आ गया हूँ, जहाँ, अफसोस, मैं एक दुखद निर्वासन का अनुभव करता हूँ, क्योंकि मेरे पास यहाँ वह नहीं है जो मुझे बालबेक में छोड़ना पड़ा था; यह जीवन जिसमें मुझे एक भी स्नेहपूर्ण स्मृति, कोई बौद्धिक आकर्षण नहीं मिलता; एक ऐसा वातावरण जिस पर आप शायद तिरस्कार की दृष्टि से देखेंगे—और फिर भी इसमें एक विशेष आकर्षण है। जब से मैं पिछली बार यहाँ था तब से सब कुछ बदल गया लगता है, क्योंकि इस अंतराल में मेरे जीवन का एक सबसे महत्वपूर्ण काल, जिससे हमारी मित्रता शुरू हुई, शुरू हो गया है। मुझे आशा है कि यह कभी समाप्त न हो। मैंने हमारी मित्रता के बारे में, आपके बारे में, केवल एक व्यक्ति से बात की है, उस मित्र से जिसका मैंने आपको उल्लेख किया था, जो अभी-अभी मुझसे मिलने यहाँ आई है। वह आपको बहुत जानना चाहती है, और मैं मुझे लगता है कि आप दोनों की आपस में अच्छी बनेगी, क्योंकि वह भी बेहद साहित्यिक है। दूसरी ओर, मैं अपनी सारी बातचीत को याद करने, उन पलों को फिर से जीने के चक्कर में, जिन्हें मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा, अपने साथियों से अलग हो गया हूँ। मेरे साथी बहुत अच्छे हैं, पर इस तरह की बातों को समझने में बिल्कुल असमर्थ हैं। यहाँ आने के पहले ही दिन, मैं आपके साथ बिताए इन पलों को बिना लिखे, अकेले में याद करना चाहता था। लेकिन मुझे डर था कि कहीं आप, अपने सूक्ष्म मन और अति संवेदनशील हृदय के साथ, अगर मेरी तरफ से कोई खबर न मिले, तो बेवजह खुद को परेशान न करें, यानी अगर आप फिर भी इस सीधे-सादे इंसान के बारे में सोचते रहें, जिसे तराशना और निखारना, उसे थोड़ा और समझदार और अपनी संगति के लायक बनाना आपके लिए एक कठिन काम होगा।

कुल मिलाकर, यह पत्र, अपने स्नेहपूर्ण भाव में, उन पत्रों से बिल्कुल भिन्न नहीं था, जिनकी मैंने कल्पना की थी जब मैं सेंट-लूप को नहीं जानता था कि वे मुझे लिखेंगे। ये वे दिवास्वप्न थे जिनमें उनके पहले अभिवादन की शीतलता ने मुझे झकझोर कर रख दिया था, मानो मुझे उस बर्फीली वास्तविकता से रूबरू करा दिया हो जो स्थाई नहीं थी। एक बार जब मुझे यह पत्र मिल गया, तो दोपहर के भोजन के समय जब भी डाक आती, मैं तुरंत पहचान लेता था कि यह उन्हीं का पत्र है, क्योंकि इसमें हमेशा वह दूसरा रूप होता था जो कोई व्यक्ति अनुपस्थिति में धारण कर लेता है। उनकी लिखावट की विशेषताओं (उनकी लिखावट के अक्षरों) में हम एक व्यक्ति की आत्मा को उसी प्रकार खोज सकते हैं जैसे नाक की रेखा या आवाज के उतार-चढ़ाव में।

अब मैं मेज साफ होने तक खुशी-खुशी वहीं बैठा रहूंगा, और अगर वह ऐसा क्षण न हो जब उस छोटे समूह की लड़कियां वहां से गुजर रही हों, तो मैं अपनी निगाहें केवल समुद्र की ओर ही नहीं घुमाऊंगा। चूंकि मैंने एल्स्टिर द्वारा जलरंगों में ऐसी चीजों का चित्रण देखा था, इसलिए मैंने उन्हें वास्तविकता में फिर से खोजने का प्रयास किया, मैंने उनकी काव्यात्मक सुंदरता के लिए उन्हें संजोया, जैसे कि एक दूसरे पर पड़े चाकूओं के टूटे हुए हाव-भाव, एक फेंके हुए रुमाल की उभरी हुई आकृति जिस पर सूरज पीले मखमल का एक टुकड़ा बिखेर देता था, आधा खाली गिलास जो इस प्रकार अपने घुमावदार किनारों की भव्यता को और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाता था, और उसके पारदर्शी क्रिस्टल के केंद्र में, जमे हुए दिन के उजाले की तरह साफ, शराब की एक बूंद, धुंधली लेकिन परावर्तित प्रकाश से जगमगाती हुई, ठोस वस्तुओं का विस्थापन, प्रकाश और छाया के प्रभाव से तरल पदार्थों का रूपांतरण, आधे खाली बर्तन में बेरों का बदलता रंग जो हरे से नीले और नीले से सुनहरे पीले रंग में बदल

जाता था, कुर्सियाँ, बूढ़ी महिलाओं के एक समूह की तरह, जो दिन में दो बार मेज पर बिछे सफेद कपड़े के चारों ओर अपनी जगह लेने आती थीं, मानो किसी वेदी पर जहाँ स्वाद की रस्में मनाई जाती थीं, जहाँ सीप के खोखले हिस्सों में पवित्र जल की कुछ बूँदें छोटी पवित्र जगहों की तरह जमा हो गई थीं पत्थर के पानी के पात्र; मैंने उनमें सुंदरता खोजने की कोशिश की, जहाँ मैंने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यह मौजूद हो सकती है, सबसे साधारण चीजों में, 'स्थिर जीवन' की गहराई में।

सेंट-लूप के जाने के कुछ दिनों बाद, जब मैं एल्स्टिर को एक छोटी सी चाय पार्टी आयोजित करने के लिए राजी करने में सफल हो गया, जिसमें मुझे अल्बर्टीन से मिलना था, तो ग्रैंड होटल से निकलते समय मुझमें जो ताजगी और सजगता (अफसोस) क्षणिक थी, जो क्रमशः सामान्य से अधिक आराम और विशेष रूप से सजने-संवरने के कारण थी, मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि मैं उन्हें (और एल्स्टिर की मित्रता से मिलने वाले सम्मान को भी) किसी अन्य, अधिक रोचक व्यक्ति के आकर्षण के लिए बचा नहीं सका; मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि मुझे अल्बर्टीन से मिलने के साधारण सुख के लिए उन सभी को खर्च करना पड़ा। अब जब मुझे इस सुख का आश्वासन मिल चुका था, तो मेरे मस्तिष्क ने इसे बहुत कम महत्व दिया। लेकिन, भीतर ही भीतर, मेरी इच्छाशक्ति ने एक पल के लिए भी इस भ्रम को साझा नहीं किया, वह इच्छाशक्ति जो हमारे क्रमिक व्यक्तित्वों की दृढ़ और अपरिवर्तनीय सेविका होती है; गुप्त स्थानों में छुपी हुई, तिरस्कृत, दबी हुई, अथक निष्ठावान, बिना रुके परिश्रम करती हुई और अपने स्वामी की परिवर्तनशीलता की परवाह किए बिना, केवल इस शर्त पर कि उस स्वामी को कभी भी अपनी आवश्यकताओं की कमी न हो। जबकि जिस क्षण हम एक लंबे समय से नियोजित और बेसब्री से प्रतीक्षित छुट्टी पर निकलने वाले होते हैं, हमारा मस्तिष्क, हमारी

नसें स्वयं से पूछने लगती हैं कि क्या यह सब कष्ट सहने योग्य है, इच्छाशक्ति, यह जानते हुए कि यदि उनके लिए यात्रा करना असंभव हो गया तो वे आलसी स्वामी तुरंत अपनी यात्रा को सबसे अद्भुत अनुभव मानने लगेंगे, इच्छाशक्ति उन्हें स्टेशन के बाहर अपनी कठिनाइयों का वर्णन करने और उनकी झिझक को बढ़ाने के लिए छोड़ देती है; लेकिन ट्रेन चलने से पहले ही टिकट लेने और हमें डिब्बे में बिठाने में व्यस्त हो जाती है। यह मस्तिष्क और नसों की तरह ही अपरिवर्तनीय है, लेकिन चूंकि यह मौन है, अपने कार्यों का कोई हिसाब नहीं देती, इसलिए यह लगभग अस्तित्वहीन प्रतीत होती है; इसी दृढ़ संकल्प से हमारे व्यक्तित्व के अन्य घटक निर्देशित होते हैं, लेकिन इसे देखे बिना, जबकि वे अपनी सभी अनिश्चितताओं को स्पष्ट रूप से पहचानते हैं। मेरे तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क में अल्बर्टीन को जानने से मिलने वाले आनंद के वास्तविक मूल्य पर चर्चा शुरू हो गई, जबकि मैं कांच के उस व्यर्थ और क्षणभंगुर आकर्षण को निहार रहा था जिसे तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क किसी अन्य अवसर के लिए सुरक्षित रखना चाहते थे। लेकिन मेरी इच्छाशक्ति उस समय को बीतने नहीं दे रही थी जब मुझे निकलना ही था, और उसने चालक को एल्स्टर का पता पुकारा। अब जब फैसला हो चुका था, मस्तिष्क और तंत्रिकाएं इसे 'अफसोसजनक' मानने के लिए स्वतंत्र थीं। अगर मेरी इच्छाशक्ति ने उस व्यक्ति को कोई दूसरा पता दिया होता, तो वे आसानी से 'बिक' जाते।

कुछ मिनट बाद जब मैं एल्स्टिर के यहाँ पहुँचा, तो मेरा पहला आभास यही हुआ कि मैडम साइमोनेट स्टूडियो में नहीं थीं। वहाँ रेशमी फ्रॉक पहने, सिर ढके एक लड़की बैठी थी, लेकिन उसके खूबसूरत बाल, उसकी नाक, मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखती थीं। मैं उस इंसान को नहीं पहचान पा रहा था जिसे मैंने पोलो कैप पहने, मेरे और समुद्र के बीच टहलते हुए एक

युवा साइकिल सवार से बना लिया था। फिर भी, वह अल्बर्टीन ही थी। लेकिन जब मुझे पता चला कि वह वही है, तब भी मैंने उसके बारे में नहीं सोचा। किसी भी सामाजिक समारोह में प्रवेश करते ही, जब हम युवा होते हैं, तो हम अपने पुराने स्वरूप को भूल जाते हैं, हम एक अलग इंसान बन जाते हैं, हर ड्राइंग रूम एक नया ब्रह्मांड बन जाता है, जिसमें एक नए नैतिक दृष्टिकोण के प्रभाव में आकर, हम अपना ध्यान लोगों, नृत्यों, ताश के मेजों पर केंद्रित कर लेते हैं, मानो वे हमारे लिए हमेशा के लिए मायने रखते हों, और सुबह तक हम इन सब चीजों को भूल जाते हैं। अल्बर्टीन से बातचीत करने के अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मुझे मजबूरन उस रास्ते पर चलना पड़ा, जो मेरी योजना के अनुसार बिल्कुल नहीं था। पहले तो मैं एल्स्टिर में रुका, फिर मेहमानों के अन्य समूहों से मिला, जिनसे मेरा परिचय कराया गया, उसके बाद मैं उस मेज पर पहुँचा, जहाँ मुझे एक-दो स्ट्रॉबेरी टार्ट परोसे गए और मैंने उन्हें खाया। कमरे के दूसरे हिस्से में बज रहे संगीत को मैं बिना हिले-डुले सुनता रहा। इन सभी घटनाओं को मैंने मैडम साइमोनेट से हुई मुलाकात के बराबर ही महत्व दिया। यह मुलाकात अब कई घटनाओं में से एक मात्र रह गई थी, क्योंकि मैं पूरी तरह भूल चुका था कि कुछ ही मिनट पहले उस दिन वहाँ आने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही था। लेकिन क्या रोजमर्रा की भागदौड़ में, हर सच्ची खुशी और हर बड़े दुख में, ऐसा ही नहीं होता? लोगों से भरे एक कमरे में, हमें अपने प्रियजन से वह उत्तर मिलता है, चाहे वह शुभ हो या अशुभ, जिसका हम पिछले एक साल से इंतजार कर रहे होते हैं। लेकिन हमें बातचीत जारी रखनी चाहिए, विचार एक के बाद एक आते रहते हैं, एक चिकनी सतह बनाते हैं, जिसे कभी-कभार स्मृति की गहरी जड़ों से एक मंद धड़कन चुभती है, जो काफी गहरी होती है लेकिन बहुत पतली होती है, कि हम पर दुर्भाग्य आ पड़ा है। यदि दुर्भाग्य के बजाय, यह सुख है, तो

हो सकता है कि कई साल बीत जाने के बाद ही हमें याद आए कि हमारे भावनात्मक जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना बिना समय दिए ही घटित हो गई, जिस पर हमें लंबे समय तक ध्यान देने या लगभग उसके बारे में जागरूक होने का भी समय नहीं मिला, शायद किसी सामाजिक समारोह में, जिसमें हम केवल उस घटना की उम्मीद में गए थे।

जब एल्स्टिर ने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा ताकि वह मुझे अल्बर्टीन से मिलवा सके, जो कमरे में थोड़ी दूर बैठी थी, तो मैंने सबसे पहले एक कॉफ़ी एक्लेयर खत्म किया और फिर बड़ी उत्सुकता दिखाते हुए एक बुजुर्ग सज्जन से, जिनसे मेरी अभी-अभी मुलाकात हुई थी (और मैंने सोचा कि शायद मैं उन्हें अपने बटनहोल में लगा गुलाब भेंट कर दूँ, जिसकी उन्होंने प्रशंसा की थी), पुराने नॉर्मन मेलों के बारे में और अधिक बताने को कहा। इसका यह अर्थ नहीं है कि इसके बाद हुई मुलाकात से मुझे कोई खुशी नहीं मिली, न ही यह मेरे लिए कोई विशेष महत्व रखती थी। लेकिन जहाँ तक खुशी की बात है, स्वाभाविक रूप से, मुझे इसका एहसास कुछ समय बाद तक नहीं हुआ, जब मैं एक बार फिर होटल में, और अपने कमरे में अकेली थी, तब मैं फिर से खुद बन गई थी। इस संदर्भ में खुशी फोटोग्राफी की तरह है। हम अपने प्रिय व्यक्ति की उपस्थिति में जो तस्वीर लेते हैं, वह केवल एक नेगेटिव फिल्म होती है; हम इसे बाद में, घर पर, विकसित करते हैं, और एक बार फिर अपने उस आंतरिक अंधेरे कक्ष को पा लेते हैं, जिसका प्रवेश द्वार हमारे लिए तब तक बंद रहता है जब तक हम अन्य लोगों के साथ होते हैं।

यदि इससे प्राप्त आनंद के प्रति मेरी चेतना कुछ घंटों के लिए विलंबित हुई, तो भी इस परिचय का महत्व मैंने तुरंत महसूस किया। परिचय के ऐसे क्षणों में, भले ही हम स्वयं को अचानक समृद्ध महसूस करते हैं, मानो हमें एक ऐसा पास मिल गया हो जो हमें उन सुखों तक पहुँचाएगा जिनकी

हम पिछले कई हफ्तों से व्यर्थ खोज कर रहे थे, हम यह स्पष्ट रूप से समझ जाते हैं कि यह प्राप्ति न केवल घंटों की परिश्रमपूर्ण खोज का अंत करती है—एक ऐसी राहत जो हमें केवल आनंद से भर सकती है—बल्कि एक विशेष व्यक्ति के अस्तित्व का भी अंत करती है, जिसे हमारी कल्पना ने बुरी तरह विकृत कर दिया था, और हमारा यह भय कि हम शायद कभी उसके सामने न आ पाएँ, और बढ़ गया था। जिस क्षण हमारा नाम परिचय कराने वाले व्यक्ति के होठों पर आता है, विशेषकर यदि वह इसे बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है, जैसा कि एल्स्टिर अब कर रहा था, हमारे बारे में प्रशंसात्मक विवरण के साथ—उस पवित्र क्षण में, जैसे किसी परी कथा में जादूगर किसी व्यक्ति को अचानक कोई और बनने का आदेश देता है, वह जिसकी उपस्थिति प्राप्त करने के लिए हम तरस रहे थे, विलीन हो जाती है; वह कैसे वैसी ही रह सकती है, जब एक तो अजनबी को हमारे नाम की घोषणा और हमारे चेहरे को देखने पर जो ध्यान देना पड़ता है, उसी वजह से कल तक अनंत दूरी पर स्थित आँखों में (जहाँ हमें लगता था कि हमारी भटकती, अनियंत्रित, हताश, विचलित आँखें कभी उनसे मिल नहीं पाएंगी) वह सचेत दृष्टि, वह अव्यक्त विचार जिसकी हम तलाश कर रहे थे, चमत्कारिक रूप से और सरलता से हमारी अपनी छवि से बदल गया है, मानो मुस्कुराते हुए दर्पण के पीछे चित्रित हो। यदि स्वयं का यह अवतार उस व्यक्ति में, जो हमसे सबसे भिन्न प्रतीत होता है, उस व्यक्ति के स्वरूप को सबसे अधिक बदलता है जिससे हमारा अभी-अभी परिचय हुआ है, तो भी उस व्यक्ति का स्वरूप काफी अस्पष्ट रहता है; और हम स्वयं से यह पूछने के लिए स्वतंत्र हैं कि क्या वह कोई देवता, मेज या पात्र निकलेगी। लेकिन, मोम के पुतलों की फुर्ती के समान, जो पाँच मिनट में हमारी आँखों के सामने एक प्रतिमा बना देते हैं, अब वह अजनबी जो कुछ शब्द हमसे कहने वाली है, वे उसके स्वरूप

को पुष्ट करेंगे, उसे कुछ ऐसा ठोस और निर्णायक रूप देंगे जो उन सभी परिकल्पनाओं को खारिज कर देगा जिनसे कुछ क्षण पहले हमारी इच्छा, हमारी कल्पनाएँ प्रलोभित हो रही थीं। निःसंदेह, इस पार्टी में आने से पहले ही, अल्बर्टीन मेरे लिए केवल एक प्रेत मात्र नहीं रह गई थी, जो हमारे जीवन में बस एक गुजरते अजनबी की छवि होती है, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते और जिसकी हमने बस एक झलक देखी है। श्रीमती बोंटेम्प्स के साथ उसके संबंध ने उन अद्भुत परिकल्पनाओं के दायरे को पहले ही सीमित कर दिया था, क्योंकि इसने उन रास्तों में से एक को रोक दिया था जिनके माध्यम से वे फैल सकती थीं। जैसे-जैसे मैं उस लड़की के करीब आता गया और उसे बेहतर जानने लगा, उसके बारे में मेरा ज्ञान धीरे-धीरे कम होता गया। कल्पना और इच्छा के सभी कारक एक ऐसी धारणा में तब्दील होते गए जिसका मूल्य अनंत गुना कम था। यह मानना पड़ेगा कि इस धारणा में कुछ ऐसा भी जुड़ गया जो वास्तविक जीवन में लगभग उतना ही था जितना कि संयुक्त स्टॉक कंपनियां किसी व्यक्ति को उसकी पूंजी पर ब्याज देने के बाद बोनस के रूप में देती हैं। उसका नाम और उसके पारिवारिक संबंध ही मेरी धारणाओं की मूल सीमा थे। उसके बगल में खड़े होकर उसकी दोस्ताना अभिवादन ने, जब मैंने उसकी आंख के नीचे गाल पर मौजूद छोटे से तिल को फिर से देखा, एक और चरण को चिह्नित किया; अंत में, मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने उसे दो लोगों के लिए 'बिल्कुल' की जगह 'पूरी तरह' क्रियाविशेषण का प्रयोग करते सुना। एक के बारे में उसने कहा, "वह पूरी तरह से पागल है, लेकिन फिर भी बहुत अच्छी है," और दूसरे के बारे में, "वह एक बिल्कुल साधारण आदमी है, एक पूर्ण उबाऊ व्यक्ति है।" हालाँकि 'पूरी तरह से' शब्द का यह प्रयोग प्रशंसनीय नहीं है, फिर भी यह सभ्यता और संस्कृति के उस स्तर को दर्शाता है जिसकी मैंने साइकिल पर नाचने वाली उस

लड़की, गोल्फ कोर्स की उस उन्मादी देवी के बारे में कभी कल्पना भी नहीं की थी। इसका यह भी अर्थ नहीं था कि इस पहले परिवर्तन के बाद अल्बर्टीन मेरे लिए कई बार नहीं बदलेगी। किसी व्यक्ति के अच्छे और बुरे गुण, जो उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, यदि हम उन्हें किसी दूसरे कोण से देखें तो पूरी तरह से अलग क्रम में व्यवस्थित हो जाते हैं—ठीक वैसे ही जैसे किसी शहर में, इमारतें जो एक सीधी रेखा में अनियमित रूप से सजी हुई दिखाई देती हैं, दूसरे कोण से देखने पर एक क्रमिक दूरी में पीछे हट जाती हैं, और उनकी सापेक्ष ऊँचाई बदल जाती है। शुरुआत में, अल्बर्टीन मुझे कठोर के बजाय लगभग डरी हुई सी लगी; वह मुझे असभ्य की बजाय सभ्य प्रतीत हुई, क्योंकि उसने बारी-बारी से उन सभी लड़कियों के लिए 'बुरा अंदाज़' और 'हास्यपूर्ण व्यवहार' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जिनसे मैंने उससे बात की थी। अंततः, मेरी दृष्टि के दायरे में उसका चेहरा लालिमा लिए हुए और देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं था, और अब वह जिज्ञासु निगाह नहीं थी जो मैं अब तक उससे जोड़ता आया था। लेकिन यह महज़ दूसरी छाप थी और निस्संदेह आगे भी कई और छापें थीं जिनसे मुझे गुज़रना था। इस प्रकार, किसी व्यक्ति के बारे में सटीक जानकारी तभी प्राप्त की जा सकती है जब वह अपनी पहली छाप के भ्रमों को पहचान ले, और इसके लिए उसे काफी प्रयास करने पड़ते हैं, बशर्ते कि ऐसा ज्ञान संभव हो। लेकिन ऐसा नहीं है; क्योंकि जब उसके बारे में हमारी मूल धारणा में सुधार होता है, तो वह व्यक्ति स्वयं, जो निर्जीव वस्तु नहीं है, बदल जाता है; हमें लगता है कि हमने उसे देख लिया है, वह हिलता है, और जब हम कल्पना करते हैं कि अंततः हम उसे स्पष्ट रूप से देख रहे हैं, तो वास्तव में यह केवल उसके बारे में हमारी पुरानी धारणाएँ ही होती हैं जिन्हें हमने पहले ही स्पष्ट कर दिया होता है, जबकि वे अब उसका सही प्रतिनिधित्व नहीं करतीं।

फिर भी, चाहे इसमें कितनी ही अपरिहार्य निराशाएँ क्यों न हों, उस ओर यह यात्रा जिसे हमने अभी तक आधा ही देखा है, जिस पर हम अपने खाली समय में मनन और कल्पना कर सकते थे, यही एकमात्र यात्रा है जो इंद्रियों को संतुष्ट करती है, जो जिज्ञासा जगाती है। उन लोगों का जीवन कितना नीरस और उबाऊ होगा जो आलस्य या संकोच के कारण सीधे अपने उन मित्रों के दरवाज़े तक गाड़ी चलाकर पहुँच जाते हैं जिनसे वे बिना कभी उन्हें जानने का सपना देखे ही जान गए हैं, रास्ते में कभी रुककर उस चीज़ का निहारने का साहस नहीं करते जो उनकी इच्छा को जगाती है।

मैं घर लौटा, मेरा मन पार्टी की यादों से भरा हुआ था, उस कॉफी एक्लेयर की यादों से जो मैंने एल्स्टिर के साथ अल्बर्टीन के पास जाने से पहले खा ली थी, उस गुलाब की यादों से जो मैंने उस बुज़ुर्ग को दिया था, उन सभी छोटी-छोटी बातों की यादों से जो उस अवसर की परिस्थितियों के कारण अनजाने में ही हमारे दिमाग में बस गई थीं, और जो एक विशेष और संयोगवश क्रम में हमारी पहली मुलाकात की तस्वीर बनाती हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे मैं इस तस्वीर को एक नए नजरिए से देख रहा हूँ, जो मुझसे बहुत दूर है, और मुझे एहसास हुआ कि यह तस्वीर सिर्फ मेरे लिए ही नहीं थी, जब कुछ महीनों बाद, मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, जब मैंने अल्बर्टीन से उसी दिन बात की जिस दिन मैं उससे पहली बार मिला था, तो उसने मुझे उस एक्लेयर, उस फूल की याद दिलाई जो मैंने दिया था, उन सभी चीजों की याद दिलाई जिन्हें मैंने सोचा था कि वे सिर्फ मेरे लिए ही महत्वपूर्ण थीं, बल्कि सिर्फ मैंने ही महसूस की थीं, और जिन्हें अब मैंने अल्बर्टीन के मन में इस तरह अंकित पाया, एक ऐसे रूप में जिसके अस्तित्व का मैंने कभी अनुमान भी नहीं लगाया था। पहले ही दिन, जब होटल लौटकर मैं अपने साथ लाई हुई स्मृति को देख सका, तो मुझे

एहसास हुआ कि यह जादू कितनी कुशलता से किया गया था, और मैंने एक-दो पल के लिए उस व्यक्ति से बात की थी, जो जादूगर की कला के कारण, उस दूसरे व्यक्ति का कोई भी रूप धारण किए बिना, जिसे मैं इतने लंबे समय से समुद्र किनारे टहलते हुए देख रहा था, प्रभावी रूप से उसकी जगह ले ली गई थी। वैसे, मैं शायद पहले से ही इसका अनुमान लगा सकता था, क्योंकि समुद्र तट पर दिखने वाली लड़की मेरी ही गढ़ी हुई एक काल्पनिक पात्र थी। इसके बावजूद, जैसा कि मैंने एल्स्टिर के साथ बातचीत में उसे उस दूसरी लड़की के रूप में पहचाना था, मैंने खुद को वास्तविक अल्बर्टाइन से किए गए प्रेम के वादों को पूरा करने के लिए कर्तव्यबद्ध महसूस किया। हम एक-दूसरे से परोक्ष रूप से विवाह करते हैं, और अंततः हस्तक्षेप करने वाले व्यक्ति से विवाह करने के लिए बाध्य महसूस करते हैं। इसके अलावा, अगर मेरे जीवन से, कम से कम अस्थायी रूप से, एक ऐसी पीड़ा गायब हो गई थी जिसे शिष्ट व्यवहार, 'बिल्कुल सामान्य' अभिव्यक्ति और चमकते मंदिर की स्मृति में पर्याप्त सांत्वना मिली थी, तो उस स्मृति ने मुझमें एक अलग तरह की इच्छा जगा दी, जो शांत और बिल्कुल भी पीड़ादायक नहीं थी, बल्कि भाईचारे के प्रेम जैसी थी, लेकिन अंततः उतनी ही खतरनाक हो सकती थी क्योंकि इसने मुझे हर पल उस नए व्यक्ति को चूमने की तीव्र इच्छा महसूस कराई, जिसके आकर्षक तौर-तरीकों, शर्म और अप्रत्याशित सहजता ने मेरी कल्पना की व्यर्थ प्रक्रिया को रोक दिया, लेकिन एक भावुक कृतज्ञता को जन्म दिया। और फिर, चूंकि स्मृति एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप से तस्वीरों को दर्ज करना शुरू कर देती है, संग्रह में चित्रित दृश्यों के बीच हर कड़ी, हर तरह के क्रम को मिटा देती है, इसलिए सबसे हाल की तस्वीर जरूरी नहीं कि पहले की तस्वीरों को नष्ट या रद्द कर दे। उस दोपहर जिस साधारण लेकिन आकर्षक अल्बर्टीन से मैंने बात की थी, उसके सामने

आने पर भी, मुझे समुद्र के किनारे एक दूसरी, रहस्यमयी अल्बर्टीन की आकृति दिखाई दी। ये अब यादें मात्र रह गई थीं, यानी ऐसी तस्वीरें जिनमें से कोई भी मुझे अब दूसरी से ज़्यादा सच्ची नहीं लग रही थी। लेकिन, अल्बर्टीन से मेरी पहली मुलाकात की उस दोपहर को समाप्त करते हुए, जब मैं उसकी गाल पर, आँख के ठीक नीचे, उस छोटे से तिल को फिर से याद करने की कोशिश कर रहा था, तो मुझे याद आया कि एल्स्टर की खिड़की से देखते हुए, जब अल्बर्टीन वहाँ से गुज़री थी, तो मैंने उसकी ठोड़ी पर तिल देखा था। वास्तव में, जब भी मैं उसे देखता था, मुझे उसके चेहरे पर तिल दिखाई देता था, लेकिन मेरी कमज़ोर याददाश्त के कारण वह तिल अल्बर्टीन के चेहरे पर इधर-उधर भटकता रहता था, कभी एक जगह, कभी दूसरी जगह।

मैडम सिमोनट को उन लड़कियों से बहुत कम अलग पाकर मुझे जो निराशा हुई, ठीक वैसे ही जैसे बालबेक चर्च को देखकर मुझे जो झटका लगा, उससे क्विम्परले, पोंट-एवेन और वेनिस जाने की मेरी इच्छा कम नहीं हुई, मैंने खुद को इस विचार से दिलासा दिया कि अल्बर्टीन के माध्यम से, भले ही वह मेरी उम्मीदों पर खरी न उतरी हो, मैं उसके छोटे समूह की सहेलियों से परिचित हो सकूँगी।

पहले तो मुझे लगा कि मैं असफल हो जाऊँगा। चूंकि वह (और मैं भी) बालबेक में काफी समय तक रहने वाली थी, इसलिए मैंने तय किया था कि उससे मिलने के अपने प्रयासों को ज्यादा ज़ाहिर न करना ही बेहतर होगा, बल्कि किसी आकस्मिक मुलाकात का इंतजार करना। लेकिन अगर ऐसा हर दिन होता, तो मुझे बहुत डर था कि वह दूर से ही मेरे अभिवादन का जवाब देगी, और पूरे सीज़न में दिन-प्रतिदिन होने वाली ऐसी मुलाकातों से मुझे कोई फायदा नहीं होगा।

इसके कुछ ही समय बाद, एक सुबह जब बारिश हो रही थी और लगभग

ठंड थी, तो एक लड़की ने मुझे सामने से रोका। वह टोपी पहने और मफ लिए खड़ी थी, और एल्स्टिर की पार्टी में मिली लड़की से इतनी अलग थी कि उसे पहचानना मेरे बस की बात नहीं थी; फिर भी, मैं उसे पहचानने में कामयाब रहा, लेकिन एक पल के आश्चर्य के बाद, जो मुझे लगता है कि अल्बर्टीन की नज़र से नहीं बचा। दूसरी ओर, जब मुझे सहज रूप से उसकी अच्छी परवरिश याद आई जिसने मुझे पहले बहुत प्रभावित किया था, तो उसके रूखे लहजे और 'छोटे समूह' के विशिष्ट व्यवहार ने मुझे विपरीत आश्चर्य से भर दिया। इन सबके अलावा, उसका माथा अब उसके चेहरे का वह केंद्र नहीं रहा जिस पर आंखें आराम से टिक सकें, या तो इसलिए कि मैं अब उसके दूसरी तरफ था, या इसलिए कि उसकी टोपी ने उसे छिपा रखा था, या शायद इसलिए कि उसकी सूजन हमेशा नहीं रहती थी। "क्या मौसम है!" उसने कहना शुरू किया। "सच में, बालबेक की यह सदाबहार गर्मी महज़ दिखावा है। यहाँ आपको कुछ खास पसंद नहीं है, है ना? हमने आपको कभी गोल्फ़ खेलते या कैसिनो में नाचते नहीं देखा। आप घुड़सवारी भी नहीं करते। आप ज़रूर बहुत ऊब गए होंगे। क्या आपको सारा दिन समुद्र तट पर रहना उबाऊ नहीं लगता? मैं समझ गया, आप तो छिपकली की तरह धूप सेंकते हैं; आपको इसमें मज़ा आता है। आपके पास तो बहुत समय होगा। मैं देख सकता हूँ कि आप मेरे जैसे नहीं हैं; मुझे तो सभी खेल बेहद पसंद हैं। आप सोग्ने रेस में नहीं गए! हम ट्राम से गए थे, और मुझे पूरा यकीन है कि आपको उस पुरानी खटारा ट्राम में जाने में कोई मज़ा नहीं आता। हमें पूरे दो घंटे लग गए! मैं तो अपनी साइकिल से तीन बार जाकर वापस आ सकता था।" मैं सेंट-लूप की प्रशंसा में डूबा हुआ था, जब उन्होंने बड़ी सहजता से छोटी स्थानीय ट्रेन को 'क्रॉलर' कहा था, क्योंकि उसकी पटरी पर लगातार मोड़ थे। लेकिन अल्बर्टीन के 'ट्राम' के बारे में बोलने के सहज अंदाज़ और उसे 'टिन-पॉट'

कहने से मैं सचमुच घबरा गया। मैं उसकी बोलने की शैली पर महारत महसूस कर सकता था, और मुझे डर था कि कहीं वह मेरी हीनता को पहचान न ले और उसका उपहास न करे। फिर भी, इस रेलवे को दर्शाने के लिए उस छोटे से समूह के पास मौजूद पर्यायवाची शब्दों की पूरी जानकारी अभी तक मेरे सामने प्रकट नहीं हुई थी। बोलते समय, अल्बर्टीन अपना सिर स्थिर रखती थी, अपनी नाक बंद रखती थी, केवल अपने होठों के कोनों को हिलाती थी। इसका परिणाम एक धीमी, नाक से निकलने वाली आवाज़ थी, जिसमें शायद एक देहाती लहजा, ब्रिटिश लहजे का बचकाना दिखावा, किसी विदेशी गवर्नेंस की शिक्षा और नाक के बलगम की अधिकता का मिश्रण था। उसका यह उच्चारण, जो संयोगवश लोगों से जान-पहचान होने पर जल्द ही गायब हो गया और उसकी जगह एक स्वाभाविक, मासूम लड़की जैसी आवाज़ आ गई, शायद अप्रिय लग सकता था। लेकिन यह उसकी अपनी खासियत थी और मुझे बहुत भाती थी। जब भी मैं कई दिनों तक उससे नहीं मिलता, तो मैं अपने मन को तरोताज़ा करने के लिए मन ही मन दोहराता: "हम तुम्हें कभी गोल्फ़ खेलते नहीं देखते," ठीक उसी नाक से निकलने वाली आवाज़ में, जैसे उसने ये शब्द कहे थे, बिना चेहरे की एक भी मांसपेशी हिलाए। और तब मुझे लगता था कि दुनिया में उससे ज़्यादा आकर्षक कोई नहीं हो सकता।

उस सुबह हम उन जोड़ों में से एक थे जो सड़क पर इधर-उधर मिलते हुए, कुछ पल रुककर बस कुछ शब्द बोलकर अलग हो जाते थे, और फिर अपनी-अपनी राह पर चल पड़ते थे। जब वह वहीं खड़ी रही, तो मैंने मौका देखकर फिर से देखा और हमेशा के लिए पता लगाने की कोशिश की कि वह छोटा सा तिल ठीक कहाँ था। फिर, ठीक वैसे ही जैसे विंटेइल की एक पंक्ति जिसने मुझे सोनाटा में बहुत आनंद दिया था, और जो मेरी

याददाश्त में एंडांटे से फिनाले तक भटकती रही, जब तक कि एक दिन स्कोर मेरे हाथ में नहीं आ गया और मैं उसे ढूंढकर अपनी स्मृति में उसके सही स्थान पर, स्केज़ों में, अंकित नहीं कर पाया, वैसे ही यह तिल, जिसे मैंने कभी उसके गाल पर, कभी उसकी ठोड़ी पर देखा था, हमेशा के लिए उसकी नाक के ठीक नीचे, उसके ऊपरी होंठ पर बस गया। ठीक इसी तरह, हम किसी कविता में उन पंक्तियों को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं जो हमें कंठस्थ होती हैं, जबकि हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वे उसमें मिलेंगी।

उस क्षण, मानो समुद्र के सामने स्वतंत्रता में, अपने विविध रूपों में, युवतियों के सुंदर जुलूस की संपूर्ण सजावटी छटा को बढ़ा देने के लिए, जो सुनहरी और गुलाबी, धूप और हवा से तपती हुई थी, अल्बर्टीन की सहेलियाँ, अपने सुडौल अंगों और लचीले शरीर के साथ, लेकिन एक-दूसरे से इतनी भिन्न, एक समूह में दिखाई दीं जो पास आते ही फैलती गईं, हमारी ओर बढ़ती गईं, लेकिन समुद्र के करीब, एक समानांतर रेखा पर चलती रहीं। मैंने अल्बर्टीन से उसके साथ थोड़ी दूर चलने की अनुमति मांगी। दुर्भाग्य से, उसने केवल हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया। "लेकिन अगर तुम उनके साथ नहीं चलोगी तो तुम्हारी सहेलियाँ निराश होंगी," मैंने इशारा किया, यह उम्मीद करते हुए कि हम सब साथ चल सकें। नियमित चेहरे वाला एक युवक, गोल्फ क्लबों का थैला लिए हुए, हमारे पास आया। यह वही बैकरेट खिलाड़ी था, जिसकी तेज चाल से मुख्य मजिस्ट्रेट की पत्नी बहुत क्रोधित होती थी। एक कठोर, भावहीन स्वर में, जिसे वह स्पष्ट रूप से अत्यंत परिष्कृत होने का प्रतीक मानते थे, उन्होंने अल्बर्टीन को शुभ दिन कहा। "गोल्फ़ खेल रहे थे, ऑक्टेव?" उसने पूछा। "खेल कैसा रहा? क्या आप फॉर्म में थे?" "अरे, यह बहुत ही उबाऊ है; मैं बिल्कुल भी नहीं खेल सकता," उन्होंने उत्तर दिया। "क्या एंड्री खेल

रही थी?" "हाँ, उसने सतहत्तर में राउंड पूरा किया।" "वाह, यह तो एक रिकॉर्ड है!" "मैंने कल बयासी में राउंड पूरा किया था।" वह एक बेहद धनी निर्माता के पुत्र थे, जिन्हें आगामी विश्व मेले के आयोजन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। मैं इस बात से बेहद प्रभावित हुआ कि इस युवक और लड़कियों के समूह के अन्य अपेक्षाकृत कम संख्या वाले पुरुष मित्रों में कपड़ों और उन्हें पहनने के तरीके, सिगार, अंग्रेजी पेय, घोड़ों से संबंधित हर चीज का इतना गहरा ज्ञान था। यह ज्ञान उसे सूक्ष्मतम विवरणों तक इस तरह से प्राप्त था कि वह एक सच्चे विशेषज्ञ की संयमित विनम्रता के करीब था। यह ज्ञान उसने पूर्ण एकांत में, किसी भी प्रकार की बौद्धिक संस्कृति से रहित, विकसित किया था। उसे रात के खाने के सही समय और स्थान के बारे में कोई संकोच नहीं था - जैकेट पहनकर या पजामा पहनकर, लेकिन उसे इस बात का भी जरा भी अंदाजा नहीं था कि किस परिस्थिति में कौन सा शब्द प्रयोग किया जा सकता है या नहीं, या व्याकरण के सबसे सरल नियमों का भी उसे कोई ज्ञान नहीं था। संस्कृति के इन दो रूपों के बीच यह असमानता उनके पिता में भी अवश्य ही रही होगी, जो बालबेक का संचालन करने वाली सिंडिकेट के अध्यक्ष थे। हाल ही में उन्होंने मतदाताओं को लिखे एक खुले पत्र में, जिसे उन्होंने सभी दीवारों पर चिपकाया था, घोषणा की: "मैं महापौर से मिलना चाहता था, उनसे इस मामले पर बात करना चाहता था; उन्होंने मेरी उचित शिकायत नहीं सुनी।" कैसिनो में ऑक्टेव ने बोस्टन, टैंगो और अन्य नृत्य प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते, एक ऐसी उपलब्धि जो उन्हें, यदि वे चाहें, तो उस तटीय समाज में एक अच्छा विवाह करने का हकदार बनाती, जहाँ युवतियाँ लाक्षणिक रूप से नहीं बल्कि गंभीरता से अपने नृत्य-साथियों से 'विवाह' करती हैं। उन्होंने अल्बर्टीन से "क्या आपको कोई आपत्ति है?" कहते हुए एक सिगार

जलाया, मानो कोई व्यक्ति बात करते-करते किसी जरूरी काम को खत्म करने की अनुमति मांग रहा हो। क्योंकि वह उन लोगों में से एक थे जो कभी 'कुछ नहीं कर रहे' नहीं हो सकते, हालाँकि वास्तव में ऐसा कुछ था ही नहीं जिसे उन्होंने कभी किया हो। और जिस प्रकार पूर्ण निष्क्रियता अंततः हम पर वही प्रभाव डालती है जो लंबे समय तक अत्यधिक काम करने का होता है, और यह शरीर और मांसपेशियों के जीवन के साथ-साथ चरित्र पर भी उतना ही प्रभाव डालती है, उसी प्रकार ऑक्टेव के ध्यानमग्न माथे के पीछे छिपी बुद्धि की अक्षुण्णता ने अंततः उसे, उसकी शांत और स्थिर छवि के बावजूद, सोचने की निरर्थक इच्छाओं से भर दिया, जो उसे रातों को जगाए रखती थीं, मानो वह एक अति उत्तेजित दार्शनिक हो।

मान लीजिए कि अगर मैं उनके पुरुष मित्रों को जानती तो मुझे लड़कियों से मिलने के ज़्यादा मौके मिलते, इसलिए मैं ऑक्टेव से परिचय करवाने ही वाली थी। जैसे ही वह हमसे विदा हुआ, मैंने अल्बर्टीन को यह बात बताई, और मैं अभी भी बुदबुदा रही थी, "मैं बिल्कुल भी गोल्फ़ नहीं खेल सकती!" मुझे लगा कि इससे उसके मन में अगली बार ऐसा करने का विचार बैठ जाएगा। "लेकिन मैं नहीं कर सकती," वह चिल्लाई, "तुम्हें ऐसे सीधे-सादे लड़के से कैसे मिलवाऊँ? यहाँ तो ऐसे लड़कों की भरमार है। लेकिन वे तुमसे क्या कहेंगे? बस इतना ही कि वो गोल्फ़ अच्छा खेलता है, और बस। मुझे पता है मैं क्या कह रही हूँ; तुम्हें पता चलेगा कि वो बिल्कुल भी तुम्हारे टाइप का नहीं है।" "अगर तुम उन्हें ऐसे छोड़ दोगी तो तुम्हारे दोस्त तुमसे नाराज़ हो जाएँगे," मैंने फिर दोहराया, इस उम्मीद में कि शायद वो मुझे पार्टी में शामिल होने का सुझाव दे। "नहीं, उन्हें मेरी ज़रूरत नहीं है।" हमारी मुलाकात ब्लोच से हुई, जिसने मेरी ओर एक हल्की, व्यंग्यात्मक मुस्कान दी और अल्बर्टीन की उपस्थिति से शर्मिंदा

होकर, जिसे वह नहीं जानता था, या यूँ कहें कि 'बिना जाने' जानता था, उसने अपना सिर अकड़कर, लगभग चिढ़कर झुका लिया। "उस ओस्ट्रोगोथ का क्या नाम है?" अल्बर्टीन ने पूछा। "मुझे समझ नहीं आता कि उसे मेरे सामने झुकने की क्या ज़रूरत है; वह मुझे जानता भी नहीं। और मैंने भी उसके सामने नहीं झुका।" मेरे पास उसे समझाने का समय नहीं था, क्योंकि वह सीधे हमारी ओर आते हुए बोला, "माफ़ कीजिए, आपको टोकने के लिए, लेकिन मुझे आपको बताना होगा कि मैं कल डोनसिएरेस जा रहा हूँ। मैं इसे और टाल नहीं सकता, वरना यह असभ्य लगेगा; वास्तव में, मैं सोचता हूँ, सेंट-लूप-एन-ब्रे मेरे बारे में क्या सोच रहा होगा। मैं बस आपको यह बताने आया था कि मैं दो बजे वाली ट्रेन पकड़ूँगा। आपकी सेवा में।" लेकिन अब मैं सिर्फ अल्बर्टीन से दोबारा मिलने और उसके दोस्तों से जान-पहचान बनाने के बारे में सोच रहा था, और डोनसिएरेस, क्योंकि वे वहाँ नहीं जा रहे थे, और मेरे जाने से मुझे वापस आने में बहुत देर हो जाती और मैं उन्हें समुद्र तट पर नहीं देख पाता, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वे दुनिया के दूसरे छोर पर स्थित हों। मैंने ब्लोच से कहा कि यह असंभव है। "अच्छा, ठीक है, मैं अकेला ही जाऊँगा। मास्टर अरौएट के बेतुके शब्दों में, मैं सेंट-लूप से कहूँगा, ताकि उसके पादरीवाद को बहला सकूँ:

'मेरा कर्तव्य अकेला है, मैं किसी भी तरह से उससे बंधा हुआ नहीं हूं;'
चाहे वह असफल होना ही क्यों न चुने, मैं वफादार ही रहूंगा।

“मैं मानती हूँ कि वो दिखने में बुरा लड़का नहीं है,” अल्बर्टीन ने कहा, “लेकिन उसे देखकर मुझे घिन आती है।” मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ब्लोच ‘बुरा दिखने वाला लड़का’ हो सकता है; फिर भी, जब ज़रा सोच-विचार किया जाए, तो वो सच में बुरा था। उसकी उभरी हुई भौंहें, तीखी नाक और उसकी अत्यधिक चतुराई और अपनी चतुराई पर पूरे यकीन के

साथ, उसका चेहरा आकर्षक था। लेकिन वो अल्बर्टीन को प्रभावित नहीं कर सका। शायद इसका कुछ कारण अल्बर्टीन की अपनी कमियाँ थीं, उस छोटे से समूह की कठोरता, भावनाहीनता और हर उस चीज़ के प्रति उनका असभ्य रवैया जो उनसे अलग थी। और बाद में, जब मैंने उन दोनों का परिचय कराया, तो अल्बर्टीन की उसके प्रति घृणा और भी बढ़ गई। ब्लोच समाज के उस वर्ग से था, जहाँ 'ऊँचे तबके' के खुले और सहज रीति-रिवाजों और 'अपने हाथ गंदे न करने वाले' व्यक्ति से अपेक्षित शिष्टाचार के बीच एक विशेष प्रकार का समझौता हो चुका था, जो दुनियादारी से अलग था और फिर भी सांसारिकता का एक अजीबोगरीब अप्रिय रूप था। जब भी उसका परिचय किसी से कराया जाता, वह संदेह भरी मुस्कान के साथ झुकता, और साथ ही दिखावटी सम्मान भी दिखाता, और अगर वह किसी पुरुष से होता, तो कहता: "आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदय," ऐसी आवाज़ में जो अपने शब्दों का मज़ाक उड़ाती, हालाँकि उसे इस बात का एहसास होता कि वह मूर्ख नहीं है। इस पहले पल को एक ऐसी प्रथा के लिए कुर्बान करने के बाद, जिसका वह एक साथ पालन भी करता था और उपहास भी उड़ाता था (जैसे 1 जनवरी को वह आपको 'बहुत-बहुत मुबारक हो!' कहकर अभिवादन करता था), वह असीम धूर्तता का भाव अपना लेता, और ऐसे सूक्ष्म शब्द बोलता जो अक्सर सच तो होते थे, लेकिन अल्बर्टीन को चिढ़ा देते थे। जब मैंने उसे पहले दिन बताया कि उसका नाम ब्लोच है, तो वह चिल्लाई: "मैं शर्त लगा सकती थी कि वह एक यहूदी लड़का है। उनसे उम्मीद थी कि वे अपनी ही बात में फँस जाएँगे!" इसके अलावा, ब्लोच आगे चलकर अल्बर्टीन को नाराज़ करने के और भी कारण देने वाला था। कई बुद्धिजीवियों की तरह, वह भी सरल बात को सरल ढंग से कहने में असमर्थ थे। वे हर कथन में कोई न कोई जटिल स्पष्टीकरण जोड़ देते थे और बात को सीधे विशिष्ट से

सामान्य की ओर ले जाते थे। अल्बर्टीन को यह बात बहुत खटकती थी, क्योंकि उन्हें दूसरों का उनकी गतिविधियों में रुचि दिखाना कभी अच्छा नहीं लगता था। जब उनके टखने में मोच आ गई और वे चुप बैठी थीं, तब ब्लोच ने उनके बारे में कहा: "वह अपनी कुर्सी पर लेटी हैं, लेकिन अपनी सर्वव्यापकता में उन्होंने अस्पष्ट गोल्फ कोर्स और संदिग्ध टेनिस कोर्ट पर आना-जाना नहीं छोड़ा है।" बेशक, वे बस 'साहित्यिक' अंदाज़ में बात कर रहे थे, लेकिन अल्बर्टीन को यह डर था कि इससे उनके उन दोस्तों के साथ उनके रिश्ते खराब हो सकते हैं, जिनके निमंत्रण उन्होंने चलने-फिरने में असमर्थता का बहाना बनाकर ठुकरा दिए थे। ऐसे में, उनके लिए उस युवक के चेहरे, उसकी आवाज़ से घृणा करना काफी था, जो उनके बारे में ऐसी बातें कह सकता था। हम दोनों, अल्बर्टीन और मैं, बाद में साथ टहलने का वादा करके अलग हो गए। मैंने उससे बात की, लेकिन मुझे इस बात का ज़रा भी एहसास नहीं था कि मेरे शब्द कहाँ जा रहे हैं, उनका क्या अर्थ निकल रहा है, ठीक वैसे ही जैसे मैं किसी अथाह गड्ढे में कंकड़ फेंक रहा हूँ। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे जीवन का दैनिक चक्र निरंतर सिद्ध करता है कि हमारे शब्द, सामान्यतः, उस व्यक्ति द्वारा अपने भाव से निकाले गए अर्थ से भर जाते हैं, जो हमारे द्वारा उन्हीं शब्दों में डाले गए अर्थ से बिल्कुल भिन्न होता है। लेकिन यदि हम स्वयं को किसी ऐसे व्यक्ति की संगति में पाते हैं जिसकी शिक्षा (जैसा कि मेरे लिए अल्बर्टीन की थी) अकल्पनीय है, उसके शौक, उसकी पढ़ाई, उसके सिद्धांत अज्ञात हैं, तो हम यह नहीं बता सकते कि हमारे शब्दों ने उसके भीतर कुछ ऐसा जगाया है जो उनके अर्थ से मिलता-जुलता हो, ठीक वैसे ही जैसे किसी जानवर के बारे में नहीं, हालाँकि कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें जानवर भी समझ सकता है। इसलिए अल्बर्टीन के साथ किसी भी प्रकार की घनिष्ठ मित्रता का प्रयास करना मुझे अज्ञात के संपर्क में आने जैसा प्रतीत होता

था, यदि असंभव नहीं तो, एक ऐसा काम जो घोड़े को प्रशिक्षित करने जितना कठिन और मधुमक्खी पालन या गुलाब उगाने जितना ही सुखदायी था।

कुछ घंटे पहले मैंने सोचा था कि अल्बर्टीन मेरे प्रणाम का जवाब तो देगी, लेकिन मुझसे बात नहीं करेगी। हम जल्द ही साथ में घूमने जाने की योजना बनाकर अलग हो गए थे। मैंने मन में ठान लिया था कि अगली बार जब मैं अल्बर्टीन से मिलूंगा, तो उससे और अधिक खुलेपन से पेश आऊंगा, और मैंने पहले से ही उन सभी बातों का खाका तैयार कर लिया था जो मैं उससे कहूंगा, और यहां तक कि (अब मुझे पूरा यकीन हो गया था कि वह रूढ़िवादी नहीं है) उन सभी अनुरोधों का भी जो मैं उससे मांगूंगा। लेकिन मन बाहरी प्रभावों के अधीन होता है, जैसे पौधे, कोशिकाएं और रासायनिक तत्व होते हैं, और जिस माध्यम में यह डूबता है, वह परिस्थितियों में बदलाव या नए परिवेश के कारण बदलता है। उसकी उपस्थिति मात्र से ही मेरा मन बदल गया था, और जब मैं एक बार फिर अल्बर्टीन के साथ था, तो मैंने उससे जो कहा, वह बिल्कुल वैसा नहीं था जैसा मैं कहना चाहता था। उसके लाल माथे को याद करके, मैंने खुद से पूछा कि क्या वह उस विनम्र ध्यान की अधिक सराहना नहीं करेगी जिसे वह जानती है कि वह निस्वार्थ है। इसके अलावा, उसकी नज़र और उसकी मुस्कान में कुछ ऐसी बातें थीं जिनसे मैं असहज महसूस कर रहा था। ये भाव नैतिक शिथिलता और उस लड़की की थोड़ी बचकानी खुशी दोनों का संकेत दे सकते हैं, जो उत्साह से भरी होने के बावजूद दिल से बेहद नेक थी। चेहरे के भाव और शब्दों के एक ही भाव के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, और मैं एक स्कूली बच्चे की तरह हिचकिचा रहा था, जैसे कोई बच्चा यूनानी गद्य की किसी कठिन रचना को समझने में असमर्थ हो।

इस अवसर पर हमारी मुलाकात तुरंत ही लंबी कद-काठी वाली एंड्री से हुई, वही जिसने बूढ़े बैंकर को पीछे छोड़ दिया था, और अल्बर्टीन को मेरा परिचय करवाना पड़ा। उसकी सहेली की आँखें असाधारण रूप से चमकीली थीं, मानो किसी अंधेरे घर में, खुले दरवाजे से किसी ऐसे कमरे की झलक दिख रही हो जिसमें चमकते समुद्र से सूरज की हरी परछाईं आ रही हो।

पांच लोगों का एक समूह वहां से गुजर रहा था, जिन्हें मैं बालबेक में अपने प्रवास के दौरान अच्छी तरह से पहचान चुका था। मैं अक्सर सोचता था कि वे कौन हो सकते हैं। "वे कोई खास नहीं हैं," अल्बर्टीन ने व्यंग्य भरी हंसी के साथ कहा। "रंगीन बालों और पीले दस्तानों वाला वह छोटा बूढ़ा आदमी बहुत हुनरमंद है; उसे चित्रकारी अच्छी आती है, वह बालबेक का दंत चिकित्सक है; वह अच्छा आदमी है। मोटा वाला मेयर है, वह छोटा मोटा वाला नहीं, आपने उसे पहले देखा होगा, वह नृत्य प्रशिक्षक है; वह थोड़ा सनकी है, आप जानते हैं; वह हमें बिल्कुल पसंद नहीं करता, क्योंकि हम कैसिनो में बहुत शोर मचाते हैं; हम उसकी कुर्सियाँ तोड़ देते हैं, और नाचते समय कालीन उखाड़ना चाहते हैं; इसीलिए वह हमें कभी पुरस्कार नहीं देता, हालाँकि हम वहाँ अकेली लड़कियाँ हैं जो थोड़ा बहुत नाच सकती हैं। दंत चिकित्सक बड़ा प्यारा है, मैं उससे हालचाल पूछना चाहती थी, ताकि नृत्य प्रशिक्षक को गाली दे सकूँ, लेकिन मैं नहीं पूछ सकी क्योंकि उनके साथ एम. डी सैंटे-क्रॉइक्स हैं; वह जनरल काउंसिल में हैं; वह एक बहुत अच्छे परिवार से आते हैं, लेकिन उन्होंने अधिक पैसा कमाने के लिए रिपब्लिकन पार्टी में शामिल हो गए हैं। अब कोई भी अच्छा आदमी उनसे बात नहीं करता। वह मेरे चाचा को जानते हैं, क्योंकि वे दोनों सरकार में हैं, लेकिन मेरे बाकी के लोग..." परिवार वाले हमेशा उसे नज़रअंदाज़ कर देते थे। वाटरप्रूफ जैकेट पहने पतला-दुबला आदमी

बैंडमास्टर है। आप उसे जानते ही होंगे, है ना? नहीं जानते? ओह, वो तो कमाल का बजाता है। आप कैवलेरिया रस्टिकाना नहीं गए? मुझे तो वो बहुत ही प्यारा लगा! आज शाम उसका कॉन्सर्ट है, लेकिन हम नहीं जा सकते क्योंकि वो टाउन हॉल में है। कैसिनो में तो कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन टाउन हॉल में, जहाँ से क्रॉस हटा दिया गया है। अगर हम वहाँ गए तो एंड्री की माँ को बहुत गुस्सा आएगा। आप कहेंगे कि मेरी चाची का पति सरकार में है। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? मेरी चाची तो मेरी चाची हैं। इसलिए मैं उन्हें पसंद नहीं करती। उनकी बस एक ही इच्छा रही है कि मुझसे छुटकारा पा लें। नहीं, जो मेरे लिए सच में माँ जैसी हैं, और उन्हें और भी ज़्यादा श्रेय जाता है क्योंकि उनका मुझसे कोई रिश्ता नहीं है, वो मेरी एक दोस्त हैं जिनसे मैं उतना ही प्यार करती हूँ जितना अपनी माँ से। मैं आपको उनकी 'तस्वीर' दिखा दूँगी।" एक पल के लिए हमारे बीच एक और व्यक्ति आ गया। गोल्फ चैंपियन और बैकरेट खिलाड़ी ऑक्टेव। मुझे लगा कि हमारे बीच कोई रिश्ता है, क्योंकि बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि वह वर्दुरिन परिवार का कोई रिश्तेदार और उससे भी बढ़कर दोस्त था। लेकिन उसने मशहूर बुधवारों के बारे में तिरस्कारपूर्ण लहजे में बात की और कहा कि श्री वर्दुरिन ने कभी डिनर जैकेट के बारे में सुना भी नहीं था, जिसकी वजह से किसी संगीत हॉल में उससे मिलना बेहद उबाऊ हो जाता था, जहाँ कोई भी फ्रॉक कोट और काली टाई पहने, गाँव के वकील जैसे दिखने वाले एक बूढ़े आदमी द्वारा "वाह, तुम नौजवान बदमाश" कहकर अभिवादन किए जाने को बिल्कुल पसंद नहीं करेगा। ऑक्टेव चला गया, और जल्द ही एंड्री की बारी आई, जब हम उसके विला पहुँचे, जहाँ वह हमारी पूरी सैर के दौरान मुझसे एक भी शब्द बोले बिना गायब हो गई। मुझे उसके जाने का अफसोस हुआ, खासकर इसलिए कि जब मैं अल्बर्टीन से शिकायत कर रहा था कि

उसकी सहेली मेरे साथ कितनी रूखी थी, और मन ही मन अल्बर्टीन को अपने दोस्तों से मेरा परिचय कराने में जो कठिनाई हो रही थी, उसकी तुलना उस शत्रुता से कर रहा था जिसका सामना एल्स्टिर को उस पहली दोपहर को करना पड़ा था, जब वह मेरी इच्छा पूरी कर सकता था, तभी दो लड़कियां आईं जिनके सामने मैंने अपनी टोपी उतारी, वे युवा एम्ब्रेसैक थीं, जिनका अल्बर्टीन ने भी अभिवादन किया।

मुझे लगा कि इस मुलाकात से अल्बर्टीन की नज़र में मेरी स्थिति बेहतर हो जाएगी। वे श्रीमती डी विलेपारिसिस की एक रिश्तेदार की बेटियाँ थीं, जो श्रीमती डी लक्ज़मबर्ग की भी मित्र थीं। श्रीमान और श्रीमती डी'अम्ब्रेसाक, जिनका बालबेक में एक छोटा सा विला था और जो बेहद धनी थे, वहाँ अत्यंत सादा जीवन व्यतीत करते थे और हमेशा एक ही तरह के फ्रॉक कोट में और श्रीमती एक गहरे रंग के गाउन में सजे रहते थे। दोनों मेरी दादी को झुककर प्रणाम करती थीं, लेकिन इससे आगे कुछ नहीं हुआ। बेटियाँ, जो बेहद सुंदर थीं, अधिक फैशनेबल कपड़े पहनती थीं, लेकिन उनका फैशन समुद्र तट के बजाय पेरिस के लिए अधिक उपयुक्त था। अपनी लंबी स्कर्ट और बड़ी टोपियों के साथ, वे अल्बर्टीन से बिल्कुल अलग जाति की लगती थीं। मुझे पता चला कि अल्बर्टीन उनके बारे में सब कुछ जानती थी।

"ओह, तो आप छोटे डी'एम्ब्रेसैक को जानते हैं, है ना? अरे वाह, आपके तो बड़े अकड़ू दोस्त हैं। आखिर, वे तो बहुत ही सरल स्वभाव के हैं," उसने इस तरह बोलना जारी रखा मानो शायद यही इसका कारण हो। "वे बहुत अच्छी हैं, लेकिन इतनी सलीके से पली-बढ़ी हैं कि उन्हें कैसिनो के पास आने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन्हें हमसे डर लगता है—हमारा लहजा इतना खराब है। क्या वे आपको आकर्षित करती हैं? खैर, यह सब आपकी पसंद पर निर्भर करता है। वे सचमुच छोटी सफेद खरगोश जैसी

हैं। शायद इसमें कुछ बात हो। अगर छोटी सफेद खरगोशें ही आपको आकर्षित करती हैं, तो वे आपकी लंबे समय से चली आ रही इच्छा को पूरा कर सकती हैं। लगता है, उनमें कुछ आकर्षण तो है ही, क्योंकि उनमें से एक की सगाई मार्क्विस डी सेंट-लूप से हो चुकी है। यह छोटी वाली के लिए एक बड़ा झटका है, जो उस नौजवान के प्यार में पागल है। मुझे यकीन है, जिस तरह से वे आपसे होंठ बंद करके बात करती हैं, वही मेरे लिए काफी है। और फिर वे बड़े अजीब तरीके से कपड़े पहनती हैं। सोचिए, रेशमी फ्रॉक पहनकर गोल्फ खेलने जाना! अपनी उम्र में भी वे उन बड़ी महिलाओं से ज़्यादा दिखावटी कपड़े पहनती हैं जिन्हें कपड़ों की समझ होती है। मैडम एल्स्टिर को देखिए; अगर आप चाहें तो वह एक सलीके से कपड़े पहनने वाली महिला हैं।" मैंने जवाब दिया कि मुझे तो वह बेहद सादगी से सजी हुई लगीं। अल्बर्टीन हँसी। "मैं मानती हूँ कि वह सबसे साधारण कपड़े पहनती है, लेकिन उसका पहनावा बहुत ही शानदार है, और जिसे आप सादगी कहते हैं, उसे पाने के लिए उसे बहुत धन खर्च करना पड़ता है।" श्रीमती एल्स्टर के गाउन उन लोगों की नज़रों से ओझल हो जाते थे जिनका पहनावे के मामले में संयमित और अचूक स्वाद न हो। मुझमें इसकी कमी थी। एल्स्टर में यह गुण सर्वोच्च स्तर पर था, या कम से कम अल्बर्टीन ने मुझे यही बताया था। मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था, न ही इस बात का कि उनके स्टूडियो में बिखरी हुई सुंदर लेकिन बिल्कुल साधारण वस्तुएँ उनके लंबे समय से तरजे खजाने थे, जिन्हें उन्होंने एक नीलामीघर से दूसरे नीलामीघर तक खोजते हुए, उनका पूरा इतिहास जानते हुए, तब तक खोजा था जब तक कि उनके पास उन्हें खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं हो गया। लेकिन इस बारे में अल्बर्टीन, मेरी ही तरह अज्ञानी होने के कारण, मुझे कुछ नहीं बता सकीं। जबकि कपड़ों की बात हो, तो एक चंचल स्वभाव से प्रेरित होकर, और शायद

एक निर्धन लड़की की उस अफ़सोस भरी लालसा से, जो अन्य धनी लोगों में उन चीजों की सराहना अधिक निष्पक्षता और कोमलता से कर सकती है जिन्हें वह स्वयं कभी नहीं खरीद पाएगी, उसने एल्स्टिर के परिष्कृत स्वाद पर बड़ी खूबसूरती से अपनी राय व्यक्त की, जिसे संतुष्ट करना इतना कठिन था कि सभी महिलाएं उसे भद्दी लगती थीं। वहीं, सही अनुपात और रंगों के सूक्ष्म अंतरों को असीम महत्व देते हुए, वह अपनी पत्नी के लिए अत्यधिक कीमतों पर धूप से बचने के चश्मे, टोपियां और लबादे बनवाता था, जिन्हें उसने अल्बर्टीन से आकर्षक मानना सीखा था, और जिन्हें एक साधारण व्यक्ति मेरी तरह ही अनदेखा कर देता। इसके अलावा, अल्बर्टीन, जिसने थोड़ी-बहुत पेंटिंग की थी, हालांकि उसने स्वीकार किया कि उसमें कोई 'प्रतिभा' नहीं थी, एल्स्टिर के प्रति असीम प्रशंसा रखती थी, और उसके उपदेश और उदाहरण के कारण, चित्रों के प्रति उसकी समझ कैवलेरिया रस्टिकाना के प्रति उसके उत्साह से बिल्कुल विपरीत थी। सच तो यह था, हालाँकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं था, कि वह बेहद बुद्धिमान थी, और उसकी बातों में जो मूर्खता थी वह उसकी अपनी नहीं बल्कि उसके परिवेश और उम्र की उपज थी। एल्स्टर का प्रभाव अच्छा तो था, लेकिन आंशिक ही था। उसकी बुद्धि के सभी पहलू अभी एक समान स्तर पर विकसित नहीं हुए थे। चित्रों के प्रति रुचि कपड़ों और हर तरह की आधुनिकता के प्रति रुचि के लगभग बराबर पहुँच चुकी थी, लेकिन संगीत के प्रति रुचि अभी तक विकसित नहीं हुई थी, जो अभी भी बहुत पीछे थी।

अल्बर्टीन को एम्ब्रेसैक परिवार के बारे में सब कुछ पता होगा; लेकिन जैसा कि कहावत है, जो महान कार्य कर सकता है, वह छोटे कार्य करने में सक्षम होना जरूरी नहीं है। उन युवतियों को प्रणाम करने के बाद भी मैंने उसे अपने दोस्तों से मेरा परिचय कराने में कोई खास दिलचस्पी नहीं

दिखाई। "यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है कि आप उन्हें कोई महत्व नहीं देते। आपको उन पर ध्यान नहीं देना चाहिए; वे मायने नहीं रखतीं। भला आप जैसे आदमी के लिए उन जैसी बच्चियों का क्या महत्व है? अब एंड्री, मुझे कहना पड़ेगा, बहुत होशियार है। वह अच्छी लड़की है, हालांकि कभी-कभी वह बिल्कुल सनकी हो जाती है, लेकिन बाकी सब सचमुच बेहद मूर्ख हैं।" अल्बर्टीन से विदा लेने के बाद, मुझे अचानक इस बात का गहरा अफसोस हुआ कि सेंट-लूप ने मुझसे अपनी सगाई क्यों छिपाई और अपनी प्रेमिका से संबंध तोड़ने से पहले पत्नी चुनने जैसा अनुचित काम क्यों किया। फिर, कुछ ही समय बाद, मेरी मुलाकात एंड्री से हुई। जब वह मुझसे कुछ देर बात कर रही थी, तो मैंने मौका देखकर उससे कहा कि मैं उससे अगले दिन फिर मिलना चाहूंगा, लेकिन उसने कहा कि यह नामुमकिन है, क्योंकि उसकी माँ की तबीयत ठीक नहीं है और उसे उनके साथ रहना होगा। अगले दिन, जब मैं एल्स्टर के घर पर था, तो उसने मुझे बताया कि एंड्री मुझसे कितनी आकर्षित हुई थी। मेरे विरोध करने पर, "लेकिन मैं तो शुरू से ही उसकी ओर आकर्षित था; मैंने उसे कल फिर मिलने के लिए कहा था, लेकिन वह नहीं आ सकी।" "हाँ, मुझे पता है; उसने मुझे सब कुछ बताया था," उसने जवाब दिया, "उसे बहुत अफ़सोस था, लेकिन उसने यहाँ से कई मील दूर कहीं पिकनिक पर जाने का वादा किया था। उन्हें ब्रेक में गाड़ी से जाना था, और अब उसके लिए वादा तोड़ना बहुत देर हो चुकी थी।" हालाँकि यह झूठ (एंड्री का मुझे इतना कम जानना) कोई खास मायने नहीं रखता था, फिर भी मुझे ऐसे व्यक्ति की संगति नहीं रखनी चाहिए थी जो ऐसा झूठ बोल सकता था। लोग एक बार जो कर लेते हैं, उसे बार-बार करते रहते हैं, और अगर आप हर साल किसी ऐसे दोस्त से मिलने जाते हैं जो पहली बार तय जगह पर नहीं आ पाया था या सर्दी-जुकाम के कारण बिस्तर पर पड़ा था, तो आप उसे फिर

से सर्दी-जुकाम के कारण बिस्तर पर ही पाएंगे, और आप उसे किसी और मुलाकात में भी नहीं पाएंगे जहाँ वह एक ही अटल कारण से अनुपस्थित होगा, जबकि वह परिस्थितियों के आधार पर कई कारण बताता रहेगा। एक सुबह, एंड्री के मुझे यह बताने के कुछ ही समय बाद कि उसे अपनी माँ के पास रुकना पड़ेगा, मैं अल्बर्टीन के साथ थोड़ी देर टहल रहा था, जिसे मैंने समुद्र तट पर एक अजीब से आकार के औजार को रस्सी से उछालते और पकड़ते हुए पाया था, जिससे उसका चेहरा गियोटो की 'मूर्तिपूजा' जैसा लग रहा था; वैसे तो इसे 'डायबोलो' कहा जाता था, और अब यह इतना अप्रचलित हो गया है कि जब आने वाली पीढ़ियाँ किसी लड़की को इससे खेलते हुए देखेंगी, तो वे गंभीरता से इस बात पर चर्चा करेंगी, जैसे अखाड़े में किसी प्रतीकात्मक आकृति पर चर्चा करते हैं, कि लड़की ने क्या पकड़ रखा है। कुछ ही क्षण बाद उनकी वह सहेली, जो दरिद्र और कठोर दिखती थी, वही जिसने पहले दिन इतनी दुर्भावना से उपहास किया था: "मुझे उस बूढ़े आदमी पर तरस आता है," जब उसने देखा कि एंड्री के दौड़ते पैरों से बूढ़े आदमी का सिर छू गया है, तो वह अल्बर्टीन के पास आकर बोली, "सुप्रभात, क्या मैं आपको परेशान कर रही हूँ?" उसने आराम के लिए अपनी टोपी उतार दी थी, और उसके बाल, किसी विचित्र और आकर्षक पौधे की तरह, उसके माथे पर फैले हुए थे, अपनी पत्तियों की नाजुक बनावट को प्रदर्शित कर रहे थे। अल्बर्टीन, शायद दूसरे को बिना सिर ढके देखकर नाराज़ थी, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया, एकदम खामोशी बनाए रखी। इसके बावजूद वह लड़की हमारे साथ ही रही, अल्बर्टीन ने उसे मुझसे अलग रखा। कभी वह उसके साथ अकेले रहने का इंतज़ाम करती, तो कभी मेरे साथ चलने लगती और उसे पीछे छोड़ देती। मुझे परिचय पाने के लिए उस लड़की के सामने ही पूछना पड़ा। फिर, जब अल्बर्टीन मेरा नाम ले रही थी, तो उस लड़की के

चेहरे और नीली आँखों में, जिसका भाव मुझे तब बहुत क्रूर लगा था जब मैंने उसे यह कहते सुना था: "बेचारा बूढ़ा आदमी, मुझे उस पर बहुत दया आती है," मैंने एक सौहार्दपूर्ण, दोस्ताना मुस्कान देखी और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसके बाल सुनहरे थे, और सिर्फ़ बाल ही नहीं; अगर उसके गाल गुलाबी और आँखें नीली थीं, तो वह उस शांत गुलाबी सुबह के आकाश की तरह थी जो हर जगह सुनहरे बिंदुओं की तरह चमकता है।

उसकी लौ से तुरंत मोहित होकर, मैंने मन ही मन कहा कि यह एक ऐसी बच्ची है जो प्रेम में शर्मा जाती है, और मेरे लिए, मेरे प्रेम के कारण ही वह अल्बर्टीन के तिरस्कार के बावजूद हमारे साथ रही, और उसे अंततः मुझसे यह स्वीकार करने का अवसर पाकर प्रसन्नता हुई होगी कि वह दूसरों के प्रति जितनी कठोर है, मेरे प्रति उतनी ही दयालु होगी। निस्संदेह उसने मुझे समुद्र तट पर देखा होगा, जब मैं उसे बिल्कुल नहीं जानता था, और तब से मेरे बारे में सोच रही होगी; शायद मेरी प्रशंसा पाने के लिए ही उसने उस बूढ़े सज्जन का मज़ाक उड़ाया था, और मुझसे जान-पहचान न होने के कारण ही अगले दिनों वह इतनी उदास दिखाई दी। मैंने उसे अक्सर शाम को होटल से समुद्र तट पर अकेले टहलते देखा था। शायद मुझसे मिलने की उम्मीद में। अब, अल्बर्टीन की मौजूदगी से उतनी ही परेशान होकर जितनी कि पूरे समूह की मौजूदगी से, वह स्पष्ट रूप से हमसे जुड़ गई थी, अपनी सहेली के बढ़ते ठंडे रवैये का सामना करते हुए, केवल इस उम्मीद में कि वह उससे ज़्यादा देर तक रुक सकेगी, मेरे साथ अकेली रह सकेगी, और फिर मुझसे मिलने का समय तय कर सकेगी, जब वह अपने परिवार या दोस्तों को बिना बताए चुपके से निकल जाने का कोई बहाना ढूंढ लेगी, और चर्च जाने से पहले या गोल्फ़ के बाद किसी सुरक्षित जगह पर मुझसे मिलेगी। उसे देखना और भी मुश्किल था क्योंकि एंड्री का उससे झगड़ा हो गया था और अब वह उससे नफ़रत करती थी। "मैंने

उसकी भयानक बेईमानी को बहुत लंबे समय तक बर्दाश्त किया है," उसने मुझे समझाया, "उसकी नीचता; मैं आपको वे सभी घिनौनी गालियाँ नहीं बता सकती जो उसने मुझ पर बरसाई हैं। मैंने यह सब दूसरों की वजह से सहन किया है। लेकिन उसका यह नया प्रयास सचमुच हद से ज़्यादा था!" और उसने मुझे उस लड़की की किसी मूर्खतापूर्ण हरकत के बारे में बताया, जिसके एंड्री के लिए भी बुरे परिणाम हो सकते थे।

लेकिन गिज़ेल की विश्वास भरी निगाहों से कहे गए वे निजी शब्द, जो उस पल के लिए कहे जाने थे जब अल्बर्टीन को हमें अकेला छोड़ देना चाहिए था, कभी बोले ही नहीं जा सके, क्योंकि अल्बर्टीन, हठपूर्वक हमारे बीच खड़ी होकर, बढ़ती हुई रूखेपन से जवाब देती रही और अंत में अपनी सहेली की बातों का जवाब देना पूरी तरह बंद कर दिया। तब गिज़ेल ने आखिरकार कोशिश छोड़ दी और वापस मुड़ गई। मैंने अल्बर्टीन के इतने अप्रिय व्यवहार पर नाराज़गी जताई। "इससे उसे सबक मिलेगा कि वह अपने व्यवहार में ज़्यादा सावधान रहे। वह बुरी बच्ची नहीं है, लेकिन वह गधे का सिर भी खा जाती है। उसे हर बात में अपनी नाक घुसाने का कोई हक नहीं है। बिना पूछे वह हमसे क्यों चिपकी रहती है? एक मिनट और होता तो मैं उसे कह देती कि दफ़ा हो जाओ। इसके अलावा, मुझे उसके इस तरह के बाल बिल्कुल पसंद नहीं हैं; यह बहुत बुरा लगता है।" जब अल्बर्टीन बोल रही थी, मैं उसकी गालों को निहार रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि उनमें क्या खुशबू है, उनका स्वाद कैसा है: इस बार वे ठंडी नहीं थीं, बल्कि एक समान गुलाबी, बैंगनी रंगत वाली, मलाईदार चमक से दमक रही थीं, जैसे कुछ गुलाब जिनकी पंखुड़ियों पर मोम जैसी चमक होती है। मुझे उनके लिए वैसी ही तीव्र लालसा महसूस हुई जैसी कभी-कभी किसी खास फूल के लिए होती है। "मैंने ध्यान नहीं दिया," मैंने बस इतना ही कहा। "तुम उसे इतनी देर तक घूरते रहे; कोई भी

कहता कि तुम उसका चित्र बनाना चाहते हो," उसने मुझे डांटा, इस बात से जरा भी नरम नहीं पड़ी कि अब मैं उसे ही इतनी टकटकी से घूर रहा था। "मुझे नहीं लगता कि तुम्हें उसकी परवाह होगी। वह बिल्कुल भी नखरे वाली नहीं है। मुझे पता है कि तुम्हें नखरे करने वाली लड़कियाँ पसंद हैं। खैर, उसे हम पर मोहित होने और अपने काम पर लौटने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा; वह आज पेरिस जा रही है।" "क्या तुम्हारे बाकी दोस्त भी जा रहे हैं?" नहीं; सिर्फ़ वो और 'मिस', क्योंकि उसका एग्जाम आने वाला है; उसे घर पर रहकर पढ़ाई करनी पड़ेगी, बेचारी। उसे बिल्कुल भी मज़ा नहीं आ रहा, मैं आपको बता दूँ। हाँ, हो सकता है आपको कोई अच्छा विषय मिल जाए, कौन जानता है। लेकिन ये बहुत बड़ा रिस्क है। मेरी जान-पहचान की एक लड़की से पूछा गया: आपने जो दुर्घटना देखी हो, उसका वर्णन कीजिए। ये तो उसकी किस्मत थी। लेकिन मैं एक और लड़की को जानती हूँ जिसे ये सवाल मिला: बताइए आप किसे दोस्त बनाना पसंद करेंगी, अल्सेस्ट या फिलिंट? मुझे यकीन है कि मैं तो बिल्कुल ही डर जाती! इन सब बातों के अलावा, ये सवाल लड़कियों से नहीं पूछा जाना चाहिए। लड़कियाँ दूसरी लड़कियों के साथ ही घूमती हैं; उनसे उम्मीद नहीं की जाती कि वे किसी पुरुष को दोस्त बनाएँ। (इस घोषणा से, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि मुझे उस समूह में शामिल होने का बहुत कम मौका है, मेरा खून जम गया।) "लेकिन किसी भी मामले में, मान लीजिए कि यह प्रश्न लड़कों को दिया जाता, तो आप उनसे इस तरह के प्रश्न का उत्तर देने की क्या उम्मीद करते? कई अभिभावकों ने गॉलॉइस को पत्र लिखकर कठिन प्रश्नों की शिकायत की। मज़ाक की बात यह है कि पुरस्कार विजेता निबंधों के संग्रह में उन्होंने दो ऐसे निबंध दिए जिनमें प्रश्न का उत्तर बिल्कुल विपरीत तरीके से दिया गया था। देखिए, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आपको कौन

सा परीक्षक मिलता है। एक चाहेगा कि आप कहें कि फिलिंट एक चापलूस और बदमाश था, दूसरा कि आप एल्सेस्टे की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते, लेकिन वह बहुत झगड़ालू था, और एक मित्र के रूप में आपको फिलिंट को चुनना चाहिए। आप इतने सारे दुर्भाग्यशाली उम्मीदवारों से यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि उन्हें पता होगा कि क्या कहना है जब स्वयं प्रोफेसर ही अपना मन नहीं बना पा रहे हैं। लेकिन यह कुछ भी नहीं है। प्रश्न हर साल और कठिन होते जा रहे हैं। अगर गिज़ेल को परीक्षा पास करनी है तो उसे अपनी पूरी बुद्धि का इस्तेमाल करना होगा।" मैं होटल लौट आया। मेरी दादी वहाँ नहीं थीं। मैंने कुछ देर उनका इंतज़ार किया; जब आखिरकार वो आईं, तो मैंने उनसे विनती की कि मुझे, बिल्कुल अप्रत्याशित परिस्थितियों में, एक ऐसी यात्रा पर जाने की अनुमति दें जिससे मैं कुछ दिनों के लिए उनसे दूर रह सकूँ। मैंने उनके साथ दोपहर का भोजन किया, एक घोड़ागाड़ी मंगवाई और स्टेशन के लिए निकल पड़ा। गिज़ेल मुझे वहाँ देखकर ज़रा भी आश्चर्य नहीं जताएगी। डोनसिएरेस स्टेशन पर पेरिस की ट्रेन बदलने के बाद, एक गलियारा होगा, जिसके सहारे, जब गवर्नेंस सो रही होगी, मैं गिज़ेल को अंधेरे कोनों में ले जा सकूँगा और पेरिस लौटने पर उनसे मिलने का समय तय कर लूँगा, जिसे मैं जल्द से जल्द तय करने की कोशिश करूँगा। मैं उनके साथ केन या एवरेक्स तक जाऊँगा, जो भी वो चाहें, और फिर अगली ट्रेन से बालबेक वापस आ जाऊँगा। फिर भी, अगर उसे पता होता कि मैं उसके और उसकी सहेलियों के बीच लंबे समय तक दुविधा में था, कि उसके साथ-साथ ही साथ अल्बर्टीन, उस चमकीली आँखों वाली लड़की, रोज़मोंडे के प्यार में पड़ने के बारे में सोच रहा था, तो वह मेरे बारे में क्या सोचती? अब मुझे पछतावा हो रहा था कि आपसी स्नेह का बंधन मुझे गिज़ेल से जोड़ने वाला था। इसके अलावा, मैं उसे सच-सच बता

सकता था कि अल्बर्टीन में अब मेरी कोई दिलचस्पी नहीं रही। मैंने उसे उस सुबह देखा था जब वह गिज़ेल से बात करने के लिए एक तरफ मुड़ी, लगभग मेरी तरफ पीठ करके। उसके सिर पर, जो उदास भाव से उसकी छाती पर झुका हुआ था, पीछे के बाल, बाकी बालों से अलग और ज़्यादा गहरे, ऐसे चमक रहे थे मानो वह अभी-अभी नहाकर आई हो। "तूफ़ान में मरती हुई बत्तख की तरह!" मैंने मन ही मन सोचा, उसके बालों को देखकर अल्बर्टीन के शरीर में एक ऐसी आत्मा झलक रही थी जो अब तक उसके दमकते चेहरे और रहस्यमयी निगाहों से झलक रही आत्मा से बिल्कुल अलग थी। उसके सिर के पिछले हिस्से पर बालों का वो चमकीला झरना ही कुछ पलों के लिए उसकी एकमात्र झलक थी, और याद आने पर भी वही झलक मुझे दिखाई देती रही। हमारी याददाश्त एक दुकान की तरह होती है, जिसकी खिड़की में कभी एक, कभी दूसरी तस्वीर लगी होती है। और आमतौर पर सबसे नई तस्वीर ही कुछ समय तक दिखाई देती रहती है। जब कोचवान अपने घोड़े को चाबुक मार रहा था, मैं वहीं बैठा गिज़ेल के कृतज्ञता और स्नेह भरे शब्दों को सुन रहा था, जो वह मेरे कान में फुसफुसा रही थी। ये सभी शब्द उसकी दोस्ताना मुस्कान और बढ़े हुए हाथ से निकले थे। दरअसल, मेरे जीवन के उन दौरों में, जब मैं वास्तव में प्यार में नहीं था, बल्कि प्यार में पड़ने की इच्छा रखता था, मेरे मन में न केवल एक आदर्श सौंदर्य की छवि थी, जिसे मैं हर गुजरते अजनबी में एक नज़र में पहचान लेता था, जो मुझसे इतनी दूरी पर रहती थी कि उसके भ्रमित चेहरे को पहचानना असंभव था। साथ ही, मेरे मन में उस स्त्री का नैतिक भ्रम भी था, जो 'मुझसे प्यार करने वाली थी, उस प्रेम प्रसंग में अपनी भूमिका निभाने वाली थी, जिसे मैंने अपने बचपन से ही अपने मन में रचा था, और जिसमें हर सुंदर लड़की मुझे समान रूप से भाग लेने की इच्छुक लगती थी, बशर्ते कि उसमें आवश्यक

शारीरिक योग्यताएं भी हों।' इस नाटक में, चाहे मैंने मुख्य भूमिका को निभाने या पुनर्जीवित करने के लिए जिस भी नए सितारे को आमंत्रित किया हो, कथानक, घटनाएँ और संवाद स्वयं एक अपरिवर्तनीय रूप में संरक्षित रहे।

अगले कुछ दिनों के भीतर, अल्बर्टीन की उन लड़कियों से परिचय कराने में दिखाई गई अनिच्छा के बावजूद, मैं उस पहली दोपहर के छोटे समूह की सभी लड़कियों को जान गया था (सिवाय गिज़ेल के, जिनसे स्टेशन के लेवल क्रॉसिंग पर लंबे समय तक देरी और समय सारिणी में बदलाव के कारण ट्रेन में मेरी मुलाकात नहीं हो पाई थी, क्योंकि ट्रेन मेरे आने से कुछ मिनट पहले ही जा चुकी थी, और संयोगवश मैंने उनके बारे में फिर कभी सोचा भी नहीं), और दो-तीन अन्य लड़कियों से भी, जिनसे उन्होंने मेरे अनुरोध पर मेरा परिचय कराया। इस प्रकार, एक नई लड़की से मिलने की मेरी उम्मीद, जो मुझे किसी दूसरी लड़की के माध्यम से मिली थी, उन गुलाबों की नई किस्मों की तरह थी जिन्हें माली पहले एक अलग तरह के गुलाब का उपयोग करके प्राप्त करते हैं। और जैसे-जैसे मैं फूलों की इस श्रृंखला में एक फूल से दूसरे फूल की ओर बढ़ता गया, एक अलग लड़की को जानने का सुख मुझे उस लड़की के पास वापस ले जाता, जिसका मैं ऋणी था, एक ऐसी कृतज्ञता के साथ जिसमें इच्छा और मेरी नई उम्मीद दोनों पूरी तरह से मिश्रित थीं। जल्द ही मैं अपना सारा समय इन लड़कियों के बीच बिताने लगा।

अफसोस! ताज़े फूल में भी वे सूक्ष्म संकेत देखे जा सकते हैं जो ज्ञानवान मन को यह संकेत देते हैं कि आज खिले हुए फूल के सूखने या फलने-फूलने से पतझड़ के बीज का अंतिम, अपरिवर्तनीय और पूर्वनिर्धारित रूप क्या होगा। आँख मंत्रमुग्ध होकर नाक का पीछा करती है, मानो कोई छोटी लहर सुबह-सुबह पानी को अपने घेरे में ले रही हो और मानो हिल ही

न रही हो, मानो उसे पेंसिल से चित्रित किया जा सके, क्योंकि उस समय समुद्र इतना शांत होता है कि उसकी लहरों का पता ही नहीं चलता। मनुष्य के चेहरे हमें देखते समय बदलते हुए प्रतीत नहीं होते, क्योंकि उनमें होने वाली परिवर्तन की गति इतनी धीमी होती है कि हम उसे देख नहीं पाते। लेकिन उन लड़कियों में से किसी के भी साथ, उसकी माँ या उसकी चाची के पास खड़े होकर ही हम यह महसूस कर सकते हैं कि एक ऐसे प्रकार के गुरुत्वाकर्षण का पालन करते हुए, जो आम तौर पर दयनीय होता है, उसके चेहरे की बनावट तीस साल से भी कम समय में कितनी दूरी तय कर चुकी होगी, और सूर्यास्त के समय तक यह दूरी तय करती रहेगी, जब तक कि उसका चेहरा क्षितिज के नीचे पूरी तरह से गायब न हो जाए और प्रकाश में दिखना बंद न हो जाए। मैं जानता था कि, यहूदी देशभक्ति या ईसाई पूर्वजवाद जितना गहरा और अपरिहार्य है, उतना ही उन लोगों में भी, जो स्वयं को अपनी जाति में सबसे अधिक मुक्त मानते हैं, अल्बर्टीन, रोज़मोंडे, एंड्री के गुलाबी पुष्पगुच्छ के नीचे, स्वयं से अनभिज्ञ, परिस्थितियों के उत्पन्न होने तक आरक्षित, एक खुरदरी नाक, एक उभरा हुआ जबड़ा, एक ऐसा बस्ट छिपा हुआ था जो प्रकट होने पर सनसनी पैदा करेगा, लेकिन वास्तव में पर्दे के पीछे, "सामने आने" के लिए तैयार था, ठीक वैसे ही जैसे ड्रेफसवाद या पादरीवाद का विस्फोट हो सकता है, अचानक, अप्रत्याशित, घातक, कुछ देशभक्तिपूर्ण, कुछ सामंती प्रकार की वीरता अचानक तब उभरती है जब परिस्थितियाँ इसकी मांग करती हैं, मनुष्य की स्वयं की प्रकृति से पूर्व की प्रकृति से, जिसके माध्यम से वह सोचता है, जीता है, विकसित होता है, स्वयं शक्ति प्राप्त करता है या मर जाता है, बिना कभी उस प्रकृति को उन क्रमिक चरणों से अलग करने में सक्षम हुए जिन्हें वह बारी-बारी से अपनाता है। मानसिक रूप से भी, हम जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक प्राकृतिक नियमों पर

निर्भर रहते हैं, और हमारा मन किसी गुप्त पौधे की तरह, उन सभी छोटी-छोटी विशेषताओं को पहले से ही धारण कर लेता है जिन्हें हम स्वयं चुन रहे होते हैं। क्योंकि हम केवल व्युत्पन्न विचारों को ही देख पाते हैं, उनके मूल कारण (यहूदी रक्त, फ्रांसीसी जन्म या जो भी हो) को नहीं पहचान पाते, जो अनिवार्य रूप से उन्हें उत्पन्न करता है और जिसे हम किसी विशेष क्षण में प्रकट करते हैं। और शायद, जहाँ पहले वाले विचार हमें जानबूझकर किए गए चिंतन का परिणाम प्रतीत होते हैं, वहीं दूसरे वाले अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही का परिणाम, हम अपने परिवार से, जैसे पैपिलियोनेसी पौधे अपने बीज का रूप धारण करते हैं, वैसे ही वे विचार भी ग्रहण करते हैं जिनसे हम जीते हैं और वे रोग भी जिनसे हमारी मृत्यु होगी।

जैसे किसी पौधे पर अलग-अलग मौसमों में फूल खिलते हैं, वैसे ही मैंने बालबेक के इस तट पर बूढ़ी महिलाओं के रूप में मुरझाए हुए बीज-कोष, ढीले कंद देखे थे, जो एक दिन मेरी सहेलियाँ बनेंगी। लेकिन क्या फर्क पड़ता है? फिलहाल तो उनका फूल खिलने का समय था। इसलिए जब श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा, तो मैंने जाने से बचने का बहाना ढूँढा। मैं अपनी नई सहेलियों के बिना कभी एल्स्टिर नहीं जाती थी। मैं सेंट-लूप से किए वादे के मुताबिक डोनसिएरेस जाने के लिए एक दोपहर का समय भी नहीं निकाल पाती थी। सामाजिक कार्यक्रम, गंभीर चर्चाएँ, यहाँ तक कि एक दोस्ताना बातचीत भी, अगर इन लड़कियों के साथ मेरी सैर की जगह ले लेती, तो मुझ पर वही असर होता, जैसे दोपहर के भोजन की घंटी बजने पर मुझे खाने से सजी मेज पर नहीं, बल्कि किसी एल्बम के पन्ने पलटने के लिए ले जाया गया हो। जिन पुरुषों, युवकों, स्त्रियों, वृद्धों या परिपक्व व्यक्तियों के साथ रहने का हम आनंद लेने की कल्पना करते हैं, वे हमें केवल एक अवास्तविक सतही

रूप में ही दिखाई देते हैं, क्योंकि हम उन्हें केवल सीमित दृष्टि से ही जान पाते हैं; जबकि हमारी अन्य इंद्रियों के प्रतिनिधि के रूप में हमारी आँखें युवतियों की ओर तड़पती हैं; इंद्रियाँ एक के बाद एक उनका अनुसरण करती हैं, उन विभिन्न आकर्षणों की खोज में, सुगंधित, स्पर्शनीय, स्वादिष्ट, जिनका आनंद वे उंगलियों और होठों की सहायता के बिना भी उठाती हैं; और स्थानांतरण की कला, संश्लेषण की प्रतिभा, जिसमें इच्छा श्रेष्ठ होती है, के कारण वे गालों या छाती के रंग के नीचे उस अनुभूति, स्वाद, संपर्क को पुनःस्थापित करने में सक्षम होती हैं जो उनके लिए वर्जित है, और इन युवतियों को वही मधुरता प्रदान करती हैं जो वे गुलाब के बगीचे की मिठाइयों को निहारते समय या किसी लता के सामने खड़ी होकर, जिसके गुच्छों को केवल उनकी आँखें ही निहारती हैं, उत्पन्न करती हैं।

अगर बारिश होती, तो भले ही मौसम अल्बर्टीन को डरा नहीं पाता था, जो अक्सर बारिश में भी अपनी वाटरप्रूफ जैकेट पहने साइकिल चलाती नज़र आती थी, हम पूरा दिन कैसिनो में बिताते, जहाँ ऐसे दिनों में जाना मेरे लिए नामुमकिन सा लगता था। मुझे उन नौजवान एम्ब्रेसैक भाइयों से बहुत नफ़रत थी, जिन्होंने कभी कैसिनो में कदम नहीं रखा था। और मैं अपने दोस्तों के साथ डांस मास्टर पर शरारतें करने में खुशी-खुशी शामिल हो जाता था। आम तौर पर हमें प्रबंधक या उसके कुछ कर्मचारियों की नसीहतें सुननी पड़ती थीं, जो तानाशाही शक्तियां हथिया चुके थे, क्योंकि मेरे दोस्त, यहाँ तक कि खुद एंड्री भी, जिसे मैंने पहली बार देखकर एक चंचल और आनंदमय प्राणी समझा था, जबकि वास्तविकता में वह नाज़ुक, बुद्धिमान और इस साल बिल्कुल भी स्वस्थ नहीं थी, इसके बावजूद उसके कार्यों पर उसकी सेहत की स्थिति से ज़्यादा उस उम्र के जोश का असर था जो हर दूसरी बात पर हावी हो जाता है और कमज़ोरों

को ताकतवरों के साथ एक सामान्य उल्लास में मिला देता है, कमरों के बाहरी हॉल में प्रवेश किए बिना दौड़ना शुरू नहीं कर सकते थे, सभी कुर्सियों पर से कूदते हुए, फर्श पर पीछे की ओर फिसलते हुए, अपने फैले हुए हाथों के सुंदर संतुलन से अपना संतुलन बनाए रखते हुए, गाते हुए, सभी कलाओं को मिलाते हुए, जवानी के उस पहले जोश में, प्राचीन काल के उन कवियों की तरह जिनके लिए विभिन्न 'प्रकार' अभी अलग नहीं थे, ताकि वे एक महाकाव्य कविता में कृषि के नियमों को धार्मिक सिद्धांतों के साथ प्रस्तुत कर सकें।

एंड्री, जिसने मुझे पहली बार देखने पर उन सबमें सबसे ठंडी लगी थी, अल्बर्टीन से कहीं अधिक परिष्कृत, स्नेही और संवेदनशील थी। वह अल्बर्टीन के प्रति बड़ी बहन जैसा कोमल और प्यार भरा व्यवहार दिखाती थी। कैसिनो में वह मेरे पास आकर बैठ जाती थी और अल्बर्टीन के विपरीत, सहज रूप से जानती थी कि मेरे नाचने के निमंत्रण को अस्वीकार कर देना है, या अगर मैं थकी हुई होती, तो कैसिनो छोड़कर होटल में मेरे पास आ जाना है। वह मेरे और अल्बर्टीन के प्रति अपनी मित्रता को ऐसे शब्दों में व्यक्त करती थी जो हृदय की भावनाओं की उसकी गहरी समझ का प्रमाण थे, जिसका कुछ श्रेय शायद उसके स्वास्थ्य को भी जाता था। अल्बर्टीन के बचकाने व्यवहार पर उसके चेहरे पर हमेशा एक मुस्कुराती हुई क्षमा का भाव रहता था, जो पार्टियों और पिकनिक के अनूठे प्रलोभन को बड़े ही उग्र ढंग से व्यक्त करती थी, जिनमें एंड्री की तरह मेरे साथ रुककर बातें करने की समझदारी नहीं थी। जब गोल्फ क्लब में दोपहर के भोजन के लिए जाने का समय आया, अगर हम तीनों साथ होते तो वह हमें छोड़कर जाने की तैयारी करती, फिर एंड्री के पास आकर बोली: "अच्छा, एंड्री, अब किस बात का इंतज़ार कर रही हो? तुम्हें पता है हम गोल्फ क्लब में दोपहर का भोजन कर रहे हैं।"

"नहीं; मैं यहीं रुककर उनसे बात करूंगी," एंड्री ने मेरी ओर इशारा करते हुए जवाब दिया। "लेकिन तुम्हें पता है, श्रीमती ड्यूरिएक्स ने तुम्हें आमंत्रित किया है," अल्बर्टीन चिल्लाई, मानो एंड्री का मेरे साथ रुकने का इरादा केवल उसकी अज्ञानता से ही समझाया जा सकता था कि उसे और कहाँ और किसने बुलाया था। "देखो, मेरी प्यारी बच्ची, इतनी बेवकूफ मत बनो," एंड्री ने उसे डांटा। अल्बर्टीन ने ज़िद नहीं की, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसे भी मेरे साथ रुकने के लिए न कहा जाए। उसने अपना सिर हिला दिया। “जैसा आपको पसंद हो,” उसने जवाब दिया, उसी लहजे में जैसे किसी बीमार व्यक्ति से कहा जाता है जिसकी आत्म-भोग की आदत उसे धीरे-धीरे मार रही हो, “मुझे जाना होगा; मुझे यकीन है आपकी घड़ी धीमी चल रही है,” और वह चली गई। “वह प्यारी लड़की है, लेकिन बिल्कुल असंभव है,” एंड्री ने अपनी सहेली को एक ऐसी मुस्कान से नहलाते हुए कहा जो एक साथ स्नेहपूर्ण और आलोचनात्मक थी। अगर मनोरंजन के इस जुनून में अल्बर्टीन को पुरानी मूल गिलबर्ट की झलक मिलती है, तो इसका कारण यह है कि हम जिन सभी महिलाओं से प्यार करते हैं, उनमें एक निश्चित समानता मौजूद है, हालांकि उनका प्रकार बदलता रहता है। यह समानता हमारे अपने स्वभाव की स्थिरता के कारण है, जो उन्हें चुनता है, उन सभी को खारिज कर देता है जो एक ही समय में हमारी विपरीत और हमारी पूरक नहीं होतीं, यानी हमारी इंद्रियों को संतुष्ट करने और हमारे दिल को निचोड़ने के लिए उपयुक्त नहीं होतीं। ये महिलाएं हमारे स्वभाव की उपज हैं, एक विपरीत रूप से प्रक्षेपित छवि, हमारी संवेदनशीलता का नकारात्मक रूप। इसलिए, एक उपन्यासकार अपने नायक के जीवन का वर्णन करते हुए, उसके लगातार प्रेम प्रसंगों को लगभग एक समान शब्दों में वर्णित कर सकता है, और इस प्रकार यह आभास दे सकता है कि वह स्वयं को दोहराने के बजाय सृजन कर रहा है,

क्योंकि कृत्रिम नवीनता कभी भी उस पुनरावृत्ति जितनी प्रभावी नहीं होती जो एक नए सत्य का संकेत देती है। इसके अलावा, उसे प्रेमी के चरित्र में उस परिवर्तनशीलता को दर्शाना चाहिए जो कहानी के नए क्षेत्रों, जीवन के विभिन्न पहलुओं में आगे बढ़ने के साथ स्पष्ट होती जाती है। और शायद वह एक और सत्य को व्यक्त कर रहा होगा यदि वह अपनी कहानी के अन्य सभी पात्रों को विशिष्ट चरित्र प्रदान करते हुए प्रेमिका को कोई चरित्र न दे। हम उन लोगों के चरित्र को समझते हैं जिनमें हमारी कोई रुचि नहीं होती; हम उस व्यक्ति के चरित्र को कैसे समझ सकते हैं जो हमारे अस्तित्व का एक अभिन्न अंग है, जिसे हम कुछ समय बाद स्वयं से किसी भी प्रकार से अलग नहीं कर पाते, जिसके उद्देश्य हमें चिंताजनक परिकल्पनाओं का एक अटूट भंडार प्रदान करते हैं जिन्हें हम निरंतर पुनर्निर्मित करते रहते हैं। हमारी समझ से परे कहीं से उत्पन्न होकर, जिस स्त्री से हम प्रेम करते हैं, उसके प्रति हमारी जिज्ञासा उस स्त्री के चरित्र की सीमाओं को पार कर जाती है, जिसे हम चाहें तो चाहें तो जांच-परख कर देख सकते हैं, लेकिन शायद ऐसा करना संभव नहीं होगा। हमारी इस बेचैन खोज का विषय चरित्र के उन सूक्ष्म विवरणों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, जो त्वचा के उन छोटे-छोटे कणों के समान हैं, जिनके विविध संयोजन मानव शरीर की जीवंत मौलिकता का निर्माण करते हैं। हमारी सहज दृष्टि उन सूक्ष्म विवरणों को भेदती है, और जो चित्र वह हमारे लिए खींचती है, वे किसी एक चेहरे के चित्र होने के बजाय, एक कंकाल की आनंदहीन सार्वभौमिकता को दर्शाते हैं।

एंड्री स्वयं अत्यंत धनी थी जबकि दूसरी लड़की निर्धन और अनाथ थी, फिर भी उसने बड़ी उदारता से अल्बर्टीन पर अपनी सारी संपत्ति लुटा दी। गिज़ेल के प्रति उसके भाव वैसे नहीं थे जैसा मैंने सोचा था। जल्द ही हमें उस युवा छात्रा के बारे में खबर मिली, और जब अल्बर्टीन ने उसे मिला

पत्र सबको दिया, जो गिज़ेल ने अपनी यात्रा का विवरण देने और छोटे समूह को अपने सुरक्षित पहुँचने की सूचना देने के लिए लिखा था, और बाकी लोगों को अभी तक पत्र न लिखने का बहाना आलस्य से बनाया था, तो मुझे एंड्री की यह बात सुनकर आश्चर्य हुआ (क्योंकि मैंने उनके बीच एक ऐसा मतभेद मान लिया था जिसे सुधारा नहीं जा सकता था): "मैं उसे कल लिखूँगी, क्योंकि अगर मैं उसके पत्र का इंतज़ार करती रही तो मुझे सालों इंतज़ार करना पड़ सकता है, वह बहुत आलसी है।" और मेरी ओर मुड़कर उसने कहा: "ज़ाहिर है, तुमने उसमें कुछ खास नहीं देखा; लेकिन वह बहुत अच्छी लड़की है, और वैसे भी मैं उसे बहुत पसंद करती हूँ।" जिससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि एंड्री के झगड़े बहुत लंबे समय तक नहीं चलते थे।

बरसात के दिनों को छोड़कर, जैसा कि हमने हमेशा तय किया था कि हम अपनी साइकिलों पर चट्टानों के किनारे या अंदरूनी इलाकों में सैर के लिए जाएंगे, निकलने से लगभग एक घंटा पहले मैं ऊपर जाकर तैयार होता और अगर फ्रांस्वा ने मेरी मनचाही सारी चीज़ें नहीं रखी होतीं तो शिकायत करता। अब पेरिस में भी वह गर्व से, गुस्से से अपनी कमर सीधी कर लेती, जो उम्र के साथ झुकने लगी थी, जैसे ही कोई डांटता, वह इतनी विनम्र, इतनी शालीन और आकर्षक हो जाती जब उसके आत्मसम्मान की तारीफ होती। क्योंकि यही उसके जीवन का आधार था: उसकी संतुष्टि, उसका अच्छा स्वभाव, उस पर सौंपे गए कार्यों की कठिनाई के सीधे अनुपात में था। बालबेक में उसे जो कार्य करने थे, वे इतने आसान थे कि वह लगभग हर समय असंतोष दिखाती रहती थी, जो अचानक सौ गुना बढ़ जाता था, और साथ ही साथ अपमानित गरिमा का व्यंग्यात्मक भाव भी आ जाता था जब मैं अपने दोस्तों के पास जाते समय शिकायत करता था कि मेरी टोपी पर ब्रश नहीं किया गया है या मेरी टाई ठीक से नहीं

लगी है। वह जो बिना किसी दिखावे के इतनी मेहनत करने में सक्षम थी, मेरे सिर्फ यह कहने पर कि एक कोट अपनी जगह पर नहीं है, उसने न केवल इस बात पर गर्व जताया कि उसने इसे "धूल जमा होने के लिए छोड़ने से पहले ही निपटा दिया", बल्कि अपनी मेहनत की औपचारिक सराहना करते हुए यह भी कहा कि बालबेक में उसे जो छुट्टी मिल रही है वह नाममात्र की है, और पूरी दुनिया में कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जो इस तरह के व्यवहार को सहन करने को तैयार हो। "मुझे समझ नहीं आता कि कोई चीजों को इस तरह कैसे छोड़ सकता है; आप किसी और से इस तरह की गड़बड़ी में अपनी मनचाही चीज ढूंढने की कोशिश कीजिए। शैतान भी इसे एक बुरा काम समझकर छोड़ देगा।" या फिर वह एक शाही अंदाज़ अपना लेती, अपनी तीखी निगाहों से मुझे झुलसा देती, और चुप्पी साधे रहती, जो दरवाज़ा बंद करके बाहर गलियारे में जाते ही टूट जाती। फिर वह गलियारा उन बातों से गूंज उठता जिन्हें मैं अपमानजनक समझता था, हालांकि वे उतनी ही अस्पष्ट होती थीं जितनी किसी नाटक के पात्रों की, जिनके शुरुआती संवाद मंच पर आने से पहले पर्दे के पीछे बोले जाते हैं। और अगर सब कुछ ठीक भी होता और फ्रांस्वा का मूड अच्छा होता, तब भी जब मैं अपने दोस्तों के साथ बाहर जाने की तैयारी कर रहा होता, तो वह खुद को बिल्कुल असहनीय बना लेती। क्योंकि, लड़कियों के बारे में बात करने की मेरी ज़िद में, मैंने उनके ऊपर जो घिसे-पिटे चुटकुले सुनाए थे, उनका इस्तेमाल करते हुए, वह ऐसा दिखावा करती जैसे मुझे कुछ ऐसी बातें बताने वाली हो जो मुझे उससे कहीं ज़्यादा पता होतीं अगर उसकी बातों में कोई सच्चाई होती, जो कि कभी नहीं थी, क्योंकि फ्रांस्वा ने सुनी हुई बात को गलत समझा था। ज़्यादातर लोगों की तरह, उसके भी अपने तरीके थे; एक व्यक्ति कभी सीधी सड़क की तरह नहीं होता, बल्कि जीवन के अपने विचित्र,

अपरिहार्य मोड़ों से हमें आश्चर्यचकित कर देता है, जिन्हें कुछ लोग शायद न भी समझें, लेकिन हमें उनके कारण होने वाली रुकावटें और बाधाएँ लगातार परेशान करती रहती हैं। जब भी मैं "मेरी टोपी कहाँ है?" वाली स्थिति में पहुँचता या एंड्री या अल्बर्टीन का नाम लेता, तो फ्रांस्वा मुझे अंतहीन और बेतुके रास्तों पर भटका देती, जिससे मेरी प्रगति में बहुत देरी हो जाती। ऐसा ही तब हुआ जब मैंने उससे पनीर या सलाद के सैंडविच काटने को कहा, या उसे केक लाने को भेजा जो मुझे चट्टानों पर आराम करते समय लड़कियों के साथ बाँटकर खाने थे, और जिन्हें लड़कियाँ "अगर इतनी पास न होतीं तो शायद बारी-बारी से ला सकती थीं," फ्रांस्वा ने कहा, जिसकी मदद के लिए ऐसे क्षणों में आदिम ग्रामीण लालच और अशिष्टता की पूरी विरासत सामने आ जाती थी, और जिसके बारे में कोई कह सकता था कि उसकी दिवंगत शत्रु यूलाली की आत्मा टुकड़ों में टूटकर मेरे छोटे से समूह की सहेलियों के आकर्षक शरीरों में पुनर्जन्म ले चुकी थी, सेंट-एलोई में पहले से कहीं अधिक आकर्षक रूप में। मैंने इन आरोपों को एक सुस्त क्रोध के साथ सुना क्योंकि मैं खुद को उन जगहों में से एक पर रुका हुआ पा रहा था जहाँ से फ्रांस्वा के चरित्र का जाना-पहचाना ग्रामीण मार्ग आगे नहीं बढ़ पाता था, हालाँकि सौभाग्य से यह ज़्यादा देर तक नहीं चलता था। फिर, अपनी टोपी या कोट ढूंढकर और सैंडविच तैयार करके, मैं अल्बर्टीन, एंड्री, रोजमोंडे और वहां मौजूद अन्य लोगों को खोजने के लिए निकल पड़ा, और फिर हम पैदल या अपनी साइकिलों पर सवार होकर निकल पड़ते।

पुराने दिनों में, मैं खराब मौसम में सैर करना पसंद करता। क्योंकि तब मैं बालबेक में 'सिमेरियन्स की भूमि' की तलाश करता था, और सुहावने दिन वहाँ कभी होते ही नहीं थे, मानो समुद्र तट पर छुट्टियाँ मनाने वालों की भीड़ का उस प्राचीन क्षेत्र में अतिक्रमण हो, जो हमेशा कोहरे में डूबा रहता

था। लेकिन अब, जो कुछ भी मैंने अब तक तुच्छ समझा था, वह मेरी दृष्टि से ओझल हो गया था - न केवल समुद्र और तट पर सूर्य के प्रकाश का प्रभाव, बल्कि नौका दौड़ और रेस-मीटिंग भी। अब मैं उन सभी चीजों को देखने के लिए उत्सुक था, जिनके लिए पहले मैं केवल तूफानी समुद्रों को ही चाहता था, क्योंकि अब वे भी मेरे मन में, बाकी चीजों की तरह, एक सौंदर्यबोध से जुड़े हुए थे। क्योंकि मैं अपने नए दोस्तों के साथ कई बार एल्स्टिर से मिलने गया था, और जिन दिनों लड़कियाँ वहाँ होती थीं, वह हमें याटिंग ड्रेस में सुंदर महिलाओं के चित्र या बालबेक के पास किसी रेस-कोर्स पर बनाया गया कोई रेखाचित्र दिखाता था। मैंने पहले तो एल्स्टिर से झिझकते हुए स्वीकार किया था कि मुझे वहां आयोजित होने वाली बैठकों में जाने की इच्छा नहीं थी। "तुम गलत थे," उसने मुझसे कहा, "यह कितना सुंदर नज़ारा है, और देखने लायक है। एक तो वह अनोखा जानवर, जॉकी, जिस पर इतनी उत्सुक निगाहें टिकी होती हैं, जो पैडॉक में इतना गंभीर दिखता है, उसकी चमकदार जैकेट और टोपी के बीच उसका चेहरा रंगहीन लगता है, मानो वह अपने उछलते घोड़े के साथ तन-मन से एक हो गया हो। उसके पेशेवर हाव-भाव का विश्लेषण करना कितना दिलचस्प है, उसके द्वारा बनाया गया चमकीला रंग, जिसमें घोड़े का रंग घुलमिल जाता है, जब वे दौड़ते हैं। उस जगमगाते रेसकोर्स की विशालता में हर दृश्य वस्तु का क्या अद्भुत रूपांतरण होता है, जहाँ कोई लगातार नए प्रकाश और छायाओं से आश्चर्यचकित होता है जो केवल वहीं देखने को मिलते हैं। वहाँ की महिलाएं भी कितनी आकर्षक लग सकती हैं! पहले दिन की दौड़ बहुत आनंददायक थी, और वहाँ डच परिदृश्य की धुंधली रोशनी में, बेहद खूबसूरत पोशाक पहने महिलाएं थीं, जिसमें पानी की चुभती ठंडक सूरज को भी ढक लेती थी। मैंने कभी महिलाओं को गाड़ियों में आते हुए या इतनी असाधारण रोशनी में चश्मा लगाए खड़े हुए

नहीं देखा, जो शायद नमी के कारण थी। समुद्र से। मुझे इसे चित्रित करना बेहद पसंद होता। मैं रेस से बिल्कुल पागल होकर घर लौटा, और काम शुरू करने के लिए बहुत उत्सुक था! "इसके बाद वह नौका दौड़ को लेकर और भी उत्साहित हो गया, और मुझे एहसास हुआ कि रेगाटा, सामाजिक आयोजन जहां सुसज्द्ध महिलाओं को समुद्री रेस-कोर्स की हरी रोशनी में नहाया हुआ देखा जा सकता है, एक आधुनिक कलाकार के लिए उतना ही दिलचस्प विषय हो सकता है जितना कि वेरोनीज़ या कार्पैसिओ के लिए वे उत्सव जिन्हें वे चित्रित करना पसंद करते थे। जब मैंने यह बात एल्स्टिर को बताई, तो उन्होंने जवाब दिया, "आपकी तुलना और भी सटीक है, क्योंकि जिस शहर में ये चित्र बने थे, उसकी स्थिति को देखते हुए, वे उत्सव काफी हद तक जलमग्न थे। बस फर्क इतना था कि उन दिनों जहाजों की सुंदरता आमतौर पर उनकी मजबूती और उनकी जटिल संरचना में निहित थी। वे जल-प्रतियोगिताएँ आयोजित करते थे, जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, जो आम तौर पर किसी दूतावास के सम्मान में आयोजित की जाती थीं, जैसा कि कार्पैसिओ ने अपनी 'संत उर्सुला की कथा' में दिखाया है। जहाज विशाल थे, वास्तुकला की तरह निर्मित थे, और लगभग जलमग्न प्रतीत होते थे, जैसे बड़े वेनिस के केंद्र में बसा छोटा वेनिस। जब वे लाल साटन और फ़ारसी कालीनों से सजे लटकते मंचों द्वारा किनारों से बंधे होते थे, तो वे चेरी-लाल ब्रोकेड और हरे दमिश्क के वस्त्र पहने महिलाओं को रंग-बिरंगे संगमरमर से जड़ी बालकनियों के ठीक नीचे ले जाते थे, जहाँ से अन्य महिलाएं उन्हें निहारने के लिए झुकती थीं, काले रंग की आस्तीनों वाले गाउन में, जिन पर सफेद रंग की धारियाँ थीं, मोतियों से सिलाई की गई थी या बॉर्डर बनाए गए थे। लेस। आप बता नहीं सकते कि ज़मीन कहाँ खत्म होती है और पानी कहाँ शुरू होता है, महल कहाँ है या जहाज़, कारवेल, गैलिया, बुसिंटोरो कहाँ है।" एल्स्टिर

द्वारा हमें वर्णित पोशाक के इन विवरणों, सुंदरता के इन दृश्यों को अल्बर्टीन ने बड़ी उत्सुकता से सुना था। "ओह, मैं उस लेस को देखना चाहूँगी जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं; यह बहुत सुंदर है, वेनिस-पॉइंट," वह चिल्लाई। "इसके अलावा, मैं वेनिस देखना चाहती हूँ।" “शायद बहुत जल्द ही आप उन अद्भुत वस्त्रों को देख पाएँगी जो वे पहना करती थीं,” एल्स्टिर ने उसे बताया। “अब तक तो ये वस्त्र केवल वेनिस के चित्रकारों की कृतियों में ही देखने को मिले हैं, या पुराने गिरजाघरों के खजानों में बहुत कम, सिवाय कभी-कभार जब कोई नमूना नीलामी में आ जाता है। लेकिन मैंने सुना है कि फोर्टुनी नाम के एक वेनिस के कलाकार ने इस शिल्प का रहस्य खोज निकाला है, और कुछ ही वर्षों में महिलाएं बाहर घूमने जा सकेंगी, और उससे भी बेहतर, घर पर बैठकर वैसी ही शानदार ब्रोकेड पोशाकें पहन सकेंगी जैसी वेनिस अपने कुलीन परिवार की बेटियों के लिए पूर्व से लाए गए डिज़ाइनों से सजाता था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मुझे इसकी इतनी परवाह होगी, क्योंकि आज की महिलाओं के लिए, यहाँ तक कि नौका दौड़ में भाग लेते समय भी, यह बहुत पुराना चलन होगा, क्योंकि आधुनिक मनोरंजन की बात करें तो, 'एड्रियाटिक की रानी वेनिस' के बाद से समय पूरी तरह बदल चुका है।” याट, याट की साज-सज्जा, याट पर पहने जाने वाले परिधानों का सबसे बड़ा आकर्षण उनकी सादगी में है, मानो वे समुद्र के लिए ही बने हों, और मुझे समुद्र से बहुत प्यार है। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मुझे आज के फैशन वेरोनीज़ और कार्पैसिओ के समय के फैशन से कहीं अधिक पसंद हैं। हमारी याटों में—और विशेष रूप से छोटी याटों में, मुझे बड़ी याटें पसंद नहीं हैं, वे जहाजों जैसी लगती हैं; याटें महिलाओं की टोपी की तरह होती हैं, आपको एक निश्चित सीमा में रहना चाहिए—जो बात इतनी आकर्षक है, वह है उनकी चिकनी, सरल, चमकदार, धूसर सतह, जो

बादलों से घिरे आसमान के नीचे मलाईदार कोमलता का रूप ले लेती है। जिस केबिन में हम रहते हैं, वह हमें किसी छोटे कैफे की याद दिलाता है। और याट पर महिलाओं के कपड़े भी कुछ इसी तरह के होते हैं; वास्तव में आकर्षक वे हल्के वस्त्र होते हैं, जो एकसमान सफेद रंग के होते हैं, कपड़े, लिनन, नैन्कीन या ड्रिल के बने होते हैं, जो धूप में और समुद्र के नीले रंग के बीच, वह फैली हुई पाल की तरह चमकदार सफेदी लिए खड़ी थी। वैसे भी, बहुत कम ही ऐसी महिलाएं दिखती हैं जिन्हें सजने-संवरने का तरीका आता हो, और फिर भी उनमें से कुछ तो वाकई अद्भुत होती हैं। रेस में, मैडम लीया ने एक छोटी सी सफेद टोपी और एक छोटा सा सफेद सनशेड पहना था, जो बेहद आकर्षक था। मुझे नहीं पता कि मैं उस छोटे से सनशेड के लिए क्या न दे दूं। मैं यह जानना चाहती थी कि यह छोटा सा सनशेड बाकी सनशेड से किस तरह अलग था, और कुछ और कारणों से, खासकर महिलाओं के दिखावे के कारण, अल्बर्टीन और भी उत्सुक थी। लेकिन, जैसे फ्रांस्वा अपने सूफ़्ले की उत्कृष्टता को "बनाने का तरीका ही सब कुछ है" कहकर समझाती थी, वैसे ही यहाँ अंतर उसके कट में था। "यह," एल्स्टिर ने समझाया, "काफी छोटा, गोल, चीनी छाते जैसा था।" मैंने कई महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किए गए सनशेड का जिक्र किया, लेकिन यह उनमें से किसी जैसा नहीं था। एल्स्टिर को वे सभी बेहद भद्दे लगे। एक बेहद सुरुचिपूर्ण व्यक्ति, जिसे प्रसन्न करना बेहद कठिन था, वह उन सूक्ष्म विवरणों को पकड़ लेता था जो उसके सामने आने वाली तीन-चौथाई महिलाओं के पहनावे और उसे भयभीत करने वाली चीज़ों और उसकी सुंदरता के बीच का अंतर थे; और—मेरे ऊपर इसके प्रभाव के विपरीत, जिसका मन विलासिता के किसी भी प्रदर्शन से तुरंत नीरस हो जाता था—उसने "कुछ ऐसा ही आकर्षक बनाने" के लिए चित्रकारी करने की उसकी इच्छा को प्रेरित किया। "यहाँ आप एक युवती

को देख रहे हैं जिसने अनुमान लगा लिया है कि टोपी और धूप से बचाव कैसा था," उसने मुझसे कहा, अल्बर्टीन की ओर इशारा करते हुए जिसकी आँखें ईर्ष्या से चमक रही थीं। "काश मैं अमीर होती, मेरे पास एक नौका होती!" उसने चित्रकार से कहा। "मैं आपके पास आती, यह जानने के लिए कि इसे कैसे चलाया जाए। मैं कितनी प्यारी यात्राएँ करती। और रेस के लिए काउज़ जाना कितना मज़ेदार होता। और एक मोटर-कार! मुझे बताइए, क्या आपको लगता है कि मोटरिंग के लिए महिलाओं का फैशन सुंदर है?" "नहीं"; एल्स्टिर ने उत्तर दिया, "लेकिन समय आने पर ऐसा हो जाएगा। देखो, अभी तो बहुत कम कंपनियाँ हैं, एक-दो ही, कैलोट—हालाँकि वे लेस का कुछ ज़्यादा ही इस्तेमाल करते हैं—डौसेट, चेरुइट, कभी-कभी पैक्विन। बाकी सब तो बिल्कुल बेकार हैं।" "तो फिर, कैलोट की ड्रेस और किसी आम दुकान की ड्रेस में कितना फ़र्क़ होता है?" मैंने अल्बर्टीन से पूछा। "अरे हाँ, बहुत फ़र्क़ होता है, मेरे प्यारे! माफ़ करना! बस, अफ़सोस! जो चीज़ आपको आम दुकान में तीन सौ फ़्रैंक में मिलती है, वहाँ दो हज़ार में मिलती है। लेकिन तुलना हो ही नहीं सकती; ये दोनों एक जैसी सिर्फ़ उन्हीं लोगों को लगती हैं जिन्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं होता।" "बिल्कुल सही," एल्स्टिर ने कहा; "हालाँकि मैं यह नहीं कहूँगा कि यह अंतर रीम्स कैथेड्रल और सेंट-ऑगस्टिन कैथेड्रल की मूर्तियों के बीच के अंतर जितना गहरा है। वैसे, कैथेड्रल की बात करें तो," उन्होंने मुझसे ही बात करते हुए कहा, क्योंकि उनकी बात एक पिछली बातचीत से जुड़ी थी जिसमें लड़कियाँ शामिल नहीं थीं, और वैसे भी उन्हें उसमें कोई दिलचस्पी नहीं होती, "मैंने तुमसे कुछ दिन पहले बालबेक चर्च के बारे में बात की थी, जो एक विशाल चट्टान, देश के पत्थरों से बना एक बड़ा बांध था; अब इसे देखो"; उन्होंने मुझे एक वॉटरकलर पेंटिंग थमा दी। "इन चट्टानों को देखो (यह एक स्केच है जो मैंने यहीं पास में, क्रेउनियर्स

में बनाया था); क्या ये चट्टानें तुम्हें किसी कैथेड्रल की याद नहीं दिलातीं?" और सचमुच, कोई इन्हें ऊँचे लाल मेहराब समझ सकता था। लेकिन, चिलचिलाती गर्मी में चित्रित होने के कारण, वे मानो धूल में बदल गई हों, उस गर्मी से वाष्पीकृत हो गई हों जिसने आधे समुद्र को पी लिया हो, और चित्र की पूरी सतह पर लगभग गैसीय अवस्था में फैल गई हों। आज के दिन, जब सूरज की रोशनी ने मानो वास्तविकता को नष्ट कर दिया था, वास्तविकता कुछ धुंधली और पारदर्शी आकृतियों में सिमट गई, जो इसके विपरीत, जीवन का कहीं अधिक प्रभावशाली और नज़दीकी आभास दे रही थीं: परछाइयाँ। ठंडक की प्यास में तड़पती हुई, उनमें से अधिकांश, झुलसे हुए खुले मैदानों को छोड़कर, सूर्य की पहुँच से दूर चट्टानों की तलहटी में शरण लेने के लिए भाग गई थीं; कुछ अन्य, डॉल्फ़िन की तरह, लहरों पर धीरे-धीरे तैरती हुई, चलती हुई नावों के किनारों के पास मंडरा रही थीं, जिनके पतवारों को वे अपने चमकदार नीले आकार से पानी की पीली सतह पर फैला रही थीं। शायद ठंडक की यही प्यास थी जिसने मुझे आज के दिन की गर्मी का एहसास कराया और मुझे यह कहने पर मजबूर कर दिया कि मुझे क्रूनियरों को न जानने का कितना अफसोस है। अल्बर्टीन और एंड्री को पूरा यकीन था कि मैं वहाँ सैकड़ों बार जा चुका हूँगा। अगर ऐसा था तो मैं वहाँ अनजाने में ही मौजूद था, कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि एक दिन इन चट्टानों का दृश्य मुझे सौंदर्य की ऐसी प्यास से भर देगा, शायद वैसी प्राकृतिक सुंदरता नहीं जैसी मैं अब तक बालबेक की चट्टानों में खोज रहा था, बल्कि स्थापत्य सौंदर्य। सबसे बढ़कर, मैं जो यहाँ तूफ़ान के साम्राज्य को देखने आया था, और श्रीमती डी विलेपारिसिस के साथ अपनी किसी भी यात्रा में, जब हम अक्सर इसे दूर से ही पेड़ों के बीच चित्रित देखते थे, कभी भी समुद्र को इतना वास्तविक, इतना तरल नहीं पाया था, जो यह आभास देता हो कि वह

अपनी विशाल शक्ति को तट पर फेंक रहा है, और मैं उसे केवल सर्दियों के कोहरे के आवरण के नीचे स्थिर देखना चाहता था। मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता था कि अब मैं एक ऐसे समुद्र का सपना देख रहा हूँ जो एक सफेद वाष्प के अलावा कुछ नहीं है जिसने अपना घनत्व और रंग दोनों खो दिए हैं। लेकिन एल्स्टिर ने, उन जहाजों पर गर्मी से बेसुध होकर बैठे हुए चिंतन कर रहे लोगों की तरह, ऐसे समुद्र के जादू को इतनी गहराई से महसूस किया था कि वह ज्वार के सूक्ष्म उतार-चढ़ाव, एक सुखद क्षण की धड़कन को चित्रित कागज पर हमेशा के लिए अंकित करने में सफल रहा; और इस जादुई चित्र को देखते ही व्यक्ति इतना मोहित हो जाता था कि वह दुनिया भर में घूमने और उस लुप्त हो चुके दिन की क्षणिक, स्तब्ध सुंदरता को पुनः प्राप्त करने के अलावा और कुछ नहीं सोच पाता था।

इसलिए, एल्स्टिर की इन यात्राओं से पहले, इससे पहले कि मैंने उनकी समुद्र की उन तस्वीरों में से एक को देखा होता जिसमें एक युवती सफेद सर्ज या लिनन की पोशाक पहने, अमेरिकी ध्वज फहराती नौका के डेक पर खड़ी थी, जिसने मेरी कल्पना में एक सफेद लिनन की पोशाक और रंगीन झंडे की छवि को दोहरा दिया था, जिसने तुरंत मेरे भीतर उस स्थान पर जाने और अपनी आँखों से समुद्र के सामने सफेद लिनन की पोशाकें और झंडे देखने की एक अतृप्त इच्छा पैदा कर दी थी, मानो ऐसा कोई अनुभव मुझे पहले कभी नहीं हुआ था, तब तक मैं हमेशा समुद्र के किनारे खड़े होने पर अपने दृष्टि क्षेत्र से, अग्रभूमि में स्नान करने वालों के साथ-साथ, समुद्र तट के परिधानों की तरह दिखने वाले अत्यधिक चमकदार पाल वाली नौकाओं को भी, हर उस चीज को हटाने का ध्यान रखता था जो मुझे यह विश्वास दिलाने से रोकती थी कि मैं उस अनादि काल के महासागर के सैलाब को देख रहा हूँ जो मानव जाति के प्रकट होने से

पहले उसी रहस्यमय जीवन के साथ गतिमान था; और मुझे उन चमकीले धूप वाले दिनों से भी चिढ़ होती थी जो मुझे दुनिया की सार्वभौमिक ग्रीष्म ऋतु के तुच्छ पहलू से परिपूर्ण प्रतीत होते थे, इस कोहरे और तूफान के तट को मात्र एक रुकावट के रूप में चिह्नित करते थे, संगीत में जिसे विश्राम कहा जाता है उसके समान; अब दूसरी ओर, बुरे दिन मुझे किसी विपत्तिपूर्ण दुर्घटना की तरह प्रतीत होते थे, एक ऐसी चीज जो सुंदरता की दुनिया में अपना स्थान नहीं पा सकती थी; मुझे बाहर जाकर वास्तविकता में उस चीज को पुनः प्राप्त करने की तीव्र इच्छा हुई जिसने मेरी कल्पना को इतनी मजबूती से जगाया था, और मुझे आशा थी कि मौसम इतना अनुकूल होगा कि मैं चट्टान की चोटी से वही नीली छायाएँ देख सकूँ जो एल्स्टिर के चित्र में थीं।

और, जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, मैंने अपने हाथों से अपनी आँखों के चारों ओर एक फ्रेम नहीं बनाया, जैसा कि उन दिनों में होता था जब, प्रकृति को मनुष्य के पहले प्रकट होने से पहले के जीवन से जीवंत मानते हुए, और औद्योगिक उपलब्धि की उन सभी थकाऊ पूर्णताओं के विपरीत, जिन्होंने मुझे अब तक सार्वभौमिक प्रदर्शनियों या टोपी बनाने वालों की दुकानों की खिड़कियों में ऊब से उबासी दिलाई थी, मैंने समुद्र के केवल उस हिस्से को शामिल करने का प्रयास किया, जिस पर कोई स्टीमर नहीं गुजरता था, ताकि मैं इसे अपने लिए अनादि काल का, अभी भी उन युगों के समकालीन के रूप में चित्रित कर सकूँ जिनमें इसे भूमि से अलग किया गया था, या कम से कम ग्रीस में जीवन के पहले भोर के साथ, जिसने मुझे 'फादर लेकोंटे' की उन पंक्तियों को उनके शाब्दिक अर्थ में दोहराने में सक्षम बनाया, जिनसे ब्लोच बहुत प्यार करते थे।

'राजा चले गए, उनके ऊंचे-ऊंचे पराक्रम का दौर खत्म हो गया।'
अफ़सोस, उग्र गहरे सागर में विलीन हो गया।

हेलास के लंबे बालों वाले योद्धा नायक।'

अब मैं टोपी बनाने वालों को तुच्छ नहीं समझ सकती थी, क्योंकि एल्स्टिर ने मुझे बताया था कि टोपी तैयार होने के बाद उसके रिबन या पंखों को अंतिम रूप देने के लिए वे जिस नाज़ुक स्पर्श का इस्तेमाल करते हैं, वह उनके लिए उतना ही दिलचस्प होगा जितना कि खुद जॉकी की मांसपेशियों की हरकतें (इस कथन से अल्बर्टीन बहुत खुश हुई थीं)। लेकिन मुझे तब तक इंतजार करना पड़ा जब तक मैं वापस नहीं लौट गई —टोपी बनाने वालों के लिए पेरिस—और बालबेक में नौका दौड़ और रेस के लिए, जहाँ अब अगले साल तक कुछ नहीं होगा। यहाँ तक कि सफेद लिनेन के कपड़े पहने महिलाओं से भरी कोई नौका भी नहीं दिख रही थी।

अक्सर हमारी मुलाक़ात ब्लोच की बहनों से होती थी, जिनके सामने मुझे झुकना पड़ता था क्योंकि मैंने उनके पिता के साथ भोजन किया था। मेरे नए दोस्त उन्हें नहीं जानते थे। "मुझे इस्राइलियों के साथ खेलने की इजाज़त नहीं है," अल्बर्टीन ने समझाया। उनके उच्चारण का तरीका —'इज़राइली' की जगह 'इस्राइली'—यह दिखाने के लिए काफ़ी था, भले ही वाक्य का बाकी हिस्सा न सुना गया हो, कि इन युवा फ्रांसीसी महिलाओं में, जो ईश्वर से डरने वाले घरों में पली-बढ़ी थीं और यह मानने को तैयार थीं कि यहूदी ईसाई बच्चों का नरसंहार करते हैं, यहूदी जाति के प्रति कोई मित्रता की भावना नहीं थी। "इसके अलावा, तुम्हारे दोस्त बहुत ही बुरे हैं," एंड्री ने मुस्कुराते हुए कहा, जिससे यह ज़ाहिर होता था कि वह अच्छी तरह जानती थी कि वे मेरे दोस्त नहीं हैं। "जैसे कि उस जनजाति से जुड़ी हर चीज़," अल्बर्टीन ने अपने निजी अनुभव से बोलते हुए गंभीर लहजे में कहा। सच कहें तो, ब्लोच की बहनें, जो एक साथ अत्यधिक सजी-धजी और अधनंगी थीं, अपने सुस्त, साहसी, खुलेआम और चरित्रहीन हावभाव से अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ रही थीं। और उनकी एक

चचेरी बहन, जो केवल पंद्रह वर्ष की थी, ने मैडम लीया के प्रति अपनी खुली प्रशंसा से कैसिनो में हंगामा मचा दिया। मैडम लीया की अभिनय प्रतिभा को एम. ब्लोच सीनियर बहुत ऊँचा मानते थे, लेकिन उनकी पसंद के बारे में यह माना जाता था कि वे सज्जनों की ओर आकर्षित नहीं होती थीं।

कुछ दिनों हम आगंतुकों के लिए भोजन की व्यवस्था करने वाले दूरदराज के खेतों में से किसी एक में जलपान करते थे। ये खेत लेस इकोरेस, मैरी-थेरेस, ला क्रोइक्स डी'हेउलैंड, बैगेटेल, कैलिफ़ोर्निया और मैरी-एंटोनेट के नाम से जाने जाते थे। इनमें से आखिरी खेत को उस छोटे समूह ने अपना लिया था।

लेकिन कभी-कभी, खेत में जाने के बजाय, हम चट्टान की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ जाते थे, और वहाँ पहुँचकर घास पर बैठ जाते थे, तो अपने सैंडविच और केक का पैकेट खोल लेते थे। मेरे दोस्तों को सैंडविच ज़्यादा पसंद थे, और मुझे केवल एक चॉकलेट केक, जिस पर सुंदर नक्काशी होती थी, या खुबानी का टार्ट खाते देखकर वे हैरान रह जाते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि पनीर या हरी सब्ज़ियों से बने सैंडविच, जो मेरे लिए बिल्कुल नए थे और अतीत से उनका कोई वास्ता नहीं था, उनसे मेरा कोई मेल नहीं था। लेकिन केक तो सब समझते थे, टार्ट गपशप करते थे। केक में क्रीम का फीका स्वाद होता था, जबकि टार्ट में फलों का ताज़ा स्वाद होता था, जो कॉम्ब्रे और गिल्बर्ट के बारे में सब कुछ जानता था, न केवल कॉम्ब्रे की गिल्बर्ट के बारे में, बल्कि पेरिस की गिल्बर्ट के बारे में भी, जिनकी चाय पार्टियों में मुझे उनसे दोबारा मिलने का मौका मिला था। मुझे वे अरेबियन नाइट्स की कहानियों वाली केक की प्लेटें याद आ गईं, जिन पर बने चित्र मेरी चाची लियोनी का ध्यान बहुत आकर्षित करते थे जब फ्रांस्वा उन्हें पालती थी। कभी अलादीन, कभी जादुई चिराग, कभी

अली-बाबा, कभी नींद से जागता राजकुमार, या कभी सिंदबाद नाविक बसोरा से अपने सारे खजाने के साथ जहाज पर सवार होता हुआ। मैं उन्हें फिर से देखना चाहती थी, लेकिन मेरी दादी को नहीं पता था कि उनका क्या हुआ, और उन्हें तो यही लगता था कि वे गाँव से खरीदी गई आम प्लेटें थीं। कोई बात नहीं, उस धूसर, मध्यभूमि के कॉम्ब्रे दृश्य में वे और उनकी तस्वीरें बहुरंगी रत्नों की तरह सजी हुई थीं, जैसे अंधेरे चर्च में अपनी बदलती चमक वाली खिड़कियाँ थीं, जैसे मेरे शयनकक्ष की संध्या में मैजिक-लैंटर्न द्वारा डाली गई परछाइयाँ थीं, जैसे रेलवे स्टेशन और छोटी स्थानीय लाइन के दृश्य के अग्रभाग में भारत के बटरकप और फ़ारसी लिली थे, जैसे एक ग्रामीण कस्बे में एक बुज़ुर्ग महिला के उदास घर में मेरी परदादी की पुरानी चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारियाँ थीं।

चट्टान पर लेटे हुए मुझे अपने सामने घास के मैदानों के सिवा कुछ नहीं दिखाई देता था, और उनके परे ईसाई ब्रह्मांड विज्ञान के सात आकाश नहीं, बल्कि केवल दो ही दृश्य दिखाई देते थे - एक गहरे नीले रंग का, समुद्र, और उसके ऊपर दूसरा हल्का नीला। हमने अपना भोजन किया, और अगर मैं अपने साथ कोई छोटी सी यादगार वस्तु भी लाया होता जो मेरे किसी दोस्त को पसंद आ सकती, तो उसकी पारदर्शी चेहरे पर अचानक इतनी तीव्र खुशी छा जाती, पल भर में इतनी लाली आ जाती कि उसके होंठ उसे रोक नहीं पाते और हंसी के ठहाके के साथ फूट पड़ते। वे सब मेरे चारों ओर इकट्ठा हो गए थे, और उनके चेहरे लगभग एक-दूसरे को छू रहे थे, उनके बीच की हवा नीले रंग के ऐसे रास्ते बना रही थी मानो किसी माली ने गुलाबों के घने जंगल में थोड़ी सी जगह साफ करने के लिए बनाए हों ताकि वह आसानी से चल सके।

खाना खत्म करने के बाद हम खेल खेलते थे, जो तब तक मुझे उबाऊ लगते थे, कभी-कभी तो बचकाने खेल जैसे 'किंग ऑफ द कैसल' या 'हू

लाफ्स फर्स्ट'; अब मैं इन्हें किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता था; किशोरावस्था की सुनहरी सुबह, जिससे इन लड़कियों के चेहरे अभी भी दमक रहे थे, और जिससे मैं, अपनी कम उम्र में ही, निकल चुका था, उनके चारों ओर हर चीज पर अपना प्रकाश बिखेर रही थी और आदिम कलाकारों की तरल चित्रकारी की तरह, उनके दैनिक जीवन के सबसे छोटे विवरणों को भी सुनहरे पृष्ठभूमि पर उभार रही थी। यहाँ तक कि लड़कियों के चेहरे भी, ज्यादातर, इस धुंधली सुबह की चमक से ढके हुए थे, जिससे उनके असली चेहरे अभी तक उभरे नहीं थे। केवल रंगों की एक मनमोहक चादर दिखाई दे रही थी, जिसके नीचे कुछ वर्षों में बनने वाला चेहरा अभी स्पष्ट नहीं था। आज के चेहरे में कुछ भी निश्चित नहीं था, और यह परिवार के किसी दिवंगत सदस्य की क्षणिक झलक मात्र हो सकती थी, जिसे प्रकृति ने यह स्मृति भेंट की थी। वह पल कितनी जल्दी आ जाता है, जब इंतज़ार करने के लिए कुछ नहीं बचता, जब शरीर एक ऐसी स्थिर अवस्था में स्थिर हो जाता है जिसमें कोई नया आश्चर्य छिपा नहीं होता, जब सारी उम्मीदें टूट जाती हैं, जैसे गर्मियों के चरम पर किसी पेड़ पर भूरे पत्ते हों और उसके चारों ओर अभी भी युवा बाल हों जो पतले हो रहे हों या सफ़ेद हो रहे हों; वह चमकीला सुबह का समय इतना छोटा होता है कि केवल सबसे छोटी बच्चियों को ही पसंद करने का मन करता है, जिनमें शरीर, एक कीमती खमीर की तरह, अभी भी सक्रिय होता है। वे अभी भी लचीले पदार्थ की एक धारा मात्र हैं, जो क्षणिक छाप से हर बार नए रूप में ढलती रहती हैं। आप कहेंगे कि उनमें से प्रत्येक बारी-बारी से बचपन की खुशी की एक छोटी सी मूर्ति है, एक ऐसे बच्चे की जो गंभीर, फुसलाने वाली, आश्चर्यचकित हो गया है, जिसका स्वरूप एक स्पष्ट और पूर्ण, लेकिन क्षणभंगुर अभिव्यक्ति से लिया गया है। यह लचीलापन एक छोटी बच्ची द्वारा हमें दिए जाने वाले सुंदर ध्यान को

विविधता और आकर्षण का खजाना प्रदान करता है। निःसंदेह, स्त्री में भी इस प्रकार का स्नेह अपरिहार्य है, और जिसे हम आकर्षित नहीं कर पाते, या जो हमें यह एहसास नहीं होने देती कि हम उसे आकर्षित कर चुके हैं, वह हमारी दृष्टि में कुछ हद तक नीरस और एकरूप लगने लगती है। परन्तु एक निश्चित आयु के बाद, ये सुंदर स्नेह भी उस चेहरे पर कोमल लहरें नहीं बिखेर पाते जिसे जीवन के संघर्ष ने कठोर बना दिया है, जो अपरिवर्तनीय रूप से जुझारू या भावुक हो गया है। एक स्त्री—पति के प्रति पत्नी के निरंतर आज्ञापालन के कारण—एक स्त्री का चेहरा नहीं, बल्कि एक सैनिक का चेहरा प्रतीत होती है; दूसरी, अपने बच्चों के लिए दिन-प्रतिदिन किए गए बलिदानों से तराशी हुई, एक धर्मदूत का चेहरा होती है। तीसरी, वर्षों के तूफानी दौर के बाद, एक प्राचीन नाविक का चेहरा होती है, जिसके शरीर पर केवल वस्त्र ही उसके लिंग का संकेत देते हैं। निःसंदेह, जब तक हम उससे प्रेम करते हैं, एक स्त्री का स्नेह हमारे साथ बिताए क्षणों में नए आकर्षण बिखेर सकता है। परन्तु तब वह हमारे लिए अलग-अलग स्त्रियों की एक श्रृंखला नहीं रह जाती। उसका उल्लास एक अपरिवर्तनीय चेहरे के भीतर ही रहता है। जबकि किशोरावस्था इस पूर्ण स्थिरीकरण से पहले आती है; और इसी से यह निष्कर्ष निकलता है कि युवा लड़कियों की संगति में, हम निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहे रूपों के दृश्य से मिलने वाली ताजगी का अनुभव करते हैं, अस्थिर शक्तियों का एक ऐसा खेल जो हमें प्रकृति के मूल तत्वों के उस निरंतर पुनर्निर्माण के बारे में सोचने पर मजबूर करता है जिसे हम समुद्र के किनारे खड़े होकर निहारते हैं।

यह महज एक सामाजिक कार्यक्रम या श्रीमती डी विलेपारिसिस के साथ घूमने-फिरने का मौका नहीं था, जिसे मैं अपने दोस्तों के 'फेरेट' या 'गेसिंग गेम्स' के लिए छोड़ देती। रॉबर्ट डी सेंट-लूप ने कई बार संदेश भेजा था कि

चूंकि मैं उनसे डोनसिएरेस में मिलने नहीं आ रही हूँ, इसलिए उन्होंने चौबीस घंटे की छुट्टी मांगी है, जिसे वे बालबेक में बिताएंगे। हर बार मैंने जवाब में लिखा कि वे किसी भी हालत में नहीं आएंगे, और बहाना बनाया कि मुझे उसी दिन बाहर जाना होगा, क्योंकि मुझे अपनी दादी के साथ पड़ोस में रहने वाले पारिवारिक मित्रों से मिलने जाना है। निस्संदेह, जब उन्हें अपनी चाची से पता चला कि 'काम' क्या था और मेरी दादी की भूमिका निभाने वाले लोग कौन थे, तो उनकी नजरों में मेरी छवि खराब हो गई। फिर भी, शायद मैं गलत नहीं थी, जब मैंने न केवल दुनिया के व्यर्थ सुखों को, बल्कि दोस्ती के सच्चे सुख को भी इस हरे-भरे बगीचे में पूरा दिन बिताने के लिए कुर्बान कर दिया था। जिन लोगों में यह क्षमता होती है—यह सच है कि ऐसे लोग कलाकार होते हैं, और मुझे लंबे समय से यह विश्वास था कि मैं कभी कलाकार नहीं बन पाऊंगा—उन पर स्वयं के लिए जीने का दायित्व भी होता है। और मित्रता इस कर्तव्य से मुक्ति दिलाती है, स्वयं का त्याग कराती है। यहाँ तक कि बातचीत, जो मित्रता की अभिव्यक्ति का माध्यम है, एक सतही विषयांतर है जिससे हमें कोई नया ज्ञान प्राप्त नहीं होता। हम जीवन भर बातें कर सकते हैं, लेकिन एक मिनट की निरर्थकता को अनिश्चित काल तक दोहराते रहेंगे, जबकि कलात्मक सृजन के एकाकी परिश्रम में विचारों का प्रवाह नीचे की ओर, गहराई में, उस एकमात्र दिशा में होता है जो हमारे लिए खुली है, जिस पर हम आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र हैं—यहाँ तक कि अधिक प्रयास से, यह सच है—सत्य के लक्ष्य की ओर। और मित्रता न केवल बातचीत की तरह सद्गुणहीन है, बल्कि यह हमारे लिए घातक भी है। किसी मित्र की संगति में जो ऊब का अनुभव होना स्वाभाविक है (अर्थात, जब हमें अपनी चेतना की सतह पर ही रहना पड़ता है, गहराई में जाकर खोज करने के बजाय), उन लोगों के लिए जिनमें विकास का नियम विशुद्ध रूप से आंतरिक है—

ऊब का वह पहला आभास जिसे हमारी मित्रता हमें अकेले होने पर सुधारने के लिए प्रेरित करती है, अपने मित्र द्वारा कहे गए शब्दों को भावपूर्ण ढंग से याद करने के लिए, उन्हें अपने अस्तित्व में एक मूल्यवान वृद्धि के रूप में देखने के लिए, यद्यपि हम इमारतों की तरह नहीं हैं जिनमें बाहर से पत्थर जोड़े जा सकते हैं, बल्कि पेड़ों की तरह हैं जो अपने ही रस से अपने तनों पर बनने वाली गांठ, अपने पत्तों की फैली हुई छत को ग्रहण करते हैं। मैं खुद से झूठ बोल रही थी, मैं उस दिशा में विकास की प्रक्रिया को बाधित कर रही थी जिसमें मैं वास्तव में समृद्ध और प्रसन्न हो सकती थी, जब मैंने सेंट-लूप जैसे अच्छे, बुद्धिमान और दुर्लभ प्राणी द्वारा पसंद किए जाने और सराहे जाने पर खुद को बधाई दी, जब मैंने अपना ध्यान अपने उन अस्पष्ट विचारों पर केंद्रित नहीं किया जिन्हें सुलझाने का कर्तव्य मुझे बाध्य करता था, बल्कि अपने मित्र के कहे शब्दों पर केंद्रित किया, जिन्हें जब मैंने स्वयं से दोहराया—जब उन्हें उस दूसरे स्व द्वारा दोहराया गया जो हमारे भीतर निवास करता है और जिस पर हम हमेशा विचार करने का बोझ डालने के लिए तत्पर रहते हैं—तो मैंने अपने लिए एक ऐसी सुंदरता खोजने का प्रयास किया जो उस सुंदरता से बहुत अलग थी जिसे मैं अकेलेपन में चुपचाप खोजती थी, बल्कि एक ऐसी सुंदरता जो रॉबर्ट, स्वयं और अपने जीवन के गुणों को बढ़ाएगी। ऐसे मित्र द्वारा प्रदत्त जीवन में, मैं स्वयं को एकांत से सुरक्षित पाती थी, उसके लिए स्वयं को बलिदान करने की प्रबल इच्छा रखती थी, वास्तव में स्वयं को साकार करने में पूरी तरह असमर्थ थी। दूसरी ओर, लड़कियों के बीच, अगर मुझे जो आनंद मिला वह स्वार्थी था, तो कम से कम वह उस झूठ पर आधारित नहीं था जो हमें यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि हम पूरी तरह से अकेले नहीं हैं, और जो किसी दूसरे व्यक्ति से बात करते समय हमें यह स्वीकार करने से रोकता है कि अब हम नहीं बोल रहे हैं, बल्कि हम

खुद को अजनबियों की तरह ढाल रहे हैं, न कि अपने स्वयं के अहंकार की तरह, जो उनसे बिल्कुल अलग है। उस छोटे समूह की लड़कियों और मेरे बीच जो बातें हुईं, वे कोई मायने नहीं रखती थीं; बल्कि वे बहुत कम थीं, और मेरी ओर से लंबे समय तक चुप्पी छाई रहती थी। इन सब बातों ने मुझे उनसे बात करते समय सुनने में उतना ही आनंद लेने से नहीं रोका जितना उन्हें निहारने में, उनकी हर आवाज़ में एक रंगीन चित्र खोजने में। मैंने उनके मधुर गीत सुनकर परमानंद महसूस किया। प्रेम हमें चीजों को समझने और उनमें अंतर करने में मदद करता है। जंगल में खड़ा पक्षी प्रेमी तुरंत विभिन्न प्रजातियों के स्वरों को पहचान लेता है, जो आम लोगों को एक जैसे लगते हैं। लड़कियों से प्यार करने वाला जानता है कि इंसानी आवाज़ें और भी ज़्यादा विविध होती हैं। हर आवाज़ में संगीत के सबसे समृद्ध वाद्ययंत्र से भी ज़्यादा स्वर होते हैं। और आवाज़ उन स्वरों को जिस संयोजन में पिरोती है, वह व्यक्तित्वों की अनंत विविधता की तरह ही असीमित है। जब मैं अपनी किसी सहेली से बात करता था, तो मुझे इस बात का एहसास होता था कि उसकी व्यक्तित्व की मूल, अनूठी छवि को उसकी आवाज़ और चेहरे के उतार-चढ़ाव के ज़रिए बड़ी कुशलता से उकेरा गया है, मानो मेरे मन पर ज़बरदस्ती थोपा गया हो, और ये दो अलग-अलग दृश्य थे जो अपने-अपने स्तर पर एक ही वास्तविकता को दर्शाते थे। निस्संदेह, चेहरे की तरह आवाज़ की रेखाएं अभी पूरी तरह से स्थिर नहीं हुई थीं; आवाज़ को अभी टूटना बाकी था, जैसे चेहरे को बदलना। जैसे बच्चों में एक ग्रंथि होती है जिसका स्राव उन्हें दूध पचाने में सक्षम बनाता है, एक ऐसी ग्रंथि जो वयस्क पुरुषों और महिलाओं में नहीं पाई जाती, वैसे ही इन लड़कियों की चहचहाहट में ऐसे स्वर थे जो महिलाओं की आवाज़ों में अब नहीं होते। और इस विशाल वाद्य यंत्र पर वे अपने होठों से धुन बजाती रहीं, बेलिनी के नन्हे देवदूत संगीतकारों की

तरह लगन और जोश से भरी हुई, ये गुण भी यौवन की ही देन हैं। बाद में इन लड़कियों के भीतर से वह उत्साहपूर्ण दृढ़ विश्वास गायब हो गया जिसने उनके सरलतम शब्दों में भी आकर्षण भर दिया था, चाहे वह अल्बर्टीन हो जो अधिकारपूर्ण स्वर में चुटकुले दोहराती थी जिन्हें छोटी बच्चियाँ प्रशंसा से सुनती थीं, जब तक कि हँसी का वह तीव्र आवेग उन्हें छींक की तरह जकड़ नहीं लेता था, या एंड्री हो जो कक्षा में अपने काम के बारे में बात करने लगी, वह काम जो उनके खेले जाने वाले खेलों से भी अधिक बचकाना प्रतीत होता था, लेकिन उनकी बातों में एक बचकाना गंभीरता झलकती थी; और उनके शब्दों का लहजा बदल गया, जैसे प्राचीन काल के गीतों में होता था जब कविता, संगीत से अभी भी मुश्किल से अलग की जा सकती थी, एक पैमाने के विभिन्न स्वरों पर सुनाई जाती थी। इसके बावजूद, लड़कियों की आवाज़ों से ही जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण का स्पष्ट संकेत मिल रहा था। यह दृष्टिकोण इतना व्यक्तिगत था कि किसी एक के बारे में यह कहना कि "वह हर बात को मज़ाक समझती है", किसी एक के बारे में "वह एक के बाद एक दावे करती रहती है", और किसी एक के बारे में "वह हमेशा अनिश्चितता और अनिश्चितता की स्थिति में जीती है" बहुत ही सामान्य शब्दों में कहना होगा। हमारे चेहरे के भाव महज़ हाव-भाव हैं जिन्हें आदत ने स्थायी बना दिया है। प्रकृति, पोम्पेई के विनाश की तरह, किसी अप्सरा के वृक्ष में रूपांतर की तरह, हमें एक अभ्यस्त गति में स्थिर कर देती है। इसी प्रकार, हमारी आवाज़ का उतार-चढ़ाव हमारे जीवन दर्शन को दर्शाता है, कि कोई व्यक्ति किसी भी क्षण में अपने आप से क्या कहता है। निस्संदेह ये विशेषताएँ केवल लड़कियों में ही नहीं थीं। ये उनके माता-पिता की भी थीं। व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ का हिस्सा है जो उससे कहीं अधिक व्यापक रूप से फैली हुई है। इस हिसाब से, हमारे माता-पिता हमें न केवल वे

अभ्यस्त हाव-भाव सिखाते हैं जो हमारे चेहरे और आवाज़ की रूपरेखा बनाते हैं, बल्कि बोलने के कुछ खास तौर-तरीके, कुछ पसंदीदा अभिव्यक्तियाँ भी देते हैं, जो लगभग स्वर की तरह ही अचेतन और उतनी ही गहरी होती हैं, और जीवन के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। यह बिल्कुल सच है, क्योंकि हम लड़कियों की बात कर रहे हैं, कि इनमें से कुछ अभिव्यक्तियाँ ऐसी होती हैं जो उनके माता-पिता उन्हें एक निश्चित उम्र तक पहुँचने से पहले नहीं सिखाते, आमतौर पर तब तक नहीं जब तक वे महिलाएँ नहीं बन जातीं। इन्हें बचाकर रखा जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आप एल्स्टिर की एक सहेली, एंड्री की तस्वीरों की बात करें, जिसके बाल अभी खुले थे, तो वह अभी तक खुद उस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल नहीं कर सकती थी जो उसकी माँ और बड़ी बहन इस्तेमाल करती थीं: "लगता है, वह आदमी बहुत आकर्षक है!" लेकिन यह समय आने पर आ जाएगा, जब उसे पैलेस-रॉयल जाने की अनुमति मिलेगी। और पहले कम्युनियन के बाद से ही, अल्बर्टीन अपनी चाची की सहेली की तरह कहने लगी थी: "मुझे यकीन है कि मुझे यह बहुत भयानक लगेगा!" उसे एक छोटी सी सीख यह भी मिली थी कि आप उससे जो कुछ भी कह रहे हों, उसे दोहराना, ताकि लगे कि उसे दिलचस्पी है और वह अपनी राय बनाने की कोशिश कर रही है। अगर आप कहते कि किसी कलाकार का काम अच्छा है या उसका घर सुंदर है, तो वह कहती, "ओह, उसका काम अच्छा है, है ना?" "ओह, उसका घर सुंदर है, है ना?" अंत में, और पारिवारिक विरासत से भी कहीं अधिक व्यापक, वह समृद्ध परत थी जो उनके मूल प्रांत से उन पर पड़ी थी, जहाँ से उन्हें अपनी आवाज़ मिली थी और जिसकी झलक उनके उच्चारण में साफ झलकती थी। जब एंड्री गंभीर स्वर में बोलती, तो उसके स्वर की तारें गूंजती हुई ध्वनि को वापस लौटाने से नहीं रोक पातीं, जो उसके चेहरे की दक्षिणी पवित्रता के साथ

पूरी तरह सामंजस्य बिठाती थी; वहीं रोज़मोंडे की लगातार शरारतों पर, उसके उत्तरी-देहात के चेहरे और आवाज़ का सार, उस समय उसकी मनोदशा चाहे जो भी हो, उनके प्रांत के लहजे में ही व्यक्त होता था। उस प्रांत और उस छोटी बच्ची के स्वभाव के बीच, जो इन लहजों को निर्धारित करती थी, मुझे एक मनमोहक संवाद दिखाई दिया। यह एक संवाद था, किसी भी अर्थ में असहमति नहीं। उस लड़की को उसके जन्मस्थान से अलग करना असंभव था। वह स्वयं थी; वह अभी भी वही थी। इसके अलावा, स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों का उपयोग करने वाले प्रतिभाशाली कलाकार पर पड़ने वाला प्रभाव, जिसके काम में ये प्रभाव एक नई ताजगी भर देते हैं, काम को किसी भी तरह से कम व्यक्तिगत नहीं बनाता, और चाहे वह किसी वास्तुकार, फर्नीचर निर्माता या संगीतकार का काम हो, यह कलाकार के व्यक्तित्व की सूक्ष्म बारीकियों को उतनी ही बारीकी से दर्शाता है, क्योंकि उसे सेनलिस की चक्की या स्ट्रासबर्ग के लाल बलुआ पत्थर पर काम करने के लिए विवश होना पड़ा है, उसने राख के पेड़ की विशिष्ट गांठों का सम्मान किया है, और अपनी रचना करते समय संसाधनों, सीमाओं, ध्वनि की मात्रा, बांसुरी या सुरीली आवाज की संभावनाओं को ध्यान में रखा है।

ये सब मुझे महसूस हुआ, फिर भी हमने बहुत कम बात की। जबकि श्रीमती डी विलेपारिसिस या सेंट-लूप के साथ, मैं अपने शब्दों से अपनी वास्तविक खुशी से कहीं अधिक खुशी प्रकट कर सकती थी, क्योंकि उनसे विदा होते ही मैं हमेशा थकी हुई महसूस करती थी; दूसरी ओर, जब मैं इन सभी लड़कियों के बीच घास पर लेटी थी, तो मेरी भावनाओं की प्रचुरता हमारी कम बातचीत और अनियमितता पर कहीं अधिक भारी पड़ गई, और मेरी स्थिरता और मौन से खुशी की बाढ़ उमड़ पड़ी, जिसकी लहरें इन युवा गुलाबों के चरणों में आकर विलीन हो गईं।

एक बीमार व्यक्ति के लिए, जो दिन भर फूलों के बगीचे या फलों के बाग में आराम करता है, फूलों या फलों की सुगंध उसके खाली समय को समेटने वाली हजारों छोटी-छोटी चीजों में उतनी गहराई से समा नहीं पाती, जितनी मुझमें वह रंग, वह सुगंध समा गई, जिसकी तलाश में मेरी आंखें बार-बार लड़कियों की ओर भटकती थीं, और जिसकी मिठास अंततः मुझमें समा गई। ठीक वैसे ही जैसे धूप में अंगूर मीठे हो जाते हैं। और इन सरल छोटे-छोटे खेलों की धीमी निरंतरता ने मुझमें भी धीरे-धीरे वही भाव उत्पन्न कर दिया, जैसे उन लोगों में जो दिन भर समुद्र किनारे लेटे रहते हैं, नमकीन हवा में सांस लेते हैं और धूप से झुलस जाते हैं, एक आराम, एक आनंदमय मुस्कान, और एक अस्पष्ट चक्कर आने जैसा एहसास जो मस्तिष्क से आंखों तक फैल गया था।

कभी-कभी उनमें से किसी एक की प्यारी सी नज़र मुझमें ऐसी भावनाएँ जगा देती थी जो कुछ समय के लिए बाकी लोगों के प्रति मेरी चाहत को शांत कर देती थीं। एक दिन अचानक अल्बर्टीन ने पूछा: "किसके पास पेंसिल है?" एंड्री ने एक पेंसिल दी, रोज़मोंडे ने कागज़; अल्बर्टीन ने उन्हें चेतावनी दी: "अब, युवतियों, आप लोग मेरे लिखे हुए को मत देखना।" कागज़ को अपने घुटने पर टिकाकर, हर अक्षर को ध्यान से ट्रेस करने के बाद, उसने मुझे देते हुए कहा: "ध्यान रखना, कोई देख न ले।" तब मैंने उसे खोला और उसका संदेश पढ़ा, जो था: "मैं तुमसे प्यार करती हूँ।"

"लेकिन हमें यहां बैठकर निरर्थक बातें नहीं लिखनी चाहिए," वह अचानक गंभीर भाव से एंड्री और रोजमोंडे की ओर मुड़ते हुए चिल्लाई।

"मुझे आज सुबह गिज़ेल से मिला पत्र आपको दिखाना चाहिए। मैं कितनी मूर्ख हूँ; यह पत्र इतने समय से मेरी जेब में पड़ा था—और आप सोच भी नहीं सकतीं कि यह हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।" गिज़ेल ने अपनी प्रमाण पत्र परीक्षा में लिखे निबंध की एक प्रति अपनी सहेली

को दे दी थी, ताकि वह इसे दूसरों तक पहुँचा सके। अल्बर्टीन को परीक्षा के विषयों की कठिनाई के बारे में जो आशंका थी, वह गिज़ेल द्वारा चुने गए दो विषयों को देखकर पूरी तरह से सही साबित हुई। पहला विषय था: "सोफोक्लेस, 'द शेड्स' से, रैसीन को अथाली की असफलता पर सांत्वना देने के लिए पत्र लिखते हैं"; दूसरा: "मान लीजिए कि एस्थर के पहले प्रदर्शन के बाद, श्रीमती डी सेविग्ने, श्रीमती डी ला फायेट को पत्र लिखकर बता रही हैं कि उन्हें उनकी अनुपस्थिति का कितना अफसोस है।" अब गिज़ेल ने अत्यधिक उत्साह में आकर, जो परीक्षकों के दिलों को छू जाना चाहिए था, पहले विषय को चुना था, जो दोनों विषयों में से अधिक कठिन था, और उसने इसे इतनी असाधारण कुशलता से हल किया था कि उसे चौदह अंक मिले थे और बोर्ड ने उसकी प्रशंसा की थी। अगर स्पेनिश के प्रश्नपत्र में उसका प्रदर्शन खराब न हुआ होता तो उसे विशेष सम्मान भी मिलता। गिज़ेल ने अब उसे निबंध की एक प्रति भेजी थी, जिसे अल्बर्टीन ने तुरंत हमें पढ़कर सुनाया, क्योंकि उसे भी जल्द ही वही परीक्षा देनी थी, इसलिए वह एंड्री से राय लेने के लिए उत्सुक थी, जो उन सभी में सबसे होशियार थी और शायद उसे कुछ अच्छे सुझाव दे सकती थी। अल्बर्टीन ने टिप्पणी की, "उसे थोड़ी किस्मत का साथ मिला!" "यह वही विषय है जिसकी उसकी फ्रेंच शिक्षिका ने उसे यहाँ रहते हुए खूब तैयारी करवाई थी।" सोफोक्लीज द्वारा रेसीन को लिखा गया पत्र, जिसे गिसेले ने तैयार किया था, इस प्रकार था: "मेरे प्रिय मित्र, मुझे क्षमा करें कि मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से परिचित हुए बिना आपसे बात कर रहा हूँ, लेकिन आपकी नवीनतम त्रासदी, एथली, यह दर्शाती है, है ना, कि आपने मेरी साधारण रचनाओं का गहन अध्ययन किया है। आपने न केवल नाटक के मुख्य पात्रों के मुख में कविता पिरोई है, बल्कि आपने अन्य, और मैं आपको बिना चापलूसी के बता दूँ, मनमोहक छंदों की रचना

की है, जो ग्रीक त्रासदी में काफी प्रचलित थी, लेकिन फ्रांस में यह बिल्कुल नई बात है। इतना ही नहीं, आपकी प्रतिभा जो हमेशा इतनी धाराप्रवाह, इतनी परिपूर्ण, इतनी आकर्षक, इतनी उत्कृष्ट, इतनी कोमल रही है, उसने यहाँ एक ऐसी ऊर्जा प्राप्त कर ली है जिसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। एथली, जोआड—ये ऐसे पात्र हैं जिन्हें आपके प्रतिद्वंद्वी कॉर्नेल भी इससे बेहतर नहीं बना सकते थे। पात्र पौरुषमय हैं, कथानक सरल और सशक्त है। आपने हमें एक ऐसी त्रासदी दी है जिसमें प्रेम ही सब कुछ नहीं है।" मुख्य भाषण के लिए, और इस पर मैं आपको अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ। सबसे प्रचलित कहावतें हमेशा सत्य नहीं होतीं। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ:

'यह भावुकतापूर्ण प्रेम, जो कवि की कला को जीवंत बनाता है'
जैसे पंखों पर उड़ते हुए सीधे श्रोता के दिल तक पहुँचो।

आपने हमें दिखाया है कि आपके गीतों में व्याप्त धार्मिक भावना भी हमें उतना ही भावुक कर सकती है। आम जनता शायद पहले तो असमंजस में रही होगी, लेकिन जो लोग सही निर्णय लेने के योग्य हैं, वे आपको आपका हक जरूर देंगे। मुझे आपको हार्दिक बधाई देने का मन हुआ है, और मेरे प्रिय कवि भाई, मैं आपके प्रति अपना सर्वोच्च सम्मान व्यक्त करना चाहूंगी। अल्बर्टीन की आँखें, जब वह हमें यह पढ़ रही थीं, तब भी चमक रही थीं। "सचमुच, ऐसा लगता है जैसे उसने इसे कहीं से नकल किया हो!" अंत तक पहुँचते ही वह बोलीं। "मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ होगा कि गिज़ेल इतनी अच्छी रचना कर सकती है! और वह कविता का जो समावेश करती है!" उसे ये सब कहाँ से मिला होगा?” अल्बर्टीन की प्रशंसा, विषय में बदलाव के साथ, लेकिन तीव्रता में कोई कमी नहीं आई, बल्कि वृद्धि हुई, साथ ही कही जा रही बातों पर पूरा ध्यान देने के कारण, उसकी आँखें बार-बार फटी रह गईं, जब एंड्री (जो समूह में सबसे बड़ी

और दूसरों से अधिक जानकार मानी जाती थी) ने पहले तो गिज़ेल के निबंध के बारे में कुछ व्यंग्य के साथ बात की, फिर हल्के-फुल्के लहजे में, जो उसकी अंतर्निहित गंभीरता को छिपा नहीं सका, पत्र को अपने तरीके से पुनर्लेखन करना शुरू किया। “यह बुरा नहीं लिखा गया है,” उसने अल्बर्टीन से कहा, “लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होती और मुझे यही विषय दिया जाता, जो कि काफी संभव है, क्योंकि उन्हें अक्सर ऐसा ही विषय दिया जाता है, तो मैं इसे इस तरह नहीं करती। मैं इसे इस तरह से करती। खैर, सबसे पहले, अगर मैं गिज़ेल होती, तो मैं खुद को इसमें उलझने नहीं देती, मैं एक अलग कागज पर जो लिखने जा रही थी उसका एक मोटा-मोटा खाका बनाकर शुरुआत करती।” सबसे ऊपर मुझे प्रश्न बताना चाहिए और विषय का संक्षिप्त विवरण देना चाहिए, फिर विकास में शामिल किए जाने वाले सामान्य विचारों को प्रस्तुत करना चाहिए। उसके बाद, प्रशंसा, शैली और निष्कर्ष। इस तरह, एक सारांश के साथ, आपको पता रहेगा कि आप कहाँ हैं। लेकिन बिल्कुल शुरुआत में, जहाँ वह विषय का विवरण देना शुरू करती है, या, अगर आप चाहें तो, टिटाइन, क्योंकि हम एक पत्र की बात कर रहे हैं, जहाँ वह मुख्य मुद्दे पर आती है, गिज़ेल पूरी तरह से भटक गई है। सत्रहवीं शताब्दी के किसी व्यक्ति को लिखते हुए, सोफोक्लीज को कभी भी 'मेरे प्रिय मित्र' नहीं कहना चाहिए था। "क्यों, बिल्कुल, उसे 'मेरे प्रिय रेसीन' कहना चाहिए था," अल्बर्टीन ने आवेग में कहा। "यह कहीं बेहतर होता।" "नहीं," एंड्री ने अपने लहजे में थोड़ा व्यंग्य करते हुए उत्तर दिया, "उसे 'महोदय' लिखना चाहिए था।" इसी तरह, अंत में, उसे कुछ ऐसा सोचना चाहिए था, 'मुझे अनुमति दीजिए, महोदय,' (अधिकतम, 'प्रिय महोदय') कि मैं आपको यह बता सकूँ कि मैं आपका सेवक होने के सम्मान से कितना आदर महसूस करती हूँ।' फिर, गिज़ेल कहती है कि अथाली में गायन एक नई बात है।

वह एस्थर और दो त्रासदियों को भूल रही है, जिन्हें आजकल ज़्यादा पढ़ा नहीं जाता, लेकिन संयोग से इस वर्ष स्वयं प्रोफेसर ने उनका विश्लेषण किया है, इसलिए आपको बस उनका ज़िक्र करना है, क्योंकि वे उनके बारे में सोच रहे हैं, और आप निश्चित रूप से पास हो जाएँगे। मेरा मतलब है रॉबर्ट गैमियर की 'लेस जुइव्स' और मॉन्टक्रिस्टियन की 'ल'अमान'।" एंड्री ने इन शीर्षकों का उल्लेख किया, लेकिन अपने भीतर छिपी परोपकारी श्रेष्ठता की भावना को पूरी तरह छिपा नहीं पाई, जो एक मुस्कान में प्रकट हुई, और वह मुस्कान सचमुच मनमोहक थी। अल्बर्टीन खुद को और रोक नहीं पाई। "एंड्री, तुम सचमुच एक अद्भुत प्रतिभा हो," वह चिल्लाई। "तुम्हें मेरे लिए ये नाम लिख लेने चाहिए।" ज़रा सोचिए, अगर मुझे वो मौका मिल जाए, मौखिक परीक्षा में भी, तो मैं उन्हें तुरंत प्रभावित कर दूँगी और एक ज़बरदस्त छाप छोड़ूँगी। लेकिन अगले दिनों में, जब भी अल्बर्टीन एंड्री से उन दो नाटकों के नाम फिर से बताने की विनती करती ताकि वो उन्हें लिख सके, तो उसकी पढ़ी-लिखी सहेली दुर्भाग्य से उन्हें भूल जाती और उसे कुछ भी पता नहीं चलता। "और एक बात," एंड्री ने अपने से बहुत छोटी सहेलियों के प्रति थोड़ी सी तिरस्कार भरी आवाज़ में कहा, हालाँकि उसे उनकी प्रशंसा अच्छी लगती थी और जिस तरह से उसने खुद निबंध लिखा होता, उसे वो हमारी सोच से कहीं ज़्यादा महत्व देती थी, "सोफोक्लीज को हर बात की जानकारी रखनी चाहिए। इसलिए उसे पता होना चाहिए कि अथली का पहला प्रदर्शन आम जनता के सामने नहीं, बल्कि महाराज और कुछ खास दरबारी लोगों के सामने हुआ था।" योग्य न्यायाधीशों के सम्मान के संदर्भ में गिज़ेल जो कहती हैं, वह बिलकुल भी बुरी नहीं है, लेकिन वह थोड़ा और आगे जा सकती थीं। सोफोक्लीज, अब जब वह अमर हो चुके हैं, तो शायद भविष्यवाणी की शक्ति रखते हों और घोषणा करें कि वोल्टेयर के

अनुसार, एथली केवल रेसीन की ही नहीं, बल्कि मानव मन की सर्वोच्च उपलब्धि है। अल्बर्टीन हर शब्द को ध्यान से सुन रही थीं। उनकी आँखें चमक रही थीं। और उन्होंने रोज़मोंडे के संगीत शुरू करने के सुझाव को अत्यंत आक्रोश के साथ अस्वीकार कर दिया। "और इसलिए," एंड्री ने उसी सहज, तटस्थ स्वर में, हल्के व्यंग्य और दृढ़ विश्वास की गर्माहट को मिलाते हुए, निष्कर्ष निकाला, "यदि गिज़ेल ने सबसे पहले उन सामान्य विचारों को ठीक से लिख लिया होता जिन्हें वह विकसित करने जा रही थीं, तो शायद उन्हें वह करने का विचार आता जो मुझे स्वयं करना चाहिए था, यानी सोफोक्लीज के कोरस और रेसीन के धार्मिक प्रेरणा में अंतर को इंगित करना।" मुझे सोफोक्लीज से यह टिप्पणी करवानी चाहिए थी कि यदि रैसीन के कोरस ग्रीक त्रासदी नाटककारों के कोरस की तरह धार्मिक भावना से ओतप्रोत हैं, तो देवता एक जैसे नहीं हैं। जोआड के ईश्वर का सोफोक्लीज के ईश्वर से कोई संबंध नहीं है। और जब हम इस विषय को विस्तार से समझा लेते हैं, तो यह हमें स्वाभाविक रूप से इस निष्कर्ष पर ले आता है: क्या फर्क पड़ता है अगर उनकी मान्यताएं अलग-अलग हैं? सोफोक्लीज इस बात पर जोर देने में संकोच करते। उन्हें रैसीन की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का डर होता, और इसलिए, पोर्ट-रॉयल में अपने गुरुओं के बारे में कुछ उपयुक्त शब्द कहते हुए, वे अपने शिष्य को उसकी काव्य प्रतिभा की उत्कृष्टता पर बधाई देना पसंद करते।

प्रशंसा और ध्यान से अल्बर्टीन इतनी उत्तेजित हो गई थी कि उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे। एंड्री ने एक संभ्रांत महिला की तरह शांत भाव बनाए रखा। खेल शुरू करने से पहले उसने कहा, "प्रसिद्ध आलोचकों के कुछ मत उद्धृत करना भी बुरा नहीं होगा।" अल्बर्टीन ने कहा, "हाँ, मुझे भी यही बताया गया है। उद्धृत करने के लिए सबसे अच्छे आलोचक सेंट-बेउवे और मर्लेट हैं, है ना?" एंड्री ने उससे कहा, "ठीक है, तुम पूरी तरह

गलत नहीं हो। मर्लेट और सेंट-बेउवे बिल्कुल भी बुरे नहीं हैं। लेकिन तुम्हें डेलटूर और गास्क-डेसफोसेस का भी उल्लेख करना चाहिए।" हालाँकि, अल्बर्टीन के बार-बार अनुरोध के बावजूद, उसने इन दो अपरिचित नामों को लिखने से इनकार कर दिया।

इसी बीच मैं उस छोटे से पन्ने के बारे में सोच रहा था जो अल्बर्टीन ने मुझे लिखने के लिए दिए एक कागज़ से फाड़कर दिया था। उस पर उसने लिखा था, "मैं तुमसे प्यार करती हूँ।" और एक घंटे बाद, जब मैं बालबेक की ओर जाने वाले रास्तों से नीचे उतर रहा था, जो मेरी पसंद से थोड़ा ज़्यादा ही ऊँचे थे, तो मैंने खुद से कहा कि मेरा प्यार उसी के साथ होगा।

प्रेम में होने के उन सभी संकेतों की उपस्थिति से संकेतित होने वाली वह अवस्था, जिनसे हम प्रेम को पहचानने के आदी हैं, जैसे कि होटल में छोड़ा गया वह आदेश कि जो भी मुझसे मिलने आए, मुझे न जगाए, सिवाय उन लड़कियों में से किसी एक के, उसके इंतज़ार में मेरे दिल की धड़कन (चाहे मैं उनमें से किसी का भी इंतज़ार कर रहा होता), और उन सुबहों में मेरा क्रोध जब मुझे दाढ़ी बनवाने के लिए कोई नाई नहीं मिला होता और मुझे अल्बर्टीन, रोज़मोंडे या एंड्री के सामने दाढ़ी वाले चेहरे के साथ प्रकट होना पड़ता, निःसंदेह, यह अवस्था, जो किसी एक या दूसरे के विचार मात्र से बार-बार उत्पन्न होती थी, जिसे हम प्रेम कहते हैं, उससे उतनी ही भिन्न थी जितनी कि मानव जीवन से जीव-जंतुओं का जीवन, जहाँ एक अस्तित्व, एक व्यक्तित्व, यदि हम इसे ऐसा कह सकते हैं, कई जीवों में विभाजित होता है। लेकिन प्राकृतिक इतिहास हमें सिखाता है कि पशु जीवन का ऐसा संगठन वास्तव में देखा जा सकता है, और हमारा अपना जीवन, बशर्ते कि हम पहले चरण से आगे बढ़ चुके हों, उन अवस्थाओं की वास्तविकता के बारे में उतना ही स्पष्ट है जिनके बारे में हमें अब तक संदेह नहीं था, जिनसे हमें गुजरना पड़ता है, और फिर हम उन्हें पूरी तरह से

छोड़ सकते हैं। मेरे लिए प्रेम की यह अवस्था एक ही समय में कई लड़कियों के बीच बंटी हुई थी। बंटी हुई—बल्कि अविभाजित कहना बेहतर होगा, क्योंकि अक्सर जो मुझे इतना आनंद देता था, जो बाकी दुनिया से अलग था, जो मेरे लिए इतना अनमोल होता जा रहा था कि कल उसे फिर से पाने की आशा ही मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी थी, वह वास्तव में लड़कियों का पूरा समूह था, जो उन दोपहरों में चट्टानों पर, उन निर्जीव घंटों के दौरान, घास की उस पट्टी पर एक साथ ली गई थीं, जिस पर अल्बर्टीन, रोज़मोंडे, एंड्री के वे रूप थे, जो मेरी कल्पना को इतना उत्तेजित करते थे; और यह कि मैं यह नहीं कह सकता था कि उनमें से कौन सी लड़की थी जिसने उन दृश्यों को मेरे लिए इतना अनमोल बना दिया था, उनमें से किसे मैं सबसे ज्यादा प्यार करने के लिए उत्सुक था। नए प्रेम की शुरुआत हो या अंत, हम केवल उस प्रेम के पात्र से ही नहीं जुड़े होते, बल्कि प्रेम करने की वह इच्छा जिससे वह प्रेम उत्पन्न होगा (और बाद में वह स्मृति जो वह पीछे छोड़ जाता है) मोहक आकर्षणों के एक क्षेत्र में मोहक ढंग से विचरण करती है—शायद ये प्राकृतिक आकर्षण हों, भूख की संतुष्टि हो, अपने परिवेश का आनंद हो—जो आपस में इतने सामंजस्यपूर्ण होते हैं कि उनमें से किसी की भी उपस्थिति में प्रेम स्वयं को बेमेल महसूस नहीं करता। इसके अलावा, चूंकि मेरी उन आकर्षणों के प्रति संवेदनशीलता अभी तक परिचितता से धुंधली नहीं हुई थी, इसलिए मेरे पास उन्हें देखने की क्षमता थी, अर्थात् हर बार जब मैं उनकी उपस्थिति में होता था तो एक गहन आश्चर्य का अनुभव करता था। निस्संदेह यह आश्चर्य कुछ हद तक इस तथ्य के कारण होता है कि ऐसे अवसरों पर दूसरा व्यक्ति स्वयं को एक नए रूप में प्रस्तुत करता है; लेकिन हममें से प्रत्येक की विविधता इतनी अधिक है, चेहरे और शरीर की रेखाओं का इतना भंडार है, कि जब हम दूसरे व्यक्ति से अलग हो जाते

हैं, तो हमारी स्मृति की सरलता पर उनमें से बहुत कम ही निशान छोड़ पाती हैं। जैसे हमारा मन किसी ऐसी विशेषता को चुन लेता है जो हमें प्रभावित करती है, उसे अलग कर देता है, उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है, जिससे हमें लंबी दिखने वाली स्त्री का एक ऐसा चित्र बन जाता है जिसमें उसकी आकृति बेतुकी रूप से लंबी दिखाई देती है, या गुलाबी गालों और सुनहरे बालों वाली स्त्री को 'गुलाबी और सुनहरे रंग का सामंजस्य' बना देता है, ठीक उसी क्षण, जब वह स्त्री फिर से हमारे सामने खड़ी होती है, तो वे सभी भूले हुए गुण जो उस एक याद की गई विशेषता के संतुलन को बहाल करते हैं, अपनी जटिल उलझन में हम पर एक साथ हावी हो जाते हैं, उसकी ऊंचाई कम कर देते हैं, उसके गालों को फीका कर देते हैं, और उन विशेषताओं के स्थान पर अन्य विशेषताओं को प्रस्तुत कर देते हैं जिन्हें हम केवल उसे देखने के लिए आए थे, और अब हमें याद आ रहा है कि हमने उन्हें पहली बार देखा था, और हम यह समझने में विफल रहते हैं कि हम उन्हें फिर से देखना कैसे भूल गए। हमें लगा था कि हमें याद है; वह एक मोरनी थी, निश्चित रूप से; हम उसे देखने जाते हैं और हमें एक चमेली का फूल मिलता है। और यह स्वाभाविक आश्चर्य अकेला नहीं है; क्योंकि इसके साथ ही एक और आश्चर्य भी होता है, जो अब स्मृति और वास्तविकता के रूढ़िवादी रूपों के बीच के अंतर से नहीं, बल्कि उस व्यक्ति के बीच के अंतर से उत्पन्न होता है जिसे हमने पिछली बार देखा था और उस व्यक्ति से जो आज हमें एक अलग कोण से दिखाई देता है और हमें एक अलग रूप दिखाता है। वास्तव में, मानव चेहरा, किसी प्राच्य देव-कथा के देवता के चेहरे की तरह, चेहरों का एक पूरा समूह है, जो अलग-अलग सतहों पर एक साथ सटे हुए हैं, ताकि हम उन्हें एक साथ न देख सकें।

लेकिन हमारा आश्चर्य काफी हद तक इस बात से पैदा होता है कि दूसरा

व्यक्ति भी हमें वही चेहरा दिखाता है जो पहले था। हमारे अलावा अन्य चीजों से हमें जो कुछ भी मिला है, उसे फिर से याद करना इतना कठिन होगा—चाहे वह सिर्फ किसी फल का स्वाद ही क्यों न हो—कि जैसे ही हमें वह अनुभूति होती है, हम अनजाने में स्मृति की ढलान पर उतरने लगते हैं और बिना कुछ ध्यान दिए, बहुत कम समय में हम उस चीज़ से बहुत दूर आ जाते हैं जो हमने वास्तव में महसूस की थी। इसलिए हर नई मुलाकात एक तरह का सुधार है, जो हमें उस चीज़ पर वापस ले आता है जो हमने वास्तव में देखी थी। हमें अब इसकी कोई याद नहीं रहती, क्योंकि जिसे हम किसी व्यक्ति को याद करना कहते हैं, वह वास्तव में उसे भूल जाना ही होता है। लेकिन जब तक हम उस पल को देख सकते हैं जब भूला हुआ चेहरा प्रकट होता है, हम उसे पहचान लेते हैं, हम भटकती हुई रेखा को सुधारने के लिए बाध्य होते हैं; इस प्रकार वह निरंतर और फलदायी आश्चर्य जिसने समुद्र तट की मनमोहक युवतियों के साथ मेरे इन दैनिक भ्रमणों को इतना सुखदायक और स्फूर्तिदायक बनाया, वह खोज के साथ-साथ पहचान में भी उतना ही निहित था। जब इसमें उन लड़कियों के मेरे लिए क्या मायने थे, इस बात से उत्पन्न बेचैनी भी जुड़ जाती है, जो कभी भी वैसी नहीं थी जैसा मैंने सोचा था, और जिसका अर्थ यह था कि हमारी अगली मुलाकात की मेरी उम्मीद पिछली मुलाकात की उम्मीद से कहीं अधिक हमारी पिछली बातचीत की अभी भी धड़कती हुई याद से मिलती-जुलती थी, तो यह महसूस होगा कि हमारी प्रत्येक मुलाकात ने मेरे विचारों के प्रवाह को एक हिंसक रूप से बाधित किया और उन्हें उस दिशा से पूरी तरह से हटा दिया, जिसे मैं अपने कमरे के एकांत में आराम से खोज पा रहा था। वह योजनाबद्ध मार्ग भूल गया था, उसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया था, जब मैं घर लौटा तो मधुमक्खियों के छत्ते की तरह उन बातों से गूंज रहा था जिन्होंने मुझे सुनने पर बेचैन

कर दिया था और जो अभी भी मेरे दिमाग में गूंज रही थीं। जब हम दूसरे व्यक्ति को देखना बंद कर देते हैं तो वह नष्ट हो जाता है; जिसके बाद उसका अगला प्रकट होना उसके एक नए रूप का सृजन होता है, जो उससे ठीक पहले वाले से भिन्न होता है, भले ही वह सभी से भिन्न न हो। क्योंकि इन सृजनों में पाया जाने वाला न्यूनतम परिवर्तन द्वैत है। यदि हमारे मन में एक सशक्त और भेदक दृष्टि, एक साहसी भाव है, तो अगली बार जब हम उससे दोबारा मिलेंगे, तो निश्चित रूप से एक अर्ध-सुस्त चेहरे, एक प्रकार की स्वप्निल कोमलता से, जिसे हमने पिछली बार अनदेखा कर दिया था, हम चकित रह जाएंगे, अर्थात् लगभग पूरी तरह से स्तब्ध हो जाएंगे। अपनी स्मृति का सामना नई वास्तविकता से करते हुए, यही हमारे निराशा या आश्चर्य की सीमा को चिह्नित करेगा, यह हमें पिछली वास्तविकता के संशोधित रूप की तरह दिखाई देगा, जो हमें चेतावनी देगा कि हमने इसे सही ढंग से याद नहीं किया था। बदले में, चेहरे का वह रूप जिसे पिछली बार अनदेखा किया गया था, और इसी कारण से इस बार सबसे अधिक प्रभावशाली, सबसे वास्तविक, सबसे अधिक दस्तावेजी, सपनों और स्मृतियों का विषय बन जाएगा। यह एक सुस्त और गोल चेहरा है, एक कोमल, स्वप्निल भाव है जिसे हम अब फिर से देखना चाहेंगे। और फिर, अगली बार, भेदक आँखों, नुकीली नाक, कसे हुए होंठों में जो दृढ़ संकल्प, चरित्र की ऐसी दृढ़ता होगी, वह हमारी इच्छा और उस वस्तु के बीच के अंतर को दूर कर देगी जिससे यह मेल खाती हुई प्रतीत होती है। यह तो स्पष्ट है कि अपने मित्रों से प्रत्येक मुलाकात में बनने वाली मेरी पहली और विशुद्ध शारीरिक छाप के प्रति मेरी यह निष्ठा केवल उनके चेहरे की बनावट तक ही सीमित नहीं थी, जैसा कि पाठक देख चुके हैं कि मैं उनकी आवाज़ों के प्रति भी संवेदनशील था, जो शायद और भी अधिक बेचैन कर देने वाली थीं (क्योंकि आवाज़ न

केवल चेहरे की तरह ही विचित्र और कामुक सतहें प्रस्तुत करती है, बल्कि यह उस अज्ञात, दुर्गम क्षेत्र से निकलती है जिसके मात्र विचार मात्र से ही मन अप्राप्य चुंबनों से भर जाता है)। उनकी आवाज़ें किसी छोटे वाद्य यंत्र की अनूठी ध्वनि के समान थीं, जिसमें वादक ने अपनी सारी कला का संचार किया हो और जो केवल उसी के पास हो। एक आकस्मिक स्वर-लहर से उत्पन्न, उनकी आवाज़ों में अचानक एक गहरा स्वर मुझे तब आश्चर्यचकित कर देता था जब मैं उसे भूल जाने के बाद पहचान लेता था। इतना अधिक कि प्रत्येक नई मुलाकात के बाद मुझे पूर्ण सटीकता सुनिश्चित करने के लिए जो सुधार करने पड़ते थे, वे उतने ही एक संगीतकार या गायन प्रशिक्षक के होते थे जितने कि एक चित्रकार के।

कुछ समय से हमारे बीच जो सामंजस्यपूर्ण सामंजस्य क्षीण हो गया था, वह इन लड़कियों के कारण मेरे भीतर उमड़ी भावनाओं की लहरों के कारण क्षीण हो गया था। लेकिन एक दोपहर जब हम 'फेरेट' का खेल खेल रहे थे, तब वह सामंजस्य अल्बर्टीन के पक्ष में टूट गया। यह चट्टान पर बने एक छोटे से जंगल में हो रहा था। मैं दो लड़कियों के बीच खड़ा था, जो उस छोटे समूह के लिए अजनबी थीं, जिन्हें समूह अपने साथ इसलिए लाया था क्योंकि हम उस दिन सामान्य से बड़ी पार्टी करना चाहते थे। मैं अल्बर्टीन के पड़ोसी, एक युवक को ईर्ष्या से देख रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि अगर मैं उसकी जगह होता, तो मैं अपनी सहेली के हाथों को उन सभी चमत्कारी पलों में छू पाता, जो शायद फिर कभी न लौटें, और यह तो एक महान प्रगति का पहला चरण होता। वैसे भी, इसके संभावित परिणामों के बिना भी, अल्बर्टीन के हाथों का स्पर्श मेरे लिए सुखद होता। ऐसा नहीं था कि मैंने उससे सुंदर हाथ कभी नहीं देखे थे। एंड्री की सहेलियों के समूह में भी, पतली और अधिक सुडौल हाथों वाली सहेलियों का अपना एक निजी जीवन था। वे अपनी

मालकिन के आदेशों का पालन तो करती थीं, पर स्वतंत्र भी थीं, और अक्सर उनके सामने ऐसे खिंची फिरती थीं जैसे किसी तेज़ नस्ल के कुत्ते को पट्टा पहनाया जाता हो, कभी आलस से रुकती थीं, कभी लंबे सपने देखती थीं, कभी अचानक जोड़ों को खींचती थीं। यह देखकर एल्स्टिर ने उनके हाथों के कई चित्र बनाए थे। उनमें से एक चित्र में, जिसमें एंड्री आग पर अपने हाथों को सेंक रही थीं, उनके हाथ, पीछे से आ रही रोशनी के साथ, पतझड़ के दो पत्तों की सुनहरी चमक जैसे लग रहे थे। लेकिन, इन पत्तों से भी अधिक भरे हुए, अल्बर्टीन के हाथ एक पल के लिए झुक जाते, फिर उन्हें थामने वाले हाथ के दबाव का विरोध करते, जिससे एक अनोखी अनुभूति होती थी। अल्बर्टीन के हाथ को दबाने में एक कामुक मिठास थी जो किसी तरह उनकी गुलाबी, लगभग बैंगनी रंग की त्वचा के साथ मेल खाती थी। वह दबाव ऐसा प्रतीत होता था मानो आपको लड़की के अस्तित्व में प्रवेश करने, उसकी इंद्रियों की गहराई में उतरने की अनुमति देता हो, ठीक वैसे ही जैसे उसकी हंसी की गूंज, भले ही कबूतरों की गुटरगू या कुछ जानवरों की आवाजें कितनी भी अशोभनीय क्यों न हों। वह उस प्रकार की स्त्री थी जिसके साथ हाथ मिलाना इतना आनंद देता था कि मनुष्य सभ्यता का आभारी होता था कि उसने युवक-युवती के मिलने पर हाथ मिलाने को एक वैध क्रिया बना दिया। यदि शिष्टाचार के मनमाने नियमों ने हाथ मिलाने की जगह किसी और हावभाव को धारण कर लिया होता, तो मैं अल्बर्टीन के उन अछूत हाथों को दिन-प्रतिदिन इस जिज्ञासा से देखता रहता कि उन्हें छू सकूँ, ठीक वैसे ही जैसे मुझे उसके गालों की सुगंध जानने की जिज्ञासा थी। लेकिन उसके हाथ को अपने हाथों में बेरोकटोक थामे रहने के आनंद में, अगर मैं उसके बगल में होता, तो मैं केवल उस आनंद की कल्पना ही नहीं करता; मेरी शर्म के कारण अब तक दबी हुई कितनी ही बातें, कितने ही अभिव्यक्तियाँ मैं हाथ

के स्पर्श से व्यक्त कर सकता था; उसकी तरफ से, उसके लिए दूसरे दबावों से जवाब देकर मुझे यह दिखाना कितना आसान होता कि वह स्वीकार करती है; क्या मिलीभगत, खुशियों का क्या नज़ारा खुला था! मेरा प्यार उसके साथ बिताए कुछ मिनटों में ही उतना आगे बढ़ सकता था जितना अब तक उसे जानने के पूरे समय में नहीं बढ़ा था। यह महसूस करते हुए कि वे पल बस थोड़े समय के लिए ही टिकेंगे, और तेज़ी से अपने अंत की ओर बढ़ रहे थे, क्योंकि शायद हम इस खेल को ज़्यादा देर तक नहीं खेल पाएंगे, और एक बार यह खत्म हो गया तो बहुत देर हो जाएगी, मैं एक पल भी अपनी जगह पर नहीं रुक सका। मैंने जानबूझकर खुद को अंगूठी के साथ फँसने दिया, और बीच में जाकर, जब अंगूठी गुज़री तो मैंने उसे न देखने का नाटक किया, बल्कि अपनी आँखों से उसकी गति का पीछा किया, उस पल का इंतज़ार करते हुए जब वह अल्बर्टीन के बगल में बैठे युवक के हाथों में आ जाए, जो खुद बेबस हँसी से लोटपोट हो रही थी, और खेल के उत्साह और आनंद में गुलाब की तरह लाल हो रही थी। "अरे वाह, हम सचमुच परियों के जंगल में हैं!" एंड्री ने मुझसे कहा, चारों ओर उगे पेड़ों की ओर इशारा करते हुए, उसकी आँखों में एक ऐसी मुस्कान थी जो केवल मेरे लिए थी और बाकी कलाकारों के सिर के ऊपर से निकल गई, मानो हम दोनों ही इतने चतुर थे कि अपनी भूमिकाओं को दोहरा सकें और अपने खेल के संदर्भ में एक काव्यात्मक टिप्पणी कर सकें। उसने अपनी कल्पना की कोमलता को इतना आगे बढ़ाया कि लगभग अचेतन अवस्था में गाने लगी: "जंगल का नेवला इस रास्ते से गुजरा है, प्यारी देवियों; वह इस रास्ते से गुजरा है, परी वन का नेवला!" उन लोगों की तरह जो लुई सोलहवें की वेशभूषा में पार्टी किए बिना ट्रियानॉन नहीं जा सकते या किसी गीत को उसकी मूल धुन में गाने को उचित समझते हैं। अगर मेरे पास सोचने का समय होता,

तो मुझे निस्संदेह इस नकल में कोई आकर्षण न दिखने का अफसोस होता। लेकिन मेरे विचार कहीं और थे। कलाकार अंगूठी न मिलने पर मेरी मूर्खता पर आश्चर्य जताने लगे। मैं अल्बर्टीन को देख रहा था, इतनी सुंदर, इतनी उदासीन, इतनी खुशमिजाज, जिसे शायद पता न था कि वही मेरी पड़ोसी बनने वाली थी जब आखिरकार मैं सही हाथों में अंगूठी पकड़ लूँगा, एक ऐसी चाल के कारण जिसका उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था, और अगर उसे पता चल जाता तो वह निश्चित रूप से नाराज़ होती। खेल की गहमागहमी में उसके लंबे बाल खुल गए थे और घुंघराले होकर उसके गालों पर गिर पड़े थे, जिससे उसका सूखा भूरा रंग उसके गुलाबी रंग को और भी गहरा कर रहा था। "तुम्हारे बाल लौरा डियांटी, एलेनोर ऑफ गुयेन और उनकी उस वंशज की तरह हैं जो शैतोब्रियां की प्रिय थी। तुम्हें हमेशा अपने बाल ऐसे ही आधे खुले रखने चाहिए," मैंने उसके कान में फुसफुसाया, उसके करीब जाने का बहाना बनाते हुए। अचानक अंगूठी उसके पड़ोसी के पास चली गई। मैं तुरंत उस पर झपटा, उसके हाथ जबरदस्ती खोले और अंगूठी छीन ली; अब उसे घेरे के अंदर मेरी जगह लेनी पड़ी, जबकि मैं अल्बर्टीन के बगल में उसकी जगह पर खड़ा हो गया। कुछ मिनट पहले मैं इस युवक से ईर्ष्या कर रहा था, जब मैंने देखा कि रस्सी पर फिसलते हुए उसके हाथ बार-बार उसके हाथों को छू रहे थे। अब मेरी बारी आ गई थी, मैं इतना शर्मीला था कि कुछ कह नहीं पा रहा था, इतना भावुक था कि इस स्पर्श का आनंद नहीं ले पा रहा था, मुझे अपने दिल की तेज़ और दर्द भरी धड़कन के अलावा कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। एक पल अल्बर्टीन मिलीभगत भरे भाव से मेरी ओर झुकी, उसका गोल और गुलाबी चेहरा, मानो अंगूठी को अपने पास होने का दिखावा कर रही हो, ताकि नेवले को धोखा दे सके और उसे उस दिशा में देखने से रोक सके जहाँ वह उसे देने वाली थी। मैं तुरंत समझ गया कि

अल्बर्टीन की रहस्यमयी, गोपनीय निगाहों का यही एकमात्र उद्देश्य था, लेकिन मुझे थोड़ा झटका लगा जब मैंने देखा कि उसकी आँखों में एक छवि उभर आई—पूरी तरह से काल्पनिक, खेल की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए गढ़ी गई—एक रहस्य की, मेरे और उसके बीच एक समझ की, जो वास्तव में मौजूद नहीं थी, लेकिन उस क्षण से मुझे संभव लगने लगी और जो दिव्य रूप से मधुर होती। जब मैं अभी भी इस विचार में डूबा हुआ था, तभी मुझे अल्बर्टीन के हाथ का हल्का सा स्पर्श महसूस हुआ, और उसकी कोमल उंगली मेरी उंगली के नीचे से होकर रस्सी पर सरक गई। उसी क्षण मैंने उसे आँख मारते हुए देखा, जिसे उसने दूसरों की नज़रों से छुपाने की कोशिश की। पल भर में, आशाओं का एक सैलाब, जो अब तक मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, मेरे भीतर उमड़ पड़ा। "वह इस खेल का फायदा उठाकर मुझे यह एहसास दिला रही है कि वह सचमुच मुझसे प्यार करती है," मैंने मन ही मन सोचा, अत्यधिक खुशी में डूबते हुए, लेकिन जैसे ही मैं उस चरम सुख तक पहुँचा, अल्बर्टीन को गुस्से में बड़बड़ाते हुए सुनकर मैं गिर पड़ा: "तुम इसे क्यों नहीं समझ पा रहे? मैं पिछले एक घंटे से तुम्हें यही जताने की कोशिश कर रही हूँ।" दुःख से स्तब्ध होकर मैंने रस्सी छोड़ दी, नेवला ने वह अंगूठी देखी और उस पर झपट्टा मारा, और मुझे वापस बीच में जाना पड़ा, जहाँ मैं असहाय, हताश खड़ा था, अपने चारों ओर मची हुई उस बेकाबू भीड़ को देख रहा था, सभी खिलाड़ियों की उपहास भरी चीखों से आहत था, जवाब में मुझे हँसना पड़ा जबकि मेरा हँसने का मन ही नहीं था, और अल्बर्टीन बार-बार दोहरा रही थी: "लोग तब तक नहीं खेल सकते जब तक वे ध्यान नहीं देते, और दूसरों के लिए खेल बिगाड़ देते हैं। एंड्री, उससे दोबारा नहीं पूछा जाएगा कि हम कब खेलने वाले हैं; अगर पूछा भी गया, तो मैं नहीं आऊँगी।" एंड्री, जो खेल से ऊपर उठकर, अभी भी अपना 'परी वन' गीत गा रही थी, जिसे रोज़मोंडे ने

भी नकल करते हुए, लेकिन बिना किसी दृढ़ विश्वास के, अल्बर्टीन की शिकायतों से ध्यान हटाने की कोशिश कर रही थी। उसने मुझसे कहा, "हम उन पुराने क्रूनियरों के काफी करीब हैं जिन्हें तुम देखना चाहती थी। देखो, मैं तुम्हें एक प्यारे से छोटे रास्ते से वहाँ ले चलती हूँ, और हम इन मूर्खों को नर्सरी में बच्चों की तरह खेलते रहने देंगे।" चूंकि एंड्री मेरे प्रति बहुत ही विनम्र थी, इसलिए चलते-चलते मैंने अल्बर्टीन के बारे में उसे सब कुछ बता दिया जिससे मुझे लगता था कि मैं उसे आकर्षित करूँगी। एंड्री ने जवाब दिया कि वह भी अल्बर्टीन को बहुत पसंद करती है, उसे आकर्षक मानती है; इसके बावजूद, मेरी ये तारीफें उसे पूरी तरह से पसंद नहीं आईं। अचानक, उस छोटे से नीचे वाले रास्ते पर, मैं रुक गई, मेरे बचपन की एक प्यारी सी याद ने मेरे दिल को छू लिया। मैंने अभी-अभी उस झाड़ी की झुर्रीदार और चमकदार पत्तियों को पहचाना था जो मेरी ओर निकली हुई थीं। वह झाड़ी फूलविहीन थी, अफसोस, क्योंकि वसंत ऋतु समाप्त हो चुकी थी। मेरे चारों ओर दूर के माहों की, रविवार की दोपहरों की, और उन मान्यताओं या गलतियों की अनुभूति छाई हुई थी जिन्हें बहुत पहले भुला दिया गया था। मैं उस अनुभूति को रोकना चाहता था। मैं एक पल के लिए स्थिर खड़ा रहा, और एंड्री ने, मेरे मन के भावों को भलीभांति भांपते हुए, मुझे झाड़ी की पत्तियों से बात करने के लिए छोड़ दिया। मैंने उनसे फूलों के बारे में पूछा, उन नागफनी के फूलों के बारे में जो चंचल छोटी लड़कियों की तरह थे, जिद्दी, उत्तेजक और पवित्र। पत्तियों ने मुझे बताया, "युवतियाँ यहाँ से बहुत समय से चली गई हैं।" और शायद उन्हें लगा कि उन युवतियों का इतना बड़ा मित्र होने का दिखावा करने के बावजूद, मुझे उनकी आदतों के बारे में बहुत कम जानकारी है। एक बड़ा मित्र, लेकिन वह जो अपने वादों के बावजूद इतने वर्षों में उनसे दोबारा मिलने नहीं गया। और फिर भी, जैसे गिलबर्ट

लड़कियों में मेरा पहला प्यार थी, वैसे ही ये फूल मेरे लिए पहला प्यार थे। "हाँ, मुझे सब पता है, वे जून के मध्य में चले जाते हैं," मैंने उत्तर दिया, "लेकिन मुझे वह जगह देखकर बहुत खुशी हो रही है जहाँ वे यहाँ रहते थे। वे मुझसे मिलने भी आए थे, कॉम्ब्रे में, मेरे कमरे में; मेरी माँ उन्हें तब लाई थीं जब मैं बीमार बिस्तर पर था। और हम शनिवार की शाम को भी मिलते थे, मैरी माह की प्रार्थनाओं में। क्या वे यहाँ से उन तक पहुँच सकते हैं?" "ओह, बिल्कुल! क्यों, वे विशेष रूप से हमारी युवतियों को सेंट-डेनिस डू डेज़र्ट में बुलाते हैं, जो यहाँ पास का चर्च है।" "तो, अगर मैं उन्हें अभी देखना चाहूँ?" "ओह, अगले साल मई से पहले नहीं।" "लेकिन मैं आश्वस्त हो सकता हूँ कि वे यहाँ होंगे?" "वे हर साल नियमित रूप से आते हैं।" "बस मुझे नहीं पता कि जगह ढूँढना आसान होगा या नहीं।" "ओह, हाँ! वे युवतियाँ कितनी खुशमिजाज हैं, वे हँसना तभी बंद करती हैं जब वे एक साथ भजन गाती हैं, इसलिए आप उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते, आप रास्ते के दूसरे छोर से ही उनकी गंध से पहचान सकते हैं।"

मैं एंड्री के पास पहुँची और फिर से अल्बर्टीन की तारीफ करने लगी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैंने जिस तरह से जोर देकर कहा था, उसे देखकर वह मेरी बात अपनी सहेली को क्यों नहीं बताएगी। फिर भी, मुझे कभी पता नहीं चला कि अल्बर्टीन को यह बात पता चली थी। एंड्री को दिल की बातों की कहीं ज़्यादा समझ थी, अच्छे व्यवहार की गहरी समझ थी; वह ऐसे इशारे, शब्द या काम ढूंढ लेती थी जिनसे सबसे चतुराई से खुशी मिल सके, ऐसी बात अपने तक ही रखती थी जिससे दुख हो सकता था, दोपहर के खेल या घर पर होने वाली पार्टी या बगीचे की पार्टी को भी त्याग देती थी (और ऐसा दिखाती थी जैसे कोई त्याग ही न हो) ताकि किसी दुखी दोस्त के पास रह सके और उसे दिखा सके कि वह फिजूल की खुशियों के बजाय दोस्त की सादी संगति को ज़्यादा पसंद

करती है; ये उसकी आदत बन चुकी थीं। लेकिन जब कोई उसे थोड़ा और बेहतर तरीके से जान लेता, तो वह कहता कि वह उन साहसी और निडर लोगों जैसी थी जो डरना नहीं चाहते और जिनकी बहादुरी विशेष रूप से सराहनीय होती है। उसके असली स्वभाव में वह उदारता बिल्कुल नहीं थी जो वह नैतिक श्रेष्ठता, संवेदनशीलता या एक सच्चे मित्र होने का प्रमाण देने की नेक इच्छा से हर पल दिखाती थी। जब मैंने अल्बर्टीन और मेरे बीच संभावित स्नेह के बारे में उसकी कही हुई सारी प्यारी बातें सुनीं, तो ऐसा लगा मानो वह इसे साकार करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देगी। हालांकि, महज़ संयोगवश, अल्बर्टीन से मेरा मिलन कराने के लिए उसके पास मौजूद अनेक छोटे-छोटे अवसरों में से उसने ज़रा भी उनका उपयोग नहीं किया, और मैं यह शपथ नहीं ले सकता कि अल्बर्टीन का दिल जीतने के मेरे प्रयास ने—अगर उसकी सहेली को इसे नाकाम करने के लिए गुप्त चालें चलने पर मजबूर नहीं किया—तो कम से कम उसमें एक क्रोध तो ज़रूर जगाया जिसे उसने बड़ी सावधानी से छिपाए रखा और जिसके विरुद्ध उसने अपनी कोमल भावनाओं के कारण भी संघर्ष किया होगा। एंड्री ने जो अनगिनत अच्छाई के गुण दिखाए, वे अल्बर्टीन में नहीं थे, फिर भी मैं एंड्री की अंतर्निहित अच्छाई के बारे में उतना निश्चित नहीं था जितना कि बाद में अल्बर्टीन के बारे में निश्चित हो गया। अल्बर्टीन की उमंग भरी चंचलता के प्रति हमेशा कोमल भाव से उदार रहते हुए, एंड्री उसका अभिवादन मित्रवत बातों और मुस्कानों से करती थी, और इससे भी बढ़कर, वह हमेशा उसके साथ एक मित्र की तरह व्यवहार करती थी। मैंने उसे दिन-ब-दिन देखा है कि वह अपनी दौलत का लाभ उठाकर, इस बेसहारा दोस्त को कुछ खुशी देने के लिए, बिना किसी स्वार्थ के, उतनी मेहनत करती है जितनी कोई दरबारी अपने राजा का दिल जीतने के लिए करता है। वह हमेशा बेहद सौम्य और भावुक रहती थी, जब आप उससे

कहते कि अल्बर्टीन कितनी गरीब है, तो वह मीठे और मार्मिक भावों से उसे मना लेती थी, और उसके लिए उतनी ही मेहनत करती थी जितनी वह किसी अमीर दोस्त के लिए भी नहीं करती। लेकिन अगर कोई यह इशारा भी कर दे कि अल्बर्टीन शायद उतनी गरीब नहीं है जितना लोग समझते हैं, तो एंड्री की आँखों और माथे की चमक पर उदासी छा जाती; वह चिढ़ जाती। और अगर आप यह कहते कि शायद अल्बर्टीन की शादी उतनी मुश्किल नहीं होगी जितनी लोग सोचते हैं, तो वह आपका पुरजोर विरोध करती और लगभग गुस्से में दोहराती: "अरे नहीं; उसकी कभी शादी नहीं होगी! मुझे पूरा यकीन है; यह मेरे लिए बहुत बड़ी चिंता की बात है!" जहां तक मेरी बात है, एंड्री उन लड़कियों में से इकलौती थी जो मेरे बारे में किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा कही गई कोई भी अप्रिय बात मुझे कभी नहीं बताती; इतना ही नहीं, अगर मैं उसे बताता कि क्या कहा गया है, तो वह ऐसा दिखावा करती जैसे उसे विश्वास ही न हो, या कोई ऐसा स्पष्टीकरण देती जिससे वह बात अपमानजनक न लगे; इन्हीं गुणों के मेल को चतुराई कहते हैं। चतुराई उन लोगों का गुण है जो, अगर हम किसी को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दें, तो हमें बधाई देते हैं और कहते हैं कि वास्तव में इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी; ताकि हमारी नज़रों में उस साहस को और भी बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर सकें जिसे हमने बिना किसी मजबूरी के साबित किया है। वे उन लोगों के बिल्कुल विपरीत हैं जो ऐसी ही परिस्थितियों में कहते हैं: "द्वंद्वयुद्ध लड़ना आपके लिए बहुत कष्टदायक रहा होगा, लेकिन दूसरी ओर आप इस तरह का अपमान सहन नहीं कर सकते थे, और कोई चारा नहीं था।" लेकिन जैसा कि हमेशा होता है, दोनों पक्षों की अपनी-अपनी राय होती है। अगर हमारे दोस्त हमारे बारे में सुनी गई किसी आपत्तिजनक बात को दोहराने में जो खुशी या कम से कम उदासीनता दिखाते हैं, उससे यह साबित होता है कि वे बोलते समय खुद

को हमारी जगह पर नहीं रखते, बल्कि जानबूझकर ऐसा करते हैं जैसे किसी की खाल हो, न कि इंसान की। वे हमेशा हमसे उन बातों को छुपाते रहते हैं जो हमें अप्रिय लग सकती हैं, चाहे वो बातें उन्होंने हमारे कार्यों के बारे में सुनी हों या उन कार्यों के आधार पर बोलने वालों की हमारे बारे में बनी राय हो। इससे यह साबित होता है कि दूसरे तरह के दोस्तों में, जो इतने चतुर होते हैं, छल-कपट की प्रबल प्रवृत्ति होती है। अगर वे वाकई बुराई सोचने में असमर्थ हैं, और दूसरों की कही बातें उन्हें उतना ही कष्ट देती हैं जितना हमें, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। मुझे लगता है कि एंड्री के मामले में भी यही बात थी, हालांकि मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हूं।

हम उस छोटे से जंगल से निकलकर झाड़ियों से भरे रास्तों के जाल में फंस गए थे, जिनमें से एंड्री ने बड़ी कुशलता से अपना रास्ता खोज लिया था। अचानक, "देखो ज़रा," उसने मुझसे कहा, "ये रहे तुम्हारे मशहूर क्रूनियर, और मैं कहती हूँ, तुम भाग्यशाली हो, ये दिन का ऐसा समय है, और रोशनी भी वैसी ही है जैसी एल्स्टर ने इन्हें चित्रित करते समय दी थी।" लेकिन मैं अब भी इस बात से बहुत दुखी था कि 'फेरेट' के खेल के दौरान मैं उम्मीदों की इतनी ऊँचाई से गिर गया था। और इसलिए, जिस आनंद से मुझे अन्यथा अवश्य ही प्रसन्न होना चाहिए था, वह आनंद मुझे तब नहीं मिला जब मैंने लगभग अपने पैरों के नीचे, चट्टानों के बीच दुबकी हुई समुद्री देवियों को देखा, जहाँ वे गर्मी से बचने के लिए शरण लिए हुए थीं। एल्स्टिर ने उनका इंतज़ार किया था और उन्हें वहाँ आश्चर्यचकित कर दिया था। लियोनार्डो द्वारा चित्रित की गई सुंदरता के समान एक गहरे आवरण के नीचे, अद्भुत परछाइयाँ, आश्रय में और गुप्त रूप से, फुर्तीली और मूक, प्रकाश की पहली किरण के साथ ही पत्थर के पीछे सरकने, एक दरार में छिपने के लिए तैयार थीं, और जैसे ही खतरनाक किरण गुजर जाती, वे तुरंत चट्टान या समुद्री शैवाल में वापस लौट जातीं, उस

सूर्य के नीचे जो चट्टानों और रंगहीन महासागर को चूर-चूर कर देता था, जिसकी नींद पर वे मानो पहरा दे रही थीं, गतिहीन हल्के कदमों वाले रक्षक पानी की सतह पर अपने चिपचिपे शरीर और अपनी गहरी नीली आँखों की चौकस दृष्टि को प्रकट कर रहे थे।

हम बाकी लड़कियों को लेने और साथ घर जाने के लिए वापस जंगल में गए। अब मुझे पता चल गया था कि मैं अल्बर्टीन से प्यार करता हूँ; लेकिन, अफसोस! मैंने उसे यह बताने के बारे में सोचा तक नहीं था। ऐसा इसलिए था क्योंकि चैंप्स-एलिसी में हमारे खेलों के दिनों से, प्यार के बारे में मेरी सोच बदल गई थी, भले ही जिन लोगों से मेरा प्यार जुड़ा था, वे लगभग वही रहे हों। एक तो, जिसे मैं प्यार करता था, उससे अपने प्यार का इज़हार करना, उसे बताना अब मुझे प्यार की ज़रूरी और अहम घटनाओं में से एक नहीं लगता था, न ही प्यार खुद एक बाहरी वास्तविकता, बल्कि सिर्फ एक व्यक्तिगत आनंद लगता था। और इस आनंद के बारे में, मुझे लगता था कि अल्बर्टीन इसे पूरा करने के लिए हर संभव कोशिश करेगी, खासकर इसलिए क्योंकि उसे पता नहीं चलेगा कि मैं इसका आनंद ले रहा हूँ।

घर लौटते समय, अन्य लड़कियों से आती रोशनी में नहायी हुई अल्बर्टीन की छवि मेरे मन में बसी हुई थी। लेकिन जैसे दिन के समय चंद्रमा, जो अन्य बादलों की तुलना में एक छोटे से सफेद बादल जैसा दिखता है, दिन ढलते ही अपनी पूरी शक्ति प्रकट कर लेता है, वैसे ही होटल में पहुँचते ही मेरे हृदय से अल्बर्टीन की ही छवि उभरी और चमकने लगी। मेरा कमरा अचानक एक नई जगह जैसा लगने लगा। बेशक, काफी समय से यह वह शत्रुतापूर्ण कमरा नहीं था जो इसमें मेरी पहली रात का था। हम जीवन भर धैर्यपूर्वक अपने परिवेश को बदलते रहते हैं; और धीरे-धीरे, जैसे-जैसे आदत हमें उन्हें महसूस करने से मुक्त करती है, हम रंग, आकार और गंध

के उन हानिकारक तत्वों को दबा देते हैं जो हमारी बेचैनी का कारण थे। अब वह कमरा भी नहीं रहा था, जो अब भी मेरी भावनाओं पर इतना गहरा प्रभाव डालता था कि मुझे कष्ट तो नहीं देता था, लेकिन आनंद देता था; गर्मियों के दिनों का झरना, संगमरमर के बेसिन की तरह, जिसकी पॉलिश की हुई दीवारों पर नीले रंग की रोशनी झलकती थी, जिस पर एक पल के लिए, गर्मी की लहर की तरह अगोचर और सफेद, एक धुंधली और क्षणभंगुर बादल सी मंडराती थी; वह कमरा नहीं था, जो पूरी तरह से सौंदर्यपूर्ण था और शाम के चित्रों से भरा होता था; यह वह कमरा था जिसमें मैं इतने दिनों से था कि अब मुझे वह दिखाई ही नहीं देता था। और अब मैं धीरे-धीरे उसे फिर से देखने लगा था, लेकिन इस बार प्रेम के स्वार्थी नजरिए से। मुझे यह सोचकर अच्छा लगता था कि एक कोने में लगा बड़ा सा सुंदर दर्पण, और कांच के मुखौटे वाली खूबसूरत किताबों की अलमारियां, अगर अल्बर्टीन मुझसे मिलने आती, तो उसे मेरे बारे में अच्छी राय देतीं। मेरे लिए कुछ मिनटों के लिए रुकने की जगह होने के बजाय, जहां मैं समुद्र तट या रिवेबेल जाने से पहले ठहरती थी, मेरा कमरा मेरे लिए वास्तविक और प्रिय बन गया, उसने खुद को नए सिरे से गढ़ा, क्योंकि मैंने अल्बर्टाइन की नजरों से उसके फर्नीचर की हर वस्तु को देखा और उसकी सराहना की।

'फेरेट' के खेल के कुछ दिनों बाद, जब हम कुछ ज़्यादा ही दूर भटक गए थे और सौभाग्य से मेनविले में हमें दो-दो सीटों वाले दो छोटे-छोटे कमरे मिल गए थे, जिससे हम रात के खाने तक वापस आ सके, तो अल्बर्टीन के लिए मेरा पहले से ही तीव्र प्रेम और भी बढ़ गया था। इसका सबसे पहला प्रभाव यह हुआ कि मैंने बारी-बारी से रोज़मोंडे और एंड्री को ही अपना साथी बनने के लिए आमंत्रित किया, अल्बर्टीन को कभी नहीं। इसके बाद, एंड्री या रोज़मोंडे के प्रति अपनी स्पष्ट प्राथमिकता के बावजूद,

मैंने समय और दूरी, लबादे आदि जैसी गौण बातों का हवाला देते हुए, सभी को यह निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया, मानो मेरी इच्छा के विरुद्ध, कि सबसे व्यावहारिक नीति यही है कि मैं अल्बर्टीन को अपने साथ ले जाऊं, जिसकी संगति में मैंने अच्छे या बुरे के लिए खुद को समर्पित करने का दिखावा किया। दुर्भाग्य से, चूंकि प्रेम दूसरे व्यक्ति को पूरी तरह से आत्मसात कर लेता है, जबकि अन्य लोग केवल बातचीत से ही वश में नहीं हो जाते, इसलिए घर लौटते समय अल्बर्टीन मेरे प्रति यथासंभव मित्रवत रही (और वास्तव में थी भी)। जब मैंने उसे उसके घर के दरवाजे पर छोड़ा, तो वह मुझे खुश तो छोड़कर गई, लेकिन उसके लिए मेरी चाहत पहले से भी कहीं ज़्यादा बढ़ गई थी। मैंने साथ बिताए पलों को महज़ एक प्रस्तावना समझा, आने वाले पलों के आगे उनका महत्व न के बराबर था। फिर भी, इस प्रस्तावना में वो शुरुआती आकर्षण था जो दोबारा नहीं मिलता। मैंने अभी तक अल्बर्टीन से कुछ नहीं माँगा था। वह समझ सकती थी कि मैं क्या चाहता हूँ, लेकिन निश्चित न होने के कारण, वह सोचती कि मैं बिना किसी निश्चित उद्देश्य के सिर्फ़ रिश्ते बनाना चाहता हूँ, जिसमें मेरी सहेली को वो सुखद अस्पष्टता मिलेगी, जो उम्मीदों की आश्चर्यजनक पूर्ति से भरपूर होती है, और यही सच्चा रोमांस है।

अगले सप्ताह मैंने अल्बर्टीन से मिलने की शायद ही कोशिश की। मैंने दिखावे के तौर पर एंड्री को प्राथमिकता दी। प्रेम जन्म लेता है; जिसे हम प्यार करते हैं, उसके लिए, उस अनजान के लिए जिसे वह भी बदले में प्यार कर सकती है, हम बने रहना चाहते हैं, लेकिन हमें उसकी ज़रूरत होती है, हमें उसके शरीर से ज़्यादा उसके ध्यान, उसके दिल से संपर्क की ज़रूरत होती है। हम पत्र में कुछ द्वेषपूर्ण बातें लिख देते हैं जो उदासीन पाठक को बदले में थोड़ी सी दया की भीख मांगने पर मजबूर कर देती हैं, और प्रेम, एक अपरिवर्तनीय प्रक्रिया का पालन करते हुए, एक ऐसी

मशीनरी को चालू कर देता है जिसमें हम न तो प्रेम करने से खुद को रोक सकते हैं और न ही प्रेम पा सकते हैं। मैंने एंड्री को पार्टी में दूसरों द्वारा बिताए गए घंटे दे दिए, जिन्हें मैं जानता था कि वह मेरे लिए खुशी-खुशी त्याग देगी, और नैतिक शिष्टाचार के कारण अनिच्छा से भी त्याग देती, ताकि न तो दूसरों को और न ही खुद को यह लगे कि वह एक अपेक्षाकृत तुच्छ मनोरंजन को कोई महत्व देती है। मैंने इस तरह से व्यवस्था की कि हर शाम वह पूरी तरह से मेरी ही रहे। मेरा मकसद अल्बर्टीन को ईर्ष्या दिलाना नहीं था, बल्कि उसकी नज़रों में अपनी इज़्ज़त सुधारना था, या कम से कम अल्बर्टीन को यह बताकर अपनी इज़्ज़त को खतरे में न डालना था कि मैं एंड्री से नहीं, बल्कि उससे प्यार करता हूँ। मैंने यह बात एंड्री को भी नहीं बताई, कहीं वह इसे अपनी सहेली को न बता दे। जब मैंने एंड्री से अल्बर्टीन के बारे में बात की, तो मैंने एक तरह की बेरुखी दिखाई, जिससे शायद वह मेरी तुलना में अपनी भोली-भाली बातों से कम धोखा खा गई। उसने ऐसा दिखावा किया जैसे वह अल्बर्टीन के प्रति मेरी उदासीनता पर विश्वास करती हो, और चाहती हो कि अल्बर्टीन और मैं जितना हो सके उतना करीब आ जाएँ। संभव है कि इसके विपरीत, वह न तो इस बात पर विश्वास करती थी और न ही दूसरी बात चाहती थी। जब मैं उससे कह रहा था कि मुझे उसकी सहेली की ज़्यादा परवाह नहीं है, तो मैं बस एक ही बात सोच रहा था, मैडम बोंटेम्प्स से कैसे जान-पहचान बनाऊँ, जो कुछ दिनों के लिए बालबेक के पास ठहरी हुई थीं, और जिनसे अल्बर्टीन जल्द ही मिलने जा रही थी। स्वाभाविक रूप से मैंने एंड्री को अपनी इस इच्छा का पता नहीं चलने दिया, और जब मैंने उससे अल्बर्टीन के परिवार के बारे में बात की, तो मैंने पूरी लापरवाही से बात की। एंड्री के सीधे-सादे जवाबों से मेरी ईमानदारी पर कोई शक नहीं हुआ। फिर अचानक उसी समय वह क्यों बोल पड़ी: "अरे, अंदाज़ा लगाओ मैंने अभी

किसे देखा है—अल्बर्टीन की चाची!" यह सच है कि उसने सीधे-सीधे ये नहीं कहा था: "तुम्हारी बातों से मुझे साफ समझ आ गया था कि तुम असल में यही सोच रहे थे कि अल्बर्टीन की चाची से दोस्ती कैसे की जाए।" लेकिन 'अभी-अभी' शब्द से साफ लग रहा था कि एंड्री के मन में कुछ ऐसा ही विचार चल रहा था जिसे वह मुझसे छुपाना ही बेहतर समझ रही थी। यह कुछ खास तरह की निगाहों और इशारों जैसा था, जो भले ही तार्किक, विवेकपूर्ण या जानबूझकर श्रोता की बुद्धि के अनुरूप न हों, फिर भी अपने असली अर्थ में श्रोता तक पहुँच जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे टेलीफोन में विद्युत में परिवर्तित मानवीय वाणी कान तक पहुँचते ही पुनः वाणी में बदल जाती है। एंड्री के मन से यह विचार मिटाने के लिए कि मुझे श्रीमती बोंटेम्प्स में रुचि थी, मैंने उस समय से उनके बारे में न केवल लापरवाही से, बल्कि घोर द्वेष के साथ बात करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि मैं उस मूर्ख औरत से एक बार मिल चुका हूँ और मुझे उम्मीद है कि मुझे फिर कभी ऐसा अनुभव नहीं होगा। जबकि मैं हर संभव प्रयास कर रहा था कि उनसे मिलूँ।

मैंने एल्स्टिर को मनाने की कोशिश की (लेकिन किसी और को बताए बिना कि मैंने उससे ऐसा करने को कहा था) कि वह मेरे बारे में उससे बात करे और हम दोनों को मिलवाए। उसने मुझे उससे मिलवाने का वादा किया, हालाँकि मेरी इस इच्छा पर वह बहुत हैरान लग रहा था, क्योंकि वह उसे एक नीच औरत, जन्मजात षड्यंत्रकारी, उतनी ही नीरस और उदासीन समझता था जितनी कि वह रुचिहीन थी। यह सोचते हुए कि अगर मैं श्रीमती बोंटेम्प्स से मिल भी गया, तो एंड्री को इसके बारे में देर-सवेर पता चल ही जाएगा, मैंने उसे पहले से ही आगाह करना बेहतर समझा। मैंने उससे कहा, "जिन चीजों से बचने की हम सबसे ज्यादा कोशिश करते हैं, उन्हीं से बच पाना नामुमकिन होता है। दुनिया में मुझे

श्रीमती बोंटेम्प्स से दोबारा मिलने से ज्यादा उबाऊ कुछ नहीं लग सकता, फिर भी मैं इससे बच नहीं सकता, एल्स्टिर ने हम दोनों को मिलवाने का इंतजाम कर दिया है।" एंड्री ने कड़वे स्वर में कहा, "मुझे इस पर एक पल के लिए भी शक नहीं था," और उसकी झुंझलाहट से बड़ी और बदली हुई आँखें किसी अदृश्य वस्तु पर टिक गईं। एंड्री के ये शब्द किसी विचार की नवीनतम अभिव्यक्ति नहीं थे, जिसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता था: "मैं जानती हूँ कि तुम अल्बर्टीन से प्रेम करते हो, और उसके परिवार से संपर्क करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हो।" बल्कि ये कुछ ऐसे ही बिखरे हुए टुकड़े थे, जिन्हें मैंने एंड्री के आत्म-संयम की ढाल के माध्यम से प्रहार करके बिखेर दिया था, और जिन्हें मैंने आसानी से फिर से जोड़ लिया था। उसके 'न्याय' की तरह, इन शब्दों का अर्थ केवल अप्रत्यक्ष था, अर्थात् ये ऐसे शब्द थे जो (सीधे सकारात्मक कथनों के बजाय) हमारे मन में दूसरे व्यक्ति के लिए सम्मान या अविश्वास जगाते हैं, और एक दरार पैदा करते हैं।

अगर एंड्री ने मेरी बात पर यकीन नहीं किया जब मैंने उसे बताया कि अल्बर्टीन के रिश्तेदारों से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, तो इसकी वजह यह थी कि उसे लगा कि मैं अल्बर्टीन से प्यार करता हूँ। और शायद वह यह सोचकर खुश भी नहीं थी।

वह आमतौर पर अपनी सहेली के साथ मेरी मुलाकातों में एक तीसरे पक्ष के रूप में मौजूद रहती थी। फिर भी, कुछ दिन ऐसे भी थे जब मुझे अल्बर्टीन से अकेले में मिलना होता था, ऐसे दिन जिनका मैं बेसब्री से इंतज़ार करता था, लेकिन वे दिन बिना किसी निर्णायक नतीजे के बीत जाते थे, उनमें से कोई भी ऐसा महत्वपूर्ण दिन नहीं था जिसकी भूमिका मैं तुरंत आने वाले दिन पर छोड़ देता, जो कि उससे भी कम उपयुक्त साबित होता; इस प्रकार, समुद्र की लहरों की तरह, एक के बाद एक वे

शिखर ढहते और गिरते चले जाते, जिनकी जगह तुरंत दूसरे शिखर ले लेते।

जिस दिन हम दोनों ने मिलकर 'छुपकर बातें करने' का खेल खेला था, उसके लगभग एक महीने बाद मुझे पता चला कि अल्बर्टीन अगली सुबह श्रीमती बोंटेम्प्स के साथ कुछ दिन बिताने के लिए जा रही है, और चूंकि उसे जल्दी निकलना था, इसलिए वह उस रात ग्रैंड होटल में सोने आ रही है। वहां से वह बस लेकर, अपने दोस्तों को परेशान किए बिना, सुबह की पहली ट्रेन पकड़ सकेगी। मैंने यह बात एंड्री को बताई। उसने झुंझलाहट भरे लहजे में जवाब दिया, "मुझे इस पर ज़रा भी यकीन नहीं है। वैसे भी इससे तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा, क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि अगर अल्बर्टीन अकेले होटल जाएगी तो वह तुमसे मिलना नहीं चाहेगी। यह 'नियम' के खिलाफ होगा," उसने आगे कहा, और हाल ही में प्रचलित एक विशेषण का प्रयोग किया, जिसका अर्थ था 'जो किया जाता है'। "मैं तुम्हें यह इसलिए बता रही हूं क्योंकि मैं अल्बर्टीन को समझती हूं। तुम्हें क्या लगता है कि इससे मुझे क्या फ़र्क पड़ता है कि तुम उससे मिलो या न मिलो? ज़रा भी नहीं, मैं तुम्हें यकीन दिला सकती हूं!"

हमारे साथ ऑक्टेव भी शामिल हो गया, जिसने एंड्री को यह बताने में ज़रा भी संकोच नहीं किया कि उसने कल गोल्फ़ में कितने स्ट्रोक लगाए थे। फिर अल्बर्टीन भी आ गई, जो चलते-चलते अपनी डायबोलो गिन रही थी, मानो कोई नन अपनी माला जप रही हो। इस शौक की बदौलत वह घंटों अकेले रह सकती थी और उसे कभी ऊब नहीं होती थी। जैसे ही वह हमारे साथ आई, मुझे उसकी नाक की ज़िद्दी नोक का एहसास हुआ, जिसे मैंने पिछले कुछ दिनों से उसकी छवि से मिटा दिया था; उसके काले बालों के नीचे उसकी भौंहों का सीधा उभार, और यह पहली बार नहीं था, मेरी उसकी धुंधली छवि को झकझोर रहा था, जबकि उसकी सफेदी मेरी

नज़रों के सामने एक जीवंत चमक बिखेर रही थी; यादों की धूल से निकलकर, अल्बर्टीन मेरी आँखों के सामने नए सिरे से उभर आई। गोल्फ़ अकेलेपन के सुखों का स्वाद चखाता है। डायबोलो से मिलने वाला सुख निस्संदेह इन्हीं में से एक है। फिर भी, हमारे साथ शामिल होने के बाद भी, अल्बर्टाइन अपना काम करती रही, ठीक वैसे ही जैसे कोई महिला अपने दोस्तों के आने पर भी अपना क्रोशिया का काम नहीं रोकती। "मैंने सुना है कि श्रीमती डी विलेपारिसिस तुम्हारे पिता से शिकायत कर रही हैं," उसने ऑक्टेव से कहा। मैं उस शब्द के पीछे अल्बर्टाइन की एक खास आवाज़ सुन सकता था; हमेशा, जैसे ही मुझे यकीन हो जाता था कि मैं उन्हें भूल गया हूँ, मुझे अल्बर्टाइन के दृढ़ और विशिष्ट फ्रांसीसी अंदाज़ की झलक याद आ जाती थी। मैं अंधा भी हो सकता था, फिर भी उन आवाज़ों से, उसकी कुछ विशेषताओं - सतर्क और थोड़ी देहाती - को उतनी ही स्पष्टता से पहचान सकता था, जितनी उसकी नाक की नोक से। ये दोनों विशेषताएँ एक समान थीं और एक दूसरे की जगह ले सकती थीं, और उसकी आवाज़ वैसी ही थी जैसा हमें भविष्य के फोटो-टेलीफोन में देखने को मिलता है; दृश्य छवि ध्वनि में स्पष्ट रूप से झलकती थी। “उसने सिर्फ़ तुम्हारे पिता को ही नहीं लिखा, उसने उसी समय बालबेक के मेयर को भी लिखा, यह कहने के लिए कि हमें मोर्चे पर डायबोलो खेलना बंद कर देना चाहिए क्योंकि किसी ने उसके चेहरे पर डायबोलो से वार किया है।” “हाँ, मैं इसके बारे में सुन रहा था। यह बहुत ही बेवकूफी भरी बात है। यहाँ वैसे भी करने को कुछ खास नहीं है।” एंड्री बातचीत में शामिल नहीं हुई; वह, अल्बर्टीन या ऑक्टेव की तरह, श्रीमती डी विलेपारिसिस से परिचित नहीं थी। हालाँकि, उसने टिप्पणी की: “मुझे समझ नहीं आता कि यह महिला इस पर इतना हंगामा क्यों कर रही है। बूढ़ी श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के चेहरे पर वार हुआ था, और उन्होंने कभी शिकायत नहीं की।”

“मैं अंतर समझाता हूँ,” ऑक्टेव ने गंभीरता से उत्तर दिया, बोलते हुए उसने माचिस जलाई। “मेरा मानना है कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर दुनियादारी जानती हैं, और श्रीमती डी विलेपारिसिस तो बस एक नई अमीर हैं। क्या तुम आज दोपहर गोल्फ़ खेल रहे हो?” और वह हमें छोड़कर चला गया, उसके पीछे एंड्री भी चली गई। अब मैं अल्बर्टीन के साथ अकेला था। “देखो,” उसने कहना शुरू किया, “मैंने अपने बाल अब वैसे ही बनाए हैं जैसे तुम्हें पसंद हैं—मेरी लटों को देखो। सब मुझ पर हंस रहे हैं और किसी को नहीं पता कि मैं किसके लिए ऐसा कर रही हूँ। मेरी चाची भी मुझ पर हंसेगी। लेकिन मैं उन्हें भी नहीं बताऊंगी कि क्यों।” मैंने अल्बर्टीन के गालों पर तिरछी नज़र डाली, जो अक्सर पीले दिखते थे, लेकिन इस तरह देखने पर उनमें खून की एक बहती धारा बह रही थी जो उन्हें चमका रही थी, उन्हें वह चकाचौंध भरी स्पष्टता दे रही थी जो कुछ सर्दियों की सुबहों में होती है जब सूरज की रोशनी में चमकते पत्थर गुलाबी ग्रेनाइट के टुकड़ों की तरह लगते हैं और आनंद बिखेरते हैं। अल्बर्टीन के गालों को देखकर मुझे जो आनंद मिल रहा था वह भी उतना ही तीव्र था, लेकिन इसने मेरे मन में एक और इच्छा जगा दी, जो उसके साथ चलने की नहीं बल्कि उसे अपनी बाहों में लेने की थी। मैंने उससे पूछा कि क्या उसकी योजनाओं के बारे में जो मैंने सुना था वह सही था। "हाँ," उसने मुझसे कहा, "मैं आज रात तुम्हारे होटल में सोऊँगी, और दरअसल मुझे थोड़ी ठंड लग रही है, इसलिए मैं खाने से पहले ही सो जाऊँगी। अगर तुम चाहो तो मेरे बिस्तर के पास आकर बैठ सकते हो और मुझे खाते हुए देख सकते हो, और उसके बाद हम तुम्हारी पसंद का कोई भी खेल खेलेंगे। मैं चाहती थी कि तुम कल सुबह स्टेशन पर आओ, लेकिन मुझे डर है कि यह थोड़ा अजीब लगेगा, मैं एंड्री से नहीं कह रही हूँ, जो एक समझदार इंसान है, बल्कि वहाँ मौजूद बाकी लोगों से कह रही हूँ; अगर मेरी चाची को पता

चल गया, तो मुझे हमेशा के लिए ताने सुनने पड़ेंगे। लेकिन हम किसी भी हालत में शाम साथ बिता सकते हैं। मेरी चाची को इसके बारे में कुछ पता नहीं चलेगा। मुझे जाकर एंड्री को अलविदा कहना है। फिर मिलते हैं। जल्दी आना, ताकि हम साथ में अच्छा समय बिता सकें," उसने मुस्कुराते हुए कहा। इन शब्दों ने मुझे गिलबर्ट से प्यार करने वाले उन दिनों की याद दिला दी, जब प्यार मुझे न केवल एक बाहरी चीज़ लगता था, बल्कि एक ऐसी चीज़ लगती थी जिसे समग्र रूप से महसूस किया जा सकता था। जबकि चैंप्स-एलिसी में मैं जिस गिलबर्ट को देखा करती थी, वह उस गिलबर्ट से बिल्कुल अलग थी जिसे मैंने अपने भीतर तब पाया जब मैं फिर से अकेली थी, अचानक असली अल्बर्टीन में, जिसे मैं हर दिन देखती थी, जिसे मैं मध्यमवर्गीय पूर्वाग्रहों से भरी हुई और अपनी चाची के साथ पूरी तरह से खुली हुई मानती थी, वहाँ काल्पनिक अल्बर्टीन का अवतार था, वह जिसे, जब मैं उसे अभी तक नहीं जानती थी, तो मुझे संदेह था कि वह 'सामने' से मेरी ओर चोरी-छिपे निगाहें डाल रही थी, वह जिसने मुझे दूसरी दिशा में जाते हुए देखकर घर के अंदर जाने में अनिच्छा का भाव धारण कर लिया था।

मैं अपनी दादी के साथ रात के खाने पर गई। मुझे अपने भीतर एक ऐसा रहस्य महसूस हो रहा था जिसका उन्हें कभी अंदाज़ा नहीं हो सकता था। अल्बर्टीन के साथ भी ऐसा ही था; कल उसके दोस्त उसके साथ होंगे, उन्हें पता नहीं होगा कि हम दोनों का एक अनोखा अनुभव था; और जब उसने अपनी भतीजी के माथे पर चुंबन किया, तो श्रीमती बोंटेम्प्स कल्पना भी नहीं कर सकती थीं कि मैं उनके बीच खड़ी थी, अल्बर्टीन के बालों की उस सजावट में, जिसका उद्देश्य, पूरी दुनिया से छिपा हुआ, मुझे आनंद देना था, मुझे जो तब तक श्रीमती बोंटेम्प्स से बहुत ईर्ष्या करती थी क्योंकि, उनकी भतीजी के समान परिवार से संबंधित होने के कारण, उन्हें

भी शोक मनाने के समान अवसर मिलते थे, परिवार के समान मुलाकातों में जाना पड़ता था; और अब मैंने खुद को अल्बर्टीन के लिए उसकी चाची से भी अधिक महत्वपूर्ण पाया। जब वह अपनी चाची के साथ होती, तो वह मेरे बारे में ही सोच रही होती। उस शाम क्या होने वाला था, मुझे ठीक से पता नहीं था। खैर, ग्रैंड होटल, वह शाम, अब मुझे खाली नहीं लगेगी; उनमें मेरी खुशी समाई हुई थी। मैंने लिफ्टवाले को घंटी बजाई और उसे मुझे उस कमरे तक ले जाने को कहा जो अल्बर्टीन ने बुक किया था, एक ऐसा कमरा जहाँ से घाटी का नज़ारा दिखता था। लिफ्ट में बेंच पर बैठने जैसी छोटी-छोटी हरकतें भी मुझे सुकून दे रही थीं, क्योंकि उनका सीधा संबंध मेरे दिल से था; मुझे ऊपर खींचती रस्सियों में, और अभी चढ़नी बाकी कुछ सीढ़ियों में, बस मशीनरी का साकार रूप, मेरी खुशी के चरण ही दिखाई दे रहे थे। अब मुझे गलियारे में बस दो-तीन कदम और चलना था, उस कमरे तक पहुँचने से पहले जिसमें उस गुलाबी आकृति का अनमोल सार समाया हुआ था—वह कमरा, जिसमें अगर कुछ सुखद काम भी किए जाएँ, तो भी किसी अनजान आगंतुक के लिए, जो उसके इतिहास से अनभिज्ञ हो, किसी भी दूसरे कमरे की तरह ही, एक स्थायी अस्तित्व का आभास बनाए रखेगा, जो निर्जीव वस्तुओं को हठपूर्वक मूक गवाह, ईमानदार विश्वासपात्र, और हमारे सुख के अटूट संरक्षक बना देता है। सीढ़ियों से अल्बर्टीन के दरवाजे तक के वे कुछ कदम, वे कुछ कदम जिन्हें उठाने से अब कोई मुझे रोक नहीं सकता था, मैंने खुशी और सावधानी से उठाए, मानो मैं किसी नए और अनोखे वातावरण में उतर गई हूँ, मानो आगे बढ़ते हुए मैं खुशी की बहती धारा को धीरे से विस्थापित कर रही हूँ, और साथ ही साथ पूर्ण शक्ति की एक अजीब सी अनुभूति के साथ, और अंततः उस विरासत में प्रवेश करने की अनुभूति के साथ जो हमेशा से मेरी थी। तभी अचानक मुझे एहसास हुआ कि किसी भी तरह

का संदेह करना गलत था; उसने मुझे बिस्तर पर आने के लिए कहा था। यह बिल्कुल स्पष्ट था; मैं खुशी से उछल पड़ी, लगभग अपने रास्ते में खड़ी फ्रांस्वा को गिरा ही दिया, मैं चमकती आँखों से अपनी सहेली के कमरे की ओर दौड़ी। मैंने अल्बर्टीन को बिस्तर पर पाया। उसका गला खुला हुआ था, उसकी सफेद नाइटगाउन ने उसके चेहरे के अनुपात को बदल दिया था, जो बिस्तर पर होने, सर्दी या खाने के कारण पहले से अधिक गुलाबी लग रहा था; मैंने उन रंगों के बारे में सोचा जो कुछ घंटे पहले मेरे सामने प्रदर्शित हुए थे, जिनका स्वाद अब मुझे अंततः चखने को मिल रहा था; उसके गालों पर उसकी लंबी, काली, घुंघराली लटों में से एक तिरछी सी फैली हुई थी, जिसे उसने मुझे प्रसन्न करने के लिए पूरी तरह खोल दिया था। उसने मेरी ओर देखा और मुस्कुराई। उसके पीछे, खिड़की से, घाटी चाँदनी में जगमगा रही थी। अल्बर्टीन के नंगे गले और उसके उन विचित्र रूप से जीवंत गालों के दृश्य ने मुझे इतना मदहोश कर दिया था (अर्थात् मेरे लिए संसार की वास्तविकता प्रकृति में नहीं, बल्कि मेरी भावनाओं के उस सैलाब में समा गई थी जिसे नियंत्रित रखना मेरे लिए सरासर असंभव था), कि मेरे भीतर प्रवाहित होने वाले विशाल और अविनाशी जीवन और उसकी तुलना में ब्रह्मांड के तुच्छ जीवन के बीच का संतुलन बिगड़ गया था। खिड़की से दिखाई देने वाला समुद्र और घाटी, मेनविले की पहली चट्टान की उभरती चोटियाँ, वह आकाश जिसमें चंद्रमा अभी तक अपने चरम पर नहीं पहुँचा था, ये सब मेरी आँखों के सामने पंख के समान हल्के लग रहे थे। मेरी आँखें पलकों के बीच फैली हुई, प्रतिरोध करती हुई, बहुत अलग-अलग भार उठाने के लिए तैयार थीं - दुनिया के सभी पहाड़ अपनी नाजुक सतह पर। उनकी कक्षा को अब क्षितिज का गोला भी पर्याप्त नहीं लग रहा था। और प्रकृति मुझे जीवन में जो कुछ भी दे सकती थी, वह अत्यंत तुच्छ प्रतीत होता, लहरों की आह

मेरे हृदय में उमड़ रही विशाल आकांक्षा को व्यक्त करने के लिए बहुत छोटी ध्वनि होती। मैं अल्बर्टीन को चूमने के लिए झुका। उस क्षण मृत्यु मुझे जकड़ सकती थी; यह मुझे एक तुच्छ, या बल्कि एक असंभव बात लगती, क्योंकि जीवन बाहर नहीं था, वह मेरे भीतर था। अगर उस समय किसी दार्शनिक ने यह विचार व्यक्त किया होता कि किसी दिन, चाहे कितने भी दूर के दिन, मुझे मरना होगा, कि प्रकृति की बाह्य शक्तियाँ मेरे बाद भी बनी रहेंगी, उस प्रकृति की शक्तियाँ जिनके दिव्य चरणों में मैं धूल के एक कण मात्र हूँ; कि मेरे बाद भी वे वृत्ताकार, उभरती हुई चट्टानें, वह समुद्र, वह चाँदनी और वह आकाश शेष रहेंगे, तो मैं दया से मुस्कुरा देता! यह कैसे संभव था; संसार मुझसे अधिक समय तक कैसे टिक सकता था, क्योंकि वह तो मुझमें ही समाया हुआ था, मुझमें जिसे वह पूरी तरह से भर नहीं पाया, मुझमें, जहाँ इतने सारे अन्य खजाने रखने की जगह होने के बावजूद, मैंने आकाश, समुद्र और चट्टानों को तिरस्कारपूर्वक एक कोने में फेंक दिया था। "बस करो, वरना मैं घंटी बजा दूँगी!" अल्बर्टीन चिल्लाई, जब उसने देखा कि मैं उसे चूमने के लिए उस पर झपट रहा हूँ। लेकिन मैंने खुद को याद दिलाया कि एक लड़की ने किसी युवक को अपने कमरे में चुपके से बुलाया था, ताकि उसकी चाची को पता न चले—और तो और, साहस का फल उन्हें ही मिलता है जो अवसरों का लाभ उठाना जानते हैं; मैं जिस आनंदमय अवस्था में था, उसमें अल्बर्टीन का गोल चेहरा, भीतरी लौ से जगमगाता हुआ, किसी दीपक के कांच के कटोरे की तरह, इतना स्पष्ट हो उठा कि मानो जलते हुए गोले के घूमने की नकल करते हुए, मुझे ऐसा लगा जैसे वह घूम रहा हो, ठीक वैसे ही जैसे माइकल एंजेलो के वे चेहरे जो बवंडर की रुकी हुई तेज उड़ान में बहते हुए गुजर रहे हों। मैं उस सुगंध, उस स्वाद को जानने जा रहा था जो इस विचित्र गुलाबी फल में छिपा था। तभी मुझे एक तेज,

लंबी, तीखी आवाज सुनाई दी। अल्बर्टीन ने पूरी ताकत से घंटी बजा दी थी।

* * *

मैंने सोचा था कि अल्बर्टीन के लिए मेरे मन में जो प्रेम था, वह शारीरिक अधिकार की आशा पर आधारित नहीं था। फिर भी, जब उस शाम के मेरे अनुभव से जो सबक मिला, वह स्पष्ट रूप से यह था कि ऐसा अधिकार असंभव था; जब, उस पहले दिन, समुद्र तट पर, अल्बर्टीन के अपवित्र होने के बारे में मुझे ज़रा भी संदेह नहीं था, और फिर कई मध्यवर्ती धारणाओं से गुज़रने के बाद, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि वह बिल्कुल सदाचारी थी; जब, एक सप्ताह बाद, अपनी चाची के घर से लौटने पर, उसने ठंडे लहजे में मुझसे कहा: "मैं तुम्हें माफ़ करती हूँ; वास्तव में मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें परेशान किया, लेकिन तुम्हें ऐसा फिर कभी नहीं करना चाहिए,"—तब, ब्लोच से यह जानने पर जो मैंने महसूस किया था कि कोई भी हमेशा अपनी पसंद की सभी महिलाओं को पा सकता है, और मानो, एक असली लड़की के स्थान पर, मैं एक मोम की गुड़िया को जानता था, उसके विपरीत, धीरे-धीरे उसके जीवन में प्रवेश करने, उसके बचपन के स्थानों पर उसका अनुसरण करने, उसके द्वारा खेल जीवन में दीक्षित होने की मेरी इच्छा उससे अलग हो गई; इस या उस विषय पर उसके क्या विचार थे, यह जानने की मेरी बौद्धिक जिज्ञासा इस विश्वास के साथ ही समाप्त हो गई कि अगर मैं चाहूँ तो उसे अपनी बाहों में भर सकता हूँ। मेरे सपनों ने उसका साथ छोड़ दिया, जब उनमें उस आशा का पोषण नहीं रहा जिसे मैं स्वतंत्र मानता था। उसके बाद से वे एक बार फिर स्वतंत्र रूप से खुद को व्यक्त करने लगे, उस आकर्षण के अनुसार जो मुझे किसी विशेष दिन उसमें महसूस होता था, और सबसे बढ़कर उन संभावनाओं के अनुसार जो मुझे लगता था कि शायद एक दिन

वह मुझसे प्यार करेगी—अल्बर्टीन के किसी न किसी दोस्त को, और सबसे पहले एंड्री को। फिर भी, अगर अल्बर्टीन न होती, तो शायद मुझे वह आनंद न मिलता जो मुझे आने वाले दिनों में एंड्री द्वारा दिखाई गई दयालुता में धीरे-धीरे और अधिक महसूस होने लगा। अल्बर्टीन ने मुझे मिले उस अपमान के बारे में किसी को नहीं बताया। वह उन खूबसूरत लड़कियों में से एक थी, जो अपनी कम उम्र से ही अपनी सुंदरता, और विशेष रूप से एक ऐसे आकर्षण, उस मोहक जादू से, जो कुछ हद तक रहस्यमय बना रहता है और जिसका स्रोत शायद उस जीवन शक्ति के भंडार में है जिससे प्रकृति द्वारा कम भाग्यशाली अन्य लोग अपनी प्यास बुझाने आते हैं, हमेशा अपने घर, दोस्तों और समाज में अन्य अधिक सुंदर और धनी लड़कियों की तुलना में अधिक आकर्षक साबित हुई हैं; वह उन लोगों में से एक थी जिनसे प्रेम की उम्र से पहले और उसके बाद तो और भी अधिक, बदले में जितना वे मांगते हैं उससे कहीं अधिक, यहाँ तक कि जितना वे दे सकते हैं उससे भी अधिक की अपेक्षा की जाती है। अपने बचपन से ही अल्बर्टीन के चारों ओर चार-पाँच छोटी सहेलियों का एक प्यारा समूह था, जिनमें एंड्री भी शामिल थी, जो उससे कहीं अधिक सुंदर थी और यह जानती भी थी (और शायद अल्बर्टीन का यह आकर्षण, जो पूरी तरह से अनैच्छिक था, उस छोटे समूह की उत्पत्ति, उसकी नींव था)। सामाजिक दूरी के बावजूद भी, तुलनात्मक रूप से कहीं अधिक प्रतिष्ठित सामाजिक हलकों में भी, यह आकर्षण अभी भी प्रबल था। यदि कहीं पावने नृत्य करना होता, तो वे किसी बेहतर परिवार की लड़की से करवाने के बजाय अल्बर्टीन को ही बुलाना पसंद करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि अल्बर्टीन के पास एक पैसा भी नहीं था, वह पहले से ही कठिन जीवन जी रही थी, और ऊपर से एम. बोंटेम्प्स के हाथों में थी, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे आर्थिक रूप से अस्थिर थे और किसी भी तरह

उससे छुटकारा पाना चाहते थे। इसके बावजूद, अल्बर्टीन को न केवल भोजन के लिए बल्कि ठहरने के लिए भी आमंत्रित किया जाता था। सेंट-लूप की नज़र में शायद इन लोगों का कोई विशेष महत्व नहीं था, लेकिन रोज़मोंडे की माँ या एंड्री की माँ के लिए, जो स्वयं बहुत धनी होने के बावजूद इन अन्य और अधिक धनी लोगों को नहीं जानती थीं, उनका महत्व अतुलनीय था। इस प्रकार अल्बर्टीन हर साल कुछ सप्ताह बैंक ऑफ फ्रांस के एक गवर्नर के परिवार के साथ बिताती थी, जो एक बड़ी रेलवे कंपनी के निदेशक मंडल के अध्यक्ष भी थे। इस फाइनेंसर की पत्नी महत्वपूर्ण लोगों का स्वागत करती थी और उसने कभी भी अपने 'दिन' का जिक्र एंड्री की माँ से नहीं किया था। एंड्री की माँ को लगता था कि वह शिष्टता की कमी रखती है, फिर भी उसके घर में होने वाली हर बात में उसकी बहुत रुचि थी। इसलिए वह हर साल एंड्री को अल्बर्टीन को अपने विला में आमंत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करती थी, क्योंकि जैसा कि वह कहती थी, समुद्र किनारे छुट्टी मनाने का प्रस्ताव उस लड़की को देना एक तरह का परोपकार था जिसके पास यात्रा करने के साधन नहीं थे और जिसकी चाची ने उसके लिए कुछ खास नहीं किया था। एंड्री की माँ को शायद यह उम्मीद नहीं थी कि बैंकर और उसकी पत्नी को जब पता चलेगा कि वह और उसकी बेटी अल्बर्टीन का बहुत ख्याल रखती हैं, तो वे दोनों के बारे में अच्छी राय बना लेंगे; और न ही उसे यह उम्मीद थी कि अल्बर्टीन, जो इतनी अच्छी और होशियार थी, उसे या कम से कम एंड्री को फाइनेंसर की पार्टियों में आमंत्रित करवा देगी। लेकिन हर शाम खाने की मेज पर, जब वह थोड़ी सी अवमानना से भरी उदासीनता का भाव धारण करती, तो अल्बर्टीन द्वारा उस बड़े घर में उसके ठहरने के दौरान घटी हर बात और अन्य मेहमानों के नामों के बारे में बताई गई बातों से मंत्रमुग्ध हो जाती थी। लगभग सभी मेहमान ऐसे थे जिन्हें वह चेहरे से या

नाम से जानती थी। सच है, यह सोचकर कि वह उन्हें केवल इस अप्रत्यक्ष तरीके से जानती थी, यानी उन्हें बिल्कुल नहीं जानती थी (वह लोगों को 'पूरी जिंदगी' जानने के इस तरीके को 'जीवन भर' जानने जैसा' कहती थी), एंड्री की माँ को थोड़ी उदासी छा जाती थी जब वह अल्बर्टीन से उनके बारे में ऊंचे और दूर के लहजे में, होंठ बंद करके सवाल पूछती थी। अगर वह खुद को आश्वस्त न कर पाती और 'जीवन की वास्तविकताओं' में सुरक्षित रूप से वापस न लौट पाती, तो शायद वह अपनी सामाजिक स्थिति के महत्व को लेकर संशय और बेचैनी महसूस करती। फिर वह बटलर से कहती: "कृपया रसोइए से कहिए कि उसने मटर को ठीक से नरम नहीं बनाया है।" इसके बाद वह शांत हो जाती। और वह इस बात पर पूरी तरह दृढ़ थी कि एंड्री की शादी केवल एक ऐसे पुरुष से हो जो सबसे अच्छे परिवार का हो और इतना धनी हो कि वह भी एक रसोइया और दो कोचवान रख सके। यही 'सत्ता' का पुख्ता सबूत था, व्यावहारिक संकेत था। लेकिन यह तथ्य कि अल्बर्टीन ने ग्रामीण इलाके में बैंकर के घर पर किसी न किसी प्रतिष्ठित महिला के साथ भोजन किया था, और उस प्रतिष्ठित महिला ने लड़की को अगली सर्दियों में अपने घर पर रहने के लिए आमंत्रित किया था, अल्बर्टीन द्वारा एंड्री की माँ के प्रति दिखाई गई विशेष सहानुभूति को अमान्य नहीं करता था, जो उसकी दुर्भाग्यपूर्ण कहानी से उत्पन्न दया और यहाँ तक कि घृणा के साथ पूरी तरह मेल खाती थी, यह घृणा इस तथ्य से और भी बढ़ गई थी कि एम. बोंटेम्प्स ने अपने उद्देश्य के साथ विश्वासघात किया था (लोग कहते थे कि वह अस्पष्ट रूप से पनामी समर्थक था) और सरकार का साथ दिया था। फिर भी, यह बात एंड्री की माँ को, अमूर्त सत्य के प्रति अपने जुनून में, उन लोगों को तिरस्कार से भर देने से नहीं रोक पाई जो यह मानते थे कि अल्बर्टीन साधारण परिवार से थी। "क्या कह रहे हो? अरे, वे तो देश के सबसे

प्रतिष्ठित परिवारों में से एक हैं। साइमोनेट, जिसमें सिर्फ एक 'n' है, जानते हो!" बेशक, उस सामाजिक वर्ग को देखते हुए जिसमें यह सब चल रहा था, जहाँ पैसा इतना महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और महज़ आकर्षण से लोग आपको डेट पर तो बुलाते हैं लेकिन शादी नहीं करते, अल्बर्टीन के लिए एक 'आरामदायक' शादी उस प्रतिष्ठित संरक्षण का व्यावहारिक परिणाम नहीं लग रही थी जिसका वह आनंद ले रही थी, लेकिन जो उसकी गरीबी की भरपाई नहीं कर सकता था। लेकिन फिर भी, बिना किसी वैवाहिक संभावना के, समाज में अल्बर्टीन की 'सफलता' ने कुछ द्वेषपूर्ण माताओं में ईर्ष्या जगा दी, जो बैंकर की पत्नी और यहाँ तक कि एंड्री की माँ द्वारा उसे परिवार के सदस्य की तरह स्वीकार किए जाने पर क्रोधित थीं, जबकि वे दोनों खुद उन्हें ठीक से जानती भी नहीं थीं। इसलिए उन्होंने उन महिलाओं और अपनी सहेलियों को बताना शुरू कर दिया कि अगर दोनों महिलाओं को सच्चाई पता चल जाए तो वे बहुत नाराज़ होंगी। सच्चाई यह थी कि अल्बर्टीन ने उन दोनों को वह सब कुछ बता दिया था जो उसने जल्दबाजी में मिली अंतरंगता के कारण दूसरी महिला के घर में छुपकर पता लगाया था - हज़ारों छोटे-छोटे रहस्य, जिन्हें सार्वजनिक होने पर संबंधित पक्ष को बेहद बुरा लगेगा। इन ईर्ष्यालु महिलाओं ने ऐसा इसलिए कहा ताकि यह बात दोहराई जाए और अल्बर्टीन अपने संरक्षकों के साथ मुसीबत में पड़ जाए। लेकिन, जैसा कि अक्सर होता है, उनकी चालें नाकाम रहीं। उनकी दुर्भावना स्पष्ट थी, और इसका एकमात्र परिणाम यह हुआ कि जिन महिलाओं ने यह योजना बनाई थी वे पहले से कहीं अधिक तिरस्कारपूर्ण प्रतीत हुईं। एंड्री की माँ अल्बर्टीन के बारे में अपनी राय पर इतनी अडिग थीं कि अब अपना विचार बदलने को तैयार नहीं थीं। वह उसे एक 'बेचारी' मानती थीं, लेकिन सबसे अच्छे स्वभाव वाली लड़की, जो दूसरों को खुश करने के लिए कुछ भी

कर सकती थी।

अगर अल्बर्टीन को मिली यह चुनिंदा लोकप्रियता किसी व्यावहारिक परिणाम की ओर ले जाने वाली प्रतीत नहीं होती, तो भी इसने एंड्री की सहेली को उन लोगों की विशिष्ट पहचान दे दी थी, जो हमेशा लोगों की चाहत में रहते हैं और खुद को कभी पेश करने की ज़रूरत महसूस नहीं करते। ये पहचानें (जो सामाजिक स्तर के दूसरे छोर पर फैशन जगत के नेताओं में भी इसी तरह पाई जाती हैं) इस बात में निहित हैं कि वे अपनी सफलताओं का प्रदर्शन नहीं करते, बल्कि उन्हें अपने तक ही सीमित रखते हैं। वह कभी किसी से नहीं कहतीं: "फलां व्यक्ति मुझसे मिलना चाहता है," वह हर किसी के बारे में अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से बात करतीं, मानो वह खुद दूसरों के पीछे भाग रही हों, दूसरों को जानने की कोशिश कर रही हों, न कि वे। अगर आप किसी ऐसे युवक की बात करें, जिसने कुछ मिनट पहले ही उनसे निजी बातचीत में मिलने से इनकार करने पर उनकी जमकर आलोचना की थी, तो वह सार्वजनिक रूप से इसका ऐलान करने या कोई नाराजगी जताने के बजाय उसका बचाव करतीं: "वह कितना अच्छा लड़का है!" दरअसल, जब वह लोगों को आकर्षित करती थी तो उसे बहुत बुरा लगता था, क्योंकि इससे उसे उन्हें निराश करना पड़ता था, जबकि उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति हमेशा दूसरों को प्रसन्न करने की थी। उसे दूसरों को प्रसन्न करने में इतना आनंद आता था कि उसने एक खास तरह का झूठ अपना लिया था, जो उपयोगितावादियों और सफल लोगों में पाया जाता है। यह कपटपूर्ण व्यवहार अनेक लोगों में प्रारंभिक अवस्था में मौजूद होता है, और इसमें एक व्यक्ति के प्रति विनम्रता के एक कार्य से मिलने वाले आनंद को एक ही व्यक्ति तक सीमित न रख पाना शामिल है। उदाहरण के लिए, यदि अल्बर्टीन की चाची चाहतीं कि उनकी भतीजी उनके साथ एक ऐसे समारोह में चले जहाँ

ज्यादा रौनक नहीं थी, तो अल्बर्टीन के लिए अपनी चाची को प्रसन्न करने का नैतिक लाभ ही काफी हो सकता था। लेकिन मेज़बान द्वारा विनम्रतापूर्वक स्वागत किए जाने पर, उसने उनसे यह कहना बेहतर समझा कि वह उनसे बहुत समय से मिलना चाहती थी और अंततः इस अवसर का लाभ उठाकर उसने अपनी चाची से उनके समारोह में चलने का अनुरोध किया। इतना भी पर्याप्त नहीं था: उसी समारोह में अल्बर्टीन की एक सहेली भी थी जो बहुत परेशान थी। "मुझे तुम्हारा यहाँ अकेले रहना अच्छा नहीं लगा। मुझे लगा कि मेरे साथ रहने से तुम्हें अच्छा लगेगा। अगर तुम यहाँ से कहीं और जाना चाहो, तो मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करने को तैयार हूँ; मैं बस इतना चाहती हूँ कि तुम इतनी उदास न दिखो।" - और यह बात सच भी थी। लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि काल्पनिक वस्तु वास्तविक वस्तु को नष्ट कर देती है। उदाहरण के लिए, अल्बर्टीन को अपनी एक सहेली की ओर से एक काम करवाना था, इसलिए वह एक ऐसी महिला से मिलने गई जो उसकी मदद कर सकती थी। लेकिन जब वह दयालु और सहानुभूतिशील महिला के घर पहुँची, तो लड़की ने अनजाने में एक ही काम को कई तरीकों से करने के सिद्धांत का पालन करते हुए, यह दिखाना ज़्यादा अच्छा समझा कि वह वहाँ सिर्फ़ उस महिला से दोबारा मिलने की खुशी के लिए आई है। महिला को बहुत अच्छा लगा कि अल्बर्टीन ने सिर्फ़ दोस्ती के लिए इतनी लंबी यात्रा की। उसे लगभग भावुक होते देख, अल्बर्टीन को वह महिला और भी ज़्यादा पसंद आने लगी। लेकिन, इसका एक अजीब परिणाम निकला: अब उसे मित्रता का इतना गहरा आनंद महसूस हो रहा था, जिसे वह आने का कारण बता रही थी, कि उसे डर था कि अगर वह अब उससे कोई काम करने के लिए कहेगी, चाहे वह काम कितना भी सच्चा क्यों न हो, तो कहीं वह महिला उसके सच्चे भावों पर शक न कर ले। महिला सोचेगी कि

अल्बर्टीन इसी उद्देश्य से आई थी, जो सच था, लेकिन यह भी सोचेगी कि अल्बर्टीन को उससे मिलने में कोई स्वार्थ नहीं था, जो सच नहीं था। नतीजा यह हुआ कि वह बिना काम मांगे ही वापस लौट गई, ठीक वैसे ही जैसे कोई पुरुष किसी स्त्री को जीतने की उम्मीद में उसके प्रति इतना अच्छा व्यवहार करता है कि वह अपनी अच्छाई को बड़प्पन दिखाने के लिए अपने दिल की बात ज़ाहिर नहीं करता। दूसरे मामलों में यह कहना गलत होगा कि असली उद्देश्य को बाद में सोचे गए विचार के लिए त्याग दिया गया, लेकिन ये दोनों बातें इतनी असंगत थीं कि अगर अल्बर्टीन ने दूसरे विचार को बताकर जिस व्यक्ति का दिल जीता था, उसे पहले विचार के बारे में पता चल जाता, तो उसकी खुशी तुरंत गहरी झुंझलाहट में बदल जाती। इस कहानी में आगे चलकर हमें इस तरह की असंगतता और भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलेगी। फिलहाल, एक बिल्कुल अलग उदाहरण लेते हुए, हम कह सकते हैं कि जीवन की सबसे भिन्न परिस्थितियों में भी यह अक्सर देखने को मिलती है। एक पति ने अपनी रखैल को उस शहर में बसा लिया है जहाँ वह अपनी रेजिमेंट के साथ तैनात है। उसकी पत्नी, जो पेरिस में अकेली रह गई है और सच्चाई का थोड़ा-बहुत अंदाज़ा लगा चुकी है, दिन-ब-दिन दुखी होती जा रही है और ईर्ष्या से भरे कड़वे पत्र अपने पति को लिखती है। खैर; रखैल को एक दिन के लिए पेरिस जाना पड़ता है। पति उसकी बार-बार की विनती को अनसुना नहीं कर पाता और उसके साथ जाने के लिए छुट्टी का आवेदन करता है, जो उसे मिल जाती है। लेकिन क्योंकि वह एक नेक दिल इंसान है और अपनी पत्नी को दुखी नहीं करना चाहता, इसलिए वह उसके पास जाता है और कुछ सच्चे आँसू बहाते हुए उससे कहता है कि उसके पत्रों से हताश होकर उसने अपने कर्तव्यों से दूर होकर उसके पास आने और उसे अपनी बाहों में भरकर सांत्वना देने का रास्ता खोज लिया है। इस प्रकार

उसने एक ही यात्रा में अपनी पत्नी और प्रेमिका दोनों को अपने स्नेह का प्रमाण दे दिया। लेकिन अगर पत्नी को पता चल जाए कि वह पेरिस क्यों आया है, तो उसकी खुशी निस्संदेह दुःख में बदल जाएगी, जब तक कि उस विश्वासघाती को देखने का उसका सुख, हर हाल में, उसके विश्वासघातों से हुए दर्द से कहीं अधिक न हो। इस तरह एक तीर से कई निशाने साधने की रणनीति को सबसे दृढ़ता से अपनाने वाले लोगों में एम. डी नॉरपोइस का नाम अवश्य शामिल है। वह कभी-कभी अपने दो दोस्तों के बीच झगड़ा होने पर मध्यस्थता करने के लिए तैयार हो जाता था, जिसके कारण उसे सबसे मददगार व्यक्ति कहा जाता था। लेकिन उसके लिए केवल यह दिखाना ही काफी नहीं था कि वह अपने उस मित्र की मदद कर रहा है जो उससे मदद मांगने आया था; वह सुलह कराने के लिए उठाए जा रहे कदमों को दूसरे मित्र के सामने इस प्रकार प्रस्तुत करता था कि ये कदम पहले मित्र के अनुरोध पर नहीं बल्कि उसके हित में उठाए गए हैं। उसकी इस निष्ठापूर्ण रवैये से वह किसी भी श्रोता को आश्वस्त करने में कभी कठिनाई महसूस नहीं करता था, जो पहले से ही इस विचार से प्रभावित होता था कि उसके सामने 'सबसे उपयोगी व्यक्ति' है। इस प्रकार, दो भूमिकाओं को बारी-बारी से निभाते हुए, जिसे रंगमंच की भाषा में 'दो भूमिकाएँ दोहराना' कहा जाता है, उसने कभी भी अपने प्रभाव को जरा भी खतरे में नहीं पड़ने दिया, और उसके द्वारा दी गई सेवाएँ पूंजी का व्यय नहीं बल्कि उसकी साख का लाभ थीं। साथ ही, हर सेवा, मानो दो बार दी गई हो, एक सहायक मित्र के रूप में उसकी प्रतिष्ठा को और बढ़ाती थी, और उससे भी बेहतर, एक ऐसे मित्र के रूप में जिसकी हस्तक्षेप क्रियाशील थी, जो जोखिम लेने से नहीं हिचकिचाता था, जिसके प्रयास हमेशा सफल होते थे, जैसा कि दोनों पक्षों की कृतज्ञता से स्पष्ट होता था। सेवाएँ प्रदान करने में यह दोहरापन—हर इंसान के हिस्से में

आने वाली निराशाओं को ध्यान में रखते हुए—श्रीमान डी नॉरपोइस के चरित्र का एक महत्वपूर्ण तत्व था। और अक्सर मंत्रालय में वह मेरे पिता, जो एक सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, का फायदा उठाते हुए उन्हें यह विश्वास दिलाते थे कि वे स्वयं, श्रीमान डी नॉरपोइस, उनके लिए उपयोगी कार्य कर रहे हैं।

अपनी इच्छा से कहीं अधिक आसानी से लोगों को आकर्षित करने वाली और अपनी उपलब्धियों का प्रचार करने की कोई आवश्यकता न होने के कारण, अल्बर्टीन ने अपने बिस्तर के पास मेरे साथ हुए उस दृश्य के बारे में चुप्पी साधे रखी, जिसे एक साधारण लड़की चाहती कि पूरी दुनिया को पता चले। फिर भी उस दृश्य के दौरान उसके व्यवहार का मुझे कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिल सका। सबसे पहले, यह मानकर कि वह पूर्णतः पवित्र थी (एक ऐसी धारणा जिसके आधार पर मैंने शुरू में अल्बर्टीन द्वारा मुझे बाहों में लेने और चूमने से इनकार करने की क्रूरता को समझा था, हालांकि यह मेरी सहेली की अच्छाई और मूल रूप से सम्माननीय चरित्र की मेरी धारणा के लिए बिल्कुल भी आवश्यक नहीं थी), मैं इसे इसके संदर्भों में व्यापक संशोधन किए बिना स्वीकार नहीं कर सका। यह उस परिकल्पना के बिल्कुल विपरीत थी जो मैंने उस दिन अल्बर्टीन को पहली बार देखने पर बनाई थी। फिर मेरे प्रति अनेक प्रकार की दयालुतापूर्ण हरकतें (एक ऐसी दयालुता जो स्नेहपूर्ण थी, कभी बेचैन, कभी भयभीत, एंड्री के प्रति मेरे झुकाव से ईर्ष्यालु) सामने आईं, जो उस क्रूर हावभाव को चुनौती दे रही थीं जिसके साथ उसने मुझसे बचने के लिए घंटी बजाई थी। तो फिर उसने मुझे अपने बिस्तर के पास शाम बिताने के लिए क्यों बुलाया था? वह हर समय स्नेह की भाषा में क्यों बोल रही थी? किसी मित्र से मिलने की आपकी इच्छा का क्या उद्देश्य है, इस डर का क्या कि वह आपके किसी अन्य मित्र को आपसे अधिक पसंद

करता है; उसे प्रसन्न करने की कोशिश क्यों, उसे इतने रोमांटिक अंदाज़ में क्यों बताना कि दूसरों को कभी पता नहीं चलेगा कि उसने आपके कमरे में शाम बिताई है, जबकि आप उसे इतना सरल सुख देने से इनकार कर रही हैं और आपके लिए तो यह बिल्कुल भी सुखदायी नहीं है? फिर भी, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि अल्बर्टीन की पवित्रता इस हद तक पहुँच गई थी, और मैंने खुद से पूछना शुरू कर दिया था कि क्या उसकी यह उग्रता किसी नखरे के कारण तो नहीं थी, जैसे कि कोई अप्रिय गंध, जिसका उसे संदेह था कि वह अपने शरीर से आ रही है और जिससे उसे डर था कि मैं घृणा कर बैठूँ, या फिर कायरता के कारण, अगर उदाहरण के लिए, प्रेम के तथ्यों से अनभिज्ञता में उसने यह कल्पना की कि मेरी तंत्रिका संबंधी थकावट किसी संक्रामक चीज़ के कारण है, जो उसे चुंबन से फैल सकती है।

मुझे खुशी न दे पाने से वह सचमुच दुखी थी, और उसने मुझे एक छोटा सा सोने का पेंसिल बॉक्स दिया, उस नेक और विचित्र स्वभाव के साथ जो लोग दिखाते हैं, जो आपकी विनतियों से प्रभावित होकर भी आपकी इच्छा पूरी नहीं करते, फिर भी आपको अपने स्नेह का कोई न कोई प्रतीक देना चाहते हैं; जैसे कि वह आलोचक, जिसकी कलम से लिखा लेख उपन्यासकार को बहुत प्रसन्न करता, उसे रात के खाने पर बुलाता है; या वह डचेस किसी घमंडी व्यक्ति को अपने साथ थिएटर नहीं ले जाती, बल्कि उसे उस शाम अपना बॉक्स उधार देती है जब वह खुद उसका उपयोग नहीं कर रही होती। कुछ ऐसा ही होता है वे लोग जो हमारे लिए सबसे कम करते हैं, और आसानी से कुछ भी नहीं कर सकते, अंतरात्मा की आवाज से प्रेरित होकर कुछ करते हैं। मैंने अल्बर्टीन से कहा कि मुझे यह पेंसिल बॉक्स देकर उसने मुझे बहुत खुशी दी है, फिर भी उतनी नहीं जितनी मुझे तब होती जब होटल में बिताई उस रात उसने मुझे गले लगाने

की अनुमति दी होती। "इससे मुझे बहुत खुशी होती; इसमें आपका क्या नुकसान हो सकता था? मुझे तो बस इस बात पर आश्चर्य हुआ कि आपने मुझे ऐसा करने से मना कर दिया।" “मुझे तो आश्चर्य होता है,” उसने पलटकर कहा, “कि आपको यह आश्चर्यजनक लगा। आप जानते होंगे कि लड़कियाँ कितनी अजीब होती हैं, तभी तो मेरा व्यवहार आपको आश्चर्यचकित करता है।” “अगर मैंने आपको नाराज़ किया हो तो मुझे बहुत खेद है, लेकिन अभी भी मैं यह नहीं कह सकती कि मैं गलत थी। मुझे लगता है कि इस तरह की बातें वास्तव में महत्वहीन हैं, और मैं उस लड़की को नहीं समझ सकती जो इतनी आसानी से आनंद दे सकती है, फिर भी ऐसा करने से मना कर दे। चलिए इस बारे में स्पष्ट हो जाते हैं,” मैंने उसकी नैतिक दुविधाओं को शांत करने की कोशिश करते हुए कहा, और याद दिलाया कि कैसे उसने और उसकी सहेलियों ने उस लड़की की बलि दी थी जो अभिनेत्री लीया के साथ घूमती थी। "मेरा यह कहने का बिल्कुल भी मतलब नहीं है कि कोई लड़की अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कर सकती है, या अनैतिकता जैसी कोई चीज़ होती ही नहीं। ज़रा सोचिए, आपने उस दिन बालबेक में ठहरी एक लड़की और एक अभिनेत्री के साथ उसके संबंधों के बारे में जो कहा था; मैं उसे अपमानजनक मानती हूँ, इतना अपमानजनक कि मुझे पूरा यकीन है कि यह सब उस लड़की के दुश्मनों ने गढ़ा होगा, और इस कहानी में कोई सच्चाई नहीं हो सकती। यह मुझे असंभव सा लगता है। लेकिन किसी दोस्त को आपको चूमने देना, और उससे भी आगे जाना—चूँकि आप कहती हैं कि मैं आपकी दोस्त हूँ..." "हाँ, आप हैं, लेकिन मेरे पहले भी दोस्त रहे हैं, मैं बहुत से ऐसे नौजवानों को जानती हूँ जो बिल्कुल ऐसे ही दोस्ताना थे, मैं आपको यकीन दिला सकती हूँ। उनमें से किसी ने भी ऐसा करने की हिम्मत नहीं की होगी। वे जानते थे कि अगर उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की तो

उन्हें घूँट पड़ जाएगा। इसके अलावा, उन्होंने कभी सपने में भी ऐसा करने की कोशिश नहीं की, हम खुलेआम, दोस्ताना अंदाज़ में हाथ मिलाते थे, अच्छे दोस्तों की तरह, लेकिन कभी भी कोई चुंबन के बारे में कुछ कहा गया था, फिर भी हमारी दोस्ती कम नहीं हुई। अगर तुम्हें मेरी दोस्ती चाहिए, तो शिकायत करने का कोई कारण नहीं है; मैं तुम्हें माफ़ करने के लिए तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। लेकिन मुझे यकीन है कि तुम्हें मेरी ज़रा भी परवाह नहीं है। अब मान लो, तुम एंड्री से प्यार करते हो। आख़िरकार, तुम बिल्कुल सही हो; वह मुझसे कहीं ज़्यादा सुंदर और बेहद आकर्षक है! ओह! तुम मर्द! हाल ही में हुई मेरी निराशा के बावजूद, इन शब्दों ने इतनी बेबाकी से मुझे अल्बर्टीन के लिए बहुत सम्मान दिया और मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला। और शायद इसी प्रभाव के बाद में मेरे लिए गंभीर और कष्टदायक परिणाम हुए, क्योंकि इसी से मेरे अंदर भाईचारे जैसी आत्मीयता का भाव पनपने लगा, वह नैतिक आधार जो हमेशा अल्बर्टीन के लिए मेरे प्यार का केंद्र बना रहा। इस तरह की भावना सबसे तीव्र पीड़ा का कारण बन सकती है। क्योंकि किसी स्त्री के हाथों सच में पीड़ा सहने के लिए उस पर पूर्ण विश्वास होना ज़रूरी है। फिलहाल, नैतिक सम्मान और मित्रता का वह बीज मुझमें एक धारा में पड़े पत्थर की तरह धंसा रह गया था। अगर वह बिना विकसित हुए वहीं पड़ा रहता, तो मेरी खुशी में उसका कोई योगदान नहीं होता। अगले साल तक और बालबेक की इस पहली यात्रा के आखिरी हफ्तों में भी वह इसी निष्क्रियता में बना रहा। वह मुझमें उन पराये पिंडों की तरह बसा हुआ था जिन्हें सब कुछ कह देने के बाद निकाल देना ही समझदारी होती है, लेकिन हम उन्हें बिना छेड़े वहीं छोड़ देते हैं, क्योंकि फिलहाल उनकी कमजोरी और अजनबी परिवेश में उनका अकेलापन उन्हें इतना हानिरहित बना देता है।

अब मेरे सपने एक बार फिर अल्बर्टीन की किसी न किसी सहेली पर

केंद्रित होने के लिए स्वतंत्र थे, और सबसे पहले एंड्री की ओर लौट आए, जिसकी दयालुता शायद मुझे इतनी आकर्षित न करती अगर मुझे यह यकीन न होता कि यह अल्बर्टीन के कानों तक पहुँच जाएगी। निस्संदेह, एंड्री के प्रति जो लगाव मैं लंबे समय से दिखा रहा था, उससे बातचीत करने और अपना स्नेह जताने की आदत ने मुझे, एक तरह से, उसके प्रति प्रेम के लिए तैयार सामग्री प्रदान कर दी थी, जिसमें अब तक केवल एक सच्ची भावना की कमी थी, और मेरा दिल एक बार फिर स्वतंत्र होकर अब इसे पूरा करने की स्थिति में था। लेकिन मेरे लिए एंड्री से सचमुच प्यार करना मुश्किल था, क्योंकि वह बहुत अधिक बौद्धिक, बहुत अधिक न्यूरोटिक, बहुत अधिक बीमार और मुझ जैसी ही थी। अगर अल्बर्टीन अब मुझे सारहीन लगती थी, तो एंड्री में कुछ ऐसा था जिसे मैं बहुत अच्छी तरह जानता था। मैंने उस पहले दिन सोचा था कि मैंने समुद्र तट पर जिसे देखा वह किसी रेसिंग साइकिल चालक की प्रेमिका थी, जो खेल के प्रति बेहद उत्साही थी; और अब एंड्री ने मुझे बताया कि अगर उसने खेलकूद में हिस्सा लिया था, तो वह अपने डॉक्टर के कहने पर था, ताकि उसकी न्यूरास्थेनिया (पाचन संबंधी समस्या) का इलाज हो सके, लेकिन उसके सबसे खुशी के पल वे थे जो वह जॉर्ज एलियट के उपन्यासों में से किसी एक का अनुवाद करने में बिताती थी। एंड्री के बारे में शुरुआती गलतफहमी के कारण जो गलत धारणा बनी थी, उसका वास्तव में कोई महत्व नहीं था। लेकिन मेरी गलती उस तरह की थी, जो अगर प्यार को जन्म लेने देती है और जब तक वह बेकाबू न हो जाए, तब तक उसे गलती के रूप में नहीं पहचाना जाता, तो दुख का कारण बन जाती है। ऐसी गलतियाँ—जो एंड्री के बारे में मेरी गलती से बिल्कुल अलग, या ठीक विपरीत भी हो सकती हैं—अक्सर (और यहाँ तो यह विशेष रूप से सच था) किसी व्यक्ति के बारे में अपनी पहली धारणा बनाते समय उसके

बाहरी रूप और तौर-तरीकों पर बहुत अधिक ध्यान देने के कारण होती हैं, जो कि वह नहीं है, लेकिन होना चाहता है। बाहरी दिखावे के साथ-साथ बनावटीपन, नकल, प्रशंसा पाने की लालसा, चाहे अच्छे लोगों से हो या बुरे लोगों से, और बोलने-चालने और हाव-भाव में भ्रामक समानताएँ भी इसमें जुड़ जाती हैं। ये ऐसे निंदकपन और क्रूरताएँ हैं जो, जब परखी जाती हैं, तो कुछ दिखावटी सद्गुणों और उदारताओं से ज़्यादा वास्तविक साबित नहीं होतीं। जिस प्रकार हम अक्सर उदार दान के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति के आवरण के नीचे एक घमंडी कंजूस को पाते हैं, उसी प्रकार मेसालिना का दुर्गुणों का प्रदर्शन हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि वह मध्यमवर्गीय पूर्वाग्रहों वाली एक सम्मानित लड़की है। मैंने एंड्री में एक स्वस्थ, आदिम प्राणी को खोजने की कल्पना की थी, जबकि वह केवल स्वास्थ्य की तलाश में थी, जैसा कि निस्संदेह उन कई लोगों के साथ भी था जिनमें उसने स्वास्थ्य खोजने की कल्पना की थी, और जो वास्तव में उतने ही अस्वस्थ थे जितना कि लाल चेहरे और सफेद फलालैन पहने एक तगड़ा गठिया रोगी हरक्यूलिस हो सकता है। अब ऐसी परिस्थितियाँ भी होती हैं जिनमें हमारी खुशी के लिए यह बात महत्वहीन नहीं होती कि जिस व्यक्ति से हमने उसकी सेहतमंद दिखने वाली विशेषताओं के कारण प्रेम किया है, वह वास्तव में उन बीमार लोगों में से एक है जो दूसरों से अपनी सेहत प्राप्त करते हैं, जैसे ग्रह अपना प्रकाश उधार लेते हैं, जैसे कुछ शरीर केवल बिजली के सुचालक होते हैं।

कोई बात नहीं, एंड्री, रोज़मोंडे और गिज़ेल की तरह, बल्कि उनसे भी कहीं ज़्यादा, अल्बर्टीन की दोस्त थी, उसके जीवन में भागीदार थी, उसके व्यवहार की इतनी बारीकी से नकल करती थी कि पहले दिन तो मैं उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं पहचान पाया था। इन लड़कियों पर, जो खिले हुए गुलाबों की तरह थीं और जिनका मुख्य आकर्षण समुद्र के किनारे

उनकी उभरती हुई आकृति थी, वही अटूट साझेदारी छाई हुई थी, जैसा उस समय थी जब मैं उन्हें नहीं जानता था, जब उनमें से किसी एक के भी दिखने पर मुझे इतनी तीव्र भावनाएँ उमड़ आती थीं जैसे यह घोषणा हो कि छोटा सा समूह ज़्यादा दूर नहीं है। और अब भी उनमें से किसी एक को देखकर मुझे ऐसी खुशी मिलती थी, जिसे परिभाषित करना मेरे लिए आसान नहीं होता, कि मैं बाकी लड़कियों को भी समय आने पर देखूंगा, और भले ही वे उस दिन न आएं, उनके बारे में बात करूंगा, और यह जानकर कि उन्हें बताया जाएगा कि मैं समुद्र तट पर था।

अब यह महज़ उन शुरुआती दिनों का आकर्षण नहीं रह गया था, बल्कि एक नियमित प्रेम-प्रवंचना थी जो उन सभी के बीच झिझक रही थी, क्योंकि हर एक दूसरे का स्वाभाविक विकल्प बन गई थी। मेरा सबसे बड़ा दुख यह नहीं होता कि जिन लड़कियों को मैं सबसे ज़्यादा पसंद करता, उनमें से कोई भी मुझे ठुकरा देती, बल्कि मैं उन्हें सबसे ज़्यादा पसंद करता, क्योंकि मैं उस उदास सपने को, जो उन सभी के बीच धुंधला सा तैर रहा था, अपने साथ जोड़ लेता, उस लड़की को जिसने मुझे ठुकरा दिया था। इसके अलावा, उस स्थिति में, मुझे उसके सभी दोस्तों को खोना पड़ता, जिनकी नज़रों में मैं जल्द ही अपनी सारी उपलब्धियाँ खो देता, और उसे खोने पर मुझे अनजाने में पछतावा होता, क्योंकि मैंने उनसे उस तरह के सामूहिक प्रेम का वादा किया था जैसा राजनेता और अभिनेता जनता के लिए महसूस करते हैं, जिनके द्वारा उन्हें सभी कृपाएँ मिलने के बाद छोड़ दिए जाने पर उन्हें कभी सांत्वना नहीं दी जा सकती। अल्बर्टीन से जो कृपाएँ मैं प्राप्त करने में असफल रहा था, उन्हें भी मैं अचानक किसी न किसी से पाने की आशा करता था, जो शाम को अस्पष्ट अर्थ वाले शब्द या नज़र से मुझसे विदा हो गई थी, और इसी के कारण अगले एक-दो दिनों तक मेरी इच्छा उसी की ओर मुड़ जाती थी।

उन सभी के बीच मेरी इच्छा और भी अधिक मोहक ढंग से भटकती थी, क्योंकि उन चंचल चेहरों पर अब विशेषताओं का तुलनात्मक निर्धारण शुरू हो गया था, और यह इतना आगे बढ़ चुका था कि आँख प्रत्येक लचीली और तैरती हुई आकृति को - भले ही वह और भी बदल जाए - पहचान सके। उनमें मौजूद अंतरों के लिए निस्संदेह उन विशेषताओं की लंबाई और चौड़ाई में मौजूद स्पष्ट अंतरों में बहुत कम समानता थी, जिनमें से कोई भी, लड़कियों के दिखने में कितनी भी भिन्न क्यों न हो, लगभग एक चेहरे से उठाकर किसी दूसरे पर बेतरतीब ढंग से थोपी जा सकती थी। लेकिन चेहरों का हमारा ज्ञान गणितीय नहीं है। पहली बात तो यह है कि यह भागों के माप से शुरू नहीं होता, बल्कि यह एक भाव, संपूर्ण के संयोजन को अपना प्रारंभिक बिंदु मानता है। उदाहरण के लिए, एंड्री की कोमल आँखों की सुंदरता उसकी पतली नाक से मेल खाती थी, जो इतनी पतली थी मानो किसी घुमावदार रेखा से बनी हो, मानो उसकी दोहरी निगाहों की मुस्कान के बीच ऊपर की ओर फैली कोमलता का भाव समेटने के लिए बनाई गई हो। उसके बालों में भी वैसी ही पतली रेखा थी, जो हवा द्वारा रेत पर बनाई गई लकीरों की तरह लचीली और गहरी थी। और यह गुण उसे वंशानुगत ही मिला होगा; क्योंकि एंड्री की माँ के बर्फ जैसे सफेद बाल भी इसी तरह से संवारे हुए थे, कहीं उभरे हुए तो कहीं धंसे हुए, मानो बर्फ का ढेर मिट्टी की असमानताओं के अनुसार ऊपर-नीचे होता रहता है। निश्चित रूप से, एंड्री की नाक की सुंदरता की तुलना में रोज़मोंडे की नाक चौड़ी सतहों वाली प्रतीत होती थी, मानो किसी विशाल नींव पर खड़ी कोई ऊँची मीनार हो। हालाँकि अभिव्यक्ति हमें उन चीजों के बीच विशाल अंतरों पर विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त है जो अनंत रूप से अलग हैं—हालाँकि वह अनंत रूप से कम अंतर स्वयं ही एक ऐसी अभिव्यक्ति, एक व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है—यह केवल

रेखाओं का अनंत रूप से कम होना और अभिव्यक्ति की मौलिकता ही नहीं थी जिसने इनमें से प्रत्येक चेहरे को किसी अन्य के संदर्भ में कम न करने योग्य बना दिया। मेरे दोस्तों के चेहरों के बीच उनके रंग ने एक और भी व्यापक अलगाव स्थापित किया, न केवल उन रंगों की विविधतापूर्ण सुंदरता से जो इसने उन्हें प्रदान की, बल्कि इतने विपरीत थे कि जब मैंने रोज़मोंडे को देखा—जो गंधक जैसे गुलाबी रंग से सराबोर थी, उसकी आँखों में हरे रंग की रोशनी के और भी विपरीतता के साथ—और फिर एंड्री को देखा—जिसके सफेद गाल उसके काले बालों से इतने गंभीर रूप से अलग थे—तो मुझे उसी तरह का आनंद मिला जैसे मैं बारी-बारी से धूप से जगमगाते समुद्र के किनारे उगते गेरेनियम और रात में कैमेलिया को देख रहा होता; लेकिन मुख्यतः इसलिए कि उनकी रेखाओं के अत्यंत सूक्ष्म अंतर अनुपातहीन रूप से बढ़ गए, एक सतह और दूसरी सतह के बीच के संबंध रंग के इस नए तत्व द्वारा पूरी तरह से बदल गए, जो रंगों का वितरक होने के अलावा, आयामों को पुनर्स्थापित करने, या यों कहें कि बदलने में माहिर है। इस प्रकार, चेहरे जो शायद लगभग समान रेखाओं पर बने थे, जैसे-जैसे वे भूरे बालों या गोरे रंग की तेज रोशनी से प्रकाशित होते गए, या फीके पीलेपन की सफेद चमक से, वे तीखे या चौड़े हो गए, कुछ और ही बन गए, जैसे रूसी बैले में प्रयुक्त वे वस्तुएँ, जो कभी-कभी दिन के उजाले में देखने पर कागज की एक मात्र डिस्क जैसी लगती हैं, जिस पर बक्स्त की प्रतिभा, अपने मंच को रक्त-लाल या चांदनी प्रभाव में डुबोकर, एक कठोर परत बना देती है, जैसे महल के कुएं पर फ़िरोज़ा, या एक मदहोश कर देने वाली कोमलता, जैसे पूर्वी उद्यान में बंगाल का गुलाब। और इसलिए चेहरों का ज्ञान प्राप्त करते समय हम सावधानीपूर्वक माप लेते हैं, लेकिन चित्रकारों के रूप में, सर्वेक्षणकर्ताओं के रूप में नहीं।

अल्बर्टीन का भी वही हाल था, जैसा उसकी सहेलियों का। कुछ दिनों में, दुबली-पतली, धूसर गालों वाली, उदास चेहरे वाली, उसके चेहरे से तिरछी बैंगनी चमक निकलती हुई, जैसी कभी-कभी समुद्र पर दिखाई देती है, मानो वह निर्वासन के दुखों को महसूस कर रही हो। दूसरे दिनों में, उसका चेहरा, अधिक चिकना, मेरी इच्छाओं को अपनी पॉलिश की हुई सतह पर जकड़ लेता और उन्हें आगे बढ़ने से रोक देता; जब तक कि मैं उसे अचानक बगल से न देख लूँ, क्योंकि उसके फीके गाल, सतह पर सफेद मोम की तरह, अंदर से स्पष्ट रूप से गुलाबी थे, जिससे मुझे उन्हें चूमने की बेचैनी होती, उस अलग रंग तक पहुँचने की जो मेरे स्पर्श से दूर रहता था। कभी-कभी खुशी उसके गालों को इतनी जीवंत स्पष्टता से नहला देती थी कि त्वचा, जो तरल और धुंधली हो गई थी, एक तरह की गुप्त और सूक्ष्म दृष्टि को रास्ता देती थी, जिससे वह उसकी आँखों से अलग रंग की प्रतीत होती थी, लेकिन पदार्थ में भिन्न नहीं। कभी-कभी, सहज रूप से, जब कोई उसके चेहरे को देखता, जो छोटे-छोटे भूरे निशानों से भरा होता था, जिनके बीच दो बड़े, नीले धब्बे तैरते हुए दिखाई देते थे, तो ऐसा लगता मानो किसी सुनहरी चिड़िया का अंडा देख रहे हों—या अक्सर किसी ऐसे ओपल जैसे चमकीले अगेट पत्थर को, जिसे केवल दो जगहों से काटा और पॉलिश किया गया हो, जहाँ भूरे पत्थर के केंद्र से, आसमानी नीली तितली के पारदर्शी पंखों की तरह उसकी आँखें चमकती थीं, वे विशेषताएं जिनमें मांस एक दर्पण बन जाता है और हमें यह भ्रम देता है कि यह हमें शरीर के अन्य भागों की तुलना में आत्मा के अधिक करीब ले जाता है। लेकिन अक्सर वह अधिक रंगीन और अधिक जीवंत दिखाई देती थी; कभी-कभी उसके सफेद चेहरे पर एकमात्र गुलाबी चीज उसकी नाक की नोक होती थी, जो किसी शरारती बिल्ली के बच्चे की तरह बारीक नुकीली होती थी, जिसके साथ कोई रुककर खेलना चाहता था; कभी-कभी उसके

गाल इतने चमकदार होते थे कि किसी लघुचित्र की सतह पर नज़र फिसल जाती थी, जैसे किसी लघुचित्र पर, उनके गुलाबी इनेमल पर, जो उसके आधे खुले काले बालों के आवरण से और भी अधिक नाजुक, और भी अधिक निजी प्रतीत होता था; या ऐसा भी हो सकता था कि उसके गालों का रंग लाल साइक्लेमेन के बैंगनी रंग जैसा गहरा हो गया हो, और कभी-कभी, जब वह लाल या बुखार से पीड़ित होती थी, तो उसमें अस्वस्थता का आभास भी झलकता था, जिससे मेरी इच्छा कुछ अधिक कामुक हो जाती थी और उसकी निगाहें कुछ अधिक विकृत और अस्वस्थ भाव व्यक्त करती थीं, कुछ गुलाबों के गहरे बैंगनी रंग जैसी, लगभग काले रंग जैसी लाल; और इनमें से प्रत्येक अल्बर्टाइन अलग थी, जैसे नर्तकी के हर नए रूप में, जिसके रंग, रूप, चरित्र, प्रक्षेपित प्रकाश की अनगिनत विविधताओं के अनुसार रूपांतरित होते हैं। शायद इसलिए कि वे इतने अलग थे, वे व्यक्ति जिन्हें मैं उस समय उसमें देखता था, कि बाद में मैं स्वयं एक अलग व्यक्ति बन गया, उस विशेष अल्बर्टाइन के अनुरूप, जिसकी ओर मेरे विचार मुड़ गए थे; एक ईर्ष्यालु, एक उदासीन, एक कामुक, एक उदास, एक उन्मादी व्यक्ति, ये सभी छवियाँ न केवल स्मृति के सतह पर उभरने के संयोग से, बल्कि उस विश्वास की शक्ति के अनुपात में भी नवनिर्मित होती हैं जो एक ही स्मृति को मेरे द्वारा अलग-अलग तरीकों से समझने से मिलती है। क्योंकि यही वह बिंदु है जहाँ हमें हमेशा लौटना पड़ता है, उन विश्वासों की ओर जिनसे हम अधिकतर समय पूरी तरह से अचेतन रूप से भरे रहते हैं, लेकिन फिर भी ये हमारे सुख के लिए उस औसत व्यक्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं जिसे हम देखते हैं, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से हम उसे देखते हैं, यही वे हैं जो देखे गए व्यक्ति को उसकी क्षणिक महानता प्रदान करते हैं। सटीक होने के लिए मुझे उन सभी 'मैं' को एक अलग नाम देना चाहिए जो आने वाले समय में

अल्बर्टाइन के बारे में सोचेंगे; मुझे अपने सामने प्रकट होने वाली प्रत्येक अल्बर्टाइन को एक अलग नाम देना चाहिए, जो कभी एक जैसा न हो, जैसे कि - जिसे मैंने सरलता और सुविधा के लिए 'समुद्र' कहा है - वे समुद्र जो समुद्र तट पर एक के बाद एक आते हैं, जिनके सामने, एक अप्सरा की तरह, वह अलग खड़ी थी। लेकिन सबसे बढ़कर, जिस प्रकार कहानी सुनाते समय (यहाँ कहीं अधिक व्यापक उद्देश्य से) हम बताते हैं कि फलां दिन मौसम कैसा था, उसी प्रकार मुझे उस विश्वास को नाम देना चाहिए जो किसी भी दिन, जिस दिन मैंने अल्बर्टाइन को देखा, मेरी आत्मा में व्याप्त था, उसका वातावरण बना रहा था। लोगों का दिखना समुद्र की तरह उन बादलों पर निर्भर था, जो स्वयं मुश्किल से दिखाई देते थे, और अपनी सघनता, गतिशीलता, फैलाव और उड़ान से हर चीज का रंग बदल देते थे—ठीक उस बादल की तरह जिसे एल्स्टिर ने एक शाम मुझे उन लड़कियों से न मिलवाकर चीर दिया था, जिनसे वह बात करने के लिए रुका था, जिसके बाद जैसे ही वे दूर गईं, उनकी सुंदरता अचानक बढ़ गई —वही बादल कुछ दिनों बाद फिर से बन गया जब मैं उन लड़कियों को जान पाया, उनकी चमक को ढकते हुए, मेरी आँखों और उनके बीच बार-बार आता रहा, अपारदर्शी और कोमल, वर्जिल की ल्यूकोथिया की तरह।

निःसंदेह, उनके चेहरों के भाव मेरे लिए बिलकुल नए अर्थ धारण कर चुके थे, क्योंकि उनके भावों को समझने का तरीका कुछ हद तक उनकी बातों से ही स्पष्ट हो गया था। उनकी बातों का महत्व इसलिए और भी बढ़ गया था क्योंकि उनसे प्रश्न पूछकर मैं जब चाहूँ उन्हें और अधिक स्पष्ट कर सकता था, उन्हें एक ऐसे प्रयोगकर्ता की तरह बदल सकता था जो अपने सिद्धांत की सत्यता को पुष्ट करने के लिए प्रमाणों का प्रयोग करता है। और अंततः, अस्तित्व की समस्या को सुलझाने का यह भी उतना ही अच्छा तरीका है जितना कि उन चीजों के निकट जाना जो दूर से हमें सुंदर

और रहस्यमय प्रतीत होती हैं, ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि उनमें न तो रहस्य है और न ही सुंदरता। यह स्वच्छता की उन प्रणालियों में से एक है जिनमें से हम अपनी पसंद की प्रणाली चुनने के लिए स्वतंत्र हैं, एक ऐसी प्रणाली जिसकी शायद बहुत अधिक अनुशंसा नहीं की जानी चाहिए, लेकिन यह हमें जीवन के शेष भाग को बिताने के लिए एक निश्चित शांति प्रदान करती है, और साथ ही—क्योंकि यह हमें किसी भी बात का पछतावा न होने देती है, यह आश्वासन देकर कि हमने सर्वश्रेष्ठ प्राप्त कर लिया है, और वह सर्वश्रेष्ठ कुछ भी असाधारण नहीं था—जिसके साथ हम स्वयं को मृत्यु के प्रति समर्पित कर सकते हैं।

मैंने इन लड़कियों के मन में, पवित्रता के प्रति उनकी कथित अवहेलना के स्थान पर, उनकी दैनिक 'घटनाओं' की स्मृतियों को, ईमानदार सिद्धांतों से भर दिया था, जो संभवतः शिथिल हो सकते थे, लेकिन वे सिद्धांत थे जिन्होंने अब तक उन बच्चों को सुरक्षित रखा था जिन्होंने उन्हें अपने सम्मानित घरों में सीखा था। फिर भी, जब कोई शुरुआत से ही, छोटी-छोटी बातों में भी, गलत हो जाता है, जब धारणा या स्मृति की त्रुटि किसी दुर्भावनापूर्ण निंदा के लेखक को या उस स्थान को गलत दिशा में खोजने के लिए प्रेरित करती है जहाँ आपने कुछ खोया है, तो अक्सर ऐसा होता है कि व्यक्ति अपनी गलती का पता तो लगाता है, लेकिन उसकी जगह सच्चाई नहीं, बल्कि एक नई गलती रख देता है। उनके जीवन जीने के तरीके और उनके साथ उचित व्यवहार के संबंध में, मैंने 'मासूमियत' शब्द से सभी संभावित निष्कर्ष निकाले, जिसे मैंने उनसे परिचित बातचीत के दौरान उनके चेहरों पर पढ़ा था। लेकिन शायद मैं लापरवाही से पढ़ रहा था, जल्दबाजी में समझने की वजह से हुई गलतियों के साथ, और यह वहाँ उतना ही लिखा हुआ था जितना कि उस प्रदर्शन के कार्यक्रम में जूल्स फेरी का नाम नहीं लिखा था जिसमें मैंने पहली बार बर्मा को सुना

था, एक चूक जिसने मुझे एम. डी नॉरपोइस से यह कहने से नहीं रोका कि जूल्स फेरी, बिना किसी संदेह के, एक ऐसे व्यक्ति थे जो शुरुआती प्रदर्शन लिखते थे।

चाहे मेरे उस छोटे से समूह के दोस्तों में से कोई भी हो, क्या यह अनिवार्य रूप से वही चेहरा नहीं था जिसे मैंने आखिरी बार देखा था, वही चेहरा मुझे याद रहता था? क्योंकि किसी व्यक्ति से संबंधित हमारी यादों में, मन उन सभी चीजों को मिटा देता है जो हमारे दैनिक संबंधों के तात्कालिक उद्देश्य से मेल नहीं खातीं (विशेषकर यदि उन संबंधों में प्रेम का तत्व समाहित हो, जो कभी असंतुष्ट नहीं होता और हमेशा आने वाले क्षण में ही जीवित रहता है)? वह उद्देश्य बीते दिनों की श्रृंखला को फिसलने देता है, केवल उसके अंतिम छोर को पकड़े रहता है, जो अक्सर रात में गायब हो चुकी कड़ियों से बिल्कुल अलग धातु का होता है, और जीवन की यात्रा में, यह केवल उसी स्थान पर वास्तविक माना जाता है जहां हम किसी भी क्षण होते हैं। लेकिन वे सभी शुरुआती छापें, जो अब इतनी धुंधली हो चुकी थीं, दिन-प्रतिदिन उन पर हावी होने वाली मंद प्रक्रिया के विरुद्ध मेरी स्मृति में कोई उपाय नहीं ढूंढ पाईं; इन लड़कियों के साथ बातचीत करने, खाने-पीने और खेलने में मैंने जो लंबे घंटे बिताए, उस दौरान मुझे यह भी याद नहीं रहा कि वे वही निर्मम, कामुक कुंवारी लड़कियां थीं जिन्हें मैंने एक भित्तिचित्र की तरह, मेरे और समुद्र के बीच से गुजरते हुए देखा था।

भूगोलवेत्ता, पुरातत्वविद हमें कैलिप्सो के द्वीप पर ले जा सकते हैं, मिनोस के महल की खुदाई कर सकते हैं। लेकिन तब कैलिप्सो एक स्त्री मात्र बनकर रह जाती है, और मिनोस एक राजा, जिसमें दैवीयता का कोई अंश नहीं रह जाता। इतिहास हमें जिन अच्छे-बुरे गुणों के बारे में बताता है, जो उन वास्तविक व्यक्तियों के गुण थे, वे भी अक्सर उन काल्पनिक प्राणियों के गुणों से बहुत भिन्न होते हैं, जिनके नाम उनसे मिलते-जुलते थे। इस

प्रकार, सागर की वह सारी सुंदर पौराणिक कथा, जिसे मैंने शुरुआती दिनों में रचा था, लुप्त हो गई। लेकिन यह पूरी तरह से महत्वहीन नहीं है कि हम कम से कम कभी-कभार, उन चीजों के साथ समय बिताने में सफल होते हैं जिन्हें हम अप्राप्य समझते थे और जिन्हें पाने की लालसा रखते थे। बाद में, जिन लोगों से हमारा व्यवहार होता है और जो हमें पहले अप्रिय लगते थे, उनके साथ रहने से मिलने वाले कृत्रिम सुख में भी, उनके द्वारा छुपाए गए दोषों का दाग हमेशा बना रहता है। लेकिन, अल्बर्टीन और उसके दोस्तों के साथ मेरे जैसे रिश्तों में, शुरुआत में जो सच्चा आनंद होता है, वह एक ऐसी सुगंध छोड़ जाता है जिसे किसी भी कौशल से ग्रीनहाउस में उगाए गए फलों या धूप में न पके अंगूरों में नहीं डाला जा सकता। वे अलौकिक प्राणी, जो कुछ समय के लिए मेरे लिए थे, अब भी, मेरी किसी मंशा के बिना भी, मेरे साथ उनके सबसे सामान्य व्यवहार में एक चमत्कारी तत्व जोड़ देते थे, या यूँ कहें कि ऐसे व्यवहारों को कभी सामान्य होने से ही रोकते थे। मेरी इच्छा उन आँखों का महत्व जानने की बहुत तीव्र थी जो अब मुझे पहचानती थीं और देखकर मुस्कुराती थीं, लेकिन जिनकी निगाहें पहले दिन मेरी निगाहों पर किसी दूसरे ब्रह्मांड की किरणों की तरह पड़ी थीं; इन लड़कियों के चेहरे पर, जो अब चट्टान की चोटी पर लेटी हुई थीं और मुझे सैंडविच दे रही थीं या पहेलियाँ सुलझा रही थीं, उस धूप ने इतनी उदारता से, इतनी सावधानी से, इतनी बारीकी से रंग और सुगंध बिखेरी थी कि अक्सर दोपहर में, जब मैं उनके बीच लेटा रहता था, उन चित्रकारों की तरह जो आधुनिक जीवन में प्राचीन काल की भव्यता को दर्शाने की कोशिश करते हैं, पैर के नाखून काट रही महिला को स्पिनारियो की गरिमा प्रदान करते हैं, या रूबेंस की तरह, अपनी परिचित महिलाओं को देवियाँ बनाकर किसी पौराणिक दृश्य को जीवंत करते हैं; घास में मेरे चारों ओर बिखरी हुई उन सुंदर आकृतियों

को, काली और गोरी, जो प्रकार में इतनी भिन्न थीं, मैं निहारता रहता था, शायद उनमें भरी हुई उन सभी साधारण चीजों को खाली किए बिना, जिनसे मेरे रोजमर्रा के अनुभव ने उन्हें भर दिया था, और साथ ही साथ उनके दिव्य मूल को स्पष्ट रूप से याद किए बिना, मानो युवा हरक्यूलिस या युवा टेलीमाकस की तरह, मुझे अप्सराओं के एक समूह के बीच खेलने के लिए रखा गया हो।

फिर संगीत कार्यक्रम समाप्त हुए, मौसम खराब होने लगा, मेरे दोस्त बालबेक से चले गए; एक साथ नहीं, जैसे अबाबील पक्षी, बल्कि एक ही सप्ताह में। अल्बर्टीन सबसे पहले अचानक चली गई, उसके किसी भी दोस्त को तब या बाद में समझ नहीं आया कि वह अचानक पेरिस क्यों लौट आई, जहाँ न तो उसका काम और न ही कोई मनोरंजन उसे बुला रहा था। "उसने न तो कारण बताया और न ही वजह, और बस चली गई!" फ्रांस्वा ने बुदबुदाया, जो चाहती थी कि हम भी चले जाएँ। उसे लगा कि हम कर्मचारियों के प्रति असंवेदनशील थे, जिनकी संख्या अब बहुत कम हो गई थी, लेकिन कुछ ही आगंतुकों के कारण उन्हें रखा गया था, और उस प्रबंधक के प्रति भी जो 'बस पैसे खा रहा था'। यह सच था कि होटल, जो बहुत जल्द सर्दियों के लिए बंद होने वाला था, अपने अधिकांश ग्राहकों को बहुत पहले ही जाते हुए देख चुका था, लेकिन यह इतना आकर्षक कभी नहीं रहा था। प्रबंधक इस विचार से सहमत नहीं था; हम जिन कमरों में ठंड से कांपते बैठे थे, उनके एक छोर से दूसरे छोर तक, और जिन दरवाजों पर अब कोई सेवक पहरा नहीं दे रहा था, वह गलियारों में चहलकदमी कर रहा था। उसने एक नया फ्रॉक कोट पहना हुआ था, जिसे हेयरड्रेसर ने इतनी खूबसूरती से संवारा था कि उसका बेजान चेहरा किसी ऐसी चीज़ से बना हुआ प्रतीत होता था जिसमें मांस के एक हिस्से की जगह तीन हिस्से कॉस्मेटिक्स लगे हों, और वह लगातार अपनी टाई बदल

रहा था। (ये दिखावटी खर्चे होटल को गर्म रखने और कर्मचारियों को बनाए रखने से कम थे, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति जो अब किसी दान में दस हजार फ्रैंक देने में सक्षम नहीं है, वह भी बिना किसी असुविधा के अपनी उदारता का प्रदर्शन कर सकता है, जैसे कि टेलीग्राम लाने वाले लड़के को पांच फ्रैंक की टिप देकर।) वह मानो खाली हवा का निरीक्षण कर रहा हो, मानो अपनी आकर्षक वेशभूषा से उस वीरानगी को अस्थायी चमक देने की कोशिश कर रहा हो जो अब इस होटल में महसूस की जा सकती थी, जहां मौसम अच्छा नहीं रहा था, और वह किसी ऐसे सम्राट के भूत की तरह चल रहा था जो कभी अपने महल रहे खंडहरों को सताने के लिए लौट आया हो। जब स्थानीय रेलवे कंपनी ने यात्रियों की अपर्याप्त संख्या देखकर अगली बसंत तक अपनी ट्रेनें बंद कर दीं, तो उन्हें विशेष रूप से गुस्सा आया। प्रबंधक ने कहा, "यहाँ हलचल मचाने के साधनों की कमी है।" अपने खातों में दिख रहे घाटे के बावजूद, वे भविष्य के लिए भव्य योजनाएँ बना रहे थे। और चूंकि वे होटल व्यवसाय से संबंधित भाषा को बखूबी याद रख सकते थे, जिससे होटल व्यवसाय का महत्व बढ़ जाता था, इसलिए उन्होंने समझाया, "भोजन कक्ष में एक कुशल टीम होने के बावजूद, मुझे पर्याप्त सहायता नहीं मिली; लेकिन खातों में कुछ कमी रह गई। अगले साल आप देखेंगे कि मैं कितने बड़े खाते जमा करूँगा।" इस बीच, ब्रिटिश कोलंबिया रेलवे की सेवाओं के निलंबन के कारण उन्हें पत्र मंगवाने पड़ते थे और कभी-कभी आगंतुकों को हल्की गाड़ी में बिठाकर भेजना पड़ता था। मैं अक्सर ड्राइवर के पास बैठने की अनुमति मांगता था, और इस तरह मैं हर मौसम में बाहर निकल पाता था, जैसे कि उस सर्दी में जो मैंने कॉम्ब्रे में बिताई थी।

कभी-कभी, तेज बारिश के कारण, कैसिनो बंद होने पर, मेरी दादी और मैं लगभग सुनसान कमरों में ही फंसे रहते थे, जैसे किसी तूफान के दौरान

जहाज के सबसे निचले हिस्से में होते हैं; और वहाँ, दिन-प्रतिदिन, जैसे किसी समुद्री यात्रा के दौरान, उन लोगों में से कोई नया व्यक्ति, जिनके साथ हमने तीन महीने बिताए थे और जिन्हें हम जान नहीं पाए थे - केन के मुख्य मजिस्ट्रेट, चेरबर्ग बार के मुखिया, एक अमेरिकी महिला और उनकी बेटियाँ - हमारे पास आते, बातचीत शुरू करते, समय को थोड़ा कम समय देने का कोई तरीका खोजते, अपनी कुछ सामाजिक कुशलता दिखाते, हमें कोई नया खेल सिखाते, हमें चाय पीने या संगीत सुनने के लिए आमंत्रित करते, किसी निश्चित समय पर मिलने के लिए कहते, और उन मनोरंजक गतिविधियों की योजना बनाते जिनमें आनंद देने का असली रहस्य छिपा होता है - यानी आनंद देना नहीं, बल्कि हमारी बोरियत को दूर करने में मदद करना। संक्षेप में, बालबेक में हमारे प्रवास के अंत में, उन्होंने हमारे साथ मित्रता के ऐसे बंधन बना लिए, जो एक-दो दिन में उनके वहाँ से चले जाने से टूट जाते। मेरी मुलाकात उस धनी युवक, उसके दो कुलीन मित्रों में से एक और उस अभिनेत्री से भी हुई, जो कुछ दिनों के लिए दोबारा आई थी; लेकिन अब उनके छोटे से समूह में केवल तीन ही लोग थे, क्योंकि दूसरा मित्र पेरिस लौट गया था। उन्होंने मुझे अपने रेस्तरां में रात के खाने पर आने का निमंत्रण दिया। मुझे लगता है कि मेरे मना करने पर उन्हें उतनी ही खुशी हुई। लेकिन उन्होंने निमंत्रण अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से दिया था, और यद्यपि यह वास्तव में उस धनी युवक की ओर से था, क्योंकि बाकी लोग केवल उसके मेहमान थे, क्योंकि उसके साथ ठहरे हुए मित्र, मार्क्विस मौरिस डी वाउडेमोंट, वास्तव में एक बहुत अच्छे परिवार से थे, फिर भी अभिनेत्री ने सहज रूप से मुझसे पूछा कि क्या मैं नहीं आऊँगा, और मेरी प्रशंसा को बढ़ावा देते हुए कहा: "मौरिस बहुत प्रसन्न होंगे।"

और जब होटल के हॉल में मेरी उन तीनों से एक साथ मुलाकात हुई, तो

एम. डी वाउडेमोंट (स्वयं को मंद दिखाने वाला वह धनी युवक) ने मुझसे कहा: "क्या आप हमें अपने साथ भोजन करने का सौभाग्य नहीं देंगे?"

कुल मिलाकर मुझे बालबेक से बहुत कम लाभ मिला था, लेकिन इससे वहाँ लौटने की मेरी इच्छा और भी प्रबल हो गई। मुझे लगा कि मैं वहाँ पर्याप्त समय तक नहीं रुका। मेरे घर के दोस्तों की सोच इससे बिल्कुल अलग थी, जिन्होंने मुझे पत्र लिखकर पूछा कि क्या मैं अपना शेष जीवन वहीं बिताने का इरादा रखता हूँ। और जब मैंने देखा कि लिफाफे पर उन्हें 'बालबेक' नाम लिखना ही पड़ा—ठीक वैसे ही जैसे मेरी खिड़की किसी परिदृश्य या सड़क की बजाय समुद्र के मैदानों की ओर खुलती थी, जैसे रात भर मैं उसकी गुनगुनाहट सुनता रहता था, जिसे मैंने सोने से पहले अपने सपनों के जहाज को सौंप दिया था—मुझे यह भ्रम हुआ कि लहरों के साथ यह व्यथापूर्ण जीवन, अनजाने में ही, मुझे उनके आकर्षण से भर देगा, ठीक वैसे ही जैसे नींद में सीखे गए पाठ।

मैनेजर ने अगले साल मेरे लिए बेहतर कमरे आरक्षित करने की पेशकश की, लेकिन अब मुझे अपने कमरे से इतना लगाव हो गया था कि मैं उसमें फूलों की खुशबू को महसूस किए बिना ही चला जाता था। वहीं, मेरा मन, जिसे कभी अपनी जगह बनाने में इतनी कठिनाई होती थी, अब अपने माप को इतनी सटीकता से लेने लगा था कि जब मुझे पेरिस में अपने ही कमरे में सोना पड़ा, जिसकी छत नीची थी, तो मुझे उसे एक विपरीत प्रक्रिया से गुजारना पड़ा।

बालबेक छोड़ने का समय आ ही गया था, क्योंकि ठंड और नमी इतनी असहनीय हो गई थी कि हम उस होटल में और नहीं रह सकते थे, जिसके कमरों में न तो चिमनी थी और न ही सेंट्रल हीटर। इसके अलावा, मैं अपने प्रवास के इन आखिरी हफ्तों को लगभग तुरंत ही भूल गया। जब भी मैं बालबेक के बारे में सोचता, मेरी आंखों के सामने लगभग हमेशा वे घंटे

आते थे, जब अच्छे मौसम में हर सुबह, जब मैं अल्बर्टीन और उसकी सहेलियों के साथ दोपहर में बाहर जाता था, तो मेरी दादी, डॉक्टर के आदेशानुसार, मुझे कमरे में अंधेरा करके लेटने पर जोर देती थीं। मैनेजर ने निर्देश दिया था कि मेरे बरामदे में कोई शोर न किया जाए, और वह खुद यह सुनिश्चित करने के लिए ऊपर आते थे कि उनका पालन हो रहा है। क्योंकि बाहर की रोशनी बहुत तेज थी, इसलिए मैंने उन बड़े बैंगनी पर्दों को यथासंभव देर तक बंद रखा, जिन्होंने पहली शाम को मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपना लिया था। लेकिन, उन पिनों के बावजूद जिनसे रोशनी अंदर न आए, जिन्हें खोलने का तरीका केवल वही जानती थी; कालीनों, लाल क्रेटन मेज़पोश और इधर-उधर से इकट्ठा किए गए विभिन्न कपड़ों के बावजूद, जिन्हें उसने अपनी रक्षात्मक योजना में फिट किया था, वह उन्हें ठीक से मिलाने में कभी सफल नहीं हुई। अंधेरा पूरी तरह से नहीं था, और वे कालीन पर मानो लाल रंग के एनीमोन की पंखुड़ियों की बौछार की तरह बिखरे हुए थे, जिनमें मैं एक पल के लिए अपने नंगे पैर डुबोने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका। और खिड़की के सामने वाली दीवार पर, जो आंशिक रूप से प्रकाशित थी, बिना किसी दिखाई देने वाले सहारे के सोने का एक सिलेंडर लंबवत रखा गया था और रेगिस्तान में यहूदियों के आगे चलने वाले अग्नि स्तंभ की तरह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मैं वापस बिस्तर पर चला गया; बिना हिले-डुले, केवल कल्पना में, और एक ही पल में, सुबह के खेलों, स्नान, सैर के सुखों का अनुभव करने के लिए विवश था। खुशी ने मेरे दिल को गर्जना से धड़का दिया, मानो कोई मशीन पूरी गति से चल रही हो लेकिन जमीन से बंधी हो, जो अपनी ऊर्जा केवल अपनी धुरी पर घूमकर ही खर्च कर सकती हो।

मुझे पता था कि मेरे दोस्त 'मोर्चे' पर थे, लेकिन मैंने उन्हें नहीं देखा क्योंकि वे समुद्र की लहरों की श्रृंखला के सामने से गुज़र रहे थे, जिसके

बहुत पीछे, और उसकी नीली चोटियों के बीच एक इतालवी किले की तरह बसा हुआ, कभी-कभी, साफ समय में, सूरज की रोशनी में बारीकी से उकेरा हुआ छोटा सा शहर रिवेबेल दिखाई देता था। मैंने अपने दोस्तों को नहीं देखा, लेकिन (जबकि मेरे बेलवेडेयर पर अखबार बेचने वाले की आवाज़, जिन्हें फ्रांस्वा 'पत्रकार' कहा करती थी, नहाने वालों और खेलते बच्चों की आवाज़ें, समुद्री पक्षियों की चीखों की तरह धीरे-धीरे टूटती लहरों की आवाज़ को काटती हुई सुनाई दे रही थीं) मैंने उनकी उपस्थिति का अनुमान लगाया, मैंने उनकी हंसी सुनी जो मेरे कानों तक उठने वाली ध्वनि की मधुर लहर में नीरीड्स की हंसी की तरह समाई हुई थी। शाम को अल्बर्टीन ने कहा, "हमने ऊपर देखा, यह देखने के लिए कि तुम नीचे आ रहे हो या नहीं। लेकिन जब संगीत कार्यक्रम शुरू हुआ तो तुम्हारी खिड़कियां अभी भी बंद थीं।" दस बजे, निश्चित रूप से, यह मेरी खिड़कियों के नीचे शुरू हो गया। वाद्ययंत्रों के शोर के बीच-बीच में, अगर ज्वार ऊँचा होता, तो लहरों का वह बहता हुआ प्रवाह फिर से शुरू हो जाता, लड़खड़ाता हुआ और निरंतर, मानो वायलिन के सुरों को अपने क्रिस्टलीय घुमावों में समेटे हुए हो और पानी के भीतर के संगीत की गूँज पर अपना झाग बिखेर रहा हो। मैं अधीर हो गया क्योंकि अभी तक कोई मेरा सामान लेकर नहीं आया था, ताकि मैं उठकर कपड़े पहन सकूँ। बारह बज गए, आख़िरकार फ़्रांस्वा आ गई। और महीनों तक, इस बालबेक में, जिसका मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था क्योंकि मैंने इसे केवल तूफ़ान से तबाह और कोहरे में डूबा हुआ ही सोचा था, मौसम इतना चकाचौंध भरा और एक जैसा रहा कि जब वह खिड़की खोलने आती, तो मैं हमेशा, बिना कभी गलत हुए, बाहरी दीवार के कोने में मुड़ी हुई धूप के उसी धब्बे को देखने की उम्मीद कर सकता था, एक ऐसे अपरिवर्तनीय रंग का जो गर्मी के संकेत के रूप में मनमोहक होने के बजाय एक निर्जीव और स्थिर

एनामेल के रंग की तरह निराशाजनक था। और जब फ्रांस्वा ने खिड़की के फ्रेम की मोल्डिंग से अपनी पिनें हटा दीं, अपने कपड़े उतार दिए और पर्दे हटा दिए, तो उसके सामने प्रकट हुआ ग्रीष्म ऋतु का दिन उतना ही निर्जीव और प्राचीन प्रतीत हुआ, जितना कि किसी भव्य रूप से सजी हुई राजसी ममी का होता, जिसे हमारे पुराने नौकर ने मेरे सामने प्रदर्शित करने से पहले केवल एहतियात के तौर पर लिनेन के आवरण को खोला था, जो सोने के वस्त्रों में लिपटी हुई थी।

समाप्त

s jeet